

सन्त-चरित्र

LIVES OF SAINTS

का हिन्दी अनुवाद

लेखक

श्री स्वामी हिवानन्द सिस्वती

अनुवादक

श्री स्वामी हदव्यानन्द सिस्वती

प्रकिाक

द हिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय ह़िवानन्दनगि २४९१९२

हिला : हर्टिटी-गढ़वाल, उत्तिाखण्ड (हिमालय), भित

www.sivanandaonline.org,www.dlshq.org

प्रथम हिन्दी संस्किण : २०००

हितीय हिन्दी संस्किण : २०१०

तृतीय हिन्दी संस्किण ::२०१५

चतुथथ हिन्दी संस्किण : २०२५

(१,००० प्रहतयााँ)

ISBN 81-7052-157-2
HS 291

'द हिवाइन लाइफ सोसायटी, हिवानन्दनगि' के हलए
स्वामी अिैतानन्द िािा प्रकाहित तथा 'मेहुल हप्रन्ट सहवथसA-31,
नैना इन्डस्ट्रियल एरिया, फे 1 नई हदल्ली' में मुहित ।
Foronlineordersandcatalogue visit: dlsbooks.org

प्रकिाकीय वक्तव्य

स्वामी हिवानन्द िी की अाँग्रेिी पुस्तक 'लाइव्ज़ ऑफ सेंट्स' (Lives of Saints) का प्रथम प्रकिान सन् १९४१ में हुआ था। इसमें अनेक सन्तों ंकी िीवन-कथाओं ंको प्रस्तुत हकया गया था। इस पुस्तक के नवीनतम पंचम संस्किण में न केवल इसके पूवथ-संस्किणों ंमें समाहवष्ट सामग्री को स्थान हदया गया, विन् इसे स्वामी हिवानन्द िी की अन्यान्य कृहतयों ंसे समृद्ध किने का भी प्रयास हकया गया।

'सन्त-चरित्र' इसी नवीनतम संस्किण का अनुवाद िै।

यिााँ दो बातें हविेष रूप से उल्लेखनीय िैं। पिली बात तो यि िै हक यि पुस्तक पूणथतः असाम्प्रदाहयक तथा पूवाथग्रि-मुक्त िै। इस प्रकाि इसमें सस्न्नहित हवषयों ंके श्रेष्ठतम साि-तत्त्व को पाठकों ंके सुिख सफलतापूवथक प्रस्तुत हकया िा ििा िै। दूसिी बात यि िै हक ये िब्द-हचत्र एक आध्यास्त्मक मिापुरुष की लेखनी से उद्भूत िैं हिसके फल-स्वरूप सन्तों ंके इन िीवन-चरित्रों ंको एक सुस्पष्ट तथा हवहिष्ट आध्यास्त्मक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत हकया िा सका िै।

िम इसे अपना सौभाग्य समझते िैं हक िम हिन्दी पाठकों ंके समक्ष इसे प्रस्तुत कि ििे िैं। इन सन्तों ंकी हदव्य ज्योहत पाठकों ंके पथ को प्रिस्त तथा प्रदीप्त किे औि उनके समेत समस्त मानव-हित के ऊपि इनका आिीष-वषथण िोता ििे !

- द हिवाइन लाइफ सोसायटी

प्राथथना

ि कृपा-हसन्‍धु पिमिा, काल-चक्र की गहत अत्यहिक तीव्र िै। इस्ट्यों ंका हनयमन असम्भव िो िाा िै। मन चंचल तथा माया िाा सिोहित िै अौ मैं ताप-त्रय से सन्तप्त, पंच-क्‍लेशों ंसे प्रताहित, हमत्रों ंसे हवक्‍षुब्ध अौ िोगों ंसे ग्रस्त हाँ। मैं ग्रीष्म के ताप से दग्ध िो िाा हाँ। महक्षकाओं,ं मिकों,ं कृहम-कीटों ंतथा वृहिकों ंका उत्पात बढ़ता िा िाा िै। संसाि की मोहिनी माया मुझे प्रलोहभत कि िीी िै अौ मेिे हलए िान्तहचत एवं ध्यानस्थ िो पाना असम्भव हसद्ध िो िाा िै। तुम्हािी कृपा के अभाव में मैं आध्यास्ट्कि पथ के अनुसिण में सवथा अक्षम हाँ। िे पिमिा, तुम कृपा-हसन्‍धु िो। यहद उस समुि से मुझे एक बूाँद हमल िाती िै, तो क्या यि समुि वारि-हविीन िो िायेगा? मेिे ऊपि कृपा किो।

ि मेिे आिाध्य ! लोग किते िैं हक तुम दीन-बन्‍धु, दीनानाथ, कृपा-हनिान, करुणा-सागि तथा अनाथ–िक्षक िो। तुमने अिल्या, िौपदी, प्रह्लाद, ध्रुव तथा िीिे की िक्षा की िै; हकन्तु मेिे सम्बन्ध में तुमने कुछ निीं ंहकया। घोि यन्त्रणाओं ंके दंि से पीहित मैं अब भी अन्धकाि में भटक िाा हाँ। मैं तुम्हािी कृपा तथा सिायता के हलए आतथनाद कि िाा हाँ। इस िगत् के िे अदृश्य स्वामी ! तुम किााँ लुप्त िो गये िो ?

ि स्वयं-प्रकाि पिमात्मन् ! िल के अभाव में मछली का, सूयथ के अभाव में सूयथमुखी पुष्प का, पहत के अभाव में पहतव्रता पत्नी का, प्राण के अभाव में मन का तथा स्‍नेि के अभाव में दीपक की ज्योहत का अस्ट्स्तत्व असम्भव िै। इसी प्रकाि तुम्हािे हबना मेिा भी अस्ट्स्तत्व असम्भव िै। िे भगवन्! तुम मेिे हृदय में अवस्ट्स्थत िो िाओ। तुम मेिे प्राणों ंके प्राण तथा मेिे आत्मा के आत्मा िो।

तुम हदव्य प्रकाि तथा ज्ञान-ज्योहत िो। तुम अन्धकाि के हवनाशक तथा सवोत्तम गुरु िो। तुम मन एवं वाणी से पिे िो। तुम्हें हकसी सीमा में आबद्ध निीं ंहकया िा सकता। तुम पिम आत्मा िो; इस समग्र ब्रह्माण्ड के तुम आत्मा िो।

तुम स्वयं-प्रकाि, हनिवयव, अकताथ, अवयव–िहित, हनष्कलंक, अि तथा अमत्यथ िो। तुम िमािे माता-हपता, बन्‍धु, सखा, गुरु, सम्बन्धी तथा एकमात्र आश्रय-स्थान िो। तुम अस्ट्स्तत्व, आनन्द, ज्ञान, िस्ट्क्त, सामर्थ्य तथा सौन्दयथ के मूतथ रूप िो।

ि दयामय भगवन्! तुम्हािी कृपा से मैं पिम सत्य का साक्षात्काि कि सकूाँ ! मैं सदा उदात्त हवचािों ंको प्रश्रय दे सकूाँ! मैं हदव्य ज्योहत के रूप में स्वयं का साक्षात्काि कि सकूाँ! मैं आत्म-भाव से मानवता की सेवा कि सकूाँ ! मैं लोभ, काम, अिंकाि, ईर्ष्याथ तथा घृणा से मुक्त िो सकूाँ ! मैं प्राहणमात्र में उस आत्मा का दिथन कि सकूाँ िो अक्षि तथा अहवनािी िै! मैं हविुद्ध बुद्धि से ब्रह्म-साक्षात्काि कि सकूाँ !

ज्योहतयों ंकी वि ज्योहत सवथदा मेिा मागथ हनदेिन किे ! वि मेिे मन को कल्मष-मुक्त कि दे! वि मेिे हलए प्रेिणाप्रद हसद्ध िो ! वि मुझे प्रहतभा, िस्ट्क्त, साहस तथा सामर्थ्य प्रदान किे ! वि मेिे मन को हवक्‍षेप तथा आविण से मुक्त किे ! वि मेिे आध्यास्ट्कि पथ की समस्त हवघ्न-बाधाओं ंका हनिाकिण किे ! वि मेिे िीवन को आनन्दमय तथा हितकि बना दे ! िे देवाहिदेव, िे उपहनषदों ंके ब्रह्म, िे माया के अहिष्ठान, िे ईश्वि, मैं तुम्हािे समक्ष नतमस्तक हाँ।

प्रस्तावना

सन्त हकसे किते िैं? िो ईश्वि अथवा िाश्वत सत्ता में हनवास किता िै; िो अिंकाि, िाग–िेष, स्वाथथपिता, हमर्थ्ाहभमान, अिं-भाव, काम, लोभतथा क्रोि से सवथा मुक्त िै; िो समदृहष्ट, मानहसक सनुतुलन, दया, सहिष्णुता, मिथ-पियणता तथा ब्रह्माण्डीय प्रेम से ओत-प्रोत िै तथा हिसे हदव्य ज्ञान की सम्प्रास्ट्प्त िो चुकी िै, उसी को सन्त किते िैं।

संसाि को सिु-सन्त वसुतुतः एक विदान के रूप में प्राप्त हुए िैं। वे उच्चति हदव्य ज्ञान, आध्यास्ट्त्मक िस्ट्क्त तथा अक्षय दैवी सम्पहत्त के अहभिक्षक िैं। उनके कमलवत् चिणों ंके समक्ष िािा-मिािािा भी नतमस्तक िोते िैं। मिािािा िनक ने एक बाि याज्ञवल्क्य से किा था- "िे प्रणम्य सन्त, आपके उदात्त उपदेिों ंके माध्यम से मुझे उपहनषदों ंके प्राचीन ज्ञान की उपलस्ट्ब्ध हुई िै। मैं इसके हलए आपका कृतज्ञ हाँ औि आपके चिणों ंपि अपना समूपूणथ साम्राज्य अहपथत किता हाँ। अब मैं आपकी सेवा में आपके दास की भााँहत उपस्ट्स्थत िहाँगा।"

उदािचेता सिु-सन्तों ंका यिी स्वभाव िोता िै। उनके अस्ट्स्तत्व मात्र से अहभप्रेरित िो कि लोग उस आनन्दमय स्ट्स्थहत की सम्प्रास्ट्प्त के प्रयत्न में संलग्न िो िाते िैं, हिस स्ट्स्थहत को सिु-सन्त पिले िी प्राप्त कि चुके िोते िैं। यहद ये लोग िमािे बीच हवद्यमान निीं ंिोते, तो िमािा आध्यास्ट्त्मक ऊर्ध्ािोिण तथा हनवाथण असम्भव िो िाता िै। उनकी महिमा अवणथनीय तथा उनका ज्ञान अगाि िोता िै। वे समुि की भााँहत गिन, हिमालय पवथत की भााँहत अटल, उसके तुहिन की भााँहत हविुद्ध एवं सूयथ की भााँहत देदीप्यमान िोते िैं। उनकी कृपा तथा उनके सत्संग से िी िन्म-मिण के इस भीषण भव-सागि का सन्तिण िो िाता िै । उनका साहिध्य सवोत्तम हिक्षण तथा उनके प्रहत िमािी सवोच्च आनन्द िै ।

सन्त गााँव-गााँव तथा िाि–िाि पि िा कि हदव्य ज्ञान का प्रसाद हवतरित किते िैं। वे दूसिों ंसे अत्यल्प ग्रिण किके मानवता को सवोच्च हिक्षण, संसूकृहत तथा ज्ञान का प्रकाि प्रदान किते िैं। उनका समग्र िीवन िी अनुकिणीय िोता िै। वे भाषण दें या न दें, प्रवचन किें या न किें, यि मित्त्वपूणथ बात निीं ंिै।

िािाओं ंके यथाथथ पिामिथदाता सन्त िी िो सकते िैं; क्योंहक वे स्वाथथपिता से मुक्त िोते िैं औि उनका ज्ञान सवोच्च िोता िै। लोगों ंकी नैहतकता के हवकास में सिु-सन्त िी समथथ िोते िैं। केवल वे िी अमित्व तथा िाश्वत आनन्द की सम्प्रास्ट्प्त में िमािा आपका पथ-प्रदिथन कि सकते िैं। स्वामी िामदास हिवािी के तथा मिहषथ वहसष्ठ िािा दििथ के पिामिथदाता थे।

सन्तों ंके िीवन का अध्ययन आपके हलए तत्काल िी प्रेिणाप्रद हसद्ध िोगा। आप उनके उपदेिों ंका स्मिण किते िहिए। इससे आप उच्चति आध्यास्ट्त्मक स्ट्स्थहत को प्राप्त िोंगे औि आपको दुःख-दैन्य से मुस्ट्क्त प्राप्त िो िायेगी। अतः 'लाइव्ज़ आफ सेंट्स' नामक यि पुस्तक आपकी हनत्य सिचिी हसद्ध िोगी। यि आपकी िेब में तथा तहकये के नीचे हनहित रूप से हवद्यमान िोनी चाहिए।

दोष-दिथन के अपने स्वभाव तथा अपनी कुदृहष्ट के किाण सन्तों ंपि दोषािोपण मत कीहिए। उनके गुण-दोष के सम्बन्ध में आपको हनणथय देने का कोई अहिकाि निीं ंिै। हवनम्र भाव से उनकी सेवा में आप सवथतोभावेन संलग्न
दोष-दिथन के अपने स्वभाव तथा अपनी कुदृहष्ट के किाण सन्तों ंपि दोषािोपण मत कीहिए। उनके गुण-दोष के सम्बन्ध में आपको हनणथय देने का कोई अहिकाि निीं ंिै। हवनम्र भाव से उनकी सेवा में आप सवथतोभावेन संलग्न
िहिए, उनको अपनी वाहटका में आमस्ट्न्त्रत कि अपनी िंकाओं ंका समािान कीहिए तथा उनके उपदेिामृत का पान कि उसे कायाथस्ट्न्वत कीहिए। आप हनहित रूप से कृतकृत्य िोंगे।

प्रत्येक हवद्यालय, प्रत्येक मिाहवद्यालय, प्रत्येक छात्रावास, प्रत्येक किाागिा, प्रत्येक संस्था तथा प्रत्येक घि में मागथ-दिथन के हलए सन्त का िोना आवश्यक िै। सन्तों ंका अभाव निीं ंिै। बात केवल इतनी िै हक आप स्वयं उनके पास िाना तथा उनकी सेवा किना निीं ंचािते। आपमें उच्चति वसुतुओं ंकी सम्प्रास्ट्प्त की इच्छा का अभाव िै। आप काँच के टूटे-फूटे टुकड़ों ंसे िी सनुतुष्ट िो गये िैं। आपमें उच्चति हदव्य ज्ञान तथा आन्तरिक िास्ट्न्त की सम्प्रास्ट्प्त की आध्यास्ट्कि हपपासा का अभाव िै।

सन्तों ंकी कोई िाहत निीं ंिोती। उनकी िाहत की ओि ध्यान मत दीहिए। इससे आपको कोई लाभ निीं ंिोगा। आपके हलए उनके गुणों ंको आिसात् कि पाना असम्भव िै। उच्चति िमथ में िाहत या िाहमथक रूहढ़वाहदता के हलए कोई स्थान निीं ंिोता। मोहचयों,ं िुलािों ंतथा अन्त्यिों ंमें भी अनेक मिान् सन्त हुए िैं। ज्ञान तथा आिोपलस्ट्ब्ध पि ब्राह्मणों ंका एकाहिकाि निीं ंिै। दहक्षण भाित के ब्राह्मण केवल दण्डी स्वाहमयों ंको िी भोिन देते िैं। यि भयंकि भूल िै। हकतनी दुःखद िै यि स्ट्स्थहत ! इसी कािण सािु-सन्त दहक्षण भाित का पयथटन निीं ंकिते। पंिाब तथा गुििात के लोगों ंमें सभी सन्तों ंके प्रहत आदि-भाव िै। अतः इन िाज्यों ंमें सन्तों ंका आना-िाना लगा ििता िै तथा विाँ के लोग उनके आध्यास्ट्कि प्रवचनों ंसे लाभास्ट्ित िोते ििते िैं।

सामान्यतः पाठकों ंतथा हविेषतः अध्याि-पथ के सािकों ंके समक्ष इस पुस्तक को प्रसुतुत किते समय सन्तों ंकी महिमा के सम्बन्ध में कुछ पंस्ट्क्तयाँ हलख देना समुहचत प्रतीत िोता िै।

सन्त हकसी भी देि के क्यों ंन िों,ं वे काल के हसकता-कणों ंपि अपने चिण-हचह्न छोड़ गये िैं हिससे सास्ट्त्त्वक वृहत्त के लोग उनका अनुसिण कि िाश्वत सत्य के दिथन कि सकें। उनके िीवन से िमें सतत प्रेिणा प्राप्त िोती ििी िै औि िम अभी तक उनकी महिमा का स्मिण किते आ ििे िैं। उनके उपदेिों ंका िमािे िीवन से अहवच्छेद्य सम्बन्ध ििा िै। वे िमें सतत अहभप्रेरित किते ििें! वे िमािा सदैव मागथ-दिथन किते ििें!

इस पुस्तक को तीन भागों ंमें वगीकृत हकया गया िै। सन्तों ंको हकसी स्थान-हविेष अथवा देि से सम्बद्ध किके निीं ंदेखा-पिखा िा सकता। उनके प्रभाव को भौगोहलक सीमाएँ अवरुद्ध निीं ंकि सकतीं।ं वे समस्त संसाि के िोते िैं। िाँ, उनके प्रादेहिक आिाि के परिप्रेक्ष्य में उन पि हवचाि किने से यि बात स्पष्ट िो िाती िै हक उनमें से प्रत्येक से उद्भूत आध्यास्ट्कि िािाएँ किाँ-किाँ से हनकलीं ंतथा हकस प्रकाि उन सब सन्तों ंके सस्ट्हिलत आध्यास्ट्कि प्रभाव ने पूिे देि के आध्यास्ट्कि पुनरुत्थान में योगदान हदया।

मनुष्य स्वयं को हनबथल तथा असिाय समझ लेता िै; हकनुतु उसे सम्यक् मागथ-दिथन में अध्यवसाय ििा इस अिुभ प्रवृहत्त का उनूमूलन किना चाहिए। ऐसे लोगों ंके हलए सन्तों ंकी िीवहनयाँ पथ-प्रदिथक का काम किती िैं। ये उनके िीवन, चरित्र तथा भहवष्य का हनमाथण सवथा नवीन हवहि से कि देती िैं औि उनकी मानहसकता को एक नयी हदिा प्रदान कि उन्हें उनके पथ प्रदिथकों ंकी आस्था तथा उनके उपदेिों ंके अनुरूप बना देती िैं। इतने सच्चे तथा हवश्वस्त पथ-प्रदिथक िोते िैं सन्त - िो इस ििती पि आये औि प्रयाण कि गये !

यि संसाि अच्छे सािु-सन्तों ंसे परिपूरित ििे ! आप सबको उनके सत्संग तथा पिामिथ से िीवन के पिम लक्ष्य की सम्प्रास्ट्प्त िो ! आप सबको इन सन्तों ंका आिीवाथद प्राप्त िोता ििे !

आनन्द कुटीर
८ िनविी १९४७

- स्वामी डिवानन्द

डवषय सूची

प्राचीन काल के सन्त

मिहषथ व्यास

हिन्फ्दू-पञ्चाङ्ग में व्यास-पूहणथमा को एक हवहिष्ट तथा मित्त्वपूणथ हदन माना िाता िै। इसके उत्तिवती हदन को िमिो पूवथि आयाथवतथ के ऋहष चाि मास की तपस्या के हलए वन में चले िाया किते थे। इसी स्मिणीय हदवस को व्यास, िो स्वयं ईश्वि के अवताि थे, ने ब्रह्मसूत्र की िचना प्राम्भ की थी। िमिो प्राचीन ऋहष गुफाओं ंतथा वनों ंमें तपस्या हकया किते थे। हकन्तु काल की परिवतथनीलता के काण आिकल ऐसी सुहविाएँ सवथ-सुलभ निीं ंिैं। हफि भी अभी ऐसे गृहस्थों ंतथा िािाओं ंका अभाव निीं ंिै िो अपने सामर्थ्य के अनुसाि चतुथथ आश्रम के सदस्यों ंको स्वेच्छापूवथक ऐसी सिायता तथा सुहविाएँ प्रदान किने में समथथ िैं। अब वनों ंतथा गुफाओं ंका स्थान सिाओं ंके अपने गुरुिो ंतथा मठों ंके कमिों ंने ग्रिण कि हलया िै। मनुष्य को आवश्यकता के अनुसाि स्वयं को दे-काल से समायोहित किना पिता िै; हकन्तु काल तथा परिस्टस्थहत के काण िमािी मानहसक अहभवृहत्तयों ंमें कोई अन्ति निीं ंआना चाहिए। चातुमाथस का प्राम्भ व्यास-पूहणथमा से िोता िै। िास्त्रों ंके अनुसाि इस हदन िमसे व्यास तथा ब्रह्महवद्या के अन्यान्य गुरुओं ंकी पूिा तथा ब्रह्मसूत्र एवं हदव्य ज्ञान के संवािक अन्य पुिातन ग्रन्थों ंके अध्ययन को प्राम्भ किने की आिा की िाती िै।

िमािे पुिाणों ंमें कई व्यासों ंका उल्लेख िै। किा िाता िै हक िापि युग के अन्त में कृष्णिैपायन व्यास का िन्म हुआ था औि इसके पूवथ अट्ठाईस व्यास िो चुके थे। कृष्णिैपायन का िन्म पिािि ऋहष तथा सत्यवती देवी के संयोग से कुछ हवलक्षण तथा आियथप्रद परिस्टस्थहतयों ंमें हुआ था। पिािि एक मिान् ज्ञानी तथा ज्योहतषिास्त्र के आहिकारिक हविान् थे। उनका ग्रन्थ पिाििीिोिा आि भी ज्योहतष िास्त्र का एक पाठ्य-ग्रन्थ माना िाता िै। उन्होंनें एक स्मृहत की भी िचना की थी हिसे पिािि-स्मृहत किा िाता िै। इस ग्रन्थ के प्रहत लोगों ंके हृदय में श्रद्धा तथा सिान की इतनी प्रबल भावना िै हक समािास्त्र तथा नीहतिास्त्र के आिुहनक लेखक इसके उद्धिण प्रस्तुत हकया किते िैं। पिािि इस तथ्य से अवगत थे हक एक घहटका-हवेष में िन्म ग्रिण किने वाला हिहु युग का मिानतम व्यस्टक्त िोगा। वि स्वयं भगवान् हवष्णु का एक अंि िोगा। उस हदन पिािि नौका-यात्रा कि ििे थे। उन्होंनें केवट से उस आसि मांगहलक मुहतथ की बात की। केवट की एक पुत्री थी िो पूणथ वयस्क थी औि हिसके हववाि की प्रतीक्षा की िा ििी थी। वि ऋहष की मिानता तथा पहवत्रता से प्रभाहवत था। उसने अपनी पुत्री को उनके समक्ष पाहण-ग्रिण के हलए प्रस्तुत कि हदया। िमिो व्यास ने इसी वैवाहिक सम्बन्ध के फल-स्वरूप िन्म-ग्रिण हकया। किा िाता िै हक उनका िन्म स्वयं भगवान् हिव की कृपा से हुआ था हिन्होंनें एक सन्त तथा हनम्निातीय कुलोत्पि एक ज्ञानी कन्या के संयोग को अपना आिीवाथद प्रदान हकया था।

बाल्यावस्था में िी व्यास ने अपने माता-हपता के समक्ष अपने िीवन के ििस्य का उद्घाटन किते हुए कि हदया हक उन्हें अखण्ड तप के हलए वन-गमन किना िोगा। पिले उनकी माता उनसे सिमत निीं ंहुई; हकन्तु तत्पिात् उन्होंनें उन्हें इस ितथ पि अनुमहत प्रदान कि दी हक उन्हें उनकी उपस्टस्थहत की िब कभी भी कामना िोगी, वे उनके समक्ष उपस्टस्थत िो िायेंगे। इससे यि स्पष्ट िो िाता िै हक उनके माता-हपता तथा स्वयं वे हकतने अहिक दूिदिी थे। पुिाणों ंके अनुसाि उन्होंनें अपने इक्कीसवें गुरु ऋहष वासुदेव से दीक्षा ग्रिण की औि सनक, सनन्दन तथा अन्यान्य आचायों के चिणों ंमें ििण ग्रिण कि िास्त्राध्ययन हकया। उन्होंनें लोक-कल्याण के हलए वेदों ंको व्यवस्टस्थत हकया तथा शुरुहतयों ंके त्वरित तथा सिल अथथ-ग्रिण के हलए ब्रह्मसूत्रों ंकी िचना की। उन्होंनें मिाभाित की भी िचना की हिससे िूि, स्त्री तथा अल्पबुस्टद्ध िन भी सवोच्च ज्ञान का अथथ-ग्रिण सिलतम हवहि से कि सकें। व्यास अष्टादि

पुिाणों ंके भी प्रणेता थे। उन्होंनें उपाख्यानों ंतथा प्रवचनों ंके माध्यम से इनकी प्रहिक्षण पद्धहत का सूत्रपात हकया। इस प्रकाि उन्होंनें कमथ, उपासना तथा ज्ञान, इन तीन मागों की व्यवस्था की। अपनी माता के सन्तहत-प्रवाि को अकुषुण्ण िखने तथा िृतिाष्टि, पाण्डु एवं हवदुि के िन्म का श्रेय भी उन्हीं ंको प्राप्त िै। ये उन्हीं ंकी सन्तान थे। व्यास
का अस्ट्न्तम ग्रन् भागवत था। इसके लेखन की प्रेिणा उन्हें देवहषथ नािद से प्राप्त हुई। देवहषथ ने उनको इसके प्रणयन का पिामिथ हदया औि किा हक इसके अभाव में उन्हें अपने िीवन के लक्ष्य की सम्प्रास्ट्प्त निीं ंिो सकेगी। व्यास को समस्त हिन्फ्दू हचिंिीवी मानते िैं। इनके अनुसाि वे अभी भी िीहवत िैं औि अपने भक्तों ंके कल्याण के हलए हवश्व-भ्रमण हकया किते िैं। किा िाता िै हक वे हनष्कपट तथा हनष्ठावान् व्यस्ट्क्तयों ंके समक्ष प्रकट भी हुआ किते िैं। िंकिाचायथ ने मण्डन हमश्र के घि में उनका दिथन हकया था। कई औि लोगों ंको भी उनके दिथन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। संक्षेप में यि किा िा सकता िै हक व्यास लोक-कल्याण के हलए अभी भी हवद्यमान िैं। िमें अपने हलए तथा इसके साथ िी समस्त संसाि के हिताथथ उनके आिीवाथद के हलए प्राथथना किनी चाहिए।

यि सवथहवहदत िै हक िमािे पूवथिों ंद्वािा हवकहसत हवचािों ंकी छि िास्त्-सिि तथा मित्त्वपूणथ पद्धहतयााँ िैं हिन्हें षि्-दिथन किा िाता िै। ये षि्-दिथन िैं-सांख्य, योग, न्याय, वैिेहषक, पूवथमीमांसा तथा उत्तिमीमांसा अथवा वेदान्त। इन दिथनों ंके हभन्न-हभन्न अहभमत िैं। कालान्ति में इन हवचाि-पद्धहतयों ंका अथथ-ग्रिण दुष्कि िोता गया। अतः इनके हनयमन के हलए सूत्रों ंकी िचना की गयी। सीहमत िब्दों ंमें प्रणीत इन ग्रन्ों ंको संस्कृत में सूत्र किा िाता िै। इनका अहभप्राय स्मिण िस्ट्क्त को सम्यक् संकेत तथा प्रत्येक हवषय पि िास्त्ाथथ में सिायता प्रदान किना िै। पद्मपुिाण में सूत्र को परिभाहषत किते हुए किा गया िै हक सूत्र संहक्षप्त, स्पष्ट तथा असस्ट्न्दग्ध िोना चाहिए। हकन्तु सूत्रों ंको इस सीमा तक संहक्षप्त कि हदया गया िै हक सूत्र हविेषतः ब्रह्मसूत्र दुरूि िो गये िैं। आि िम एक िी सूत्र को हवहभन्न रूपों ंमें व्याख्याहयत िोते देखते िैं। व्यास या बादिायण (व्यास को एक अहतरिक्त नाम बादिायण से भी अहभहित हकया गया िै) द्वािा िहचत ब्रह्मसूत्रों ंको वेदान्त-सूत्र भी किते िैं; क्योंहक इनमें वेदान्त की िी हववेचना की गयी िै। इन सूत्रों ंको चाि अध्यायों ंमें औि पुनः इन चाि अध्यायों ंमें से प्रत्येक अध्याय को चाि अनुभागों ंमें हवभाहित हकया गया िै। यि एक िोचक तर्थ् िै हक सूत्रों ंका प्रािम्भ तथा अन्त उन सूत्रों ंसे िोता िै हक हिनका अथथ िै हक ब्रह्म के यथाथथ स्वरूप के हवचाि के फल-स्वरूप प्रत्यावतथन निीं ंिोता। इसका तात्पयथ यि िै हक सूत्रों ंके हनहिताथथ के अनुरूप िीवन-यापन से मनुर्ष् अमित्व को प्राप्त िोता िै औि संसाि में उसका प्रत्यावतथन निीं ंिोता। पिम्पिा के अनुसाि व्यास को इन सूत्रों ंका प्रणेता माना िाता िै। िंकिाचायथ ने अपने भार्ष् में गीता तथा मिाभाित को व्यास-प्रणीत एवं ब्रह्मसूत्रों ंको बादिायण-प्रणीत बताया िै। उनके अनुयायी वाचस्पहत, आनन्दहगरि तथा अन्य लोग इन दोनों ंको एक िी व्यस्ट्क्त मानते िैं। िामानुि, वल्लभ, हनम्बाकथ तथा कुछ अन्य लोग इन तीनों ंग्रन्ों ंका प्रणेता व्यास को िी मानते िैं। िंकि-भार्ष् सूत्रों ंका प्राचीनतम भार्ष् िै। इसके पिात् िामानुि, वल्लभ, हनम्बाकथ तथा कुछ अन्य आचायों ने भी इन सूत्रों ंपि अपने भार्ष्ों ंकी िचना की। इन्होंनें अपने भार्ष्ों ंके माध्यम से अपने-अपने मतों ंका प्रहतपादन हकया। ब्रह्म इस िगत् का किाण िै तथा ब्रह्मज्ञान से आत्यस्ट्न्तक मुस्ट्क्त की सम्प्रास्ट्प्त िोती िै, इन दो बातों ंपि इन पााँचों ंआचायों का अहिकांितः मतैक्य िै; हकन्तु ब्रह्म के स्वरूप, व्यहष्ट आिा तथा सवोच्च आिा के पािस्परिक सम्बन्ध तथा मुक्तावस्था में िीव की दिा के सम्बन्ध में इनमें मत-वैहभन्य िै। इनमें से कुछ के अनुसाि मुस्ट्क्त-प्रास्ट्प्त का मुख्य साधन िंकि द्वािा अनुमोहदत ज्ञान न िो कि भस्ट्क्त िै।ऋहष याज्ञवल्क्य व्यास का िीवन ज्ञान के प्रचाि-प्रसाि के हनहमत्त िन्म-ग्रिण किने वाले व्यस्ट्क्त का अप्रहतम उदाििण िै। िमािी कामना िै हक िम उनकी िचनाओं ंकी अथथवत्ता के अनुरूप िीवन-यापन किें !

ऋहष याज्ञवल्क्य

शुरुहतयों ंतथा सूमृहतयों ंमें हमहथला के याज्ञवल्क्य का नाम एक लब्ध-प्रहतष्ठ तथा प्रख्यात व्यस्ट्क्त के रूप में अंहकत ि ै। याज्ञवल्क्य को हविेषतः उनके अप्रहतम आध्यास्ट्कि ज्ञान तथा ि स्ट्क्त के किाण ि ाना ि ाता ि ै। भगवान् सूयथ की
कृपा से वे एक वेद-संहिता के ि ष्टा थे औि उन्होंनें ि नक, मैत्रेयी तथा कुछ अन्य व्यस्ट्क्तयों ंको ब्रह्मज्ञान प्रदान हकया
था। पूतिाा ऋहषयों ंमें उनका नाम ि ीषथस्थ ि ै। भगवान् सूयथ से उन्हें हिस ि ुक्ल यिुवेद-संहिता की प्रास्ट्प्त हुई **थी**ज्ञवल्क्य तैहत्तीय ि ाखा के वेदाचायथ मिामुहन विैम्पायन की बिन के पुत्र थे। वे विैम्पायन के हिर्ष् थे औि
उसके हनकट तैहत्तीय-संहिता का अध्ययन किते थे। विैम्पायन के अनेक हिर्ष् थे औि ये सभी तैहत्तीय-
ि ाखा के हवद्याथी थे।

एक बाि सभी ऋहषयों ंने मेरु-पवथत के हनकट एक संघ के संगठन का हनणथय हकया औि यि हनयम पारित हकया हक िो ऋहष हनिाथरित समय पि उपस्ट्स्थत निीं ंि ोंगें, वे सात हदनों ंतक ब्रह्मि त्या (ब्राह्मणि त्या) के पाप के भागी ि ोंगें। उस हनहित हदन को विैम्पायन के हपता का श्राद्ध-अनुष्ठान था। विैम्पायन ने सोचा- 'मुझे हकसी भी िीति इस अनुष्ठान को सम्पि किना ि ोगा। यहद मैं ब्रह्मि त्या के पाप का भागी ि ोता हाँ, तो मेिे हिर्ष् पापि ि ोन के हलए प्रायहित्त कि लेंगे।' अतः विैम्पायन ऋहषयों ंके उस सिैलन में निीं ंगये हिसके फल-स्वरूप उन्हें ब्रह्मि त्या के पाप का भागी ि ोना पिा।

तब विैम्पायन ने अपने हिर्ष्ों ंसे कि ा- "मुझे अब ब्रह्मि त्या के मिापाप के हलए प्रायहित्त किना ि ै। अतः मेिे हलए स्वयं तुम लोगों ंको सात हदनों ंतक प्रायहित्त किना ि ोगा।"

याज्ञवल्क्य ने तत्क्षण कि ा- "ि े गुरुदेव, ये सभी दुबथलहचत्त युवा हवद्याथी ि ैं। यि कहठन तप इनके हलए असह्य ि ोगा। अतः इन सबके स्थान पि मैं स्वयं इसे इस हवहि से सम्पि करूँगा ि ो हकसी भी अन्य व्यस्ट्क्त के हलए दुष्कि ि ोगी।" हकनुतु विैम्पायन ने उन्हें इसकी अनुमहत निीं ंदी। हफि भी याज्ञवल्क्य अपने आग्रि पि अहिग ि ि े। गुरु उनके इस उद्धत व्यविाि के किाण उनसे अप्रसि ि ो गये। उन्होंनें कि ा- "ि े अिंकािी, तुम बहुत अिन्य ि ो। तुम मुझसे दूि चले ि ाओ। तुमने प्रज्ञिील ब्राह्मणों ंके प्रहत अपनी घृणा का प्रदिथन कि अपने स्वभाव को अनावृत कि हदया ि ै। तुमने मुझसे हितना भी ज्ञान अहिथत हकया ि ै, वि सब मुझे िीघ्र लौटा दो।"

गुरु के इस आदेि पि देविात-पुत्र याज्ञवल्क्य ने यिुस् के सवाांि का अि-रूप में वमन कि हदया। अन्य हिर्ष्ों ंने हतहत्तरि पक्षी के रूप में उस अि का भक्षण कि हलया। ये लोग उसकी सम्प्रास्ट्प्त के हलए पिले से ि ी उतुसुक थे। इस प्रकाि उन्हें उस यिुवेद संहिता का अपिोक्ष ज्ञान प्राप्त ि ो गया। हतहत्तरि पहक्षयों ंने इस वेद का भक्षण हकया था; अतः तब से इसे तैहत्तीय यिुवेद की संज्ञा प्रदान कि दी गयी। वमन हकया हुआ ि ोने के किाण इसे कृष्ण यिुवेद भी किते ि ैं।

तब याज्ञवल्क्य ने दृढ़ हनिय कि हलया हक इसके पिात् अब वे हकसी भी मनुर्ष् को गुरु के रूप में स्वीकाि निीं ं किेंगे। वे भगवान् सूयथ को प्रसि किने का प्रयत्न किने लगे। वे अपने गुरु विैम्पायन के हलए अज्ञात अहभनव वेदांि के ज्ञान की प्रास्ट्प्त के हलये वेदों ंमें हनष्णात सूयथ के पूिन तथा गुणानुवाद में संलग्न ि ो गये ।

याज्ञवल्क्य ने इन ि ब्दों ंमें सूयथ की अभ्यथथना की- "मैं सभी प्राहणयों ंमें आिवत् हवद्यमान दीस्ट्प्तमान आहदत्य को साष्टांग दण्डवत् किता हाँ। मैं उनके सुिख अवनत-िीिि ि ोता हाँ ि ो आकाि की भाँहत सबको आवृत हकये हुए ि ैं, िो अहितीय ि ैं एवं ि ो प्रहतबन्धक उपाहियों ंसे खस्ट्ण्डत निीं ंि ैं। ि े मिान् देव, मैं उस उद्दीप्त ग्रि का ध्यान किता हाँ िो समस्त संसाि को प्रकाि तथा ऊष्मा प्रदान किता ि ै, ि ो हनहषद्ध कमों से उत्पि सभी दुःखों ंको नष्ट किता ि ै

िौ ो कमथ-बिी अज्ञान को दग्ध कि देता ै। े भगवन्! मैं लोक-त्रय के अहिपहतयों ंािा पूहित एवं सुतुत्य आपके चिण कमलों ंका पूिन किता हाँ। मुझे आप वेद के वे अं प्रदान किें ो अन्य लोगों ंके हलए अज्ञात ैं।"

याज्ञवल्क्य की तपस्या से प्रसि ो कि भगवान् सूयथ अथाथत् महिमामय िरि ने अश्व का रूप िािण कि उनको युिवेद के उन अहभनव अंिों ंका ज्ञान प्रदान हकया ो अन्य लोगों ंके हलए अज्ञात था। युिवेद के इस अं को ुक्ल युिवेद कि ाता ै। इसे वािसनेय-युिवेद की भी संज्ञा प्रदान की गयी ै; क्योंहक सूयथ ने अश्व का रूप ग्रिण कि इसका प्रसुतुहतकिण ुत गहत से हकया था। याज्ञवल्क्य ने इस वािसनेय-युिवेद को पुनः पन्द्रि ाखाओं ंमें हवभाहित हकया। इन ाखाओं ंमें प्रत्येक में एक सौ युिस् मन्त्र थे। खाण्डव, माध्यस्न्दन तथा अन्य लोगों ंने उन ाखाओं ंका अध्ययन हकया।

मैत्रेयी तथा कात्यायनी, याज्ञवल्क्य की ये दो पहत्नयााँ थीं। इन दोनों ंमें मैत्रेयी ब्रह्मवाहदनी थी। ब याज्ञवल्क्य ने ीवन के चतुथथ आश्रम में प्रवे के हलए प्रस्थान किते समय अपनी दोनों ंपहत्नयों ंके बीच सम्पहत्त के हवभािन की इच्छा प्रकट की, तब मैत्रेयी ने उनसे पूछा- "क्या न से मुझे अमित्व की प्रास्प्त ो सकेगी?" याज्ञवल्क्य ने कि हक 'न से अमृतत्व की प्रास्प्त निीं ंोती। इससे केवल इतना ी ोगा हक वि भी संसाि के अन्य लोगों ंकी भााँहत सुखमय ीवन व्यतीत कि सकेगी।' इसे सुन कि मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से चिम ज्ञान प्रदान किने की प्राथथना की। तब याज्ञवल्क्य ने उसके समक्ष हनिपेक्ष िौा की आत्यस्न्तक मिानता, इसकी सत्ता के स्वरूप एवं असीम ज्ञान तथा अमित्व की प्रास्प्त के मागथ का हवस्तािपूवथक वणथन हकया। याज्ञवल्क्य तथा मैत्रेयी का यि अमि परिसंवाद बृिदािण्यकोपहनषद में अंहकत ै। इस परिसंवाद का केंिीय हवषय हनम्नांहकत ै :

"समस्त वसुतुएाँ अपने (वसुतुओं ंके) प्रयोिन के हलए हप्रय न ो कि िौा के प्रयोिन के हलए हप्रय ोती ैं। यि िौा ी सवथत्र हवद्यमान ै। इसका ज्ञान हकसी को निीं ंो सकता; क्योंहक यि स्वयं हवज्ञाता ै। ऐसा निीं ंकिा ा सकता हक यि हनहित रूप से ऐसा ी ै। यि 'नेहत-नेहत' के अन्तिीन कथन से ी ाना ा सकता ै। िौा स्वयंप्रका, अनश्वि तथा अहचन्त्य ै।"

दूसिी पत्नी िीिभा-पुत्री कात्यायनी सामान्य बुस्द्ध की स्त्री थी िौ उसके चिकान्त, मिामेघ तथा हविय नामक तीन पुत्र थे।

याज्ञवल्क्य मिान् ब्रह्मवादी ोने के साथ-साथ मिान् कमथकाण्डी भी थे। यिमानों ंसे उन्होंने कई यज्ञानुष्ठान किवाये िौ उन मिान् यज्ञों ंके वे स्वयं आचायथ भी बने। वे एक प्रख्यात् श्रोहत्रय तथा ब्रह्महनष्ठ गुरु थे। एक बाि हमहथला के हवदेि नक ने ानना चािा हक हकस ब्रह्महनष्ठ गुरु से ब्रह्म-हवद्या प्राप्त की ाये। यथाथथ ब्रह्महनष्ठ की खोि के हलए उन्होंने एक हविाट् बहुदहक्षणा यज्ञ का अनुष्ठान हकया हिसमें दूि-दूि के ऋहषयों ंको आमस्न्त्रत हकया गया। उन्होंने स्वणथ–िहित खुिों ंतथा शंगों ंवाली एक सिस्र गौओं ंके दान का प्रस्ताव प्रसुतुत किते हुए एकत्र लोगों ंसे कि- "आप लोगों ंमें ो सवोत्तम ब्राह्मण ै, वि इन गौओं ंको अपने घि ले ा सकता ै।" हकन्तु गौओं ंको ले ाने का सािस हकसी को निीं ंहुआ; क्योंहक सबको एक-दूसिे से अपनी हनन्दा का भय था। हकन्तु याज्ञवल्क्य ने उठ कि अपने हिष्य् सामश्रवा को गौओं ंको घि ले ाने को कि हदया।

इस पि अन्य ब्राह्मण कुरुद्ध ो गये िौ एक-दूसिे से किने लगे- "वि स्वयं को म लोगों ंसे श्रेष्ठ क्यों ंकिता ै?" इसके पिात् अनेक ऋहषयों ंने याज्ञवल्क्य को चुनौती देते हुए उनसे लोकोत्ति हवषयों ंके सम्बन्ध में कई प्रश्न हकये हिसके उत्ति याज्ञवल्क्य ने तत्काल दे हदये। विााँ एक बृिद् ास्त्राथथ हुआ हिसमें याज्ञवल्क्य ने अन्य लोगों ंको पिाहित कि हदया। नक को यि स्वीकाि किना पड़ा हक याज्ञवल्क्य सवथश्रेष्ठ ब्रह्महनष्ठ ैं। उन्होंने उन्हीं ंसे ब्रह्म-हवद्या प्राप्त की।

याज्ञवल्क्य के मिान् आध्यास्ट्कि उपदिे बृिदािण्यक उपहनषद् के तृतीय तथा चतुथथ अध्याय में हवपुल मात्रा में उपलब्ध िैं। याज्ञवल्क्य सुप्रहसद्ध याज्ञवल्क्य-संहिता के भी प्रणेता िैं। याज्ञवल्क्य-ििखा, प्रहतज्ञा-सूत्र, सतपथ-ब्राह्मण तथा योग-याज्ञवल्क्य उनकी अन्य कृहतयााँ िैं।

निक के यज्ञ के समय याज्ञवल्क्य तथा विैम्पायन के बीच कुछ िब्दों ंका आदान-प्रदान हुआ; हकन्तु यि सुन कि हक याज्ञवल्क्य ने भगवान् सूयथ से एक अहभनव वेद प्राप्त कि हलया िै, विैम्पायन को बहुत प्रसिता हुई। उन्होंनें याज्ञवल्क्य से अपने हिष्ों ंको भी इस वेद के प्रहिक्षण का अनििुो हकया। याज्ञवल्क्य ने उनके इस अनििुो को स्वीकाि कि उनके हिष्ों ंको उस वेद-हवद्या में प्रहिहक्षत हकया।

अन्त में याज्ञवल्क्य हवित्संन्यास ग्रिण कि वन में चले गये।

याज्ञवल्क्य सवथकालीन सवथश्ेरेष्ठ ऋहषयों ंमें थे। उन्होंनें िनक की ििासभा में िास्त्ाथथ में अपने गुरु उद्दालक को भी पिाहित हकया था। उपहनषदों ंमें अन्तहवथष्ट उनके उपदेि ब्रह्म-हवद्या के उच्चतम प्रहिक्षण के चूिामहण के रूप में प्रख्यात िैं।

योगी भुिस्ट्ण्ड

हचिंिीवी योहगयों ंमें योगी भुिस्ट्ण्ड का भी नाम आता िै। प्राणायाम-हवज्ञान में वे हनष्णात थे। किा िाता िै हक मिामेरु के उत्ति हिखि पि स्ट्स्थत कल्पवृक्ष की दहक्षणी िाखा पि उन्होंनें एक पवथताकाि बृिद् नीि का हनमाथण हकया था । भुिस्ट्ण्ड उसी नीि में ििा किते थे । वे हत्रकाल ज्ञानी थे । वे हकतनी िी दीघथ अवहि तक समाहिस्थ िि सकत थे । वे हनिाकांक्षी थे । उन्हें उच्चतम िास्ट्न्त तथा ज्ञान की प्राप्ती िो गयी थी । वे यिां आानन्द में हनमग्न ििते थे औि हचिंिीवी िोने के काििण आि भी िैं ।
भुिझहि को पंचिाििणाओं ंका पूणथ ज्ञान था । ििाण की पंच-हविाओं ंके अभ्यास से उन्होंनें स्वयं को पंच-तत्वों ंके आघात-प्रत्याघात से अमेघ बना हदया था ।
किा िाता िै हक िब िादि आहदत्य अपनी प्रज्वहलत हकिणों ंसे संसाि को भस्म किने लगते िैं, तब योगी भुिस्ट्ण्ड
अपनी अपस्ििाणा के बल पि आकाि तक चले िाते िैं, िब चािनों ंको सवथा हवस्ट्च्छन किने वाले प्रबल तथा दुहनथवाि अन्ििालों ंका प्रादुभाथव िोने लगता िै तब वे आकाि में स्थत िो िाते िैं औि िब मिामेरु के साथ-साथ सािा संसाि िलमग्न िो िाता िै तब वे वायुिििाणा के बल पि िल पि सन्तिण किने लगते िैं ।

दत्तात्ेरेय

पाहतव्रत की प्रहतमूहतथ के रूप में सामान्यत: अनसूया का दृष्टान्त प्रस्तुत हकया िाता िै । वि मिहषथ अहत्र की पत्नी थी िो सप्तषथयों ंमें एक िैं । वि पाहतव्रत िमथ में पूणथत: स्ट्स्थत थी औि अपनेपहत की सेवा अत्यन्त हनष्ठापूवथ किती थी । उसने ब्रह्मा, हवष्ुणु तथा हिव के समकक्ष पुत्रों ंके प्रिनन के हलये दीघथ काल तक कहठन तप हकया ।

एक हदन नािद चने के आकाि का एक लघु लौि-हपण्ड ले कि सिस्वती के पास गये । उन्होंनें उनसे किा - 'िे सिस्वती देवी, इस लौि-हपण्ड को भून दीहिये । मेिी यात्रा में यिी खद्य-पदाथथ िोगा ।' सिस्वती नी िाँसते हुए किा -'िे ऋहष नािद, इस लौि-हपण्ड को कैसे भूना िा सकता िै? इसका भक्षण भी कैसे सम्भव िैं?' तत्पिात नािद मिालक्ष्मी औि पावथती के यिां गये औि उन्होंनें उनसे उस लौि-हपण्ड को भूनने की प्राथथना की। वे भी नािद पि िाँसने लगीं।ं तब नािद ने किा- "िे देहवयो, देख लेना, मैं इसे मिहषथ अहत्र की पत्नी अनसूया से भुनवा लूाँगा। वे मिान् पहतव्रता िैं औि भू-लोक में ििती िैं।"

इसके पित् निाद अनसूया के पास आये। उन्होंनें उससे उस लौ-हपण्ड को भूनने की प्राथथना की। अनसूया ने उस लौ-हपण्ड को िक्रिी में िाल कि अपने पहत के स्वरूप का ध्यान हकया औि हिस िल का उपयोग वि अपने पहत के पद-प्रक्षालन के हलए हकया किती थी, उसकी कुछ बूूँदें उस लौ-हपण्ड पि िाल दीं।ं इस प्रकाि वि लौ-हपण्ड तत्काल भून हदया गया। निाद िीघ्र िी सिस्वती, लक्ष्मी तथा पावथती के पास गये औि उनके सिुख उस लौ-हपण्ड का भोिन हकया औि उसका कुछ अंि उन तीनों ंको भी हदया। उन्होंनें अनसूया के पाहतव्रत तथा उसकी महिमा की अत्यहिक प्रिंसा की। इसके पित् उन्होंनें अनसूया की ब्रह्मा, हवष्णु तथा हिव के समकक्ष पुत्रों ं के प्रिनन की कामना की पूहतथ का हनिय हकया।

निाद ने सिस्वती, लक्ष्मी तथा पावथती से किा- "यहद आप लोगों ंने हनष्ठा, हवश्वास तथा श्रद्धा के साथ अपने पहतयों ंकी सेवा की िोती, तो उस लौ-हपण्ड को आप लोग भी भून देतीं।ं कृपया आप लोग अपने पहतयों ंसे अनसूया के पाहतव्रत–िमथ की पिीक्षा लेने का अनुिोि किें।"

तब सिस्वती, लक्ष्मी तथा पावथती ने अपने पहतयों ंसे अहत्र मिहषथ की पत्नी अनसूया के पाहतव्रत–िमथ की पिीक्षा लेने की प्राथथना की। उन्होंनें उनसे किा हक वे उससे हनवाथण हभक्षा देने को किें। हनवाथण हभक्षा नग्न िो कि दी िाती िै।

यि हत्रमूहतथ ज्ञान-दृहष्ट के बल पि निाद की इस लीला एवं अनसूया की तपस्या तथा कामना से अवगत िो गयी। वे सिमत िो गये। वे तीनों ंसंन्याहसयों ंका वेि िािण कि अनसूया के पास गये औि उन्होंनें उससे हनवाथण-हभक्षा की माूँग की। अनसूया बहुत बड़ी हिहविा में पड़ गयी। वि हभकु्षओं ंकी याचना को अस्वीकाि निीं ंकि सकती थी; हकन्तु उसे अपने पाहतव्रत–िमथ की भी िक्षा किनी थी। उसने अपने पहत के स्वरूप का ध्यान हकया औि उनके चिणों ंमें िािण-ग्रिण कि तीनों ंसंन्याहसयों ंके ऊपि पहत के पद-प्रक्षालन के हलए प्रयुक्त िल की कुछ बूूँदें हछड़क दीं।ं इस चिणामृत की महिमा से उन तीनों ंसंन्याहसयों ंने तीन हििुओं ंका रूप ग्रिण कि हलया। उसी समय अनसूया के स्तनों ंमें दूि उति आया। उसने उन्हें अपने पुत्र मान कि उनको नग्नावस्था में दूि हपलाया औि पालने में हलटा हदया। उसके पहत स्नान के हलए गये थे औि वि उत्सुकतापूवथक उनकी प्रतीक्षा कि ििी थी।

अहत्र ऋहष िैसे िी घि पहुूँचे, अनसूया ने उनकी अनुपस्स्थहत में हुई सम्पूणथ घटना से उन्हें अवगत किा हदया। तत्पित् उसने उन हििुओं ंको उनके चिणों ंपि िख कि अपने पहत का पूिन हकया। हकन्तु अहत्र अपनी हदव्य दृहष्ट से सब-कुछ समझ गये थे। उन्होंनें उन तीनों ंहििुओं ंको गले लगाया। उन तीनों ंहििुओं ंने दो पैि, एक िड़, तीन हसि तथा छि भुिाओं ंवाले एक िी व्यस्क्त का आकाि ग्रिण कि हलया। अहत्र ऋहष ने अपनी पत्नी को आिीवाथद देते हुए सूहचत हकया हक उसकी इच्छा पूहतथ के हलए ब्रह्मा, हवष्णु तथा हिव ने स्वयं उन तीनों ंहििुओं ंका रूप ग्रिण हकया था।

निाद ने ब्रह्मलोक, वैकुण्ठ तथा कैलास िा कि सिस्वती, लक्ष्मी तथा पावथती को सूहचत हकया हक िब उनके पहतयों ं ने अनसूया से हनवाथण-हभक्षा की माूँग की, तब उसके पाहतव्रत–िमथ के प्रताप से उन तीनों ंने हििुओं ंका रूप ग्रिण कि हलया। उन्होंनें उनसे यि भी किा हक िब तक वे अहत्र से भतृथ-हभक्षा (पहत की हभक्षा) निीं ंमाूँगतीं,ं तब तक उनका लौटना असम्भव िै। सिस्वती, लक्ष्मी तथा पावथती ने सािािण स्त्स्त्रयों ंके वेि में अहत्र के पास िा कि पहत-हभक्षा की माूँग की औि किा- "िे ऋहष, कृपया िमािे पहतयों ंको िमें लौटा दीहिए।" अहत्र ऋहष ने तीनों ंमहिलाओं ं का हवहिवत् आदि-सत्काि हकया औि उनसे किबद्ध प्राथथना किते हुए किा हक उनकी तथा अनसूया की इच्छाओं ं की पूहतथ िोनी चाहिए। तब ब्रह्मा, हवष्णु तथा हिव ने अहत्र के सिुख अपने-अपने यथाथथ स्वरूप में प्रकट िो कि किा- "यि हििु आपके कथनानुसाि एक मिान् ऋहष तथा अनसूया की इच्छानुसाि िम लोगों ंके समकक्ष िोगा। इस हििु का नाम दत्तात्रेय िोगा।" इसके पित् वे अन्तिाथन िो गये।

दत्तात्रेय ने िािीरिक प्रौढ़ता प्राप्त की। सभी ऋहष-मुहन उनकी पूिा किते थे; क्योंहक ब्रह्मा, हवष्णु तथा हिव की ज्योहत उनमें अन्तभूथत िो चुकी थी औि वे एक मिान् ज्ञानी थे। वे भि, िान्त तथा सौम्य प्रकृहत के थे। लोग बडी संख्या में उनका अनुगमन किते िािे थे। दत्तात्रेय ने उनसे पीछा छुडाने का प्रयत्न हकया; लेहकन उनका प्रयत्न व्यथथ हुआ। एक बाि िब वे बहुत लोगों से हघिे हुए थे, वे स्नान किने के हलए नदी में प्रहवष्ट िो गये औि तीन हदनों तक बािि निीं हनकले। तीसिे हदन िब वे बािि हनकले तब उन्होंनें देखा हक नदी के तट पि लोग उनके बािि आने की अभी तक प्रतीक्षा कि ििे िैं। इस हवहि से वे लोगों से अपना पीछा छुडाने में सफल निीं हुए।

अतः दत्तात्रेय ने एक दूसिी योिना बनायी। उन्होंनें अपनी योग–िस्ि से एक कन्या तथा महदिा से भिे एक पात्र की सृहष्ट की। वे एक िाथ में कन्या तथा दूसिे िाथ में महदिा-पात्र को ले कि पानी से बािि हनकले। यि समझ कि हक वे योग-भ्रष्ट िो चुके िैं, लोग उनका परित्याग कि चले गये।

दत्तात्रेय ने अपनी व्यस्िगत सम्पहत्त का परित्याग कि हदया। यिााँ तक हक उनके पास अपयाथप्त मात्रा में िो वस्त् थे, उनका भी परित्याग कि वे अविूत िो गये। वे प्रवचन तथा प्रहिक्षण के माध्यम से लोगों को वेदान्त के सत्य से अवगत किाने लगे। दत्तात्रेय ने भगवान् सुब्रह्मण्यम् को अपनी गीता, अविूत-गीता का प्रहिक्षण हदया। यि सवाथहिक मूल्यवान् ग्रन् िै हिसमें वेदान्त के सत्य तथा ििस्य एवं आत्म-साक्षात्काि की अपिोक्षानुभूहतयााँ हनहित िैं।

एक बाि िब आनन्द में मग्न दत्तात्रेय वन में भ्रमण कि ििे थे, उनकी भेंट िािा यदु से िो गयी। िािा ने उन्हें अत्यन्त प्रमुस्दित देख कि उनके आनन्द का काि‍ण तथा उनके गुरु का नाम पूछा। दत्तात्रेय ने किा हक आत्मा िी उनका गुरु िै। हफि भी उन्होंनें चौबीस गुरुओं से ज्ञान प्राप्त हकया िै। अतः वे भी उनके गुरु िैं।

इसके पिात् दत्तात्रेय ने अपने चौबीस गुरुओं के नामों का उल्लेख किते हुए यि भी बताया हक उन्हें उनमें से प्रत्येक से हकस ज्ञान की प्रास्प्त हुई िै।

दत्तात्रेय ने अपने हिन चौबीस गुरुओं के नामों का उल्लेख हकया, वे हनम्नांहकत िैं :

१. पृथ्वी, २. िल, ३. वायु, ४. अहग्न, ५. आकाि, ६. चन्द्रमा, ७. सूयथ, ८. कपोत, ९. अिगि, १०. समुद्र, ११. पतंग, १२. मिुमक्खी, १३. मिुसंग्रािक, १४. िाथी, १५. हिरण, १६. मछली, १७. नतथकी हपंगला, १८. काग, १९. बच्चा, २०. कुमािी, २१. सपथ, २२. बाण बनाने वाला, २३. मकडी, औि २४. भृंगी।

१. मैंने िैयथ तथा पिोपकाि की हिक्षा पृथ्वी से ग्रिण की िै। लोगों से इसे आघात िोता ििता िै; हकन्तु इस अपकृत्य को वि सिन कि लेती िै। इतना िी निीं, वि उन्हें अन्न तथा वृक्षों के उत्पादन से उपकृत भी किती िै।

२. िल से मैंने हनमथलता का गुण ग्रिण हकया िै। हनमथल िल दूसिों को उसी प्रकाि स्वच्छ किता िै हिस प्रकाि स्वाथथ, काम, अिंकाि, क्रोि, लोभआहद दुगुथणों से िहित हविुद्ध-हचत्त सन्त अपने सम्पकथ में आने वालों को हनमथल किता िै।

३. सवथदा गहतमान वायु के सम्पकथ में सभी पदाथथ िोते िैं; हकन्तु वि इनमें से हकसी भी पदाथथ के प्रहत आसक्त निीं िोता। मैं संसाि में अनेक लोगों के सम्पकथ में आता हाँ; हकन्तु मैंने वायु से अनासस्ि की हिक्षा ग्रिण की िै।

४. हिस प्रकाि प्रज्वहलत अहग्न दीस्प्तमान िोती िै, उसी प्रकाि सन्त को भी ज्ञान तथा तप की दीस्प्त से तेिोमय िोना चाहिए।

५. वायु, नक्षत्र, मेघ आहद आकिा में स्ट्स्थत िै; हकनुतु आकिा इनमें से हकसी के भी सम्पकथ में निीं ंआता। मैंने आकिा से यि हिक्षा ग्रिण की िै हक आिा हवभु िोते हुए भी हकसी पदाथथ के सम्पकथ में निीं ंआता।

६. चिमा स्वयं में पूणथ िै; हकनुतु इसके ऊपि पृथ्वी के हवहभि प्रहतहबम्बों ंके किाण वि क्षय तथा वृस्ट्द्ध को प्राप्त िोता हदखायी देता िै। मैंने चिमा से यि हिक्षा ग्रिण की िै हक आिा पूणथ तथा हनहवथकाि िै औि उपाहियााँ उस पि अपने प्रहतहबम्बों ंको आिोहपत हकया किती िैं।

७. हिस प्रकाि हवहभि िल-पात्रों ंमें प्रहतहबस्ट्म्बत सूयथ अनेक प्रहतहबम्बों ंमें अवभाहसत िोता िै, उसी प्रकाि ब्रह्म मन के माध्यम से प्रहतहबम्बप्रसूत उपाहियों ं(िीिों)ं के किाण अनेक रूपों ंमें अवभाहसत िोता िै। यि हिक्षा मैंने सूयथ से ग्रिण की िै।

८. एक बाि मैंने कपोत-युगल को अपनी अल्पवयस्क सन्तानों ंके साथ देखा। एक व्याि ने िाल फैला कि उन अल्पवयस्क पहक्षयों ंको पकड़ हलया। माता कपोती अपनी सन्तानों ंके प्रहत अत्यहिक आसक्त थी। वि अपने प्राण की हचन्ता न कि िाल में आ गयी हिसके परिणाम स्वरूप वि पकड़ ली गयी। इससे मुझे यि हिक्षा प्राप्त हुई हक आसस्ट्क्त बन्धन का किाण िै।

९. अिगि अपने भोिन के हलए किीं ंहिलता-िुलता निीं ंिै। िो-कुछ भी उसे प्राप्त िो िाता िै, वि उसी से सनुतुष्ट ििता िै औि एक स्थान पि पड़ा ििता िै। मैंने इससे भोिन के प्रहत उदासीनता का पाठ पढ़ा िै। मुझे िो-कुछ भी भोिनाथथ हमल िाता िै, मैं उसी से सनुतुष्ट िो िाता हाँ।

१०. समुि में सैकड़ों ंनहदयााँ हगिती िैं; हकनुतु वि िान्त ििता िै। इसी प्रकाि ज्ञानी पुरुष को सभी प्रकाि के प्रलोभनों,ं कहठनाइयों ंतथा कष्टों ंमें अहवचहलत ििना चाहिए। समुि से मैंने यिी पाठ पढ़ा िै।

११. हिस प्रकाि िलभ अहग्न की दीस्ट्प्त के प्रहत अपनी आसस्ट्क्त के किाण उसमें हगि कि िल िाता िै, उसी प्रकाि हकसी सुन्दि कन्या के प्ेरम-पाि में आबद्ध कामुक व्यस्ट्क्त दुःख को प्राप्त िोता िै।

१२. हिस प्रकाि काली मिुमक्खी हकसी एक फूल का मिु-पान न कि हभि-हभि फूलों ंका मिु-पान किती िै, उसी प्रकाि मैं कभी एक के घि से औि कभी दूसिे के घि से अि-ग्रिण किके (मिुकिी-वृहत्त अथवा मिुकिी-हभक्षा से) अपनी कुषिा-तृस्ट्प्त किता हाँ। मैं गृिस्थों ंपि भाि निीं ंिोता।

१३. मिुमक्खी के हलए मिु-संग्रि एक कष्ट-साध्य कृत्य िै; हकनुतु कोई हिकािी सिलतापूवथक उस मिु को ले िाता िै। लोग अत्यन्त कहठनाई से िन तथा अन्य वसुतुओं ंका संचय किते िैं; हकनुतु िब मृतुयु का देवता यम उन्हें अपने पाि में आबद्ध किता िै, तब उन्हें उनका परित्याग कि उनसे हवदा लेनी पड़ती िै। इससे मैंने यि सीखा िै हक वसुतुओं ंका संचय हनष्प्रयोिन िै।

१४. नि िाथी कागि से बनी मादा िहथनी को देख कि घास-फूस से ढके गतथ में हगि िाता िै। तब यि पकड़ा िाता िै, उसे िंिीिों ंमें िकड़ा िाता िै औि उसे अंकुि की यातना सिनी पड़ती िै। हफि भी कामुक लोग स्ट्स्त्यों ंके पाि में आबद्ध िो कि दुःख भोगते िैं। अतः मनुर्ष् को कामुकता को नष्ट कि देना चाहिए। िाथी से मैंने यिी पाठ पढ़ा िै।

१५. अपने संगीत-प्रेम के किाण िरिण हिकारियों ंके पिा में आबद्ध िो िाता िै। हफि भी मनुर्ष् दुिरित्र स्ट्स्त्यों ंके संगीत के प्रहत आकहषथत िो कि हवनिा को प्राप्त िोता िै। मनुर्ष् को कामोते्तिेक गीत निीं ंसुनना चाहिए। िरिण
से मैंने यिी हिक्षा ग्रिण की िै।
१६. हिस प्रकिा कोई िोिा-लोलुप मछली चिो का हिकिा िो िोती िै, उसी प्रकिा भोिन के हलए लालाहयत तथा सिनेस्ट्यि से पिाभूत व्यस्ट्क्त अपनी स्वतन्त्रता को हतलांहिल दे कि हवनिा को प्राप्त िो िाता िै। अतः िोिा के प्रहत लोलुपता को नष्ट कि देना चाहिए। मछली से मैंने यिी हिक्षा ग्रिण की िै।

१७. हवदेि नगि में हपंगला नामक एक नतथकी िोती थी। एक िात वि अपने ग्रािकों ंकी िाि देखते-देखते थक गयी। वि हिनिा िो गयी। तब उसने उसके पास िो कुछ था, उसी से सनुतुष्ट िोने का हनणथय कि हलया। मैंने उस पहतत स्त्ी से यि हिक्षा ग्रिण की हक आिा के परित्याग से सन्तोष की प्रास्ट्प्त िोती िै।

१८. एक काग को मांस का एक टुकिा हमल गया। उसका पीछा दूसिे पहक्षयों ंने हकया औि वे उसे चोंचं मािने लगे। तब उसने मांस के टुकिे को नीचे हगिा हदया। इससे वि िान्त तथा अश्रान्त िो गया। इससे मैंने यि हिक्षा ग्रिण की हक िब मनुर्ष् ऐस्ट्यि सुखों ंका अनुगमन किता िै, तब उसे सभी प्रकिा के कष्ट तथा दुःख भोगने पिते िैं। इसके हवपिीत िब वि ऐस्ट्यि सुखों ंका परित्याग कि देता िै, तब वि उस पक्षी की भाँहत सुखी िो िाता िै।

१९. माता के स्तन से दुग्धपान किने वाला हििु सभी प्रकिा की हचन्ताओं ंसे मुक्त िोता िै। मैंने हििु से िी प्रफुल्लता का गुण ग्रिण हकया िै।

२०. एक कन्या के माता-हपता उसके हलए उपयुक्त वि की खोि में गये हुए थे। कन्या घि में अकेली थी। उसके माता-हपता की अनुपस्ट्स्थहत में कुछ लोग उसे देखने के हलए उसके घि आ गये। वे लोग भी वैसे िी अहभयान पि हनकले थे। कन्या को स्वयं उनका स्वागत सत्किा किना पिा। वि िान कूटने के हलए घि के भीति चली गयी। िब वि िान कूटने लगी, तब उसकी काँच की चूहियों ंसे खनखनािट की तेि आवाि हनकलने लगी। बुस्ट्द्धमती कन्या ने सोचा- "बािि बैठे लोग चूहियों ंकी इस आवाि से समझ िायेंगे हक मैं स्वयं िान कूट ििी हाँ औि मेिा परिवाि इतना हनिथन िै हक इस काम पि दूसिों ंको निीं ंलगा सकता। मुझे िाथों ंकी एक-एक चूहियों ंके अहतरिक्त सभी चूहियों ंको तोि देना चाहिए।" इस प्रकिा उसने दो चूहियों ंके अहतरिक्त सािी चूहियों ंको तोि हदया। हकनुतु इन दो चूहियों ंसे भी बहुत आवाि आ ििी थी। उसने उन दोनों ंको भी तोि िाला। इसके बाद िान कूटते हुए उसके िाथों ंसे कोई आवाि निीं ंआयी। मैंने उस कन्या के अनुभव से यि सीखा हक अनेक लोगों ंके बीच ििने से मतभेद, हवघ्न, हववाद तथा कलि की सृहष्ट िोती िै। यिाँ तक हक दो व्यस्ट्क्तयों ंके बीच ििने पि भी हववाद औि संघषथ के अवसि आ सकते िैं। तपस्वी या संन्यासी को एकान्त में एकाकी ििना चाहिए।

२१. सपथ अपना घि निीं ंबनाता। वि दूसिों ंके बनाये हुए हबलों ंमें ििता िै। इसी प्रकिा तपस्वी या संन्यासी को भी अपने हलए घि निीं ंबनाना चाहिए। उसे अन्य लोगों ंद्वािा हनहमथत गुफाओं ंतथा मस्ट्न्दिों ंमें ििना चाहिए। मैंने सपथ से यिी सीखा िै।

२२. एक बाण-हनमाथता का मस्ट्स्तष्क एक बाण को सीिा तथा तीक्ष्ण बनाने में पूणथतः तल्लीन था। उसकी व्यस्तता के इन्हीं ंक्षणों ंमें एक िािा उसकी दुकान के सामने से सदल-बल हनकल गया। कुछ देि बाद उससे एक व्यस्ट्क्त ने पूछा- "क्या तुम्हािी दुकान के सामने से िािा हनकला िै?" बाण-हनमाथता ने किा हक उसने इस औि कोई ध्यान निीं ंहदया था। वास्तहवकता यिी थी हक उसका मस्ट्स्तष्क अपने काम में इतना तन्मय था हक वि अपनी दुकान के सामने से िो कि िाते हुए िािा को निीं ंदेख सका। मैंने उस बाण-हनमाथता से मस्ट्स्तष्क के आत्यस्ट्न्तक ध्यान के गुण की हिक्षा ग्रिण की िै।

२३. मक्रिा अपने मुाँि से लम्बे-लम्बे ािगे हनकाल कि उनसे ािला बनाता ि ै। हकन्तु वि स्व-हनहमथत ािले में ािी आबद्ध िो िाता ि ै। हफि भी मनुर्ष् अपने हवचािों ंका एक ािल बुन कि उसमें आबद्ध िो िाता ि ै। अतः ज्ञानी व्यस्ट्क्त को सांसारिक हवचािों ंका परित्याग कि केवल ब्रह्म का िी हचन्तन किना चाहिए। मैंने मक्रिे से यिी सीखा ि ै ।

२४. भृंगी एक कीि़े को पक़ि कि अपने आवास में ािल देता ि ै औि हफि उसे िंक मािता ि ै। असिाय कीि़ा सवथदा उस भृंगी के आगमन तथा उसके िंक के हवषय में सोचा किता ि ै। अपने इस अनवित हचन्तन के काण वि स्वयं भृंगी बन िाता ि ै। मनुर्ष् हिस रूप का हचन्तन किता ि ै, उसे समय आने पि उसी रूप की प्रास्ट्प्त िो िाती ि ै। वि िैसा सोचता ि ै, वैसा िी िो िाता ि ै। मैंने उस भृंगी तथा कीि़े से आिा के अनवित हचन्तन िािा अपने स्वरूप में स्ट्स्थहत, ििेिाध्यास का परित्याग तथा मुस्ट्क्त-प्रास्ट्प्त की हिक्षा ग्रिण की ि ै।

िािा यदु दत्तात्रेय के इस उपदेि से अत्यन्त प्रभाहवत हुए। वे संसाि का परित्याग कि आिा पि अनवित ध्यान का अभ्यास किने लगे।

दत्तात्रेय हकसी भी प्रकाि की असहहष्णुता तथा पक्षपात से पूणथतः मुक्त थे। कि़ीं ंसे भी प्राप्त हकसी भी स्रोत से वे ज्ञान प्राप्त कि लेते थे। ज्ञान के हिज्ञासुओं ंको दत्तात्रेय के उदाििण का अनुकिण किना चाहिए।

योगी िैगीषव्य

िैगीषव्य नामक एक मिान् योगी थे। उन्हें हनिन्ति दि मिाप्रलयों ंकी अवहि में हुए अपने पूवथ-िन्मों ंका पूणथ ज्ञान था। एक हदन ऋहष अवात्य ने उनसे किा- "आपने निक में, पिु-योहन में तथा गभथ में अनेक क्लेिों ंका अनुभव हकया ि ै। मनुर्ष् तथा देवता के रूप में आपने बाि-बाि िन्म ग्रिण हकया ि ै। निक में प्राप्त दुःखों ंतथा स्वगथ में प्राप्त सुखों ंके हवषय में आपके क्या अनुभव ि ैं? मानव-योहन में सवाथहिक सुख अथवा दुःख कौन-सा ि ै?"

योगी िैगीषव्य ने किा- "दि मिाकल्पों ंमें समाहित अपने िीवन में मैंने निक तथा पिु-योहन के कष्टों ंका अनुभव हकया ि ै। मनुर्ष् तथा देवता के रूप में मैंने अनेक बाि िन्म-ग्रिण हकया ि ै। संसाि िो या स्वगथ-कि़ीं ंहकसी वस्तु में अल्प मात्रा में भी सुख निीं ंि ै। मैंने िो कुछ अनुभव हकया ि ै, उसे मैं मात्र दुःख के नाम से िी अहभहित किता हाँ।"

अवात्य ने पुनः पूछा- "ि े योगी, क्या प्रकृहत-लय की अवस्था में प्राप्त आनन्द तथा सन्तोष भी दुःख की िी कोहट में आते ि ैं?"

योगी िैगीषव्य ने उत्ति हदया- "हनस्सन्देि प्रकृहत-लय की स्ट्स्थहत में प्राप्त आनन्द हवषयों ंसे प्राप्त ऐस्ट्न्द्रय सुख से श्रेष्ठति ि ै; हकन्तु हनिपेक्ष स्वातन्त्र्य अथवा कैवल्य के हविुद्ध आनन्द की तुलना में यि दुःख िी ि ै। प्रकृहत-लय मात्र गुण-परिणाम ि ै। उसमें अभी भी तृष्णा-तन्तु हवद्यमान ि ै। िब योगी पूणथतः अनपेक्ष िो िाता ि ै तभी उसे हविुद्ध, अहमहश्रत, असीम तथा िाश्वत आनन्द की प्रास्ट्प्त िोती ि ै।"

हतरुमूल नायनाि

कैलास के हतरुमूल नायनिा एक मिान् योगी थे। भगवान् हिव के विान नन्दी की कृपा से उन्हें समस्त मित्ति अष्ट हसस्द्धयााँ प्राप्त थीं।ं वे अगस्त्य मुहन के हमत्र थे। वे कैलास से आ कि किाी में ििने लगे। इसके पिात् वे हचदम्बिम्, हतरुविाुतुिै तथा चेिई (मिास) के हनकटस्थ अन्य स्थानों ंपि गये। वे हतरुविाुतुिै के एक मस्ट्न्दि में भगवान् हिव की पूिा किने लगे। कुछ समय तक वे विीं ंििे।

एक बाि हतरुमूल नायनिा काविेी के तट पि स्ट्स्थत एक उद्यान में गये। विााँ उन्होंनें एक ग्वाले का मृत ििीि देखा। उनका ध्यान िव के चतुहदथक् उच्च स्वि में िााँभाती हुई गौओं ंकी ओि आकृष्ट हुआ। इससे वे ममाथित तथा गौओं ंके प्रहत दयािथ िो उठे। एक स्थान पि अपना ििीि छोड़ कि वे ग्वाले के मृत ििीि में प्रहवष्ट िो गये। वे हदन-भि गौओं ंकी देखिेख किते ििे औि उसके पिात् उन्होंनें उन्हें अपने-अपने घि भेि हदया। ग्वाले की पत्नी अपने पहत की मृतुयु से अवगत निीं ंथी। उसने अपने पहत का ििीि ििाण हकये हुए हतरुमूल नायनिा को आमस्ट्न्त्रत हकया; हकन्तु उन्होंनें उसके आमन्त्रण को अस्वीकाि कि हदया। अब उनकी इच्छा अपने ििीि में प्रहवष्ट िोने की हुई। उन्होंनें उसकी खोि की; हकन्तु उस स्थान हविेष पि उनका ििीि निीं ंहमला। उन्होंनें सोचा हक यि सब भगवान् की कृपा से िी िो ििा िै। ग्वाले के ििीि में िी वे आिुतुिै पहुाँचे औि मस्ट्न्दि के पहिम में पीपल के एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। विााँ उन्होंनें तहमल में 'हतरुमस्ट्न्तिम्' नामक एक ग्रन् की िचना की। इस ग्रन् में तीन सौ पद िैं हिनमें वेदों ंका साि-तत्त्व सहिहित िै।

पैगम्बि
ििथुश्त्र

ििथुश्त्र के िीवन-काल के हवषय में हनियपूवथक कुछ भी निीं ंकिा िा सकता। कुछ लोगों ंने इनका समय ६००० ई.पू. तथा कुछ अन्य लोगों ंने ई.पू. सातवीं ंिताब्दी माना िै।

प्राचीन ईिाहनयों ंमें िििथुश्त्र सवाथहिक मिान् पैगम्बि थे। उन्होंनें ब्रह्माण्ड के अहिपहत अहुिमज़्दा की उपासना के प्रहतष्ठापन तथा दैवी लक्ष्य की पूहतथ के हलए िन्म ग्रिण हकया था। आवेस्तन भाषा में उनकी स्वयं िहचत अमूल्य चिना-गाथा इस तर्थ् की ओि संकेत किती िै हक वे ईश्वि-प्रेिमाहवष्ट व्यस्ट्क्त थे।

आदिणीय पुरुिस्पो (Porushaspo) उनके हपता थे औि उनकी माता का नाम दुखदिवो (Dughdhvo) था। ििथुश्त्र का िन्म ईिान के पहिमी अंचल तख्त-ए-सुलेमान में ििअिबैिान िनपद में हुआ था। ईिान के प्राचीन सम्राट् मनुिहििा (Manushcihar) के ििाकीय परिविा से उनका प्रत्यक्ष वंगित सम्बन्ध था।

ईिान के पैगम्बि के अनुयाहययों ंने उन्हें िििथुश्त्र (पीले तथा वृद्ध ऊँटों ंका स्वामी) के नाम से अहभहित हकया था। उश्त्र का अथथ ऊँट िोता िै।

ईिान के पैगम्बि के िन्म पि प्रकृहत उल्लहसत िो उठी। वृक्षों,ं नहदयों ंतथा फूलों ंने आनन्द तथा िषथ व्यक्त हकया; हकनुतु दुष्टिााएँ भयभीत िो गयीं।ं अपने िन्म-ग्रिण के समय पैगम्बि ने सामान्य नश्वि ििुओं ंकी भााँहत रुदन निीं ं हकया। इसके हवपिीत उनके मुख से ििास के स्वि हनःसृत हुए।

उनके प्रहत अपनी श्रद्धा व्यक्त किने के हलए विााँ अनेक देवदूत तथा इनसे उच्चति मिान् देवदूत आये।

ििथुश्त्र का पारिवारिक नाम स्ट्स्पतमा था हिसका अथथ श्वेत िै। उनके दो ब्रि भाई तथा दो छोटे भाई थे। िििथुश्त्र का िन्म एक चमत्किा था। स्वगथ से अहुिमज़्दा की महिमा का अवतिण हुआ िो पैगम्बि की भावी माता के घि में प्रहवष्ट िो गयी। िब वे गभथवती हुईं, तब उनके यिााँ स्वगथ के मिान् देवदूत आये औि उन लोगों ंने गभथस्थ ििुु की उपासना-अभ्यथथना की।

ििथुश्त्र ने तीन हववाि हकये औि कई सन्तानों ंके हपता बने। उनकी पिली पत्नी से एक पुत्र तथा तीन पुहत्रयााँ हुईं। सबसे छोटी पुत्री पोरुहसस्ता (Pourucista) का हववाि िमस्पा से हुआ िो िििथुश्त्र की तीसिी पत्नी का चाचा था। ििथुश्त्र की दूसिी पत्नी से दो पुत्र हुए।

ििथुश्त्र के प्रािस्ट्म्भक िीवन से िम बहुत कम परिहचत िैं। बाल्यावस्था से िी वे अपने ज्ञान का प्रदिथन किने लगे थे। ज्ञाहनयों ंके साथ वे वाताथलाप में सस्ट्हिलत िोते औि हवहिमथयों ंकी हनन्दा किते।

प्रेिेतााओं ंने उनकी ित्या के प्रयत्न हकये। तुिाहनयन सम्राट् दुिस्रोबो ने भी बालक की ित्या के प्रयत्न हकये; हकनुतु दयालु ईश्वि ने चमत्कारिक हवहि से पैगम्बि की प्राणि–क्षा की।

सोलि वषथ की आयु से िी ि थुश्त्र में वैिाग्य-भाव हवकहसत िोने लगा। सांसारिक हवषय अपने प्रहत उन्हें आकहषथत
नीं ंकि सके। वे समस्त लौहकक सुखों ंको िेय समझते थे। वस्तुतः वे ऐस्ट्यि लालसाओं ंसे ऊपि उठ चुके थे। प्राहणमात्र के प्रहत उनमें गिन पे्रम तथा करुणा की भावना थी।
ििथुश्त्र बीस वषथ की आयु में गृि-त्याग कि इतस्ततः परिभ्रमण किने लगे। वे पहवत्रता तथा िमथ-पिायणता का िीवन व्यतीत किते थे। वे वनों ंमें घूमते तथा गुफाओं ंऔि पवथत-हिखिों ंपि एकाकी ििा किते थे। वाणी पि उनका हनयन्त्रण था औि अन्य इस्ट्यिों ंको भी उन्होंनें हवहित कि हलया था। वे हमतािािी थे औि अपना समय िान्त-हचत्त िो कि ध्यान में व्यतीत किते थे।

ििथुश्त्र को सबाताम (Sabatam) पवथत के हिखि पि समाहि अथाथत् ब्रह्माण्ड के सवोच्च अहिपहत अहुिमज़्दा से तादात्म्य की अनुभूहत हुई। उन्हें िमथ-गुरु-सुलभ हदव्य अन्तदृथहष्ट की प्रास्ट्प्त हुई। उन्होंनें अहुिमज़्दा से प्रत्यक्ष वाताथलाप हकया, हिन्होंनें उन्हें ज्ञान-दान से उपकृत हकया। अहुिमज़्दा की कृपा से उन्होंनें सप्त-हवि ज्ञान का साक्षात्कि हकया। तीस वषथ की आयु में उन्हें पैगम्बि किा िाने लगा। अन्तदृथहष्ट के हदव्य प्रकाि की सम्प्रास्ट्प्त के पिात् वे अहुिमज़्दा के प्रख्यात सन्देिवािक िो गये।

आध्यास्ट्त्मक पथ पि ििथुश्त्र की सिायता अनेक मिान् देवदूतों ंने की। मिान् देवदूत उच्चतम कोहट के हदव्य सन्देिवािक िैं। वे अहुिमज़्दा के अनुवती िोते िैं। वे भगवान् हिव के गणों ंतथा भगवान् हवष्णु के अनुवती िय, हविय औि सुनन्द के अनुरूप िैं। वे संसाि के लोक-पाल िैं। ििथुश्त्र इन मिान् देवदूतों ंसे प्रत्यक्ष वाताथलाप किते थे।

वोहुमानि (Vohumanah) हविुद्ध हवचाि का मिान् देवदूत िै। वि घिेलू पिुओं ंका अहिष्ठातृ देवता िै। उसने ििथुश्त्र के समक्ष प्रकट िो कि िािीरिक आविण के परित्याग में उनको सियोग प्रदान हकया औि उनकी आत्मा को अहुिमज़्दा के सवोच्च िाम की औि हदिा-हनदेि हदया। स्वयं अहुिमज़्दा ने पैगम्बि को उपदेिों ंके माध्यम से हदव्य ज्ञान प्रदान हकया। ििथुश्त्र ने उनके अनुदेिों ंका पालन हकया।

िब ििथुश्त्र अहुिमज़्दा के हदव्य िाम से नीचे आ ििे थे, तब आसुिी िस्ट्क्त के प्रतीक अिमान (Ahriman) ने उन पि भयंकि आक्रमण हकया। वि ििथुश्त्र की ित्या कि देना चािता था; हकन्तु अपनी आध्यास्ट्त्मक िस्ट्क्तयों ंके काैिण वे सुिहक्षत ििे। अिमान पि हविय प्राप्त किने के पिात् वे सभी दुष्टात्माओं ंके स्वामी िो गये। उन्होंनें पुनः उपदेि देना प्राििम्भ कि हदया।

ििथुश्त्र को हितीय हदव्य अन्तदथिथन का अनुभव हुआ। उसी मिान् देवदूत ने पैगम्बि से पिुओं ंकी समुहचत देख-भाल तथा सुिक्षा का अनुिोि हकया।

अपने तृतीय हदव्य अन्तदथिथन में ििथुश्त्र ने पहवत्र अहग्न के अहिष्ठातृ देवता तथा िमथपिायणता के मिान् देवदूत अि वहिश्त (Asha Vahishat) से वाताथलाप हकया। मिान् देवदूत ने ििथुश्त्र को पहवत्र अहग्न के साथ-साथ सभी अहग्नयों ंकी सुिक्षा का आदेि हदया।

ििथुश्त्र ने िातुओं ंके अहिष्ठातृ देवता मिान् देवदूत खिैथ्र वैयथ (Khehathra Vairya) से वाताथलाप हकया हिसने पैगम्बि को िातुओं ंकी समुहचत देख-भाल का आदेि हदया। इसके पिात् ििथुश्त्र ने पृथ्वी के अहिष्ठातृ देवता तथा िालीनता के मिान् देवदूत स्पेन्ता अिमैथ (Spenta Armaith) से वाताथलाप हकया। पुनः उन्होंनें अपस् के अहिष्ठातृ देवता तथा स्वास्थ्य के मिान् देवदूत िौिवतात (Hauravatat) से वाताथलाप हकया तथा अन्ततः उनका वाताथलाप वनस्पहतयों ंके अहिष्ठातृ देवता तथा अमित्व के मिान् देवदूत अमेिेतात (Ameretat) से हुआ।

िथिुश्त्र को इन हदव्य साक्षात्किाों ंके किाण देवताओं ंके हदव्य क्रम-सोपान का पूणथ ज्ञान प्राप्त िो गया। िेन्द अवेस्ता (Zend Avesta) पािहसयों ंके हलए बाइहबल तथा गीता िै हिसमें ईश्विीय ज्ञान सहिहित िै। पैगम्बि ने इसे सवोच्च प्रभु अहुिमज़दा से प्राप्त हकया था।

िथिुश्त्र के हदव्य अनुभवों ंतथा छान्दोग्य उपहनषद् में वहणथत सत्यकाम िाबाल के अनुभवों ंमें सादृश्य के दिथन िोते िैं। वायु देवता, अहग्न देवता तथा अपस् के अहिष्ठातृ देवता वरुण ने सत्यकाम को हदव्य ज्ञान प्रदान हकया था। मिान् देवदूत वहिश्ता (Vahishta) तथा िािवतात हिन्फ्दुओं ंके क्रमिः अहग्नदेवता एवं वरुण देवता िैं।

िथिुश्त्र कवीस (Kavis) तथा किपान्स (Karpans) को िेय दृहष्ट से देखते थे। ये प्रेेतािाओं ंके पूिक थे। किपानों ंमें हविुद्ध िाहमथक अनुष्ठानों ंके प्रहत श्रद्धा के भाव निीं ंथे। अपने िाहमथक अनुष्ठानों ंमें वे मादक पेय िोम (Home) का सेवन हकया किते थे। यि उनका व्यसन बन चुका था। पैगम्बि ने सभी प्रेेत-पूिक दुष्ट स्त्री-पुरुषों ंतथा उनके नायक कवीस तथा किपान को अपने िमथ में दीहक्षत किने का प्रयत्न हकया; हकन्तु ये अपने सम्प्रदाय के पुिोहित थे औि सभी रूहढ़वादी पुिोहित स्वभावतः व्यापक िमुाों ंके हविोिी िोते िैं। अतः िथुश्त्र अपने प्रयत्न में असफल िो गये।

िथिुश्त्र इतस्ततः भ्रमण किते िे। वे भाित तथा चीन तक गये; हकन्तु प्रािम्भ में हकसी ने भी उनका सन्देि ग्रिण निीं ंहकया। उन्होंनें सवथप्रथम अपने चचेिे भाई मयध्योवी-मिा (Maidhyoi-Madnha) को अपने िमथ में दीहक्षत हकया। उनका यि हिष्य उनके प्रहत आिीवन हनष्ठावान् बना ििा।

िाि-सभा के हवद्वान् पुिोहित कवीस तथा किपान ने पैगम्बि के हवरुद्ध ईिान-सम्राट् हवितास्प (Vishtasp) के कान भि हदये। उन्होंनें पैगम्बि के हवरुद्ध षड्यन्त्र किते हुए सम्राट् के सुिख उन पि िादूगि िोने का आिोप लगाया। सम्राट् उनकी इस बात से सिमत िो गया हक पैगम्बि को कािागाि में िाल हदया िाये हिससे वे क्षुिा से पीहड़त िो कि प्राण त्याग दें। िथुश्त्र को कुछ हदनों ंतक कािागाि में ििना पड़ा िााँ ईश्वि ने उनकी प्राण-िक्षा की।

एक बाि सम्राट् का सेनेि-पात्र काला घोड़ा अस्वस्थ िो गया। उसके चािों ंपैि उसके पेट की ओि चले गये थे। िथिुश्त्र ने सम्राट् को सूहचत हकया हक वे उसे िोग-मुक्त कि देंगे। उन्होंनें सम्राट् के समक्ष चाि ितें िखीं ंहिन्हें उसने िसि िी स्वीकाि कि हलया। हवितास्प नये मत को स्वीकाि कि लेगा, उसे इस बात के प्रहत सिमहत प्रदान किनी िोगी हक उसका पुत्र इस्फेस्टन्दयाि (Isfendiar) इस नये मत की िक्षा किेगा, िथुश्त्र को साम्राज्ञी हुताओसा (Hutaosa) को दीहक्षत किने की अनुमहत प्रदान की िायेगी औि सम्राट् को िथुश्त्र के हवरुद्ध षड्यन्त्र किने वालों ंके नाम प्रकट कि उन्हें दस्टण्डत किना िोगा। वे चाि ितें यिी थीं।ं

इसके बदले में सम्राट् ने भी अपनी चाि ितें प्रस्तुत किते हुए उनसे मााँग की हक उसे अपनी अस्टन्तम हनयहत तथा स्वगथ में अपने स्थान के हवषय में िानकािी प्राप्त िो िाये, उसका ििीि अभेद्य िो िाये, उसे सावथभौम ज्ञान की प्रास्टप्त िो औि पुनरुत्थान तक उसकी आत्मा उसके ििीि से हवलग न िो। उसी समय सम्राट् तथा साम्राज्ञी के समक्ष तीन मिान् देवदूत प्रकट हुए औि उन दोनों ंकी आाँखें चौंहियाि गयीं।ं उन्हें देखते िी वे कााँपने लगे। उन्होंनें प्रकाि से हनःसृत िोने वाले िब्द सुने हिनका तात्पयथ यि था हक वे (मिान् देवदूत) ईश्वि के आज्ञानुसाि उनको िथिुश्त्र के िमथ की महिमा को प्रदहिथत किने के हलए प्रकट हुए िैं।

सम्राट् हवितास्प को हवश्वास िो गया औि वि पैगम्बि की अलौहकक िस्टक्त का कायल िो गया। वि उनके चिणों ंपि हगि पड़ा, उसने उनके मत को स्वीकाि कि हलया तथा ईिान का पैगम्बि मान कि उनकी पूिा की। उसे स्वगथ की एक झलक का अनुभव हुआ। मिान् देवदूत अि वहिश्त ने उसे पीने के हलए अमृत हदया। साम्राज्ञी तथा अन्य

नायकों ं के अहतरिक्त सम्राट् के भाई तथा िि थुश्त्र के श्वसिु फ्रिााऔत्र (Frashaoshtra) भी िि थुश्त्र िाा प्रहतपाहदत मत के हनष्ठावान् अनुयायी िो गये। ििाकीय संक्षिण के किाण इस नये मत का प्रचाि-प्रसाि दूि-दूि तक िो गया। इस नये मत को िन-ििसाािण ने भी अपनी स्वीकृहत प्रदान की औि ििथुश्त्र िाा प्रहतपाहदत यि मत इिान का िाििामथ िो गया।

इस नये िमथ की सफलता इिान तथा तूिान के बीच दो कटुतापूणथ युद्धों ंका किाण बन गयी; हकन्तु सम्राट् हवितास्प के भाई ििि तथा स्वयं सम्राट् ने ितुरुओं ंको पिाहित कि हदया। इस युद्ध में ििि का योगदान अियथिनक था। वि एक दैिय योद्धा हसद्ध हुआ। उसका िौयथ अवणथनीय था; हकन्तु हवश्वासघाती हविास्फि (Vidrasfsh) ने पीछे से छलपूवथक एक हवषाक्त बिछी से उसकी ित्या कि दी। तूिान के सम्राट् अयाथस्प (Aryasp) ने इस भयंकि अपकमथ के पुिस्काि-स्वरूप उससे अपनी पुत्री के हवविा का वचन दे हदया।

िििि का युवा पुत्र बस्तविा (Bastwar) एक िस्ट्क्तिाली योद्धा था। उसको िमिाथी किा िा सकता था। िस्ट्क्त में वि भीष्म के समकक्ष था। उसने हविास्फि की ित्या कि अयाथस्प को पिाहित कि हदया।

अपनी ििाय के अििठा वषों के पिात् सम्राट् अयाथस्प ने इिान पि पुनः आक्रमण हकया। उसने मस्ट्न्दिों ंको ध्वस्त कि हदया, पुिोहितों ंकी ित्या कि दी औि िन्द अवेस्ता को िला िाला। इस हितीय युद्ध में सम्राट् हवितास्प का पुत्र इस्िेफेस्ट्न्दयाि मिान् नायक हसद्ध हुआ। उसने अयाथस्प को इिान से िबाि हनकाल कि उसकी ित्या कि दी।

इिान के पैगम्बि नुि-अदि (Nush-Adar) के मस्ट्न्दि में िाथ में माला हलये वेदी के समक्ष प्राथथना कि िि थे। उसी समय ब्रात्रोकिि (Bratrok-Resh) नामक एक तूिानी ने तलविा से उनकी ित्या कि दी।

ििथुश्त्र ने ब्रात्रोकिि के ऊपि अपनी माला फेंक दी। माला से आग की लपट उठी हिसमें वि भस्म िो गया। सतित्ति वषथ की आयु में ििथुश्त्र का दिेान्त हुआ औि इस प्रकाि इिान का महिमामय पैगम्बि, अहुिमज़दा के मिान् सन्ेदिवािक तथा ििथुश्त्रवाद अथाथत् मज़द-उपासना के संस्थापक का अन्त िो गया।

ििथुश्त्र ने अनेक चमत्काि हकये। उन्होंनें देवदूतों ंके आदिे का पालन हकया, अहग्नयों ंतथा पिुओं ंकी िक्षा की, िोहगयों ंको िोग-मुक्त हकया औि नेत्रिीनों ंको उनकी नेत्र-ज्योहत पुनः प्रदान की। एक हविान् तथा हचहकत्सक के रूप में उन्होंनें मिान् ख्याहत अहिथत की। उन्होंनें अहग्न-देवता के अनेक मस्ट्न्दिों ंकी स्थापना की औि अपने मत का प्रचाि-प्रसाि दिे के कोने-कोने में हकया। उन्होंनें प्रेत-पूिा, िादू-टोना तथा अहभचाि के प्रचलन का उन्मूलन हकया। उन्होंनें मिामािी, िाष्टीय आपदाओं ंतथा घोि हवपहत्तयों ंका हनवािण, िोहगयों ंको िोगमुक्त, िाहनकि िीवों ं को प्रभाविून्य तथा पृथ्वी को प्रचुि मात्रा में िल प्रदान हकया।

ििथुश्त्र िमथहनष्ठ, कुलीन तथा दयालु थे। उनका सन्ेदि नैहतक िीवन का उदात्त सन्ेदि था िो अमित्व, िाश्वत आनन्द तथा ईश्वि अथवा अहुिमज़दा के हसद्धान्तों ंकी सम्प्रास्ट्प्त का मागथ प्रिस्त किता िै। "िो िमथपिायण िैं, उनसे प्रेम किो; दुःखी िनों ंके प्रहत अपने हृदय में करुणा को स्थान दो", इन्हीं ंमें ििथुश्त्र की नीहतिास्त्रीय हिक्षा हनहित िै।

पाश्वथनाथ

पाश्वथनाथ को इ ि का अवतिा माना िाता िै। वे किाी-िािने इक्ष्वाकुवंिीय िािाािा हवश्वसेन के पुत्र थे। उनकी माता का नाम वामादेवी था िो िािाािा महिपाल की पुत्री थीं।ं वे तेईसवें तीथांकि थे। उनका िन्म ८७२ ई.पू. में पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादिी को हुआ था। सिी

पाश्वथनाथ ने आठ वषथ की आयु से िी गृिस्थाश्रम के िादि व्रतों ंका अनुपालन प्रािम्भ कि हदया था। फागन काल- सि िै सा

पाश्वथनाथ सोलि वषथ की आयु में हसंिासिनारूढ़ िो चुके थे। एक हदन उनके हपता हवश्वसेन ने उनसे किा- "िे पुत्र, अपने यिस्वी िािवंि की सन्तहत-पिम्पिा को अहवस्च्छिन्न िखने के हलए तुम्हािा हववाि अत्यावश्यक िै। िािा नाहभ के इच्छानुसाि ऋषभ को भी हववाि किना पड़ा था।" तया

अपने हपता के इन िब्दों ंसे पाश्वथनाथ अत्यन्त भयभीत िो उठे। उन्होंनें किा- "मैं ऋषभ की भााँहत दीघथिीवी निीं ंिो सकूाँगा। मुझे कुछ िी वषों तक िीहवत िाना िै। मैंने अपने िीवन के सोलि वषथ बाल-सुलभ क्रीड़ाओं ंमें व्यथथ िी गाँवा हदये। तीस वषथ की आयु में मैा दीक्षा ग्रिण अहनवायथ िै। तब क्या मैं अपूणथ, अहनत्य तथा माहयक सुखों ंके प्राप्त्यथथ अल्पावहि के हलए हववाि कि लूाँ?"

पाश्वथनाथ के हृदय में वैिाग्य िाग्रत िो उठा। उन्होंनें मन-िी-मन हवचाि हकया- "मैंने दीघथ काल तक इ ि के पद का उपभोग हकया िै, हफि भी सुख के प्रहत मेिी तृष्णा का क्षय निीं ंिो पाया। हिस प्रकाि ईंिन के आहिक्य से अहग्न की ज्वाला का िमन निीं ंिोता, उसी प्रकाि सुखोपभोग से सुख की तृष्णा में वृस्द्ध िी िोती िै। उपभोग के समय सुख रुहचकि प्रतीत िोते िैं; हकन्त उनके परिणाम हनहित रूप से अनथथकािी िोते िैं।

"सांसारिक हवषयों ंके प्रहत आसस्क्त के कािण यि िीव अनाहद काल से िन्म, िािा आहद के दुःखों ंका अनुभव किता आ िािा िै। इस्न्द्रय-लोलुपता की सन्तुहष्ट के हलए वि दुःख के संसाि में भ्रमण किता िािा िै। वैषहयक तुहष्ट के हलए वि नैहतक हवहि-हनषेि की ओि ध्यान निीं ंदेता औि इस प्रकाि िघन्य पापों ंमें हलप्त िो िाता िै। ऐस्न्द्रय सुखों ंकी प्रास्प्त के हलए वि पिु-ित्या किता िै। चोिी, लोभ, पि-स्त्री-गमन तथा सभी प्रकाि के पापों ंऔि अपिािों ं के मूल में तृष्णा िी हवद्यमान िै।

"पाप-कमथ के परिणाम-स्वरूप िीव िन्म-मिण के चक्र में आबद्ध िो िाता िै। इसके फल-स्वरूप उसे हनम्नति पिु-योहन में अवतरित िोना तथा निक की यातना का भोग किना पड़ता िै। सुख की इस तृष्णा का हनमथम उच्छेद अत्यावश्यक िै। मैंने अब तक अपना िीवन व्यथथ िी गाँवाया; हकन्तु अब मैं सुखों ंकी अथथिीन खोि में औि अहिक संलग्न न िो कि गम्भीितापूवथक सम्यक् आचिण का अभ्यास करूाँगा।"

िािकुमाि पाश्वथनाथ अनुप्रेक्षा की िादि हवचािों ंसे परिहचत थे। उन्होंनें संसाि-त्याग का हनश्चय कि हलया। अपने माता-हपता की आज्ञा प्राप्त कि वे घि से हनकल पड़े। गृि-त्याग के पश्चात् वे वन में चले गये। विााँ वे पूणथतः हनवथस्त्र िो गये। उत्ति की ओि मुाँि कि उन्होंनें मुस्क्त-प्राप्त मिान् हसद्धों ंको नमन हकया औि िाहिने िाथ से अपने केि के पााँच गुच्छों ं को लुंहचत कि वे मुहन या श्रमण बन गये।

पाश्वथनाथ ने उपवास का अभ्यास हकया। उन्होंनें अहवचल तथा हनष्ठा के साथ अहथत संघ के अट्ठाईस प्रािस्म्भक तथा चौिानवे माध्यहमक व्रतों ंका अनुपालन हकया। ध्यानावस्था में वे आत्म-हवस्मृत िो िाते थे। वे हविुद्ध सवथज्ञता की स्स्थहत को प्राप्त िो चुके थे। उन्हें सम्मेद की पिाड़ी पि आत्यस्न्तक मुस्क्त की प्रास्प्त हुई। आिकल इस पिाड़ी को पाश्वथनाथ की पिाड़ी किते िैं।

पाश्वथनाथ ने किाी, कोसी, किोल, पांचाल, मिाािष्ट्र, मगि, अवन्ती, मालवा, अंग तथा वंग में उपदेि हदये। अनेक व्यस्क्त िैन िमथ में दीहक्षत िो गये। पाश्वथनाथ ने अपने िीवन के सत्ति वषथ उपदेि देने में व्यतीत हकये।

मिावीि ने पाश्वथनाथ की हिक्षाओं को संिोहित-संवहिथत हकया। उनके उपदेिों में ऐसा कुछ भी न था हिसे सवथा नवीन किा िा सके।

पाश्वथनाथ एक सौ वषथ तक िीहवत िि। ८४२ ई.पू. में तीस वषथ की आयु में उन्होंनें गृि-त्याग हकया औि ७७२ ई.पू. में उन्हें हनवाथण की प्रास्प्त हुई।

तेईसवें तीथांकि पाश्वथनाथ महिमास्त्ति िों!

बुद्ध

ईसापूवथ छठी िताब्दी में भाित में िमथ हवसूमृहत के गभथ में हवलीन िो चुका था। वेदों के उदात्त आदिोपदेि पृष्ठभूहम में िाल हदये गये थे। सवथत्र पुिोहित-तन्त्र का वचथस्व था। कुहटल-कपटी पुिोहितों ने िमथ को व्यवसाय बना हलया था।
लोगों को हवहभि हवहियों से प्रवंहचत कि उन्होंनें अपने हलए अकूत िन-िाहि संहचत कि ली थी। वे हनतान्त अिोहमथक थे औि िमथ के नाम पि इन हृदयिीन पुिोहितों का पदानुसिण किता हुआ िन-समुदाय अथथिीन कमथकाण्डों के अनुष्ठान में संलग्न था। लोग हनदोष तथा मूक पिुओं की ित्या कि हभि-हभि प्रकाि के यज्ञानुष्ठान हकया किते थे। देि को बुद्ध की कोहट के हकसी सुिािक की आवश्यकता की तीव्रति अनुभूहत िो ििी थी।

जन्म

िाक्याहिपहत िुद्धोदन बुद्ध के हपता थे औि उनकी माता का नाम माया था। बुद्ध का िन्म ५६० ई.पू. तथा उनकी मृतुयु ४८० ई.पू. में हुई थी। मृतुयु के समय उनकी आयु अस्सी वषथ थी। उनका िन्म नेपाल के हिमालय क्षेत्र के अन्तगथत पाल्यापवथत की उपत्यका में स्स्थत कहपलवसुतु नगिी के हनकटस्थ लुस्म्बनी नामक वन में हुआ था। कहपलवसुतु नामक यि नगिी वािाणसी से लगभग सौ मील दूि िोहिणी नामक एक छोटी नदी के तट पि स्स्थत िै। िब बुद्ध के इस ििािाम पि अवतीणथ िोने का समय आया, तब स्वयं देवताओं ने उनके मागथ में हदव्य तथा मांगहलक प्रतीकों एवं िुभाकाि लक्षणों की संिचना कि दी। ऋतु के स्वभाव के प्रहतकूल उपवन पुस्ष्पत िो चले औि वषाथ की सुखद-मन्द फुिािें पड़ने लगीं। वाताविण में स्वहगथक संगीत गूंि उठा तथा सुिहभत वायु बिने लगी। नविात हििु के ििीि पि बत्तीस मांगहलक हचह्न (मिाव्यंिन) थे िो उसकी भावी मिानता के द्योतक थे। इनके अहतरिक्त उसके ििीि पि अनेक आनुषंहगक हचह्न (अणुव्यंिन) भी थे। पुत्र-िन्म के सात हदनों के पिात् िी माया का देिान्त िो गया। हििु का पालन-पोषण उसकी बिन मिाप्रिापहत ने हकया हिसने उसकी प्रहतपाहलका माता का उत्तिदाहयत्व वरिन हकया।

ज्योडिडषयो की भडवष्यवाणी

हििु हसद्धाथथ के िन्म के अवसि पि ज्योहतहषयों ने उसके हपता के समक्ष यि भहवष्यवाणी की: "युवावस्था को प्राप्त िोने पि यि बालक या तो एक चक्रवती सम्राट् िोगा या गृि-त्याग के पिात् सािु-वेष िािण कि मानव-िाहत की मुस्क्त के हलए ज्योहतष्मती प्रज्ञा से सम्पि बुद्ध िो िायेगा।" तब िािा ने पूछा : "मेिा पुत्र हकन वसुतुओं को देख कि संसाि से हविक्त िोगा?" ज्योहतहषयों ने उत्ति हदया "चाि लक्षणों को देख कि।" िािा ने पूछा : "ये चाि लक्षण क्या

ै?" ज्योहतहषयों ंने कि : "एक ििथिकाय वृद्ध, एक ोगी, एक िव तथा एक सिु को देख कि ििाकुमाि संसाि के प्रहत हविक्त ो ायेगा।"

ुद्धोधन की सिककिा

यि सोच कि हक किीं ंवि अपने बहुमूल्य पुत्र से वंहचत न ो ाये, ुिद्धोन उसे सांसारिक वसुतुओं ंके प्रहत आसक्त किने के अथक प्रयास में संलग्न ो गये। ऐस्ट्यि सुखोपभोग के प्रहत उसकी आससट्क्त तथा एकान्त एवं हनिथनता के व्रत-ग्रिण के प्रहत उसकी हविस्ट्क्त के हलए उन्होंनें उसके चतुहदथक् हवलास तथा िसोन के समस्त उपकिणों ंकी व्यवस्था कि दी। उन्होंनें उसका हववाि कि उसे एक ऐसे स्थान पि िख हदया ो उन प्राचीिों ंसे आवेहष्ठत था हिनके अन्तगथत उद्यान, िाप्रासाद, संगीत तथा नृत्य आहद सभी कुछ उपलब्ध थे। उसको प्रमुहदत तथा प्रफुल्ल िखने के हलए अगहणत सौन्दयथमयी युवहतयााँ उसकी सेवा में संलग्न िती थीं।ं ुिद्धोन हविेष रूप से उसको उन चाि लक्षणों ंसे हवलग िखना चािते थे हिनके किाण उन्हें उसके तपस्वी ो ाने का भय था। िाा ने किा- "इसी क्षण से इन लक्षणों ंसे युक्त हकसी भी व्यस्ट्क्त को उसके हनकट मत आने दो। इस प्रकाि वि बुद्ध निीं ं ि पायेगा। मेिी कामना ै हक मेिा पुत्र चािों ंमिािीपों ंतथा दो सिस्र सिवती ीपों ंपि अपनी प्रभुसत्ता तथा अपने अहिकाि का उपभोग किे औि छत्तीस योिन की हवसूतृत परिहि वाले स्वगथ लोकों ंमें उसका अबाि हवचिण ोता िे।" इतना कि कि उन्होंनें चािों ंहदिाओं ंमें एक-एक योिन पि चाि-चाि िप्रिी हनयुक्त कि हदये हिससे उक्त चाि प्रकाि के व्यस्ट्क्तयों ंपि उनके पुत्र की दृहष्ट न पड़ सके।

प्रव्रज्या

बुद्ध का प्रािस्ट्म्भक नाम हसद्धाथथ था। इस िब्द का अहभप्राय उस व्यस्ट्क्त से ै हिसकी लक्ष्य-पूहतथ ो चुकी ो। हसद्धाथथ का पारिवारिक नाम गौतम था। उनको संसाि में बुद्ध के नाम से ाना ाता ै। लोग उनको ाक्यमुहन भी किते थे हिसका अथथ ै ाक्यवंिीय मुहन।

हसद्धाथथ की बाल्यावस्था कहपलवसुतु के परिसि में व्यतीत हुई। सोलि वषथ की आयु में उनका हववाि हुआ। उनकी पत्नी का नाम यिोििा था औि उनके ाहुल नामक एक पुत्र था। उनतीस वषथ की आयु में आध्यास्ट्कि खोि तथा योग-सािना के प्रहत स्वयं को पूणथतः समहपथत कि देने के हलए उन्होंनें एक हदन अकस्मात् ी गृि-त्याग कि हदया। एक घटना मात्र से उत्प्रेरित ो कि वे प्रव्रज्या के मागथ की औि उन्मुख ो गये। एक हदन उन्हें हकसी प्रकाि अपने प्राचीि-परिवेहष्ठत हनवास स्थान से बहिगथमन का अवसि प्राप्त ो गया औि वे अपने भृत्य चान्न के साथ लोगों ंके ीवन-यापन की हवहि से परिहचत ोने के हलए नगि में इतस्ततः घूमने लगे। विााँ एक ििथिकाय वृद्ध, एक ोग-ग्रस्त व्यस्ट्क्त, एक िव तथा एक सिु को देख कि अन्ततः उन्होंनें संसाि-त्याग का हनिय कि हलया। उनको इस तथ्् का अनुभव ोने लगा हक एक हदन उनको भी िा, ोग तथा मृतुयु से ग्रस्त ोना पड़ेगा। इसके अहतरिक्त उस सिु के सौम्य तथा गत्याक व्यस्ट्क्तत्व ने भी उन्हें अपनी औि आकहषथत हकया। उन्होंनें मन-ी-मन सोचा- 'मुझे इस दुःखमय संसाि का परित्याग कि सिु-वृहत्त ग्रिण कि लेनी चाहिए। सुखोपभोग तथा हवलास से ओत-प्रोत यि ऐहिक ीवन हनतान्त अथथिीन ै। मेिा क्षय भी अहनवायथ ै औि मैं भी वृद्धावस्था के परिणाम से मुक्त निीं ंहूाँ। सांसारिक सुख क्षहणक ैं।'

गौतम ने गृि, िन, ाज्य, सत्ता, माता, पत्नी तथा अपने एकमात्र पुत्र का सवथदा के हलए परित्याग कि हदया। मुस्ट्ण्डत-िि ो कि उन्होंनें पीत वस्त् िाण कि हलया। तत्पिात् उन्होंनें मगि साम्राज्य की िािानी ािगृि की औि प्रस्थान हकया। विााँ आस-पास की पिाहड़यों ंमें अनेक गुफाएाँ थीं ंहिनमें अनेक वैखानस िा किते थे। हसद्धाथथ ने अपने प्रथम आचायथ के रूप में अलाम कलाम नामक वैखानस का चयन हकया; हकन्तु वे उनके उपदेिों ंसे सन्तुष्ट निीं ंो सके। उनका परित्याग कि उन्होंनें उद्दक ामपुत्त नामक एक अन्य यहत से आध्यास्ट्कि उपदेि की याचना

की। अन्ततः उन्होंनें योग-सािना का संकल्प हकया। वे उरुहवला के वन में चले गये हिसे आिकल बोिगया किते िैं। विााँ उन्होंनें छि वषों तक कठोि तप तथा प्राणायाम की सािना की। उन्होंनें आि-हनग्रि के माध्यम से सवोच्च िास्ट्न्त की सम्प्रास्ट्प्त का हनिय हकया। वे लगभग पूणथतः हनिािाि िोने लगे; हकन्तु इस हवहि से भी उनको हकसी प्रकाि की प्रगहत का अनुभव निीं ंिो सका। वे कंकाल मात्र एवं क्षीणा–स्ट्क्त िो कि िि गये।

उसी समय कुछ नतथहकयााँ उस मागथ से वीणा की िुन पि सोल्लास गाती हुई िा ििी थीं।ं बुद्ध को उनके गीतों ंसे वास्तहवक आश्वासन प्राप्त हुआ। उन नतथहकयों ंके हलए उनके गीतों ंमें कोई गिन अथथवत्ता निीं ंहनहित थी; हकन्तु बुद्ध के हलए यि एक गूढ़ आध्यास्ट्मिक सन्देि था हिसने उन्हें उनके नैिाश्य से मुक्त कि उनको िस्ट्क्त तथा सािस से अनुप्राहणत कि हदया।

इस गीत का अथथ था :

"हसताि के सुि-ताल का अनुगमन किने वाला नृत्य सुखद िोता िै। िम हसताि के तािों ंको न अहिक ऊर्ध्थस्तिीय किें, न अहिक हनम्नस्तिीय। इसी स्ट्स्थहत में िम दिथकों ंके हृदय को तृप्त कि सकेंगी। अहिक कसा ताि खस्ट्ण्डत िो कि संगीत को हनष्प्राण कि देता िै। अहिक ढीला ताि भी मूक िो कि मृतप्राय िो िाता िै। िम अपने हसताि को न अहिक मन्द स्वि प्रदान किें, न अहिक तीव्र।"

सम्बोडध

एक बाि बुद्ध योग-सािना में हवफल िोने के कािण हवषण्ण मनःस्ट्स्थहत में थे। वे पूणथतः हकंकतथव्यहवमूढ़ िो चुके थे। एक ग्रामीण बाला उनके अवसादग्रस्त मुख-मण्डल को देख कि उनके समीप गयी औि बोली- "श्रद्धेय मिोदय, क्या मैं आपके हलए कुछ भोिन का प्रबन्ध करूाँ ? ऐसा प्रतीत िोता िै हक आप बहुत अहिक भूखे िैं।" गौतम ने उसे देख कि किा- "मेिी हप्रय बिन, तुम्हािा नाम क्या िै?" बाला ने उत्ति हदया - "आदिणीय मिोदय, मेिा नाम सुिाता िै।" गौतम ने किा- "सुिाता, मैं बहुत भूखा हाँ। क्या तुम वास्तव में मेिी क्षुिा को िान्त कि सकती िो?"

अबोि सुिाता गौतम के मन्तव्य को निीं ंसमझ सकी। उनकी क्षुिा आध्यास्ट्मिक थी। उनके अन्ति में सवोच्च िास्ट्न्त तथा आि-साक्षात्काि की हपपासा िाग्रत थी। वे आध्यास्ट्मिक भोिन की खोि में थे। सुिाता ने उनके समक्ष भोिन िख कि उनसे उसे ग्रिण किने का आग्रि हकया। गौतम ने मुस्किाते हुए किा- "हप्रय सुिाता, मैं तुम्हािे दयालु तथा सद्भावपूणथ स्वभाव से अत्यन्त प्रसन्न हाँ। क्या इस भोिन से मेिी क्षुिा िान्त िो सकेगी?" सुिाता ने उत्ति हदया- "िााँ मिोदय, इससे आपकी क्षुिा िान्त िो िायेगी। कृपया, अब आप इसे ग्रिण कीहिए।" गौतम एक हविाल अश्वत्थ वृक्ष के नीचे भोिन किने लगे। तबसे लोग उस वृक्ष को 'बोहि वृक्ष' किने लगे। गौतम ब्राह्ममुहतथ से सान्ध्य प्रिि तक उग्र हनिय तथा दृढ़ संकल्प के साथ ध्यान-मग्न में बैठे ििे। "भले िी मैं मृत्यु को प्राप्त िो िाऊाँ, भले िी मेिा ििीि नष्ट िो िाये औि भले िी मेिा ििीि िुष्क चमथ िो िाये, िब तक मुझे सम्बोहि की प्रास्ट्प्त निीं ंिो िाती, तब तक मैं इस आसन का परित्याग निीं ंकरूाँगा।" िाहत्र में वे उस वृक्ष के नीचे समाहि में प्रहवष्ट िो गये। माया अथाथत् माि ने उन्हें कई प्रकाि के प्रलोभन हदये; हकन्तु उनसे वे अप्रभाहवत ििे। उनके समक्ष वे अिय बने ििे। उन्हें दीस्ट्प्तमयी हवियश्री प्राप्त हुई। उन्होंनें हनवाथण प्राप्त कि हलया। उनका मुख-मण्डल हदव्य ज्योहत से दीस्ट्प्तमान् िो उठा औि वे आसन से उठ कि उस बोहि वृक्ष के नीचे आनन्द के उन्मेष में हनिन्ति सात हदनों ंतक नृत्य किते ििे। इसके पिात् िी उनकी चेतना सामान्य िो सकी। उनका हृदय दया औि करुणा से आप्लाहवत िो उठा। उन्होंनें अपनी उपलस्ट्ब्धयों ंमें सबको भागीदाि बनाना चािा। उन्होंनें समूपूणथ देि की यात्रा की औि स्थान-स्थान पि लोगों ंको अपने हसद्धान्तों ंतथा अपनी िाहमथक मान्यताओं ंका उपदेि हदया। वे एक परित्राता, मुस्ट्क्तदाता तथा उद्धािक िो गये।

बुद्ध अपने समाधिजन्य अनुभवों का हवविण इन िब्दों में प्रस्तुत किते ि- "इस प्रकाि मैं देखता हाँ हक मेिा मन ऐहिक सत्ता, ऐन्द्रिय सुखों, अपहसद्धान्तों तथा अज्ञान के कालुष्य से मुक्त िो गया िै।"

मुक्तावस्था में उन्हें यि ज्ञान हुआ- "मैं मुक्त हाँ, पुनजथन्म के दीप का हनवाथण िो चुका िै, िाहमथक परिभ्रमण की परिसमान्द्रप्त िो गयी िै, िो कुछ किणीय था उसे हकया िा चुका िै औि अब यि वतथमान अन्द्रस्तत्व अनावश्यक िो गया िै। मैंने सभी ित्रुओं को हवहित कि हलया िै; मैं सवथज्ञ हाँ; मैं पूणथतः हनष्कलंक हाँ; मैं प्रत्येक वस्तु का परित्याग कि चुका हाँ औि तृष्णा के हवनाि के माध्यम से मुझे हनवाथण प्राप्त िो चुका िै। िब मैं स्वयं ज्ञानी हाँ तब अपना आचायथ हकसे कहाँ? मेिा आचायथ कोई निीं िै। मेिे समकक्ष कोई निीं िै। इस संसाि में मैं पूणथ तथा सवथश्रेष्ठ आचायथ हाँ। एकमात्र मैं िी बुद्ध हाँ। वासनाओं के परििमन के फल-स्वरूप मुझे िान्द्रन्त तथा हनवाथण की सम्प्रान्द्रप्त िो चुकी िै। िमथ के साम्राज्य की स्थापना के हलए मैं वािाणसी िा ििा हाँ। इस संसाि के अन्धकाि में मैं अमित्व की दुन्दुहभ बिाऊाँगा।"

इसके पिात् भगवान् बुद्ध वािाणसी चले गये। एक हदन सन्ध्या-काल में वे मृगदाव में प्रहवष्ट हुए। उन्होंने विााँ प्रवचन हकया औि अपने हसद्धान्तों की हिक्षा दी। उन्होंने स्त्री-पुरुष, उच्च हनम्न, अज्ञ-हवज्ञ- इन सभी को हबना हकसी भेद-भाव के अपने उपदेिामृत से उपकृत हकया। उनके प्रथम हिष्यों में सभी सामान्य वगथ के थे हिनमें दो न्द्रस्त्रयााँ भी थीं। अपने पूवथ-िमथ का परित्याग कि उनके िमथ में दीहक्षत िोने वाला प्रथम व्यन्द्रक्त यि नामक समृद्ध युवक था। उसके अहतरिक्त उसके माता-हपता तथा उसकी पत्नी ने भी उनसे दीक्षा ग्रिण की। ये सभी उनके सामान्य हिष्य थे।

बुद्ध ने अपने उन पूवथ-हिष्यों से िास्त्राथथ हकया औि उनके समक्ष अपने तकथ प्रस्तुत हकये हिन्होंने उरुहवला के वन में उनका परित्याग कि हदया था। उन्होंने अपनी प्रभावोत्पादक युन्द्रक्तयों एवं अिेष बुन्द्रद्ध से उन्हें अपने हनकटस्थ कि हलया। उन्होंने सवथप्रथम कोन्दिो (Kondanno) नामक एक वृद्ध यहत को दीहक्षत हकया। अन्य लोगों ने भी भगवान् बुद्ध के हसद्धान्तों को स्वीकाि हकया। बुद्ध ने इस प्रकाि साठ हिष्यों को दीहक्षत-प्रहिहक्षत कि अपने हसद्धान्तों का प्रचाि-प्रसाि किने के हलए हवहभन्न हदिाओं में भेि हदया।

डसद्धान्त का सार

बुद्ध के अनुयाहययों की संख्या में क्रमिः वृन्द्रद्ध िोती गयी। सामन्त, ब्राह्मण औि अनेक समृद्ध व्यन्द्रक्त उनके हिष्य िो गये। बुद्ध ने िाहत-पााँहत की औि कोई ध्यान निीं हदया। हनम्नथ तथा िाहत-बहिष्कृत व्यन्द्रक्त भी उनके संघ में सन्द्रिहलत कि हलये गये। िो लोग उनके संघ के पूणथ सदस्य बनना चािते थे, उन्हें हभक्षु बनना औि कठोि आचािास्त्रीय हनयमों का पालन किना पड़ता था। सामान्य िन भी उनके हिष्य थे हिन्हें हभक्षुओं की आवश्यकताओं की पूहतथ किनी पड़ती थी।

उरुहवला के वन में तीन भाई ििते थे िो प्रख्यात सन्त तथा दािथहनक थे। उनके अनेक हिष्य थे िो अत्यन्त हवद्वान् थे। िािा-ििमािा उनका आदि किते थे। बुद्ध उरुहवला िा कि इन तीनों सन्तों के समीप ििे। उन्होंने इन तीनों सन्तों को अपने मत में दीहक्षत कि हलया। इस घटना से समस्त देि चमत्कृत िो गया।

भगवान् बुद्ध अपने हिष्यों के साथ मगि की ििानी िािगृि गये। विााँ सम्राट् हवम्बसाि एक लाख बीस ििाि ब्राह्मणों तथा गृिस्थों के साथ बुद्ध तथा उनके अनुयाहययों से श्रद्धापूवथक हमले। उन्होंने भगवान् बुद्ध का प्रवचन सुना औि वे तत्क्षण उनके हिष्य िो गये। ब्राह्मणों तथा गृिस्थों में एक लाख दि ििाि भगवान् बुद्ध के संघ के पूणथकाहलक सदस्य बन गये। िेष दि ििाि सामान्य अनुयायी बने। बुद्ध के अनुयायी िब दैहनक हभक्षाटन के हलए िाते थे, तब उन्हें घृणा की दृहष्ट से देखा िाता था। हवम्बसाि ने अपना वेणुवन बुद्ध को उपिाि स्वरूप दे हदया। यि

वेणुवन ि्िािानी के हनकटस्थ िािकीय क्रीिा-उद्यान था। भगवान् बुद्ध ने अपने हिष्ों ंके साथ विााँ वषाथ की अनेक ऋतुएाँ व्यतीत की थीं।ं

प्रत्येक बौद्ध हभक्षुु को पीत वस्त् ्िािण किते समय हिंसा से हवित िि़ने का व्रत-ग्रिण किना पि़ता था। अतः उसके हलए वषाथ ऋतु में हकसी एक िी स्थान पि ि़िना आवश्यक िो िाता था। अि भी िंकि सम्प्रदाय के पिमिंस संन्यासी वषाथ ऋतु में हकसी एक िी स्थान पि चातुमाथस व्यतीत किते िैं। इन हदनों ंसूयथ की उष्णता तथा ऋतु की आिथता के संयुक्त योग-दान के कािण असंख्य कृहम-कीट उत्पि िो िाते िैं हिनकी ित्या हकये हबना परिभ्रमण असम्भव िो िाता िै।

भगवान् बुद्ध को अपने हपता का एक सन्देि प्राप्त हुआ हिसमें उनसे अपने िन्म-स्थान में आगमन का अनुिोि हकया गया था हिससे उनके हपता अपनी मृत्यु के पूवथ उन्हें एक बाि देख लें। बुद्ध उनके अनुिोि को सिषथ स्वीकाि कि कहपलवस्तुु की औि चल पि़े औि नगि के बािि वन में रुके। उनके हपता तथा सम्बन्धी उनको देखने आये; हकन्तुु वे हभक्षुु गौतम को देख कि प्रसि निीं ंहुए औि कुछ िी क्षणों ंके पित् विााँ से लौट गये। उन्होंनें उनकी तथा उनके अनुयाहययों ंकी हभक्षा की भी कोई व्यवस्था निीं ंकी। वे लोग सांसारिक प्राणी थे। बुद्ध ने नगि में िाि-िाि पि हभक्षाटन हकया। यि समाचाि उनके हपता तक पहुाँचा। उन्होंनें गौतम को हभक्षाटन से हवित किने का प्रयास हकया; हकन्तुु गौतम ने किा- "मिािाि, मैं हभक्षुु हाँ। िाि-िाि पि िा कि हभक्षा-ग्रिण किना मेिा कतथव्य िै। संघ के हलए यिी किणीय िै। इसमें आप बािक क्यों ंबनते िैं? हभक्षा अत्यन्त पहवत्र िोता िै।" उनके हपता ने गौतम की बातों ंपि कोई ध्यान निीं ंहदया। उनके िाथों ंसे हभक्षा पात्र छीन कि वे उन्हें िािप्रासाद में ले गये। विााँ उनके प्रहत सभी ने अपनी श्रद्धा व्यक्त की; हकन्तुु उनकी पत्नी यिोििा विााँ निीं ंगयी। उसने किा- "यहद उनके हलए मेिा कुछ भी मित्त्व िै, तो वे स्वयं मेिे पास आयेंगे।" वि हववेक, वैिाग्य एवं अन्य सद्गुुणों ंसे सम्पि एक पहतव्रता नािी थी। हिस हदन वि पहत-परित्यक्ता हुई थी, उसी हदन से उसने प्रसािन तथा हवलास के सभी सािनों ंका परित्याग कि हदया था। वि हदन में केवल एक बाि िी सामान्य अि ग्रिण किती औि चटाई पि सोती थी। वि एक कठोि तपोमय िीवन व्यतीत कि ििी थी। गौतम यि सब सुन कि हवचहलत िो उठे। वे तत्काल उसे देखने चल पि़े। उसने उन्हें साष्टांग प्रणाम हकया। वि उनके चिणों ंपि हगि कि िोने लगी। बुद्ध ने हभक्षुुहणयों ंके संघ की भी स्थापना की थी हिसकी प्रथम हभक्षुुणी यिोििा बनी।

यिोििा ने विााँ से िाते हुए बुद्ध की औि वातायन से संकेत किके अपने पुत्र से किा- "ओ िाहुल, वि हभक्षुु तुम्हािे हपता िैं। तुम उनके पास िा कि अपने िन्म-हसद्ध अहिकाि की मााँग किो। तुम उनसे हनभीकतापूवथक किो हक तुम उनके पुत्र िो औि वे तुम्हें तुम्हािी पैतृक सम्पहत्त प्रदान किें।" िाहुल ने तत्क्षण उनके हनकट िा कि किा- "हपता िी, मुझे मेिी पैतृक सम्पहत्त दीहिए।" बुद्ध उस समय मौन िि ििे थे। उन्होंनें कोई उत्ति निीं ंहदया। पुत्र हपता से बाि-बाि पैतृक सम्पहत्त की मााँग किता ििा। बुद्ध ने अपने एक हिष् से किा - "बोहि वृक्ष के नीचे मुझे हिस अमूल्य सम्पहत्त की प्रास्ट्प्त हुई थी, मैं इस बालक को उसका उत्तिाहिकािी हनयुक्त किता हाँ।" िाहुल को हभक्षुुओं ंके संघ में सस्ट्हिलत कि हलया गया। िब बुद्ध के हपता को इसकी सूचना प्राप्त हुई, तब उन्हें घोि दुःख हुआ; क्योंहक पुत्र से वंहचत िोने के पित् अब वे अपने पौत्र से भी वंहचत िो गये थे।

बुद्ध के िीवन के साथ कुछ चमत्काि भी िुि़े थे। एक बाि माहयक िस्ट्क्त से सम्पि एक हिंस्र सपथ बुद्ध के ऊपि अहग्न-वषाथ किने लगा। बुद्ध भी स्वयं को अहग्न-रूप में परिवहतथत कि उस सपथ पि अहग्न-वषाथ किने लगे। बुद्ध एक बाि एक सिोवि से बािि हनकलना चािते थे। उस अवसि पि एक वृक्ष ने अपनी एक िाखा को झुका कि उनकी सिायता की। एक बाि उनके आदेि पि ईंिन के हलए प्रयुक्त पााँच सौ लकहि़यााँ स्वयं हवखस्ट्ण्डत िो गयीं।ं उन्होंनें पााँच सौ ऐसे पात्रों ंकी संिचना कि दी हिनमें आग िल ििी थी। ऐसा उन्होंनें िीत से कस्ट्म्पत िहटलों ंके हलए हकया था। एक बाि नदी में िब बाढ़ आयी थी, तब वे नदी के िल को हनम्न स्ति पि ला कि उसे पाि कि गये थे।

आनन्द िो बुद्ध के चचेि भाई थे, उनके प्रािस्म्भक हिष्यों ंमें प्रमुख थे। वे बुद्ध के सवाथहिक हनष्ठावान् हमत्र तथा हिष्य थे। बुद्ध के प्रहत उनकी हनष्ठा एक बाल-सुलभ हवहिष्ट उत्साि से आप्लाहवत थी। वे उनके वैयस्क्तक अनुवती के रूप में मृत्युपयथन्त उनकी सेवा में संलग्न ििे। वे एक लोकहप्रय व्यस्क्त थे औि उनका स्वभाव अत्यन्त हमि था। बौस्द्धक दृहष्ट से उनकी सम्प्रास्प्त नगण्य-सी थी; हकन्तु उनका हनष्कपट स्वभाव स्नेि से ओत-प्रोत था। देवदत्त आनन्द का भाई था। वि भी संघ का सदस्य था। वि बुद्ध का सवाथहिक हविोिी था औि उसने उन्हें अपदस्थ कि उनके उच्चासन को स्वयं ग्रिण किने के हलए अथक प्रयास हकये थे। उपाहल नामक एक नाई तथा अहनरुद्ध नामक एक ग्रामीण भी संघ के सदस्य थे। उपाहल संघ का एक प्रख्यात तथा अग्रणी हभक्षु िो गया औि अहनरुद्ध एक ऐसे दाथहनक के रूप में प्रख्यात हुआ हिसका पास्ण्डत्य अगाि था।

अन्त

बुद्ध कोिल की िाििानी श्रावस्ती गये ििााँ एक समृद्ध श्रेष्ठी ने उनके आवास के हलए एक सुहवसृत तथा मनोिम उपवन की व्यवस्था कि दी। बुद्ध ने अपनी अनेक वषाथ ऋतुएँ विीं ंव्यतीत कीं ंऔि विााँ कई मित्त्वपूणथ प्रवचन हकये। इस प्रकाि बुद्ध पैंतालीस से भी अहिक वषों तक परिभ्रमण किते हुए अपने हसद्धान्तों ंका उपदेि देते ििे।

भोिन में कुछ दोष से उत्पन्न एक िोग के काित्ण बुद्ध की मृत्यु िो गयी। वे कुन्दो (Cundo) नामक एक हनष्ठावान् महिला िािा प्रदत्त सूकिमद्दव के भक्षण से अस्वस्थ िो गये। भाष्यकाि इस िब्द का हनवथचन सूकि के मांस के रूप में किते िैं; हकन्तु सुिीि इसे वि खाद्य पदाथथ समझते िैं िो सूकि के हलए रुहचकि िोता िै। वे इसे कवक (Trufle) की कोहट का कोई पदाथथ मानते िैं। िा. िोय के अनुसाि यि सूकि-मांस न िो कि िकिकन्द िै िो अहिकति वन में पाया िाता िै औि िो अत्यहिक सुस्वादु तथा रुहचकि िोता िै। हिन्दू इसे फलािाि मानते िैं। इसे व्रत के हदन ग्रिण हकया िाता िै।

बुद्ध ने आनन्द से किा- "आनन्द ! िाओ औि मेिे हलए िाल के दो वृक्षों ंके बीच एक ऐसी िय्या की व्यवस्था किो हिस पि मेिा िीिोभाग उत्ति की औि ििे। मैं श्रान्त-क्लान्त हूँ औि अब मैं सोना चाहूँगा।" इसके पश्चात् एक अलौहकक दृश्य उपस्स्थत िो गया। दोनों ंिालवृक्ष पूणथतः कुसुहमत िो उठे िब हक ऋतु इसके अनुकूल निीं ंथी। सुमन–िाहि बुद्ध के िािीि पि हगिने लगी। यि उनके प्रहत उनकी श्रद्धा का प्रतीक था। बुद्ध के िािीि पि हदव्य पारििात वृक्ष के सुमनों ंतथा चन्दन-चूणथ का वषथण िोने लगा। यि उनके प्रहत उनके सम्मान का प्रतीक था।

भगवान् बुद्ध ने किा- "हप्रय हभक्षुओ, मेिे समीप आओ। िो संयोहित िै, उसका हवघटन अहनवायथ िै। परिश्रम के माध्यम से तुम लोग समृस्द्ध को प्राप्त किो औि अपने हनवाथण के हलए प्रयत्निील ििो!"

कुछ घट्नाएँ

गौतम में बाल्यावस्था से िी अहिंसा की प्रवृहत्त हवद्यमान थी। एक हदन उनके भाई देवदत्त ने एक पक्षी को िि-हवद्ध कि हदया औि आित पक्षी ििती पि आ हगिा। गौतम ने दौड़ कि उसे उठा हलया औि उसे अपने चचेिे भाई देवदत्त को देना अस्वीकाि कि हदया। इस हववाद को िािगुरु के समक्ष प्रस्तुत हकया गया हिन्होंनें अन्ततः अपना हनणथय गौतम के पक्ष में हदया। देवदत्त इस हनणथय से अत्यहिक अपमाहनत हुआ।

अपने परिभ्रमण के समय एक हदन गौतम ने भेड़-बकरियों ंके एक यूथ को एक संकीणथ उपत्यका से िो कि िाते हुए देखा। यूथ के पिुओं ंको पथ-भ्रान्त न िोने देने के हलए चिवािा प्रायः उनके आगे-पीछे हचल्लाते हुए दौड़ा किता था। पिुओं ंके उस हवृद् समूि में एक आित मेमना भी था िो सबसे पीछे सायास मन्द गहत से चला िा ििा था। चिवािे के दण्ड प्रिाि से वि पंगु िो गया था। उसे देख कि गौतम का हृदय द्रहवत िो उठा। उन्होंनें उसे बााँिों ं

में भि हलया औि उसे ले चलते हुए किा- "ओहलम्पस की हकसी हिला या हकसी एकान्त गुिा में बैठ कि मानवता के क्िलेि पि हचन्तन किने से हकसी हिंनी प्राणी का कष्ट हनविाण श्िेयस्कि ि◌ै।" इसके पिात् उन्होंनें चिवािे से पूछा- "हमत्र, तुम पिुओं ◌ंके इस यूथ को हलये हुए इतनी ि◌ीघ्रता के साथ किाँ ि◌ा ि◌िे ि◌ो?" चिवािे ने किा- "मैं िािप्रासाद ि◌ा ि◌िा हाँ। िाि की ि◌ात िािमिािाि देवताओं ◌ंके अनुग्रि की प्रास्ट्प्त के हलए एक यज्ञानुष्ठान का प्रािम्भ किने वाले ि◌ैं। मुझे उस यज्ञ में बहल के हलए भेि-बकरियाँ लाने के हलए भेिा गया ि◌ै।" यि सुन कि उस मेमने को हलये हुए गौतम ने चिवािे का अनुगमन हकया। िब वे नगि में पहुँचे, तब सवथसािािण इस बात से अवगत ि◌ो गया हक एक यहत िि◌ाि के आदेिानुसाि यज्ञ के हलए बहल-पिु ला िि◌ा ि◌ै। उन्हें देखने के हलए लोग पथ पि एकत्र ि◌ो गये। उन्होंनें पीत वस्त्र िािण हकया था तथा उनकी आकृहत भव्य तथा सौम्य थी। उनकी अहभिातीय देि-यहष्ट तथा िािोक मुख-मुद्रा से सभी आियथ चहकत िि◌े गये। यज्ञ में उस पूतािा के आगमन की सूचना िि◌ा को दे दी गयी। िब यज्ञानुष्ठान का प्रािम्भ हुआ, तब िि◌ा की उपस्ट्स्थहत में देवताओं ◌ंको बहल प्रदान किने के हलए एक बकिा लाया गया। बकिे के पैि बाँिे हुए थे औि िािपुिोहित ि◌ाथ में एक लम्बी छुिी हलये हुए उस मूक पिु के वि के हलए कहटबद्ध खिा था। उस हनमथम एवं दुःखान्त क्षण में िब उस हिंनी पिु का प्राणान्त लगभग हनहित था, गौतम ने आगे बढ़ कि किा- "ि◌े िि◌ा, इस कूिि कमथ को िोक दीहिए।" इतना किने के पिात् उन्होंनें आगे बढ़ कि उस बहल-पिु को मुक्त कि हदया। उन्होंनें किा- "हिस प्रकाि मनुष्य्-िहत अपने िीवन की सुिक्षा चािता ि◌ै, उसी प्रकाि प्रत्िेयेक प्राणी को अपना िीवन हप्रय ि◌ै।" तब पिािाप की भावना से अनुतप्त पापी की भाँहत पुिोहित ने छुिी फेंक दी औि दूसिे हदन िि◌ा ने एक िािाज्ञा िि◌ा देि-भि में इस आिय का आदेि पारित कि हदया हक अब भहवष्य् में यज्ञ निीं ◌ंि◌ोंगें एवं लोगों ◌ंको पिु-पहक्षयों ◌ंके प्रहत दया का व्यविाि किना ि◌ोगा।

* * * *

युवा नािी हकसा गौतमी (Kisagotami) का हवविा एक सम्पि व्यस्ट्क्त के इकलौते पुत्र के साथ हुआ था औि उनके एक पुत्र था। दो वषथ की अल्पायु में इस पुत्र का देिान्त ि◌ो गया। अपने पुत्र के प्रहत हकसा गौतमी की उत्कट अनुिस्ट्क्त थी। उसने उसे अपने वक्षस्थल से लगा हलया औि उसको स्वयं से हवलग किना अस्वीकाि कि हदया। वि अपने हमत्रों ◌ं तथा सम्बस्ट्न्धयों ◌ं के िि◌ाि-िि◌ाि पि ि◌ा कि उस औषहि की याचना किती िि◌ी हिससे उसका पुत्र पुनिीहवत ि◌ो सके। एक बौद्ध हभकु्षु ने उससे किा- "मेिे पास ऐसी कोई औषहि निीं ◌ंि◌ै; हकन्तु तुम भगवान् बुद्ध के पास िाओ। वे तुम्हें कोई िामबाण औषहि अवश्य प्रदान किेंगे। वे प्िेरेम तथा दया के सागि ि◌ैं। तुम्हािा पुत्र पुनिीहवत िो उठेगा। दुःखी ि◌ोने की आवश्यकता निीं।◌ं" वि ि◌ीघ्र िी बुद्ध के पास ि◌ा कि बोली- "ि◌े भन्िते, क्या आप इस बालक को कोई औषहि दे सकते ि◌ैं?" बुद्ध ने किा- "ि◌ाँ, मैं तुम्हें एक अत्यन्त उपयोगी औषहि दूँगा। तुम हकसी ऐसे घि से सिसों ◌ंके बीि ले आओ हिसमें हकसी बालक-बाहलका, हकसी पहत, हकसी पत्नी, हकसी हपता, हकसी माता या हकसी भृत्य की मृतु्यु न हुई ि◌ो।" उसने किा - "बहुत अच्छा, मिोदय ! मैं इसे ि◌ीघ्र िी ला दूँगी।"

अपने पुत्र को वक्षस्थल में लगाये उसने िि◌ाि-िि◌ाि पि ि◌ा कि सिसों ◌ंके बीि की याचना की। घि के लोगों ◌ंने किा- "लो, यि िि◌े सिसों ◌ंके बीि।" हकसा गौतमी ने पूछा- "क्या आपके घि में हकसी पुत्र, हकसी पहत, हकसी पत्नी, हकसी हपता, हकसी माता या हकसी भृत्य की मृतु्यु हुई ि◌ै?" उन्होंनें उत्ति हदया- "ि◌े देवी, तुम एक हवहचत्र प्रश्न पूछ िि◌ी ि◌ो। िमािे घि में कई लोगों ◌ंकी मृतु्यु ि◌ो चुकी ि◌ै।" हकसा गौतमी ने एक दूसिे घि में ि◌ा कि ऐसे िी प्रश्न हकये। गृिपहत ने किा- "इस घि में मेिे ज्िेयेष्ठ पुत्र तथा मेिी पत्नी की मृतु्यु हुई थी।" वि तीसिे घि में गयी। विाँ के लोगों ◌ंने उससे किा- "इस घि में िमािे माता-हपता की मृतु्यु ि◌ो चुकी ि◌ै।" तब वि एक अन्य घि में गयी। विाँ गृि-स्वाहमनी ने किा- "गत वषथ मेिे पहत की मृतु्यु ि◌ो गयी।" अन्ततः हकसा गौतमी कोई भी ऐसा घि निीं ◌ंपा सकी ििाँ हकसी की भी मृतु्यु न हुई ि◌ो। अब उसके मन में हववेक तथा वैिाग्य िाग्रत ि◌ो गये। अपने पुत्र का अस्ट्न्तम संस्काि कि वि इस संसाि में िीवन औि मृतु्यु की समस्या पि गम्भीितापूवथक मनन किने लगी।

तत्पिात् हकसा गौतमी ने बुद्ध के हनकट िा कि उन्हें साष्टांग प्रणाम हकया। बुद्ध ने उससे किा- "े हप्रय बाहलके, क्या तुम सिसों ंके बीि ले आयी िो?" हकसा गौतमी ने किा- "मुझे ऐसा कोई घि निीं ंहमला ििाँ हकसी की मृतुयु न हुई िो।" बुद्ध ने किा- "संसाि के सभी पदाथथ नश्वि तथा क्षहणक िैं। यि संसाि दुःख, अिस्थिता तथा क्लेि से पूणथ िै। मनुष्य िन्म, मृतुयु, िोग, ििा तथा क्लेि से आक्रान्त ििता िै। िमें अनुभव से ज्ञान प्राप्त किना चाहिए। िमें उन वसुतुओं ंकी सम्प्रास्ट्प्त की आिा निीं ंकिनी चाहिए हिनका किीं ंकोई अस्ट्स्तत्व िी निीं ंिै। इस तृष्णा से िमें अनावश्यक दुःख तथा कष्ट िोते िैं। मनुष्य को हनवाथण प्राप्त किना चाहिए। इसी से िमािे दुःखों ंका अन्त सम्भव िै औि तभी िमें अमित्व तथा िाश्वत िास्ट्न्त की सम्प्रास्ट्प्त िो सकेगी।" इसके पिात् हकसा गौतमी संघ में प्रहवष्ट िो कि हभकुषुणी िो गयी।

एक बाि बुद्ध िाथ में हभक्षा पात्र हलये एक समृद्ध ब्राह्मण के घि गये। ब्राह्मण अत्यन्त क्रोहित िो कि बोला- "े हभकुषु, तुम एक परिव्रािक का अकमथण्य िीवन व्यतीत किते हुए हभक्षाटन क्यों ंकि ििे िो? क्या यि कमथ अकीहतथकि निीं ंिै? तुम्हािा ििीि सुगहठत िै। तुम कोई व्यवसाय कि सकते िो। मैं कृहष-कमथ में संलग्न हूँ औि अपना पसीना बिा कि िीहवकोपािथन किता हूँ। मेिा िीवन एक श्रहमक का िीवन िै। तुम्हािे हलए यि श्रेयस्कि िोगा हक तुम भी िल चला कि औि खेत में बीि-वपन कि कृहष-कमथ में संलग्न िो िाओ। उदि-पोषण के हलए इससे तुम्हें प्रचुि मात्रा में अन्न प्राप्त िोगा।" बुद्ध ने किा- "े ब्राह्मण, मैं भी िल चला कि औि खेत में बीि-वपन कि अन्नोत्पादन किता हूँ।" ब्राह्मण ने किा- "तुम स्वयं को कृषक किते िो; हकन्तु मैं तुममें कृषक का कोई लक्षण निीं ंदेख ििा हूँ।" तब बुद्ध ने किा- "े ब्राह्मण, मेिी बात ध्यानपूवथक सुनो। मैं श्रद्धा के बीि बोता हूँ। मेिे िुभ कमथ वषाथ िैं हिससे खेत का अहभहसंचन िोता िै। हववेक तथा वैिाग्य मेिे िल के अंग, िमथ-पिायणता इसकी मूठ, ध्यान अंकुि तथा िम-दम-मानहसक िास्ट्न्त एवं इस्ट्न्द्रय-हनग्रि- बैल िैं। इस प्रकाि मैं अपनी मनोभूहम पि िल चला कि हवहचहकत्सा, भ्रम, भय, िन्म तथा मृतुयु की अनावश्यक तृणािाहि का हनिसन किता हूँ। इससे हिस िस्य की मुझे सम्प्रास्ट्प्त िोती िै, वि िै हनवाथण का अमि फल। इस प्रकाि के कृहष-कमथ से सभी दुःखों ंका अन्त िो िाता िै।" बुद्ध के इस उपदेि के परिणाम-स्वरूप उस समृद्ध उद्धत ब्राह्मण को ज्ञान िो गया औि वि उनके चिणों ंपि हवनत िो कि उनका सामान्य अनुयायी बन गया।

बुद्ध के उपदेि

भगवान् बुद्ध अपने उपदेि में किा किते थे- "िमें दुःख के कािण तथा दुःख-हनिोि-मागथ की खोि किनी चाहिए। हवषयोपभोग के प्रहत तृष्णा तथा सांसारिकता के प्रहत आसस्ट्क्त दुःख का कािण िै। यहद िम तृष्णा का उनूमूलन कि दें, तो दुःखों ंका अन्त िो िायेगा औि िमें िाश्वत िास्ट्न्त तथा हनवाथण में हनहित आनन्द की सम्प्रास्ट्प्त िो िायेगी। सम्यक् दृहष्ट, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कमाथन्त, सम्यक् आिीवन, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृहत तथा सम्यक् समाहि - इस अष्टांहगक मागथ के अनुसिण से िम दुःखों ंसे मुक्त िो िायेंगे। े हभकुषुओ, यिी िै वि मध्यम मागथ हिसका बोि तथागत को पूणथरूपेण िो चुका िै। इससे अन्तदृथहष्ट तथा ज्ञान की उत्पहत्त िोती िै हिससे िम िास्ट्न्त, लोकोत्ति ज्ञान, पूणथ सम्बोहि तथा हनवाथण की ओि उनुमुख िोते िैं।

"े हभकुषुओ, दुःख का आयथ सत्य वसुतुतः यिी िै। िन्म, ििा, िोग, मृतुयु, अहप्रय पदाथों से हवयोग दुःखमय िै। इस्ट्च्छत पदाथों से हवयोग दुःखमय िै। इस्ट्च्छत पदाथों की अनुपलस्ट्ब्ध भी दुःखमय िै। संक्षेप में िागहतक सत्ता के प्रहत आसस्ट्क्त के पाँचों ंस्कन्ध दुःखमय िैं। रूप, संज्ञा, वेदना, संस्काि तथा हवज्ञान यिी पंच-स्कन्ध िैं।

"ि हभकुषुओ, दुःख के किाण का सत्य यिी ि। यि वि तृष्णा िै िो मनुर्ष् को ऐहिक सुख तथा व्यसनों ंसे हलप्त सांसारिकता की ओि पुनः-पुनः उते्प्रेरित हकया किती ि। यि उसे वैषहयक सुख तथा िीवन के प्रहत ििि आसस्ट्क्त से ग्रस्त कि इतस्ततः सुख की खोि हकया किती ि। ि हभकुषुओ, यि दुःख-हििोि का आयथ सत्य िै िो तृष्णा के पूणथ हविाम, इसके परित्याग, इसके िाि-समपथण, इसके प्रहत अनासस्ट्क्त तथा इससे मुस्ट्क्त का पयाथय ि। यि आयथ सत्य िमें दुःखों ंके प्रिाण की ओि अहभपे्ररित किता ि। दुःख-हििोि नामक यि आयथ सत्य हनहित रूप से अष्टांहगक मागथ िै हिसमें सम्यक् पिामिथ आहद हनहित िैं।"

मिावीि

मिावीि का िन्म ५९९ ई.पू. में हुआ था। वे बित्ति वषों तक िीहवत िि। ५६९ ई.पू. में उन्होंनें गृि-त्याग हकया। उन्होंनें ५५७ ई.पू. में सवथज्ञता प्राप्त की तथा ५२७ ई.पू. में उन्होंनें हनवाथण प्राप्त हकया। वे अस्ट्न्तम तीथांकि थे।

मिावीि का िीवन सत्यवाहदता, अिीथव तथा पहवत्रता से ओत-प्रोत था। उनमें ये गुण आत्यस्ट्न्तक रूप में हवद्यमान थे। वे आिीवन अहंकंचन बन कि िि।

ििािानी हत्रिला तथा कुण्डलपुि के िििािा हसद्धाथथ उनके माता-हपता थे। हत्रिला को हप्रयकणी के नाम से भी िािा िाता ि। 'मिा' का अथथ मिान् तथा 'वीि' का अथथ उदात्त नायक िोता ि। तीथथ का िास्ट्ब्दक अथथ िोता िै घाट िि पाि उतिने का सािन ि। इस िब्द में हनहित लाक्षहणकता के अनुसाि इसका तात्पयथ पथ-प्रदिथक या उस दिथन से िै िो हकसी को िन्म-मिण के आवतथन के मोदहि को पाि किने की क्षमता प्रदान किता ि। 'कि' का अथथ कताथ िोता ि। 'तीथथ' तथा 'कि' इन दोनों ंिब्दों ंका समवेत अथथ पहवत्र िैन अिथत िोता ि।

मिावीि िैन-िमथ के संस्थापक निीं ंथे। उन्होंनें िैन हसद्धान्तों ंको कुछ संिोिनों ंके साथ व्यवस्ट्स्थत-भि हकया था। वे इस िमथ के संस्थापक िोने की अपेक्षा सुिािक अहिक थे। िैन-तत्त्व-िास्त् के अनुसाि काल चक्रों ंमें हवभाहित ि। यि आहिकारिक रूप से किा िाता िै हक प्रत्येक अिि चक्र में दीघथ अन्तिालों ंके पिात् चौबीस तीथांकि िैन-हसद्धान्तों ंकी व्याख्या के हलए एक नवीन दृहष्टकोण का प्रयोग किते ि। मिावीि चौबीसवें तीथांकि थे औि अन्य तीथांकिों ंकी भााँहत वे भी सवथज्ञ थे।

मिावीि को वद्धथमान (हनिन्ति वृस्ट्द्ध को प्राप्त िोने वाला) तथा सन्महत के नामों ंसे भी अहभहित हकया िाता था। आठ वषथ की अल्पायु से िी वे अहिंसाहद िादि व्रतों ंका पालन किने लगे थे। वे अपने माता-हपता की आज्ञा का पालन किते हुए उनकी सेवा श्रद्धा तथा भस्ट्क्तपूवथक हकया किते थे। वे एक कुिल िािनहयक थे। वे आिीवन अहववाहित िि।

आि-हचन्तन में हनमग्न मिावीि इस सत्य से परिहचत िो गये थे हक सांसारिक सुख क्षहणक िैं औि इनसे कमथ का बन्धन सुदृढ़ िोता ि। वे िानते थे हक संन्यास िी िाश्वत आनन्द की सम्प्रास्ट्प्त का सािन ि।

अल्पायु में िी मिावीि के स्वभाव में सद्गुणों ंतथा सदाचाि का समावेि िो चुका था हिसे देख कि लोग आियथ चहकत िि िाते थे। ध्यान में उनकी अत्यहिक रुहच थी औि वे संगीत तथा साहित्य से भी सुपरिहचत थे। उनके िीवन के तीस वषथ इसी प्रकाि व्यतीत हुए।

वद्धथमान ने अतीस्ट्यि दृहष्ट से देखा हक वे असंख्य िन्म ग्रिण कि चुके िैं। उन्होंनें सोचा - 'हकतने िन्म व्यथथ िी बीत
गये। मैं स्पष्टतः देख िि ा हाँ हक आिा कमथ से मूलतः पृथक् िै। मैंने अपने िीवन के तीस वषथ व्यथथ िी नष्ट कि हदये। सम्यक् ज्ञान की प्रास्ट्प्त के हलए मैंने संसाि का परित्याग आै तप निीं ंहकया। सभी दुःखों ंके मूल में हवद्यमान आसस्ट्क्त का भी हनिाकिण अभी तक निीं ंिो पाया िै।'
ििकुिमाि वद्धथमान पिात्ताप की अहग्न में िलने लगे। उन्होंनें सांसारिकता के परित्याग का हनिय कि हलया। वे अपने माता-हपता, हमत्रों ंतथा सम्बस्ट्न्धयों ंके प्रहत आसस्ट्क्त से हवित िो गये। उन्होंनें िादि अनुपे्रेक्षाओं ंअथाथत् िैन-मिथ-ग्रन्ों ंमें उस्ट्ल्लस्ट्खत गिन रूप से हवचािणीय पदाथों का हचन्तन हकया :

१. समस्त सांसारिक वस्तुुएँ अस्थायी िैं।

२. एकमात्र आिा िी अनन्य आश्रय िै।

३. संसाि अनाहद तथा कुहटल िै।

४. आिा का एकमात्र परिरक्षक स्वयं आिा िी िै।

५. ििीि, मन इत्याहद मूलतः आिा से पृथक् िैं।

६. तत्त्वतः आिा िुद्ध तथा ििीिाहद अिुद्ध िैं।

७. आिा के बन्धन की सृहष्ट इसमें कमाथस्रव के प्रवेि से िोती िै।

८. प्रत्ेयेक व्यस्ट्क्त के हलए इस आस्रव का प्रिाण आवश्यक िै।

९. कमथ के हनतान्त क्षय के उपिान्त िी कैवल्य की प्रास्ट्प्त िोती िै।

१०. केवली आिा के िीषथ स्थान पि हनवास किते िैं।

११. संसाि में मनुर्ष्-योहन में िन्म-ग्रिण एवं आिा के स्वरूप का ध्यान मिानतम सौभाग्य िै।

१२. सवथज्ञ िािा वहणथत हत्रित्न िी एकमात्र नैहतकता िै।

मिावीि ने इन िादि अनुपेक्षाओं ंपि हवचाि किने के पिात् अन्ततोगत्वा गृि-त्याग का दृढ़ हनिय कि हलया।

मिावीि की माता ने किा- "हप्रय पुत्र, तपस्वी–िीवन की कठोिता तुम्हािे हलए असिनीय िोगी। अभी उसके हलए बहुत समय िै। िाज्य के प्रिासन में तुम्हें अपने हपता को सियोग प्रदान किना चाहिए। कुछ वषों के बाद भी तुम अिथत िो सकते िो।"

मिावीि ने किा- "श्रद्ेधेय माता, संसाि के समस्त पदाथथ पानी के

बुलबुले की भााँहत क्षणभंगुि िैं। िो िोग, दुःख, क्ेलिे तथा मृतुयु का आश्रय-स्थान िै, उस संसाि में हकसी के हलए सुख की सम्प्रास्ट्प्त कैसे सम्भव िै? मुझे इस संसाि का परित्याग किना िी िोगा।"

मिाविी ने अपनी सिाी सम्पहत्त स्वयं अपने िी िाथों ंसे हनिथनों ंमें हवतरित कि दी। वे वन में चले गये औि िो वस्त् उन्होंनें िािण हकये थे, उनका भी परित्याग कि वे पूणथतः हदगम्बि िो गये। उत्तिाहभमुख िो कि उन्होंनें किा- "मैं हसद्धों ंको प्रणाम किता हाँ।" अपने हिि से कि के पााँच गुच्छों ंको स्वयं हवलग कि वे अिथत िो गये।

मिाविी ने कठोि तप हकया। उन्होंनें बहुत हदनों ंतक उपवास हकया। वे आत्मा के हविुद्ध स्वरूप का ध्यान किते थे।

हदव्य िस्क्तयों ंने मिाविी की पिीक्षा ली। एक बाि िमणीय स्त्ी-समुदाय ने उन्हें घेि हलया; हकन्तु वे अहिग अहवचहलत बने ििे। उन्हें सवथज्ञता की हसस्द्ध प्राप्त हुई। सवथज्ञ िोने के पिात् वे तीस वषों तक िस्न्त के सन्देि का प्रचाि-प्रसाि किते ििे। उन्होंनें मगि, हमहथला आहद िाज्यों ंका भ्रमण हकया ििााँ अनेक िािा उनके हिष् िो गये।

कन्फ्यूहियस

कन्फ्यूहियस का िन्म ५५१ ई.पू. में लू नामक एक सामन्ती िाज्य में हुआ था िो आिकल चीन के उत्ति-पूवी समुितटीय प्रान्त िाणुंग का एक भाग िै। चीनी भाषा में कन्फ्यूहियस का नाम कुंग फू-त्ू िै हिसका अथथ िै ििान नेता-दािथहनक कुंग। चीन में सवथप्रथम प्रहवष्ट िोने वाले यूिोपीय हविानों ंको इस नाम का उच्चािण श्रम-साध्य प्रतीत हुआ; अतः वे इसे लैहटन स्वरूप प्रदान कि कन्फ्यूहियस किने लगे।

कन्फ्यूहियसवाद, ताओवाद एवं बौद्ध - चीन में ये तीन िमथ प्रचहलत िैं। कन्फ्यूहियस तथा ताओ–िमथ के प्रवतथक लाओत्से समकालीन थे। वे मनीषी तथा दािथहनक थे। उनको उद्धािक या मुस्क्तदाता निीं ंसमझा िाता। लाओत्से कन्फ्यूहियस से हतिपन वषथ बडे थे। उनके प्रथम पािस्परिक साक्षात्काि के समय लाओत्से की आयु हतिासी वषथ थी िो कन्फ्यूहियस की आयु के दोगुने से भी अहिक थी। उनकी आयु के साथ-साथ उनके हवचािों ंतथा उनकी आस्थाओं ंमें भी बहुत अन्ति था। चीनी इहतिासकािों ंकी कृपा से उन दोनों ंके वाताथलाप का सािांि िम लोगों ंको आि तक उपलब्ध िोता आया िै। सुकिात औि बुद्ध भी कन्फ्यूहियस के समकालीन थे।

प्रचहलत अहभप्राय के अनुसाि कन्फ्यूहियस के मत को िमथ िब्द से अहभहित निीं ंहकया िा सकता। इसमें न हकसी प्रकाि के पिलौहकत्य के दिथन िोते िैं औि न हकसी मठ-हविेष से सम्बस्न्धत आचाि–िास्त्ीय हवहि-हविान के। यि मत चीन में कन्फ्यूहियस के समय से बहुत पिले भी प्रचहलत था। अपने एक हलहपबद्ध प्रवचन में अपने हवषय में कन्फ्यूहियस ने संसाि को कोई नया िमथ या कोई नयी आचाि संहिता निीं ंप्रदान की थी। उन्होंनें पुिातन मत को िी एक नवीन सांििहत-संवहिथत संस्किण में लोगों ंके समक्ष प्रस्तुत हकया। उन्होंनें संसाि को िो कुछ भी हदया, वि मूलभूत मानवीय नैहतकता या आचाि–िास्त् का आिपूणथ पुनकथथन मात्र था। उन्होंनें नैहतक संहिता को िो कलेवि प्रदान हकया, वि अत्यन्त स्तुत्य था।

कुछ लोगों ंके अनुसाि कन्फ्यूहियस ििाि प्रहतपाहदत मत को वस्तुतः िमथ िब्द से अहभहित निीं ंहकया िा सकता; क्योंहक वे िमथ-गुरु या हकसी िमथ के प्रचािक न िो कि दािथहनक, नैहतकता के प्रहत आस्थावान्, िािनहयक एवं हिक्षाहवद् थे। इन लोगों ंके अनुसाि कन्फ्यूहियस के हवचािों ंतथा उपदेिों ंमें िमथ से सम्बद्ध हकसी दिथन के स्थान पि आचाि–िास्त्ीय एवं िािनैहतक तथा हिक्षा–िास्त्ीय हसद्धान्तों ंके िी दिथन िोते िैं।

कन्फ्यूहियस का जीवन-चरित्र

कन्फ्यूहियस का िन्म कुंग वंि में हुआ था। उनके हपता िाज्य के एक उच्चाहिकािी थे। उनकी दिे-यहष्ट असामान्य थी औि वे अहिसाोण िस्ट्क्त तथा वीित्व के स्वामी थे।

कन्फ्यूहियस ने िब अपनी आयु के तृतीय वषथ में प्रवेि हकया, तब उनके हपता का देिान्त िो गया; हकन्तु उनकी माता के स्नेिपूणथ संिक्षण में उनके िीिि तथा उनकी बुस्ट्द्ध का समुहचत हवकास िोता गया। िाष्ट्र का इहतिास, कहवता, दिथन तथा संगीत- उन हदनों ंप्रचहलत हिक्षा के ये हितने भी सवोत्तम प्रारूप थे, वे सब उनकी माता की कृपा से उन्हें प्राप्त हुए।

कन्फ्यूहियस लोगांग गये ििाँ उन्होंनें प्रािीतत्त्व-हवज्ञान, संगीत, िमथ-हवहि तथा िमाथनुष्ठान का अध्ययन हकया। विााँ वे लाओत्से से हमले। िब वे िििानी से लू लौटे, तब वे िाज्य के एक अग्रणी हविान् के रूप में प्रख्यात िो चुके थे।

कन्फ्यूहियस ने सुंग िाज्य की एक लड़की से हववाि हकया। उनके एक पुत्र तथा दो पुहत्रयााँ थीं।ं उन्होंनें अपने पुत्र का नाम पो यू िखा। िम कन्फ्यूहियस के दािथहनक उपदेिों ंके सवाथहिक पूणथ परिकलन के हलए पो यू के पुत्र के ऋणी िैं।

सत्रिवषीय कन्फ्यूहियस की हिक्षा का समापन एक सामान्य ग्रामीण हवद्यालय में हुआ। इसके पिात् लू िाज्य में ची परिवाि के िान्यागाि के लेखा-संकलन के उत्तिदाहयत्व विन के रूप में उन्हें िािहवकोपािथन का प्रथम सािन उपलब्ध हुआ। वे कठोि परिश्रमी तथा हनष्कपट थे। वे अपना अहतरिक्त समय अध्ययन तथा गोचि भूहम के हनकट खेलने के हलए एकत्र बालकों ंके प्रहिक्षण में व्यतीत किते थे। इस प्रकाि उनके हिष्यों ंकी संख्या में हनिन्ति वृस्ट्द्ध िोती गयी िो उनके हनष्ठावान् अनुयायी बन गये औि हिन्होंनें उनके उपदेिों ंको हलहपबद्ध रूप में सुिहक्षत िख कि उनकी ख्याहत को अमि बना हदया। उनके मन में अहिकाि तथा अनुिासन के प्रहत प्रचुि उत्साि तथा अतीत के प्रहत आत्यस्ट्न्तक श्रद्धा थी। इस प्रकाि उनका प्रबोिन िाहमथक न िो कि आचािगत हुआ किता था।

कन्फ्यूहियस दीघथकाय थे। उनके कायथ व्यवस्ट्स्थत रूप से सम्पि िोते थे। उन्होंनें िो कुछ भी हकया, देि-काल के अनुरूप समुहचत हवहि से सम्पि हकया।

कन्फ्यूहियस आचाि–िास्त्र के हिक्षक थे; हकन्तु उनका लक्ष्य िािनीहतक था। प्राचीन काल के नैहतक हसद्धान्तों ंके माध्यम से िाज्य का सुिाि किना उनका मिान् उद्देश्य था।

'द एनालेक्ट्स' (The Analects) नामक पुस्तक में उनके उपदेिों ंका संकलन िै। इस पुस्तक में वे स्वयं को अपने िीवन के हवहभि चिणों ंमें हवहभि रूपों ंमें प्रस्तुत किते हुए किते िैं- "पन्द्रि वषथ की आयु में मैं अध्ययन की औि आकृष्ट था। तीस वषथ की आयु में मैं दृढ़ हनियी तथा चालीस वषथ की आयु में संिय तथा भ्रम से मुक्त िो गया। पचास वषथ की आयु में मैं ईश्विेच्छा से परिहचत हुआ एवं मुझे स्वगथ के आदेि का ज्ञान प्राप्त हुआ। िब मैं साठ वषथ का हुआ, तब मेिे कान सत्य के प्रहत ग्रिणिील िो गये। सत्ति वषथ की आयु में मैं िमथ की सीमाओं ंका अहतक्रमण हकये हबना अपने हृदय के अनुबोिन का अनुसिण कि सकता था।"

कन्फ्यूहियस को उनके िाज्य में मन्त्री तथा मुख्य न्यायािीि के उच्च पदों ंपि हनयुक्त हकया गया। ५०१ ई.पू. में, िब वे पचास वषथ के थे, उनकी हनयुस्ट्क्त तू िनपद के िाज्यपाल के पद पि कि दी गयी। उनका प्रिासन अत्यन्त सफल ििा। पचास वषथ की आयु में वे प्रिान मन्त्री िो गये।

प्रिासन में उन्होंनें िो परिवतथन हकये, वे सवथदा के हलए चमत्कािपूणथ हसद्ध हुए। सड़कों ंपि हगिी हकसी भी वस्तु को कोई नहीं ंउठाता था। लोगों ंमें श्रद्धा तथा भस्ट्क्त थी औि स्ट्स्त्रयााँ पहवत्र िीवन व्यतीत किती थीं।ं

कन्फ्यूहियस चीन की समस्त नैहतक आकांक्षाओं ंके िन-नायक एवं लोगों ंके हलए पूिनीय िि।

कन्फ्यूहियस की आियथिनक उपलस्ट्ब्धयों ंके कािण उनके प्रििोसी ची के माहवथस के हृदय में भय तथा ईर्ष्ाथ की भावना िाग्रत िो उठी। इसके परिणाम-स्वरूप उन्हें लू को छोि़ कि अन्यत्र िाना पिा। वे एक परिव्रािक के रूप में एक िाज्य से दूसिे िाज्य में घूमने लगे। उन्होंनें सोचा हक उनके पूवथ-परिहचत िािकुमािों ंमें कोई उन्हें उनके िािनहयक हसद्धान्तों ंको व्याविािि में परिणत किने का अवसि प्रदान कि देगा; हकनुतु उन्हें अपने कुछ हनष्ठावान् अनुयाहययों ंके साथ तीिे वषों के हलए बलपूवथक हनवाथहसत कि हदया गया। इस अवहि में वे हिक्षण कायथ में संलग्न िि। क्रहमक रूप से अनेक हिर्ष् उनके प्रहत आकहषथत िोते गये।

कन्फ्यूहियस को उनके अपने िाज्य में प्रत्यागमन के हलए हनमस्ट्न्त्रत हकया गया; हकनुतु इसे उन्होंनें स्वीकाि निीं ं हकया। हतित्ति वषथ की आयु में उनका देिान्त िो गया।

कन्फ्यूहियस ने अपने देि के साहित्य तथा इहतास का गिन अध्ययन हकया था। इस तर्थ् के प्रहत उनकी दृढ़ आस्था थी हक केवल न्याय-हप्रय तथा िमथ-पिायण प्रिासक िी िाज्य की िक्षा किने औि लोगों ंको सदाचािी बनाने में समथथ िो सकते िैं। उनका आदिथ िािा िनक की भााँहत प्रज्ञािील प्रिासकों ंकी प्रिाहत की सृहष्ट किना था। इसी उदे्देश्य की पूहतथ के हलए वे सुयोग्य प्रिासक की खोि में एक िाज्य से दूसिे िाज्य में परिव्रिन किते िि।

कन्फ्यूहियस के हिर्ष् उनको पूवथ-हनहित हनष्कषों, हनिंकुि संकल्पों, ं िठिहमथता तथा अिंभाव से सवथा मुक्त समझते थे। हिष्ों ंके साथ अपने वाताथलाप में वे अिसािाण वसुतुओं, ं िस्ट्क्त के चमत्काि, िािनीहतक अव्यवस्था एवं आध्यास्ट्त्मक लोगों ंका उले्लेख निीं ंकिते थे। वे उनके साथ प्रायः कहवता, इहतास एवं औहचत्य तथा मयाथदा के हविान की पुस्तकों ंके सम्बन्ध में बात हकया किते थे। वे उनसे किा किते थे हक यज्ञ के प्रािस्ट्म्भक चिण के रूप में उपवास, युद्ध में सस्ट्म्हलत िोना औि िोग का उपचाि-इन तीन बातों ंके प्रहत अहिकतम सतकथता की आवश्यकता िै। वे सदाचाि, स्वाहमभस्ट्क्त तथा सत्यवाहदता की सम्प्रास्ट्प्त पि बहुत बल हदया किते थे। लाभ, पूणथता तथा स्वगथ के आदिों ंपि उन्होंनें िायद िी कभी हवचाि हकया िो।

कन्फ्यूहियस अहिकति ऐसी वसुतुओं ंके अध्ययन में व्यस्त िािते थे हिनका सम्बन्ध मानव, मानवता तथा वास्तहवक िीवन से िािता था। वे स्वगथ, प्राकृहतक दृश्य-प्रपंच तथा देवताओं ंके हवषय में कभी भी बात निीं ंकिते थे। एक बाि ची-लू नामक उनके एक हिर्ष् ने उनसे पूछा - "आदिणीय आचायथ, मैं देवताओं ंकी सेवा हकस प्रकाि कि सकता हाँ?" कन्फ्यूहियस ने उत्ति हदया - "िब तुम मनुर्ष् की सेवा किना निीं ंिानते, तब तुम देवताओं ंकी सेवा के सम्बन्ध में क्यों ंप्रश्न किते िो?" हिर्ष् ने पुनः प्रश्न हकया -"पूिनीय आचायथ, कृपया मृतुयु के सम्बन्ध में आप मुझे पूणथ ज्ञान प्रदान कीहिए।" कन्फ्यूहियस ने उत्ति हदया- "हप्रय ची-लू, िब तुम्हें िीवन का िी पयाथप्त ज्ञान निीं ंिै, तब तुम मृतुयु-सम्बन्धी ज्ञान की आिा कैसे कि सकते िो?" हकनुतु, कन्फ्यूहियस ने स्वगथ या देवताओं ंकी सत्ता को कभी अस्वीकाि निीं ंहकया।

कन्फ्यूहियस ने स्वयं को समाि के उत्थान के प्रहत समहपथत कि हदया था। वे सवथदा समाि-कल्याण की बात सोचा किते थे। सामाहिक कल्याण के हलए वे अपने अहिकाहिक योगदान के हलए सतत प्रयत्निील िािते थे। कन्फ्यूहियस के प्रवचनों ंके संकलन 'द एनालेक्ट्स' में मुख्यतः सामाहिक कल्याण, मानवीय िास्ट्न्त तथा सामाहिक समस्विता पि िी हवचाि व्यक्त हकये गये िैं।

अत्यहिक श्रम-साध्य िोते हुए भी कन्फ्यूहियस ने लोगों ंको नैहतक प्रहिक्षण देने का प्रत्येेक सम्भव प्रयत्न हकया। आचाि–िास्त्ीय सद्ग्गुणों ंकी सम्प्रास्ट्प्त पि उन्होंनें अत्यहिक बल हदया। समाि को हवसंगत एवं अिान्त तत्त्वों ंसे

मुक्त किने के हलए वे सवथदा प्रयत्नील िैि। इस तर्थ् के प्रहत उनकी दृढ़ आस्था थी हक यहद ज्ेयेष्ठ तथा वरिष्ठ िनों ं का चरित्र हनमथल िै, तो अन्य लोग भी उनका अनुसिण किेंगे औि तब समस्त संसाि प्ेरेम तथा सावथभौम िास्ट्न्त से आप्लाहवत िो उठेगा। उन्हें देवताओं ंतथा मिणोत्ति िीवन पि तकथ-हवतकथ किने का अवकाि िी निीं ंप्राप्त िोता था; क्योंहंक उनका मन सवथदा सामाहिक हवचािों ंमें तल्लीन िैा किता था। इसका एक किाण यि भी था हक इन हवषयों ंपि हवचाि किना उन्होंनें आवश्यक निीं ंसमझा।

पुस्तकें

'द एनालेक्ट्स' में कन्फ्यूहियस के संवादों ंका संकलन िै। इसमें हिर्ष्ों ंतथा अिेषी िनों ंके साथ उनके वाताथलाप संग्रीत िैं। इसके अनेक भार्ष्ा हुए िैं हिन्होंनें इसको अपने-अपने मतों ंके अनुरूप व्याख्याहयत हकया िै। कन्फ्यूहियस हनम्नांहकत चाि पुस्तकों ंके प्रणेता थे :

१. 'तू सुयि' में वयस्कों ंके हलए उनके हवित्तापूणथ हवचािों ंका संकलन िै।

२. 'चुंग युंग' में मीन (Mean) के हसद्धान्त का वणथन िै।

३. 'लून यू' नामक बीस ग्रन्ों ंमें कन्फ्यूहियस की उस्ट्क्तयों ंका संग्रि िै।

४. 'मेंग त्ेसे' मेनहसयस (Mencius) के दिथन का संकलन िै िो कन्फ्यूहियस िािा प्रहतपाहदत मतों ंसे घहनष्ट रूप से सम्बस्ट्न्धत िै।

'टा सुयि' (Ta Hsueh) एक िािनैहतक औि आर्थिािास्त्ीय ग्रन् िै। कन्फ्यूहियस के पौत्र कुंग-ची 'चुंग युंग' नामक ग्रन् के प्रणेता थे। यि एक हविुद्ध दािथहनक ग्रन् िै। इसमें उन सामान्य हसद्धान्तों ंका वणथन िै हिनका सम्बन्ध मनुर्ष् की प्रकृहत तथा सम्यक् आचिा से िै। 'लून यू' में कन्फ्यूहियस की उस्ट्क्तयााँ संग्रीत िैं। इसमें गुरु-हिर्ष् के वाताथलापों ंका वणथन िै। 'मेंग त्ेसे' में मेनहसयस के दिथन का वणथन िै। इसका लेखक कन्फ्यूहियस के मत का प्रबल प्रहतपादक था। इसमें उनके हिर्ष्ों ंिािा पूछे गये प्रश्नों ंकी व्याख्या की गयी िै। यि सामन्ती िाज्यों ंको हदये गये पिामिों का संकलन िै। इसमें दिथन, िािनैहतक हसद्धान्तों ंतथा अथथिास्त् का वणथन िै।

कन्फ्यूडियस की सूक्तियाँ

कन्फ्यूहियस की अनेक सूस्ट्क्तयााँ अपनी अथथवत्ता तथा दूिदहिथता के हलए सुतुत्य िैं। इनसे अहिक ज्ञान-प्रद औि क्या िो सकता िै-

"हवचाि के अभाव में हवित्ता श्रम का अपव्यय तथा हवित्ता के अभाव में हवचाि संकटप्रद िै।"

"िो वास्तव में सदाचािी िै, विी हकसी से प्ेरेम या घृणा किने का अहिकािी िै।"

"हबना प्रहतवाद के हनिथन िोना कहठन तथा अिंकाि के हबना समृद्ध िोना सिल िै।"

कन्फ्यूहियस की कुछ सूस्ट्क्तयााँ हकसी प्रिेहलका से कम निीं ंिैं। उदाििण के हलए ये सूस्ट्क्तयााँ प्रसुतुत िैं- "लोगों ंको हकसी भि व्यस्ट्क्त से सात वषों तक हिक्षा ग्रिण किने दो। इसके पिात् इसी प्रकाि उन्हें युद्ध में भी हनयोहित हकया िा सकता िै।"

एक अन्य उद्दिाण िै-"युद्ध में अप्रहिहक्षत लोगों ंके नेतृत्व का अथथ िै उनको सवथदा के हलए खो देना।"

"श्रेष्ठ िन हिस वसुतु के अिेषी िोते िैं, वि उन्हीं ंमें हवद्यमान िंिती िै; हकनुतु सामान्य िन हिस वसुतु की खिो किते िैं, वि अन्य लोगों ंमें हवद्यमान िंिती िै।"

"एक आन्तरिक प्रहतबन्ध से सद्‌गुण के प्रहत प्ेरेम सौन्दयथ के प्रहत प्ेरेम के समकक्ष िी िोना चाहिए।"

"अपनी तुलना में अन्य लोगों ंके मूल्यांकन के समय पयाथप्त आि-हनयन्त्रण की आवश्यकता िै। तुम अन्य लोगों ंके प्रहत िो आचिण किते िो, उन लोगों ंिािा अपने प्रहत उसी आचिण की आिा में भी इस आि-हनयन्त्रण की आवश्यकता पिती िै। इसी को मानवता का हसद्धान्त किते िैं हिसके पिे अन्य कुछ भी निीं ंिै।"

"श्रेष्ठता की सम्प्रास्ट्प्त का मागथ न्यायोहचत बातों ंएवं ज्ञान तथा सद्‌गुणों ंकी उपलस्ट्ब्ध के सिान हवित्ता के प्रहत प्ेरेम िै। इसकी तुलना हकसी भी वसुतु से निीं ंकी िा सकती। िब सद्‌गुणों ंका अनुसिण हनष्कपट भाव तथा आि-प्रवंचना से मुक्त मन से हकया िाता िै, तब हृदय परििुद्ध िो िाता िै। इस चिण तक व्यस्ट्क्त केवल आि-हवकास में िी व्यस्त ििा िै; हकनुतु परिषूकृत-हृदय व्यस्ट्क्त पिले अपने हनकटस्थ लोगों ंतथा अन्ततोगत्वा समूपूणथ साम्राज्य को प्रभाहवत किने लगता िै। अतः प्रत्ेयेक व्यस्ट्क्त को स्वयं अपने वचन तथा आचिण के प्रहत सतकथ ििना चाहिए। उसे कलुहषत तथा अिान्त स्थान का परित्याग कि देना चाहिए। पिोपकािा उसका हनवास-स्थान, िमथ-पियणता उसका मागथ, मयाथदा उसका आभूषण, प्रज्ञा उसका दीपक तथा हनष्ठा उसका सौन्दयथ िोना चाहिए। हकसी परिषूकृत व्यस्ट्क्तत्व की संिचन में गरिमा, श्रद्धा, स्वाहमभस्ट्क्त तथा हनष्ठा–िसे गुणों ंका पयाथप्त योगदान िोता िै। गरिमा के कािण सामान्य िन से उसकी पृथकता का बोि िोता िै, श्रद्धा के कािण वि सबका हप्रय िोता िै, स्वाहमभस्ट्क्त से उसमें हवनय का प्रादुभाथव िोता िै औि हनष्ठा के कािण वि लोगों ंका हवश्वासपात्र बन िाता िै।"

कन्फ्यूहियस की हवहभि सूस्ट्क्तयों ंमें श्ेरेष्ठ िनों ंके गुणों ंको िेखांहकत हकया गया िै। कन्फ्यूहियस अपने हिष्ों ंको वरिष्ठ िनों ंके समादि तथा उनके अनुकिण का आदेि देते थे। वे किा किते थे हक प्रत्ेयेक व्यस्ट्क्त वरिष्ठ-उतूकृष्ट बनना चािता िै। वि अपने हमत्रों ंतथा सिकहमथयों ंकी अपेक्षा उच्च स्ट्स्थहत का आकांक्षी िोता िै। वि अपनी पूवथ तथा वतथमान, दोनों ंस्ट्स्थहतयों ंसे उच्चति स्ट्स्थहत प्राप्त किना चािता िै।

कन्फ्यूहियस िािा प्रहतपाहदत वरिष्ठ व्यस्ट्क्त के कुछ गुणों ंका उल्ेलेख हनम्नांहकत पंस्ट्क्तयों ंमें हकया िा ििा िै-

प्रयोजन : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त की हिक्षा-प्रास्ट्प्त का उद्ेदेश्य अपने हसद्धान्तों ंका अहिकाहिक हक्रयियन िै।"

सनुतुलन : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त हवचिातः अपनी स्ट्स्थहत से चुयुत निीं ंिोता।"

आत्म-डनभकरिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त हिस वसुतु की खिो किता िै, वि उसी में हवद्यमान िै; िब हक सामान्य व्यस्ट्क्त उस वसुतु की खिो किता िै िो अन्य लोगों ंमें हवद्यमान िै।"

गाम्भीयक : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त के प्रत्ेयेक अहभयान में उसके अध्यवसाय की आत्यस्ट्न्तकता हनहित िंिती िै।"

पूणकिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त अपने अविान को उस लक्ष्य की ओि उनुमुख हकये िंिता िै िो मूलभूत िै। इसकी प्रास्ट्प्त के पिात् सभी पथ अनायास िी प्रिस्त िो िाते िैं।"

डनष्कपट्िा : "इसके कािण वरिष्ठ व्यस्ट्क्त अन्य लोगों ंसे पृथक् प्रतीत िोने लगता िै।"

सत्यवाडदिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त को हिस वसुतु की अपेक्षा ि ै, वि यि ि ै हक उसके वचन पूणथतः परिुिद्ध िो।ं"

वचन िथा कम की डविुक्तद्ध : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त को एकान्त में अपने प्रहत सतकथ िि ना चाहिए।"

सत्य-पे्रेम : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त सत्य की सम्प्रास्ट्प्त के हलए उतुसुक िि ता ि ै। वि हनिथनता से भयभीत निीं िं ोता।"

आजकव : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त सद्गुणों ंके हवषय में सोचता ि ै, िब हक सामान्य व्यस्ट्क्त अपनी सुख-सुहविा के हवषय में सोचता ि ै।"

हववेक : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त सम्भाषण के समय िब्दों ंके सम्बन्ध में हमतव्ययी अौ आचिण में गम्भिी िोता ि ै।"

आत्म-सोंयम : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त को अभावग्रस्त िोना पि़ सकता ि ै; हकनुतु सामान्य व्यस्ट्क्त अभावग्रस्त िोने के पित् अत्यहिक से्वेच्छाचिािी िो िाता ि ै।"

डनभीकिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त उतुसुकता तथा भय से मुक्त िोता ि ै।"

सहजिा िथा गररमा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त में अिंकािनून्य गरिमामयी

िसिता िोती ि ै, िब हक सामान्य व्यस्ट्क्त में गरिमामयी िसिता से िहित अिंकिा िोता ि ै।"

दृढ़ता : "दिू से देखने पि वरिष्ठ व्यस्ट्क्त कठोि अौ हनकट से देखने पि सौम्य-सदय प्रतीत िोता ि ै; हकनुतु उसकी वाणी में दृढ़ता तथा हनियािकता के दिथन िोते िैं।"

सामर्थ्क : "िसािाण बातों ंसे वरिष्ठ व्यस्ट्क्त के सम्बन्ध में हकसी हनष्कषथ पि निीं ंपहुँचा िा सकता; हकनुतु मित्त्वपूणथ हवषयों ंमें उसका हवश्वास हकया िा सकता ि ै।"

स्पष्टिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त के दोष सूयथ अौ चंिमा की भाँहत िोते िैं। उसमें िो दोष िोते िैं, उन्हें सब लोग देख लेते िैं; हकनुतु वि व्यस्ट्क्त परिवहतथत िो िाता ि ै अौ इस परिवतथन को भी सब लोग देखते िैं।"

परोपकार : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त स्वयं में सुतुत्य मानवोहचत गुणों ंके हवकास के हलए प्रयत्निील िि ता ि ै। वि स्वयं में मनुर्ष् के दुगुथणों ंका समाविे निीं ंचािता। सामान्य व्यस्ट्क्त का आचिण इसके हवपिीत िोता ि ै।"

उनुमिु मानडसकिा : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त मिी तथा सद्गुणों ंका सिान किता ि ै। वि श्रे्ेष्ठ व्यस्ट्क्तयों ंकी प्रिंसा किता तथा असमथथ व्यस्ट्क्तयों ंके प्रहत दया तथा सिानुभूहत प्रकट किता ि ै।"

डनयमन : "वरिष्ठ व्यस्ट्क्त मध्यम मागथ का अनुसिण किता ि ै।"

सुरडिि िक्ति : "हिस बात में हकसी वरिष्ठ व्यस्ट्क्त को हकसी के समकक्ष निीं ंिखा िा सकता, वि यि ि ै हक लोग उसके मूल्य से परिहचत निीं िं ो पाते।"

कन्फ्यूहियस वरिष्ठ या आदिथ व्यस्ट्क्त के सम्बन्ध में किते िैं-

"वरिष्ठ व्यस्ट्क्त पुितन िमथ के प्रहत आस्थावान् िोते हुए भी िमाथन्ध निीं ंिोता। वि विी आचिण किता िै िो उसकी पद-प्रहतष्ठा के अनुरूप तथा औहचत्यपूणथ िोता िै। वि सीमोल्लंघन किना निीं ंचािता। वि हिस पद के योग्य निीं ं
ीति, उसकी प्रास्ट्प्त का प्रयास निीं ंकिता।"
"िो हवज्ञ िोता िै, उसके हलए हनष्कपटता एवं हवश्वास वस्त् तथा हिस्त्ाण एवं औहचत्य तथा िमथपिायणता ढाल ीती िै। वि पिोपकाि में ित ििता िै। प्रिासन उस पि िघन्य अत्याचाि कि सकता िै; हकन्तुु उसके मागथ में कोई परिवतथन निीं ंिोता। उसका िीवन-यापन इसी हवहि से िोता िै।"

िडा

कन्फ्यूहियस ने हिक्षा, ज्ञान तथा सम्यक् आचिण के हविान के अध्ययन पि सवाथहिक बल हदया हिससे इनको व्यविाि-रूप में परिणत हकया िा सके। उनके उपदेिों ंके अनुसाि मनुष्् का मुख्य लक्ष्य स्वयं को िानना तथा
समाि के एक सदस्य के रूप में स्वयं को समाि के हलए उपयोगी बनाना िै। उन्होंनें अपने हिष्यों ंतथा सवथ
सािाण को भि िीवन तथा सामाहिक समस्विता के हसद्धान्तों ंकी हिक्षा दी।

कन्फ्यूहियस का प्रहिक्षण अहिकांितः स्वच्छ प्रिासन की समस्याओं ंसे सम्बस्ट्न्धत था। वे किते थे-"प्रिासक को स्वयं सदाचािी, न्यायी, हनष्कपट तथा कतथव्यपिायण िोना चाहिए। सदाचािी प्रिासक को ध्रुुव तािे की भााँहत िोना चाहिए िो अपने स्थान पि स्ट्स्थि िहते हुए अन्य नक्षत्रों ंको अपनी परिक्रमा के हलए हववि किता िै। 'िैसा ििा वैसी प्रिा'।"

सद्गुण के सम्बन्ध में कन्फ्यूहियस का क्या हवचाि था ? उनके इस िब्द (सद्गुण) का पयाथय 'िेन' िै। उनके नैहतक हसद्धान्त का समुहचत बोि मुख्यतः 'िेन' के हनहिताथथ पि हनभथि किता िै। अाँग्रेिी में 'िेन' के हलए कोई ऐसा समानाथथक िब्द निीं ंहमलता हिससे िम इस िब्द की अथथवत्ता से पूणथतः अवगत िो सकें। कन्फ्यूहियस की समूपूणथ हिक्षाओं ंके साि-तत्त्व के दिथन इस एक िब्द 'िेन' में िी हकये िा सकते िैं। इस कहठन िब्द का हनकटतम समानाथथक िब्द 'सामाहिक सदाचाि' (Social Virtue) िै। यि पिोपकारिता, दानिीलता, उदािता, हनष्कपटता, श्रद्धा, पिहितवाद, अध्यवसाय, प्रेेमपूणथ सहृदयता तथा सिाुवृहत्त्–िैसे उन समस्त सद्गुणों ंका संयोिन िै िो सामाहिक समस्विता तथा िास्ट्न्त के हलए पुहष्टप्रद िैं।

कन्फ्यूहियस से एक हिष्् ने पूछा- "आदिणीय गुरुदेव, सामाहिक सद्गुण का संघटक तत्त्व क्या िै?"
कन्फ्यूहियस ने उत्ति हदया- "यि दूसिों ंके प्रहत प्रेेम िै।" एक अन्य हिष्् ने पूछा- "गुरुदेव, क्या ऐसा कोई हसद्धान्त-वाक्य िै हिसका अनुसिण िम आिीवन किते ििें?" कन्फ्यूहियस ने उत्ति हदया- "अपने प्रहत अन्य लोगों ं के हिस व्यविाि को तुम अवांहछत समझते िो, वि व्यविाि अन्य लोगों ंके प्रहत मत किो।"

कन्फ्यूहियस का एक मुख्य हिष्् किता िै- "स्वयं के प्रहत हनष्ठा औि अपने पड़ोहसयों ंके प्रहत दानिीलता - यि एकमात्र हसद्धान्त िी मेिे गुरु की हिक्षाओं ंका साि-तत्त्व िै।"

कन्फ्यूहियस किते िैं- "स्वगथ के आदेि, मिान् पुरुषों ंतथा सन्तों ंकी सूस्ट्क्तयों ंके प्रहत श्रद्धायुक्त हवस्मय सद्गुण-सम्पन्न व्यस्ट्क्त में हवद्यमान ििते िैं। ईश्वि की पूिा के समय तुम्हें यि प्रतीत िोना चाहिए हक वि तुम्हािे सम्मुख साक्षात् हवद्यमान िै।"

कन्फ्यूहियस की हिक्षा के अनुसाि समस्त संसाि तथा प्रत्येेक व्यस्ट्क्त में सतत परिवतथन िो ििा िै एवं मानव िीवन का सवाथहिक मूलभूत पक्ष हवद्यमान यथाथथ िै।

पहत-पत्नी, माता-हपता तथा पुत्र, अग्रि-अनुि या मुख्यतः ज्येष्ठ-कहनष्ठ, िासकर्–िहसत तथा हमत्र-हमत्र-
कन्फ्यूहियस के अनुसाि इन पाँच पािस्परिक सम्बन्धों ंकी ििआिहिला पि िी समाि का हनमाथण हुआ था। हकसी दिे में स्वच्छ प्रिासन तभी सम्भव िै, िब सभी दल इन सम्बन्धों ंकी समुपुहष्ट के हलए अपना सम्यक् योगदान दें।
"ताओ अथाथत् उपयुक्त तथा न्यायोहचत मागथ की सम्प्रास्ट्प्त तभी सम्भव िै, िब हपता, पुत्र, प्रिासक तथा मन्त्री यथाथथ
रूप में हपता, पुत्र, प्रिासक तथा मन्त्री िों।ं"
कन्फ्यूहियस चरित्र-हनमाथण एवं मन तथा आचिण की िुस्ट्द्ध पि अत्यहिक बल देते थे। वे लोगों ंको सवथप्रथम सच्चरित्रता के हवकास के हलए उत्प्रेरित किते थे िो एक अमूल्य ित्न तथा सवोत्तम गुण िै।

कन्फ्यूहियस के अनुसाि मानव-प्रकृहत मूलतः िुद्ध िै या िुद्धता की ओि उन्मुख िै। हविुस्ट्द्ध की पूणथता के दिथन मात्र साि-सन्तों ंमें िी सम्भव िैं। प्रत्येक मनुर्ष् को पहवत्र िीवन, भव्य चरित्र एवं हनस्स्वाथथ, हनष्कपट तथा सत्यहनष्ठ कमथ के माध्यम से इस आदिथ की हसस्ट्द्ध के हलए प्रयत्निील ििना चाहिए। िो उत्तम चरित्र तथा हदव्य गुणों ंसे अलंकृत िै, वि चुनर्–ू (Cphun-Tzu) अथाथत् ििाकुमाि की कोहट का मनुर्ष् िै। ििासी स्वभाव का व्यस्ट्क्त सद्गुणों ंके प्रहत समहपथत िोता िै, िब हक हनकृष्ट व्यस्ट्क्त भौहतक सुख-सुहविा के प्रहत आकृष्ट िोता िै। ििासी स्वभाव वाले व्यस्ट्क्त के कायथ-कलाप न्याय-संगत िोते िैं; हकन्तुि हनकृष्ट व्यस्ट्क्त पुिस्काि तथा अनुग्रि की ओि किता िै। ििासी स्वभाव का व्यस्ट्क्त गरिमायुक्त, श्रेष्ठ, उदाि तथा हवनम्र िोता िै, िब हक हनकृष्ट व्यस्ट्क्त नीच, अिंकािी, कुहटल तथा उद्धत िोता िै।

'ग्रेट लहनांग' नामक ग्रन् में कन्फ्यूहियस इस सोपानवत् प्रहक्रया को प्रस्तुत किते िैं हिसके माध्यम से आत्म-हवकास की सम्प्रास्ट्प्त िोती िै औि हिससे उत्प्रेरित िो कि यि सवथसािािण के िीवन में भी प्रवाहित िोने लगता िै। यि िाज्य की सेवा तथा मनुर्ष् को कृताथथ किता िै। इस क्रम को कन्फ्यूहियस ने इस हवहि से प्रस्तुत हकया िै-

१. प्राकृहतक दृश्य-प्रपंच का अनुसन्धान, २. पास्ट्ण्डत्य, ३. हनष्कपटता, ४. प्रयोिन की पहवत्रता, ५. आत्म-हवकास,
६. पारिवारिक अनुिासन, ७. स्वायत्त िासन तथा ८. सावथभौम स्वायत्त िासन।

कन्फ्यूहियस किते िैं- "प्राचीन मनीहषयों ंने समस्त साम्राज्य में प्रख्यात सद्गुणों ंके दृष्टान्त की प्रस्तुहत के हलए सवथप्रथम अपने िाज्यों ंके हितर्–क्षण पि बल हदया, अपने िाज्यों ंके हितर्–क्षण के हलए उन्होंनें सवथप्रथम अपने परिवािों ंका हनयमन हकया, अपने परिवािों ंके हनयमन के हलए उन्होंनें सवथप्रथम स्वयं को परिष्कृत हकया, आत्म-परिष्काि के हलए सवथप्रथम उन्होंनें अपने प्रयोिन को हविुद्ध हकया, अपने प्रयोिन की हविुस्ट्द्ध के हलए सवथप्रथम उन्होंनें हनष्कपट हचन्तन हकया औि हनष्कपट हचन्तन के हलए उन्होंनें अपनी हवित्ता का आत्यस्ट्न्तक संवििथन हकया। ऐसा वे वस्तुओं ंके अनुसन्धान के माध्यम से िी कि सके।

"वस्तुओं ंके अनुसन्धान से उनका ज्ञान हवस्तृत िोता गया; उनके ज्ञान-हवस्ताि से उनके हवचाि हनष्कपट हुए, उनके हवचाि की हनष्कपटता से उनके प्रयोिन में आत्थव का समावेि हुआ, प्रयोिन में आत्थव के समावेि से उन्होंनें स्वयं को परिष्कृत हकया, आत्म-परिष्काि से उनके परिवािों ंका हनयमन हुआ, इस पारिवारिक हनयमन से उनके िाज्यों ंको स्वच्छ प्रिासन हमला औि िाज्यों ंके स्वच्छ प्रिासन से समस्त साम्राज्य िान्त तथा समृद्ध िो गया।

"िीवन के हवहित कमों के हनष्पादन में सम्पूणथ िीवन व्यतीत िो िाता िै। एक भी स्खलन सम्पूणथ कमथ के मागथ में व्यहतिेक की सृहष्ट कि देता िै। साि-वृत्त केवल पहवत्रता में हनहित निीं ंिोती। वस्तुतः यि समग्रता एवं सुहनयोहित तथा हनदोष िीवन-यापन की कला में हनहित ििती िै। इस हवहि से वृद्धावस्था को प्राप्त व्यस्ट्क्त का िीवन सौन्दयथमय िो िाता िै।"

डनष्कषक

कन्फ्यूहियस ने ई.पू. छठी ितताब्दी को अमित्व प्रदान कि हदया। वे एक िन्मित िन-नेता थे। यहद परिस्ट्स्थहतयााँ अनुकूल िीि िोतीं,ं तो उनकी गणना संसिा के मिानतम िासकों ंमें िोती। उनका नैहतक बिो पूणथरूपेण हवकहसत था िौ उनमें मानव िीवन में नैहतक गुणों ंके सवोच्च मित्त्व की गिन अनुभूहत थी। उनकी मिानता को अनेक ितास्ट्ब्दयों ंतक सावथहत्रक मान्यता प्राप्त िोती िीि। हवश्व के कोहट-कोहट लोग िाि भी उनके प्रहत अपना िािदथक
सिान प्रकट किते िैं।
कन्फ्यूहियस एक मिान् चीनी उपदेिक तथा समाि-सुधािक थे। उनका युग अव्यवस्था, िोस्ट्न्त, असामंिस्य, मतभेद तथा सामन्ती युद्धों ंका युग था। उन्हें चीनी संस्कृहत का िनक किा िाता िै। चीन के इहतिास को हदिा प्रदान किने में उनका योगदान स्तुत्य ििा िै। उस देि के व्यहष्टगत या समहष्टगत िीवन में उनका प्रभाव िाि भी एक मुख्य घटक के रूप में हवद्यमान िै।

पुिाकालीनता के एक परिश्रमी हवद्याथी के रूप में वे अप्रहतम थे। उन्होंनें अपने हवषय में किा िै हक उनका िन्म एक अज्ञानी के रूप में हुआ था। उन्हें ज्ञान की प्रास्ट्प्त अतीत के हदव्य सम्पकथ के कािण हुई।

कन्फ्यूहियस एक प्रभाविाली तथा प्रीहतकि व्यस्ट्क्तत्व के स्वामी थे। वे चौबीस सौ वषों तक अपने िाष्ट्र के हविानों ं तथा हचन्तकों ंके हलए एक प्रहतमान तथा प्रेिणा बने ििे। उनकी वेहदका पि प्रायः इन िब्दों ंके दिथन िोते िैं- "एक सिस्र पीहढ़यों ंके हिक्षक।" हनःसन्देि वे इस प्रिस्ट्स्त के वास्तहवक अहधकािी िैं।

कन्फ्यूहियस के सम्बन्ध में हलखे गये एक लोकहप्रय इहतिास के अन्त में हनम्नांहकत पंस्ट्क्तयााँ उस्ट्ल्लस्ट्खत िैं-

कन्फ्यूडियस ! कन्फ्यूडियस ! डकिना महान् था कन्फ्यूडियस !
उसके समि कोई कन्फ्यूडियस नही ंथा।
उसके पश्चात् डकसी कन्फ्यूडियस का आडवभाकव नही ंहुआ।
कन्फ्यूडियस ! कन्फ्यूडियस ! डकिना महान् था कन्फ्यूडियस !

कन्फ्यूहियस का स्मिण िाि भी कोहट-कोहट िन श्रद्धा तथा सिान के साथ किते िैं। चीन के लोगों ंका अहधकांि िाि भी कन्फ्यूहियस के मत के प्रहत आस्थावान् िै।

उस मिान् नैहतकतावादी, िािनीहतज्ञ तथा समाि-सुधािक कन्फ्यूहियस की महिमा स्तुत्य िै।

ईसामसीि

ईसामसीि (Jesus) एक हफलस्तीनी यहदी थे। उनका िन्म बेतलिम (Bethlehem) में हुआ था िौ वे मरियम (Mary) तथा यूसुफ (Joseph) के पुत्र थे। एक हनष्पाप तथा हनष्कलंक अविािणा से प्रसूत ईसामसीि के िन्म-ग्रिण के हलए उनकी माता मरियम को गभथ धािण नहीं ंकिना पड़ा था। वे अत्यन्त हवनम्र थे। वे िीवन एक बालक की भााँहत अबोध तथा हनष्कपट बने ििे। वे सहिष्णु तथा दयालु थे। उन्होंनें अपने उपदेिों ंसे हफलस्तीन को उपकृत हकया; हकन्तु वस्तुतः वे पूवथ के योगी थे।

ईसामसिी ने पाहपयों,ं हतिसूकृत व्यस्ट्क्तयों ंतथा वेश्याओं ंतक का स्वागत हकया औि अपने प्ेरेम-पाि में आबद्ध कि उन्हें हविुद्ध कि हदया। उन्होंनें उन्हें सान्फ्त्वना तथा िास्ट्न्त प्रदान की, पहतत िनों ंको ऊपि उठाया तथा िो लोग भग्न-हृदय थे, उनके दु:खों ंको उपिहमत हकया।

ईसामसिी किते थे- "िब तक तुम एक बालक की भााँहत अबोि तथा

हनश्छल निीं ंिो िाते, तब तक ईश्वि के िाज्य में तुम्हािा प्रवेि वहिथत ििेगा।" उनके अनुसाि ईश्वि वात्सल्यपूणथ हपता िै। 'ईश्वि तथा पड़ोसी के प्रहत प्ेरेम' ईसामसिी का आदेि वाक्य था।

"ईश्वि के प्रहत आस्थावान् बनो। ईश्वि िमािा प्रभु िै। तुम अपने समूपूणथ हृदय, अपने समूपूणथ मन, अपनी समूपूणथ आत्मा तथा अपनी समूपूणथ िस्ट्क्त से ईश्वि से अनन्य प्ेरेम किो। तुम अपने समीपवती व्यस्ट्क्तयों ंसे आत्मवत् प्ेरेम किो। ईश्वि के प्रहत प्ेरेम की अहभव्यस्ट्क्त मनुष्् के प्रहत प्ेरेम में िोती िै।" यि ईसामसिी की केन्द्रीय हिक्षा िै।

ईसामसिी एक िगद्गुरु, पैगम्बि तथा मसीिा थे। उनका 'िैलोपदेि' (Sermon on the Mount) सदाचाि या सम्यक् आचाि के अहतरिक्त औि कुछ भी निीं ंिै। यि िाियोग के यम-हनयम एवं भगवान् बुद्ध के अष्टांहगक मागथ के अनुरूप िै।

ईसामसिी ने अस्ट्न्तम िाहत्र-भोि (Last Supper) के समय अपने हिष्ों ंका चिण-प्रक्षालन हकया। हकतने हवनम्र थे वे ! वे किते िैं- "वे िन्य िैं िो हवनम्र िैं; क्योंहंक उन्हें पृथ्वी का उत्तिाहिकाि प्राप्त िोगा।

ििमिाि युहिहष्ठि िािा अनुहष्ठत िािसूय यज्ञ में भगवान् कृष्ण ने भी अहतहथयों ंका पद-प्रक्षालन हकया था। ऐसे कमथ अवतािों ंया िस्ट्क्तमान् आत्माओं ंििािा िी हनष्पाहदत हुआ किते िैं। क्या उन मिान् व्यस्ट्क्तयों ंसे आपको हिक्षा ग्रिण निीं ंकिनी चाहिए? मिाबली हत्रलोकाहिपहत भगवान् कृष्ण को अहतहथयों ंके चिण-प्रक्षालन से आनन्द प्राप्त हुआ था। क्या आपको हवनम्र निीं ंिोना चाहिए? आप लोगों ंका हृदय दम्भ तथा अिंकाि से हकस सीमा तक दूहषत िो गया िै! िब आपको हंकहचत् िन, एक काि या नगण्य भू-सम्पहत्त प्राप्त िो िाती िै, तब आप दपथ या अहभमान से मदोन्मत्त िो उठते िैं। इस स्ट्स्थहत में आप स्वयं को एक िस्ट्क्तिाली सम्राट् समझने लगते िैं, आपके पद-प्रक्ेषेपण में औद्धत्य के दिथन िोने लगते िैं औि लोगों ंके प्रहत आपके व्यविाि में हतिस्काि तथा अवज्ञा का समावेि िो िाता िै। आप अपने व्यस्ट्क्तत्व तथा अपनी अवस्ट्स्थहत को आवश्यकता से अहिक मित्त्वपूणथ समझने लगते िैं। वस्तुतुतः आपके पदाहिकाि ने आपके अन्दि दास-मनोवृहत्त की सृहष्ट कि दी िै औि आप अपनी पद-च्युहत की आिंका के कािण सवथदा भयग्रस्त ििते िैं।

ईसामसिी यि सन्ेदेि सवथदा देते िे- "अपने पड़ोहसयों ंको आत्मवत् प्याि किो।" उन्होंनें किा- "स्वगथ का िाज्य तुम्हािे अन्दि िी िै। हिस प्रकाि पिमेश्वि की इच्छाओं ंकी पूहतथ स्वगथ में िोती िै, उसी प्रकाि इनकी पूहतथ ििती पि भी िो। हचन्ता मत किो। सवथप्रथम तुम उसके िाज्य की खोि किो। इसके पश्चात् तुमको सब-कुछ प्राप्त िो िायेगा।" लोगों ंके अनुगमन के हलए वे सन्मागथ, सत्य तथा प्रकाि थे।

ईसामसिी ने ईश्वि के िाज्य में प्रवेि के हलए ईश्वि तथा पड़ोहसयों ंके प्रहत प्ेरेम तथा पश्चात्ताप की आवश्यकता या हृदय-परिवतथन पि अहिक बल हदया। उन्होंनें लोगों ंको भूखों ंको भोिन तथा वस्त्रिीनों ंको वस्त् देने के हलए अनुप्रेहित हकया। उन्होंनें किा हक ईश्वि की क्षमा-प्रास्ट्प्त के हलए पश्चात्तापपूणथ हृदय आवश्यक िै।

"ईश्वि का िाज्य तुम्हािे अन्दि िै। उसकी खोि किो। वि तुम्हें अवश्य प्राप्त िोगा। उसके द्वाि को खटखटाओ, तो वि तुम्हािे हलए खोला िायेगा।" इसी आिाि-हिला पि ईसामसिी की आचाि संहिता अवस्ट्स्थत िै।

इस िाज्य की सम्प्रास्ट्प्त के हलए ईसामसीि ने माध्यम के रूप में प्राथथना की संसुतुहत की। उन्होंनें किा- "िब तुम बुिे िोकि अपने बच्चों ंको अच्छी वस्तुएुँ देना िानते िो, तो तुम्हािा स्वगीय हपता अपने माुँगने वालों ंको अच्छी वस्तुएुँ क्यों ंनिीं ंदेगा?"

ईसामसीि ने किा- "तुमने प्राचीन मनीहषयों ंकी यि बात सुनी िै, 'तुम हकसी की ित्या न किना औि िो कोई भी ित्या किेगा, उसे दैवी न्याय का कोप-भािन िोना पिेगा'; हकन्तु मैं किता हुँ हक िो कोई अपने भाई पि क्रोि किेगा, उसे दैवी न्याय का कोप-भािन िोना पिेगा।"

'िैलोपदेि' में उन्होंनें किा- "िन्य िैं वे िो िमथ के हलए क्षुिा तथा तृषा सिन किते िैं, क्योंहक वे तृप्त हकये िायेंगे। िो लोग ईश्वि के िाज्य की खोि अपने अन्ति में किते िैं, वे ईश्वि को प्राप्त कि लेंगे औि इस प्रकाि उन्हें अन्य सभी वस्तुएुँ भी प्राप्त िो िायेंगी।"

"िुभ से अिुभ को पिाहित किो।" ईसामसीि ने अपने हिष्यों ंतथा संसाि के अन्य लोगों ंके समक्ष इस मिान् व्रत या हविान को प्रस्तुत हकया। यि एकमात्र अहिंसा की सािना िै हिससे हृदय पहवत्र तथा कोमल िोता िै। अहिंसा सत्य का रूपान्तिण मात्र िै।

बपहतस्मा-ग्रिण के पिात् ईसामसीि मृत सागि के पाि के अिण्य की औि चले गये। वे तेिि वषथ की आयु में अन्तिाथन हुए थे औि उनका पुनः आगमन उस समय हुआ िब उनकी आयु इकतीस वषथ की िो चुकी थी। इस अवहि में उन्होंनें भाित में योग-सािन की। इसके पिात् उन्होंनें दो-तीन वषों तक उपदेि हदया औि सवाथतीत पिम सत्ता में हवलीन िो गये।

ईसामसीि यरूसलेम (Jerusalem) के परित्याग के पिात् श्रेहष्ठयों ंके एक साथथ में सस्म्महलत िो कि हसन्ध नदी के तट पि पहुुँचे। उन्होंनें वािाणसी, िािगृि तथा भाित के अन्य नगिों ंकी यात्राएुँ कीं।ं हिन्दुस्तान में उन्होंनें अनेक वषथ व्यतीत हकये। ईसामसीि यिाुँ एक हिन्दू या बौद्ध हभक्षु की भाुँहत ििे। इस अवहि में उनका िीवन ज्वलन्त त्याग तथा अनासस्ट्क्त से आप्लाहवत था। उन्होंनें हिन्दू-िमथ के आदिों, अनुदेिों ंतथा हसद्धान्तों ंको एकीकृत हकया। ईसाइयत मात्र संिोहित हिन्दुत्व िै िो ईसामसीि के समकालीन िन-समुदाय के अनुकूल था। ईसामसीि वस्तुतः भाितभूहम की िी उपि थे। इसी कािण उनके उपदेिों ंऔि हिन्दू-िमथ तथा बौद्ध-िमथ के उपदेिों ंमें इतना अहिक सादृश्य िै।

ईसामसीि ने इस ििती पि हदव्य तथा पूणथ प्रेम का उपदेि हदया। वे दानिीलता तथा उदािता के प्रिस्स्त-गायन में सिस्रमुख िो िाते थे। वे किा किते थे- "ग्रिण की अपेक्षा दान अहिक स्तुत्य एवं पुण्यप्रद िै। अपने हृदय के सवोत्तम कोष को अहपथत कि दो। हनमथल प्रकृहत से हिक्षा ग्रिण किो। अपना प्रेम दे कि प्रत्युत्ति में हकसी भी वस्तु की माुँग मत किो। प्रहत-उपकाि की आिा मत किो। अपने सीहमत भण्डाि से तुम हितना अहिक व्यय किोगे, उतना िी अहिक तुम्हें प्रभु से प्राप्त िोगा। वि तुम्हें दूनी िाहि प्रदान किेगा।"

ईसामसीि किते थे- "स्वगथ का िाज्य हकसी खेत में हछपे हुए िन की भाुँहत िै हिसे हकसी व्यस्ट्क्त ने पा कि हछपा हदया िै। उसने अपना सब-कुछ बेच कि उस खेत को मोल ले हलया।"

ईसामसीि को सलीब पि टाुँग कि उनके ििीि में कीलें ठोंक दी गयो औि इस प्रकाि उनका देिान्त िो गया; हकन्तु वे अभी भी िीहवत िैं। उन्होंनें अपने नाम को अमि कि हदया िै। उनके स्विों ंको प्रहतबस्ट्न्धत निीं ंहकया िा सकता। वे ितास्ट्ब्दयों ंसे मुखि िोते आ ििे िैं। उनका किना था- "अपना सवथस्व बेच कि तथा उसे हनिथनों ंमें

हवतरित कि के स्वगथ के िाज्य में प्रहवष्ट िो िाओ।" लोग उनके सन्देि के अनुरूप आचिण में असमथथ िैं; हकन्तु उनके स्वों ंसे िीती-आकाि आि भी गूंहित िैं।

ईसामसीि एक पूणथ योगी थे। उन्होंनें अनेक चमत्कािों ंका प्रदिथन हकया। उन्होंनें समुि की तिंगों ंकी गहत अवरुद्ध कि दी। उन्होंनें अन्धों ंको नेत्र दान हदया, कुष्ठग्रस्त िोहगयों ंको स्पिथमात्र से िोगमुक्त कि हदया औि िोटी के एक टुकिे मात्र से बिी भीि की क्षुधा को िान्त कि हदया।

भगवान् ईसामसीि को सलीब पि लटका हदया गया औि उन्होंनें मृत्यु को इसहलए आनन्दपूवथक स्वीकाि कि हलया हक अन्य लोग िीहवत िि सकें। हकतने मिान् तथा उदािचेता थे वे ! अपने बच्चों ंके हलए उन्होंनें मृत्यु का सिषथ आहलंगन किना सीख हलया था। उनके अस्न्तम िब्द हवश्व के हलए एक दृष्टान्त बन गये िैं। उन्होंनें किा- "िे प्रभो! िो लोग मुझे यन्त्रणा दे कि मृत्यु-दण्ड दे ििे िैं, उन्हें क्षमा कि देना; क्योंहक उन्हें यि ज्ञात निीं ंिै हक वे क्या कि ििे िैं।" हकतने भव्य, हकतने उदात्त थे उनके ये अस्न्तम िब्द ! उनके िाथों ंको सलीब से बााँध हदया गया था औि उनमें कीलें ठोंक दी गयी थीं। इस स्स्थहत में भी उन्होंनें उन लोगों ंके हलए ईश्वि से प्राथथना की िो उनको उत्पीहित कि ििे थे। उनका हृदय हकतना हविाल तथा क्षमािील था! ईसामसीि क्षमािीलता की प्रहतमूहतथ थे। यिी कािण िै हक वे आि भी िमािे हृदय में हवद्यमान िैं औि कोहट-कोहट लोग उनकी उपासना किते िैं।

िुभ से अिुभ की हविय के हलए उन्होंनें लोगों ंके समक्ष एक दृष्टान्त प्रस्तुत हकया। ईसामसीि का सलीब उनके इस हसद्धान्त के सवोच्च दृष्टान्त के रूप में सवथदा अमि ििेगा हक 'अिुभ के प्रत्युत्ति में िुभ दो।' ईसामसीि ने स्वयं को ईश्वि को पूणथतः समहपथत कि हदया था। वे इस सत्य से परिहचत थे हक ईश्वि सदाचािी व्यस्क्तयों ंके दुःख-भोग के माध्यम से दुिाचािी व्यस्क्तयों ंका हृदय-परिवतथन कि देता िै।

सलीब पि हुई मृत्यु के पिात् वे पुनिीहवत िो गये। ईसामसीि के अनुसाि पुनरुत्थान या मृतक का पुनिीहवत िोना वि अहनवथचनीय स्स्थहत िै हिसमें समस्त दैहिक सीमाओं ंका अहतक्रमण िो िाता िै। यि ईश्वि के सुख अनन्त काल तक उपस्स्थहत की दिा िै। ईसामसीि एक हसद्ध योगी औि सन्त थे। भौहतक ििीि से उनका तादात्म्य निीं ंथा। उन्होंनें स्वयं को पिमात्मा के साथ एकाकाि कि हलया था। उनका किना था- "मैं तथा मेिे हपता एक िैं।"

डिसमस (ईसा-जयन्ती) की वास्तडवक अथथवत्ता

हक्रसमस का नामकिण ईसामसीि के नाम के आधाि पि हुआ था। यि भगवान् ईसामसीि का िन्म-हदवस िै िो पूवथ के योगी तथा मानवता के मुस्क्तदाता थे। उनका िन्म बेतलिम के एक अस्तबल में मरियम तथा यूसुफ नामक एक नगण्य काष्ठकाि दम्पहत की सन्तान के रूप में हुआ था। मरियम तथा यूसुफ ने उस अस्तबल को िास्न्त के िािकुमाि ईसामसीि का हनवास-स्थान बना हदया। ईसामसीि का िन्म-हदन पहवत्र हक्रसमस के रूप में समस्त संसाि में मनाया िाता िै।

भगवान् ईसामसीि दया, प्रेम तथा हवनम्रता की प्रहतमूहतथ थे। वे अहिंसा एवं िास्न्त के सन्देि-वािक थे। उन्हें सलीब पि मृत्यु दण्ड दे हदया गया था; हकन्तु उनकी वाणी िताब्दियों ंसे मुखि िोती आ ििी िै।

हक्रसमस का सन्देि वैश्व प्रेम का सन्देि िै। यि सन्देि दैवी महिमा तथा गौिवमयी दीस्प्त का सन्देि िै। हक्रसमस का सन्देि सभी िाष्टरों ंके बीच िास्न्त तथा सद्भावना का सन्देि िै।

हक्रसमस िषथ तथा आनन्दोत्सव के अहतरिक्त एक अन्य दृहष्टकोण से भी मित्त्वपूणथ िै। यि ईसामसीि की संचेतना या वैश्व चेतना के अहिगम का हदन िै। यि भगवान् ईसामसीि के उदात्त कमों तथा पुिातन िुहचता से ओत-प्रोत

उनके पहवत्र ीवन के स्मिण का हदन ै। हक्रसमस आता–ाता ीता ै; हकनुतु हक्रसमस की अथथवत्ता आप सब लोगों ंमें सदैव हवद्यमान िनी चाहिए।

हक्रसमस हकसी भी दृहष्ट से आमोद-प्रमोद निीं ंै। घण्ट् बिाने, गीत गाने, उपिािों ंके आदान-प्रदान, हक्रसमस-पत्रों,ं व्यंनि-बोहझल भोिों ंतथा केक-भक्षण में हक्रसमस की साथथकता हनहित निीं ंै।

हक्रसमस आध्यास्ट्कि ािगिण की मनः स्ट्स्थहत ै। अपने अन्ति में स्वगथ के िाज्य की हवद्यमानता की अनुभूहत, अपने हृदय-कक्ष में प्रभु का सामीप्य, अपने हवलुप्त देवत्व की पुनः सम्प्रास्ट्प्त, ईसा की संचेतना अथाथत् वैश्व चेतना की उपलस्ट्ब्ध, सबके प्रहत पे्रम तथा सब लोगों ंका अपने पे्रम-पाि में आहलंगन ी यथाथथ हक्रसमस ै।

ईसामसीि की हदव्य मनीषा का पूणथरूपेण अनुभव कीहिए। ईसामसीि के पद-हचह्नों ंका अनुसिण कीहिए। ईसामसीि के हृदय की अगाि गििाई में प्रवेि कीहिए। अपने दैहनक ीवन में पे्रम, आनन्द तथा िास्ट्न्त की अहभव्यस्ट्क्त के हलए प्रयत्निील िहिए। ईसामसीि के पे्रम तथा बहलदान को हृदयंगम कीहिए। अपने अन्ति में गुप्त, ईसामसीि को अहभव्यक्त कीहिए। 'िैलोपदेि' में हनहित सने्देि का अनुसिण कीहिए। स्वयं को ईश्विीय चेतना से सम्बद्ध कीहिए। ईसामसीि के उपदेिों ंमें हनहित मन्तव्यों ंका अनुसिण कीहिए। तुच्छ दपथ में हलप्त अपने व्यस्ट्क्तत्व का हवर्ध्वंस कीहिए एवं स्वयं को ईसामसीि अथाथत् वैश्व आत्मा में समाहित कि दीहिए। यिी यथाथथ हक्रसमस ै।

ईश्वि के िाज्य में प्रवेि के हलए सभी इचु्छक ैं; हकनु्तु आपमें से हकतने लोगों ंके पास ईसामसीि की चेतना ै? आप लोगों ंमें हकतने लोग हविुद्ध हक्रहियन ैं? आप लोगों ंमें हकतने लोग ऐसे ैं ो ईसामसीि के उपदेिों,ं हनदेिों ंतथा हसद्धान्तों ंका अनुगमन किते ैं? आप लोगों ंमें उन लोगों ंकी संख्या हकतनी ै ो अपने पड़ोहसयों ंसे आत्मवत् पे्रम किते ैं? ो लोग आन्तरिक िुहचता, हवनम्रता, वैश्व पे्रम, उदािता तथा उदात्तता से समृद्ध ैं, विी लोग ईश्वि के िाज्य अथाथत् सवोच्च िास्ट्न्त तथा अमित्व के अहिकािी ैं।

िम लोगों ंमें से अहिकांि में ईसामसीि की आन्तरिक चेतना का सवथा अभाव ै। ईसामसीि के पे्रम की अपरििायथ आवश्यकता ै। पे्रम, दया तथा िुहचता के अभाव में हक्रसमस की उपयोहगता ी क्या ै? प्रते्यक व्यस्ट्क्त अपने पड़ोसी का िोषण किना चािता ै। एक िाष्ट्र दूसिे िाष्ट्र के हवनाि के हलए लालाहयत ै। क्या यिी हक्रसमस ै? क्या यिी ईसामसीि की हिक्षा ै?

यथाथथ हक्रसमस में आवागमन की प्रहक्रया निीं ंै। यि िाश्वत ै। हक्रसमस के अहभप्राय से केवल एक हदन परिहचत न ो कि वषथ-भि परिहचत िहिए। ईसामसीि के वास्तहवक अनुयायी तथा आत्मिीील आकांक्षी के हलए प्रते्येक हदन हक्रसमस ै।

गुरु नानक

जन्म

जब पृथ्वी पि कोई घोि हवपहत्त आती ै, िब िमथ का क्षय ोने लगता ै, िब ीती अत्याचाि तथा दुव्यथवस्था से ग्रस्त ो ाती ै औि िब ईश्वि के प्रहत लोगों ंकी आस्था में ह्रास ोने लगता ै, तब पहवत्र ग्रन्ों ंके प्रणयन, िमथ की िक्षा, अिमथ के हवनाि तथा लोगों ंके मन में ईश्वि के प्रहत श्रद्धा के पुनिाथगिण के हलए समय-समय पि मिान् पुरुष अवतरित हुआ किते ैं। भाित औिगहत को प्राप्त ो चुका था। बाबि ने भाित पि आक्रमण कि हदया था औि

उसकी सेनाओं ंने अनेक नगिों ंको लूट हलया था। बन्दी सािु-सन्तों ंको कठोि परिश्रम किने के हलए हववि हकया िाता था। प्रत्येक स्थान पि अन्धािुन्ध ित्याएँ िो ििी थीं। ं ििा िक्त-हपपासु, हनदथयी तथा अत्याचािी िो गये थे। यथाथथ िमथ किीं ं निीं ं था। िाहमथक उत्पीिन अबाि गहत से चल ििा था। कमथकाण्ड ने िमथ के यथाथथ स्वरूप को हवकृत कि हदया था। लोगों ंके हृदय में असत्, कुहटलता, स्वाथथ तथा लोभ का समावेि िो चुका था। ऐसे समय में संसाि में गुरु नानक का आगमन िास्त्न्त, एकता, प्रेम तथा ईश्वि-भस्त्क्त के सन्देि-वािक के रूप में हुआ। उनका आगमन उस समय हुआ िब हिन्दू-मुसलमान एक-दूसिे के हवरुद्ध संघषथित थे औि वास्तहवक िमथ का स्थान
अथथिीन अनुष्ठानों ंतथा हमथ्याचािों ंने ग्रिण कि हलया था। ऐसी परिस्त्स्थहत में उनका आगमन िास्त्न्त, भ्रातृत्व अथाथत् मानवता की एकता, प्रेम तथा बहलदान के उपदेिों ंका प्रचाि-प्रसाि किने के हलए हुआ।

खत्री िािस्यवादी, कहव तथा हसख िमथ के संस्थापक नानक का िन्म सन् १४६९ में पंिाब के लािौि िनपद में िावी-तट पि स्त्स्थत तलवन्डी ग्राम में हुआ। हिस घि में नानक का िन्म हुआ था, उसके एक पाश्वथ में आि वि वेहदका अवस्त्स्थत िै हिसे ननकाना सािब के नाम से िाना िाता िै। नानक पंिाब तथा हसन्ध के िमथगुरु के रूप में प्रहसद्ध िैं। नानक के हपता मेिता कालूचन्द थे हिन्हें लोग कालू कि किते थे औि वो गाँव के लेखपाल थे। वे कृषक भी थे। तृप्ता उनकी माता थीं। ं बाल्यावस्था से िी नानक िािस्यवादी मनोवृहत्त के थे औि सािु-सन्तों ंसे ईश्वि के सम्बन्ध में बातें हकया किते थे। उनका मस्त्स्तष्क मननिील औि स्वभाव िमथपिायण था। वे अपना समय ध्यान तथा आध्यास्त्मक सािनाओं ंमें व्यतीत किते थे। वे स्वभावतः एक गम्भीि प्रकृहत के व्यस्त्क्त थे। वे बहुत कम मात्रा में भोिन ग्रिण हकया किते थे।

नानक की हिक्षा

सात वषथ की आयु में उन्हें गोपाल पान्धा के पास हिन्दी पढ़ने के हलए भेिा गया। उनके हिक्षक ने उनसे एक पुस्तक पढ़ने के हलए किा। नानक ने किा- "ईश्विीय ज्ञान के अभाव में इन सािी वस्तुओं ंकी ज्ञान-प्रास्त्प्त से क्या लाभ िै?" तब हिक्षक ने उनके हलए एक काष्ठ-पहिका पि हिन्दी की वणथमाला हलख दी। नानक ने हिक्षक से किा- "मिोदय, मुझे आप यि बताने की कृपा किें हक आपने हकतनी पुस्तकों ंका अध्ययन हकया िै? आपके ज्ञान का हवस्ताि हकस सीमा तक िो पाया िै?" गोपाल पान्धा ने उत्ति हदया- "मुझे गहणत तथा दुकानदािी के हलए आवश्यक हिसाब-हकताब का ज्ञान िै।" नानक ने किा- "यि ज्ञान आपकी मुस्त्क्त-प्रास्त्प्त में हकसी भी रूप में सिायक हसद्ध निीं ं िोगा।" बालक के इन िब्दों ंसे हिक्षक आियथचहकत िो गया। उसने उनसे किा- "नानक, मुझे कोई ऐसा उपाय बताओ िो मुस्त्क्त-प्रास्त्प्त में मेिे हलए सिायक िो सके।" नानक ने किा- "गुरुदेव, सांसारिक प्रेम को हवदग्ध कि इसकी भस्म को महस तथा अपनी बुस्त्द्ध को उत्तम लेखन-पत्र में परिणत कि लीहिए। इसके पिात् ईश्वि-प्रेम को अपनी लेखनी तथा अपने हृदय को लेखक का रूप प्रदान कि अपने गुरु के अनुदेिन में लेखन तथा ध्यान हकया कीहिए। ईश्वि के नाम तथा उसकी प्रिस्त्स्त को हलहपबद्ध कीहिए। यि भी हलस्त्खए, 'वि हकसी भी पाश्वथ से सीहमत निीं ं िै।' गुरुदेव, आप अपने लेखन-कमथ में इन्हीं ंसब बातों ंको स्थान दीहिए।" उनकी इन बातों ंसे हिक्षक स्तब्ध िो गया।

इसके पिात् कालू ने अपने पुत्र को पस्त्ण्डत बृिनाथ के पास संस्कृत पढ़ने के हलए भेिा। पस्त्ण्डत ने उनके समक्ष हलखा- 'ॐ'। नानक ने उनसे 'ॐ' िब्द का अथथ पूछा। हिक्षक ने उत्ति हदया- "तुम्हें अभी 'ॐ' िब्द के अथथ से परिहचत िोने की आवश्यकता निीं ं िै। मैं तुम्हािे समक्ष इसके अथथ की व्याख्या में असमथथ हाँ।" नानक ने किा- "गुरुदेव, हबना अथथज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता िी क्या िै? मैं 'ॐ' के अथथ को स्पष्ट करूँगा।" इसके पिात् नानक ने 'ॐ' के मित्त्व की हवस्तृत व्याख्या की। हिक्षक इसे सुन कि आियथ चहकत िो गया।

नानक का व्यवसाय

कालू ने नानक को सांसारिकता की ओि अहभमुख किने के हलए अथक प्रयास हकये। उन्होंनें नानक को कृहष-कमथ में प्रयुक्त हकया; हकन्तु नानक का ध्यान इस हदिा में अल्प मात्रा में भी आकहषथत न िो सका। खेतों ंमें भी वे ध्यान-मग्न िो िाया किते थे। वे पिुओं ंको गोचि भूहम में ले िाते थे; हकन्तु उनका मन भगवद्धस्‍त्‍क्त पि िी केस्‍त्‍ति िता था। एक बाि उनके पिु एक पड़ोसी के खेत में प्रहवष्ट िो गये। कालू ने उनके इस आलस्य के हलए उनकी भत्सथना की। नानक ने किा- "मैं आलसी निीं ंहाँ। मैं अपने हनिी खेतों ंकी िखवाली कि ििा हाँ।" कालू ने उनसे पूछा- "तुम्हािो खेत किााँ िै?" नानक ने उत्ति हदया- "मेिा ििीि खेत, मन िलवािा, सम्यक् आचिण कृहष-कमथ, हवनय हसंचाई का िल, िरि-नाम बीि, सन्तोष पटेला तथा हवनम्रता इस खेत के परिक्षणाथथ हनहमथत बाड़ िै। प्रेम तथा हनष्ठा के माध्यम से इस खेत में बीि से प्रचुि मात्रा में उत्पादन िोगा। िन्य िै वि घि, हिसमें इस प्रकाि के उत्पाद का संग्रिण िोता िै। मेिोदय, िन-सम्पहत्त पिलोक में िमािो साथ निीं ंिा सकेंगे। इसने समस्त संसाि को सम्मोहित कि हदया िै; हकन्तु कुछ लोग ऐसे भी िैं िो इसके प्रवंचक स्वरूप से भली हवहि परिहचत िैं।"

इसके पिात् कालू ने उन्हें दुकानदािी का कायथ-भाि सौंपं हदया। नानक ने उस दुकान के सािो सामान को साधुओं ंतथा हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया। उनके हपता के घि या दुकान में उन्हें िो भी वस्तु प्राप्त िोती, वे उसका दान कि देते। वे किते थे- "मेिी दुकान देि-काल से हनहमथत िै हिसमें सत्य तथा आत्मानुिासन की सामग्री संग्रिीत िै। मेिा व्यापारिक व्यविाि अपने ग्रािक साधु-मिात्माओं ंसे िी िोता िै िो हनस्सन्देि अत्यन्त लाभप्रद िै।"

िब नानक पन्द्रि वषथ के थे, तब उनके हपता ने उनको बीस रुपये देते हुए किा- “नानक, बािाि में िा कि कुछ लाभप्रद वस्तुएाँ खिीद लाओ।" कालू ने नानक के साथ अपने नौकि बाला को भी भेि हदया। नानक औि बाला तलवन्डी से लगभग बीस मील दूि स्‍त्‍स्थत चूििकाना नामक गााँव में पहुाँचे। विााँ नानक की भेंट फकीिों ंके एक दल से िो गयी। उन्होंनें मन-िी-मन सोचा- 'इस समय मुझे इन फकीिों ंको भोिन किाना चाहिए। मेिे हलए यि सवाथहिक लाभप्रद सौदा िोगा।' उन्होंनें िीघ्र िी भोज्य पदाथो का प्रबन्ध कि उनको हवहिवत् भोिन किाया। इसके पिात् वे घि लौट आये। नौकि ने अपने स्वामी को उनके पुत्र के इस सौदे की सूचना दे दी। इससे क्षुब्ध िो कि कालू ने नानक के मुाँि पि एक चपत लगा दी।

हपता ने सोचा हक नानक की रुहच गृि-कायथ में निीं ंिै। अतः उन्होंनें नानक से किा- "मेिे हप्रय पुत्र, अब तुम घोड़े पि सवाि िो कि पयथटन किते हुए कोई व्यवसाय किो। यि तुम्हािो स्वभाव के सवथथा अनुरूप िोगा।" नानक ने किा- "पूज्य हपता िी, हदव्य ज्ञान िी मेिा व्यवसाय तथा मेिे िुभ कायों का प्राचुयथ िी मेिा लाभ िै। इससे हनहित रूप में ईश्वि-िाम में मेिा प्रवेि िो िायेगा।"

तब कालूचन्द ने नानक से किा- "यहद व्यापाि-व्यवसाय में तुम्हािी रुहच निीं ंिै, तो तुम हकसी कायाथलय में काम किो।" नानक ने किा- "मैं पिले से िी ईश्वि का दास हाँ। अपने प्रभु की सेवा में मैं हनष्कपट भाव एवं पूणथ मनोयोग से अपने कतथव्य पालन के हलए सचेष्ट ििता हाँ। मैं उसके आदेि का पालन पिोक्ष रूप से किता हाँ। मैं प्रभु की अथक तथा अहवित सेवा के पुिस्काि-स्वरूप उसके दैवी अनुग्रि का आकांक्षी हाँ।" यि सुन कि उनके हपता मौन िो गये औि विााँ से चले गये।

नानक का डववाह

गुरु नानक के केवल एक बिन थी हिसका नाम नानकी था। उसका हववाि ियिाम से हुआ था िो नवाब दौलत खााँ लोिी का दीवान था। दौलत खााँ लोिी हदल्ली के तत्कालीन सम्राट् सुलतान बिलोल का सम्बन्धी था। कपूिथला के हनकट सुलतानपुि में नवाब की सुहवस्तृत िागीि थी। नानक की बिन के हववाि के पिात् िीघ्र िी नानक का भी हववाि िो गया। उनकी पत्नी का नाम सुलक्षणी था िो िनपद गुिदासपुि-स्‍त्‍स्थत बटाला के मुला नामक व्यस्‍त्‍क्त की

पुत्री थी। हववाि तथा दो पुत्रों ंके िन्म के कािण नानक की आध्यास्त्मक खोि के मागथ में कोई भी व्यहतिेक उपस्स्थत नहीं ंहो सका। उस समय भी वे वनों ंमें तथा एकान्त स्थानों ंपि हो कि ध्यान किते थे।

नानक नानकी तथा ियिाम के हलए अत्यहिक पे्रम तथा सिान के पात्र थे। तलवन्डी का िमींदाि िाय बुलाि भी उनका बहुत अहिक आदि किता था। िाय बुलाि तथा ियिाम ने सोचा हक नानक को सुलतानपुि में हकसी व्यवसाय में लगा देना चाहिए। ियिाम नानक को नवाब के पास ले गये हिसने उन्हें अपने भण्डाि-गृि का प्रभािी बना हदया। नानक ने अपने कतथव्य का हनवाथि सन्तोषिनक रूप में हकया। उनके कायथ से लोगों ंको अत्यन्त प्रसन्नता होती थी। उन हदनों ंवेतन मुद्रा के रूप में न हमल कि वस्तुओं ंके रूप में हमला किता था। इस प्रकाि नानक को भी खाद्य-पदाथथ तथा अन्य वस्तुएँ हमला किती थीं।ं इनका अल्पांश अपने भिण-पोषण के हलए िख कि वे शेषांश को हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया किते थे।

नानक के दो पुत्र (१४९४ ई. में िन्म-ग्रिण किने वाले श्रीचन्द तथा १४९७ ई. में िन्म-ग्रिण किने वाले लक्ष्मीचन्द) थे। श्रीचन्द ने संसाि का परित्याग कि साुओं ंके एक सम्प्रदाय की स्थापना की हिसे उदासी-सम्प्रदाय किा िाता िै। उनकी दाढ़ी तथा उनके सिि के केश लम्बे िोते थे। उनके शिीि के हकसी भी अंग पि उस्तिे का प्रयोग कठोितापूवथक वहिथत था। लक्ष्मीचन्द सांसारिक व्यस्क्त थे हिनके दो पुत्र थे।

सेवा-मुक्त िो कि नानक ने अपनी सािी वस्तुएँ हनिथनों ंमें हवतरित कि ददी। फकीि का वेश िािण कि वे वन-वासी िो गये। उन्होंनें कठोि तपस्या तथा गिन ध्यान की सािना की। ये समस्त हववािण हसखों ंकी पहवत्र पुस्तक आहद ग्रन् में संग्रिीत तथा परिरहक्षत िैं।

उन्हीं ंहदनों ंमिदाना नामक एक चािण तलवन्डी से उनके पास आया औि उनका भृत्य तथा हनष्ठावान् भक्त िो गया। िब भी नानक अपने भिनों ंका सस्वि पाठ किते, वि उनके पास िोता। वि एक कुशल संगीतज्ञ था। वि नानक के साथ उनके भिनों ंकी आवृहत्त हकया किता था। चौंतीस वषथ की आयु में नानक एक सवथहवहदत उपदेशक िो गये। उनके उपदेश उनके आध्यास्त्मक लक्ष्य से सम्बद्ध हुआ किते थे। सवथसािाण के मन पि उनके उपदेशों ं का गिन प्रभाव पड़ा। सुलतानपुि का परित्याग कि वे उत्ति भाित का भ्रमण किने लगे।

तलवन्डी का िमींदाि िाय बुलाि अत्यहिक वृद्ध िो गया था। वि नानक का दिथन किना चािता था। अतः उसने नानक के पास अपना एक सन्देश-वािक भेिा। नानक शीघ्र िी तलवन्डी पहुँचे, ििाँ वे िाय बुलाि के अहतरिक्त अपने माता-हपता तथा सम्बस्न्धयों ंसे भी हमले। नानक के सभी सम्बस्न्धयों ंने उनके साथ अपने सम्बन्धों ंकी दुहाई दे कि उन्हें उनके लक्ष्य से हवित किने का प्रयास किते हुए उनसे सुखमय पारिवारिक िीवन व्यतीत किने का आग्रि हकया। नानक ने किा- "क्षमाशीलता मेिी माता, सन्तोष मेिा हपता, सत्य मेिा चाचा, पे्रम मेिा भाई, अनुिाग मेिा चचेिा भाई, िृहत मेिी पुत्री, शास्न्त मेिी महिला सिचारिणी एवं बुस्द्ध मेिी सेहवका िै। मेिे परिवाि का हनमाथण इसी हवहि से हुआ िै हिसके सदस्य मेिे हनष्ठावान् सिचि िैं। अस्खल ब्रह्माण्ड का स्रष्टा अहितीय ईश्वि मेिा पहत िै। उसका परित्याग किने वाले को िन्म-मिण के चक्र में आबद्ध िो कि हवहवि रूपों ंमें कष्ट भोगना िोगा।"

बाबि गुरु नानक से अत्यन्त प्रभाहवत था। वि उनका बहुत अहिक आदि किता था। उसने उन्हें बहुमूल्य उपिाि हदये। नानक ने इन्हें अस्वीकाि कि उससे किा हक वि एहमनाबाद के बस्न्दयों ंको मुक्त कि उन्हें उनकी सम्पहत्त लौटा दे। बाबि ने शीघ्र िी उनकी इच्छाओं ंकी पूहतथ कि उनसे िाहमथक अनुदेश की याचना की। गुरु नानक ने उससे किा- "ईश्वि की उपासना किो, उसका नाम-िप किो, मद्य-पान तथा द्यूत-क्रीड़ा का परित्याग किो, सदाचािी बनो, साु-सन्तों ंतथा िमथ-पिायण व्यस्क्तयों ंका आदि-सत्काि किो, सबके प्रहत दया का व्यविाि किो औि हवहित व्यस्क्तयों ंके प्रहत सदय िो।"

गुरु नानक का िप िथा ध्यान

ईश्वि के बिो की सम्यक् उपलस्ट्ब्ध के हलए नानक ने ध्यान की कठिो सािना की। वे सवथदा गिन ध्यान की मनःस्ट्स्थहत में िििे थे। उनमें िििाध्यास निीं ंिि गया था। उनके माता-हपता ने सोचा हक वे हकसी िोग से गम्भीि रूप से ग्रस्त िो गये िैं। अतः उन्होंनें उनके पास एक हचहकत्सक को भेिा। नानक ने उससे किा- "आप मेिे िोग के हनदान तथा उसकी औषहि बताने के हलए आये िैं। आप मेिी नाड़ी देस्ट्खए। आप एक अबोि हचहकत्सक िैं और आपको यि ज्ञात निीं ंिै हक िोग का सम्बन्ध मेिे मन से िै। आप अपने घि िाइए। मैं ईश्विोन्माद से ग्रस्त हाँ। मेिे िोग से कुछ िी लोग परिहचत िैं। हिस भगवान् ने मुझे यि दुःख हदया िै, विी इसका उपिमन भी किेगा। मुझे ईश्वि का पाथथक्य-दुःख िै। मुझे मृतुयु-प्रदत्त कष्ट का अनुभव िो ििा िै। िे अबोि हचहकत्सक, आप मुझे कोई औषहि मत दीहिए। मुझे इस बात से दुःख की प्रतीहत िो ििी िै हक मेिा िििािन्त िोग से िोगा। ईश्वि को हवस्मृत कि मैं ऐस्ट्यि सुखों ंमें हलप्त ििा। तभी मुझे यि कष्ट भोगना पड़ा। दुष्ट-हृदय को दण्ड हदया िाता िै। यहद कोई व्यस्ट्क्त ईश्वि के नाम के एक अंि की भी आवृहत्त कि लेता िै, तो उसका ििीि स्वणथ-सदृि तथा उसकी आत्मा हविुद्ध िो िाती िै। उसके सभी िोग-कष्ट हवनष्ट िो िाते िैं। प्रभु के नाम स्मिण से नानक की भी िक्षा िो िायेगी। हचहकत्सक मिोदय, आप अब अपने घि िाइए। मेिे िाप के अहिकाि मत बहनए और मुझे अकेला छोड़ दीहिए।"

नानक ने कुछ हदनों ंतक के हलए अि-िल का परित्याग कि हदया। वे हदव्य मनन तथा ध्यान में पूणथतः तल्लीन िो गये। उन्होंनें पूणथरूपेण मौन-व्रत िािण कि हलया। वे कई हदनों ंतक अिण्य-वास किते ििे।

नानक संसाि में सत्ति वषों तक िीहवत ििे। वे एक स्थान से दूसिे स्थान का भ्रमण किते ििे। वे पिले गुििााँवाला हिले-स्ट्स्थत सैयदपुि में गये और तत्पिात् उन्होंनें कुरुक्षेत्र, हिििाि, वृन्दावन, वािाणसी, आगिा, कानपुि,अयोध्या, प्रयाग, पटना, िािगीि, गया तथा पुिी की यात्रा की। उनकी चाि यात्राएाँ बृिद् थीं।ं उन्होंनें श्रीलंका, मयमाि, मक्का तथा मदीना की भी यात्रा की। वे बंगाल, दहक्षण भाित, श्रीलंका, तुकी, अिब, बगदाद, काबुल, कन्धाि तथा स्याम तक गये। उन्होंनें पस्ट्ण्डतों ंतथा मुल्लाओं ंसे वाद-हववाद हकया। गया, हिििाि तथा अन्यान्य तीथथ-स्थानों ंके पण्डों ंसे िास्त्राथथ हकया। उन्होंनें अनेक लोगों ंके अज्ञान तथा भ्रम का हनिाकिण हकया। उन्होंनें सब लोगों ंको िाहमथक िीवन-यापन, भ्रातृ-प्रेम तथा आहतर्थ्-िमथ का उपदेि हदया। अपने उपदेि में उन्होंनें किा- "िरि-नाम-स्मिण किो। ईश्वि से प्रेम किो और उसके प्रहत हनष्ठावान् ििो। अपने पड़ोहसयों ंकी सेवा किो। ईश्वि िी िमािा सवथस्व िै। सवथदा उसकी प्राथथना किो और उससे तादात्म्य-िहनत आनन्द प्राप्त किो।" लोगों ंके हृदय-परिवतथन, उनके श्रद्धा-हवश्वास की प्रास्ट्प्त एवं उनको सम्यक् आचाि तथा भस्ट्क्त के मागथ की ओि अहभमुख किने में नानक ने हवहिष्ट सफलता अहिथत की। उन्होंनें हिन्दू-मुसहलम एकता के हलए अत्यहिक प्रयत्न हकया।

गुरु नानक मुलतान की ओि बढ़े। वे एक नदी के तट पि रुके। मुलतान सवथदा से फकीिों ंका नगि ििा िै। प्रह्लाद का िन्म मुलतान में िी हुआ था और िम्स तबिे़ तथा मनूसि़ की कमथ-भूहम भी यिी नगि था। पीिों ंको गुरु नानक के मुलतान आगमन की सूचना प्राप्त िो गयी। उन्होंनें उनके हलए दूि से लबालब भिा एक पात्र भेिा। गुरु नानक ने उस दुग्ध-पात्र में कुछ बतािे तथा उनके ऊपि एक फूल िख कि उसे लौटा हदया। मिदाना ने अपने स्वामी (नानक) से किा हक दूि-िैसी वस्तु को न लौटा कि उसे ग्रिण कि लेना िी उहचत िोता िै। गुरु नानक ने किा- "देखो मिदाना, तुम बुद्धू िो। पीिों ंने एक चाल चली थी। उन्होंनें दूि मेिे पीने के हलए निीं ंभेिा था। इसके अन्तगथत एक गिन दिथन हनहित िै हिसकी अथथवत्ता अत्यन्त गम्भीि िै। इसका तात्पयथ यि िै हक हिस ििि यि पात्र दूि से लबालब भिा िै, उसी प्रकाि मुलतान भी पीिों ंऔि फकीिों ंसे भिा हुआ िै और अब यिााँ अन्य हकसी िमोपदेिक के हलए कोई स्थान निीं ंिै। मैंने प्रतुयुत्ति में उन्हीं ंका अनुसिण हकया िै। मैंने उनसे किा िै हक िैसे दूि में बतािा घुल-हमल िाता िै, वैसे िी मैं उनमें घुल-हमल िाऊाँगा और दुग्ध-पात्र में िखे गये फूल की ििि उनके ऊपि आहिपत्य प्राप्त कि लूाँगा।" तब पीि तथा फकीि गुरु नानक को देखने आये। नानक ने एक भिन गाया हिसे सुन

कि उन दम्भी तथा उद्धत पीीें ंको ज्ञान हुआ। उन्होंनें हवनम्र िब्दों ंमें गुरु नानक से किा - "आदिणीय गुरु, आप मि लोगों ंको क्षमा कीहिए। िम अिाहभमान से ग्रस्त थे। कृपया िमें आध्यास्ट्कि उपदिे तथा अिीवाथद दीहिए।" गुरु नानक ने उन्हें उपदिे तथा अिीवाथद हदया।

दो चमत्कार

गुरु नानक की मक्का-यात्रा से दो हवहिष्ट घटनाएँ घिी हुई िैं। एक िात मक्का में िब नानक सो ििे थे, तब उनके पैि काबा की अिौ िो गये थे। मुसलमान अपनी प्राथथना के समय काबा की हदिा में नमन किते िैं। कािी रुकनुद्दीन ने नानक को इस स्ट्स्थहत में देख कि उनसे क्रुद्ध स्वि में पूछा- "अिे हविमी, तुमने अपने पैि ईश्वि की हदिा में कि के उनका अनादि किने का दुस्सािस कैसे हकया?" उसने नानक पि पदाघात भी कि हदया। नानक
ने संयत िो कि किा- "मैं थका हुआ हाँ। मेिे पैिों ंको आप स्वयं उस हदिा में मोड़ दीहिए ििााँ ईश्वि का वास स्थान निीं ंिै।" कािी रुकनुद्दीन ने क्रोहित िो कि उनके पैिों ंको हवपरित हदिा में मोड़ हदया। मसहिद में भी गहत का संचाि िोने लगा। यि देख कि कािी स्तब्ध िि गया। तत्पिात् वि गुरु नानक की महिमा से परिहचत िो गया।

१५२० ई. में गुरु नानक उत्ति-पहिम सीमान्त प्रदिे के अटक िनपद-स्ट्स्थत िसन अबदल गये। विााँ वे एक पिाड़ी के अिोभाग में एक पीपल के वृक्ष की छाया में बैठ गये। पिाड़ी के ऊपि बली कन्धािी नामक एक मुसहलम सन्त ििता था। उन हदनों ंपिाड़ी के ऊपि एक हनझथि था ििााँ से मिदान पानी लाया किता था। गुरु नानक विााँ अल्प अवहि में िी अत्यहिक िनहप्रय िो गये। उस मुसहलम सन्त के हृदय में नानक के प्रहत ईर्ष्ाथ िाग्रत िो ने उस मुसहलम सन्त के इस आचिण की सूचना गुरु नानक को दे दी। गुरु गयी। उसने मिदाना पि विााँ से पानी ले िाने पि प्रहतबन्ध लगा हदया। मिदाना नानक ने मिदाना से किा- "मिदाना, तुम्हें भयभीत िोने की आवश्यकता निीं ंिै। ईश्वि िम लोगों ंके हलए नीचे िी पानी भेि देगा।" पिाड़ी के ऊपि िो हनझथि था, वि िीघ्र िी सूख गया अिौ पिाड़ी के हिस अिोभाग में नानक बैठे थे, विााँ एक हनझथि फूट हनकला। इस पि सन्त क्रोहित िो गया। उसने पिाड़ी के ऊपि से नानक पि एक बड़ी चिान फेंकी हिसे नानक ने अपने खुले िाथ से िोक हलया। उस चिान पि अिो भी उनके िाथ का हचह्न अंहकत िै। तत्पिात् वि सन्त गुरु नानक के पास आ कि उनके चिणों ंपि हगि पड़ा अिौ उसने उनसे क्षमा-याचना की। गुरु नानक ने मुस्कािा कि उस उद्धत सन्त को क्षमा प्रदान कि दी। विााँ उस हनझथि के पाश्वथ में अब एक सुन्दि गुरुद्वािा िै हिसे पंिा सािब किा िाता िै।

गुरु नानक के उपदिे

गुरु नानक को इस सत्य की अनुभूहत िो गयी थी हक िरि-नाम-स्मिण का स्थगन अनुहचत िै। इसे प्रत्येक सााँस के साथ चलना चाहिए; क्योंहक हकसी को यि ज्ञात निीं ंिै हक िो सााँस भीति गयी िै, उसका प्रत्यावतथन िोगा हक निीं ं
िोगा। नानक किते िैं- "िम एक सााँस के व्यस्ट्क्त िैं। मैं इससे दीघथ कालावहि से परिहचत निीं ंहाँ।" गुरु नानक केवल उसी को यथाथथ सन्त किते िैं िो प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के साथ िरि-नाम-स्मिण किता िै। यि आदिथ व्याविायथ तथा प्रत्येक व्यस्ट्क्त के हलए सम्भव िै। वे लोगों ंसे किते िैं हक समय नष्ट न किके िीघ्राहतिीघ्र इसको (िरि-नाम-स्मिण को) प्रािम्भ कि देना चाहिए। उनका यि भी किना िै हक लक्ष्य प्रास्ट्प्त में व्यविान उपस्ट्स्थत किने वाले प्रािहत, वणथ, िाहत, मत या वगथ नामक तत्त्व इस मागथ में हकसी अिविोि की सृहष्ट निीं ंकिते। उन्होंनें िमों के भ्रातृत्व के मिान् सत्य का अनुभव कि हलया था। उन्होंनें लोगों ंको मानव के सावथभौहमक भ्रातृत्व तथा ईश्वि के हपतृत्व का उपदिे हदया।
गुरु नानक एक सिुािक थे। उन्होंनें सामाहिक भ्रष्टाचाि की भत्सथना की। उन्होंनें रूहढ़वाद अिौ कमथकाण्ड का घोि हविोि तथा िास्ट्न्त अिौ मानव-मानव के पािस्पिक प्रेम के सन्देि का प्रचाि-प्रसाि हकया। उनका दृहष्टकोण

अत्यन्त उदि था। वे ािहतगत हनयमों ंका पालन निीं ंकिते थे। लोगों ंके अन्ध-हवश्वास के हनिाकिण के हलए उन्होंनें अहिकाहिक प्रयत्न हकये। उन्होंनें ुिहचता, न्याय, भिता तथा ईश्वि के प्रहत पे्रम के उपदेि हदये। उन्होंनें नैहतक प्रदूषण के हविोि, ईश्विोपासना में यथाथथ तत्त्व के सहिवेि तथा िमथ औि ईश्वि के प्रहत वास्तहवक श्रद्धा की सृहष्ट के हलए अथक प्रयास हकये। पिमािा से आिा के तादात्म्य के माध्यम के रूप में हिर-नाम-संकीतथन के समय उन्होंनें गायन में संगीत के प्रचलन का प्रािम्भहकया। वे िीिाँिी-िाँ िाते थे, मिदाना को साथ ले िाते थे हिससे वि उनके गायन के समय िबेक (सािंगीनुमा वाद्य) बिा सके। वे किते थे- "ईश्वि तथा मानवता की सेवा किो। केवल मानवता की सेवा से स्वगथ में िमािा स्थान सुिहक्षत िो िायेगा।" महिलाओं ंके प्रहत गुरु नानक के हृदय में अत्यहिक आदि का भाव था। उन्होंनें उनको सभी िाहमथक सभाओं ंतथा सिैलनों ंमें सस्ट्हिलत िोने औि ईश्वि के संकीतथन की अनुमहत प्रदान कि दी थी। िाहमथक समािोिों ंमें उनको उनकी पूिी भागीदािी प्राप्त थी।

गुरु नानक स्पष्ट किते िैं- "ईश्विािा्ाम का मागथ दीघथ तथा श्रम-साध्य िै। समृद्ध लोगों ंके हलए इसको लघु निीं ंबनाया िा सकता। इसमें प्रते्येक व्यस्ट्क्त को अनुिासन का पालन किना पड़ता िै। प्रते्येक व्यस्ट्क्त को मानवता की सेवा तथा नाम-स्मिण के माध्यम से अपने मन का िुस्ट्द्धकिण किना पड़ता िै। प्रते्येक व्यस्ट्क्त को हबना हकसी प्रहतवाद के ईश्विेच्छा के अनुरूप िीवन व्यतीत किना चाहिए। ईश्वि की सम्प्रास्ट्प्त का मागथ क्या िै? इसका एक िी मागथ िै औि वि यि िै हक तुम अपनी इच्छा को उसकी इच्छा हलया था। उन्होंनें लोगों ंको मानव के सावथभौहमक भ्रातृत्व तथा ईश्वि के हपतृत्व का उपदेि हदया।

गुरु नानक एक सुिािक थे। उन्होंनें सामाहिक भ्रष्टाचाि की भत्सथना की। उन्होंनें रूहढ़वाद औि कमथकाण्ड का घोि हविोि तथा िास्ट्न्त औि मानव-मानव के पािस्परिक पे्रम के सने्देि का प्रचाि-प्रसाि हकया। उनका दृहष्टकोण अत्यन्त उदि था। वे ािहतगत हनयमों ंका पालन निीं ंकिते थे। लोगों ंके अन्ध-हवश्वास के हनिाकिण के हलए उन्होंनें अहिकाहिक प्रयत्न हकये। उन्होंनें ुिहचता, न्याय, भिता तथा ईश्वि के प्रहत पे्रम के उपदेि हदये। उन्होंनें नैहतक प्रदूषण के हविोि, ईश्विोपासना में यथाथथ तत्त्व के सहिवेि तथा िमथ औि ईश्वि के प्रहत वास्तहवक श्रद्धा की सृहष्ट के हलए अथक प्रयास हकये। पिमािा से आिा के तादात्म्य के माध्यम के रूप में हिर-नाम-संकीतथन के समय उन्होंनें गायन में संगीत के प्रचलन का प्रािम्भहकया। वे िीिाँिी-िाँ िाते थे, मिदाना को साथ ले िाते थे हिससे वि उनके गायन के समय िबेक (सािंगीनुमा वाद्य) बिा सके। वे किते थे- "ईश्वि तथा मानवता की सेवा किो। केवल मानवता की सेवा से स्वगथ में िमािा स्थान सुिहक्षत िो िायेगा।" महिलाओं ंके प्रहत गुरु नानक के हृदय में अत्यहिक आदि का भाव था। उन्होंनें उनको सभी िाहमथक सभाओं ंतथा सिैलनों ंमें सस्ट्हिलत िोने औि ईश्वि के संकीतथन की अनुमहत प्रदान कि दी थी। िाहमथक समािोिों ंमें उनको उनकी पूिी भागीदािी प्राप्त थी।

गुरु नानक स्पष्ट किते िैं- "ईश्विािा्ाम का मागथ दीघथ तथा श्रम-साध्य िै। समृद्ध लोगों ंके हलए इसको लघु निीं ंबनाया िा सकता। इसमें प्रते्येक व्यस्ट्क्त को अनुिासन का पालन किना पड़ता िै। प्रते्येक व्यस्ट्क्त को मानवता की सेवा तथा नाम-स्मिण के माध्यम से अपने मन का िुस्ट्द्धकिण किना पड़ता िै। प्रते्येक व्यस्ट्क्त को हबना हकसी प्रहतवाद के ईश्विेच्छा के अनुरूप िीवन व्यतीत किना चाहिए। ईश्वि की सम्प्रास्ट्प्त का मागथ क्या िै? इसका एक िी मागथ िै औि वि यि िै हक तुम अपनी इच्छा को उसकी इच्छा में परिणत कि उसके साथ सामंिस्य स्थाहपत कि लो। इसके हलए अन्य कोई मागथ निीं ंिै।" दैवी इच्छा को अपनी इच्छा में परिणत किने के प्रथम चिण की सम्प्रास्ट्प्त दैवी कृपा के हलए प्राथथना- गुरु-प्रसाद के हलए अिदास के माध्यम से िोती िै। गुरु नानक प्राथथना को बहुत अहिक मित्त्व प्रदान किते िैं। वे किते िैं हक दैवी कृपा के अभाव में मनुष्ट्य िािा कुछ भी निीं ंप्राप्त हकया िा सकता। वे किते िैं- "ईश्वि के समक्ष हवनम्र िो कि िाओ। स्वयं को उसकी दया पि छोड़ दो। दम्भ, आि-प्रदिथन तथा अिंकाि का परित्याग किो। उसकी दयालुता तथा कृपा की हभक्षा की याचना किो। अपनी क्षमता, मनीषा तथा अपने सामर्थ्य के सम्बन्ध में कुछ भी मत सोचो। उसके पे्रम तथा उससे तादात्म्य की खोि में मृतु्यु के हलए भी उद्यत िो। हिस प्रकाि

कोई स्त्री अपने पहत से प्रेम किती िै, उसी प्रकाि तुम ईश्वि से प्रेम किो। उसके प्रहत स्वयं को हनसंसंकोच भाव से पूणथरूपेण अहपथत कि दो। तुम्हें दैवी कृपा तथा प्रेम की सम्प्रास्ट्प्त िो सकती िै।"

नानक की िस्यवादी कहवताएँ 'िपुिी' में संकहलत िैं। ब्राह्ममुहतथ में इसे सभी हसख गाते िैं। 'सोहिला' सान्ध्य-प्राथथनाओं ंका संकलन िै। िाश्वत आनन्द के पिम िाम में पहुँचने के हलए मनुष्य को हिन चिणों ंको पाि किना पड़ता िै, उनका 'िपुिी' में नानक ने संहक्षप्त औि िीवन्त वणथन हकया िै। इन चिणों ंअथाथत् खण्डों ंकी संख्या पाँच िै। प्रथम खण्ड को िमथ खण्ड (कतथव्य का परिमण्डल) किते िैं। प्रत्येक व्यस्ट्क्त को अपने कतथव्य का पालन समुहचत िीहत से किना चाहिए। उसे िमथ-पिायणता के मागथ का अनुगमन किना चाहिए। प्रत्येक व्यस्ट्क्त को उसके कमाथनुसाि न्याय प्राप्त िोगा।

हितीय चिण ज्ञान खण्ड या ज्ञान का परिमण्डल िै िााँ हदव्य ज्ञान-तत्त्व का आहिपत्य िै। यिााँ सािक को आत्यस्ट्न्तक श्रद्धा तथा हनष्कपट भाव से अपना कतथव्य-पालन किना िोता िै। उसे इस सत्य का बोि िो िाता िै हक केवल समुहचत हवहि से कतथव्य-पालन के माध्यम से िी िाश्वत आनन्द के िाम अथाथत् िीवन के चिम लक्ष्य तक पहुँचा िा सकता िै।

तृतीय खण्ड को 'िमथ खण्ड' अथाथत् आनन्दाहतिेक का परिमण्डल किते िैं। यिााँ आध्यास्ट्त्मक िषोल्लास तथा सौन्दयथ िै। यिााँ िमथ मानव-प्रकृहत में घुल-हमल कि उसका एक अंग िो िाता िै। यि उसके स्वभाव का एक संघटक तत्त्व िो िाता िै। यि मात्र कतथव्य या ज्ञान में हनहित कोई तत्त्व निीं ंिि िाता।

चतुथथ खण्ड 'कमथ खण्ड' या िस्ट्क्त का परिमण्डल िै। इस परिमण्डल का िासक िस्ट्क्त का ईश्वि िै। इसमें सािक को िस्ट्क्त की सम्प्रास्ट्प्त िोती िै। वि एक िस्ट्क्तिाली नायक तथा अिेय व्यस्ट्क्त िो िाता िै। इस स्ट्स्थहत में मृत्यु का भय समाप्त िो चुका िोता िै।

पंचम खण्ड 'सच खण्ड' या सत्य का परिमण्डल िै िााँ हनिाकाि का आहिपत्य िै। यिााँ सािक का ईश्वि से तादात्म्य-स्थापन औि उसे ईश्वित्व की उपलस्ट्ब्ध िो िाती िै। हदव्यता में रूपान्तरित इस व्यस्ट्क्त को अपने िीवन के लक्ष्य की सम्प्रास्ट्प्त िो िाती िै। अब वि अपने अस्ट्न्तम हवश्राम स्थल की खोि में सफल िो िाता िै। इस प्रकाि आत्मा की इस श्रमसाध्य यात्रा का अन्त िो िाता िै।

गुरु नानक पुनः-पुनः इन बातों ंपि बल देते िैं- "सबसे अपने ऐक्य भाव का अनुभव किो, ईश्वि से प्रेम किो, मनुष्य में स्ट्स्थत ईश्वि से प्रेम किो, ईश्वि-प्रेम का संकीतथन किो तथा ईश्वि के नाम की आवृहत्त किते ििो। उसकी महिमा का गुणगान किो। ईश्वि से उसी प्रकाि प्रेम किो हिस प्रकाि कमल िल से, चातक बादल से तथा कोई स्त्री अपने पहत से किती िै। अपने हदव्य प्रेम को लेखनी तथा अपने हृदय को लेखक के रूप में परिणत कि दो। यहद तुम ििि-नाम की आवृहत्त किते िो, तो तुम्हें िीवन का विदान प्राप्त िोगा; हकन्तु यहद तुम इसे हवस्मृत किते िो, तो मृत्यु से तुम्हािी िक्षा असम्भव िै। ईश्वि के समक्ष अपने हृदय िाि को उन्मुक्त कि दो। उसका साहन्नध्य प्राप्त किो। उसकी बाँिों ंमें आबद्ध िो कि हदव्याहलंगन का अनुभव प्राप्त किो।"

अपनी एक भिनावली में नानक ने अपने उपदेिों ंके भावाथथ को हनम्नांहकत िब्दों ंमें व्यक्त हकया िै :

"सन्त हकसी भी मत के क्यों ंन िों, ंउनसे प्रेम किो। अिंकाि का परित्याग किो। स्मिण िखो–िमथ का तत्त्व िै हवनम्रता औि सिानुभूहत; सांसारिक प्रलोभनों ंके बीच ििते हुए अच्छा औि पहवत्र िीवन-यापन। उत्तम वस्त्र, योहगयों ंके वस्त्र, भस्म, मुस्ट्ण्डत हिि, दीघथ प्राथथनाएँ, मन्त्रोच्चािण, तप िािा िािीि का उत्पीड़न, तपस्वी–िैसा िीवन-यापन-ये िमथ के तत्त्व निीं ंिैं।

गुरु नानक के अनुयाहययों ंके हलए **'वाहे गुरु'** गुरु-मन्त्र िै। िप के हलए दूसिा मित्त्वपूणथ मन्त्र ि **: "एक ओकोंार**
सडिनामु करिा पुरखु डनरभउ डनरवैरु अकाल मूरडि अजूनी सैभों गुरु प्रसाडद" अथाथत् ईश्वि एक िै। उसका नाम सत्य िै। वि स्रष्टा तथा समस्त संसाि में परिव्याप्त िै। वि भयमुक्त तथा ओिितुरु िै। वि अमत्यथ, अनाहद, स्वयं–न्मा तथा स्वयं-स्ट्स्थत िै। वि अज्ञान के अन्धकाि को हवनष्ट किने वाला तथा दयामय िै। ईश्वि हनत्य, अनाहद तथा अनन्त िै।

ग्रन्थ साडहब

गुरु नानक ने संसृकृत भाषा के स्वरूप का सिलीकिण कि इसके गुरुमुखी स्वरूप की खोि की। हसक्खों ंका यि मिथग्रन् गुरुमुखी में िै। हसक्खों ंतथा हसस्ट्न्धयों ंिािा इसका पूिन िोता िै। ग्रन् साहिब प्रत्येक गुरुिािे में िै। आहद ग्रन् के नाम से अहभहित इस ग्रन् में प्रथम पााँच गुरुओं ंके भिनों ंका संकलन िै। उनको पंचम गुरु िािा एकत्र तथा सुव्यवस्ट्स्थत कि एक ग्रन् का आकाि दे हदया गया हिसे गुरु ग्रन् साहिब किते िैं। इसमें कबीि तथा समकालीन वैष्णव सन्तों ंिािा िहचत कुछ भिन भी िैं। बाद में इस पहवत्र ग्रन् में दिवें गुरु िािा नौवें गुरु के भिनों ं को भी संकहलत कि हदया गया िै। गुरु नानक की िचनाएाँ अत्यन्त हवसृतृत िैं।

'ग्रन् साहिब' का प्रािम्भ हनम्नांहकत िब्दों ंमें िोता िै : "ईश्वि केवल एक िै हिसका नाम सत् अथाथत् स्रष्टा िै।" इस ग्रन् में उच्चतम नैहतकता के हविान हनहित िैं। हनष्कलुष िीवन, गुरु-भस्ट्क्त, दया, दानिीलता, संयम, न्याय, ऋिुता, सत्य, त्याग, सेवा, प्रेम तथा मांसािाि का परित्याग- इन गुणों ंकी गणना उन गुणों ंमें की िाती िै हिन पि पयाथप्त बल हदया गया िै। इसके हवपिीत काम, क्रोि, अिंकाि, घृणा, अिमन्यता, लोभ, स्वाथथ, हनदथयता, पैिुन्य तथा कपटपूणथ आचिण की कठोि िब्दों ंमें भत्सथना की गयी िै।

गुरु नानक के अक्तन्तम डदन

अपने िीवन के अस्ट्न्तम चिण में गुरु नानक कितािपुि में आ बसे थे। विााँ उनके परिवाि के समस्त सदस्यों ंको पिली बाि उनके साहिध्य की प्रास्ट्प्त हुई। विााँ एक िमिाला का भी हनमाथण हकया गया। मिदाना भी अपने गुरु के साथ ििता था। विााँ प्रहतहदन प्रातःकाल तथा सन्ध्या काल में गुरु नानक िािा िहचत 'िपुिी साहिब' तथा 'सोहिला' का पाठ उनकी उपस्ट्स्थहत में हुआ किता था। १५३८ ई. में उनित्ति वषथ की आयु में गुरु नानक का दिेान्त हुआ। गुरु अंगद ने गुरु नानक का उत्तिाहिकाि ग्रिण हकया। गुरु अमिदास, गुरु िामदास, गुरु अिुथनदेव, गुरु िगोहवन्द, गुरु िि िाय, गुरु िि कृष्ण, गुरु तेगबिादुि तथा गुरु गोहवन्दहसंि अन्य गुरुओं ंके नाम िैं।

गुरु नानक की कृपा से आप सभी कृताथथ िों ं!

आचायथ
िंकि

मिथ तथा दिथन के सम्बन्ध में समस्त भित में अव्यवस्था व्याप्त थी। चावाथक, लोकायत, कापाहलक, िाक्त, सांख्य, बौद्ध तथा माध्यहमकि–से कई एक सम्प्रदायों ंका प्रादुभाथव तथा बित्ति िमों का अभ्युदय िो चुका था िो पिस्पि संघषथित थे। िास्ट्न्त–सी कोई वसुतु निीं ंिि गयी थी ओै सब-कुछ अस्त-व्यस्त िो चला था। लोग अन्धहवश्वास से ग्रस्त थे। ऋहषयों,ं सन्तों ंतथा योहगयों ंकी िो िित कभी सुख-समृस्ट्द्ध से पूणथ थी, उसमें अब अन्धकिा व्याप्त िो गया था। आयों की महिमामयी भूहम की अवस्था दयनीय िो गयी थी। िंकिाचायथ के अवतिा-ग्रिण के पूवथ दिे की यिी दिा थी।

यहद भित में वैहदक िमथ आो भी िीहवत िै, तो इसका श्रेय िंकि को िी िै। वैहदक िमथ की हविोिी िस्ट्क्तयााँ आो से भी अहिक बहुसंख्यक तथा बलवती थी; हकनुतु िंकि ने अल्पावहि में िी उन्हें अकेले िी पिाभूत कि वैहदक िमथ एवं अैत वेदान्त को उनकी पूवथ-महिमा में पुनः प्रहतहष्ठत कि हदया। अपने इस अहभयान में उन्होंनें केवल हविुद्ध ज्ञान तथा आध्यास्ट्किता के आयि का िी उपयोग हकया था। िाम तथा कृष्णि–से िंकि-पूवथ अवतािों ंको िमथ-हविोिी िस्ट्क्तयों ंकी पिािय के हलए िािीरिक िस्ट्क्त का प्रयोग इसहलए किना पिा था हक उन हदनों ंइन आसिुी स्ट्क्तियों ंका अभ्युदय दैहिक अिविो तथा उत्पीिन के माध्यम से िी हुआ था। कहलयुग में िमथ के समक्ष िो संकट उपस्ट्स्थत िो गया था, उसका प्रारूप बाह्य से अहिक आन्तरिक तथा िािीरिक से अहिक मानहसक था। उस समय प्रायः प्रत्येक व्यस्ट्क्त के मन में अिमथ के बीि अंकुरित िो िि थे। अतः अिुभ के हवरुद्ध संघषथ किने के हलए एकमात्र ज्ञान तथा िािुस्ट्द्ध के िस्त् की िी आवश्यकता थी। इस िस्त् को तीक्ष्णता तथा क्षमता प्रदान किने के हलए िंकि ने ब्राह्मण-परिविा में िन्म-ग्रिण कि िीवन के पूवाथह्न में िी संन्यास ग्रिण कि हलया। िाम तथा कृष्ण-िैसे पूवथकाहलक अवतािों ंने क्षहत्रय-वणथ में िन्म हलया था। इसका किाण यि था हक उनके युग में िमथ के पुनरुद्धाि के हलए सैन्य बल की आवश्यकता थी।

भितीय दिथन में िंकिाचायथ को िो हवहिष्ट स्थान प्राप्त िै, उससे हनस्सन्देि सभी लोग परिहचत िैं। हबना हकसी प्रहतवाद के इस तर्थ् की पुहष्ट की िा सकती िै हक यहद िंकि का िीवन-यापन उनके आदिों के अनुरूप निीं ंहुआ िोता ओै यहद उन्होंनें अपने उपदिेामृत से इस दिे को कृतकृत्य निीं ंहकया िोता, तो अनेक िताब्दी पूवथ िी भितवषथ अपने यथाथथ स्वरूप से वंहचत िो चुका िोता तथा यिााँ उत्तिोत्ति आने वाले आक्रमणकारियों ंके कृपाणों,ं उनकी हवरंध्ंसिाक गहतहवहियों ंएवं िाहमथक असहिषुणुता के हवरुद्ध संघषथ में वि हनतान्त असमथथ हसद्ध िो िाता। उनके वे उपदिे आो भी प्रत्येक हनष्कपट हिज्ञासु तथा प्रत्येक सचे्चे हिन्दू की िक्त-िहिाओं ंको स्पस्ट्न्दत कि िि िैं।

जन्म

िंकि का िन्म सन् ७८८ ई. में आलवाइ से छि मील पूवथ कालहि नामक ग्राम के एक हनिथन परिविा में हुआ था। कालहि कोचीन–िोनूि िेल-मागथ पि अंगमाहल िेलवे स्टेिन के हनकट िै। िंकि नमूबूदिी ब्राह्मण थे। िािोखि नामक एक भूस्वामी ने कालहि में एक हिव-मस्ट्न्दि की स्थापना कि उसमें कायथित ब्राह्मणों ंके हलए एक अग्रिा का हनमाथण कि हदया था। हवद्यािाहिा उस मस्ट्न्दि में पूिा हकया किते थे। उनके हिवगुरु नामक एक पुत्र था
हिसने िास्त्ाध्ययन के पिात् उपयुक्त आयु में हववाि हकया था। हिवगुरु हनस्सन्तान थे। उन्होंनें अपनी पत्नी

आयथम्बा के साथ सन्तान के हलए भगवान् हिव से प्राथथना की। वसन्त ऋतु के शुिाथ नक्षत्र के मांगहलक अहभहित मित में उन्हें पुत्र की प्रास्ट्प्त हुई। यि पुत्र िंकि थे।

बि िंकि सात वषथ के थे, तब उनके हपता का दिेान्त िो गया। इस स्ट्स्थहत में िंकि के पठन-पाठन की देख-भाल किने वाला कोई निीं िंिा। उनकी माता एक अहसिाण गृहिणी थीं। उन्होंनें िंकि के सवथािास्त्ाध्ययन पि हविेष ध्यान हदया। हपता के दिेान्त के पिात् सात वषथ की आयु में उनका यज्ञोपवीत-संस्कि हुआ। िंकि ने अल्पायु में िी असामान्य बुस्ट्द्ध का प्रदिथन हकया। सोलि वषथ की आयु में िी वे सभी दिथनों तथा िमथ-हवज्ञान के आचायथ िो गये। उन्होंनें इसी आयु में गीता, उपहनषदों तथा ब्रह्मसूत्र के भाष्यों की िचना कि दी।

िंकि की माता अपने पुत्र के हवविा के हलए ज्योहतहषयों से हकसी कन्या की िन्म कुण्डली के हवषय में पिामिथ कि ििी थीं; हकन्तु िंकि ने संसाि-त्याग तथा संन्यास ग्रिण का दृढ़ हनिय कि हलया था। उनकी माता को इस बात से अत्यन्त दुःख हुआ हक उनकी मृत्यु के पिात् उनके अस्ट्न्तम संस्कि के हलए कोई निीं िंिे िायेगा; हकन्तु िंकि ने उनको पूणथ आश्वासन हदया हक वे मृत्युिय्या पि उनकी सेवा में सतत उद्यत ििेंगे औि उनका दाि-संस्कि हवहिवत् कि देंगे। हकन्तु उनकी माता इससे आश्वस्त न िो सकीं।

एक हदन िंकि अपनी माता के साथ नदी में स्नान किने गये। िंकि नदी में कूद गये। विााँ उनको ऐसा प्रतीत हुआ हक कोई मगि उनको खींचें चला िा ििा िै। उन्होंनें तीव्र स्वि में अपनी माता को पुकािते हुए किा- "मेिी हप्रय माता, मुझे एक मगि पानी में हलये िा ििा िै। अब मेिा अन्त समीप िै। मुझे एक संन्यासी के रूप में मृत्यु को प्राप्त िोने दो। मैं एक संन्यासी के रूप में ििीि-त्याग की सन्तुहष्ट प्राप्त किना चािता हाँ। मुझे तुम आतुि-संन्यास ग्रिण किने की अनुमहत प्रदान किो।"

माता ने तत्काल िी उन्हें इसकी अनुमहत प्रदान कि दी। तब िंकि ने िीघ्र िी आतुि-संन्यास ग्रिण कि हलया। मगि ने उन्हें हनिापद िल से बािि हनकल िाने हदया। िंकि नाम मात्र के संन्यासी के रूप में नदी के बािि आ गये। उन्होंनें अपनी माता के समक्ष अपने वचन की पुनः पुहष्ट की औि उनको अपने सम्बस्ट्न्धयों के संिक्षण में छोड़ कि अपनी सम्पहत्त उन लोगों को दे दी। तत्पिात् संन्यास की पावन दीक्षा के हवहिवत् ग्रिण के हलए वे हकसी आचायथ की खोि में हनकल पड़े।

िंकि हिमालय-स्ट्स्थत बदरिकाश्रम के एक पणथ-कुटी में गोहवन्दाचायथ से हमले औि उन्होंनें उनको साष्टांग प्रणाम हकया। गोहवन्द ने िंकि से पूछा हक वे कौन िैं? िंकि ने उत्ति हदया- "िे पूज्य गुरुदेव, मैं न अहग्न हाँ, न आकाि; न िल हाँ, न पृथ्वी। मैं इनमें से कुछ भी न िो कि वि अमत्यथ आत्मा हाँ िो समस्त नाम-रूपों में अन्तभूथत िै।" अन्त में उन्होंनें यि भी किा- "मैं केिल के हिवगुरु नामक एक ब्राह्मण का पुत्र हाँ। मेिी बाल्यावस्था में िी मेिे हपता का दिेान्त िो गया। मेिी माता ने िी मेिा पालन-पोषण हकया। एक आचायथ के चिणों में बैठ कि मैंने वेदों तथा िास्त्ों का अध्ययन हकया। एक हदन नदी में स्नान किते समय िब एक मगि ने मेिा पैि पकड़ हलया, तब मैंने आतुि-संन्यास ग्रिण कि हलया। कृपया अब मुझे पावन संन्यास की हवहिवत् दीक्षा दीहिए।"

स्वामी गोहवन्द िंकि िािा प्रस्तुत इस यथाथथ वृत्तान्त से अत्यहिक प्रसन्न हुए। उनको संन्यास-दीक्षा देने के पिात् उन्होंनें उन्हें संन्यासी के हलए उपयुक्त वस्त्र प्रदान हकये। इसके उपिान्त स्वामी गोहवन्द ने उन्हें अिैत वेदान्त की हिक्षा दी हिसे उन्होंनें स्वयं अपने गुरु गौड़पादाचायथ से ग्रिण हकया था। अपने गुरु गोहवन्दपाद की कृपा से िंकि समस्त दािथहनक हसद्धान्तों तथा मतों से पूणथरूपेण परिहचत िो गये। गोहवन्द ने उन्हें कािी िाने को किा। कािी पहुाँच कि िंकि ने ब्रह्मसूत्रों, उपहनषदों तथा गीता पि भाष्य हलखे। विााँ उनकी कृहतयों की िो आलोचना हुई, उसका उन्होंनें सफलतापूवथक प्रहतवाद हकया।

तत्पिात् उन्होंनें अपने दाथहनक मत के प्रचाि-प्रसाि के अहभयान का प्रािम्भहकया। ि◌ंकि के मन में अपने गुरु गोहवन्दपाद तथा पिम गुरु (गुरु के गुरु) गौ़पाद के प्रहत अत्यहिक श्रद्धा थी।

ि◌ंकि का डदक्तिजय-अडभयान

ि◌ंकि का दाथहनक हविय-अहभयान संसाि में अहितीय ि◌ै। अपनी हविय-पताका उन्होंनें समूपूणथ भाित पि फ़िा दी। वे हवहभि मतावलम्बी सम्प्रदायों ◌ंके पीठािीश्वों ◌ंसे हमले। उन लोगों ◌ंको उनकी युस्ट्क्तयों ◌ंके समक्ष हववि ि◌ो कि
उनकी दाथहनक अविािणाओं ◌ंके प्रहत सिमत ि◌ोना प़िा औि इस प्रकाि उन्होंनें अपने भाष्यों ◌ंमें प्रहतपाहदत ि◌मथ के सत्य तथा वचथस्व को प्रमाहणत कि हदखाया। वे समस्त प्रख्यात ज्ञान केंद्रों ◌ंमें गये। उन्होंनें विाँ के पस्ट्ण्डतों ◌ंको िास्त्ाथथ की चुनौती दी औि उनके समक्ष अपने तकथ प्रस्तुत कि उनकी आस्था को अपने मत तथा दृहष्टकोण के प्रहत सुदृढ़ कि हदया। उन्होंनें भि भास्कि को पिाहित कि उनके वेदान्त-सूत्र-भाष्य् की भत्सथना की औि दण्डी तथा मयूि को अपने दिथन की हिक्षा दी। तत्पिात् उन्होंनें ि◌ास्त्ाथथ में 'खण्डन खण्ड खाद्य' के प्रणेता ि◌षथ, अहभनवगुप्त, मुिािी हमश्र, उदयनाचायथ, ि◌मथगुप्त, कुमारिल तथा प्रभाकि को पिाहित हकया।
इसके पिात् ि◌ंकि माहिष्मती गये। मण्डन हमश्र माहिष्मती की ि◌ािसभा के मुख्य पस्ट्ण्डत थे। मण्डन हमश्र को कमथमीमांसा के मत में प्रहिहक्षत हकया गया था; अतः उनके मन में संन्याहसयों ◌ंके प्रहत तीव्र घृणा के भाव थे। ि◌ंकि एक हदन उस स्थान पि पहुँचे ि◌ि◌ाँ वे हकसी के श्राद्ध-संस्काि में संलग्न थे। उन्हें देखते ि◌ी मण्डन हमश्र क्रोिोन्मत्त ि◌ो उठे। वाताथलाप अिौभन ि◌ो गया; हकन्तु श्राद्ध-भोिन के हलए हनमस्ट्न्त्रत ब्राह्मणों ◌ंने ि◌स्तक्षेप कि मण्डन हमश्र को िान्त कि हदया। इसके पिात् ि◌ंकि ने मण्डन हमश्र को ि◌ाहमथक वाद-हववाद की चुनौती दी हिसे मण्डन हमश्र ने स्वीकाि कि हलया। भािती, ि◌ो मण्डन हमश्र की पत्नी तथा हवपुल ज्ञान-िाहि की स्वाहमनी थी, को हनणाथहयका मनोनीत हकया गया। यि पिले ि◌ी हनहित कि हलया गया हक यहद ि◌ंकि की पिािय हुई, तो वे गृिस्थ ि◌ो कि वैवाहिक ि◌ीवन व्यतीत किेंगे औि यहद मण्डन हमश्र पिाहित हुए, तो उनको संन्यास-ग्रिण कि स्वयं अपनी पत्नी से िी संन्यासी का वस्त् ग्रिण किना ि◌ोगा। वाद-हववाद हवहिवत् प्रािम्भ हुआ औि कई हदनों ◌ंतक हबना हकसी हवघ्न-बािा के चलता ि◌ि◌ा। भािती ने इस वाद-हववाद को स्वयं निीं ◌ंसुना। उसने वाद-हववादित दोनों ◌ंव्यस्ट्क्तयों ◌ंके कन्धे पि एक-एक माला फेंक कि किा- "हिसकी माला सवथप्रथम मुिझाने लगेगी, उसे स्वयं को पिाहित समझ लेना िोगा।" इतना कि कि वि गृि-कायथ में संलग्न ि◌ो गयी। वाद-हववाद सत्ति हदनों ◌ंतक चलता ि◌ि◌ा। तत्पिात् मण्डन हमश्र की माला मुिझाने लगी। इसके परिणाम स्वरूप उन्होंनें स्वयं को पिाहित मान कि संन्यास-ग्रिण किना तथा ि◌ंकि का अनुयायी बनना स्वीकाि कि हलया।

भािती हवद्या की देवी सिस्वती का अवताि थी। एक बाि एक बृिद् सभा में ब्रह्मा तथा सिस्वती के समक्ष वेद-पाठ किते हुए ऋहष दुवाथसा से हकंहचत् तु्रहट ि◌ो गयी हिससे सिस्वती को ि◌ँसी आ गयी। इस पि दुवाथसा ने कु्रद्ध ि◌ो कि उन्हें भू-लोक में ि◌न्म-ग्रिण का ि◌ाप दे हदया हिसके परिणाम-स्वरूप उन्हें भािती के रूप में ि◌न्म लेना प़िा।

भािती ने ि◌स्तक्षेप किते हुए किा- "मैं मण्डन की अिांहगनी हाँ। आपने उनके एक अिांि को ि◌ी पिाहित हकया ि◌ै; अतः आप मुझसे भी वाद-हववाद कीहिए।" ि◌ंकि ने एक स्त्ी से वाद-हववादों ◌ंके हविोि में अपना प्रहतवाद व्यक्त हकया; हकन्तु भािती ने उनके समक्ष ऐसे उद्धिण प्रस्तुत हकये हिनसे स्त्ी-पुरुष के बीच हुए पूवथ-वाद-हववादों ◌ंकी पुहष्ट ि◌ो ि◌ाती थी। अब ि◌ंकि भािती के प्रस्ताव से सिमत ि◌ो गये औि वाद-हववाद प्रािम्भ हुआ ि◌ो अनवित रूप से सत्ति हदनों ◌ंतक चलता ि◌ि◌ा। भािती हवहभि ि◌ास्त्ों ◌ंसे उद्धिण प्रस्तुत किती ि◌ी, हकन्तु अन्ततः उसे अपनी पिािय का पूवाथभास ि◌ोने लगा; अतः उसने उन्हें कामिास्त्-सम्बन्धी वाद-हववाद के माध्यम से पिास्त किने का हनिय हकया।

ींकि ने काम-सम्बन्धी वाद-हववाद के हलए भिाती से एक मास के अवकिा की माँग की हिसे उसने स्वीकिा कि हलया। ींकि ने किाी िा कि अपनी योग–स्ट्क्त से अपने सूक्ष्म ीिीि को अपने भौहतक ीिीि से पृथक् हलया औि अपने भौहतक ीिीि को एक हविाल वृक्ष के हछि में िख हदया। अपने हिर्ष्ों ंको अपने भौहतक ीिीि की सुिक्षा का भाि सौंपं कि वे िािा अमरुक के मृत ीिीि में प्रहवष्ट िो गये हिसका िीघ्र िी दाि-संस्काि िोने वाला था। िािा उठ खड़ा हुआ औि विाँ उपस्ट्स्थत सभी लोग इस आियथप्रद घटना से ििोन्मत्त िो उठे।

मस्ट्न्त्रयों ंतथा िाहनयों ंको िीघ्र िी उस पुनिीहवत िािा में हभि गुणों ंतथा हवचािों ंसे युक्त हकसी पृथक् व्यस्ट्क्त के दिथन िोने लगे। उनको अनुभव िोने लगा हक उनके िािा के ीिीि में हकसी मिान् की आत्मा का प्रवेि िो गया ि; अतः उन्होंनें दूतों ंको हकसी हविन वन या हकसी गुिा में गुप्त रूप से संिहक्षत हकसी मानवीिीि की खोि तथा उसकी प्रास्ट्प्त के पिात् उसे िला देने के हलए भेि हदया। उन्होंनें सोचा हक ऐसा किने से उन्हें िािा का दीघथकाहलक सम्पकथ प्राप्त िो िायेगा।

ींकि को िाहनयों ंके प्रेम के सिी अनुभव प्राप्त िो िि थे। माया अत्यहिक िस्ट्क्तिाहलनी िै। िंकि ने अपने हिर्ष्ों ंको उनके पास पुनः आगमन का वचन हदया था; हकन्तु िाहनयों ंके साहिध्य में ििेंि–ते उनको अपना यि वचन पूणथतः हवस्मृत िो चुका था। हिर्ष् उनकी खोि किने लगे। उन्होंनें िािा अमरुक के पुनिीवन की चमत्कािपूणथ घटना की बात सुनी। इसके पिात् िीघ्र िी उन्होंनें नगि में िा कि िािा से बात की। उन्होंनें उनके समक्ष कुछ दािथहनक गीत गाये हिसके फल-स्वरूप उनकी स्मृहत पुनः िाग्रत िो गयी। हिर्ष् िीघ्र िी उस स्थान पि पहुँचे ििाँ ींकि का मृत ीिीि हछपा कि िखा गया था; हकन्तु उस समय तक दूतों ंको वि मृत ीिीि प्राप्त िो चुका था औि वे उसे िलाने िा िि थे। उसी समय िंकि की आत्मा उनके ीिीि में प्रहवष्ट िो गयी। िंकि ने भगवान् ििि से सिायता की याचना की। इसके फल-स्वरूप िीघ्र िी वृहष्ट िोने लगी हिससे अहग्न की ज्वाला का िमन िो गया।

इसके पिात् िंकि मण्डन हमश्र के घि गये। विाँ पूवथ-वाद-हववाद पुनः आिम्भ हुआ हिसमें उन्होंनें भिाती के सभी प्रश्नों ंके उत्ति सन्तोषिनक रूप से दे हदये। तत्पिात् मण्डन हमश्र ने अपनी सािी सम्पहत्त भेंट-स्वरूप िंकि को दे दी दे दी हिसे हनिथनों ंतथा दान-ग्रिण के हलए उपयुक्त पात्रों ंमें हवतरित कि हदया गया। मण्डन हमश्र िंकि के हिर्ष् िो गये। िंकि ने संन्यास के पावन आश्रम में दीहक्षत कि उन्हें सुिेश्विाचायथ के नाम से अहभहित हकया। सुिेश्विाचायथ प्रथम संन्यासी थे हिन्होंनें शृंगेिी मठ का प्रभाि ग्रिण हकया। भिाती भी िंकि के साथ शृंगेिी चली गयी ििाँ आि भी उसकी पूिा िोती िै। भाित के प्रत्येक अंचल से वैहदक हविानों ंको आमस्ट्न्त्रत कि औि उनके अनेक प्रश्नों ंके उत्ति दे कि िंकि सवथज्ञता की उच्च पीहठका पि आसीन िो गये। इसके अहतरिक्त अपने युग के समस्त िाहमथक प्रहतस्ट्न्द्वयों ंको पिास्त तथा वैहदक िमथ की श्रेष्ठता स्थाहपत कि वे िगद्गुरु िो गये। उनके इन प्रहतस्ट्न्द्वयों ंमें हभि-हभि हवहवि मतों ंके प्रहत आस्थावान् अनुयायी थे।

अन्य िाहमथक सम्प्रदायों ंपि िंकि की हविय सवाांगतः पूणथ थी; अतः भाित-भूहम पि उनको चुनौती देने का सािस हकसी सम्प्रदाय में निीं िि गया। इनमें से कई सम्प्रदाय तो हवलुप्त िी िो गये। िंकि के युग के पिात् भी कई एक आचायों का आहवभाथव हुआ; हकन्तु िंकि ने अपने प्रहतस्ट्न्द्वयों ंको हिस अदम्य उत्साि तथा िस्ट्क्त से पिास्त कि अपनी श्रेष्ठता को प्रमाहणत हकया था, उसका उनमें सवथा अभाव था।

मिाा का दाह-सोंस्कार

अपनी माता के गम्भीि िोग से पीहड़त िोने की सूचना प्राप्त िोने पि िंकि अपने हिर्ष्ों ंको छोड़ कि अकेले िी कालहड की औि चल पड़े। तब उनकी माता िोग–िय्या पि थीं।ं उन्होंनें श्रद्धा-स्वरूप उनके चिणों ंका स्पिथ हकया औि भगवान् ििि से स्तुहत की, हिसके फल-स्वरूप स्वगथ-दूतों ंका आगमन हुआ औि वे अपने भौहतक ीिीि का परित्याग कि उनके साथ गो-लोक में चली गयीं।ं

अपनी माता के दाि-संस्काि के समय शंकि को गम्भीि हवघ्न-बाधाओं का सामना किना पड़ा। गृहस्थों के हलए हवहित आचाि संहिता का पालन संन्याहसयों के हलए वर्जित िै। सभी नम्बूदिी ब्राह्मण शंकि के हविोधी थे। शंकि को अपने सम्बस्न्धयों का सियोग भी निीं प्राप्त िो सका। यिाँ तक हक हचता को अहग्न को समहपथत किने के हलए उन्होंने उन्हें अहग्न भी निीं दी। अन्ततः उन्होंने अकेले िी दाि-संस्काि का हनश्चय हकया, हकन्तु वे अकेले िी शव को उठा पाने में असमथथ थे; अतः उन्होंने शव को खण्ड-खण्ड कि घि के पृष्ठ भाग तक पहुँचा हदया जिाँ उन्होंने कदली-स्तम्भ से हचता का हनमाथण कि उसे अपनी योग-शस्क्त से प्रज्वहलत कि हदया। शंकि नम्बूदरियों को एक पाठ पढ़ाना चािते थे। उन्होंने अस्न्तम संस्काि-सम्बन्धी स्थानीय लोकाचाि को इस प्रथा में परिणत कि हदया हजसके अनुसाि नम्बूदिी ब्राह्मणों के परिवाि के हकसी भी व्यस्क्त के शव दाि के हलए प्रत्येक घि में एक पृथक् स्थान की व्यवस्था तथा दाि-संस्काि के पूवथ शव को खस्ण्डत किना अहनवायथ िो गया।

इसके पश्चात् शंकि शृंगेिी लौट गये। विाँ से वे बहुसंख्य अनुयाहययों के साथ पूवी समुद्र-तट िोते हुए पयथटन के हलए हनकल पड़े। वे जिाँ भी गये, विाँ उन्होंने अद्वैत वेदान्त का उपदेश हदया। पुिी में उन्होंने गोवधथन-मठ की स्थापना की। कांचीपुिम् में उन्होंने शाक्तों की भत्सथना की औि मस्न्दिों का हवशुस्द्धकिण हकया। चोल तथा पाण्ड्य िाज्यों के शासकों को उन्होंने अपना पक्ष-समथथक बना हलया। उज्जैन पहुँचे कि उन्होंने मानव-िक्त-पात में संलग्न भैिवों की नृशंसता का अन्त हकया। विाँ से वे गोकणथ गये, जिाँ उन्होंने एक मठ की स्थापना की। तत्पश्चात् उन्होंने गंगा-तट पि स्स्थत कई स्थानों पि महान् व्यस्क्तयों से सािहमथक वाद-हववाद हकये।

शंकि का अन्त

कामरूप अथाथत् आधुहनक गौिाटी पहुँच कि उन्होंने शाक्त भाष्यकाि अहभनव गुप्त को वाद-हववाद में पिाहजत कि हदया। अहभनव को अपनी पिाजय की अनुभूहत अत्यन्त तीव्र रूप में हुई। उन्होंने अपने अहभचाि-कौशल से शंकि को अशथ िोग से पीहड़त कि हदया; हकन्तु पद्मपाद ने इस अहभचाि-कौशल का उन्मूलन कि उन्हें िोग-मुक्त कि हदया। इसके पश्चात् वे हिमालय के पवथतीय अंचलों में गये। जिाँ िी में उन्होंने एक मठ तथा बदिी में एक मस्न्दि की स्थापना की। विाँ से वे उच्चति पवथतीय अंचल में स्स्थत केदािनाथ पहुँचे। विाँ बत्तीस वषथ की आयु में ८२० ई. में उन्होंने हलंग के साथ तादात्म्य प्राप्त कि ली।

शृंगेिी-मठ

कनाथटक िाज्य के उत्तिपूवथ पहश्चमी घाट के मनोिम पाद-हगरि में अक्षत वनों से आच्छाहदत शृंगेिी ग्राम स्स्थत िै। शंकि ने अपने प्रथम मठ की स्थापना यिीं की। तुंगभद्रा नदी की एक शाखा तुंगा नदी इस उपत्यका से िो कि मस्न्दि के प्राचीिों का स्पशथ किती हुई बिती िै। इसका हवशुद्ध तथा हनमथल जल पान के हलए उतना िी हवख्यात िै हजतना गंगा का जल स्नान के हलए (गंगा स्नानम्, तुंगा पानम्)। शृंगेिी की भूहम अहत-पहवत्र तथा इसकी सुन्दिता मुग्धकािी िै। मठ की व्यवस्था आज भी समुहचत हवहध से िो ििी िै। हवद्याितण्य-से इस मठ के अधीश्विों की महानता के साथ-साथ इस मठ के संस्थापक की ख्याहत के कािण भी साधक तथा भक्त जन इस मठ के प्रहत अकृहत्रम हृदय से अपनी श्रद्धांजहल अहपथत किते िैं।

यिाँ इस बात का उल्लेख अप्रासंहगक निीं िोगा हक संस्कृत के सुहवहदत प्राध्यापक मैक्समूलि को ऋग्वेद पि हवद्याितण्य, जो सायण के नाम से भी प्रहसद्ध िैं, के भाष्य के अनुवाद में तीस वषथ लगे। हवद्वान् प्राध्यापक अपने अनुवाद की भूहमका में किते िैं हक इस अनुवाद-कमथ में तीस वषों के अन्तगथत उन्हें हकसी भी हदन दस हमनट से कम श्रम निीं किना पड़ा। इस सम्बन्ध में एक िोचक घटना का भी उल्लेख हमलता िै। जब पाण्डुहलहप के कुछ

स्थल अपाठ्य-अस्पष्ट प्रतीत ोते थे, तब मैसूि के तत्कालीन मिाािाा के प्रभाव के काण उन्हें शृंगेिी मठ में अभी तक सुिहक्षत इसकी प्रथम मौहलक कृहत की आहिकारिक प्रहतहलहप प्राप्त ो ाती थी।

श्री ादा की वेहदका भी भक्तों ंको समानरूपेण आकहषथत किती ै। भाित में ऐसे मठों ंतथा हिवाों ंका बाहुल्य ै िाँ भाित के प्रत्येक अंचल से हिन्दू एकत्र ोते ैं; हकन्तु मिानता तथा ख्याहत में इनमें से कोई भी आहद िंकिाचायथ के मूल-पीठ शृंगेिी के समकक्ष निीं ंै। शृंगेिी मठ संसाि के प्राचीनतन मठों ंमें ै ो बािा ताब्दियों ं से भी अहिक समय से हनिन्ति आध्यास्त्मिक समृस्द्ध प्राप्त किता आ िा ै। िंकिाचायथ िाा स्थाहपत चाि हवद्यापीठों ंमें यि प्रथम ै। ेष तीन के नाम पुिी, ािका तथा ोी ैं हिनमें से प्रत्येक हिन्दुओं ंके चाि वेदों ंमें से हकसी एक वेद का प्रहतहनहित्व किता ै।

िंकि ने अपने चाि ीषथस्थ हिष्यों ं(सुिेश्विाचायथ, पद्मपाद, िस्तामलक तथा तोटकाचायथ) को क्रमिः शृंगेिी मठ, गोिाथ-मठ, ािका-मठ तथा ोी-मठ का प्रभािी बनाया। गुरु-पिम्पिा में वेदों ंके भाष्किा तथा हवियनगि की िंा-पिम्पिा के आहद पुरुष हवद्याण्य हनहवथवाद रूप से सवाथहिक प्रहसद्ध संन्यासी थे। वे हवियनगि के दीवान थे। १३३१ ई. में उन्होंनें संन्यास-ग्रिण कि हलया। हवद्याण्य के पूवथ के गयािि संन्याहसयों ंके नाम ैं–िंकिाचायथ, हवश्वरूप, हनत्यबोिघन, ज्ञानघन, ज्ञानोत्तम, ज्ञान हगरि, हसंि हगिीश्वि, ईश्वि तीथथ, निहसंि तीथथ, हवद्यािंकि तीथथ तथा भािती कृष्ण तीथथ।

शृंगेिी-मठ के ऐहतिाहसक तथा पावन ामाथध्यक्षीय हसंिासन को व्याख्यान-मठ अथाथत् हवद्यापीठ किा ाता ै। पािम्परिक रूप से प्रचहलत एक न-श्रुहत के अनुसाि िंकि के अगाि पास्त्ण्डत्य से प्रभाहवत ो कि सिस्वती ने इस हवद्यापीठ को उन्हें प्रदान हकया था। वतथमान पीठािीश्वि के पूवथ इस ामाथध्यक्षीय हसंिासन पि पैंतीस आचायथ आनुक्रहमक, हनयहमत तथा अव्यहित रूप से आसीन ोते िे ैं।

दिनामी सोंन्यासी

िंकि ने संन्याहसयों ंको दि हनहित अखाड़ों ंया संघों ंमें संघहटत हकया हिन्हें सस्त्महलत रूप से दिनामी किते ैं। इन संन्याहसयों ंके नाम के अग्रांि से हनम्नांहकत दि प्रत्ययों ंमें से कोई एक प्रत्यय अवश्य सम्बद्ध िता ै :

सिस्वती, भािती, पुिी (शृंगेिी मठ), तीथथ, आश्रम (ािका-मठ), हगरि, पवथत तथा साग़ि (ोी-मठ), वन तथा अिण्य (गोवद्धथन-मठ)।

उक्त वगों में पिमिंस ीषथस्थ ै। वेदान्त के दीघथकाहलक अध्ययन, ध्यान तथा आत्म-साक्षात्काि से पिमिंस-पद की सम्प्रास्त्प्त सम्भव ै। अहतवणाथश्रमी ाहत तथा आश्रमों ंके पिे ोते ैं। वे सभी वगों के लोगों ंके साथ भोिन कि लेते ैं। िंकिमतावलम्बी संन्यासी समस्त भाित में पाये ाते ैं।

कुछ घट्नाएँ

एक हदन िंकि अपने हिष्यों ंके साथ गंगा-स्नान को ा िे थे। मागथ में उनको एक चाण्डाल हमला ो अपने कुत्ते के साथ उसी मागथ से िा ंिा था। उसे िंकि के पाश्वथ के हनकट देख कि िंकि के हिष्यों ंने उच्च स्वि में उसे उस मागथ से अलग िट ाने के हलए किा। इस पि चाण्डाल ने िंकि से किा- "े पूनीय गुरु, आप अद्वैत वेदान्त के उपदेिक ैं। हफि भी आप मनुष्य-मनुष्य में इस सीमा तक भेद-दिथन किते ैं। इसे आपके अद्वैत-मत के उपदेिों ं के अनुरूप कैसे समझा ा सकता ै? क्या अद्वैत-मत एक हसद्धान्त मात्र ै?" िंकि चाण्डाल के इस बुस्त्द्धमत्तापूणथ प्रश्न से तप्रभ िो गये। उन्होंनें मन-ी-मन सोचा- 'भगवान् हिव ने मुझे एक पाठ पढ़ाने के हलए यि रूप िाण

हकया िै।' उन्होंनें विीं ंतत्काल पााँच श्लोकों ंकी िचना कि दी हिसे मनीषा-पंचक किते िैं। इनमें से प्रत्येक श्लोक का अन्त इस प्रकाि िोता िै- "िो सवथभूतों ंको आैत के प्रकाि में देखने में अभ्यस्त िै विी, चािे वि चाण्डाल िो या ब्राह्मण, मेिा यथाथथ गुरु िै।"

* *

किाी में एक हवद्याथी संस्कृत-व्याकिण के कुछ सूत्र िटे िा िाि था। 'िुकृञ्किणे, िुकृञ्किणे', वि इसकी पुनः पुनः आवृहत्त कि िाि था। इसे सुन कि वे उस हवद्याथी के अध्यवसाय से चहकत िो गये। आिा की मुस्ट्क्त के सम्बन्ध में इस प्रकाि के अध्ययन की अथथिीनता को अनावृत किने के हलए उन्होंनें तत्काल अपना सुप्रहसद्ध संहक्षप्त गीत 'भि गोहवन्दम्' गाया हिसका अथथ िै, "गोहवन्द की उपासना किो, गोहवन्द की उपासना किो, गोहवन्द की उपासना किो। िे मूढ़मते, अन्त-काल में संस्कृत के इन सूत्रों ंकी आवृहत्त से तुम्हािी िक्षा निीं ंिो पायेगी।"

* *

एक बाि दुष्ट प्रकृहत के कुछ व्यस्ट्क्तयों ंने िंकि को मद्य-मांस की भेंट दी; हकन्तु िंकि के दाहिने िाथ के स्पिथ मात्र से मांस सेब तथा मद्य दूि िो गया।

* *

एक कापाहलक ने िंकि से भेंट स्वरूप उनके िीि की याचना की। िंकि ने उसकी याचना को स्वीकाि किते हुए किा हक िब वे हकसी एकान्त स्थान में ध्यानस्थ िों,ं तब वि उनका िीि ले ले। कापाहलक उनके िीि को लक्ष्य कि उन पि कृपाण चलाना िी चािता था हक िंकि के हनष्ठावान् हिष्य् पद्मपाद ने उसे पकि कि छुिे से उसकी ित्या कि दी। पद्मपाद भगवान् नृहसंि के उपासक थे। वस्तुतः भगवान् नृहसंि ने िी पद्मपाद के ििीि में प्रहवष्ट िो कि उस कापाहलक का वध कि हदया था।

िंकि का दिकन

िंकि ने ब्रह्मसूत्रों,ं उपहनषदों ंतथा गीता पि भाष्य् हलखे। ब्रह्मसूत्र पि उनके भाष्य् को ििीिीक भाष्य् किते िैं। उन्होंनें 'सनतुसुतीय' तथा 'सिस्रनाम अध्याय' पि भी भाष्य् हलखे। प्रायः ऐसा किा िाता िै हक तकथिास्त् तथा 'मीमांसा' के अध्ययन के हलए िंकि के भाष्यों ंतथा भस्ट्क्त को सुफुरित तथा सुदृढ़ किने वाले व्याविारिक ज्ञान की प्रास्ट्प्त के हलए उनकी कृहतयों ं'हववेकचूडामहण', 'आिबोि', 'अपिोक्षानुभूहत', 'आनन्द-लििी', 'आि-अनाि-हववेक', 'दृक्-दृश्य-हववेक' तथा 'उपदेि-सािस्री' का अध्ययन किना चाहिए। िंकि ने पद्य में भी अनेक मौहलक कृहतयों ंका सृिन हकया िो मािुयथ, स्वि-लाहलत्य तथा वैचारिकता में अहितीय िैं।

िंकि का पिब्रह्म हनगुथण, हनिाकाि, हनहवथिेष तथा अकताथ िै। वि आप्तकाम िै। िंकि किते िैं- "यि आिा स्वयंप्रकाि िै। आिा के अस्ट्स्तत्व के प्रमाण िािा आिा की हसस्ट्द्ध निीं ंिोती। आिा का हनिाकिण असम्भव िै; क्योंहक िो उसका हनिाकिण कि िाि िोता िै, उसका वि सि-तत्त्व िै। आिा सवथ ज्ञान का अहिष्ठान िै। आिा आभ्यन्ति िै, आिा बाह्य िै; आिा पूवथ िै, आिा पि िै; आिा दहक्षण पाश्वथ में िै, आिा वाम पाश्वथ में िै; आिा ऊर्ध्व में िै, आिा अिः में िै।"

सत्यम्-ज्ञानम्-अनन्तम्-आनन्दम्- ये लक्षण एक-दूसिे से पृथक् निीं ंिैं। ब्रह्म अवणथनीय िै; क्योंहक वणथन में भेद अन्तहनथहित िै। ब्रह्म की तुलना स्वयं ब्रह्म के अहतरिक्त अन्य हकसी भी वस्तु से निीं ंकी िा सकती।

नामरूपाक िगत् की स्वतन्त्र सत्ता निीं ंिै। एकमात्र आिा की िी यथाथथ सत्ता िै। िगत् की सत्ता मात्र व्याविारिक िै।

िंकि केवलाैत-दिथन के प्रहतपादक थे। उनके उपदेिों ंका साि हनम्नांहकत िब्दों ंमें सहिहित िै :

"ब्रह्म सत्यं िगस्ट्न्मर्थ्ा िीवो ब्रह्मव नापिः एकमात्र ब्रह्म िी सत्य िै, िगत् हमर्थ्ा िै औि िीव तथा ब्रह्म में तादात्म्य-सम्बन्ध िै।"

िंकि ने हववतथवाद का उपदेि हदया। हिस प्रकाि िज्जु में सपथ का अध्यािोप हकया िाता िै, उसी प्रकाि ब्रह्म में गित् तथा िीिि का अध्यािोप हकया िाता िै। यहद आपको िज्जु का ज्ञान िो िाता िै, तो सपथ का भ्रम हवनष्ट िो िाता िै। इसी प्रकाि ब्रह्म-ज्ञान की प्रास्ट्प्त से िीिि तथा िगत् के भ्रम की हनवृहत्त िो िाती िै।

भाित माता ने हिन सपूतों ंको िन्म हदया िै, उन कुिाग्रबुस्ट्द्ध मिान् आिाओं ंमें िंकि अग्रगण्य िैं। वे अैत-दिथन के प्रहतपादक थे। वे एक मिान् तत्त्वमीमांसक, एक व्याविारिक दािथहनक, एक हनभाथन्त ताहकथक एवं गत्याक व्यस्ट्क्तत्व तथा एक नैहतक औि आध्यास्ट्कि िस्ट्क्त के स्वामी थे। ििाँ तक हकसी हवचाि के ग्रिण तथा उसके स्पष्टीकिण का प्रश्न िै, उनकी मेधा अपरिहमत थी। वे एक हसद्ध योगी, ज्ञानी तथा भक्त थे। वे उच्च श्रेणी के कमथयोगी भी थे। लोगों ंको अपनी औि आकहषथत किने में उनकी क्षमता अप्रहतम थी।

ज्ञान की ऐसी कोई भी हवधा निीं ंिै िो उनकी गवेषणा से वंहचत िि गयी िो। इन सभी को उनकी अहिमानवीय बुस्ट्द्ध के संस्पिथ िािा परिष्कृत तथा पूणथ िोने का सुयोग प्राप्त हुआ। िंकि तथा उनकी कृहतयों ंके प्रहत िमािे मन में प्रगाढ़ श्रद्धा िै। उनके मन की उदात्तता, सौम्यता तथा दृढ़ता, प्रश्नों ंके उत्ति के सम्बन्ध में उनकी हनष्पक्षता, उनकी अहभव्यस्ट्क्त की स्पष्टता-ये सभी बातें उनके प्रहत िमािी श्रद्धा को अहधकाहधक सुदृढ़ किती िैं। िब तक आकाि में सूयथ प्रकाहित िोता ििेगा, तब तक संसाि उनके उपदेिों ंसे वंहचत निीं ंिोगा।

आि भी िंकि की प्रगाढ़ हवित्ता औि दुरूि दािथहनक समस्याओं ंकी स्पष्ट व्याख्या के कािण संसाि के समस्त दािथहनक मतों ंके अनुयायी उनको श्रद्धा तथा सम्मान की दृहष्ट से देखते िैं। वे प्रचण्ड मेधा के स्वामी, तत्त्विष्टा दािथहनक, सुयोग्य प्रचािक, अनन्य उपदेिक, प्रहतभासम्पन्न कहव तथा मिान् समाि-सुधािक थे। सम्भवतः हकसी भी साहित्य के इहतिास में उनकी कोहट के हवस्मयिनक िचनाकाि का आहवभाथव निीं ंहुआ। आधुहनक युग के पाश्चात्य हविान् भी उनके प्रहत अपनी श्रद्धांिहल अहपथत किते िैं। समस्त प्राचीन दािथहनक हसद्धान्तों ंकी तुलना में िंकिाचायथ के हसद्धान्त सवाथहधक अनुकूल तथा सुगमतापूवथक ग्रिणीय िैं।

िामानुि

चेन्नई (मद्रास) से लगभग पचीस मील पहश्चम की औि श्रीपेरुम्बुदूि ग्राम में १०१७ ई. में िामानुि का िन्म हुआ था। उनके हपता का नाम केिव सोमयाहि तथा उनकी माता का नाम कास्ट्न्तमहत था। कास्ट्न्तमहत एक धमथहनष्ठ तथा सद्गुण-सम्पन्न महिला थीं।ं िामानुि का तहमल नाम इलय पेरुमाल था। िामानुि के िीवन के प्रािस्ट्म्भक काल में िी उनके हपता का देिान्त िो गया। तत्पश्चात् वे अैत-दिथन के आचायथ यादवप्रकाि के यिाँ वेदाध्ययन के हलए कांचीपुिम् चले गये।

ािमानिु अत्यन्त मेिावी छात्र थे। वैहदक ग्रन्ों ंकी यादवप्रकिा की व्याख्या से वे सन्तुष्ट निीं ंिो पाते थे। अपने आचायथ की व्याख्या की कई एक त्रुहटयों ंकी ओि वे संकेत हकया किते थे। कभी-कभी वे स्वयं व्याख्या कि देते थे िो उनके सिपाहठयों ंको रुहचकि तथा हनभाथन्त प्रतीत िोती थी। इससे यादवप्रकिा के मन में िामानिु के प्रहत ईर्ष्ाथ के भाव िाग्रत िोने लगे।

यादवप्रकिा ने िामानिु की ित्या की योिना बनायी। उन्होंनें िामानिु तथा उसके चचेिे भाई एवं सिपाठी गोहवन्द भि की वािाणसी की तीथथयात्रा की व्यवस्था की। गोहवन्द भि यादवप्रकिा के कृपापात्र हवद्याथी थे। यात्रा किते समय वे यादवप्रकिा की योिना से अवगत िो गये। उन्होंनें िामानिु को इस आसन्न संकट की सूचना दे दी। इतना िी निीं, ं उन्होंनें इससे उनकी मुस्ट्क्त का भी प्रबन्ध कि हदया। ईश्वि की कृपा से वे एक आखेटक तथा उसकी पत्नी, िो उनसे मागथ में हमल गये थे, की सिायता से बच गये।

दिम िताब्दी के अन्त तक दहक्षण भाित में दिथन की हवहिष्टाद्वैत-पद्धहत सम्यक् रूप से स्थाहपत िो चुकी थी। कांचीपुिम्, श्रीिंगम्, हतरुपहत तथा अन्य मित्त्वपूणथ स्थानों ंके वैष्णव-मस्ट्न्दिों ंपि इस मत के अनुयाहययों ंका आहिपत्य िो चुका था। मिान् सन्त तथा बहुश्रुत हवद्वान् यामुनाचायथ वैष्णव-संस्थाओं ंके अध्यक्ष थे। वे श्रीिंगम्-मठ के भी प्रिान थे। कांचीपूणथ नामक उनका एक हिर्ष् कांचीपुिम् के मस्ट्न्दि में सेवित था। कांचीपूणथ िूद्र था; हकन्तु उसकी िमथहनष्ठा तथा भिता के कािण स्थानीय लोगों ंमें उसके प्रहत आदि तथा सिान के भाव थे। कांचीपुिम् में एक मस्ट्न्दि िै ििााँ कांचीपूणथ की एक प्रहतमा अहिष्ठाहपत की गयी िै औि विााँ वि एक सन्त के रूप में पूहित िै।

कांचीपूणथ से प्रभाहवत युवा िामानिु के मन में उसके प्रहत इतनी अहिक श्रद्धा थी हक उन्होंनें उसको अपने घि भोिन के हलए हनमस्ट्न्त्रत कि हदया। उनका अहभप्राय कांचीपूणथ को अपने िाथों ंभोिन किाने के पश्चात् स्वयं भोिन किना था। दुभाथग्य से कांचीपूणथ िामानिु की अनुपस्ट्स्थहत में उनके घि गया ििााँ उनकी पत्नी ने उसको भोिन किाया। लौटने पि िामानिु ने देखा हक गृि-प्रक्षालन िो ििा िै औि िूद्र को भोिन किाने के प्रायहित्त-स्वरूप उनकी पत्नी स्नान कि ििी िैं। इससे वे अत्यन्त क्षुब्ध हुए। उनकी पत्नी एक हभन्न सामाहिक मान्यता की रूहढ़वादी महिला थीं ंहिनसे अब वे हवमुख िोने लगे थे। ऐसी िी कुछ अन्य घटनाओं ंके पश्चात् उन्होंनें स्वयं को गृिस्थाश्रम से मुक्त कि संन्यास-ग्रिण कि हलया।

उस समय तक यामुनाचायथ अत्यन्त वृद्ध िो चुके थे औि हकसी ऐसे सुयोग्य तथा सच्चरित्र युवक की खोि में थे िो श्रीिंगम्-मठ के अिीश्वि के रूप में उनका स्थान ग्रिण कि सके। उनके हिर्ष् िामानिु के सम्बन्ध में उनको पिले िी सूहचत कि चुके थे औि उन्होंनें उन्हें अपने स्थान पि अहिहष्ठत किने का हवचाि कि हलया था। उन्होंनें िामानिु को बुलवाया; हकन्तु उनके विााँ पहुाँचने के पूवथ िी यामुनाचायथ का देिान्त िो चुका था। विााँ आने पि िामानिु ने देखा हक यामुनाचायथ के अनुयायी उनके िव को अस्ट्न्तम संस्काि के हलए गााँव के बािि ले िा ििे िैं। िामानिु श्मिान तक उन लोगों ंके साथ गये। विााँ उनको सूहचत हकया गया हक मृत्यु के पूवथ यामुनाचायथ अपनी तीन इच्छाओं ंके सम्बन्ध में हनदेि छोड़ गये थे औि इन इच्छाओं ंकी पूहतथ का आग्रि िामानिु से हकया गया था। अब तक हवहिष्टाद्वैत-दिथन के अनुयायी हवद्याहथथयों ंको व्यास के ब्रह्मसूत्र का प्रहिक्षण मौस्ट्खक रूप से िी हदया िाता था। यामुनाचायथ की इच्छा थी हक ब्रह्मसूत्र पि हवहिष्टाद्वैत-दिथन का अनुमोदन किने वाला एक भार्ष् हलखा िाये एवं हवष्णुपुिाण के प्रणेता पिािि तथा सन्त िठगोप के नाम को अमि हकया िाये। िामानिु इसे सुन कि द्रवीभूत िो गये औि उन्होंनें उस श्मिान में िी यामुनाचायथ के िव के सम्मुख यि प्रहतज्ञा की हक वे यामुनाचायथ की तीनों ं इच्छाओं ंकी पूहतथ किेंगे। िामानिु एक सौ बीस वषों तक िीहवत ििे। इस अवहि में उन्होंनें यामुनाचायथ की तीनों ं इच्छाओं ंकी पूहतथ कि अपनी प्रहतज्ञा का पालन हकया।

यामुनाचायथ की मृत्यु के पश्चात् श्रीिंगम् में या अन्यत्र ििने वाले उनके हिर्ष्ों ंकी इच्छा थी हक िामानिु श्रीिंगम् के मठािीश्वि के रूप में यामुनाचायथ का स्थान ग्रिण किें। यामुनाचायथ ने भी यिी इच्छा व्यक्त की थी। उनके

इच्छानुसाि समस्त अनुवती अनुष्ठानों ंतथा सिीमािोों ंके साथ उन्हें श्रीिंगम् के हवहिष्टिैत-मठ के अिौश्चि के रूप में अहिहष्ठत कि हदया गया।

इसके पिात् िामानुि नस्ट्म्ब से पहवत्र अष्टाक्षि-मन्त्र 'ॐ नमो नािायणाय' की िप-दीक्षा लेने के हलए हतरुकोहत्तयूि गये। कािण िो भी िििा िो, नस्ट्म्ब की यि इच्छा निीं ंथी हक िामानुि का दीक्षा-संस्कािा सुगमतापूवथक सम्पि िो सके। िामानुि को दीहक्षत किने का हनणथय लेने के पूवथ नस्ट्म्ब ने उन्हें श्रीिंगम् से मदुिाई के बीच लगभग अठािि बाि पद-यात्रा किने को हववि हकया। इसके अहतरिक्त उनको गोपनीयता की पहवत्र िपथ भी ग्रिण किनी पड़ी। इसके पिात् नस्ट्म्ब ने उन्हें हवहिवत् दीक्षा दी औि किा- "िामानुि, इस मन्त्र को गोपनीय िखना। यि मन्त्र अत्यन्त स्ट्िक्तिाली िै। इसे हकसी पूवथ-पिीहक्षत सुयोग्य हिष्य् को िी प्रदान किना।" हकन्तु, िामानुि एक हविाल-हृदय व्यस्ट्क्त थे। वे अत्यन्त दयालु थे तथा मानवता के प्रहत उनका प्रेम असीम था। उनकी इच्छा थी हक भगवान् नािायण के िाश्वत आनन्द की प्रास्ट्प्त प्रत्येक व्यस्ट्क्त को िो। उनको मन्त्र की आत्यस्ट्न्तक िस्ट्क्त का स्पष्ट बोि हुआ। उन्होंनें िाहत तथा मत पि हबना हविाि हकये मस्ट्न्दि के हनकट सभी लोगों ंको बुलाया औि स्वयं मस्ट्न्दि के मुख्य िािा के हिखि पि खड़े िो कि तीव्र स्वि में वि पहवत्र मन्त्र सबको प्रदान कि हदया। उनके गुरु नस्ट्म्ब यि सुन कि अत्यन्त कुरुद्ध हुए। िामानुि ने किा- "िे गुरुदेव, आप मेिे इस दोषपूणथ कृत्य के हलए हकसी उपयुक्त दण्ड की व्यवस्था कीहिए। यहद मेिे मन्त्र-दान से लक्ष-लक्ष लोगों ंको मोक्ष प्राप्त िोता िै, तो मैं निाकीय यन्त्रणा को भी सिन कि लूूँगा।" नस्ट्म्ब िामानुि से अत्यन्त प्रसि हुए। उनके समक्ष िामानुि की हविाल-हृदयता तथा करुणा स्पष्टतः अनावृत िो उठी। उन्होंनें उनको आहलंहगत कि आिीवाथद हदया औि इस प्रकाि आवश्यक अिथता से सुसज्ज िो कि उन्होंनें यामुनाचायथ का उत्तिाहिकाि ग्रिण हकया।

इस समय तक िामानुि दूि-दूि तक प्रख्यात िो गये थे। वे वाद-हववाद में हनष्णात थे। उन्होंनें ब्रह्मसूत्र पि अपना भाष्य् हलखा हिसे 'श्रीभाष्य्' किते िैं। हवहिष्टिैत की पद्धहत प्राचीन िै। बोिायन ने ४०० ई.पू. में हलस्ट्खत अपनी वृहत्त में इसका प्रहतपादन हकया था। ब्रह्मसूत्र के बोिायन तथा िामानुि के प्रहतपादन में कोई अन्ति निीं ंिै। ब्रह्मसूत्र की िो व्याख्या बोिायन ने की थी, िामानुि ने उसी का अनुसिण हकया। वैष्णवों ंके िामानुिीय सम्प्रदाय को 'श्री-सम्प्रदाय' किते िैं। िामानुि ने 'वेदान्त-साि', 'वेदान्त-संग्रि' तथा 'वेदान्त-दीप' नामक तीन अन्य पुस्तकें भी हलखीं।ं

िामानुि ने भस्ट्क्त-मागथ के प्रचाि-प्रसाि के हलए भाित का आद्योपान्त भ्रमण हकया। उन्होंनें इस देि के कािी, कश्मीि तथा बदिीनाथ–िैसे समस्त पहवत्र स्थानों ंकी यात्रा की। लौटते समय वे हतरुपहत की पिाहियों ंमें गये। विााँ उन्होंनें देखा की हतरुपहत की पिाहियों ंमें अहिहष्ठत भगवान् के हवग्रि के सम्बन्ध में िैवों ंतथा वैष्णवों ंमें पिस्पि अन्तकथलि चल ििा िै। एक दल इसका सम्बन्ध िैव-सम्प्रदाय से िोड़ ििा था औि दूसिा वैष्णव-सम्प्रदाय से। िामानुि ने इन दोनों ंदलों ंके समक्ष यि प्रस्ताव प्रसुतुत हकया हक इस हववाद का हनणथय स्वयं भगवान् पि िी छोड़ हदया िाये। अतः उन लोगों ंने प्रतीक-रूप में हिव तथा हवष्णु के हलए कुछ वस्त् िख हदये। इसके पिात् वे मस्ट्न्दि का िाि बन्द कि विााँ पिािा देने लगे। प्रातःकाल िब उन लोगों ंने िाि खोला, तब देखा हक भगवान् के हवग्रि ने हवष्णु का वस्त् िािण कि हलया था औि हिव का वस्त् विीं ंभगवान् के हवग्रि के चिणों ंपि यथावत् पड़ा हुआ था। इस घटना से यि हनहित िो गया हक मस्ट्न्दि वैष्णवों ंका था। तब से ले कि आि तक यि मस्ट्न्दि वैष्णव-मस्ट्न्दि िी िै।

इसके पिात् िामानुि दहक्षण भाित के सभी वैष्णव-मस्ट्न्दिों ंमें गये औि अन्ततः श्रीिंगम् पहुाँचे। विााँ स्थायी रूप से िि कि उन्होंनें स्वयं को हवहिष्टिैत-दिथन के प्रवचन तथा ग्रन्-लेखन के श्रमसाध्य कमथ में हनयोहित कि हलया। उनके प्रवचन को सुनने के हलए प्रहतहदन विााँ सिस्रों ंश्रोता एकत्र िोने लगे। उन्होंनें मस्ट्न्दिों ंको स्वच्छ कि उनमें िाहमथक अनुष्ठानों ंके पालन की व्यवस्था की औि समाि में प्रहवष्ट कुिीहतयों ंका हनिाकिण हकया। उनके यिााँ सात सौ संन्यासी थे। इनके अहतरिक्त विााँ मस्ट्न्दिों ंके हविेष कायों की समुहचत व्यवस्था के हलए चौित्ति अनुष्ठाता भी

थे। उस परिसि में सिस्रों ंपहवत्र-हृदय स्त्री-पुरुष िािते थे िो उनको ईश्विे की भााँहत श्रद्धेय तथा पूिनीय समझते थे। उन्होंनें लाखों ंव्यस्क्तयों ंको भस्क्त-मागथ की ओि उन्मुख हकया। उन्होंनें िोहबयों ंको भी दीहक्षत हकया था। उनकी
आयु सत्ति वषथ की िो चुकी थी; हकन्तु उनके भाग्य-लेख के अनुसाि उन्हें अभी कई वषों तक िीहवत ििना, कुछ औि मठों ंकी स्थापना किना, कई मस्स्न्दिों ंका हनमाथण किना तथा अनेक लोगों ंको अपने मत में दीहक्षत किना था।

उस समय चोल िाज्य का अहिपहत कुलोतुंग प्रथम था िो एक पूणथतः हनष्ठावान् िैव था। उसने िामानुि को िैव-मत ग्रिण किने तथा हिव को सवोच्च भगवान् मानने का आदेि हदया। िामानुि के हिष्यों ंमें से कूिेस तथा मिापूणथ नामक दो हिष्य संन्याहसयों ंके काषाय वस्त्र िािण कि िामानुि के स्थान पि स्वयं कुलोतुंग प्रथम की िािसभा में िा पहुाँचे। विााँ उन्होंनें हवष्णु की सवोच्चता के पक्ष में तकथ प्रस्तुत हकये; हकन्तु चोलाहिपहत ने उनकी बातों ंको अस्वीकृत कि उनकी आाँखें हनकलवा लीं।ं

वे दोनों ंभाग्यिीन व्यस्क्त अपने पैतृक स्थान श्रीिंगम् की ओि चल पडे। अत्यन्त वृद्ध मिापूणथ यात्रा का कष्ट सिन किने में असमथथ थे; अतः मागथ में िी उनका दिेान्त िो गया। कूिेस अकेले िी श्रीिंगम् लौटे।

इस बीच िामानुि अपने कुछ अनुयाहययों ंके साथ मैसूि से लगभग चालीस मील दूि पहिमी घाट की उपत्यका में पहुाँचे। विााँ उन्होंनें अपने हनवास-स्थान की व्यवस्था किने के पिात् कुछ वषथ उपदेि तथा लोगों ंको हवहिष्टाद्वैत-मत में दीहक्षत किने में व्यतीत हकये।

उस स्थान का अहिपहत िोयसल वंिीय भहिदेव था। उसकी पुत्री प्रेतबाहिता थी औि उसे अभी तक कोई भी व्यस्क्त बािा-मुक्त निीं ंकि पाया था। िामानुि उस प्रेत-बािा के हनिाकिण में सफल िो गये औि िािकुमािी अपने स्वास्थ्य की पूवथ-स्स्थहत को प्राप्त िो गयी। िािा िामानुि से अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने स्वेच्छापूवथक उनका हिष्य बन कि उनसे वैष्णव-मत की दीक्षा ग्रिण कि ली। इसके पिात् िामानुि ने स्वयं को मैसूि-िाज्य के अहिकाि-क्षेत्र में प्रहतहष्ठत कि मेलकोट में एक मस्स्न्दि का हनमाथण किाया औि विााँ एक बृिद् वैष्णव-समुदाय की संिचना की। स्थानीय परिया या दहलत-वगथ के लोग उनकी सेवा में सदैव तत्पि ििते थे। उन्होंनें उन्हें कुछ हनहित हदनों ंको तथा कुछ सीहमत सुहविाओं ंके साथ स्व-हनहमथत मेलकोट के मस्स्न्दि में प्रवेि का अहिकाि प्रदान कि हदया। यि सुहविा उन्हें आि भी प्राप्त िै।

िामानुि ने मैसूि में तथा इसके आस-पास कुछ अन्य हवष्णु-मस्स्न्दिों ंका भी हनमाथण किाया औि एक सुदृढ़ वैष्णव-समुदाय की स्थापना कि िाज्य-भि में अपने कायथ के नैिन्तयथ को अक्षुण्ण िखने तथा हवहिष्टाद्वैत-दिथन औि हवष्णु-पूिा के प्रचाि-प्रसाि के हलए अपने हिष्यों ंको इसका प्रभािी बना हदया। इस प्रकाि वे लगभग बीस वषों तक इस श्रम-साध्य कायथ में अनवित रूप से संलग्न ििे। उनके अनुयाहययों ंकी संख्या कई सिस्र िो गयी।

इस बीच िामानुि को उत्पीहड़त किने वाले कुलोतुंग चोल प्रथम की मृत्यु िो गयी। िामानुि के अनुयाहययों ंने तत्क्षण िामानुि को इसकी सूचना देते हुए उनसे श्रीिंगम् लौटने की प्राथथना की। िामानुि स्वयं श्रीिंगम् में अपने अनुयाहययों ंके पास िाने तथा विााँ के मस्स्न्दि में पूिा किने के इच्छुक थे; हकन्तु मेलकोट तथा अन्य स्थानों ंके उनके नव-दीहक्षत हिष्य तथा अनुयायी उनको विााँ से िाने निीं ंदेना चािते थे; अतः उन्होंनें स्वयं अपने हलए एक मस्स्न्दि का हनमाथण कि उसमें अपनी एक प्रहतमा प्रहतहष्ठत कि दी हिससे उनके हिष्य तथा अनुयायी उनकी पूिा कि सकें। इसके पिात् वे उस स्थान का परित्याग कि श्रीिंगम् चले गये। श्रीिंगम् में उनके हमत्रों ंतथा हिष्यों ंने उनका भव्य स्वागत हकया। कुलोतुंग चोल प्रथम का उत्तिाहिकािी वैष्णव-मत का पोषक था हिसके परिणाम-स्वरूप िामानुि की चयाथ में कभी कोई व्याघात निीं ंआया। िामानुि अपने श्रमसाध्य कमथ में अनवित रूप से तीस वषथ तक संलग्न ििे। एक सौ वषथ की दीघाथयु की प्रास्प्त के पिात् िी उनकी दीघथकाहलक सािना की इहतश्री िो सकी।

ाामानिु हवहिष्टौत-दिथन अथाथत् सहविेष अैित के प्रहतपादक थे। ािमानिु का ब्रह्म सहविेष अथाथत् सबल ब्रह्म ीै। ािमानिु के उपदिेानुसाि नािायण अथाथत भगवान् सवोच्च तत्त्व िै: वैयस्ट्क्तक आिा हचत् तथा ीि िगत् अहचत् िै। ािमानिु के अनुसाि गुण या लक्षण यथाथथ तथा स्थायी िैं, हकन्तु इनका हनयमन ब्रह्म ीिाा िोता िै। इन गुणों ंया लक्षणों ंको प्रकाि किते िैं। भगवान् नािायण ब्रह्माण्ड के हनयन्ता तथा स्वामी िैं। िीव उनका दास तथा उपासक िै। भगवान् के प्रहत िीव का सवथतोभावेन समपथण िोना चाहिए। ईश्वि के अैित-स्वरूप तथा इसके गुणों ं अथाथत् इसकी िस्ट्क्तयों ंके बीच हकसी प्रकाि की असंगहत के दिथन निीं ंिोते; क्योंहक िस्ट्क्तयों ंको अपने अस्ट्स्तत्व के हलए ईश्विाहश्रत िोना अहनवायथ िै।

मर्ध्

मर्ध्ाचायथ एक मिान् दािथहनक एवं ब्रह्मसूत्रों ंतथा दि उपहनषदों ंके िास्त्-सित भाष्किा थे। उनका िन्म दहक्षण भाित में दहक्षण कनािा िनपद-स्ट्स्थत उिुहप से कुछ मील दिू बेलाली में ११९९ ई. में हुआ था। िन्मतः वे तुलु ब्राह्मण थे। वे मध्य गेि तथा वेदवती के पुत्र थे। वेदवती एक सद्‌गुण-सम्पि महिला थीं।ं मर्ध् को वायु का अवताि माना िाता िै। हपता ने उनको वासुदेव नाम से अहभहित हकया था।

मर्ध् को व्यायाम तथा खेल-कूद की अन्य हविाओं ंमें हवहिष्टता प्राप्त थी। उनकी ीािीरिक संिचना अद्‌भुत थी। उन्हें मल्लयुद्ध, दौि, कूद-फाँद तथा तैिाकी का भी ज्ञान था; अतः लोगों ंने उन्हें 'भीम' का उपनाम दे हदया था। मर्ध् ने वेद-वेदांगों ंका अध्ययन हकया आैि इनमें वे पूणथतः पािंगत िो गये। अचुयुतप्रकािाचायथ से दीक्षा ग्रिण कि वे पचीस वषथ की आयु में संन्यासी िो गये। तत्पिात् लोग उन्हें पूणथप्रज्ञ के नाम से िानने लगे। अचुयुतप्रकािाचायथ ने देखा हक मर्ध् वेदान्त तथा अन्य िास्त्ों ंमें सुदक्ष एवं एक मिेावी संन्यासी िैं। उन्होंनें अपने स्थान पि स्वयं मर्ध् को अपने मठ का आिैश्वि बना हदया। अब मर्ध् ने आनन्द तीथथ का नाम ग्रिण कि हलया। वे भस्ट्क्त के हसद्धान्तों ंके प्रचाि-प्रसाि के हलए उत्ति भाित तथा दहक्षण भाित की एक दीघथकाहलक यात्रा पि चल पिे। उन्होंनें कई लोगों ंको अपने मत में दीहक्षत हकया। वे बदिीनािायण गये आैि िीघ्र िी विाँ से लौटने पि उन्होंनें भगवद्गीता तथा वेदान्त-सूत्रों ंपि अपने भाष् हलखे। मर्ध्-सम्प्रदाय के मुख्य केन्द्र उिुहप में उन्होंनें कई मस्ट्न्दिों ंका हनमाथण हकया। मर्ध् के प्रहत हनष्ठावान् व्यस्ट्क्तयों ंमें से अहिकांि अपने िीवन में कम-से-कम एक बाि उिुहप िाने का प्रयत्न अवश्य किते िैं।

मर्ध् अहतमानवीय िस्ट्क्त के स्वामी थे। उन्होंनें अनेक चमत्कािों ंके प्रदिथन हकये। उन्होंनें एक झंझावात-ग्रस्त नौका की िक्षा की। एक नौका, हिसमें भगवान् कृष्ण की प्रहतमा िखी थी, समिु में िल-मग्न िो गयी; हकन्तु मर्ध् उस प्रहतमा को िल से बािि हनकाल लाये। उनकी यात्रा की अवहि में एक बाि ीिमाष्टि के अहिपहत ईश्विदेव ने उन्हें एक बाँि के हनमाथण कायथ में लगा हदया। मर्ध् का ध्यान इस बात की आेि गया हक वे अचेतनावस्था में प्रहतहदन ीिाा के हलए श्रम किते िा िि िैं। एक बाि िब वे स्नान किने गये, तब उन्होंनें समिु की आेिन्त लििों ंको िान्त कि हदया।

मर्ध्ाचायथ ैित-मत के मिान् प्रहतपादक िैं। ािमानिु के श्री वैष्णव-मत से पृथकता की हसस्ट्द्ध के हलए उनके मत को सैष्णव-मत किा िाता िै। उनके दिथन के अनुसाि हवषुणु या नािायण सवोच्च तत्त्व िैं। मार्ध्-मत के प्रत्येक अनुयायी को पंच-भेद अथाथत् पाँच यथाथथ तथा हनत्य-भेदों ंके प्रहत दृढ़ आस्था व्यक्त किनी पिती िै। ये पंच-भेद िैं- सवोच्च तथा वैयस्ट्क्तक आिा का पािस्परिक भेद, चेतन तथा ीि तत्त्व का पािस्परिक भेद, एक िीव तथा अन्य िीव का पािस्परिक भेद, िीव तथा ीि तत्त्व का पािस्परिक भेद एवं एक िी तत्त्व के एक अंि तथा अन्य अंि का

पािस्परिक भेद। नामरूपािक ि गत् यथाथथ तथा हनत्य िै। अंकन अथाथत् हवषुणु के प्रतीकों ंका ििीि पि हचत्रांकन, नामकिण अथाथत् अपनी सन्तान को भगवान् के नामों ंसे अहभहित किना तथा भिन अथाथत् उसका गुण-गान-ये तीन बातें हवषुणु की पूिा के मुख्य अंग िैं। मर्ध् ने ईश्वि-स्मिण की अनवित सािना पि अत्यहिक बल हदया। वे किते िैं "ईश्वि-स्मिण को िमें अपने स्वभाव के एक आवश्यक अंग के रूप में ग्रिण किना चाहिए। ऐसा किने से आपके हलए मृत्यु के क्षणों ंमें ईश्वि-स्मिण सिि तथा स्वाभाहवक िो िायेगा।" मर्ध् इस तर्थ् के प्रहत संकेत किते हुए किते िैं हक भगवान् अवताि-ग्रिण के समय प्राकृत ििीि या भौहतक दिे िािण हकये हुए निीं ंथे। उन्होंनें अपने अनुयाहययों ंके हलए कठोि उपवास की व्यवस्था की थी।

वैिाग्य, भस्क्त तथा ध्यान के माध्यम से अपिोक्षानुभूहत मुस्क्त-प्रास्प्त के सािन िैं। यहद सािक ईश्वि के दिथन का इच्छुक िै, तो उसे स्वयं को वेदाध्ययन, इस्ियि-हनग्रि, अनासस्क्त तथा पूणथ आत्म-समपथण के िस्त् से सुसस्ज्जत किना िोगा। िैत-मत के प्रख्यात् प्रहतपादक मर्ध्ाचायथ के उपदेिों ंके ये कुछ मित्त्वपूणथ अंि िैं।

वल्लभ

पहिस्थान तथा गुिात के वल्लभ-सम्प्रदाय के संस्थापक वल्लभाचायथ का िन्म १४७९ ई. में मध्य प्रदेि में िायपुि-स्स्थत चम्पािण में हुआ था। लक्ष्मण भि उनके हपता तथा इल्लमा उनकी माता थीं।ं चैतन्य मिाप्रभु के समकालीन वल्लभाचायथ तेलुगु ब्राह्मण थे। उन्हें अहग्न का अवताि किा िाता िै।

िब वल्लभाचायथ की आयु ग्यािि वषथ थी, तब उनके हपता का देिान्त िो गया। अपनी आयु के बािवें वषथ में उन्होंनें वािाणसी में वेदों,ं षि्-दिथनों ंतथा अष्टादि पुिाणों ंका हवहिवत् अध्ययन पूणथ कि हलया था। वािाणसी से वे वृन्दावन चले गये औि तत्पश्चात् उन्होंनें भाित के समस्त पहवत्र स्थानों ंकी यात्रा की।

हवियनगि के िािा कृष्णदेव की िािसभा में िा कि उन्होंनें विााँ के सभी प्रख्यात पस्ण्डतों ंको पिाहित हकया। वल्लभ की मेिा तथा पास्ण्डत्य से िािा अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंनें उन्हें हवपुल मात्रा में स्वणाथहद की भेंट दी। इसके अहतरिक्त उन्होंनें उनको वैष्णवाचायथ की उपाहि से अलंकृत हकया। वल्लभकी ख्याहत तथा प्रभाव में हनिन्ति वृस्द्ध िोती गयी। हवियनगि से वल्लभ ने उज्जैन तथा अन्य स्थानों ंकी यात्रा की।

वल्लभ का हववाि वािाणसी में हुआ। उनकी पत्नी का नाम मिालक्ष्मी था। उनके दो पुत्र थे।

व्यास-सूत्र-भाष्य, िैहमहन-सूत्र-भाष्य, भागवत-टीका-सुबोहिनी, पुहष्ट-प्रवाल-मयाथदा तथा हसद्धान्तििस्य उनकी मित्त्वपूणथ कृहतयााँ िैं। ये सभी ग्रन् संस्कृत में िैं। उन्होंनें ब्रिभाषा में भी कई ग्रन्ों ंकी िचना की।

वल्लभ के अनुयाहययों ंने चम्पािण में उनके िन्म-स्थान पि एक मस्न्दि का हनमाथण हकया। यि मस्न्दि अत्यन्त लोकहप्रय िै। लोग इसे तीथथ-स्थान मान कि यिााँ आते िैं।

वल्लभ ने अपने िीवन के अस्न्तम हदन वािाणसी में व्यतीत हकये। उन्होंनें सोचा हक उनके िीवन के लक्ष्य की पूहतथ िो चुकी िै। एक हदन वे िनुमान्-घाट पि गंगा-स्नान के हलए गये। विााँ लोगों ंने देखा हक एक प्रोज्ज्वल प्रकाि-हपण्ड िोती से आकाि की औि ऊर्ध्थगमन किता िा ििा िै, विााँ दिथकों ंके समूि की उपस्स्थहत में वे आकाि में गमन किते हुए अदृश्य िो गये। यि घटना उनकी बावन वषथ की आयु में १५३१ ई. में हुई।

वल्लभाचायथ िुद्ध अिैत अथाथत् दिथन की िुद्धिौतिाखा के प्रहतपादक थे। श्रीकृष्ण सवोच्च ब्रह्म िैं। उनकी दिे में सस्ट्च्चदानन्द की संसस्ट्क्त िैं। उन्हें पुरुषोत्तम किा िाता िै।

वल्लभ के अनुयायी बाल-कृष्ण की उपासना किते िैं। वल्लभ पुहष्ट तथा भस्ट्क्त पि अत्यहिक बल देते िैं। मिापुहष्ट उच्चतम अनुग्रि िै। यि सिाकों ंको ईश्वित्व-प्रास्ट्प्त में सियोग प्रदान किता िै। अहग्न से हचन्फ्गािी की भााँहत िागहतक पदाथों का प्रादुभाथव अक्षि (सस्ट्च्चदानन्द) से िोता िै।

हनम्बाकथ

दहक्षण भाित में आन्ध्र प्रदेि-स्ट्स्थत वैदूयथपत्तनम् में गोदावािी-तट पि अरुणमुहन नामक एक मिान् सन्त ििते थे। उनकी िमथपायणा िसिहमथणी का नाम ियन्तीदेवी था। श्री हनम्बाकथ उन्हीं ंदोनों ंके पुत्र थे। उनके आध्यास्ट्त्मक अहभयान का काल िग्यािवीं ंिताब्दी था। नामकिण-संस्काि के अवसि पि ब्राह्मणों ंकी हवित्-मण्डली ने उस बालक को हनयमानन्दाचायथ के नाम से अहभहित हकया। हनम्बाकथ को अरुण ऋहष तथा ििहप्रयाचायथ के नाम से भी िाना िाता था।

अरुणमुहन तथा ियन्तीदेवी ने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत-संस्काि के समापन के पिात् उसे वेद-वेदांग तथा दिथन आहद के अध्ययन के हलए ऋहषकुल भेिा। विााँ हनयमानन्दाचायथ अल्पावहि में िी सभी िास्त्रों ंमें हनष्णात िो गये। वे प्रचण्ड मेिा के स्वामी थे। हवलक्षण प्रहतभा सम्पन्न इस बालक के दिथन के हलए लोग भाित के कोने-कोने से आने लगे।

एक बाि हनयमानन्दाचायथ की हकिोिावस्था में सृहष्टकताथ ब्रह्मा एक संन्यासी का वेि िािण कि अरुणमुहन के आश्रम में आये। सूयाथस्त िोने वाला था औि मुहन विााँ निीं ंथे। संन्यासी ने मुहन-पत्नी से भोिन की याचना की; हकन्तु भोिन समाप्त िो चुका था। अतः उन्होंने मौन िािण कि हलया औि संन्यासी विााँ से िाने लगे।

हनयमानन्दाचायथ ने अपनी माता से किा- "िे माता, संन्यासी को हबना भोिन के निीं ंलौटाना चाहिए। िम लोग अहतहथ-िमथ के उल्लंघन के भागी िोंगे।" माता ने किा- "हप्रय पुत्र, तुम्हािे हपता बािि गये हुए िैं औि मेिे पास कन्द-मूल या फल, कुछ भी निीं ंिै। इसके अहतरिक्त मेिे पास भोिन बनाने का समय भी निीं ंिै। सूयाथस्त िो चुका िै औि संन्यासी सूयाथस्त के पिात् अन्न-ग्रिण निीं ंकिते।"

हनयमानन्दाचायथ ने संन्यासी से किा- "मैं आपके हलए वन से कन्द-मूल तथा फल िीघ्र िी ला दूाँगा। मैं आपको इस बात के हलए आश्वस्त किता हाँ हक िब तक आप भोिन निीं ंकि लेंगे, तब तक सूयाथस्त निीं ंिोगा।" इतना कि कि उन्होंने अपना सुदिथन चक्र आश्रम में एक नीम के पेड़ पि िख हदया ििााँ वि सूयथ की भााँहत दीस्ट्प्तमान िो गया। संन्यासी का वेि िािण हकये हुए ब्रह्मा इसे देख कि आियथचहकत िो उठे। कुछ िी क्षणों ंमें हनम्बाकथ कन्द-मूल औि फल ले कि लौट आये। उन्होंने यि सब अपनी माता को दे हदया हिन्होंने यि भोज्य-सामग्री उत्कट भस्ट्क्त-भाव से संन्यासी के समक्ष हवहिवत् प्रसुतुत कि दी। संन्यासी के भोिन समाप्त किते िी हनम्बाकथ ने सुदिथन-चक्र को नीम के पेड़ से िटा हलया औि िीघ्र िी घोि अन्धकाि व्याप्त िो गया। िाहत्र का चतुथाांि समाप्त िो चुका था। उसी समय संन्यासी-वेिििािी ब्रह्मा ने बालक को हनम्बाकथ के नाम से अहभहित कि हदया। नीम का अथथ िै नीम का पेड़ औि अकथ का अथथ िै सूयथ। उस हदन से उनको श्री हनम्बाकाथचायथ किा िाने लगा। श्री हनम्बाकाथचायथ को भगवान् िरि के स्त् सुदिथन चक्र का अवताि समझा िाता िै।

अवतािों ंके चाि प्रकाि िैं : (१) पूणथा—िैसे भगवान् कृष्ण तथा भगवान् िाम; (२) कला (पूणथतः पूणथ निीं)ं िैसे मत्स्य, ववाि, िंस आहद; (३) अंि—िैसे शिवाभित, नि-नािायण आहद; (४) अंिांि—िैसे श्री िंकि, श्री िामानुि, श्री हनम्बाकथ आहद।

हवष्णुयान में श्री हनम्बाकाथचायथ की आध्यास्ट्कि वंिावली का वणथन हनम्नांहकत क्रमानुसाि हकया गया िै : "श्री नािायण के मुख-कमल से अष्टादि अक्षिों ंवाले पहवत्र गोपाल-मन्त्र का आहवभाथव हुआ। इसे िंस भगवान् को प्रदान हकया गया। िंस भगवान् ने इस मन्त्र की दीक्षा कुमािों ंको दी हिसे कुमािों ंने ऋहष नािद के समक्ष उद्घाहटत हकया। नािद ने यि मन्त्र अपने हिष्य श्री हनम्बाकथ को हदया औि श्री हनम्बाकथ ने इस मन्त्र की दीक्षा अपने हिष्य श्रीहनवासाचायथ को दी।"

श्री हनम्बाकाथचायथ दया, धमथहनष्ठा, प्रेम, अनुग्रि, उदािता तथा अन्य हदव्य गुणों ंकी प्रहतमूहतथ थे। उन्होंनें नीम ग्राम में कठोि तप हकया हिसके फल-स्वरूप उन्हें विााँ भगवान् कृष्ण के दिथन हुए। श्री हनम्बाकथ ने केवल उसी ग्राम में चमत्काि का प्रदिथन हकया था। उस समय संन्यासी-वेिधािी ब्रह्मा विााँ हभक्षा के हलए गये हुए थे। हनम्बाकथ-सम्प्रदाय का एक दूसिा पहवत्र स्थल ध्रुवस्थान-स्ट्स्थत सलेम्बाबाद िै। यिााँ एक प्रभाविाली मिन्त िािते िैं। यिााँ एक हनम्बाकथ-मस्ट्न्दि भी िै।

वृन्दावन, नन्दग्राम, बिसाना, गोवधथन तथा नीम ग्राम हनम्बाकाथचायथ के अनुयाहययों ंके हलए मुख्य क्षेत्र या पावन भूहम िैं। १६८ मील में हवसृतृत ब्रिभूहम की परिक्रमा इनका प्राथहमक कतथव्य एवं हवहभन्न अवसिों ंपि गोवधथन से दो मील दूि नीम ग्राम-स्ट्स्थत हनम्बाकथ-मस्ट्न्दि की यात्रा इनका साम्प्रदाहयक कतथव्य िै।

हनम्बाकथ-सम्प्रदाय के लोग अहिकति ब्रिभूहम अथाथत् वृन्दावन, नन्दग्राम, बिसाना तथा गोवधथन आहद में पाये िाते िैं। ियपुि, िोधपुि, भितपुि, ग्वाहलयि, बदथवान तथा ओकािा इसके मुख्य केि िैं। ये लोग मध्य भाित, हबिाि, उत्कल तथा पहिम बंगाल में भी िैं।

द्वैताद्वैत-दिथन

श्री हनम्बाकाथचायथ ने हनम्नांहकत ग्रन्थों ंकी िचना की : वेदान्त पारििात सौिभ, ब्रह्मसूत्र पि एक भाष्य; भगवद्गीता पि भाष्य; सदाचाि प्रकाि, कमथकाण्ड पि एक ग्रन्थ; िस्य षोडिी, श्री गोपाल-मन्त्र की एक पद्यात्मक व्याख्या; प्रपंच कल्प वल्ली, श्री मुकुन्द-मन्त्र की एक पद्यात्मक व्याख्या; प्रपहत्त हचन्तामहण, सवोच्च ििण-स्थान के सम्बन्ध में एक ग्रन्थ; प्रातःस्मिण-स्तोत्रम्, एक भिनावली, दिश्लोकी अथाथत् कामधेनु, दि पद्यात्मक अमृत वाहणयााँ तथा सहविेष-हनहवथिेष श्रीकृष्ण स्तवम्।

श्री हनम्बाकाथचायथ दिथन की द्वैताद्वैत िाखा के प्रहतपादक थे। इस सम्प्रदाय के अनुयायी िाधा तथा कृष्ण की उपासना किते िैं। इनके हलए भागवत सवाथहधक मित्त्वपूणथ धमथग्रन्थ िै। ब्रह्म से िीव तथा िगत् का भेद एवं अभेद दोनों िैं। इस मत के अनुयायी मथुिा तथा वृन्दावन में अहधक भी पाये िाते िैं।

िंकि केवलाद्वैत-दिथन के, िामानुि हवहिष्टाद्वैत-दिथन के, मध्वाचायथ द्वैत-दिथन के, वल्लभाचायथ िुद्धाद्वैत-दिथन के तथा हनम्बाकाथचायथ द्वैताद्वैत-दिथन के प्रहतपादक थे। ये सभी मिान् पुरुष थे। िम यि निीं ंकि सकते हक िंकि िामानुि से या वल्लभ हनम्बाकथ से मिान् थे। ये सभी अवताि-पुरुष थे। इनमें से प्रत्येक एक हनहित लक्ष्य की पूहतथ तथा एक हनहित हसद्धान्त के प्रचाि-प्रसाि के हलए इस धिाधाम पि अवतरित हुआ था। एक हवहिष्ट कालावहध में िीने वाले तथा भस्ट्क्त के एक स्ति-हविेष पि पहुाँचे हुए लोगों ंके आध्यास्ट्कि हवकास के हलए उक्त हसद्धान्तों ंका प्रचाि-प्रसाि आवश्यक था। प्रत्येक दिथन हकसी व्यस्ट्क्त-हविेष के हलए िी उपयुक्त िोता िै।

वेदान्त-दिथन के उच्चतम हसद्धान्त का सम्यक् बिो सभी लोगों ंके हलए िीघ्र िी सम्भव निीं ंिो सकता। इसके पूवथ हक कोई व्यस्ट्क्त िकि के अिैत-वेदान्त का तत्त्वाथथ-ग्रिण सम्यक्-रूपेण कि सके, उसको अपने मन का हनयमन समुहचत रूप से किना िोगा हिससे वि इस अहभयान में एक उपयुक्त माध्यम हसद्ध िो सके।

सभी आचायों को नमस्कािा ! वे महिमास्ट्ति िों!ं उनका आिीवाथद िमें प्राप्त िोता ििे !

िामानन्द

िामानन्द यामुनाचायथ के हिष्् तथा हवहिष्टािैत-दिथन के प्रहतपादक थे। ििााँ तक िाहमथक मत-सम्बन्धी उत्तिाहिकाि का प्रश्न िै, िामानुि की चाि पीहढ़यों ंके पिात् िामानन्द का प्रादुभाथव हुआ। इनका िन्म १२९९ ई. में प्रयाग अथाथत् आिुहनक इलािाबाद में हुआ। इनके कान्यकुब्ज ब्राह्मण हपता का नाम पुण्यसदन तथा इनकी माता का नाम सुिीला था। सन् १४१० में इन्होंनें मिासमाहि ग्रिण की।

श्री िामानन्द एक मिान् वैष्णव तथा भक्त थे। उनके अनुयायी िाम की उपासना किते िैं। इन्हें िामानन्दी या िामावत किा िाता िै। इनमें िो गृि-त्याग कि हभक्षा-वृहत्त से िीवन-यापन किते िैं, उनको वैिागी किा िाता िै।

िामानन्द एक हविाल-हृदय व्यस्ट्क्त थे। उनके हिष्यों ंमें प्रत्येक िाहत के लोग थे। आयु की परिपक्वता के पूवथ िी उनका पास्ट्ण्डत्य परिपक्व िो गया था। अध्ययन के हलए उनको वािाणसी भेिा गया। विााँ उन्होंनें िामानुिीय वैष्णव-मत के लब्धप्रहतष्ठ आचायथ श्री िाघवानन्द का हिष्यत्व ग्रिण हकया। िाघवानन्द का सम्बन्ध िास्त्ानुमोहदत वैष्णव-मत से था; हकन्तु िामानन्द अत्यन्त सहिष्णु तथा उदाि थे। उनका हृदय िातीय पूवाथग्रि तथा ब्राह्मणों ंकी वणथगत वरिष्ठता की ििाणा से सवथा मुक्त था। भगवान् िरि का प्रत्येक भक्त उनका प्रेमपात्र था। वे मानव िाहत की एकता के प्रहत आस्थावान् थे। उन्होंनें प्रत्येक िाहत, प्रत्येक मत तथा प्रत्येक वणथ के लोगों ंके हलए स्वगथ के िाि को उन्मुक्त कि हदया था। वे प्रत्येक व्यस्ट्क्त को प्रत्येक स्थान पि प्रहिहक्षत कि लेते थे। िामानन्द में रूहढ़वादी वैष्णव-मत की संकीणथता का अभाव था। एक बाि उनके गुरु िाघवानन्द से उनके वाद-हववाद में कटुता आ गयी हिसके फल-स्वरूप उन्हें उनका परित्याग किना पड़ा। िामानन्द ने किा- "हकसी को हकसी से उसकी या उसके सिबिीों की िाहत के सम्बन्ध में कुछ निीं ंपूछना चाहिए। यहद हकसी में भगवान् हवष्णु के प्रहत भस्ट्क्त-भाव िै, तो वि हवष्णु का कृपा-पात्र िो िाता िै।"

गौराङ्ग

िामानन्द ने अपने सत्संग में उच्च तथा हनम्न, सबको सम-भाव से देखा। उनके बािि हिष्यों ंमें तीन ब्राह्मण, एक मुसलमान, एक िुलािा, एक िािपूत, एक िाट, एक नाई, एक मोची तथा दो महिलाएँ थीं।ं ये बािि हिष्् थे-िुलािा कबीि, मोची िैदास, िािपूत िािा पीपा, िाट िािा, नाई सेना, ििीनीयानन्द, सुिसुिानन्द, भवानन्द तथा अनन्तानन्द। महिला हिष्यों ंके नाम थे-पद्मावती तथा सुिसरि।

पिा-भस्ट्क्त में पिमािा के प्रहत पूणथ प्रेम सहिहित िाता िै औि पिमािा के सभी दास एक-दूसिे के बन्धु िोते िैं-इन दो मूल हसद्धान्तों ंपि िामानन्द के हिष्् अत्यहिक बल देते िैं।

िामानन्द के हिष्यों ंमें से कबीि, सेना तथा िैदास ने अपने मतों ंकी अलग-अलग िाखाएँ स्थाहपत कि लीं।ं

ामिानन्द ने श्री िामानिु के वैष्णव-मत को ग्रिण हकया था; हकनुतु उनकी भस्ट्क्त िाम तथा सीता के प्रहत थी िो िन-मानस को अपेक्षाकृत अहिक प्रभाहवत किती थी।

इस सम्प्रदाय के दीक्षा नमः'। िामानन्दी हतलक िामानिु के अनुयाहययों ंके हतलकि–सा िी िोता ै। अन्ति केवल इतना ै हक भाल पि लम्बायमान िामानन्दी हतलक की िस्ट्क्तम िेखा आकृहत तथा लम्बाई में कुछ हभि एवं संकीणथ िोती ै। मन्त्र ै- 'श्री िाम' तथा 'ॐ िां िामाय

भाित के गांगेय परिक्ेषेत्र में िामानन्द के बहुसंख्य अनुयायी ैं। गंगा-यमुना के समस्त तटीय प्रदेि में वे बसे हुए ैं।

जन्म िथा वोंि

पहिम बंगाल में कलकत्ता से पचित्ति मील उत्ति में गंगा-तट पि स्ट्स्थत नवीप नगि िास्त्हवद् लोगों ंका नगि था। पस्ट्ण्डत िगिाथ हमश्र, हिनका उपनाम पुिन्दि हमश्र था औि िो वैहदक उपि–ाहत के एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण थे, हसलिट से प्रव्रहित िो कि नवीप नगि में आ बसे थे। िगिाथ हमश्र की पत्नी िचीदेवी कृतहवद्य नीलाम्बि चक्रवती की पुत्री थीं।ं वे एक िमथहनष्ठ महिला थीं।ं ४ फिविी १४८६ ई. की पूहणथमा की िाहत्र में उनको एक पुत्रि–त्न की प्रास्ट्प्त हुई।

नवाित िहुि का नाम हवश्वम्भि िखा गया। वि िगिाथ हमश्र तथा िची देवी की दिम सन्तान था। इसके पूवथ िन्म-ग्रिण किने वाली उनकी आठ कन्याओं ंका िन्म के पिात् तत्काल देिान्त िो गया था। नवम सन्तान हवश्वरूप पुत्र था। सोलि वषथ की आयु में िब उसे हवविा के हलए बाध्य हकया िा ििा था, वि गृि त्याग कि दहक्षण भाित के एक मठ में प्रहवष्ट िो गया। यि सोच कि हक िची की कई सन्तानें काल-कवहलत िो गमी, स्ट्स्त्यों ंने दुष्टािाओं ंसे त्राण के हलए हवश्वम्भि को हनमाई के नाम से अहभहित कि हदया (हनमाई िब्द नीम से वुयुत्पि ै)। उसके चमत्कारिक सौन्दयथ के किाण प्रहतवेिी उसे 'गौि' या 'गौि िरि' या 'गौिाङ्ग' कि किते थे। 'गौि' का अथथ ै सुन्दि तथा 'अंग' का अथथ ै ििीि। वे लोग उसे 'गौि िरि' कि किते थे; क्योंहंक िरि-नाम उसे इतना हप्रय था हक िैिवावस्था में िब वि िोने लगता था, तब उसे िान्त किने के हलए िरि-नाम की िी आवृहत्त किनी पड़ती थी।

बाल्यावस्था िथा अध्ययन

न्यायिास्त् के लब्ध-प्रहतष्ठ आचायथ वासुदेव सावथभौम की पाठिाला में गौिाङ्ग ने तकथिास्त् का अध्ययन हकया। उनकी अिसािाण मेिा ने उनकी औि 'दीहिहत' नामक तकथिास्त् के सुप्रहसद्ध ग्रन् के प्रणेता िघुनाथ का ध्यान आकहषथत हकया। िघुनाथ ने मनि–ी-मन सोचा हक वे (गौिाङ्ग) संसाि के सवाथहिक प्रहतभा-सम्पि युवक औि स्वयं अपने आचायथ सावथभौम से भी अहिक मेिावी ैं। िघुनाथ की मित्त्वाकांक्षा थी हक समस्त संसाि में वे हवित्ता में एक अग्रणी व्यस्ट्क्त के रूप में प्रख्यात िों;ं हकनुतु िब उन्होंनें देखा हक आयु में कहनष्ठ िोते हुए भी गौिाङ्ग उनसे अहिक

मेिावी एवं हविान् ैं, तब उनकी आिा क्षीण िोने लगी। वे भयभीत िो उठे। गौिाङ्ग उन हदनों ंन्यायिास्त् पि एक भाष्् की िचना कि ििे थे। इससे िघुनाथ औि अहिक िीि तथा उत्ेतेहित िो उठे। िघुनाथ को गौिाङ्ग के भाष्् को देखने की इच्छा हुई; हकनुतु इसके हलए गौिाङ्ग की अनुमहत के प्रहत वे आश्वस्त निीं ंथे। हफि भी, उन्होंनें गौिाङ्ग से न्यायिास्त् पि अपना भाष्् हदखाने की प्राथथना की। गौिाङ्ग ने उनके समक्ष अपने भाष्् के पाठ के सम्बन्ध में अपनी सिमहत व्यक्त कि दी। नौका िािा नदी पाि किते समय गौिाङ्ग ने िघुनाथ के समक्ष अपने भाष्् का पाठ हकया औि तब िघुनाथ इस हनष्कषथ पि पहुँचे हक गौिाङ्ग का भाष्् एक पास्ट्ण्डत्यपूणथ मौहलक हवविण था। संसाि में

न्याय के आचायथ के िीषथस्थ पद के ग्रिण के सम्बन्ध में उनकी िो आिाएँ थीं,ं वे ध्वस्त िो गयीं।ं वे फूट-फूट कि िोने लगे। गौिाङ्ग ने पूछा- "क्या बात िो गयी, बनुधु िघुनाथ ? आप िोते क्यों ंिैं? मैं आपको आश्वस्ट्स्त प्रदान करूँगा।"

घुिनाथ ने हनष्कपट भाव से किा- "बनुधु गौिाङ्ग! मेिी यि प्रबल मित्त्वाकांक्षा िै हक मैं समस्त संसाि में न्याय के आचायथ के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त करूूँ। इसी आशा में मैंने न्याय पि यि सोच कि एक ग्रन् हलखा िै हक इसके समक्ष प्रचहलत ग्रन् हनष्प्रभ िो िायेंगे; हकनुतु अब मेिी आशाओं का दुगथ ध्वस्त िो गया, क्योंहक तुम्हािी कृहत मेिी कृहत से श्रेष्ठति िै। यि संहक्षप्त, सुस्पष्ट तथा मौहलक िै। हनस्सनेिदे यि एक हवित्तापूणथ कृहत िै। मेिे िोने का यिी
किाण था।"
गौिाङ्ग के नेत्रों से अशु्रुपात िोने लगा। उन्होंनें िघुनाथ से किा- "इस मित्त्विीन बात पि िोने की कोई आवश्यकता निीं िै, मेिे बनुधु ! न्याय तो एक शुष्क दिथन िै। इससे मैं अहिक लाभास्ट्हत भी निीं िो पाऊँगा।" इतना कि कि उन्होंनें पाण्डुहलहप को नदी में फेंक हदया औि उसी क्षण से न्याय के अध्ययन का परित्याग भी कि हदया। गौिाङ्ग का हृदय हकतना उदाि, हकतना हविाल था! इस प्रकाि गौिाङ्ग का न्याय-ग्रन् संसाि से हवलुप्त िो गया औि घुिनाथ का 'दीहिहत' नामक ग्रन् न्याय के प्रथम प्रामाहणक ग्रन् के रूप में समादृत िोने लगा।

व्याकिण, तकथशास्त्, साहित्य, अलंकािशास्त्, दिथन तथा िमथशास्त्-संसूकृत-वाङ्मय की इन समस्त हवशाओं में गौिाङ्ग सुदक्ष थे। उनकी चमत्कारिक प्रहतभा का उत्तिोत्ति हवकास िोता गया। वे एक प्रचण्ड मेिा-सम्पन्न व्यस्ट्क्त थे। उन्होंनें स्वयं एक टोल अथाथत् पाठिाला की स्थापना की। तब उनकी आयु मात्र सोलि वषथ की थी औि टोल के प्रभािी आचायों में आयु की दृहष्ट से वे कहनष्ठतम थे।

गौिाङ्ग सदय, संवेदनिील, हनष्कलुष तथा भि थे। उनका हृदय मािुयथ तथा प्रेम से परिपूरित था। वे सहृदयता तथा सिानुभूहत की प्रहतमूहतथ थे। वे हनिथनों के सखा, सिचि तथा सेवक थे। वे उनको सदैव प्रसन्न िखते थे। उनके िीवन में कृहत्रमता के हलए कोई स्थान न था।

गौराङ्ग के डपिा की मरतुयु

गौिाङ्ग के हवद्याथीिीवन में िी उनके हपता का दिेान्त िो गया। इसके पश्चात् वल्लभाचायथ की पुत्री लक्ष्मी से उनका हववाि हुआ। पास्ट्ण्डत्य में उन्होंनें स्वयं को अनेक हविानों से श्रेष्ठति हसद्ध हकया। यिाँ तक हक उन्होंनें दूसिे प्रान्त के एक लब्ध-प्रहतष्ठ हविान् को भी पिास्त कि हदया। उन्होंनें बंगाल के पूवी अंचल की यात्रा की ििाँ उनको िमथ-हनष्ठ तथा उदाि-हृदय गृिस्थों की ओि से अनेक बहुमूल्य उपिाि प्राप्त हुए। ििाँ से लौटने पि उनको ज्ञात हुआ हक उनकी अनुपस्ट्स्थहत में सपथ दंि के किाण उनकी पत्नी का दिेान्त िो गया था। तत्पश्चात् उनका हववाि हवष्णुहप्रया से हुआ। वे अध्यापन के साथ-साथ अपने हिष्यों का मागथदिथन भी किते थे। उन्हें अपने प्रकाण्ड पास्ट्ण्डत्य का अिंकाि िो गया था।

गौराङ्ग के जीवन का एक सोंक्रान्ति काल

१५०९ ई. में गौिाङ्ग ने अपने सिचिों के साथ गया की तीथथ-यात्रा की। विाँ उन्होंनें माध्व-सम्प्रदाय के संन्यासी ईश्वि पुिी के दिथन हकये औि उनको अपना गुरु मान हलया। यिीं से उनके िीवन में एक चमत्कारिक रूपान्तिण का श्रीगणेि िोने लगा। वे भगवान् कृष्ण के उपासक िो गये। उनमें हवित्ता का िो अिंकाि था, वि पूणथतः हवनष्ट िो गया। वे उच्च स्वि में बोल उठे- "कृष्ण ! कृष्ण ! ििि बोल, ििि बोल।" कृष्ण-प्रेमिहनत आनन्द के अहतिेक में वे िँसने, िोने, उछलने-कूदने तथा नृत्य किने लगते थे। िब वे इस प्रकाि के भावावेि में िोते थे, तब उनके हलए अन्न-िल ग्रिण किना सम्भव निीं िो पाता था।

गौिाङ्ग भगवान् कृष्ण के चिण-हचह्नों के दिथन के हलए गदािि-मस्ट्न्दि गये। वे उन चिण-हचह्नों के समक्ष एक प्रहतमा की भाँहत हनश्चल खड़े िो गये। वे पूणथतः ध्यानावस्ट्स्थत िो गये। उनके नेत्रों से अहविाम अशु्रु-वषथण िोने लगा हिससे

उनके वस्त् अशु्रु से आप्लाहवत ि◌ो गये। वे र्ि◌ि◌ायी ि◌ोने ि◌ी वाले थे हक ईश्वि पुिी ने आगे बढ़ कि उन्हें साँभाल हलया। र्ि◌ीिे–ि◌ी उनकी चेतना ि◌ाग्रत ि◌ो पायी। उन्होंनें ईश्वि पुिी से किा- "ि◌े श्रद्धेय गुरुदेव, मुझ पि दया कि मुझे संसाि-कहलल से मुक्त कीहिए औि कृष्ण के प्रहत ि◌ि◌ा के प्रेम के ि◌ि◌स्य को मेिे समक्ष अनावृत कीहिए। भगवान् कृष्ण के प्रहत मुझमें हविुद्ध प्रेम का हवकास ि◌ो औि मैं कृष्ण-प्रेमि–स का अमृत-पान किता ि◌हाँ।"

तत्पिात् ईश्वि पुिी ने उन्हें भगवान् कृष्ण के दिाक्षि-मन्त्र की दीक्षा दी। इसके फल-स्वरूप गौिाङ्ग के हृदय में पूवथ िाग का उदय हुआ। वे सवथदा ध्यान में लीन ि◌िने लगे। उनको अि ग्रिण का स्मिण भी निीं ि◌ो पाता था औि उनके नेत्रों से अशु्रु झिते ि◌िते थे। कभी-कभी वे संज्ञािून्य भी ि◌ो िाते थे औि संज्ञस्त ि◌ोने पि पुनः पुनः किने लगते थे- "ि◌े भगवान् कृष्ण, ि◌े मेिे हपता, तुम किाँ ि◌ो ? मैं तुम्हािे हबना िीहवत निीं ि◌ि सकता। तुम मेिे एकमात्र आश्रय औि आश्वासक ि◌ो। यथाथथतः तुम्हीं मेिे हपता, तुम्हीं मेिी माता, तुम्हीं मेिे सखा, तुम्हीं मेिे सम्बन्धी तथा तुम्हीं मेिे गुरु ि◌ो। तुम अपने स्वरूप को मेिे समक्ष सवथदा प्रकट किते िि◌ो।" गौिाङ्ग कभी-कभी रिक्त नेत्रों से एकटक देखते ि◌िते औि कभी-कभी ध्यान मुद्रा में बैठ िाते। वे अपने मौन अशु्रु-कणों को अपने सिचिों से गुप्त ि◌ी ि◌खना चािते थे। कभी-कभी उनको अपने प्रहतवेि का भी ज्ञान निीं ि◌ि िाता था। गौिाङ्ग वृन्दावन िाना चािते थे; हकन्तु उनके सिचि उनको बलात् नवद्वीप लौटा लाये।

डनिाई

हनताई का नाम हनत्यानन्द था। िन्म से वे ब्राह्मण थे। बािि वषथ की अल्पायु से ि◌ी वे तपस्वी–िीवन व्यतीत किने लगे थे। वे कृष्ण की खोि में इतस्ततः भ्रमण हकया किते थे। गौिाङ्ग उनको अपने घि ले आये औि अपनी माता से उनका परिचय किाते हुए किा- "ि◌े माता, यि तुम्हािा एक अन्य पुत्र ि◌ै ि◌ो मेिा अग्रि ि◌ै। तुम अपने हिस हवश्वरूप से वंहचत ि◌ो गयी थी, वि तुम्हािे पास पुनः लौट आया ि◌ै। इसे तुम अपना हवश्वरूप ि◌ी समझो।" िची ने हनताई से किा- "यिाँ आओ, पुत्र ! तुम अपने अनुि का ध्यान ि◌खो औि उसकी िक्षा किो। वि अपने प्रहत उदासीन तथा अबोि ि◌ै। मुझे अब उसकी हचन्ता किने की कोई आवश्यकता निीं ि◌ै। बैठ िाओ औि प्रसन्न मन से भोिन किो।"

हनत्यानन्द ने अनेक स्थानों पि संकीतथन का आयोिन हकया औि नवद्वीप िरि-नाम की प्रहतध्वहन से गूंि उठा। हनताई सािी िात ि◌ि◌ा तथा कृष्ण का गुण-गान किते ि◌िते। प्रायः ि◌हमथक िोभा यात्राओं का आयोिन हुआ किता था हिनमें गौिाङ्ग तथा हनत्यानन्द के नेतृत्व में भक्तिन नाचते-गाते चलते थे या घिों के प्रांगण में एकत्र हुआ किते थे।

गौिाङ्ग प्रेम की प्रहतमूहतथ थे। वे सवाांगतः प्रेम में समाहित थे। वसुतुतः उनका अस्स्तत्व प्रेम का पयाथय बन चुका था। उनकी वाणी प्रेममयी थी; उनके प्रेम की िस्ट्श्मयाँ सब पि हवकीणथ हुआ किती थीं। उनके स्पिथ में चुम्बकीय िस्ट्क्त थी। उनके गीत, उनके श्वास-प्रश्वास तथा उनका व्रिन - यि सभी कुछ प्रेम ि◌ि◌ा सुफुरित था। उनका अध्यापन हनयमों तथा हनदेिों के माध्यम से कम तथा दृष्टान्तों के माध्यम से अहिक ि◌ोता था। "तुम्हें भस्ट्क्त का आिीवाथद प्राप्त ि◌ोगा." उनके ये िब्द ि◌ी हकसी व्यस्ट्क्त को समाहिस्थ तथा उसके हृदय को प्रेम-पूरित किने के हलए पयाथप्त थे। ऐसी थी गौिाङ्ग की िस्ट्क्त।

िब गौिाङ्ग हकसी मागथ से हनकलते थे, तब उनके प्रेम-प्रवाि से सिस्र-सिस्र िन प्रभाहवत एवं अहभभूत ि◌ो उठते औि हबना हकसी हवघ्न-बािा के आनन्दाहतिेक में नृत्य किने लगते थे।

गौराङ्ग का सोंन्यास-ग्रहण

कृतहवद्य तथा पिम्पिा-हनष्ठा लोग गौिाङ्ग से घृणा तथा उनका हिविो किने लगे; हकनुतु गौिाङ्ग अहवचहलत ििे। उन्होंनें कुछ िी लोगों ंका मत-परिवतथन हकया था। उन्होंनें इन लोगों ंकी मुस्ट्क्त के हलए संन्यास-ग्रिण का हनिय हकया। उन्होंनें मनिी-मन सोचा- "इन दम्भी पस्ट्ण्डतों ंतथा पिम्पिा-हनष्ठ गृिस्थों ंकी मुस्ट्क्त के हलए मैं कृत-संकल्प हाँ; अतः मिे हलए संन्यास-ग्रिण अत्यावश्यक िै। मिे संन्यास-ग्रिण के पिात् ये लोग मुझे देख कि प्रणाम किेंगे हिसके फल-स्वरूप ये लोग पहवत्र िो िायेंगे तथा इनका हृदय भस्ट्क्त-भाव से परिपूरित िो उठेगा। इन लोगों ंके हलए मुस्ट्क्त-प्रास्ट्प्त का अन्य कोई मागथ निीं िै।"

अतः चौबीस वषथ की आयु में गौिाङ्ग ने स्वामी केिव भािती से संन्यास-दीक्षा ले ली औि उनको कृष्ण चैतन्य के नाम से अहभहित हकया गया। संक्षेप में उन्हें चैतन्य किा िाता था। उनके संन्यास-ग्रिण से उनकी कोमल-हृदया माता िोकातथ िो उठीं; हकनुतु चैतन्य ने उन्हें प्रत्येक सम्भव उपाय से सान्त्वना प्रदान की। वे उनकी इच्छाओं ंका पालन किते ििे।

चैतन्य पूणथतः हविक्त थे। उन्होंनें ऐस्ट्रिय सुखों ंका हवष की भााँहत परित्याग कि हदया था। वे संन्यास की आचाि संहिता का कठोितापूवथक पालन किते थे। उन्होंनें उत्कल-निेि िािा प्रताप रुि से भेंट किने में अपनी असिमहत व्यक्त कि दी; क्योंहक संन्यासी के हलए िािा का दिथन घोि पाप िोता िै। यि स्त्री-दिथन के पाप के समकक्ष िोता िै। यहद कोई संन्यासी हकसी िािा को देख लेगा, तो वि िीिे-िीिे उसके प्रहत आसक्त िोने लगेगा। िैसा हक अनुकिण मन का िमथ िै. वि हवलाहसता का िीवन व्यतीत किने लगेगा हिसके फल-स्वरूप अन्ततः उसका पतन सुहनहित िो िायेगा। इसी कािण संन्यासी के हलए िािा का दिथन वहिथत िै। गौिाङ्ग की दृहष्ट-परिहि में हकसी िमणी का मुख-मण्डल कभी निीं आ पाया। उन्होंनें हकसी भी स्त्री को अपने समीप आने की अनुमहत निीं दी। वे नग्न-िििी से भूहम पि ियन किते थे।

गौिाङ्ग एक मिान् वैष्णव उपदेिक थे। उन्होंनें वैष्णव-मत तथा उसके िाहमथक हसद्धान्तों ंका दूि-दूि तक प्रचाि-प्रसाि हकया। हनत्यानन्द, सनातन, रूप, स्वरूप, दामोदि, अिैताचायथ, श्रीवास, ििीदास, मुिािी, गदािि तथा अन्य लोगों ंने चैतन्य के िमथ-प्रचाि में उनको सियोग प्रदान हकया।

जगाई िथा मधाई का मिान्तरण

गिाई औि मिाई इहतिास के पृष्ठों ंपि अब तक अंहकत पाहपयों ंतथा अपिािी-कहमथयों ंमें हनकृष्टतम थे। वे भाई-भाई थे। वे नवद्वीप के कोतवाल थे िो समृद्ध लोगों ंको लूटते, स्ट्स्त्यों ंका सतीत्व भंग किते औि नगण्य बातों ंपि भी
उत्तेहित िो कि लोगों ंकी ित्या कि देते थे। ििती पि ऐसा कोई िघन्य अपिाि निीं ंथा हिसे उन दो भाइयों ंने निीं ं
हकया िो। चैतन्य ने दोनों भाइयों के उद्धाि का उत्तिदाहयत्व ग्रिण हकया। चैतन्य ने अपने भक्तों ंके समक्ष कीतथन किते हुए िगाई औि मिाई के हिहवि में िाने तथा विााँ िा कि उन दोनों ंको िरि-नाम की दीक्षा देने का प्रस्ताव प्रसुतुत हकया।

चैतन्य औि उनके भक्तों ंने स्ट्िक पि आ कि संकीतथन प्रािम्भ कि हदया। संकीतथन-दल का नेतृत्व हनताई के िाथों ं में था। वे दल को िगाई तथा मिाई के हिहवि में ले गये। विााँ अब उनके सिुख दोनों ंभाई खड़े थे। हनताई ने किा- "हप्रय बनुधुओ, कृपया आप लोग अब कृष्ण का नाम लीहिए औि उनकी सेवा कीहिए; क्योंहक वे सवोच्च स्वामी िैं।" इस उपदेि से मिाई, िो िगाई से अहिक िस्ट्क्तिाली था, उत्तेहित िो उठा। उसने एक भि मृहत्तका-पात्र के ििोभाग को हनताई के ऊपि फेंका हिससे उनके ललाट में गिंभीि घाव िो गया औि विााँ से िक्त की िािा बिने लगी। इसे िोकने के हलए हनताई ने ललाट के आित भाग को अपने दोनों ंिाथों ंसे दबा हलया। मिाई ने हनताई के

ीहि पि एक बाि जोि ीप्रहाि किना चाहा; हकन्तु िगाई ने उसे पकड़ि कि उससे उलाना-भिे िब्दों ंमें का- "रुक जाओ, मिाई। तुम अत्यन्त हनमथम िो। एक संन्यासी की ित्या से क्या लाभ ! यि तुम्हािे हलए उहचत नहीं ंिोगा।"

कीतथन-दल के पीछे चल ििे गौड़ाङ्ग को सूहचत हकया गया हक िगाई जोि मिाई हनताई की ित्या कि ििे िैं। गौड़ाङ्ग ीघ्र िी उस स्थान पि पहुँचे ििााँ जोि हनताई खड़े थे। िक्त स्राव को िोकने के हलए उन्होंनें हनताई के ललाट को अपने वस्त् से आच्छाहदत कि हदया। मिाई ने िब हनताई पि दूसिा ीप्रहाि किना चाहा था, तब िगाई ने उसे िोक हलया था; अतः गौड़ाङ्ग ने िगाई को अपने आहलङ्गन में आबद्ध कि हलया। िगाई जोि-हवसूमृत िो कि भूहम पि हगि पड़ा। मिाई िदता था जोि उसकी वाणी कुस्ट्ण्ठत िो गयी थी। उसने उन्हें साष्टांग प्रणाम किते हुए का- "िे स्वामी, मैं घोि पापी हाँ। मुझ पि दया कीहिए।" गौड़ाङ्ग ने मिाई को हनताई के पास िा कि उनसे क्षमा-याचना किने के हलए का। मिाई ने हनताई से क्षमा-याचना की जोि हनताई ने क्षमा कि उसे आहलंहगत कि हलया। अपने भाई की भााँहत मिाई भी जोि-हवसूमृत िो कि ििािायी िो गया।

इसके पिात् वे पहवत्र-हृदय सन्त िो गये। इसके पूवथ वे अपनी क्रूरता के हलए हितने अहिक घृहणत तथा भयप्रद समझे िाते थे, अब वे उतने िी अहिक िनहप्रय िो गये। वे आत्यस्ट्न्तक हवनम्रतापूवथक घुटनों ंके बल चलते हुए नदी-तट की जोि िाने वाले प्रत्येक स्नानाथी की भृत्योहचत सेवा के हलए तत्पि ििने लगे जोि इस प्रकाि उन्होंनें अतीत में हकये गये अपने कुकृत्यों ंके हलए प्रायहित्त कि हलया। उन्होंनें स्वयं अपने िाथों ंमें फावड़ा ले कि एक घाट का हनमाथण हकया िो नवीप में जोि भी 'मिाई-घाट' के नाम से प्रहसद्ध िै।

धोबी से वाताथलाप

एक हदन गौड़ाङ्ग अपने हिचों ंके साथ एक िोबी के यिााँ पहुँचे िो एक काष्ठ-पहिका पि वस्त्-प्रक्षालन कि िा था। उन्होंनें उससे 'िरि बोल' किने के हलए का। िोबी ने सोचा हक यि हभकुषुक उससे हभक्षा-ग्रिण किने आया िै। उसने गौड़ाङ्ग से का- "िे हभकुषुक, मैं हनतान्त हनिथन हाँ। मेिे पास आपको देने के हलए कुछ भी नहीं ंिै।" गौड़ाङ्ग ने का- "मैं तुमसे कुछ भी नहीं ंचािता। केवल तुम कम-से-कम एक बाि 'िरि बोल' कि दो।" हकन्तु िोबी सिमत नहीं ंिो सका।

उसने सोचा हक उसे हभकुषुक को कुछ देना िोगा। उसने का- "मैं अत्यन्त हनिथन हाँ। आपने मुझसे हिस नाम के उच्चािण का अनुिोि हकया िै, उसके हलए मैं वस्त्-प्रक्षालन का कायथ स्थहगत नहीं ंकि सकता।" गौड़ाङ्ग ने का- "मैं तुम्हािा यि कायथ स्वयं हकये देता हाँ। तुम केवल 'िरि बोल' कि दो।" िोबी ने का- "िरि बोल।" तब गौड़ाङ्ग ने उससे इन दो िब्दों ंकी दो बाि पुनिावृहत्त किने को का। िोबी ने ऐसा िी हकया। इसके पिात् िीघ्र िी उसके हृदय में भस्ट्क्त की ज्वाला प्रज्वहलत िो उठी जोि वि हबना हकसी अनुिोि के िी 'िरि-नाम' की िट लगाने लगा। इतना िी नहीं,ं वि दोनों ंिाथ ऊपि उठा कि नृत्य भी किने लगा।

िोबी की पत्नी िब उसके हलए भोिन ले कि आयी, तब उसने देखा हक उसका पहत दोनों ंिाथ ऊपि उठा कि 'िरि बोल, िरि बोल' किते हुए नृत्य कि िा िै। उसने इस बात पि हविेष ध्यान हदया हक वि अपने परिवेि से पूणथतः अनहभज्ञ िो चुका िै। उसने उसे उच्च स्वि से पुकाि कि उसकी चेतना को िाग्रत किना चाहा; हकन्तु उसका प्रयत्न हनष्फल िा। वि भयभीत िो उठी। गााँव में िा कि उसने अपने सम्बस्ट्न्धयों ंतथा पड़ोहसयों ंसे का- "मेिा पहत प्रेताहवष्ट िो गया िै। कृपया, आप लोग उसे प्रेत-बािा से मुक्त किने में मेिी सिायता कीहिए।" वे लोग िोबी को देखने के हलए िीघ्र िी विााँ िा पहुँचे। वि उस समय भी आनन्दाहतिेक में नृत्य हकये िा िा था। उसके हनकट िाने में लोगों ंको भय िो िा था। अन्ततः एक सािसी व्यस्ट्क्त ने उसे पकड़ि कि नृत्य से हवित किना चाहा; हकन्तु 'िरि बोल' के 'संक्रामक िोग' से ग्रस्त िो कि वि भी 'िरि बोल' की िट लगाते हुए नृत्य किने लगा। िब उसने दिथकों ंको आहलंगन में आबद्ध हकया, तब वे लोग भी इस 'संक्रामक िोग' से ग्रस्त िो कि िषाथहतिेक में नृत्य किने

लगे। गााँव के सभी लोग इससे प्रभाहवत हुए। इस नृत्य का कुछ दि तक िसास्वादन किते िने के पित् गौिाङ्ग विाँ से चले गये।

िथिक-यात्रा

अपने सखा हनत्यानन्द के साथ चैतन्य ने उत्कल की ओि प्रस्थान हकया। वे ििााँ-ििााँ गये, विाँ-विाँ उन्होंनें वैष्णव-मिथ का उपदेि हदया। इसके अहतरिक्त उन स्थानों िपि उन्होंनें संकीतथन का भी आयोिन हकया। उनके प्रहत सिस्रों लोग आकहषथत हुए। पुिी में कुछ समय रुकने के पित् वे दहक्षण की ओि चल पड़े। ििाँ उन्होंनें हतरुपहत की पिाहड़यों, कांचीपुिम् तथा कावेिी-तट पि स्स्थत हवख्यात श्रीिंगम् की यात्रा की। श्रीिंगम् से वे मदुिै, िामेश्विम् औि कन्याकुमािी गये। इसके अहतरिक्त उन्होंनें उडुपी, पण्ढिपुि तथा नाहसक की भी यात्रा की। तत्पित् वे वृन्दावन गये। विाँ उन्होंनें यमुन तथा कुछ पहवत्र सिोविों में स्नान कि विाँ के अनेक मस्न्दिों में पूिन-अचथन हकया। उन्होंनें मस्न्दिों में प्राथथना की तथा हृदय की आत्यस्न्तक तुहष्ट-पयथन् वे नृत्य किते ििे। वे अपनी िन्म-भूहम नवद्वीप में भी गये। अन्ततः वे पुिी लौट कि विीं बस गये। उन्होंनें अपने िीवन का िेषांि केवल पुिी में व्यतीत हकया। उनके हिष्य तथा प्रिंसक उनके प्रहत अपनी श्रद्धा अहपथत किने के हलए बंगाल, वृन्दावन तथा अन्य अनेक स्थानों से पुिी आते िते थे। गौिाङ्ग के कीतथन तथा िाहमथक प्रवचन के कायथक्रम प्रहतहदन चलते थे।

पुरी में चमत्कार

पुिी में एक चमत्काि िो गया। एक हदन िथ-यात्रा के मिोत्सव के समय िगन्नाथ का िथ गहत-िून्य िो गया। समस्त तीथथ-याहत्रयों की समवेत िस्क्त भी उसके अग्रसिण में हवफल हसद्ध िुई। सभी लोग हकंकतथव्यहवमूढ़ थे। उसी समय विाँ गौिाङ्ग का आगमन हुआ। उन्होंनें अपने हिि से िथ को िक्का हदया औि िथ तत्काल गहतमान िो गया। सभी तीथथ-याहत्रयों तथा भक्तों के ििि बोल' स्वि से आकाि गूंि उठा।

सावकभौम का मिन्तरण

सावथभौम भट्टाचायथ एक मिान् वेदान्ती हवद्वान थे। एक बाि चैतन्य आनन्दाहतिेक की मुद्रा में िगन्नाथ-मस्न्दि में गये। वे हवग्रि का आहलंगन किने के हलए तीव्र गहत से आगे बढे: हकन्तु गिन अचेतनावस्था में वे भूहम पि हगि पड़े। पिििी उन पि प्रिाि किने िी वाला था हक उत्कल-निेि के अमात्य कृतहवद्य पस्ण्डत्य सावथभौम भट्टाचायथ विाँ आ गये औि चैतन्य को उठा कि अपने घि ले गये। उनके हवद्याहथथयों ने गौिाङ्ग को कन्धों पि उठा कि घि के एक स्वच्छ स्थान पि िख हदया। भक्तों ने गौिाङ्ग के कानों में उच्च स्वि में िरि-नाम का उद्घोष हकया हिससे उनकी चेतना पुनः लौट आयी।

सावथभौम ने सोचा हक गौिाङ्ग मनोहवकाि-ग्रस्त तथा वेदान्त-ज्ञान-िून्य एक युवा व्यस्क्त िैं। कीतथन तथा नृत्य के प्रहत वे हविक्त थे। उन्होंनें गौिाङ्ग को पुनः दीहक्षत किना चािा। गौिाङ्ग उनका प्रवचन कई हदनों तक हवनम्र भाव से सुनते ििे। सावथभौम ने हनम्नांहकत श्लोक की नौ हवहभन्न हवहियों से व्याख्या की। इसके पित् चैतन्य ने संस्कृत में अपनी दक्षता का प्रदिथन किते हुए उसी श्लोक की व्याख्या इकसठ हवहभन्न हवहियों से कि दी। सावथभौम इसे सुन कि स्तब्ध िि गये। श्लोक िै :

आत्मारामाश्च मुनयो डनग्रकन्था अप्युरुिमे ।
कुवकन्त्यहैतुकी ोंभक्तिडमत्थोंभूिगुणो हररिः ।।

"िरि के गुण इतने मिनीो िैं हक हनग्रथन् (माया या िास्त्रीय हनषेिादेिं ंसे असमूपृक्त िोते हुए भी िआिाम योगी ध्यानस्थ तथा उनके प्रहत आकहषथत िो कि उरुक्रम िरि की हनस्स्स्वाथथ सेवा तथा भस्ट्क्त में तल्लीन िो िाते िैं।"

सावथभौम में न भस्ट्क्त थी, न उनको आि-साक्षात्कारि िी िो पाया था। वे एक िुष्क हविान् मात्र थे। मिान् हविान् िोते हुए भी गौिाङ्ग हवनम्र थे। दसिों ंकी भावनाओं ंको आित किने वाली बातों ंसे उनका कभी कोई सम्बन्ध निीं ं िि। वाद-हववाद में हकसी को पिास्त किने के पिात् वे िषथ-हवह्वल निीं ंिो िाते थे। अन्ततोगत्वा गौिाङ्ग ने सावथभौम की एक-एक युस्ट्क्त का खण्डन किते हुए उनको वैष्णव-मत के प्रहत आस्थावान् बना हदया। गौिाङ्ग ने उन्हें आहलंहगत कि हलया अिौ हदव्यानन्द के आहिक्य के किाण सावथभौम संज्ञा–िून्य िो गये। तत्पिात् वे उठ कि नृत्य किने लगे। गौिाङ्ग को साष्टांग प्रणाम किते हुए उन्होंनें किा- "श्रद्धेय गुरुदेव, तकथिास्त् ने मेि हृदय को लौिवत् कठोि बना हदया था अिौ मैं भस्ट्क्त से पूणथतः वंहचत था; हकन्तु अब मुझमें भस्ट्क्त–िस का उिेक िोने लगा िै। िे अपाि िस्ट्क्त-सम्पि प्रभु, मैं आपको प्रणाम किता हाँ।"

वि अिैतमतावलस्ट्म्बयों ंका प्रमुख िो या वैष्णवों ंका आचायथ िो, भगवान् गौिाङ्ग की सभा में िो कोई भी आया, उन्होंनें उसका मतान्तिण कि उसे अपने मत में दीहक्षत कि हलया। वािाणसी के अिैताचायथ प्रकािानन्द को भी उन्होंनें दीहक्षत हकया। गौि-िाि के अमात्यों ंतथा िािा को भी उनके समक्ष अवनत-िीि िोना पिा। उत्कल-िाि गौिाङ्ग के उत्कट एवं हनष्ठावान् हिष्य् िो गये अिौ उनको भगवान् कृष्ण का अवताि मानने लगे।

कुष्ठरोगीकाउपचार

वासुदेव एक हवनम्र, िमथहनष्ठ तथा सौम्य प्रकृहत का ब्राह्मण था। वि घृहणत िोग कुष्ठ से पीहित था। अपने िीिि से उत्सहिथत घृणास्पद दुगथन्ध के किाण वि अपने हमत्रों ंतथा सम्बस्ट्न्धयों ंसे हवलग ििने को हववि था। उसके घाव से

िी कीटाणु हििा हनकलते थे. वि उन्हें पूनः उनके स्थान पि िख देता था। समदिी वासुदेव का हृदय करुणा से ओत-प्रोत था। उसका हवचािा या हक प्रत्येक िीहवत प्राणी को िीहवत ििने का समान अहिकाि िै अिौ हकसी को भी

उसे उसके खाद्य-पदाथथ से वंहचत किने का कोई अहिकाि निीं ंिै। यि एक कोमल हृदय की हकतनी सुतुत्य उहक्तता िै!

वासुदेव कूमथ-मस्ट्न्दि के प्रहतवेि में िी ििता था। एक िात उसे कूमथ-मस्ट्न्दि में चैतन्य के आगमन की सूचना प्राप्त हुई। दूसिे हदन प्रातःकाल वि उनके दिथन के हलए मस्ट्न्दि में गया; हकन्तु विााँ यि सुन कि हक वे विााँ से एक घण्टा पिले िी िा चुके थे. वि दुःख तथा नैिाश्य के किाण यि किते िुए मूस्ट्च्छत िो कि हगि पिा- "िे भगवान् कृष्ण, क्या तुमने मुझे हवसूमृत कि हदया?" चैतन्य अिि से िी किीं ंिा ििे थे। वासुदेव का क्रन्दन सुन कि वि मस्ट्न्दि की अिौ तीव्र गहत से चल पिे। उन्होंनें कुष्ठ िोगी को अंक में भि कि उसे अपने आहलंगन-पाि में आबद्ध कि हलया। िीघ्र िी वि िोगी कुष्ठ-मुक्त िो कि स्वस्थ-सुन्दि िो गया। उसने किा- "िे भगवान्! आपने मुझे आहलंहगत हकया, िब हक अन्य सभी लोग मेिे हवक्षत िीिि को देख कि मुझसे दूि चले िाते थे। मैं यिााँ आपके प्रहत अपना सिान प्रकट किने तथा आपके कमलवत् चिणों ंके दिथन के हलए आया था। हनहित रूप से मैं यिााँ िोगमुक्त िोने के हलए निीं ंआया था। इस घृहणत व्याहि से मैंने हवनम्रता, करुणा तथा हनिन्ति िरि-नाम-स्मिण का पाठ ग्रिण हकया िै; हकन्तु यि स्वस्थ िीिि मुझमें पुनः अिंकाि तथा आि-प्रदिथन की सृहष्ट कि देगा अिौ मैं प्रभु को हवसूमृत कि दूाँगा।”

चैतन्य ने उसे सान्फ्त्वना प्रदान किते हुए किा- वासुदेव, तुम पि भगवान् कृष्ण की कृपा िै। तुममें अब हमर्थ्ाहभमान का प्रवेि कभी निीं ंिो सकेगा। तुम्हािी हवन्रमता तथा प्राहणमात्र यिााँ तक हक तुम्हािा िक्त–िोषण किने वाले कीटाणुओं ंके प्रहत भी तुम्हािी करुणा के किाण भगवान् कृष्ण ने तुम्हें अपना हलया िै। तुम उनके नाम की िट लगाते िुए अन्य लोगों ंको भी उनके नाम स्मिण के हलए उत्प्रेरित किते िुए उनकी मुस्ट्क्त का माध्यम बनो।"

श्ीवास के डनवास-स्थान पर कीकन

श्रीवास गौिाङ्ग के हनष्कपट भक्त थे। प्रथम कीतथन-दल का हनमाथण श्रीवास के घि के प्रांगण में िी हुआ था। कीतथन अहिकति विीं ंहुआ किता था। श्रीवास के पौत्र ने 'चैतन्य-भागवत' की िचना अपने घि में की थी।

एक िात श्रीवास के घि में भव्य कीतथन हुआ। गौिाङ्ग तथा भक्तिन िषाथहतिेक में नृत्य कि ििे थे। उसी समय प्रांगण में एक दासी का प्रवेि हुआ हिसने सांकेहतक रूप से श्रीवास को अपना अनुगमन किने के हलए किा। श्रीवास कीतथन छोड़ कि घि के भीति चले गये। उनका एकमात्र पुत्र हवसूहचका िोग से गम्भीि रूप से ग्रस्त िो गया था। श्रीवास ने देखा हक मृत्यु उनके पुत्र के उत्तिोत्ति हनकट चली आ ििी िै औि उसकी माता िो ििी िै। श्रीवास ने उससे किा- "िोने की कोई आवश्यकता निीं।ं इससे िमािे प्रभु के आनन्द में व्यहतिेक उपस्स्थत िोगा। यि िमािे हलए पिम सौभाग्य की बात िै हक िब िमािे पुत्र का प्राणान्त िो ििा िै, तब िमािे घि में िरि-कीतथन िो ििा िै।" कुछ िी क्षणों ंमें बालक की आत्मा ने ििीि का परित्याग कि हदया। श्रीवास कीतथन में पुनः सस्म्महलत िो गये औि आनन्दाहतिेक में नृत्य किने लगे। अपने पुत्र की मृत्यु से वे पूणथतः अप्रभाहवत थे; हकन्तु इस दुःखद घटना को अहिक देि तक गुप्त निीं ंिखा िा सकता था। हकसी िीहत कीतथन किने वाला एक व्यस्क्त इस घटना से अवगत िो गया। उसने कीतथन बन्द कि हदया। िब इसकी सूचना कीतथन-दल के एक अन्य सदस्य को प्राप्त हुई, तब वि भी कीतथन-दल से हवलग िो कि श्रीवास की मनोदिा से परिहचत िोने का प्रयत्न किने लगा। िीिे-िीिे कीतथन में पूणथ हविाम लग गया। गौिाङ्ग ने भी कीतथन छोड़ कि पूछा- "यि कैसी बात िै हक आि मुझे आनन्दानुभूहत निीं ंिो ििी िै? क्या आि कोई गम्भीि बात िो गयी िै?" उन्होंनें श्रीवास पि दुःखी िदय से दृहष्टपात हकया।

श्रीवास ने उत्ति हदया- "िब प्रभू मेिे घि में कीतथन कि ििे िैं, तब मैं संकट-ग्रस्त कैसे िो सकता िूँ? एक अन्य भक्त ने किा- मेिे प्रभु, यि सच िै हक एक मिाहवपहत्त आ गयी िै। पस्ण्डत श्रीवास के पुत्र का देिान्त िो गया िै।" चैतन्य ने किा- "क्या इसके पुत्र की मृत्यु िो गयी? कब हुई मृत्यु ?" भक्त ने उत्ति हदया- "इसकी मृत्यु छि-सात घण्े पूवथ हुई थी।" चैतन्य के नेत्रों ंसे अश्रु-वषाथ िोने लगी। उन्होंनें श्रीवास से किा- "तुम बालक को मेिे पास ले आओ।" बालक का मृत ििीि प्रांगण में गौिाङ्ग के सम्मुख िख हदया गया। गौिाङ्ग ने मृत बालक को सम्बोहित किते हुए उसे बोलने का आदेि हदया। बालक ने किा- "मैं एक उत्तम योहन की प्रास्प्त के हलए इस ििीि का त्याग कि ििा हँ। िे स्वामी, क्या मेिी आत्मा आपके चिण-कमलों ंसे हलपट सकती िै?" इसके पश्चात् बालक की आत्मा ने पुनः ििीि का परित्याग कि हदया। तत्पश्चात् गौिाङ्ग ने श्रीवास तथा उसकी पत्नी माहलनी से किा- "अब मैं तथा हनत्यानन्द तुम्हािे मृत पुत्र का स्थान ग्रिण किेंगे। िोक तथा हचन्ता मत किो।" गौिाङ्ग का हृदय हकतना हविाल तथा सिानुभूहतपूणथ था।

षड्-भुज ईश्वर

चैतन्य के अनुयायी उनको षड्-भुि ईश्वि मानते िैं। किा िाता िै हक उन्होंनें सावथभौम, िामानन्द िाय तथा हनताई के समक्ष अपना िो रूप प्रस्तुत हकया था, उसकी छि भुिाएँ थीं।ं इन छि भुिाओं ंमें से प्रथम दो में िनुष-बाण, हितीय दो में बंिी उठने के हलए तत्पि वंिी तथा तृतीय दो में दण्ड-कमण्डल थे। चैतन्य ने अहभव्यस्क्त के इस माध्यम िािा हनताई को यि बताया हक वे िाम औि कृष्ण दोनों ंिैं।

समुद्र में छलाँग

एक बाि िब गौिाङ्ग के हृदय में भस्क्त-िस का आत्यस्न्तक उद्रेक हुआ, समझ हलया था औि उनकी इच्छा वृन्दावन की गोहपयों ंके िास में सस्म्महलत तब वे पुिी के नीले सागि में कूद गये। उन्होंनें नीले सागि को नीलवणी यमुना िोने

की िई थी। हनिन्ति उपवास तथा िागिण के किाण वे अत्यन्त कृिकाय िो चले थे। अतः वे िल के ऊपि उतिाते-उतिाते िए िीवि के िाल में आबद्ध िो गये। िाल को भािी देख कि िीवि अत्यन्त िहषथत हुआ। उसने सोचा हक उसने एक हविालकाय मत्स्य को पकि हलया िै। बहुत कहठनाई से वि िाल को समुि तट तक खींचं सका औि उसने देखा हक उसके िाल में हविालकाय मत्स्य के स्थान पि मानव का मृत ििीि पिा िै। उस मृत ििीि से कुछ असुफुट स्वि बािि आये औि िीवि ने उसे कोई प्रेत या बेताल समझ हलया। उसके भय की सीमा निीं ििी। वि कस्ट्म्पत-पग समुि-तट पि ििीिि-ि टिलने लगा। स्वरूप तथा िामानन्द िो सूयाथस्त के समय से िी अपने स्वामी की खोि कि ििे थे, उस िीवि से हमले। स्वरूप ने िीवि से पूछा हक क्या उसने किीं ंगौिाङ्गदेव को देखा िै? िीवि ने उन्हें अपनी किानी सुना दी। स्वरूप औि िामानन्द उस स्थान की औि चले ििाँ वि िाल पिा हुआ था। उन्होंनें अपने स्वामी को िाल से बािि हनकाल कि भूहम पि िखा। उन्होंनें उच्च स्वि में िरि-नाम का गायन हकया हिसके फल-स्वरूप गौिाङ्ग की चेतना िाग्रत िो गयी।

उनके अक्तन्तम िब्द

भगवान् गौिाङ्ग ने किा- "स्वरूप तथा िामानन्द, तुम दोनों ंमेिी बात सुनो! कहलयुग में कृष्ण के चिणों ंकी प्रास्ट्प्त का मुख्य साधन कृष्ण के नाम का गुणगान िै। कहलयुग में नाम-संकीतथन िामबाण औषहि िै। संकीतथन वैहदक यज्ञ के समकक्ष िै। यि पापों ंको नष्ट तथा हृदय को पहवत्र किता िै। सोते- प्रत्येक स्ट्स्थहत में तथा प्रत्येक स्थान पि नाम का
गुणगान किते ििना इससे मनुर्ष् में भस्ट्क्त का उदय िोता िै। उठते, बैठते, घूमते, भोिन किते, चाहिए। नाम सवथिस्ट्क्तमान िै। इसका िप हकसी भी स्थान पि औि हकसी भी समय हकया िा सकता िै।
"स्वरूप तथा िामानन्द, तुम दोनों ंमेिी बात सुनो। मैं उस मानहसक अहभवृहत्त के हवषय में तुम लोगों ंसे कुछ किता हाँ हिससे अनुप्राहणत िो कि नाम की महिमा का गायन िोना चाहिए।

"िो हनत्य पद-महदथत िोते ििने वाले तृण से भी अहिक हवनीत औि वृक्ष (िो अपने व्यवच्छेदन के समय भी िान्त बना ििता िै, िो ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप से हवनष्ट िोने की स्ट्स्थहत में भी िल की याचना निीं ंकिता औि इसके हवपरित िो याचकों ंको अपना सवथस्व दान कि हदया किता िै एवं िो िूप तथा वषाथ के प्रकोप को सिन किते हुए भी इनसे अपने ििणागतों ंकी िक्षा किता िै) से भी अहिक िैयथवान्, सहिष्णु तथा दानिील िै औि िो अत्यहिक आदि का पात्र िोते हुए भी इस भावना से उत्प्रेरित िो कि हक ईश्वि सवथभूतों ंमें परिव्याप्त िै, सबको आदिणीय समझता िै, उसको सवथदा िरि-नाम-संकीतथन किना चाहिए। वसुतुतः विी इसका अहिकािी भी िै। इस मनःस्ट्स्थहत को प्राप्त िो व्यस्ट्क्त कृष्ण का नाम िप किता िै, उसे कृष्ण-प्रेम की प्रास्ट्प्त िोती िै।"

भगवान् गौिाङ्ग ने सवाथन्तःकिण से उद्भूत हवनम्रता के साथ हनम्नांहकत श्लोक का सस्वि पाठ हकया : "िे भगवान्! मैं तुमसे िन, अनुयाहययों ंतथा काव्योहचत मिो की याचना निीं ंकिता। मैं मात्र इतना िी चािता हाँ हक मैं िब–ब न्मि ग्रिण करूँ, तुम्हािे प्रहत मेिी अिैतुकी भस्ट्क्त अकुषुण्ण बनी ििे।"

गौिाङ्ग १४ िून १५३३ को गोलोकवासी हुए।

चेिोदपकणमािकनों भवमहादावाहडनवाकपणों
श्रेयिः कैरवचक्तिकाडविरणों डवद्यावधूजीवनम् ।
आनन्दामुबुडधवधकनों प्रडिपदों पूणाकमरिास्वादनों
सवाकत्मस्नपनों परों डवजयिे श्रीकरष्णसोंकीिकनम् ।।

"कृष्ण के हवहभि नामों ंका संकीतथन सवाथहिक महिमामय िै। यि हवत-दपथण का मािथन किता िै. िन्म-मिण के चक्र की मिादावाहग्न का िमन किता िै औि चि-हकिण की भाँहत आध्यास्ट्कि कल्याण की कमहदनी को उतुफुल्ल किता िै। यि हवद्यावि्ू के हलए िीवनामृत िै, इससे हदव्य पिमानन्द-सागि उमि उठता िै, यि नाम-संकीतथन किने वाले को प्रत्येक िब्द के उच्चािण पि हदव्य प्रेम का पूणाथनन्द प्रदान किता िै औि मन तथा इस्ट्रियों ं को हदव्यानन्द से ओत-प्रोत कि देता िै।"

सन्त अरुणडगरर

मिान् सन्त तथा भगवान् सुब्रह्मण्य के भक्त अरुणहगरि का िन्म लगभग पाँच सौ वषथ पूवथ दहक्षण भाित-स्ट्स्थत हतरुविामलै में हुआ था। किा िाता िै हक उनका िन्म एक मिान् सन्त तथा हिवभक्त पहिनत्थि के वीयथ से हुआ था। बाल्यावस्था से िी उनका भिण-पोषण उनकी बड़ी बिन ने हकया। अपने िीवन के प्रािस्ट्म्भक हदनों ंसे िी वे अपव्ययी तथा उत्कट ऐस्ट्रिय सुखोपभोग में हलप्त ििने वाले व्यस्ट्क्त थे। उनकी िारिणी का नाम मुहत्त था हिसका सिवास उन्हें वषों तक प्राप्त िोता ििा। इस अवहि में वे अपनी उस दयालु बिन की सदैव उपेक्षा किते ििे िो उनके हलए आहथथक दृहष्ट से सवथदा लाभप्रदाहयनी ििी।

मुहत्त नृत्यांगनाओं ंके एक दल की सदस्या थी। िब तक अरुणहगरि आहथथक दृहष्ट से उसके हलए लाभप्रद हसद्ध िोते ििे औि उनसे उसकी आवश्यकताओं ंकी पूहतथ िोती ििी, तब तक उसका सम्बन्ध उनसे बना ििा; हकन्तु िब वे उस स्त्ी को िन देने में असमथथ िो गये, तब उनके प्रेम सम्बन्ध में व्यविान उपस्ट्स्थत िो गया। हफि भी उसके प्रहत अपनी गिन आसस्ट्क्त के किण उन्होंने येन-केन-प्रकािेण उसे कुछ िन देने का हनिय कि हलया। वे अपनी बिन के पास गये हकन्तु वि आहथथक दृहष्ट से सवथा हवपि िो गयी थी। अपने एकमात्र अनुि की आवश्यकता में उसकी सािी सम्पहत्त स्वािा िो चुकी थी औि अब उसके पास अपने िीहवकोपािथन का भी कोई सािन निीं ंिि गया था। हफि भी उनके प्रहत अपनी सिानुभूहत के किण उनकी आवश्यकता के क्षणों ंमें उनकी माँग पूहतथ के हलए उसने उन्हें अपना अस्ट्न्तम आभूषण, अपनी ििीिी दे दी। उसी समय मुहत्त के प्रहत उनकी आसस्ट्क्त के हनिाकिण के हलए उसने अरुणहगरि से किा हक वि उस नतथकी को ििीिी देते समय उसकी (बिन की) इच्छानुसाि कायथ किेंगे। अरुणहगरि इससे सिमत िो गये। उनकी बिन ने किा- "तुम उसको नग्नावस्था में झुकने को किना औि उसे यि ििीि उसके पीछे से देना।" अरुणहगरि ने मुहत्त को यि आभूषण उसी हवहि से हदया हिस हवहि के हलए उनकी बिन ने उन्हें हनदेि हदया था। िैसा हक अरुणहगरि की बिन का पूवाथनुमान था, स्ट्स्त्यों,ं हविेषतः मुहत्त के प्रहत अरुणहगरि का िीवन-पयथन्त िो आसस्ट्क्त–िन्य सम्बन्ध था, उसका हवच्छेदन हविस्ट्क्त के कृपाण से पूणथरूपेण िो गया। वे अपने सोिेहि िीवन की दीघथ हनिा से िाग्रत िो गये। उन्हें अपने हवगत िीवन पि घोि पिात्ताप िोने लगा। इस पिात्ताप के मात्राहिक्य के किण उन्होंने आत्म–ित्या का हनिय कि हलया। इस उद्देश्य की पूहतथ के हलए वे िीघ्र िी मस्ट्न्दि में िा कि उसके सामने की बुिथ पि चढ़ गये औि विाँ से नीचे कूद गये।

इस प्रकाि िब अरुणहगरि मस्ट्न्दि के बुिथ से नीचे हगि ििे थे, तब भगवान् सुब्रह्मण्य उनके सम्मुख प्रकट हुए, उनको अपने अंक में भि हलया औि िीिे–िीिे उनको नीचे उताि लाये। उनको किीं ंकोई ििीरिक क्षहत निीं ं पहुँची। अब अरुणहगरि के िीवन में एक नया मोड़ आया। उनको स्वयं भगवान ने ज्ञान के ििस्यों ंमें दीहक्षत हकया। इस प्रकाि ज्ञान-दीप्त िो कि ने भगवान् सुब्रह्मण्य की सुतुहत में अनेक गीतों ंकी िचना की।

अरुणहगरि ने अपने िीवन का उत्तिाद्धथ दहक्षण भाित के अनेक मस्ट्न्दिों ंकी यात्रा में व्यतीत हकया। उन मस्ट्न्दिों ंमें हिन देवताओं ंके हवग्रि थे, उनके स्तवन में उन्होंने गीत हलखे। अरुणहगरि का मुहत्त से एक पुत्र था हिसका नाम सुतुहतावन था। कुछ हदनों ंके पिात् उसने एक मिान् हिव-योगी के रूप में प्रहसस्ट्द्ध प्राप्त की। दहक्षण भाित के प्रबुद्ध देव िाय नामक एक िािा ने उसको अपना संिक्षण प्रदान हकया। अपने िीवन काल में िी अरुणहगरि ने

अपने समकालीन हविानों ंपि अपना साहिस्ट्त्यक प्रभुत्व स्थाहपत कि हलया था। इन हिदानों ंमें तहमल भाषा में मिाभित के अनुवादक श्रीहवस्ट्ल्लीप्त्तिा भी थे।

अपने प्रबोि-काल तथा अपनी तीथथ-यात्रा की अवहि में भगवान् सुब्रह्मण्य की अभ्यथथना में अरुणहगरि ने हिन दि ििाि गीतों ंकी िचना की, उन्हें संकहलत कि हलया गया ि। उस संकलन को हतरुपूपूगल किते िैं। इनमें से अब केवल िबिा सौ गीत िी उपलब्ध ि। इन गीतों ंमें सािकों ंके हलए बहुमूल्य अनुदेि हनहित िैं। ये उन्हें अत्यल्प काल में िी सिल-सुिि हवहि से स्ववोच्च सत्ता के साक्षात्कािि के हलए प्रोत्साहित-प्रबोहित किते िैं। मनुष्य् के हलए िो पिम काम्य ि, उसकी सम्प्रास्ट्प्त के माध्यम के रूप में वे भस्ट्क्त तथा संकीतथन की अनुिंसा-प्रिंसा किते िैं। हतरुपुपुगल भगवत्प्रास्ट्प्त के हलए भस्ट्क्त पि बल देता ि। इन गीतों ंका दैहनक पािायण िरि-कृपा तथा तत्पिात् ज्ञान-प्रास्ट्प्त में सिायक हसद्ध िोता ि। यद्यहप हतरुपुपुगल हविेषतः भस्ट्क्त-मागथ पि बल देता ि, तथाहप इसके प्रत्येक गीत में आत्मा को उत्प्रेरित-अनुप्राहणत किने वाले वेदान्त की झलक भी हमल िाती ि। 'कन्दि अनुभूहत' अरुणहगरि की एक अन्य कृहत ि। साहिस्ट्त्यक मूल्य तथा आध्यास्ट्त्मक महत्त्व की दृहष्ट से भी इस िचना को उच्च स्थान प्राप्त ि। आध्यास्ट्त्मक हिज्ञासुओं ंके अनुदेिन तथा उनकी उत्प्रेिणा के हलए इनमें कई गीत संग्रहित िैं।

तहमल नाु के िैव आचायथ
अप्पि या हतरुनावुक्किसि

अप्पि की गणना समय (Samaya) आचायथ-चतुष्टय में की िाती िै। वे के एक वेल्लाला थे। वे पुगलनाि (Pugazhanar) तथा माहतहनयाि (Maathiniar) के पुत्र थे। अप्पि के माता-हपता ने उन्हें मरुलनीस्ट्क्कयाि (अन्धकाि को दि सम्बन्धि के समकालीन तथा तहमल नाु के किलूि िनपद-स्ट्स्थत हतरुआमा किने वाला) नाम से अहभहित हकया। अप्पि का अथथ हपता िोता िै। मरुलनीस्ट्क्कयाि को यि नाम सम्बन्धि ने हदया था। उन दोनों ंके बीच वाताथलाप िोते ििते थे। इसी वाताथलाप के समय सम्बन्धि ने उन्हें कभी अप्पि नाम से सम्बोहित हकया था। उन्हें इस नाम से सम्बोहित किने वाले वे प्रथम व्यस्ट्क्त थे। अप्पि को उनके ओिोद्दीपक तथा उदात्त गीतों ंके हलए हतरुनावुक्किसि (वाचस्पहत) की उपाहि प्रदान की गयी। उनकी अन्तःपेि्रणा का स्रोत ईश्वि था। हवहभि मस्ट्न्दिों ंकी तीथथ-यात्रा के समय वे भस्ट्क्तपिक गीतों ंका गायन हकया किते थे। वे सातवीं ंिताब्दी के एक सुप्रहसद्ध िास्यवादी एवं कहव थे।

हतलकवहियाि (Tilakvadhiar) उनकी ज्ेयेष्ठ सिोदिा थी िो पल्लव-िािे के सैनस्थ कहलप्पैयाि (Kalippahaiyar) नामक एक सैन्य अहिकािी की वाग्दत्ता थी। वि उत्ति के हकसी आक्रमणकािी के हवरुद्ध युद्ध किते हुए वीिगहत को प्राप्त िो गया। िब हतलकवहियाि को कहलप्पैयाि की मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई, तब उसने सती िोने का हनिय हकया। अपनी बहिन के इस अहभप्राय से अवगत मरुलनीस्ट्क्कयाि िीघ्राहतिीघ्र उसके पास पहुँच कि उसके चिणों ंके समक्ष दण्डवत् भूहमयाि िो गये सैौ किने लगे- "मैं माता-हपता की मृत्यु के पित् एकमात्र तुम्हािे िी आश्रय में िि कि िीवन-यापन कि िि िा िै। यहद तुम अपना प्राणान्त किना चािती िो. तो तुम्हािे िीिपात के पूवथ मैं स्वयं मृत्यु का विण कि लूूँगा।" उनके इन िब्दों ंसे उनकी बहिन का हृदय हिवत िो उठा। उसने अपने हनिय का परित्याग कि अपने असिाय अनुि का भिण-पोषण किते हुए एक तपस्ट्स्वनी का िीवन व्यतीत किने का संकल्प कि हलया।

अप्पि िैन-िमथ में दीहक्षत िो गये। उन्होंनें समस्त िैन-िमथ-ग्रन्थों ंका अध्ययन हकया। वे पाटहलपुत्र गये ििााँ वे अपने प्रकाण्ड पास्ट्ण्डत्य के बल पि आध्यास्ट्त्मक प्रमुख बन गये।

यि सुन कि हक उसका अनुि िैनिमाथवलम्बी िो गया िै, अप्पि की दीदी अत्यन्त दु:खी िुई सैौ अपने िन्म-स्थान का परित्याग कि हतरुवहतकाि Thiruvathikai) नामक एक समीपस्थ नगि में चली गयी। विााँ वि एक हिव मस्ट्न्दि में ध्यान तथा प्राथथना में लीन िािते िुए अपने अनुि के प्रत्यागमन की प्रतीक्षा किने लगी।

अप्पि असाध्य उदि-िूल से ग्रस्त िो गये। उन्होंनें अपना हभक्षा-पात्र फेंक हदया सैौ िैन मुहन के वेि का परित्याग कि अपनी दीदी के यिााँ चले गीतं गये। वि अप्पि के ललाट को पहवत्र भस्म से िंहित कि उन्हें हिव मस्ट्न्दि ले गयी ििााँ उसने उन्हें दण्डवत् भूहमयाि िो कि हिव को प्रणाम-हनवेदन तथा उनकी उपासना का हनदेि हदया। अप्पि ने वैसा िी हकया। अप्पि का तीव्र उदि-िूल िाता िाि सैौ उन्होंनें हिव की अभ्यथथना की।

पाटहलपुत्र के (िैहनयों ंके) आध्यास्ट्त्मक प्रमुख ने िैनिमाथवलम्बी िािा कादव को अप्पि के पलायन की सूचना दी। उन हदनों ंकिलूि िनप पल्लव-िािे कादव के सैौन था। उस प्रमुख ने िािा को अप्पि क उत्पीहड़त किने के हलए उते्प्रेरित हकया।

अप्पि पल्लवों ंकी ीिाानी में ि ा कि ी ाा के सुिख उपस्ट्स्थत ि ी ाा उन्हें हवहभि हवहियों ंसे यन्त्रणा दी गयी। उन्हें चूने के प्रज्वहलत भट्ठे फेंका गया, उन्हें हवष-हमहश्रत दुग्ध-पान के हलए हववि हकया गया, उनकी ित्या के हलए
एक ि ाथी को भेिा गया िौ अन्ततः उनको एक भािी पत्थि में बााँि कि समुि में ि ाल हदया गया; हकन्तु भगवान ने उनकी ि क्षा की िौ वे ि ल के ऊपि तैिते ि ए हतरुप्पहतरिपूपूहलयूि (Thiruppathirippuliyur) के समुि-तट पि पहुाँच गये।
अब पल्लव-ीिे उनकी मिानता से परिहचत ि ो कि उनके चिणों ंपि अवनत ि ो गया। उसने ि ैन ि मथ का परित्याग कि ि ैव–मथ ग्रिण कि हलया िौ एक भव्य हिव मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया ि ो गुणपिवीच्चिम् (Gunaparaveechcharam) के नाम से हवख्यात ि ै।

इसके पिात् अप्पि हवहभि पहवत्र स्थानों ंकी तीथथ-यात्रा पि हनकल पड़े। वे हचदम्बिम्, सीगाहल तथा अन्य स्थानों ं पि गये। विााँ उन्होंनें हिव-स्तुहत में तेवािमों ंका गायन हकया।

अप्पि हतंगलूि के सन्त अपूपूहद अहिगल से हमले। विााँ उन्होंनें कोबिा सपथ के दंि से मृत उनके पुत्र की प्राण–िक्षा की।

तत्पिात् अप्पि ने हतरुवेण्णैनलूलूि (Thiruvennainallur), हतरुवामातूतूि (Thiruvaamaaththur), हतरुक्कोहवलूि (Thirukkovilur) तथा हतरुपेण्णािाकम् (Thiruppennadakam) िैसे पहवत्र स्थलों ंपि ि ा कि हिव की उपासना की। अन्ततः हतरुतूतूनानैमिम् (Thiruththoonganaimadam) ि ा कि उन्होंनें भगवान् हिव की इन ि ब्दों ंमें अभ्यथथना की- "ि े हिवंिकि, ि े अथिनािीश्वि, ि े सवथभूतों ंके आहद-अन्त, मैं ि ैहनयों ंके स्पिथ से दूहषत इस दिे को अब ीिाण निीं ंकिना चािता। मैं अपने ीिाि को आपके हत्रिूल तथा नन्दी ीिाा अंहकत कि देना चािता हाँ।" उन्होंनें एक पहदगम का गायन हकया िौ भगवान् हिव की कृपा से अप्पि के पास आ कि एक हिव-गण ने उनके कन्िे को हत्रिूल तथा नन्दी से हचह्नांहकत कि हदया।

इसके पिात् अप्पि सम्बन्िि के दिथनाथथ सीगाहल गये। वे सम्बन्िि के चिणों ंपि हगि पड़े हिन्होंनें उनको 'मेिे हप्रय अप्पि' ि ब्दों ंसे सम्बोहित हकया।

एक बाि सम्बन्िि पालकी में बैठ कि तंिावि ि नपद-स्ट्स्थत हतरुपुपुन्तुरुहत (Thiruppunthuruthi) में अप्पि से हमलने गये। अप्पि ने उनकी अगवानी की िौ पालकी को स्वयं उठा हलया। सम्बन्िि ने पूछा- "अप्पि किााँ ि ै?" अप्पि ने उत्ति हदया- "मैं यिााँ आपकी पालकी ढो ीिा ि ाँ।" सम्बन्िि ि ीघ्र ि ी पालकी से कूद पड़े। उन्होंनें अप्पि को आहलंगन में पाि-बद्ध कि हलया िौ उनकी आाँखों ंसे प्रेमाश्रु बिने लगे।

अप्पि हतरुच्छहिम्टटिम गये। विााँ उन्होंनें एक पहदगम गाया िौ किा- "ि े भगवान्, इसके पूवथ हक मैं इस भौहतक ीिाि का परित्याग करूाँ. मेिे ि ाि पि अपने चिण-कमलों ंको ि ख दो।" उसी समय उन्होंनें यि आकािवाणी सुनी- "हतरुनल्लि आओ।" अप्पि के ि ाि पि भगवान् हिव ने अपना चिण ि खा िौ वे भगवान के समक्ष दण्डवत् भूहमिायी ि ो गये। उनका हृदय अहनवथचनीय आनन्द से ओत-प्रोत ि ो गया।

इसके पिात् अप्पि हतरुवम्बिा, हतरुकिवूि तथा हतरुवीहलमलै (Thiruveezhimalai) गये। हतरुवीहलमलै भीषण अकाल से ग्रस्त था। भगवान् हिव के भक्त अभाव के कािण मि ि े थे। इस बात से अप्पि िौ सम्बन्िि ि ोकातथ िो उठे। दोनों ंको स्वप्न में भगवान् हिव के दिथन हुए हिन्होंनें उनसे किा- "ि ोक मत किो। मैं तुम दोनों ंको स्वणथ मुिाएाँ दूाँगा।" उन दोनों ंको प्रहतहदन स्वणथ-मुिाएाँ प्राप्त ि ोती ि ीं ंिौ उन्होंनें अकाल-ग्रस्त लोगों ंको पयाथप्त मात्रा में भोिन हदया।

अप्पि तथा सम्बन्धि तंाविू िनपद-स्ट्स्थत वेदिाण्यम्-मस्ट्न्दि गये। विाँ एक पुितन हिव-मस्ट्न्दि था हिसके िाि वषों से बन्द पड़े थे। एक बाि इस मस्ट्न्दि में वेदों ंने स्वयं आ कि भगवान् हिव का पूिन हकया था; हकन्तु अब वे यिाँ आ कि हिव-पूिन निीं ंकिते थे, क्योंहक िैन–मथ के प्रभाव के कािण लोगों ंने वेदाध्ययन का परित्याग कि हदया था। सम्बन्धि ने अपि से किा- "यिाँ आ कि प्राथथना-गीत गाओ हिससे ये िाि खुल सकें।" अप्पि के गायन से िाि खुल गये: हकन्तु सम्बन्धि के गायन से वे बन्द िो गये।

एक बाि िब अप्पि तीथाथटन कि ििे थे, वे क्षुधा-पीहित िो गये। हकन्तु भगवान हिव ने एक कुण्ड तथा एक वाहटका का हनमाथण कि हदया। अप्पि के हलए उन्होंनें भोिन की भी व्यवस्था कि दी।

तत्पित् अप्पि की कैलास यात्रा का श्रीगणेि हुआ। उनकी यि यात्रा क्लास्ट्न्तकि थी। उनके पैि क्षहतग्रस्त िो गये। उन्होंनें आकाि में भगवान के वे िब्द सुने- "िे अप्पि, उठो औि सिोवि में स्नान किो। तुम्हें मेिे तथा कैलास-हगरि के दिथन हतरुवैयारु में िोंगें।" अप्पि िब स्नान किने के पित् सिोवि से बािि आये, तब उन्हें सवथत्र हिव तथा स्ट्क्त के दिथन िोने लगे। मस्ट्न्दि में प्रहवष्ट िो कि उन्होंनें विाँ कैलास पवथत तथा कैलासाहिपहत भगवान् हिव के दिथन हकये। इस भव्य दृश्य को देख कि अप्पि आनन्दाहतिेक में पहदगम का गायन किने लगे।

अन्ततः अप्पि हतरुवारूि के हनकट हतरुपुपुगलूि में रुके। अपने िीवन का िेषांि उन्होंनें यिीं ंव्यतीत हकया। यिाँ भगवान् िािा उनका इसहलए पिीक्षण हकया गया हक विाँ के लोग उनकी मिानता से अवगत िो सकें। िब अप्पि मस्ट्न्दि में सेवित थे, तब िीिक तथा स्वणथ का उनके चिणों ंके नीचे ढेि लग िाता था; हकन्तु वे उन्हें पत्थि समझ कि फेंक हदया किते थे। एक बाि उनके समक्ष स्वगथ की हदव्यांगनाओं ंका आगमन हुआ हिन्होंनें उनको हवहभि हवहियों ंसे अपनी ओि आकहषथत किने का प्रयत्न हकया; हकन्तु अप्पि अपने ध्यान से हवचहलत निीं ंिो पाये। आयु की वाथक्यावस्था में उन्होंनें स्वयं को ज्योहतयों ंकी ज्योहत भगवान् में समाहित कि हलया।

अप्पर की िचनाएँ

अपने गीतों ंके माध्यम से अप्पि ने िैव-हसद्धान्त के रूप में दिथन की आध्यास्ट्क अन्तदृथहष्ट, िाहमथक संवेग तथा उच्च आध्यास्ट्क अनुभूहत से एक नयी िाखा का सूत्रपात हकया। अप्पि की कहवताएँ कल्पना, आप्लाहवत िैं।

अप्पि सम्बन्धि से अपेक्षाकृत अहिक हविान थे। उनका व्यस्ट्क्तत्व अत्यन्त प्रभाविाली था। हिव-भक्त के रूप में उनका िीवन उल्लेखनीय था। उन्होंनें िैन िमथ के प्रभाव को नष्ट कि हदया। वे पंचाक्षि की सवथदा स्तुहत किते ििते थे। उनके अनुसाि वेद तथा षि्वेदांग ब्राह्मणों ंके हलए औि पंचाक्षि देवों ंके हलए अनमोल ित्न िैं।" उनके अनुकिणीय िीवन, उनकी मिुि प्रवािी कहवताओं.ं उनके प्रकाण्ड पास्ट्ण्डत्य तथा उनके गिन िमाथत्सि से उनकी ओि असंख्य लोग आकहषथत हुए। उनके प्रिंसकों ंतथा हिष्ों ंकी संख्या अगहणत थी औि उनका प्रभाव क्षेत्र हवसृतृत था। अप्पि की कृहतयों ंमें तीन सौ कहवताएँ िैं। बािि ग्रन्थों ंमें तीन ग्रन्थ िैव काव्य के तहमल संकलन में संग्रहित िैं हिन्हें हतरुमुिाई किा िाता िै।

अप्पि किते िैं- "प्रत्येक वस्तु भगवान् हिव की अहभव्यस्ट्क्त िै। हिव िी नािायण, ब्रह्मा, औि चाि वेद िैं। हिव पहवत्रतम, सनातन तथा परिपूणथ िैं। यि सब िोते हुए भी हिव इनमें से कुछ भी निीं ंिैं। वे अनाम, अि, हनत्य तथा अनामय िैं। वे एक साथ िी लोकोत्ति तथा सवथव्यापी, दोनों ंिैं।

"भगवान् हिव की प्रतीहत एवं अहभव्यस्ट्क्त िोनी चाहिए। प्राथथना कीहिए, उपासना कीहिए, रुदन कीहिए तथा नृत्य कीहिए। भगवान् हिव गीत में संगीत तथा िाग, फलों ंमें मिुयथ, मन में हवचाि तथा नेत्रों ंमें ज्योहत िैं। वे न स्त्री िैं, न पुरुष। वे आयामि–हित िैं।

"इस्ट्यिों ंका दमन कीहिए। हनयहमत ध्यान का अभ्यास कीहिए। चयाथ, हक्रया, योग तथा ज्ञान का अभ्यास कीहिए। अनासक्त-भाव को हवकहसत कीहिए। ििीि त्रय का अहतक्रमण कीहिए तथा िीवाा को तथा अमित्व की प्रास्ट्प्त िोगी। यहद आप अपने दिलय के अन्दि मन के पिम ओ़ाा अथाथत भगवान् हिव से सम्बद्ध कीहिए। आपको िाश्वत आनन्द प्रदीप में ध्यान के घृत से अनुप्राहणत िीवन-वहतथका से हनःसृत ज्ञान-ज्योहत से भगवान् हिव को देखना चािते िैं तो आप उनके दिथन में अवश्य सफल िोंगे।

"सत्य से क्षेत्र-कषथण कीहिए. उसमें ज्ञान की अभीप्सा का बीि-वपन का अहभहसंचन कीहिए, क्षेत्र को हमथ्या के घास-पात से मुक्त कीहिए, िैयथ के िल से मन अन्तदृथहष्ट या आत्म-हनीक्षण या आत्म-हवश्लेषण से अपने कायों का पयथवेक्षण कीहिए औि क्षेत्र के िक्षणाथथ इसके चतुहदथक यम-हनयम या सम्यक् आचिण का बाड़ा (घेिा) लगाइए। यहद आप इतना कि लेते िैं, तो आपको हिवानन्द अथाथत हिव के हनत्य आनन्द की तत्काल प्रास्ट्प्त िो िायेगी।

"आप अपने ििीि को हिवालय, मन को उपासक, सत्य को उपासना के हलए आवश्यक िुद्धता, मन के ित्न को हलंग तथा प्रेम को दुग्ध-घृत समझ कि भगवान् हिव का पूिन कीहिए। हचत्त की एकाग्रता तथा पंचाक्षि मन्त्र पि ध्यान के अभाव में भगवान् हिव की प्रास्ट्प्त असम्भव िै।"

आप लोग अप्पि के हनदेिों ंतथा उपदेिों ंका अनुगमन कि हनत्य आनन्द के िाश्वत िाम अथाथत् हिव-पद को प्राप्त किें!

सुन्दरमूहतथ

तहमल नािु-स्ट्स्थत नावलूि में सियनाि (Sadayanar) नामक ब्राह्मण ििते थे। वे अत्यन्त िमथहनष्ठ तथा हिव-भक्त थे। उनके िमथ-पिायण पुत्र नस्ट्म्बयािूिाि को आलाला सुन्दि तथा सुन्दिमूहतथ नायनाि के नामों ंसे भी िाना िाता था। वि युवावस्था को प्राप्त िो चुका था।

सुन्दिमूहतथ की गणना चाि िैव आचायों में की िाती िै। वे भगवान हिव हिव एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप में उनके सम्मुख प्रकट हुए। भगवान ने किा हक के मिान् भक्त थे। उनके हववाि के अवसि पि हतरुवेण्णैनल्लि के भगवान् सुन्दिा उनका बन्धक दास था। अतः उसे उनके घि में ििि कि उनकी सेवा किनी चाहिए। भगवान् का नाम तित्ताटकोन्ड हपिान (Taduttatkonda Piran) था अथाथत् भगवान् हिसने सुन्दिा की संसाि से िक्षा की।

सुन्दिमूहतथ ने अनेक मस्ट्न्दिों ंके दिथन हकये। वे अहिगैहविाविानम् (Adigaivirattanam) गये। विााँ भगवान हिव ने उनके समक्ष प्रकट िो कि उनके ििि पि अपना पावन चिण िखा। इसके पिात् सुन्दि हतरुवारूि गये ििााँ भगवान् हिव ने उनको अपना हमत्र बना हलया।

कैलास में कमहलनी उमादेवी की दासी थी। उसकी इच्छा थी हक वि आलाला सुन्दि को पहत रूप में प्राप्त किे। अतः उसको इस संसाि में हतरुवारूि में िन्म ग्रिण किने के हलए हववि िोना पड़ा। उसको पिवै नाम से अहभहित हकया गया। िब वि युवावस्था को प्राप्त हुई, तब भगवान् हिव ने अपने भक्तों ंसे स्वप्न में किा- "तुम लोग पिवै तथा सुन्दिमूहतथ के हववाि की व्यवस्था किो।" उन्होंने पिवै औि सुन्दि को सूचना दे दी। सुन्दि ने पिवै से हववाि कि हलया औि दोनों ंसुखी िीवन व्यतीत किने लगे।

एक बिा हतरुवारूि में अकाल प़्िा। सुन्दिमूहतथ के समक्ष प्रकट ि◌ो कि भगवान् हिव ने उनके सुिख अि का अम्बिा लगा हदया। अि की अत्यहिक मात्रा के किाण उसे विााँ से किीं ◌ंअन्यत्र ले ि◌ाना असम्भव था। सुन्दिमूहतथ ने इस कायथ के हलए भगवान् हिव से उनकी सिायता की याचना की। भगवान् हिव के गणों ◌ंने उस अि–िाहि को पिवै के घि में पहुाँचा हदया।

बि सुन्दि हतरुपुपुगलिूि में थे, तब उन्होंनें अपनी पत्नी के हलए स्वणथ की याचना की। ईंटों ◌ंपि ििि ि◌ख कि वे सो गये। ि◌ागने पि उन्होंनें देखा हक सिाी ईंटें स्वणथ का रूप ग्रिण कि चुकी ि◌ैं। हवरुद्धाचलम् ि◌ाते समय भी उन्हें स्वणथ प्राप्त हुआ था; हकन्तु भगवान् के आदेिानुसाि उन्होंनें उसे महणमुत्तारु नदी में फेंक हदया। हतरुवारूि के कुण्ड से उन्होंनें उसे पुनः ले हलया। तब भगवान् हिव ने उन्हें हतरुकुकुििलैयिूि चले ि◌ाने को किा।

बि सुन्दि हतरुकुकुरुकवूि ि◌ा ि◌ि◌े थे, तब भगवान् ने उनके भोिन की व्यवस्था कि दी। एक अन्य अवसि पि भगवान को उनके भोिन के हलए हभक्षा माांगनी प़्िी थी।

सुन्दिमूहतथ हतरुवोहियूि चले गये ि◌ि◌ााँ उन्होंनें संहगहल से हववाि हकया। संहगहल भगवान की कृपा पात्र तथा उनकी मिान् भक्त थी। कैलास पवथत पि ि◌ि◌ने वाली अहनस्ट्न्दता उमादेवी की दासी थी। उसने संहगहल के रूप में पृथ्वी पि िन्म-ग्रिण हकया था।

सुन्दिमूहतथ ने भगवान् हिव से प्राथथना की हक ि◌ब वे संहगहल के समक्ष आिीवन उसका परित्याग न किने की ि◌पथ ग्रिण कि ि◌ि◌े ि◌ों,◌ं तब वे एक महगला (Magizha) वृक्ष के नीचे हवद्यमान ि◌ि◌ें। सुन्दि ने संहगहल को मस्ट्न्दि के भीति भेिना चािा; हकन्तु भगवान् हिव ने संहगहल को इस बात की पूवथ-सूचना दे दी थी हक वे मस्ट्न्दि में न ि◌ि◌ कि उक्त वृक्ष के नीचे ि◌ि◌ेंगे। तत्पिात् संहगहल ने सुन्दिमूहतथ से ि◌पथ ग्रिण किने के हलए उस वृक्ष के नीचे आने को किा औि सुन्दिमूहतथ को उसका आग्रि स्वीकाि किना प़्िा। कुछ काल के उपिान्त सुन्दिमूहतथ ने कभी भी उसका परित्याग न किने की अपनी ि◌पथ भंग कि दी। वे संहगहल को छो़ि कि हकसी उत्सव में सस्ट्म्महलत ि◌ोने के हलए अकेले ि◌ी हतरुवारूि चले गये। ि◌पथ-भंग के किाण उन्हें नेत्रिीन ि◌ोना प़्िा।

सुन्दिमूहतथ ने भगवान् से किा- "आपने मुझे दृहष्टिीन बना हदया ि◌ै। अब कृपया आप मुझे एक दण्ड दे दीहिए।" भगवान् हिव ने हतरुवेणपाक्कम् में उन्हें एक दण्ड दे हदया। सुन्दिमूहतथ ि◌ब कांचीपुिम् आये, तब उनके वाम नेत्र की ज्योहत पुनः लौट आयी औि ि◌ब हतरुवारूि में उन्होंनें भगवान् हिव की प्राथथना की, तब उनका दहक्षण नेत्र भी अपनी पूवाथवस्था को प्राप्त ि◌ो गया।

एक हदन हतरुपुपुक्कोहलयूि में सुन्दिमूहतथ किीं ◌ंि◌ा ि◌ि◌े थे, तब उन्होंनें देखा हक एक घि में लोग ि◌ो ि◌ि◌े थे औि उसके सामने वाले घि में ि◌षोत्सव मनाया ि◌ा ि◌ि◌ा था। उन्होंनें लोगों ◌ंके पूछा- इन दोनों ◌ंघिों ◌ंमें क्या ि◌ो ि◌ि◌ा ि◌ै?" लोगों ◌ंने उनसे किा - "दो पंचवषीय बालक सिोवि में स्नान किने गये थे हिनमें से एक का मगि ने भक्षण कि हलया औि दूसिा विााँ से हनिापद हनकल आया। मृत बालक के माता-हपता फूट-फूट कि ि◌ो ि◌ि◌े ि◌ैं औि ि◌ो बालक विााँ ि◌े हनिापद बच हनकला, उसके माता-हपता उसके यज्ञोपवीत-संस्काि का सिािोि मनाते ि◌ुए ि◌षथ-हवह्वल ि◌ो ि◌ि◌े ि◌ैं।"

यि सुन कि सुन्दिमूहतथ हवचहलत ि◌ो उठे। उन्होंनें भगवान् हिव की स्तुहत में एक पहदगम का गायन हकया। इसके फल-स्वरूप यम के आदेिानुसाि वि मगि उस बालक को हकनािे पि ला कि छो़ि गया। उस बालक के माता-हपता ि◌षोन्मत्त ि◌ो उठे औि उन्होंनें सुन्दि को साष्टांग प्रणाम हकया।

अपनी तीथथ-यात्रा में सुन्दिमूहतथ एक बाि कावेिी-तट पि गये। उन हदनों ंनदी में बाढ़ आयी हुई थी। उन्हें हतरुवारूि में भगवान् हिव के दिथन की इच्छा हुई। उन्होंनें एक पहदगम गाया हिसके फल-स्वरूप नदी ने उनके हलए मागथ की व्यवस्था कि दी। उन्होंनें हतरुवारूि ि कि भगवान् की उपासना की।

हतरुपेरुमंगलम् में एक मिान् हिव-भक्त ििते थे। उनका नाम कहलकामि था। िन्मतः वे हपलैलै थे। यि सुन कि हक सुन्दिि ने पिवै के पास भगवान् हिव को अपना दूत बना कि भेिा था, उन्होंनें किा- "एक भक्त ने भगवान् को अपनी सेवा का आदेि दे कि उन्हें अपना सेवक बना हलया िै औि वि भी उसने यि सब एक नािी के हलए हकया िै। क्या भगवान् के प्रहत ऐसा व्यविाि किने वाला व्यस्ट्क्त उनका भक्त िो सकता िै? मैं घोि पातकी हाँ। यि बात सुनने के पिात् भी मेिा प्राण मुझसे हवलग न िो सका। एक तथाकहथत भक्त के व्यविाि को सुन कि भी मैं लौि-दण्ड से अपने कानों ंको हवनष्ट निीं ंकि सका हाँ।"

सुन्दिि कहलकामि नायनाि की दिा से अवगत िो गये। इसके साथ की। भगवान् हिव इन दोनों ंमें मैत्री-सम्बन्ध स्थाहपत किना चािते थे। उन्होंनें उनको अपनी भयंकि भूल का भी ज्ञान हुआ। उन्होंनें भगवान से क्षमा-याचना कहलकामि को िािीरिक िोग से ग्रस्त कि हदया। इनके पिात् उनके स्वप्न में प्रकट िो कि उन्होंनें उनसे किा- इस िोग का उपचाि सुन्दिि िी कि सकता िै।" कहलकामि ने हवचाि हकया- 'सुन्दिि के िाथों ंिोग मुक्त िोने की अपेक्षा मेिे हलए िोग-िन्य पीड़ा को सिते ििना िी श्रेयस्कि िै।' उधि भगवान् ने सुन्दिि को आदेि हदया "िाओ औि िा कि कहलकामि को िोग-मुक्त किो।"

सुन्दि ने एक सन्देि भेि कि कहलकामि को अपने आगमन की सूचना दे दी। कहलकामि ने सोचा- 'इसके पिले हक सुन्दिि मुझे िोग-मुक्त किने आये, मुझे अपने िीवन का अन्त कि देना चाहिए।' यि सोच कि उन्होंनें अपनी अाँतहड़याँ काट दीं ंऔि इस प्रकाि उनका प्राणान्त िो गया। उनकी पत्नी ने सुन्दिि के आगमन पि उनका स्वागत एक अहत-सिाननीय व्यस्ट्क्त की भााँहत हकया।

सुन्दिि ने कहलकामि की पत्नी से किा- "मैं आपके पहत को िोग-मुक्त कि उनके साथ कुछ हदनों ंतक ििना चािता हाँ।" उसने उनसे कुछ 5 निीं ंकिा; हकन्तु विााँ एकत्र लोगों ंसे यि किने के हलए किा हक कहलकामि हव को कोई िोग निीं ंिै औि वे सो ििे िैं। सुन्दिि ने उन लोगों ंसे किा हक उनकी कहलकामि के दिथन की प्रबल इच्छा िै। तब लोगों ंने उन्हें कहलकामि को हदखा हदया। हकन्तु सुन्दिि ने िो-कुछ देखा, वि कहलकामि न िो कि उनका मृत ििीि था। अब उन्होंनें भी प्राण-हवसिथन के हलए तलवाि हनकाल ली। भगवान् हिव की कृपा से कहलकामि पुनिीहवत िो गये। उन्होंनें तत्काल सुन्दि को पकड़ हलया। सुन्दिि कहलकामि के चिणों ंपि हगि पड़े। कहलकामि श्री सुन्दिि के चिण कमलों ंके समक्ष भूिायी िो गये। हिव मस्ट्न्दि में िा कि उन दोनों ंने भगवान हिव की आिाधना की। इसके पिात् वे लोग हतरुवारूि की औि चल पड़े।

पिवै इस बात से अत्यन्त कु्षब्ध थी हक सुन्दिि ने उसका परित्याग कि कहल से हववाि कि हलया था। सुन्दिि ने हिव से उसे िान्त किने की प्राथथना की। भगवान् हिव पिवै के घि दो बाि गये। उन्होंनें उसे िान्त कि हदया औि इसके पिात् उन दोनों ंमें पुनः सम्बन्ध स्थाहपत िो गया। यिााँ भगवान को अपने भक्तों ंके हलए दौत्य कमथ किना पड़ा। भगवान् अपने हनष्कपट भक्तों ंका दासत्व-ग्रिण पूणथरूपेण कि लेते िैं।

सुन्दिमूहतथ अपने िािीरिक अस्ट्स्तत्व के प्रहत पूणथतः हविक्त िो चुके थे। उन्होंनें भगवान् हिव से प्राथथना की हक वे उन्हें कैलास बुला लें। भगवान् ने उनके पास एक श्वेत िाथी भेिा हदया।

सुन्दिमूहतथ हवहभन्न पावन स्थलों ंपि हिव-महिमा के गीत गाते ििते थे हिनका पुस्तकाकाि में संकलन कि हलया गया िै औि हिन्हें तेवािम् किा िाता िै। आि भी भक्त गण इसका गायन किते िैं। सुन्दिमूहतथ, अप्पि या

हतरुनावुक्किसि तथा हतरु ज्ञान सम्बन्धि िािा गायी भिनावली को तेविाम् एवं माहणक्कवासगि िािा गायी गयी भिनावली को हतरुवाचकम् किा िाता िै।

भगवान् हिव के प्रहत सुन्दिमूहतथ का सख्य-भाव था; अतः भगवान् के साथ उनका िो सम्बन्ध था, वि हनतान्त मैत्रीपूणथ था। यि सम्बन्ध पूणथरूपेण अकृहत्रम तथा सिल-सिि था। सम्बन्ध की इसी सिसिता के कािण वे उनसे स्वणथ, मुक्तिािा, कसूतिूी, बहुमूल्य ित्नों ंकी माला, ऐनक, वस्त्, सुिहभत पदाथथ, आभूषण, वायुगहत से चलने वाले अश्व, स्वहणथम सुमन, पालकी तथा हतरुवारूि के समूपूणथ िािन्य के तृतीयांि की माँग हकया किते थे। वे इन वसुतुओं ंकी याचना अपनी भोगेच्छा की तुहष्ट के हलए न कि अपने हनभथि िनों ंके उपभोग के हलए हकया किते थे।

सुन्दिमूहतथ ने संसाि के समक्ष भस्ट्क्त के सख्य-भाव का मागथ-प्रदिथन हकया।

हतरु ज्ञान सम्बन्धि

सम्बन्धि का िन्म तंिाविु िनपद-स्ट्स्थत सीगाहल (Sirgazhi) के ब्राह्मण-परिविा में हुआ था। सीगाहल को ब्रह्मपुिी के नाम से भी िाना िा िै। हतरु ज्ञान सम्बन्धि की माता का नाम भगवती तथा उनके हपता का न हिवपादहृदयि था।

एक बाि भगवती औि उसके पहत सिोवि में स्नान किने गये। उनके सा उनका पुत्र भी था हिसे घाट पि छोड़ कि वे दोनों ंस्नान किने चले गये। िब पुत्र ने अपने माता-हपता को वहाँ निीं ंदेखा, तब वि तीव्र स्वि में पुकाि उठा- "िे माँ, िे हपता िी!" हकनुतु उसकी पुकाि उसके माता-हपता तक निीं ंपहुँच सकी; पिनुतु भगवान् हिव तथा पावथती उसकी पुकाि सुन कि उसके समक्ष प्रकट िो गये। पावथती ने उसके हलए दुग्ध की व्यवस्था की। उस दुग्ध-पान के साथ-साथ बालक ने हदव्य ज्ञान के दुग्ध का भी पान कि हलया। उसी क्षण से बालक भगवान् हिव का सुतुहत-गान किने लगा। उसने औिोते्प्रिक तथा लोकोत्ति गीतों ं(Thevarams) का गायन हकया। यि घटना उस समय हुई थी िब हतरु ज्ञान सम्बन्धि की आयु मात्र तीन वषथ थी।

िब स्नान के पिात् बालक के माता-हपता उसके पास आये, तब उन्होंनें देखा हक बालक के मुख से दुग्ध बि ििा था औि उसके नेत्र अशुरु-पूरित थे। उन्होंनें पूछा- "हप्रय वत्स, तुमको दुग्ध हकसने हदया?" उत्ति में बालक ने एक स्तोत्र का गायन हकया औि विाँ िो-कुछ भी हुआ था, उनके समक्ष उसका अहवकल हवविण प्रसुतुत कि हदया। इसे सुन कि उसके माता-हपता का हृदय िषथ-हवह्वल िो उठा। बालक को हिव-पावथती की कृपा िो हदव्य ज्ञान की उपलस्ट्ब्ध हुई थी अतः उसके माता-हपता ने उसे हतरु ज्ञान सम्बन्धि नाम से अहभहित हकया। सम्बन्धि को लोग हपलै्लैयि भी किते थे।

इसके पिात् बालक सम्बन्धि हतरुक्कोलक्का गया िािाँ उसने मस्ट्न्दि में एक स्तोत्र का सस्वि पाठ हकया। इस पि प्रसि िो कि भगवान हिव ने भेंट स्वरूप उसे एक मंिीिा दे हदया।

हतरुवेरुक्कििामपुहलयि में एक हिव-भक्त िािता था िो यल (Yazh) नामक वाद्य यन्त्र को हनपुणता के साथ बिा सकता था। उसका नाम हतरुनीलकन्ड यलपनि (Thiruneelakanda Yazhpanar) था। वि सम्बन्धि के प्रहत अपना सिान प्रकट किने सीगाहल गया। सम्बन्धि उसे भगवान हिव के मस्ट्न्दि में ले गया िािाँ उसने उसके संगीत का आनन्द हलया। यलपनि ने उससे प्राथथना किते हुए किा- मुझे अपना सतत सािचयथ प्रदान किो हिससे मैं तुम्हािे स्तोत्र-गायन पि यल बिाता िहूँ। तुम मेिी यि प्राथथना स्वीकाि कि लो।" सम्बन्धि उससे सिमत िो गया। तत्पिात्

सम्बन्धि, उसके माता-हपता औि यलपनि ने हचदम्बिम् ि ा कि नर्टिा का पूिन हकया। एक हदन सम्बन्धि ने हचदम्बिम् के तीन सिस्र ब्राह्मणों ं में हिव के तीन सिस्र गणों ं के दिथन हकये।

एक बाि सम्बन्धि की इच्छा हुई हक वि ओितुिै ि ा कि हिव ि ी की िाििना किे। वि पैदल ि ी चल पड़ा। श्रान्त-क्लान्त ि ो ि ाने के काण वि ि ाहत्र में मिनपाहड़ में हवश्राम किने लगा। अल्पायु बालक ि ोने के काण उसके कोमल चिण इस दीघथ पद-यात्रा से आक्रान्त ि ो गये। ओितुिै के भगवान् ने मस्ट्न्दि के पुिारियों ं के स्वप्न में प्रकट ि ो कि कि ा - "सम्बन्धि मेि ा यिााँ आ ि ि ा ि ै। मस्ट्न्दि में ि ो मौस्ट्क्तक छत्र औि पालकी ि ैं, उन्हें तुम उसे दे आओ।" पुिारियों ं की हनिा भंग ि ो गयी औि वे मस्ट्न्दि में गये, ि ााँ उन्होंनें देखा हक स्वप्न में उन्होंनें हिन वसुतुओं ं को देखा था, वे सभी विााँ हवद्यमान ि ैं। उन वसुतुओं ं को ले कि वे मिनपाहड गये औि उन्हें सम्बन्धि को दे हदया। उन्होंनें उनको भगवान के आदेि की भी सूचना दे दी हकन्तु सम्बन्धि इस आदेि के पूवथ-परिहचत थे। भगवान ने उनके स्वप्न में प्रकट ि ो कि इन सबसे उनको अवगत कि ा हदया था।

इसके पिात् पुिारियों ं ने सम्बन्धि का यज्ञोपवीत-संस्कि ा हकया। सिुख उन्होंनें वेद-मन्त्रों ं की आवृहत्त तथा इनकी व्याख्या भी की हिसे सुन सम्बन्धि ने वेद वेदांग का कभी अध्ययन निीं ं हकया था; हकन्तु पुिारियों ं के कि वे स्तब्ध ि ि गये।

अप्पि सम्बन्धि की महिमा से पूणथ परिहचत ि ो चुके थे। वे सम्बन्धि के प्रहत अपना सिान प्रकट किने के हलए हचदम्बिम से सीिगाहल गये। सम्बन्धि उनके स्वागत के हलए आगे बढे। विााँ उन दोनों ं हिव-भक्तों ं के बीच ि े वाताथलाप हुआ, वि स्‍नेि तथा प्‍रेम से पूरित था। अप्पि कुछ हदनों ं तक सम्बन्धि के ि ी घि में ि ि े।

मालव (Mazhava) के ि ाि ा की पुत्री एक असाध्य ि ोग से पीहड़त थी ि ाि ा ने ि ोग-हनवृहत्त के हलए अनेक औषहियों ं का प्रयोग हकया। अन्ततः व हतरुपस्ट्च्चल अस्ट्च्चिामम् (Thirupachchil Achchiramam) गया औि पुत्री को का के मस्ट्न्दि में भगवान् के चिणों ं में छोड़ आया। एक हदन सम्बन्धि मस्ट्न्दि में ि ााँ उन्होंनें ि ाि कुमािी को अचेतनावस्था में देखा। उनका हृदय ि हवत उठा। उन्होंनें एक पहदगम का गान हकया औि भगवान् की िाििना की। पहदगम के प्रत्‍येक पद की अस्ट्न्तम पंस्ट्क्त की परिसमास्ट्प्त इस प्रकि ा थी- "क्या इस बाला को उत्पीहड़त किना भगवान् के हलए न्याय-ि ै?" इस पि ि ाि कुमािी तत्काल ि ोग-मुक्त ि ो गयी। उसने सम्बन्धम साष्टांग प्रणाम हकया।

इसके पिात् सम्बन्धि हतरुप्पीिश्विम् के मस्ट्न्दि में गये। उस हदन गिमी पड़ ि ि ी थी। ग्रीष्म के इस उत्ताप से सम्बन्धि की ि क्षा के हलए उस मस्ट्न्दि के अहिष्ठात देव भगवान हिव ने अपने गणों ं ि ाि ा उनके पास एक मौस्ट्क्तक की भेि दी।

सम्बन्धि ने एक पहदगम का गायन हकया हिसके फलस्वरूप उन्हें अकािति के भगवान् से एक सिस्र स्वणथ मुिाएाँ प्राप्त ि ुईं। पहदगम के प्रत्‍येक पद में वे भगवान् से पूछते ि ैं- "क्या मेि े हित-हचन्तन के हलए तुमने इसी मागथ का विण हकया ि ै? क्या यि भी तुम्हािी कृपा का ि ी फल ि ै हक कभी-कभी तुम्हािे पास मेि े हलए कुछ भी देय निीं ं ि ि ि ाता?" उन्होंनें वे स्वणथ मुिाएाँ अपने हपता को दे दीं। ं

सम्बन्धि ने हतरुमरुगल की यात्रा की। विााँ सपथ-दंि से एक यात्री का देिान्त ि ो गया था। उसकी पत्नी उसकी मृतुयु पि हवलाप कि ि ि ी थी। सम्बन्धि ने एक पहदगम गाया हिसके फल-स्वरूप यात्री पुनिीहवत ि ो गया।

एक बाि हतरुवीहलमले में भयंकि अकाल पड़ा। सम्बन्धि को वहााँ के अहिष्ठात देव भगवान हिव से प्रहतहदन एक हनहित मात्रा में स्वणथ की प्रास्ट्प्त िोती थी। वे इस िन से भोजन-सामग्री ले कि हिव-भक्तों ंके हलए भोजन की व्यवस्था किते थे।

एक हदन पाण्ड्ड्य-िाजा के मंत्री कुलस्ट्च्चै ने सम्बन्धि को अपने घि आमस्ट्न्त्रत हकया। वि तथा वहााँ की ििानी मंगयिकिहस, दोनों ंभगवान् हिव के भक्त थे। सम्बन्धि मदुिै गये जिााँ उन्होंनें भगवान् हिव की आिािना की।

वहााँ जैहनयों ंने सम्बन्धि के हिहवि में आग लगा दी; हकन्तु सम्बन्धि के पहदगम-गायन से अहग्न का िमन िो गया। लेहकन पाण्ड्ड्य-िाजा भयंकि ज्वि से ग्रस्त िो गये। हचहकत्सक तथा जैन उनके उपचाि में असमथथ थे। पाण्ड्ड्य-िाजा ने अपने उपचाि के हलए सम्बन्धि से प्राथथना की। सम्बन्धि ने पहवत्र हवभूहत की स्तुहत में एक पहदगम गाया औि उस हवभूहत को िाजा के िािीि पि लगा हदया हजसके फल-स्वरूप वि तत्काल स्वस्थ िो गया।

यहद सम्बन्धि का िमथ श्रेष्ठति िै, तो तत्पिात् यि हनहित हुआ हक सम्बन्धि तथा जैहनयों ंको अपनी-अपनी िचनाओं ं को अहग्न में डाल देना चाहिए। अहग्न में डाले गये ताड़-पत्र अदह्य िि जायेंगे। इस अहग्न पिीक्षा में सम्बन्धा खिे उतिे।

इसके पिात् एक औि पिीक्षण हुआ। जैहनयों ंने किा- "हजन ताड़-पत्रों ंपि यथाथथ िमथ अंहकत िै, वे वैगाई नदी के प्रवाि के हवपिीत हदिा में बिने लगेंगे।" मन्त्री ने पूछा- "इस पिीक्षण में हजसकी पिाजय िोगी, उनके हलए हकस दण्ड की व्यवस्था की जायेगी?" जैहनयों ंने किा- "पिाहजत लोगों ंको प्राण-दण्ड हदया जायेगा।" जैहनयों ंने नदी पि एक ताड़-पत्र िखा जो नदी के प्रवाि का िी अनुगमन किने लगा। सम्बन्धि ने ताड़-पत्र पि अपनी एक कहवता हलख कि नदी में डाल दी जो प्रवाि की हवपिीत हदिा में बिते-बिते हतरुवेगम नामक स्थान पि जा पहुाँची। सम्बन्धि ने ताड़-पत्र को िोकने के हलए एक पहदगम का गायन हकया। ताड़-पत्र रुक गया। मन्त्री ने दौड़ कि उस ताड़-पत्र को उठा हलया औि उसे ले जा कि िाजा को हदखाया।

इसके पिात् कुछ जैहनयों ंको सूली पि चढ़ा हदया गया। जो िेष िि गये, उन्होंनें िैव-िमथ ग्रिण कि हलया। सम्बन्धि िाजा तथा िानी के साथ मदुिै के मस्ट्न्दि में गये जिााँ उन्होंनें भगवान् की अभ्यथथना की।

सम्बन्धि की इच्छा हुई हक वे हतरुक्कोल्लमपुदूि जा कि भगवान् के दिथन किें; हकन्तु उन हदनों ंनदी में बाढ़ आयी हुई थी। नाहवक ने नदी-पाि जाने के हवचाि का परित्याग कि हदया। वि नाव को हकसी स्थान पि बााँि कि किीं ं चला गया। सम्बन्धि एक पहदगम के गायन के पिात् उसी नाव से अपने दल के साथ नदी को पाि कि गये।

तब सम्बन्धि के भक्त यात्रा किते समय िषोन्मत्त िो कि हवजय-दुन्दुहभ बजा ििे थे। इसे देख कि बौद्ध ईर्ष्ाथहग्न में जलने लगे। उन्होंनें अपने वरिष्ठ आचायथ बद्धनस्ट्न्द (Buddhanandi) को इसकी सूचना दी हजन्होंनें सम्बन्धि को िास्त्राथथ के हलए ललकािा।

सम्बन्ध सिनलयि (Sambandha Saranalayar) (जो सम्बन्धि के हिष्य थे दित किा- बद्धनस्ट्न्द के हिि पि वज्रपात िोगा।" िीघ्र िी उनके हिि पि औि अपने गुरु के गीतों ंको हलहपबद्ध हकया किते थे) ने एक पहदगम गाने के आघात हुआ हजसके फल-स्वरूप उनका प्राणान्त िो गया। कुछ बौद्ध वहााँ से भाग गये। जो िेष िि गये. उन्होंनें िैव-िमथ ग्रिण कि अपने ललाट पि पहवत्र भस्म िािण कि ली।

इसके पिात् सम्बन्धि ने हतरुवोत्तूि की यात्रा की। वहााँ एक व्यस्ट्क्त ने आ कि सम्बन्धि से किा- "िे स्वामी, ताड़ के सािे बीज नि-बीज िो गये िैं औि लोग मुझे िास्यास्पद दृहष्ट से देख ििे िैं। कृपया, मुझे आप आिीवाथद " सम्बन्धि ने एक पहदगम गाया औि ताड़ के नि-बीज हवपिीत हलंग में रूपान्तरित िो गये।

मैलापू में हिवनि चेहियिा नामक एक हिव-भक्त िित थे। कुछ हदनों ंकी तपस्या के पिात् उनके एक पुत्री उत्पि िई। हपता ने उसे पूम्पावै नाम हदया। सम्बन्धि की महिमा से अवगत िो कि उन्होंनें अपनी कन्या समेत अपनी सािी सम्पहत्त उनके चिणों ंपि अहपथत कि दी। एक हदन िब पूम्पावै बाहटका में फूल एकत्र कि िििी थी, तब उसे कोबिा सपथ ने िस हलया औि तत्काल िी उसका प्राणान्त िो गया। हिवनि ने उसका अस्ट्न्तम संस्कािा कि उसकी अस्ट्स्थयों ंको एक पात्र में एकत्र हकया औि उस पात्र को कहिकैमिम में िख हदया। उस पात्र को उन्होंनें िेिमी वस्त् में परिवेहष्ठत कि हदया औि विााँ सम्बन्धि को आमस्ट्न्त्रत हकया। सम्बन्धि मैलापू आये िाँ उन्होंनें रुपालीश्विि के दिथन हकये। विााँ भक्तों ंने उन्हें हिवनि की कन्या की मृत्यु की सूचना दी। सम्बन्धि ने हिवनि से वि पात्र ले आने को किा हिसमें उनकी पुत्री की अस्ट्स्थयााँ िखी हुई थीं।ं हिवनि िीघ्र िी वि पात्र ले कि विााँ आ गये। सम्बन्धि ने एक पहदगम गाया औि हिस प्रकाि कमल से लक्ष्मी का आहवभाथव हुआ था, उसी प्रकाि उस पात्र से मृत पूम्पावै का िीहवत पूम्पावे के रूप में आहवभाथव िो गया। हिवनि का हृदय िषथ-हवभोि िो उठा। उस अवसि पि हदव्य लोकों ंसे सुमन-वषथण हुआ। इसके पिात् सम्बन्धि सीगाहल चले गये।

एक हदन ब्राह्मणों ंने सम्बन्धि से किा- वेद-हवहित यज्ञानुष्ठान की पूहतथ के हलए आपके हलए हववाि किना आवश्यक िै। सम्बन्धि की सिमहत प्राप्त किके उनके हपता तथा ब्राह्मणों ंने उनकी वधू के रूप में नम्बन्दिा नस्ट्म्ब की पुत्री का चयन हकया। इस वैवाहिक अनुष्ठान का आयोिन नल्लि पेरुमनम में हकया गया। िब वे मस्ट्न्दि में भगवान् हिव के समक्ष गये, तब वे अपनी वधू तथा अपने अनुयाहययों ंके साथ भगवान हिव की पिम ज्योहत में हवलीन िो गये।

सम्बन्धि अपने एक पहदगम में किते िैं- "िे मूखथ मानव, काल को व्यथथ िी व्यतीत मत िोने दो। नील ग्रीवा वाले हिव की सेवा किो, उनके गुण-गान को सुनो, उनके स्वरूप का ध्यान किो, सवथदा पंचाक्षि-मन्त्र का िप किो औि हिव-भक्तों ंके संसगथ में ििो। उनका नाम सभी आसि हवपहत्तयों ंतथा संकटों ंसे तुम्हािी तथा तुम्हािे परिवाि की िक्षा किेगा। भगवान् हिव की उपासना किो। वे तुम्हें िाश्वत आनन्द तथा अमित्व प्रदान किेंगे।"

माहणक्कवासगि

माहणक्कवासगि िन्मना ब्राह्मण थे। उनका िन्म मदुिै से सात मील दूि वैगाई नदी के तट पि स्ट्स्थत हतरुवधवूि में हुआ था। उनका िीवन-काल ६५० ई. औि ६९२ ई. के मध्य िििा िोगा। कुछ लोग इसे दिम या एकादि िताब्दी में हनिाथरित किते िैं। मदुिै-निेि अरिमदथन पाण्ड्यन से उनका मैत्री-सम्बन्ध था हिसके फलस्वरूप वे उसके मिामात्य िो गये। उनको वाहदवूि नाम से भी अहभहित हकया गया था।

पाण्ड्यन िािा ने माहणक्कवासगि को हवपुल िन-िाहि दे कि िाज्य के हलए अश्व क्रय हेतु भेिा। मागथ में उन्होंनें हतरुपेरुन्दुिै के एक उद्यान में हिव-कीतथन हलए कुछ अश्वों ंके क्रय के हलए भेिा। माहणक्कवासगि ने अपनी यात्रा का हिर्ष्-रूपधािी गणों ंके साथ एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। वे माहणक्कवासगि ना/ भगवान् हिव विााँ एक हिव-योगी का वेि धािण हकये हुए अपने के पास उनको हिव-ज्ञान की दीक्षा देने आये।

माहणक्कवासगि ने उनको साष्टांग प्रणाम कि उनके समक्ष आत्म-समपथण कि हदया। भगवान हिव ने उन्हें िहस्यात्मक हिव-ज्ञान की दीक्षा प्रदान की। माहणक्कवासगि हितना भी िन ले कि चले थे, वि मस्ट्न्दिों ंके हनमाथण तथा हिव-भक्तों ंके भोिन में भक्तिेष िो गया। उन्होंनें अपना सवथस्व त्याग कि कौपीन धािण कि हलया औि इस प्रकाि वे संन्यासी िो गये। िािा को इस बात की सूचना दे दी गयी।

िाि ने माहणक्कवासगि को पत्र ििा यि आदिे हदया हक वे उसके समक्ष िीघ्राहतीघ्र उपस्ट्स्थत िों ;ं हकनुतु माहणक्कवासगि इस आदिे के प्रहत उदासीन िी िि। भगवान् हिव ने उनसे िा- "मैं 'आवहनमूलम्' पि अश्वों ंकी व्यवस्था िि दूँगा। तुम आगे िा िि यि ििी ििा को दे देना।" माहणक्कवासगि मदुिै पहुँचे। विाँ उन्होंनें ििा को वि ििी दे िि िा- "अश्व 'आवहनमूलम्' पि यिाँ आ िायेंगे।" ििा िौ िो उठा। 'आवहनमूलम्' के दो हदन पूवथ तक भी उसे अश्वों ंके हवषय में कोई सूचना निीं ंप्राप्त िो सकी। उसने सोचा हक माहणक्कवासगि ने उनको प्रवंहचत हकया ि। अतः उसने उन्हें िाागिा में िाल िि िोी यन्त्रणा दी।

'आवहनमूलम्' पि प्रातःकाल िी अश्व आ गये। भगवान् हिव उस समय अश्वपाल का वेि ििण हकये हुए थे। भगवान् हिव अपने भक्तों ंके प्रहत हकतने दयालु िैं! ििा अत्यन्त प्रसि हुआ। उसने माहणक्कवासगि को िाागिा से मुक्त िि उनसे क्षमा याचना की हकनुतु िो अश्व विाँ लाये गये थे. वसुतुतः अश्व न िो िि अश्व-रूपिि–ी शगाल थे। यि सब भगवान की लीला से िी िआ था। कुछ समय पित् वे अश्व पुनः शगाल िो गये। ििा क्रोिोन्मत्त िो उठा। उसने माहणक्कवासगि को पुनः प्रताहित हकया। उसने उन्हें मध्याह्न काल में वैगाई नदी की तप्त बालुका–ाहि पि ख़िे िने को हववि हकया; हकनुतु भगवान् की कृपा से उनके चिणों ंको िीतलता प्रदान िने के हलए नदी में बाढ़ आ गयी। इस बाढ़ से सिाा नगि िलाप्लाहवत िो गया।

अमात्यों ंने ििा से िा हक इन वरिष्ठ िमिा के प्रहत दुव्यथविा के िाण िी यि हवपहत्त आयी ि। ििा ने उनको तत्काल िाागिा से मुक्त िि िौ उनके चिणों ंपि अवनत िोि िो िि िल-प्लावन को हनयस्ट्न्त्रत िने की प्राथथना की। माहणक्कवासगि के नदी-तट पि पहुँचते िी िल-प्लावन पूणथतः िान्त िो गया। ििा ने अपनी प्रिा को नदी के तट पि एक-एक टोकिी कीचि़ िालने का आदिे हदया हिसके फल-स्वरूप िािाँि–ाँ तट-भंग हुआ था, वे सभी स्थान अपनी पूवाथवस्था में आ गये; हकनुतु हिस स्थान को भिने का उत्तिदाहयत्व वस्ट्न्द नामक एक वृद्धा को सौंपा था, वि निीं ंभि सका। वसुतुतः उस समय वि हकसी संकट में पि़ गयी थी। करुणा-हवगहलत भगवान् हिव एक श्रहमक का रूप ग्रिण िि स्वयं उसके सिुख प्रकट हुए िौ केवल मुट्ठी-भि चावल के आटे के पारिश्रहमक के प्रहतदान में उन्होंनें उसे अपनी सेवा अहपथत िि दी। वे मात्र लीला िि िि थे। उन्होंनें अपने िाथों ंमें कीचि़ ले हलया। ििा को सूचना हमली हक वस्ट्न्द का श्रहमक कोई काम निीं ंिि िा ि। कुहपत िो िि उसने श्रहमक पि दण्ड प्रिाि िि हदया हिसके आघात का अनुभव स्वयं ििा को तथा उसके साथ समस्त नगिवाहसयों ंको भी हुआ। श्रहमक विाँ से अन्तिाथन िो गया। ििा को माहणक्कवासगि की महिमा को स्वीकृत िना पि़ा।

इसके पित् माहणक्कवासगि ने भगवान हिव के दिथन हकये। भगवान ने उन्हें समस्त तीथथ स्थानों ंकी यात्रा के पित् हचदम्बिम िाने का आदिे हदया। माहणक्कवासगि ने हतरुविामलै, कांचीपुिम तथा अन्य स्थानों ंकी यात्रा की िौ विाँ स्वि–हचत 'हतरुवाचकम् का गायन हकया। इसके पित् वे हवदम्बिम् पहुंचे। उन्होंनें 'हतरुकूवहल' की िचना हचदम्बिम में िी की।

तत्पित् उन्होंनें वाद-हववाद में एक िौथत को पिाहित हकया। सिस्वती ने उस िौथत तथा उसके हिष्ों ंको मूक बना हदया था। इस घटना से प्रभाहवत बौद्ध ििा ने माहणक्कवासगि के पास िा िि िा- "आपने मेिे आचायथ तथा उनके हिष्ों ंको मूक बना हदया था। यहद आप मेिी एक मूक पुत्री को वाचाल बना दें. तो मैं अपनी प्रिा के साथ िैवि–मथ ग्रिण िि लेंगा।" माहणक्कवासगि ने उस मूक कन्या से कुछ प्रश्न पूछे िौ वि बोलने लगी। इसके पित् बौद्ध ििा अपनी समस्त प्रिा के साथ िैवमतावलम्बी िो गया। माहणक्कवासगि की कृपा से िौथत तथा उनके हिष्ों ंको उनकी वाक्–स्ट्क्त की पुनः सम्प्रास्ट्प्त िो गयी।

इसके पित् भगवान् हिव एक ब्राह्मण के रूप में माहणक्कवासगि के पास गये। माहणक्कवासगि ने ब्राह्मण के सिुख सम्पूपूणथ 'हतरुवाचकम्' की आवृहत्त िि दी। ब्राह्मण ने ति़ापत्र पि सब-कुछ हलख हलया। अन्त में उसने

हलखा- "माहणक्कवासगि ने इसकी आवृहत्त की औि हतरुहचत्तम्बल उियिा ने इसे हलहपबद्ध हकया।" ब्राह्मण ने इसे हचत्सबै के पंचाक्षि-सोपान पि िख हदया। हचदम्बिम् के ब्राह्मणों ने इसे माहणक्कवासगि को हदखा कि उनसे इन कहवताओं का अथथ बताने की प्राथथना की। माहणक्कवासगि ने किा- "हतलै्लै नटिाि में िी इन पदों का तात्पयथ हनहित िै।" इसके पित् नटिाि के चिणों पि अवनत-ह्हि िो कि उन्होंनें तत्काल उनका तादात्म्य-सम्बन्ध प्राप्त कि हलया। तब उनकी आयु बत्तीस वषथ थी।

माहणक्कवासगि की कहवताओं की संख्या बावन िै। इन कहवताओं का संकलन 'हतरुवाचकम्' नाम से प्रख्यात िै। ये कहवताएँ सुन्दि, भव्य तथा पे्रिणादायी िैं। इस संकलन में अलंकारिक कहवताएँ संग्रीत िैं। दहक्षण भाित के लोग प्रहतहदन 'हतरुवाचकम' का सस्वि पाठ किते िैं। इन स्तोत्रा को सुन कि श्रोताओं के हृदय तत्काल िहवत िो उठते िैं।

हप्रय पाठको, माहणक्कवासगि के िीवन से आपके सिुख यि तर्थ् पूणथतः स्पष्ट िो गया िोगा हक भगवान् हिव अपने भक्तों के दास िो िाते िैं।

दहक्षण भित के आलविा या वैष्णव िििस्यवादी

भूडमका

बि कभी भी िमथ का िास िोता िै औि िब कभी भी लोग आिहमथक तथा सदाचाि-िून्य िो िाते िैं, तब लोगों ंके आध्यास्ट्कि उत्थान के हलए इस िििती पि मिान् सन्तों ंका आहवभाथव िोता िै। लोगों ंको इस संकट के मुक्त किने के हलए आलविाों ंने दहक्षण भित में िन्म-ग्रिण हकया।

आलविा दहक्षण भित के वैष्णव िििस्यवादी या सन्त िैं। वे दहक्षण भित िी एक हवहिष्ट हनहि िैं। उनका िीवन भगवान् नािायण के प्रहत उनकी उत्कट आस्था तथा उनकी पिािदी हविुद्धता का ज्वलन्त उदािाण िै।

आलविाों ंने दहक्षण भित में भस्ट्क्त की अहग्न-हिखा को पुनः प्रज्वहलत हकया औि इसके साथ िी भागवत-सम्प्रदाय के भस्ट्क्त-मागथ के पुनरुत्थान का प्रािम्भ हुआ। आलविाों ंके आगमन ने भस्ट्क्त-आन्दोलन को एक नयी दीस्ट्प्त, एक नयी गरिमा, एक नयी िीवन्तता, एक नयी ऊिाथ तथा एक नया िीवन प्रदान हकया। आलविा सवथदा ईश्वि के साहिध्य में िििते थे। उनका िीवन ध्यान तथा ईश्विीय संस्पिथ का एक अहविल प्रविा था। वे भगवान् िरि के गुण-गान में सवथदा संलग्न िििते थे। उनके िोठों ंपि सवथदा नािायण, िाम, कृष्ण, अच्युुत, गोहवन्द तथा मिाव के नाम िििते थे। उन्हें सवथत्र भगवान् की उपस्ट्स्थहत का भान हुआ किता था। वे हदव्य सुिा का पान कि ईश्विोन्माद में लीन िििने वाले सन्त थे। उनकी मनोदिा के वणथन में िब्द असमथथ िैं। उनकी महिमा अहनवथचनीय िै। उनका हृदय भगवान् के चिण-कमलों ंपि सवथदा केस्ट्ित िििता था। उनका हृदय भगवान् िरि का वास-स्थान था। भगवान् उनके साथ क्रीिा किते. वाताथलाप किते औि उन्हीं ंके साथ िििते भी थे। आलविा प्रेेम, दया तथा करुणा के मूतथ रूप थे। उनके सम्पकथ में आने वाले प्रत्ेयेक व्यस्ट्क्त का रूपान्तिण िो िाता था।

आलविाों ंमें सभी िाहतयों ंके लोग थे। उनमें से चाि सनातनिमी ब्राह्मण, दो अब्राह्मण, एक दहलत वगीय, एक महिला, चाि अयोहनि तथा तथा पेयालविा (Peyalwar) नामक प्रथम तीन आलविाों ंके िन्म स्थान के एक क्षहत्रय था। पोयगै आलविा (Poygai Alwar), भूदत्तालविा (Bhudattalwar) अहतरिक्त उनके हवषय में हकसी को कुछ भी ज्ञात निीं ंिै।

वैष्णव सन्तों ंकी संख्या िािा िै। ये लोग सवथदा ईश्वि-प्रेेम में हनमस्ट्ज्जत िििते थे: अतः इन्हें आलविा की संज्ञा प्रदान की गयी। वैष्णव िमथ-ग्रन्ों ंमें किा गया िै हक भस्ट्क्त के प्रचाि-प्रसाि तथा लोगों ंको अज्ञान से मुक्त किने के हलए भगवान् िरि ने इन िािा आलविाों ंके रूप में अपने श्रीवत्स, कौसुतुभ, वैियन्ती, वनमाला, श्रीदेवी, भूदेवी, नीलादेवी, अनन्त, गरुि, सुदिथन, पाञ्चिन्य तथा सािङ्ग भिे हदये।

वैष्णव-मत हिन्फ्दू-िमथ का एक अत्यन्त मित्त्वपूणथ तथा माहमथक मत िै। इसके पीछे एक बहुमूल्य इहतिास िै। भित में इसके अनुयाहययों ंकी संख्या अत्यन्त प्रभाविाली िै। िैव-िमथ की अनेक पीहढ़यों ंके पूवथ िी इसका प्रभाव-क्ेषेत्र दहक्षण भित में हवसूतृत िो चुका था। पल्लव तथा चोल िािाओं ंके प्रभुत्व-स्थापन के वषों पूवथ आलविाों ंके पूवथ-पुरुष वािाँ भस्ट्क्त का मागथ प्रिस्त कि िि थे।

पोयगै आलविा, भूदत्तालविा, पेरियालविा औि हतरुमहलसै आलविा का िन्म िापि युग के अन्त में हुआ। अन्य आठ आलविाों ंने इस कहलयुग में िन्म-ग्रिण हकया। किा िाता िै हक उनका िीवन-काल चौथी तथा आठवीं ंतिाब्दी के बीच था।

आलविा सन्तों ंकी भिनावली को 'नालाहयि हदव्य प्रबन्धम् (Nalayira Doya Prabhandam) किा िाता िै। ीउि के लोगों ंका इससे घहनष्ठ सम्बन्ध माहन ने हकया। ये भिन आलविा सन्तों ंके हृदयोदगाि िैं। 'हदव्य प्रबन्धम' था। इन भिनों ंकी संख्या चाि ीिाि िै हिनका संकलन मिान् कृतहवद्य नाद स्पष्ट रूप से परिलहक्षत िोता िै। इसके प्रत्येक भिन में भस्ट्क्त की ज्वलन्त हदव्य ज्ञान की पहवत्र हनहि िै। इसमें वेदों, इहतिास तथा प्राणों ंका हनहिताथथ
ीविन्तता हनहित िै।
वैष्णव-भिन पुिातन िुनों ंमें गाये िाते थे हिन्हें कोल्ली, कुरुन्फ्ी तथा तकेी आहद किते थे। आिकल इन िूनों ंका प्रचलन निीं ंिै। अब तो इन्हें कनाथटक िनों ंमें गाया िाता िै।

'हदव्य प्रबन्धम्' को हतरुवोयमोहल किते िैं। ये आलविों ंके पहवत्र िोठों ंसे हनःसृत अपौरुषेय िब्द िैं। इन्हें वैष्णवों ं ीिाि घिों ंया मस्ट्न्दिों ंमें समवेत स्विों ंमें गाया िाता िै।

ीनि प्राचीन आलवार

पोयगै आलविा, भूदत्तालविा तथा पेयालविा प्राचीनतम आलविा िैं। वे िन्मित सन्त थे। उन्हें आलविों ंका पथ-प्रदिथक किा िाता िै। पोयगै आलविा का िन्म आि से लगभग ५५०० वषथ पूवथ कांचीपुिम् में िापि युग के ८,६२,९६२ वें वषथ में हुआ। भूदत्तालविा का िन्म दूसिे हदन हतरुकदिमलै में हुआ हिसे आिकल मिाबहलपुिम् किा िाता िै। पेयालविा का िन्म इसके दूसिे हदन मामइलै में हुआ हिसे आिकल मैलापुि किा िाता िै।

पोयगै आलविा को भगवान् िरि के िंख पांचिन्य का, भूदत्तालविा को उनकी गदा का आिै पेयालविा को उनके नन्दक अथाथत् उनकी तलविा का अवताि किा िाता िै।

इन तीन आलविों ंके प्रािस्ट्म्भक िीवन तथा इनकी सािना के हवषय में िमें कुछ भी ज्ञात निीं ंिै। दहक्षण आकाथट निपद में दहक्षण ीपेिा नामक नदी के तट पि स्ट्स्थत हतरुक्कोइलि में इन तीनों ंकी भेंट अप्रत्याहित रूप से िो गयी आिै तभी से लोग इनसे परिहचत िो गये। पोयगै आलविा मस्ट्न्दि में भगवान् की पूिा किने लगे। तमसावृत िाहत्र झंझावात तथा वषाथ के किाण आिै अहिक भयावि िो गयी थी। उन्होंनें एक भक्त के घि के एक संकीणथ कुटी में ीिणि ग्रिण की। वे विीं ंध्यानस्थ िो गये। कुछ क्षणों ंके पिात् भूदत्तालविा विााँ आ गये। उन्होंनें पूछा- "यिााँ कौन ीिता िै? क्या हवश्राम के हलए मुझे यिााँ कोई स्थान हमल सकता िै?" पोयगै आलविा ने किा- "आपके हलए स्थान की व्यवस्था िो िायेगी। एक सो सकता िै आिै दो बैठ सकते िैं।" भूदत्तालविा ने किा- "अच्छी बात िै। िम बैठ ीयिें।" उन्हें प्रविे की अनुमहत हमल गयी। अब ये दोनों ंईश्वि के सम्बन्ध में वाताथलाप किने लगे। इसके पिात् विााँ पेयालविा का आगमन हुआ। आते िी उन्होंनें पूछा- "क्या मुझे हवश्राम के हलए यिााँ कोई स्थान हमल सकता िै?" पोयगै आलविा ने किा- "एक सो सकता िै, दो बैठ सकते िैं आिै तीन खड़े िो सकते िैं।" पेयालविा ने किा- "अच्छी बात िै। िम खड़े ीिेंगे।" उन्हें भी प्रविे की अनुमहत हमल गयी। अब वे तीनों ंखड़े िो कि भगवान् िरि का ध्यान किने लगे। उन तीनों ंको विााँ कुछ अिसिता का भान िो ीिा था। उन्हें ऐसा प्रतीत िो ीिा था मानो उनके बीच विााँ कोई आिै भी िो। वि आगन्तुक भगवान् िरि के अहतरिक्त अन्य कोई न था। विााँ हतरुक्कोइलूि के भगवान् हत्रहवक्रम का आगमन हुआ था िो उनके हनकट इस प्रकाि आ गये थे हिससे उनके ीिीि का स्पिथ उन तीनों ंसे िो ीिा था। अब अपने ध्यान तथा िरि-कृपा से उन लोगों ंने नवागन्तुक को पिचान हलया आिै इस प्रकाि उन्हें भगवान् हवष्णु के दिथन िो गये।

उन तीनों ंआलविों ंके आनन्द की सीमा न ीिी। उन्होंनें भगवान् के चिण-कमलों ंपि आि-समपथण कि उनसे उनकी महिमा के गान की क्षमता की याचना की। उनकी प्राथथना स्वीकृत हुई। तत्क्षण उनमें से प्रत्येक ने विीं ं भगवान् िरि की महिमा के अहभवं्यंकि सौ-सौ लहलत तथा सुमिुि गीतों ंकी िचना कि उन्हें ईश्विाहपथत कि हदया।

पोयगै आलविा ने ज्ञान पि, भूदत्तालविा ने भस्ट्क्त पि तथा पेयालविा ने त्याग पि सवाथहिक बल हदया। बिो-प्रास्ट्प्त के पिात् उन तीनों ंने एक िी मूलभूत सत्य का प्रचिा-प्रसिा हकया। उन्होंनें भगवान् हिव की हनन्दा कभी निीं ंकी। हनभाथन्त सत्य से अवगत िो कि उन लोगों ंने अपनी िचनाओं ंके माध्यम से भगवान हिव तथा भगवान् हवष्णु की तास्ट्त्वक एकता का प्रहतपादन हकया। वे उत्तिकालीन मताग्रिी भाष्किों ंसे श्रेष्ठति थे।

इन तीनों ंप्राचीन आलविों ंकी कहवताओं ंके समवेत स्वरूप को अन्ताहदयाँ कहा िाता िै। अन्ताहद की प्रत्येक कहवता का अस्ट्न्तम िब्द उत्तिवती कहवता का प्रथम िब्द िोता िै।

प्राचीन आलविों ंमें िैव-मत के प्रहत पूणथ सहिष्णुता थी। पोयगै आलविा के अनुसाि ईश्वि एक िी िै हिसे हिव तथा हवष्णु के हभि-हभि नामों ंसे अहभहित हकया गया िै। उसका विान या तो गरुि िै या वृषभ औि उसका कमथ या तो प्रलय िै या पालन। उन अवतािों ंका किना िै हक ईश्वि स्वयं को िि तथा नािायण के रूप में अहभव्यक्त किने पि भी एक िी िै।

पेयालविा यि भी किते िैं हक उन्होंनें वेंकट उपहगरि पि भगवान् के दिथन िटा–िूट-कुठाि–ािी हिव के रूप में तथा चक्र-सुदिथन औि मुकुट से सुिोहभत िरि के रूप में हकये थे।

इन प्राचीन आलविों ंका सन्देि था- "इस्ट्यि-हनग्रि किो। भक्तों ंका सत्संग किो। भगवान् नािायण के चिणों ंपि सवथतोभावेन आत्म-समपथण किो सवथदा उनके नाम का िप किो। उनकी उपासना तथा उनका ध्यान किो। उनक महिमा का गान किो। वे हत्रलोक के स्वामी िैं। वे तुम्हािे आश्रय तथ ििण-स्थल िैं। उनकी कृपा प्राप्त किो। तुम्हािी िक्षा उन्हीं ंकी कृपा से सम्भव िै। वे तुम्हािे हृदय में हनवास किते िैं।"

पेरियालविा

पेरियालविा का अथथ िै मिान् आलविा। पेरियालविा का मन सवथसा भगवान् हवष्णु के ध्यान में लीन ििता था; अतः उन्हें हवष्णुहचत्त के नाम मे अहभहित कि हदया गया था। वे आण्डाल के पालक हपता थे। नालविा के अंग-प्रत्यंग की संिचना दहक्षण भाित के आलविों ंया वैष्णव िि्स्यवाहदयों ंमे िी िुई िै। पेरियालविा से ििि का संघटन िुआ िै। अन्य आलविा भगवान् से ज्ञान तथा मुस्ट्क्त के हलए प्राथथना किते थे; हकन्तु पेरियालविा भगवान् के प्रहत अपने वात्सल्य-भाव के काि्ण उनकी मंगल कामना किते हुए उन्हें इन िब्द में आिीवाथद देते थे- "उसके पावन चिण लक्ष लक्ष वषों तक अक्षुण्ण दीस्ट्प्त में अवस्ट्स्थत ििें - पल्लान्ड। इस काि्ण उन्हें एक हवहिष्ट स्ति का सन्त समझा िाता था।

हतरुनेलवेली िनपद के श्रीहवस्ट्ल्लपुत्तूि ग्राम में मुकुन्दाचािी नामक एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण अपनी पहवत्र-हृदय पहतव्रता पत्नी के साथ ििते थे। वि सन्तान प्रास्ट्प्त के हलए प्रहतहदन भगवान् से प्राथथना हकया किते थे। उनकी प्राथथना स्वीकृत हुई हिसके फल-स्वरूप पेरियालविा या हवष्णुहचत्त का िन्म हुआ। उनको भगवान् िरि के विान गरुि का अवताि माना िाता िै।

पेरियालविा एक स्थानीय मस्ट्न्दि में िि कि भगवान् िरि का ध्यान हकया किते थे। उनकी एक सुन्दि वाहटका थी। इस वाहटका से फूल चुन कि मस्ट्न्दि के वटपत्रिायी भगवान् के हलए माला बनाना उनकी हदनचयाथ का एक मुख्य अंग था। वि िन-समूि के समक्ष भगवद्गीता की व्याख्या हकया किते। वि संस्कृत के मिान् पस्ट्ण्डत थे।

उस समय श्री वल्लभदेव पाण्ड्ड्य दिे (हतरुनेलवेली तथा मदुिै िनपद) के अहिपहत थे। उनकी ाि-सभा मदुिै में थी। एक बाि उनकी भेंट एक हविान् ब्राह्मण तीथथयात्री से हुई िो कािी से िामेश्विम् िा ििा था।

ािा ने उससे किा- "आप एक कृतहवद्य ब्राह्मण िैं। मुझे आप अपने हकसी अनुभवि–न्य सत्य से अवगत किाइए।"

ब्राह्मण ने किा - "आप मेिी बात ध्यानपूवथक सुहनए। वषाथ ऋतु के हलए आवश्यक वसु्तुओं की व्यवस्था वषथ के िेष आठ मिीनों में िी कि लेनी से बाहिए। िात के हलए आवश्यक वसु्तुओं का प्रबन्ध हदन में िी कि लेना सेस्ट्द्ध-सित िोता िै। इसी प्रकाि मनुष्य् को इसी िन्म में उन सदगुणों का अिथन कि लेना चाहिए हिनसे उसको िाश्वत आनन्द तथा अमित्व की उपलस्ट्ब्ध िोनी िै।"

पाण्ड्ड्य-िािा ने अपने मुख्य पुिोहित चेल्ब नस्ट्म्ब को बुला कि किा- "मेिे मन में ईश्वि साक्षात्काि की बलवती इच्छा िाग्रत िुई िै। इसकी सम्प्रास्ट्प्त कैसे सम्भव िै?"

पुिोहित ने किा- "इसके हलए एक िमथ-सम्मेलन या िमथ-संसद का आयोिन अत्यावश्यक िै। उसमें सभी सन्तों तथा मिान् योहगयों को आमस्ट्न्त्रत हकया िायेगा औि योग्य व्यस्ट्क्तयों को पुिस्काि के रूप में प्रचुि िन–िाहि भी प्रदान की िायेगी। आप उनके साहिध्य में िि कि उनके अमूल्य उपदेिों के श्रवण-अनुसिण द्वािा स्वयं को लाभास्ट्ित कि सकते िैं।"

ािा पुिोहित के इस प्रस्ताव से सिमत िो गये। इस आयोिन का देि-भि में यथोहचत प्रचाि कि हदया गया। वाद-हववाद में हविेता को पुिस्काि देने के हलए हवपुल िन–िाहि भी हनहित कि दी गयी।

िमथ-संसद का सम्मेलन मदुिै में हकया गया हिसमें देि के प्रत्येक मत के आचायथ ने भाग हलया। वैष्णव, िैव, िाक्त, िैन, बौद्ध तथा पािुपत सभी मतों के अनुयायी उस अनन्य अवसि पि उपस्ट्स्थत थे। वाद-हववाद में सस्ट्हिलत हविज्जनों ने अपने-अपने पक्ष का प्रहतपादन उत्तेिक िब्दों में हकया; हकन्तु उनमें से कोई भी िािा को सन्तुष्ट निीं कि सका।

भगवान् िरि ने हवष्णुहचत्त के स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे िािा के संिक्षण में एक बृि्द् िमथ-सम्मेलन िो ििा िै। उसमें तुम भी किा- "हवष्णुहचत्त, उठो औि मदुिै के हलए िीघ्राहतिीघ्र प्रस्थान किो। विााँ सस्ट्हिलत िो िाओ। मैं तुम्हें तुम्हािी सफलता के प्रहत आश्वस्ट्स्त प्रदान किता िै। तुम विााँ िा कि पाण्ड्ड्य-िािा तथा एकत्र िन-समुदाय को भगवान् िरि की भस्ट्क्त का सन्देि दो।"

हवष्णुहचत्त ने सम्मेलन में भाग हलया हिसमें उनका हवहिष्ट योगदान िि। िािा ने उनका समुहचत स्वागत सत्काि हकया। हवष्णुहचत्त ने विााँ एकत्र पस्ट्ण्डतों के सभी प्रश्नों के सन्तोषप्रद उत्ति हदये। उन्होंने किा- "भगवान िरि देवाहिदेव िैं। वे चिम सत्य िैं। वे एकमात्र िक्षक िैं। उनकी ििण में िा कि उनके चिणों में सवथतोभावेन, स्पष्टरूपेण तथा स्वेच्छापूवथक आत्म-समपथण किो। 'ॐ नमो नािायणाय' - उनके इस मन्त्र का िप किो। उनकी कृपा प्राप्त किो। वे तुमको मुस्ट्क्त प्रदान किेंगे। वे तुमको अमित्व, सवोच्च िास्ट्न्त तथा िाश्वत आनन्द से कृतकृत्य किेंगे। तुम एकमात्र उन्हीं की कृपा से माया को पिाभूत कि पाओगे। वि अन्तयाथमी, सवथव्यापी, कृपा-हसन्धु तथा अनवस्ट्च्छि िैं। उनकी महिमा का गुण-गान तथा उनके नाम का िप किो। उनकी उपासना किो तथा स्वयं को उनके चिणों से कभी हवलग न िोने दो।"

उसी समय एक चमत्किा हुआ। हविैता हविान् के हलए हनिाथरित िनि–ाहि की पोटली िो एक उच्च स्थान पि िखी हुई थी, खुल कि अकस्मात् हवष्ुणुहचत्त के चिणों ंपि आ हगिी। अब पाण्ड्य-ििेि पूणथतः आश्वस्त तथा सन्तुष्ट िो गये।

उन्होंनें पेरियालवाि की चिण-वन्दना कि उन्हें अपना गुरु तथा आध्यास्ट्कि आचायथ मान हलया। आलवाि को िाथी पि बैठा कि मदुैि की स्रिकों ंपि उनकी िोभा-यात्रा का आयोिन हकया गया। िाथी पि बैठे-बैठे आलवाि को अकस्मात् एक हदव्य दृश्य हदखायी पिा। उन्होंनें देखा हक भगवान् िरि गरुि पि आरूढ़ िो कि अपनी पाश्वथवहतथनी लक्ष्मी के साथ सोभा यात्रा का पयथवेक्षण कि ििे िैं।

वे िाथी के दोनों ंपाश्वथ में झूलूते हुए घण्टों ंको झाँझ की ध्ति बिाते हुए गाने लगे। उस समय उनके मन में वात्सल्य-भाव था। उन्होंनें भगवान् को अपनी सन्तान के रूप में देखा। उस समय उन्होंनें हिस गीत की िचना की, उसे पल्लान्ड' किते िैं। इसका अथथ िोता िै अनेक वषथ। यि एक िोमाञ्चक िचना िै। वैष्णव िन इसे अपने घिों ंतथा मस्ट्न्दिों ंमें गाते िैं।

इस गीत का अथथ िै "भगवन्! आपमें अनेक वषथ, कोहट-कोहट वषथ समाहित िों।ं आपके चिण कमल िमािी िक्षा किें। आपकी पाश्वथवहतथनी लक्ष्मी को भी अनेक वषथ प्राप्त िों।ं आपके दहक्षण िस्त में सुिोहभत दीस्ट्प्तमय चक्र तथा युद्ध-क्ेषेत्र में आपकी महिमा को गुहित किने वाले िंख को भी अगहणत वषथ प्राप्त िो। िे भक्त िन, 'ॐ नमो नािायणाय' का गान किते हुए उनके चिण-कमलों ंका पूिन किो। उनके हसन्न-हसन्न नामों ंकी आवृहत्त किो। 'िमािे भगवान् को अगहणत वषथ', इसे उच्च स्विों ंमें घोहषत किो। िमािे परिवाि के सभी सदस्य, िमािे पूवथि तथा िमािे वंििि- ये सभी उनके दास िैं। वे िमें पहवत्र किेंगे; िमािी िक्षा किेंगे।

"पंच-ििि नाग के ऊपि नृत्य किने वाले िे भगवान्, आपको अगहणत वषथ प्राप्त िों।ं मैं आपका हवनम्र सेवक हाँ। मैं आपके परित्यक्त पुिातन पीत वस्त्ों ंको िािण किता हाँ। मैं आपका प्रसाद-ग्रिण अथाथत् आपका उस्ट्च्छष्ट भोिन किता हाँ। मैं आपके िािा िािण की गयी तुलसी-माला पिनता हाँ। आपकी इच्छा िी सवोपरि ििेगी। मैं आपके अहभयान के सफल समापन एवं आपके नाम की महिमा के प्रचाि-प्रसाि के हलए िी िोहवत हाँ। मैं आपका भक्त तथा दास हाँ। मैं आपके मन्त्र 'ॐ नमो नािायणाय' की सवथदा आवृहत्त हकया किता हाँ। िे भगवान्, आपमें अगहणत वषथ समाहित िों।ं"

पेरियालवाि से िमें दो कहवताएँ प्राप्त िुई िैं। पिली कहवता िै पल्लान्ड िोता िै। इसमें स्वि-माधुयथ से पूणथ चाि सौ इकसठ िसोक छन्द िैं। आलवािों ंकी समस्त कृहतयों ंमें पल्लान्ड को सवोच्च स्थान प्राप्त िै। वेदों ंके हिसमें िबाि छन्द िैं। ददूसिी एक संकलन िै हिसे पेरियालवाि हतरुमोहल किा हलए हितना मित्त्व प्रणव का िै. आलवािों ंकी कृहतयों ंके हलए उतना िी मित्त्व पल्लानुुड्ड का िै। पेरियालवाि हतरुमोहल में कृष्ण लीला का वणथन िै। इसमें भागवत का साि-तत्त्व हनहित िै।

पेरियालवाि उच्च स्वि में घोहषत किते िैं "िो लोग भगवान् का स्मिण निीं ंकिते. उनका िन्म-ग्रिण हनष्प्रयोिन िै। उनका िन्म उनके माता-हपता के हलए अकीहतथकि िी हसद्ध िोता िै। िो लोग भगवान् के नाम का िप निीं ंकिते. वे पाप का िी भक्षण किते िैं, पाप का िी पान किते िैं। उनका िीवन व्यथथ िै।"

पेरियालवाि में वात्सल्य-भाव था। वे भगवान् को पुत्रवत् प्याि किते थे। वे किते थे- "मेिे बच्चे, िोओ मत। मेिे हृदय के स्वहणथम पालने पि िे िास्ट्न्तपूवथक सो िाओ। इस नवनीत तथा हमष्टाि को ग्रिण किो। हप्रयवि, तुम इतने उपिवी कैसे िो गये ? तुम गोहपयों ंतथा अपनी माता को कष्ट मत दो। भि तथा िान्तहचत्त बालक बनो। गोहपयााँ तुम्हें

अहभिंहसत किती िैं। वे िब अपने घिों ंसे हनकलती िैं, तब तुम उनका दू पी लेते िो। तुम उनका नवनीत चुिा लेते िो। तुम कल वन में मत िाना। मेिे साथ यिीं ंििना। तुम्हािे पााँव कोमल िैं। तुम श्रान्त-क्लान्त िो िाओगे।

"अब मेिा कृष्ण वंशी-वादन किता िै। हकतनी मिुि िै इसकी ध्वहन! यि िोमांचक तथा अिोद्दीपक िै। यि अमृत से भी अहिक मिुि िै। िब गायें तथा अन्य पिु उसकी वंशी के स्वि सुनते िैं, तब वे मूहतथवत् खड़े िि िाते िैं।"

मदुिै के हनकट अलगिकोइल में ८५ वषथ की आयु में पेरियालवाि का देिान्त हुआ।

समस्त आलवािों ंके मिीमहण पेरियालवाि की महिमा में वृस्द्धि िो औि इनका आिीवाथद िमें प्राप्त िोता ििे !

नीलवाि

नीलवाि प्रथम मिान ििस्यवादी तथा कहव िैं। नीलवाि का अथथ िै िमािा आलवाि। उनको िटकोपि तथा वकुलभिनाि के नाम से भी िाना आता िै; हकन्तु उनका नीलवाि नाम िी अहिक प्रचहलत िै।

किा िाता िै हक नीलवाि का िन्म हतरुनेलवेली िनपद में ताम्रपणी नदी के तट पि स्स्थत हतरुकुकुरिुि में हुआ। इसे आिकल आलवाि हतरुनगिी किते िैं। उन्होंने कहलयुग के प्रािम्भ के तैंतालीसवें वषथ में वैशाखी, प्रमादी पुहणथमा को िुक्रवाि के हदन िन्म-ग्रिण हकया।

नीलवाि के माता-हपता क्रमिः करिियाि या करिमािन तथा उदय नंगैयाि थे। करिियाि वेल्लाला हपल्लई थे। उनके सभी पूवथि भगवान् ििि के हनष्ठावान् उपासक थे। करिियाि का हववाि बाल्यावस्था में िी िो गया था। उनकी पत्नी के हपता का नाम वैष्णव स्थाहनक था िो पहिमी घाट के दूसिे पाश्र्व में स्स्थत हतरुवनपरिसिन ग्राम के हनवासी थे। उदय नंगैयाि एक पहतव्रता नािी थी। नीलवाि को लोग मािन तथा सेनाम्सा नाम से िानते थे।

करिियाि औि उदय नंगैयाि बहुत हदनों ंतक हनःसन्तान िी ििे। उन्होंने सन्तान प्रास्प्त के हलए कठोि तप हकया। एक बाि हतरुवनपरिसिन से लौटते समय उन्होंने मागथ में हतरुकुकुरुनगुहड़ ग्राम के एक मस्न्दि में रुक कि देवता से पुत्र-प्रास्प्त के हलए प्राथथना की। उनकी प्राथथना स्वीकृत हुई हिससे उनको एक हदव्य पुत्र-ित्न की प्रास्प्त हुई। शििु को मािन या नीलवाि के नाम से अहभहित हकया गया।

यि एक हवलक्षण शििु था। न तो वि अपनी आाँखें खोलता था, न िोता था औि न िी अपनी माता का दू पीता था। भगवान् ििि तथा लक्ष्मी ने वैकुण्ठ से हतरुकुकुरुहि आ कि मािन को आिीवाथद हदया।

बालक के िन्म के बािवें हदन उसके माता-हपता उसे नदी-तट पि स्स्थत स्थानीय वैष्णव मस्न्दि में ले गये। उन्होंने हनकट के एक इमली के पेड़ सोलि वषों तक पड़ा ििा। भगवान ने उसको उच्चतम आध्यास्त्मक सत्यों ंमे की िाल से एक पालना लटका हदया हिसमे वि बालक हनिथल-हनिािा अवगत किाने के हलए अपने दतों ंको भेिा। वि बालक बैठाने पि बैठ िाता, खड़ा किाने पि खड़ा िो िाता औि हलटाने पि िास्न्तपूवथक लेट िाता।

एक अन्य हकंवदन्ती के अनुसाि उस बालक के माता-हपता ने उसे एक स्थानीय मस्न्दि में भगवान् ििि के चिणों ंपि डाल हदया: हकन्तु वि एक इमली के पेड़ पि चढ़ कि एक बड़े कोटि में प्रहवष्ट िो गया। विााँ पद्मासन पि बैठ कि उसने आाँखें बन्द कि लीं।ं िीघ्र िी वि समाहिस्थ िो गया।

िमिु कहव चोल दिे-स्ट्स्थत हतरुक्कोइलूि के एक ब्राह्मण थे। वि अपनी बाल्यावस्था में िी चािों ंवेदों ंतथा हवज्ञान का अध्ययन कि चुके थे। एक बिा वि उत्ति भाित के अयोध्या आहद पहवत्र स्थानों ंकी तीथथयात्रा पि गये। एक िात उन्हें दहक्षण में एक हवलक्षण द्युहतमान प्रकिा के दिथन हुए हिसे देख कि वि स्तब्ध िि गये। उस प्रकिा में बालारुण की कास्ट्न्त थी। दूसिी िात भी उन्हें उस प्रकिा के दिथन हुए। उन्हें अनवित तीन िात तक उस प्रकिा के दिथन िोते ििे। िमिु कहव इस प्रकिा के ििस्योद्घाटन में असमथथ थे। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ हक दहक्षण में कोई मिान् घटना हुई िै। वि उस प्रकिा का अनुसिण किते हुए दहक्षण की ओि चल पड़े। अन्ततः िब वि ताम्रपणी-तट पि स्ट्स्थत हतरुकुकुरुहि पहुँचे, तब वि प्रकिा अदृश्य िो गया।

इसके पिात् उन्होंनें ििि में िा कि लोगों ंसे पूछा- "क्या यिाँ पिले कोई हवलक्षण घटना हुई िै?" लोगों ंने उन्हें उस हवहचत्र बालक के हवषय में िो अपने िन्म के कई वषों के बाद तक भी ताम्रपणी नदी के तट पि िेली के पेड़ की छाया में एक पालने में पड़ा हुआ िै। िमिु कहव ने नदी तट ओि घटना स्थल पि िा कि मौन मिान को देखा। वे यि सब देख कि हवस्ट्स्मत िि गये। उन्होंनें यि िानना चािा हक बालक चेतनावस्था में िै या अचेतनावस्था में। उन्होंनें एक बड़ा पत्थि उठा कि मिान के सम्मुख फेंक हदया। इसके फल-स्वरूप मिान की िो आँखें वषों से बन्द थीं, ं वे खुल गयीं ंओि वि देखने लगा।

िमिु कहव ने मिान से एक दुरूि दाथहनक प्रश्न पूछा- यहद हकसी मृत वसुतु के अन्तगथत हकसी लघु वसुतु का िन्म िो, तो उनका िियन-अिन कैसे सम्भव िोगा?"

मिान ने उत्ति हदया- "वि लघु वसुतु उसी से अि ग्रिण किेगी ओि उसी में िियन किेगी।" इसका अथथ यि हुआ हक ििीि वसुतु या प्रकृहत से आवृत सूक्ष्म आत्मा प्रकृहत से िी क्षुधा तृप्त किेगी ओि प्रकृहत को िी उस ििीि मे दुःख-सुख का अनुभव िोगा। वि ईश्विीय आनन्द का उपभोग किते हुए ईश्वि में िी हनवास किेगी।

िमिु कहव इस सूक्ष्म तथा प्रज्ञापूणथ उत्ति से स्तब्ध िि गये। उन्होंनें मिान का हिष्यत्व ग्रिण कि हलया। इसके पिात् उन्होंनें अपने गुरु के चिणों ंमें िि कि ज्ञान-प्रास्ट्प्त का हनिय हकया। मिान ने हतरुहवरुत्तम्, हतरुवाहिरियम्, पेरिय हतरुवन्ताहद ओि हतरुवाय्मोहलि-िैसे आिोद्दीपक भिन गाये। िमिु कहव ने इन भिनों ंको ताड़-पत्र पि हलख हलया िो नािलवाि के दिेान्त के पिात् प्रकिा में आये।

प्रचहलत दृहष्टकोण के अनुसाि हतरुहवरुत्तम् में ऋग्वेद के, हतरुवाहिरियम् में यिुवेद के, पेरिय हतरुवन्ताहद में अथवथवेद के तथा हतरुवाय्मोहल में सामवेद के साि-तत्त्व हनहित िैं; हकन्तुतु यि एक भ्रान्त धािणा िै। वसुतुतः नािलवाि की कृहतयों ंतथा वेदों ंमें कोई साम्य निीं ंिै; हकन्तुतु एक बात इनमें उभयहनष्ठ िै। इनमें ईश्वि तथा इसके साक्षात्काि की हवहियों ंका वणथन िै।

नािलवाि सम्भवतः अहववाहित थे। इस हवषय पि इहतिास मौन िै।

नािलवाि एक मिान् कहव थे। उनका िीवन ध्यान तथा आिोदघाटन का एक सतत प्रवाि था। उनकी कहवताओं ं से उनके िििस्यमय मनोभाव तथा उदात्त आध्यास्ट्त्मक हदव्य दृहष्ट का स्पष्ट िेखांकन िो िाता िै। उनके भिन पूवथ-लेखन के परिणाम न िो कि तात्काहलक प्रसुतुहत िोते थे। वसुतुतः वे आिुु कहव थे।

नािलवाि का दिेान्त पैंतीस वषथ की आयु में हुआ। आलवाि हतरुनगिी के वतथमान मस्ट्न्दि में आि भी उनका प्रहतमा पूिन िोता िै। इस मस्ट्न्दि में या श्रीिंगम िैसे अन्य मस्ट्न्दिों ंमें भी नािलवाि द्वािा िहचत भिन गाये िाते िैं। हतरुमंगै आलवाि ने दहक्षण भाित के श्रीिंगम के मस्ट्न्दि में हतरुवायमोहल के गायन की प्रथा का प्रचलन हकया।

निालविा सवथदा हदव्य चेतना में हनवास किते थे। उनकी चेतना ब्रह्माण्डीय थी। **“सवं डवषुणुमयों जगि्"** - यि उनका अनुभव था। समूपूणथ िगत् हवषुणुमय िै। वि हकसी वृक्ष या हकसी बछ़िे या हकसी स्तम्भ को आहलंहगत कि कि उठते- "यिी िैं मिे भगवान् िरि।" वे नीले आकिा की ओि संकेत कि किने लगते - "मेिा श्यामवणथ कृष्ण यिीं ंिता िै।" उनके नेत्रों ंसे अहविल अश्रु-प्रवाि िोने लगता औि वे आ-हवभोि िो कि गाने, िोने तथा नृत्य किने लगते।

िूलि में खेलते हुए निालविा किने लगते- "यि वामन की ििती िै।" वे अहग्न को आहलंगन कि तीव्र स्वि में कि उठते- "अचुयुत।" इसी प्रकाि वे िीतल वायु के स्पिथ से िोमांहचत िो कि कि उठते- "मेिे गोहवन्द।" पवथत को देख कि वे किने लगते- "िे मिान् नािायण, यिााँ पिारिए।" घनघोि वषाथ में वि कि उठते- "हवषुणु का िुभागमन िो गया।" इतना कि कि वे नृत्य किने लगते। वि हकसी सपथ के पीछे यि किते हुए दौ़िते- "यि हवषुणु की िय्या िै।" उनको िब वंिी का स्वि सुनायी प़िता, देखकि वि कि उठते- "यिी वि नवनीत िै हिसे कृष्ण खाया किते थे।" वि उसे कृष्ण का वंिी-वादन िी समझ लेते। नवनीत हवक्रेता नारियों ंको गायों ंको देख कि वे उनके पीछे यि किते िुए दौ़ि प़िते- "भगवान् कृष्ण यिी िैं।"

निालविा अपने गीतों ंके माध्यम से किते िैं- "न तो मैंने तुम्हािे हलए कभी फूल चुने, न भस्ट्क्तपूवथक तुम्हािी कभी आिािना की। इस्ट्यि-हनग्रि में िी मैं असमथथ िी िििा। अंि-ंल ििा भी मैंने तुम्हािा कभी पूिन निीं ंहकया। मैं सांघाहतक रूप से आित िैं। मुझे दिथन दो। मेिे नेत्र आाँसुओं ंसे आप्लाहवत माता-हपता, िे अमृत-हसनुधु, िे ज्ञान के भण्डाि, मुझे अपने चिण-कमलों ंमें िैं। मैं तुमसे हवयुक्त िो कि कब तक िीहवत िि पाऊाँगा! िे ज्योहतमथय िे मेिे िििि ग्रिण किने दो। मेिे पास अहवलम्ब आ कि मुझ पि अपनी कृपा का वषथण किो। मुझे िन्म-मिण के पाि से मुक्त किो।"

कुलिेखि आलविा

दहक्षण भाित के चेिवंिीय कुलिेखि केिल के िमथहनष्ठ िििा थे। उनकी िििािानी काहलकट थी औि वे िािा दृढ़व्रत के पुत्र थे। उनका िन्म कहलयुग के अट्ठाइसवें वषथ में प्रभव, मासी में िुक्ल पक्ष की िादिी हतहथ को बृिस्पहतवाि के हदन हतिवहिकुकुलम् में हुआ। उस समय पुनवथसु नक्षत्र प्रभाविाली था।

कुलिेखि श्री िाम के पिम भक्त थे। उनको भगवान् िाम की उपासना तथा िाम-भक्तों ंकी सेवा में अत्यहिक आनन्द आता था। वे हविान्, ज्ञानी तथा भक्त थे। संसकृत तथा तहमल- उनको इन दोनों ंभाषाओं ंका ज्ञान था। वेदों ं के वे ममथज्ञ थे। इसके साथ िी वे क्षात्रिमी भी थे। उन्होंनें तत्कालीन दाहक्षणात्य िािाओं ंको पिाभूत हकया। लोगों ंने उन्हें कूिनायक (Koodanayaka) तथा कोंगंािकोहन (Kongarkone) िैसी उपाहियों ंसे सिाहनत हकया था।

कुलिेखि का िासन न्याय तथा बुस्ट्द्धमत्तापूणथ था। वे एक लब्ध-प्रहतष्ठ िािा थे। उनके िाज्य में सवथत्र िास्ट्न्त तथा समृस्ट्द्ध थी। सिी प्रिा का िीवन िास्ट्न्तमय तथा सन्तोषपूणथ था। एक िाज्य का अहिपहत िोने पि भी उनका से उन्हें सन्तोष निीं ंिोता था। उनकी इच्छा श्रीिंगम की तीथथ-यात्रा की थी। वे ध्यान सवथदा ईश्वि पि केस्ट्न्ित िािता था। उनमें वैिाग्य के भाव थे। भौहतक सुखों ंविााँ भक्तों ंके बीच िि कि अपने िीवन के िेष हदन ईश्वि की सेवा तथा कई बाि हकया हकनुतु हकसी-न-हकसी किाण से उनकी यात्रा स्थहगत ध्यान में व्यतीत किना चािते थे। उन्होंनें अपने इस उपक्रम का आयोिन िोती ििी।

ईश्वि के प्रहत कुलिेखि आलविा का दास्य-भाव था। भगवान के भक्तों ंके प्रहत उनकी असीम भस्ट्क्त थी। उनके हलए िििी पि भक्तों ंकी चिणिि– का अनुलेपन पहवत्र भागीिथी में स्नान की अपेक्षा अहिक प्रभावप्रद था।

अमात्यो ोंका कुकरत्य

अमात्यों ंने ििा की िहमथक प्रवृहत्त को एक भ्रान्त हदिा की अिौ उनुमुख किना चािा। एक बाि ििा का मोहतयों ं का एक बहुमूल्य िि खो गया। अमात्यों ंने इस हवषय में ििा के सनेदेि को भक्तों ंकी अिौ उनुमुख किने का प्रयत्न हकया िो ििप्रासाद में सवथदा अबाि गमनागमन हकया किते थे। उन्होंनें ििा से किा हक भक्त ढोंगी िैं।

ििा ने किा- "मैं हसद्ध कि दूँगा हक वास्तहवक भक्त हनदोष िैं। चौयथ कमथ की अिौ उनका झुकाव िो िी निीं ं सकता।" उन्होंनें अपने सेवकों ंको एक पात्र में एक नाग को बन्द किने का आदेि हदया। इसके पिात् उन्होंनें किा- "िो व्यस्ट्क्त भक्तों ंपि चोिी का दोषािोपण किता िै, वि इस पात्र में िाथ िाल दे। यहद उसका आिोप यथातर्थ् िै, तो नाग उसे निीं ंकाटेगा।" हकसी को भी ऐसा किने का सािस निीं ंहुआ; हकनुतु कुलिेखि ने भक्तों ं की हनदोषता को हसद्ध किने के हलए अपना िाथ उस पात्र में हनभथय िो कि िाल हदया लेहकन नाग ने उन्हें निीं ं काटा। ििा इस अहग्न पिीक्षा में सफल िो। मोहतयों ंकी माला भी वास्तहवक चोि से प्राप्त कि ली गयी।

राम के प्रडि कुलिेखर की भक्ति

कुलिेखि को िि-सभा के पस्ट्ण्डत का िामायण का व्याख्याि प्रवचन सुनने में अत्यहिक आनन्द आता था। एक हदन पस्ट्ण्डत िामायण की कथा के उस प्रसंग का वणथन कि िि था हिसमें िाम दण्डकािण्य में खि तथा दूषण के नेतृत्व में चौदि सिस्र िाक्षसों ंकी सेना के हवरुद्ध अकेले युद्धित थे। यि सुनकि कुलिेखि उते्तेहित िो उठे। िाि के प्रहत उनकी भस्ट्क्त तत्क्षण िागृत िो उठी। उन्होंनें सोचा हक उनके िाम संकटग्रस्त िैं अिौ उनकी सिायता के हलए उनका विाँ पहुँचना अत्यावश्यक िै। उन्होंनें अपनी सेना को िाम की सिायता के हलए उद्यत िो िाने का आदेि दे हदया। इस पि पस्ट्ण्डत ने तत्काल यि पढ़ा- "िाम अकेले िी उन चौदि सिस्र िाक्षसों ंका वि कि सुिहक्षत रूप के आश्रम लौट गये।" यि सुनने के पिात् िी ििा की उते्तिना िान्त िो सकी। यि िान कि हक िाम संग्राम में हवियी िो गये िैं, उन्होंनें अपनी सेना को हवघहटत कि हदया। िाम के प्रहत ऐसी गिन तथा उत्कट भस्ट्क्त थी कुलिेखि की !

एक अन्य अवसि पि ििपस्ट्ण्डत िावण ििा सीता िण के प्रसंग का हवविण प्रसुतुत कि िि था। यि सुन कि कुलिेखि अत्यन्त कुरुद्ध िो उठे। वे युद्ध में िावण के वि तथा सीता की मुस्ट्क्त के हलए लंका-गमन के हलए तत्काल उद्यत िो गये अिौ समुि तट पि पहुँच कि समुि में कूद पड़े। उन्होंनें तैि कि िी लंका तक पहुँचने का हनिय कि हलया; हकनुतु उनके समक्ष िाम ने प्रकट िो कि स्वयं कि हदया हक उन्होंनें लंका पि हविय गान कि ली िै। वे कुलिेखि को समुि से हनकाल कि सुिहक्षत समुि-तट पि ले आये। इसके पिात् वे उन्हें उनकी िििानी तक पहुँचा कि अन्तिाथन िो गये।

उनकी िथक-यात्रा

कुलिेखि अन्ततः अपने पुत्र दृढव्रत को हसंिासनारूढ कि श्रीिंगम, हतरुपहत, अयोध्या, हचत्रकूट, वृन्दावन, हतरुकिपुिम् तथा अन्य पहवत्र स्थानों ंके तीथाथटन पि हनकल पड़े।

कुलिेखि हतरुपहत में रुके। विाँ उन्होंनें ये अिोदीपक गीत गाये, "मैं हकसी िाज्य पि प्रभुत्व-स्थापन निीं ंकिना चािता। इस्ट्न्द्रय-ग्राह्य हवषयों ंतथा स्वगथ-सुख के प्रहत भी मैं आकहषथत निीं ंिोता। मुझे संसाि की कोई भी वसुतु प्रलोहभत निीं ंकि सकती। िे भगवान वेंकटेश्वि, मुझे इस पहवत्र उपहगरि पि िि कि अिोत्थान की अवसि प्रास्ट्प्त की अनुमहत दीहिए। इस पहवत्र हतरुपहत के हकसी भी सिोवि में मुझे मत्स्य के रूप में िन्म-ग्रिण किने का वि

दीहिए। वेंकट उपहगरि पि मेिा अचेतन अस्ट्स्तत्व भी मेिे हलए सुखद िोगा। मुझे हतरुपहत के पावन मस्ट्न्दि की दििेली बना दीहिए। मुझ पि ह्रिै िो कि भक्त िन आपका पूिन कि सकेंगे। मुझे इस उपहगरि के उस पथ में रूपान्तरित कि दीहिए िो आपके चिणों ंमें िा कि समाप्त िोता िै। मुझे अपनी वेहदका का एक स्तम्भ या अपने उपहगरि की तुलसी या मस्ट्ल्लका बना दीहिए। िे वेंकटाचलपहत, मुझे वि िल-स्रोत बना दीहिए हिससे आपकी सुमन-वाहटका का अहभहसंचन िोता िै।"

प्रत्येक हवषु्णु-मस्ट्न्दि के गभथ-गृि के सिुख की दििेली को 'कुलिेखि की दििेली' कि िाता िै।

कुलिेखि भगवान् से सवथदा यि प्राथथना किते ििते- "िे भगवान् िाम, मैं आपका भव्य दिथन कब कि पाऊँगा ? मैं अिन्त हूँ। आपके ििुि साहिध्य में मैं कब आ सकूँगा? मेिा अिन्त मन आपके चिण-कमलों ंपि कब स्ट्स्थि िो पायेगा? मेिा हृदय आपके प्रहत एकास्ट्न्तक तथा उत्कट प्ेरम से आप्लाहवत तथा िहवत कब िोगा? मैं सांसारिकता में हलप्त व्यस्ट्क्तयों ंके सम्पकथ में निीं ंिहूँगा। मैं भक्त िनों ंके साथ िहूँगा।"
कुलिेखि आलवाि

एक िात कुलिेखि ने भगवान् नािायण का दिथन हकया हिसके फल-स्वरूप वे हदव्य आनन्द के सागि में िूब गये।

वे िमथहनष्ठ भक्त िनों ंके बीच िि कि अपना समय प्राथथना, उपासना, ध्यान, कीतथन तथा पहवत्र िास्त्ों ंके श्रवण में व्यतीत किने लगे।

उनकी करडियाँ

कुलिेखि भगवान् िाम के उत्कट भक्त थे हिसे तहमल में पेरुमाल कि िाता िै। िाम से तादात्म्य स्थापन के किाण उन्हें कुलिेखि पेरुमाल तथा उनकी कहवताओं ंको 'पेरुमाल हतरुमोहल' कि िाने लगा। इस संग्रि में उनकी एक सौ पाँच कहवताएँ िैं। इनका संकलन 'हदव्य प्रबन्धम' के प्रथम भाग में हकया गया िै। इस संग्रि के आिंभ में उन मस्ट्न्दिों ंकी महिमा का वणथन हकया गया िै हिनके उन्होंने दिथन हकये थे। भगवान् कृष्ण के सम्बन्ध में हिचत बीस कहवताओं ंमें मािुयथ-भाव गहभथत िै औि हचत्रकूट के सम्बन्ध में हलखी गयी दि कहवताओं ंमें भगवान् िाम के िीवन से सम्बस्ट्न्धत मुख्य घटनाओं ंका वणथन िै। वैष्णवों ंका यि दृढ़ हवश्वास िै हक इन दि कहवताओं ंकी आवृहत्त सम्पूणथ िामायण के पाठ के समान िी फलप्रद िै।

कुलिेखि श्रीिंगम् में कई वषथ ििे। उन्होंने विाँ संस्कृत में 'मुकुन्द माला' की िचना की। इसमें चालीस पद िैं। यि कुलिेखि की एक हवख्यात कृहत िै।

कुलिेखि ने श्रीकृष्ण तथा श्रीिाम की लीला, गोहपयों ंके प्ेरम, श्रीकृष्ण की महिमा एवं श्रीिाम की महिमा तथा उनके वीिोहचत अहभयानों ंके सम्बन्ध में अनेक गीतों ंकी िचना की िै।

हतरुनेल्वेली िनपद में स्ट्स्थत आलवाि हतरुनगिी के हनकट ब्रह्मदेिम् नामक गाँव में ६७ वषथ की आयु में कुलिेखि का दिेान्त िो गया।

तोन्डिहिप्पोिी आलवाि

तोन्डिहिप्पोिी आलवाि का िन्म हतरुमंनिगहि के एक चोहलय ब्राह्मण परिवाि में हुआ था। किा िाता ै हक उनका न्मि कहल के २८९ वे वषथ में मंगलवाि को मागथिीषथ कृष्ण पक्ष की चतुदथिी, प्रभव में हुआ। उनको हवप्रनािायण नाम से अहभहित हकया गया। वे श्रीिंगम के भगवान् िंगनाथ के भक्त थे। उनको भगवान् िरि की तुलसी-माला का अवताि किा िाता ै। उनके पास एक सुमन-वाहटका थी। वे प्रहत हदन भगवान् को सुमन-मालाएँ
अहपथत हकया किते थे।

तोन्डिहिप्पोिी आलवाि वेद-हवद्या में पािंगत थे। उनमें गिन वैिाग्य-भाव था। वि अपनी कुहटया में िते, भगवान्
िंगनाथ के प्रसाद से क्षुिा-तृस्ट्प्त किते तथा भगवान् की महिमा का गान हकया किते।

एक हदन देवदेवी नामक एक सुन्दि नृत्यांगना, िो वेश्या थी, अपनी बड़ी बिन के साथ हवप्रनािायण की सुमन-
वाहटका में आयी। उस समय हवप्रनािायण पौिों ंके अहभहसंचन में व्यस्त थे। वे भगवान के नाम का िप कि ििे थे। अतः उन बालाओं ंकी ओि उनका ध्यान निीं ंगया। बड़ी बिन ने किा- "इनका हचत्त सवथदा भगवान् में स्ट्स्थि िता ै। कोई भी नािी इनको प्रलोहभत निीं ंकि सकती।" देवदेवी ने किा- "मैं इनको अपना दास बना लूूँगी।" बड़ी
बिन ने किा- "तुम्हािी यि आिा व्यथथ हसद्ध िोगी। यहद तुम इन्हें प्रलोहभत कि लोगी, तो छि मास तक मैं तुम्हािी दासी बनी िहूँगी।" देवदेवी ने किा- "यहद मैं इन्हें प्रलोहभत निीं ंकि पाऊँगी, तो छि मास तक मैं तुम्हािी सेवा एक दासी के रूप में करूँगी।"

देवदेवी संन्याहसनी का वस्त् िािण कि हवप्रनािायण के सम्मुख खड़ी िो गयी। हवप्रनािायण ने पूछा- "देवी, तुम
कौन िो ? तुम्हें क्या चाहिए?"

संन्याहसनी ने किा- "मेिी माँ चािती ै हक मैं एक वेश्या का िीव व्यतीत करूँ; हकन्तु मैंने उसके इस प्रस्ताव को स्पष्टतः अस्वीकाि कि हदया ै औि अब मैं आपकी ििण में आयी ै। कृपया मेिी िक्षा कीहिए। मैं इस वृक्ष के नीचे िि कि आपकी वाहटका की देखिे-ख करूंगी, भगवान् के हलए माला बनाऊँगी औि आपका बचा-खुचा प्रसाद ग्रिण किती ििूंगी। मैं आपकी सवथ-हवि सेवा करूँगी।" हवप्रनािायण का हृदय करुणा से िहवत िो गया। उन्होंनें उसे वाहटका में कुछ हदनों ति ििने की अनुमहत प्रदान कि दी।

एक हदन मूसलािाि वषाथ िो ििी थी। बेचािी संन्याहसनी वषाथ के िल से भीग गयी थी। वि काँप ििी थी। उसकी दयनीय दिा देख कि हवप्रनािायण का हृदय िहवत िो उठा। उन्होंनें उसे घि के भीति आने की अनुमहत प्रदान कि दी। उसे उन्होंनें अपने सूखे वस्त् हदये। उनके अहतरिक्त विाँ औि कोई न था। अन्ततः उसने उन्हें अपनी औि आकहषथत कि िी हलया। अब हवप्रनािायण ने ईश्वि को भी हवस्मृत कि हदया। वे उसके घि िा कि उसी के साथ ििने लगे। इसके फल-स्वरूप उनकी सम्पहत्त नष्ट िो गयी, उनके सद्गुण नष्ट िो गये, उनकी भस्ट्क्त नष्ट िो गयी, उनकी वाहटका नष्ट िो गयी औि सबसे दुःखद बात तो यि हुई हक अब उनके हलए भगवान् िंगनाथ का भी कोई ं कोई अस्ट्स्तत्व निीं ंििा। वे देवदेवी तथा कामुकता के दास िो गये।

हवप्रनािायण ने अपना सवथस्व देवदेवी को दे हदया। एक हदन उसके घि िा कि उन्होंनें उसका द्वाि खटखटाया।
उस समय वि रिक्त िस्त थे।

देवदेवी ने पूछा- "कौन ै?"

हवप्रनािायण ने किा- "मैं तुम्हािा प्रेमी हूँ।"

देवदेवी ने पूछा- "तुम यिाँ क्या ले कि आये िो?"

हवप्र- "हप्रय देवदेवी, मैं यिााँ अपनी वासना ले कि आया हाँ।"

देवदेवी- "क्या तुम िन ले कि आये िो?"

हवप्र- "मैंने अपना सब-कुछ तुम्हें दे हदया िै औि अब मैं हनःस्व हाँ।"

देवदेवी- "तुम यिााँ से चले िाओ। भहवष्य् में यिााँ कभी न आना।"

हवप्र- "द्वाि खोलो, देवदेवी। कामाहग्न से मैं झुलस ििा हाँ।"

देवदेवी- "इस स्थान को शीघ्र छोड़ दो।"

हवप्र सवथदा देवदेवी के हवषय में िी सोचा किते थे।

भगवान िंगनाथ ने िाथ में मस्न्दि का एक स्वणथ-पात्र हलये देवदेवी का द्वाि खटखटाया।

देवदेवी- "कौन िै?"

भगवान् िंगनाथ - "मैं हवप्र का सेवक हाँ।"

देवदेवी- "तुम यिााँ क्यों ंआये िो?"

भगवान् िंगनाथ - "हवप्र ने तुम्िािे हलए एक स्वणथ-पात्र भेिा िै।"

देवदेवी- "भीति आ िाओ।"

देवदेवी ने द्वाि खोल कि किा- "कृपया मेिे प्रेमी हवप्र को यिााँ शीघ्र आने को किो। मैं उसके दशथन के हलए लालाहयत हाँ।"

भगवान् िंग- "मैं अभी िाता हाँ।"

भगवान् िंगनाथ हवप्र के पास गये। हवप्र उस समय हनःसंज्ञावस्था में थे।

िंग ने किा- "उठो, हवप्र। देवदेवी तुमसे अत्यन्त प्रसन्न िै। उसने तुमको शीघ्र िी बुलाया िै।" हवप्र दौड़-दौड़ उसके पास पहुाँच गये।

देवदेवी ने िहषथत िो कि उनका आदि-सत्काि हकया। वि िात उन्होंनें उसके साथ व्यतीत की।

प्रातःकाल ज्ञात हुआ हक मस्न्दि में स्वणथ-पात्र निीं िै। पुहलस के सूक्ष्म अन्वेषण के फल-स्वरूप वि स्वणथ-पात्र देवदेवी के घि प्राप्त हुआ। देवदेवी ने बताया हक वि स्वणथ-पात्र उसके पास हवप्र ने अपने सेवक के िाथ भेिा था। हवप्र ने किा हक उसके यिााँ कोई सेवक निीं िै औि उसने देवदेवी के पास स्वणथ-पात्र कभी निीं भेिा था। पात्र

मस्ट्न्दि को सौंपं हदया गया, चोिी की वसुतु को स्वीकाि किने के अपिाि में देवदेवी को अथथ-दण्ड हदया गया औि हनसुलापिुी (वोिैयिू, हतरुहचिापल्ली) के िािा के आदेशानुसाि हवप्र को कािागाि में डाल हदया गया।

िािा ने िात में एक स्वप्न देखा। स्वप्न में भगवान िंगनाथ ने उनके समक्ष प्रकट िो कि किा- देवदेवी को वि स्वणथ-पात्र मैंने िी हदया था। मैंने अपने भक्त की मुस्ट्क्त के हलए िी ऐसा हकया। हवप्र पूणथतया हनदोष िै। उसे उसकी वाहटका में भेि दो।" िािा ने उनको तत्काल मुक्त कि हदया।

हवप्र ने पहवत्रािा िनों ंसे पूछा हक उनके पापों ंके हलए हकस प्रकाि के प्रायहित्त की व्यवस्था िै। उन लोगों ंने उनसे किा हक श्री वैष्णवों ंकी चिणिूहल लेना तथा उनके पद-प्रक्षालन के हलए प्रयुक्त िल का पान किना िी सवोत्तम प्रायहित्त िै। हवप्र ने ऐसा िी हकया औि तभी से लोग उनको तोन्डिहिप्पोिी आलवाि किने लगे। िो भक्तों ंकी चिणिूहल को अपने हिि पि िािण किते िैं, उनको यिी संज्ञा प्रदान की िाती िै।

तोन्डिहिप्पोिी आलवाि भगवान् िंगनाथ के मस्ट्न्दि में गये। उनके नेत्र अशुरु-पूरित थे। पिात्ताप किते हुए उन्होंनें किा- "िे भगवान् िंगनाथ, आप मेिे अपिािों ंको क्षमा कीहिए। मैंने एक नािी के पाि में आबद्ध िो कि हववेक-बुस्ट्द्ध को हतलांिहल दे दी थी। मैं एक दुःखी तथा ितभाग्य व्यस्ट्क्त हाँ। मैं आपको हवसूमृत कि चुका था। न तो मैंने आपकी सुतुहत की, न िी आपकी महिमा के गीत गाये। िे करुणा-सागि, आपने मुझे मुक्त हकया िै। आपने मेिी िक्षा की िै। मैं आपका दास हाँ। मुझ पि कृपा कीहिए। आप पहतत-पावन तथा भक्त-वत्सल िैं। आप मेिे माता-हपता, मेिे गुरु, मेिे हिक्षक तथा मेिे सखा िैं। मैं आपके चिण-कमलों ंका परित्याग निीं ंकरूँगा। मैंने आपके चिणों ंमें सवथतोभावेन आत्म-समपथण कि हदया िै।" वे प्रहतहदन मस्ट्न्दि में िा कि भगवान् की महिमा तथा उनके नाम का गुणगान हकया किते थे। वे यि िागिण-गीत गाते थे- "उहठए भगवान् िंग, औि उठ कि मेिे हृदय में हविाहिए।"

तोन्डिहिप्पोिी श्रीिंगम में एक सौ पााँच वषों तक ििने के पिात गोलोक-वासी हुए। हतरुमलै तथा हतरुप्पल्लीलुहच उनकी प्रमुि कहवताएाँ िैं।

तोन्डिहिप्पोिी आलवाि तथा हतरुमंगै आलवाि समकालीन थे। अतः तोन्डिहिप्पोिी का काल छठी िताब्दी िी प्रतीत िोता िै।

देवदेवी भी अपने अनैहतक िीवन के प्रहत हविक्त िो गयी। अपनी सािी सम्पहत्त मस्ट्न्दि को सौंपं कि वि भगवान् िंगनाथ की अहत-हवनम्र भक्त िो गयी।

हतरुप्पन आलवाि

हतरुप्पन आलवाि का िन्म कहलयुग के ३४२ वें वषथ में हतरुहचिापल्ली के हनकट वोिैयिू में हुआ। किा िाता िै हक उनकी िन्म हतहथ दुमथहत, काहतथक, कृष्ण पक्ष की हितीया िै। उस हदन िुक्रवाि था। सािंग मुहन उनको अपने कन्धे पि बैठा कि मस्ट्न्दि ले िाया किते थे; अतः लोग उन्हें मुहन-वािन भी किते थे। उनको श्री हवषुणु के वक्षस्थल पि अंहकत श्रीवत्स का अवताि किा िाता िै।

उनके िन्म का मानव-वंिावली से कोई सम्बन्ध निीं ंिै। एक दहलत दम्पहत उनको िान के एक खेत से उठा लाये थे औि उन्होंनें िी उनका पालन-पोषण हकया था; अतः उनको दहलत िी समझा िाता था।

हतरुप्पन आलविा भगवान् िंगनाथ के भक्त थे। वे अपने र्मिु गीतों ंके माध्यम से भगवान् की सुतुहत हकया किते थे। इसी किाण उन्हें हतरुप्पन आलविा किा िाता था। उनकी इच्छा श्रींगम् के मस्ट्न्दि में िाने की थी; हकनुतु हनम्न ाहित से सम्बद्ध िोने के किाण वे मस्ट्न्दि में प्रवेि का सािस निीं ंकि सकते थे। वे वौयूि से श्रींगम् चले आये औि कावेिी के दहक्षणी तट पि एक कुहटया बना कि ििने लगे। वे अपनी वीणा पि भगवान् िंग का सुतुहत-गायन हकया किते थे।

एक हदन लोकसािंग िीयि भगवान् िंगनाथ के अहभषेक के हलए स्वणथ-पात्र में कावेिी से िल लाने गये। हतरुप्पन आलविा ध्यानस्थ िोने के किाण ब्राह्मण के आने पि विााँ से िट निीं ंसके। इससे कुरुद्ध िो कि िीयि ने उनके ललाट पि पत्थि से प्रिाि कि हदया हिसके परिणाम स्वरूप उनके ललाट से अहविल िक्त प्रवाि िोने लगा। हतरुप्पन आलविा िीयि से क्षमा-याचना कि चले गये।

िब िीयि मस्ट्न्दि में गये, तब उन्होंनें भगवान् के ललाट से िक्त बिते देखा। भगवान् ने िीयि के स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे किा- "हनम्न िाहत के हिस व्यस्ट्क्त को तुमने पत्थि मािा था, वि एक मिान् सन्त िै। वि मुझे अत्यन्त हप्रय िै। उस सन्त को तुम मेिे पास अपने कन्धे पि बैठा कि ले आओ।"

िीयि भक्त की कुहटया में िा कि उनके चिणों ंपि हगि पड़े। उन्होंनें उनसे किा- "भगवान् िंगनाथ ने मुझे आदेि हदया िै हक मैं आपको उनके पास अपने कन्धे पि बैठा कि ले आऊाँ। आप मेिे कन्धे पि बैठने की कृपा कीहिए।" हतरुप्पन आलविा ने इसका घोि प्रहतवाद किते हुए किा- "मैं एक हनम्न िाहत का व्यस्ट्क्त हाँ। मैं आपके कन्धे पि निीं ंबैठ सकता"

हकनुतु िीयि ने उनकी एक न सुनी। उन्होंनें आलविा को अपने कन्धे पि बैठा कि भगवान् िंगनाथ के सिुख िख कि हदया। भगवान् के दिथन से आलविा िषोन्मत्त िो उठे। वे आनन्दाहतिेक में नृत्य किने लगे। उन्होंनें भगवान् का प्रत्यक्ष दिथन कि हलया। उन्होंनें 'अमलनाहदहपिान' नामक अपनी प्रख्यात पदावली में भगवान् का सुतुहत-गान किते हुए किा- "िे भगवान िंग, आपकी इस मिती कृपा के अनुरूप मैंने कोई कहठन तप निीं ंहकया िै। आप मेिे िक्षक तथा करुणा-हसनुधु िैं। मैं आपका दास हाँ। मुझ पि आपका पूणथ अहिकाि िै।"

आलविा ने ईश्वि से तादात्म्य स्थापन कि हलया। विााँ एक प्रोज्ज्वल ज्योहत के दिथन हुए औि आलविा उस हदव्य अहग्न-हिखा में हवलीन िो गये।

हतरुप्पन आलविा के हवषय में हकसी इहतिास-सित हतहथ का हनिाथिण असम्भव िै। वे सम्भवतः तोन्डिहिप्पोिी आलविा या हतरुमंगै आलविा के समकालीन थे।

हतरुमंगै आलविा

हतरुमंगै आलविा का िन्म कहलयुग के ३९८ वे वषथ में चोल देि के हतरुवेयलूि में हुआ। हंकंवदस्ट्न्तयों ंके अनुसाि उनकी िन्म हतहथ गुरुवाि, काहतथक माि की पूहणथमा, नल संवत्सि िै। हतरुमंगै आलविा को पिकाल तथा नील नामों ं
से भी अहभहित हकया गया था। उनको भगवान् ििि के िनुष सािंग का अवताि माना िाता िै। वि एक छोटे-मोटे नायक, योद्धा तथा हनभीक सेनानी थे। वि चोल निेि की सेना के सेनापहत थे।
नील ने हतरुवाहल-हनवाहसनी सदाचारिणी कुमािी कुमुदवल्ली से हववाि किना चािा। वि भगवान् ििि की पिम भक्त थी। उसने उस आदमी से हववाि किना अस्वीकाि कि हदया िो श्रीवैष्णव निीं ंथा। यि सुन कि नील ने

वैष्णव-मत की दीक्षा ग्रिण कि ली। इसके पित् कुमुदवल्ली ने उनसे कि- "यि बाह्य दीक्षा-ग्रिण अथथीन ि ै। आपके हलए एक वषथ तक प्रहतहदन एक ि ििा आठ भक्तों ंको भोिन किाना िौ तत्पित् मुझे प्रसाद देना अत्यावश्यक ि ै।" नील ने इस प्रस्ताव से सिमत िो कि एक वषथ तक प्रहतहदन एक ि ििा आठ वैष्णवों ंको भोिन किाया। इसके पित् वे दोनों ंहववाि-सूत्र में बाँि कि सुखमय िीवन व्यतीत किने लगे।

भक्तों ंकी सेवा में नील का साि ा िन समाप्त िो गया। अतः वे चोल-ि ि ने का िाज्य-ि ुल्क चुका पाने में असमथथ िो गये हिसके परिणामस्वरूप ि ाि ा ने उन्हें कािागृि में िाल हदया। एक िात भगवान ने नील के स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे कि- "काचीपुिम में वेगवती नदी के तल में प्रच्छु ि िनाहि पड़ी ि ुई ि ै। उसे ले िा कि िाज्य-ि ुल्क चुका दो।" नील ने उस िनाहि के िाि ा स्वयं को कि-मुक्त कि हलया। इसके पित् उन्होंनें दस्युवृहत्त ग्रिण कि ली। वे भ्रष्ट समृद्ध िनों ंका िन लूट कि उसे ईश्वि की सेवा में प्रयुक्त किने लगे।

एक हदन भगवान् ि रि तथा देवी लक्ष्मी ने उनको इस पाप कमथ से हवित किना चािा। भगवान ने एक ब्राह्मण का तथा लक्ष्मी ने उनकी पत्नी का रूप ग्रिण हकया। उन्हें देखने से ऐसा प्रतीत िोता था मानो वि-वि ू हववाि के पित घि लौट ि ि े िों।ं नील ने उनके आभूषण लूट हलये िौ उन्हें एक पेहटका में िख हदया। ब्राह्मण की उँगली में एक मुहिका थी हिसे देख कि नील ने कि- "यि मुहिका मुझे दे दो। तुम्हें इस स्वणथ-मुहिका की क्या आवश्यकता ि ै?" ब्राह्मण ने कि- "इस मुहिका को उँगली से हनकालना कहठन ि ै।" नील ने कि- "इसे मैं हनकाल लूँगा।" उसने अपने मुँि से वि मुहिका हनकाल ली।

नील ने पेहटका को उठाने का प्रयत्न हकया; हकन्तु वे उसे उठा निीं ंपाये। उन्होंनें ब्राह्मण से कि- "इसमें तुम्हािी कोई चाल ि ै। तुमने हकसी मन्त्र के बल से इसे भािी बना हदया ि ै। मुझे वि मन्त्र बता दो। निीं ंबताओगे, तो मैं तुम्हािी ित्या कि दूँगा।" तब भगवान् ने उसी ब्राह्मण-वेि में उनके कानों ंमें ॐ नमो नािायणाय' का अष्टाक्षिी मन्त्र अत्यन्त मन्द स्वि में उच्चारित कि हदया। इसके पित् भगवान् ने नील के सम्मुख अपने भव्य स्वरूप को अनावृत कि हदया। नील ने उनके चिण-कमलों ंपि हगि कि उनका िीवाथद ग्रिण हकया।

नील ने हिन पहवत्र स्तोत्रों ंकी िचना की, उनके नाम ि ैं- पेरिय हतरुमोहल, हतरुकुरुताण्डकम्, हतरुनेिुनताण्डकम्, हतरुवेलुकूरिरुक्कै, हसरिय हतरुमिल तथा पेरिय हतरुमिल। अश्रुपूरित नेत्रों ंसे उन्होंनें पित्ताप प्रकट किते हुए कि- कामकृता में मैंने अपना िीवन नष्ट कि हदया; हकन्तु भगवान ने मेिी िक्षा की। मुझसे नृिंस अपिाि िुए। मैने भगवान् तक को लूटा। मैं अत्यन्त भ्रष्ट था; हकन्तु भगवान् के नाम ने मेिी िक्षा कि ली। िय ि रि! िय हवष्णु !"

आकाि से यि स्वि सुनायी पड़ा- "भयमुक्त िो िाओ हतरुमंगै आलवाि। तुमने मेिे प्रहत कोई अपिाि निीं ंहकया ि ै। तुम श्रीिंगम् िाओ। विाँ िा कि मस्न्दि के हनमाथण-कायथ को पूिा किो िौ दूि-दूि तक भस्क्त का प्रचाि-प्रसाि किो। विाँ अपने सुमिुि स्तोत्रों ंकी माला से मेिा पूिन कि मेिे पास लौट आओ।"

हतरुमंगै आलवाि ने मस्न्दि-मस्न्दि िा कि हछयासी मस्न्दिों ंके सम्बन्ध में स्तोत्रों ंकी िचना की। वे हसिगाली में मिान् हिवाचायथ हतरु ज्ञान सम्बन्धि से हमले। सम्बन्धि ने उनका आदि-सत्काि हकया। इस प्रकाि उनका काल छठी िताब्दी प्रतीत िोता ि ै।

हतरुमंगै आलवाि नागपहिनम् से बुद्ध की एक स्वणथ-प्रहतमा ले आये। उसके स्वणथ का उपयोग उन्होंनें श्रीिंगम् के मस्न्दि के हभहत्त-हनमाथण में हकया। एक सौ पाँच वषथ की आयु में वे िाश्वत आनन्द-िाम वैकुण्ठ के वासी हुए।

नािवाि आलवाि हतरुनगरि से श्रीिंगम् आये। हतरुमंगै आलवाि ने उनका भव्य स्वागत हकया तथा उनके उत्प्रेिक स्तोत्रों ंको भस्क्त-भाव से सुना।

हतरुमंगै आलवािा का सन्देि ि◌ै- भगवान का नाम ि◌प अनवित रूप से किो। उनको सवथदा स्मिण किते ि◌ि◌ो। उनके चिणों ◌ंपि सवथतोभावेन आि-समपथण कि उनकी कृपा प्राप्त किो। उनके चिण कमलों ◌ंमें लीन ि◌ि◌ो। भगवान् नािायण ि◌मािे ि◌क्षक तथा मुस्ट्क्त-दाता ि◌ैं। वे करुणा के सागि ि◌ै। भक्तों ◌ंकी सेवा किो। भक्त तथा भगवान एक ि◌ी ि◌ैं। उनकी महिमा का किो। आनन्दाहतिेक में नृत्य किो। भगवान् ि◌रि में हनवास किो। उनके सिस्र नामों ◌ं की आवृहत्त किो। 'हवषुणुसिस्रनाम' का अध्ययन किो।"

हतरुमहलसै आलवािा

हतरुमहलसे आलवािा को भस्ट्क्तसिा भी कि ि◌ा ता ि◌ै। उनके ग्राम का नाम हतरुमहलसे था। उनका हतरुमहलमै आलवािा नाम इस ग्राम के नाम पि ि◌ी पिा। वे भूगु मुहन तथा कनकांहग या कनकवहत नामक स्वगथ की अप्सिा के पुत्र थे।भृगु मुहन की गणना ब्रह्महषथयों ◌ंमें की ि◌ाती ि◌ै। उनके ि◌न्म स्थान का पूवथ नाम महिसिा या महिसािप्रम् था ि◌ी कालान्ति में हवकृत ि◌ो कि महलसै या हनरुमहलसे ि◌ो गया। यि चेिई के हनकट ि◌ै।

कुछ लोग उनका काल छठी या सातवीं ◌ंि◌ताब्दी मानते ि◌ैं: हकनुतु यि एक अनुमान मात्र ि◌ै। हतरुमहलसै आलवािा के न्मि-ग्रिण किते ि◌ी उनकी माँ ने उनके हवकृत स्वरूप तथा अहवकहसत अंगों ◌ंको देख कि उन्हें बेंत की एक झािी में फेंक हदया। हतरुवल्लन नामक एक लिकिािा अपनी पत्नी पंकिवस्ट्ल्ल के साथ वािाँ बेंत काटने गया। वे वािाँ से उस ि◌ििु को अपने घि ते आये। वि ि◌ििु मानव-पयिो से दुग्ध-पान नििीं ◌ंकिता था। एक वृद्ध कृषक उस ि◌ििु के हलए दूि ले आया किता था हिसे वि ग्रिण कि लेता था। इसका यि किाण था हक वि व्यस्ट्क्त हविुद्ध हृदय तथा ि◌मथ-प्राण था। एक हदन उस कृषक ने आलवािा के हलए आिहक्षत दूि का कुछ अंि अपनी पत्नी को हपला हदया। उस प्रसाद के किाण उन्हें एक चमत्किी पुत्र–ित्न की प्रास्ट्प्त हुई। उसका नाम कहिकिन या कहिकृष्णन िखा गया। कहिकिन नामक यि बालक बाल्यावस्था में भस्ट्क्तसिा का बाल-सखा आैि तत्पिात् उनका पिम भक्त ि◌ो गया।

भस्ट्क्तसिा अपने ि◌ीवन के प्रािस्ट्म्भक हदनों ◌ंसे ि◌ी भस्ट्क्त में लीन ि◌ि◌ते उन्होंनें समस्त पहवत्र ग्रन्थों ◌ंका पािायण कि उनमे दक्षता प्राप्त कि ली। उन्होंनें वैहदक तथा अवैहदक ि◌मों का तुलनािक अध्ययन कि वेदान्त, ि◌ैव-मत, बौद्ध ििथ तथा ि◌ैन ि◌मथ का हविद ज्ञान प्राप्त हकया। हवहभि मतों ◌ंके अध्ययन के पिात वे इस हनष्कषथ पि पहुँचे हक उनके हलए ि◌ैव-मत का अनुयायी ि◌ोना श्रेयस्कि ि◌ोगा। फलतः वे ि◌ैव मत के उत्कट प्रेमी ि◌ो गये। ि◌ब वे ि◌ैवमतावलम्बी थे. तब उनको हिववाक्य कि ि◌ाता था। उन्होंनें ि◌ैव मत पि पुस्तकें हलखीं ◌ंआैि इसका प्रचाि भी हकया। हिव के सम्बन्ध में उन्होंनें कई गीतों ◌ंकी ि◌चना की आैि उनका सस्वि पाठ हकया।

पेयालवािा ने हिववाक्य को वैष्णव-मत में दीहक्षत किना चािा। उन्होंनें सोचा हक यहद उन्हें वैष्णव-मत में दीहक्षत कि हलया ि◌ायेगा, तो उनसे उनके अहभयान में अत्यहिक सियोग प्राप्त ि◌ोगा। एक हदन उन्होंनें फूलों ◌ंके कुछ पौिों ◌ंकी ि◌ििें ◌ंको ऊपि कि उनका ि◌ोपण प्रािम्भ कि हदया। इसके पिात् वे उन पौिों ◌ंका अहभहसंचन उस ि◌ल पात्र से किने लगे हिसमें असंख्य हछि थे। यि देख कि हिववाक्य ि◌ँस पिे। पेयालवािा ने कि- "यहद तुम अपने हविुद्ध मत की उपेक्षा कि अन्य मतों ◌ंका ग्रिण तथा परित्याग किते ि◌ि◌ना चािते ि◌ो, तो क्या इसे तुम्हािी आिा के प्रहत तुम्हािा अन्याय नििीं ◌ंकि ि◌ायेगा? ि◌ब तुम स्वयं ि◌ी एक ि◌ास्यास्पद कमथ कि ि◌ि◌े ि◌ो, तब तुम मुझ पि क्यों ◌ंि◌ँस ि◌ि◌े ि◌ो? समस्त ि◌मों के तुलनािक अध्ययन के बाद भी तुम यथाथथ ि◌मथ तथा सवोच्च सत्ता के सम्बन्ध में हकसी हनष्कषथ पि नििीं ◌ंपहुँच सके ि◌ो।" यि सुन कि हिववाक्य की आँखें तत्क्षण खुल गयीं।◌ं उनका पेयालवािा से वाद-हववाद हुआ हिसमें उन्हें पिाहित ि◌ोना पिा। वे पेयालवािा का हिष्यत्व ग्रिण कि वैष्णव ि◌ो गये। उन्होंनें हतरुमहलसै आलवािा का दास्य-नाम ग्रिण हकया।

हतरुमहलसै आलविा के पिम भक्त कहिकिन ने अपने स्वामी की हनष्ठापूवथक सेवा की। एक वृद्ध महिला भी अत्यन्त उत्सिा तथा श्रद्धा के साथ उनकी सेवा किती थी। इस वृद्धा से आलविा बहुत प्रसि थे। एक हदन उन्होंनें उससे किा- "मुझसे तुम वि माँगो। वि तुम्हें अवश्य प्राप्त िोगा।" उस वृद्ध महिला ने उनसे किा- "पूज्यवि, मुझे आप पुनः युवती बना दीहिए।" आलविा ने अपनी आध्यास्ट्कि िस्ट्क्त से उसे एक सुन्दि बाला के रूप में रुपान्तरित कि हदया। कांची के तत्कालीन अहिपहत पल्लव-िािे उस पि आसक्त िो गये औि उन्होंनें उससे हववाि कि हलया।

काल-चक्र अपनी गहत से चलता ििा; हकन्तु िािा ने देखा हक उनकी पहत्न की आयु-वृस्ट्द्ध के अनुसाि उसके सौन्दयथ तथा यौवन का क्षिण निीं िो ििा िै। उन्होंनें उससे पूछा- "तुम्हािे सौन्दयथ तथा यौवन का ििस्य क्या िै?"

िानी ने बताया- "हतरुमहलसै आलविा नामक एक मिान् भक्त हवष्ण-मस्ट्न्दि के सोपान के हनकट ििते िैं। वे एक मिान् भक्त औि दक्ष योगी िैं। कस्ट्न्त्रकिन उनके हिष्य िैं। यिाँ वि प्रहतहदन हभक्षाटन के हलए आया किते िैं। आप हिष्य के माध्यम से गुरु का दिथन कि उनसे वि प्राप्त कि सकते िैं।"

िािा ने कहिकिन को बुला कि उनसे किा- "आप अपने गुरु को यिाँ ले आइए। मैं उनको भेंट दूँगा।" कहिकिन ने किा- "िािन् ! मेिे गुरुदेव यिाँ निीं आयेंगे। वे िािकीय अनुग्रि के इच्छुक निीं िैं। वे केवल हत्रलोक-पहत भगवान् िरि के आदेि का पालन किते िैं।"

तब िािा ने उनसे किा- "िे कहिकिन ! आप मेिी प्रिंसा में एक कहवता की िचना कीहिए। मैं आपको उपिाि दूँगा।" कहिकिन ने किा- "मैं केवल भगवान् तथा उनके भक्तों की महिमा का गुण-गान किता हूँ। मैं सांसारिकता में हलप्त, नश्वि तथा भ्रष्ट िासकों का गुण-गान निीं किता।"

िािा कहिकिन के इन िब्दों से अत्यन्त कुषुब्ध िो उठे। उन्होंनें किा- "तुम हकतने िृष्ट िो। तुमने मेिा प्रिस्ट्स्त-गायन न कि मेिा अनादि हकया िै। तुम मेिे िाज्य से िीघ्र हनकल िाओ।" कस्ट्न्त्रकिन ने किा- "मैं िीघ्र िी आपके िाज्य का परित्याग कि दूंगा।"

कस्ट्न्त्रकिन ने इस घटना की सूचना अपने गुरु को दे दी। तब आलविा ने कहनकिन के साथ अन्यत्र चले िाने का हनिय कि हलया। उन्होंनें विाँ के स्थानीय देवता से भी उस स्थान का परित्याग कि देने का आग्रि हकया। आलविा तथा उनके हिष्य ने उस िाज्य का परित्याग कि हदया। देवता भी अपनी सपथ–िय्या समेत कि उन लोगों के साथ एक हनकटस्थ ग्राम में चले गये।

अब वि िाज्य समृस्ट्द्ध–िून्य िो गया। देवता के प्रयाण के फल-स्वरूप सवथत्र हवषाद का अन्धकाि व्याप्त िो गया। अनावृहष्ट के किाण लोग त्रस्त िो उठे। िािा को अब इस बात का ज्ञान हुआ हक इस हवपहत्त का किाण कहिकिन के प्रहत उनका िृष्ट व्यविाि तथा उनका हनवाथसन िी िै। वि उस स्थान पि गये ििाँ आलविा तथा उनके हिष्य ठििे हुए थे। उनके नेत्रों में पिात्ताप के आँसू थे। उन्होंनें उनसे कांची लौट चलने की प्राथथना की। वे उनकी प्राथथना को स्वीकाि कि अपनी आद्य कुहटया में चले गये। आलविा ने देवता से भी मस्ट्न्दि में लौट चलने के हलए अनुनय-हवनय की। उन्होंनें प्राथथना की-"िे िेषिायी, कहिकिन लौट आया िै औि मैं भी लौट आया हूँ। कृपया आप भी पुनः मस्ट्न्दि में आ िाइए।" भगवान् भी लौट आये। अब िाज्य समृद्ध तथा मस्ट्न्दि ज्योहतमथय िो उठा।

इसके पिात् आलविा ने कुम्भकोणम् के अहिष्ठातृ देवता के पूिन के हलए प्रस्थान हकया। मागथ में वे पेरुमबुहलयूि (सम्भवतः हचदम्बिम्) में रुके। विाँ कुछ ब्राह्मण वेद-पाठ कि ििे थे; हकन्तु आलविा को देखते िी उन्होंनें वेद-पाठ

बन्द कि हदया। उन्होंनें उन्हें अब्राह्मण या हकसी हनम्न ि◌ाहत का व्यस्ट्क्त समझ हलया था। ि◌ब उन्होंनें वेद-पाठ का पुनः प्रािम्भ किना चािा, तब उन्हें इसका स्मिण नि◌ीं ि◌ुआ हक उन्होंनें पिले वेद-पाठ का स्थगन किााँ हकया था। आलवाि उनकी कहठनाई को समझ गये। वे मागथ में पड़े ि◌ान के एक काले दाने को उठा कि उसे हवखस्ट्ण्डत किने लगे। यि देख कि ब्राह्मणों ◌ंको यि स्मिण ि◌ो गया हक उन्होंनें वेद-पाठ उस लेखांश पि बन्द हकया था ि◌ो कृष्णानां हब्रहिनं नख हनहभथिनेम' (यिुवेद १/९) से प्रािम्भ ि◌ोता ि◌ै। ब्राह्मणों ◌ंने किा- "ि◌मािी भूल के हलए ि◌म लोगों ◌ंको क्षमा
कीहिए। आप ि◌सािाण व्यस्ट्क्त न ि◌ो कि एक ि◌िमाा ि◌ैं।"
िब आलवाि गााँव की गहलयों ◌ंसे ि◌ो कि ि◌ा ि◌िे थे, तब मस्ट्न्दि के अहिष्ठात देवता भी उनके साथ ि◌ी चलते ि◌िे। उनका सािचयथ आलवाि को सवथत्र प्राप्त ि◌ोता ि◌ा। इसकी सूचना एक दीहक्षताि को दे दी गयी ि◌ो उस समय एक यज्ञ कि ि◌िा था। दीहक्षताि ने उन्हें अपने यज्ञ-मण्डप में आमस्ट्न्त्रत कि उनका यथोहचत आदि-सत्काि हकया। इससे अन्य ब्राह्मण रुष्ट ि◌ो गये। उन्होंनें आलवाि के प्रहत अवज्ञापूणथ व्यविाि हकया।

दीहक्षताि ने आलवाि से उन ब्राह्मणों ◌ंको सद्बुस्ट्द्ध प्रदान किने की प्राथथना की। आलवाि ने अपने ि◌ृदय पि भगवान् ि◌रि के आन्तरिक रूप का प्रदिथन कि हदया। इससे प्रभाहवत ि◌ो कि ब्राह्मणों ◌ंने उनसे क्षमा याचना की।

आलवाि कुम्भकोणम् पहुाँचे। उनकी प्राथथना पि विााँ के स्थानीय देवता आिावमुदि ने अपनी सपथ-शय्या से अपने शिीि के आिे भाग को उस्ट्त्थत कि हदया। यि आि भी उसी मुद्रा में अवस्ट्स्थत ि◌ै। इस घटना का वणथन आलवाि की 'हतरुचन्दहवरुत्तम्' शीषथक की एक कहवता में हकया गया ि◌ै।

कुम्भकोणम् आ कि उन्होंनें 'हतरुचन्दहवरुत्तम्' तथा 'नानमुखन हतरुवन्ताहद' नामक अपनी दो कृहतयों ◌ंको कावेिी नदी में फेंक हदया। वे इतने हवक्रम तथा आत्म-शून्य थे हक उन्हें स्वयं अपनी कहवताओं ◌ंके प्रकाशन की भी इच्छा नि◌ीं ि◌ोती थी; हकन्तु उनकी ये दोनों ◌ंिचनाएाँ हवपिीत ि◌िा में बि कि भी तट पि आ लगीं।

'हतरुचन्दहवरुत्तम्' काव्य में एक सौ बीस पद ि◌ैं औि 'नानमुखन हतरुवन्ताहद' में हछयानवे कहवताएाँ ि◌ैं। इन दोनों ◌ंको सभी आलवािों ◌ंकी कहवताओं ◌ंके संग्रि 'हदव्य प्रबन्धम' में संग्रहित कि हलया गया ि◌ै। आलवाि ने शैव-मत का परित्याग कि वैष्णव-मत की दीक्षा ग्रिण की थी। अतः उनकी कृहतयों ◌ंमें मताग्रिी भस्ट्क्त के पुट के दिथन ि◌ोते ि◌ैं।

आलवाि ने कुम्भकोणम को अपना स्थायी हनवास स्थान बना हलया। दीघाथयु ि◌ोने के पश्चात् ि◌ी उनका देिान्त हुआ। किा ि◌ाता ि◌ै हक वे अपनी यौहगक शस्ट्क्त के बल पि चाि सिस्र सात सौ वषों तक ि◌ीहवत ि◌िे।

हतरुमहलसै आलवाि का सन्देश ि◌ै- "नािायण सवोच्च सत्ता ि◌ैं। वे एकमात्र गहत ि◌ैं। भगवान् के नामों ◌ंमें मिान् शस्ट्क्त हनहित ि◌ै। मृत्यु के अहिपहत यम अपने दतों ◌ंके कान में अहत मन्द स्वि में किते ि◌ैं हक उन्हें भगवान् ि◌रि के भक्तों ◌ंके हनकट नि◌ीं ि◌ाना चाहिए। उनके साहिध्य का सवथत्र अनुभव किो। वे तुम्हािे हृदय में वास किते ि◌ैं। वे सवथदा तथा सवथत्र तुम्हािे िक्षक ि◌ैं। भगवान से प्रेम किो। आत्म-समपथण ि◌ािा उनकी कृपा प्राप्त किो। तुम्हें शाश्वत आनन्द तथा अमित्व की प्रास्ट्प्त ि◌ोगी।"

आण्डाल

आण्डाल को देवी पृथ्वी या भू देवी का अवताि किा ि◌ाता ि◌ै। वे भगवान् हवष्णु की तीन पाश्वथवहतथहनयों ◌ंमें एक ि◌ैं।
उन्हें ि◌िती पि हवशेषतः हदव्य प्रेमानन्द के उल्लास को अहभव्यक्त किने के हलए भेिा गया था। उनका ि◌न्म दहक्षण भाित के ि◌ामनाथपुिम् ि◌नपद के श्रीहवस्ट्ल्लपुत्तूि नामक ग्राम में हुआ था। हिस प्रकाि ि◌नक को पहवत्र क्षेत्र-कषथण

के समय सीता की प्रास्ट्प्त हुई थी, उसी प्रकि आण्डाल को हवष्णुहचत्त की कुसुम-वाहटका के एक तुलसी-कुंि में पाया गया था। हवष्णुहचत्त पेरिय आलवि के नाम से अहिक हवख्यात िैं। पिम्पिागत रूप से आण्डाल का िन्म कहलयुग के ९८ वें वषथ में हुआ था।

पेरिय आलवि ने िहुि को उठा कि स्थानीय मस्ट्न्दि के भगवान् वटपत्रिायी के चिणों ंपि यि किते हुए िाल हदया- "यि अमूल्य हनहि एकमात्र आपकी िी िै। यि आपकी सेवा किेगी।" तभी आकािवाणी हुई—"हवष्णुहचत्त, इस िहुि को कोदै नाम से पुकािना औि इसका पालन-पोषण अपनी िी पुत्री की भााँहत किना। कोदै का अथथ िै पुष्पिाि्ि श्री। अतः लोग उसे आण्डाल किने लगे। उसे िंगनायकी के नाम से भी पुकािा की भांहत सुन्दि। िहुि को भगवान् िंगनाथ का स्नेि तथा उनकी कृपा प्राप्त िोता था।

आण्डाल एक अहिसािाण, िमणीय तथा अमूल्य बाहलका थी। िब वि िाल-सुलभ स्वि में तुतलाती थी, तब भी उसके कण्ठ से भगवान् िरि का नाम िी हनकलता था। वि अन्य बाहलकाओं ंकी भााँहत निीं ंखेलती थी। वि फूल एकत्र कि भगवान् के हलए माला गूंथती। वि अपने हपता के साथ कुसुम-वाहटका में काम किती थी। वि भगवान् का प्रिस्ट्स्त-गायन किती थी औि उसे पुिाणों ंके अध्ययन तथा श्रवण में आनन्द का अनुभव िोता था।

श्रीिंगम् के भगवान् िंगनाथ के प्रहत उसके मन में गिन भस्ट्क्त थी। उसका िीवन एकमात्र उन्हीं ंके हलए अहपथत था। वि सवथदा उन्हीं ंके हवचािों ंमें मग्न िेती तथा उनकी सुतुहत किती ििती थी। वि मािुयथ-भाव के हिखि पि आरूढ़ िो गयी थी। यि भाव प्रेमी-प्रेहमका के बीच स्थाहपत िोता िै।

वि िो माला भगवान् के हलए बनाती थी, उसे स्वयं पिन कि दपथण के समक्ष खडी िो िाती औि अपनी सुन्दिता की प्रिंसा किते हुए किती - "क्या मैं अपने भगवान् िंगनाथ द्वािा स्वीकाि कि ली िाऊाँगी? क्या मेिा सौन्दयथ मेिे प्रहत उनमें प्रेमाहग्न प्रज्वहलत कि सकता िै?" यि सब उसकी हदनचयाथ का एक आवश्यक अंग बन गया था। एक हदन मस्ट्न्दि के पुिािी ने उसकी माला को इसहलए अस्वीकाि कि हदया हक उसमें बाल था। पेरिय आलवि ने नये फूल चुने औि भगवान् के हलए उस हदन नयी माला बनायी। दूसिे हदन पुिािी ने किा हक माला के फूल कुछ मुिझाये हुए थे। पेरिय आलवि ने इसके कािण की खोिबीन का प्रयत्न हकया।

एक हदन पेरिय आलवि ने पिदे की ओट से वि सब-कुछ देख हलया िो उनकी पुत्री कि ििी थी। उसने नयी माला पिन ली। इसके पश्चात् वि दपथण के सम्मुख खडी िो कि किने लगी- "िे भगवान् िंगनाथ, िे मेिे हप्रयतम, उसके पास दौडे कि गये, उन्होंनें किा- "मेिी हप्रय पुत्री, यि तुम क्या कि क्या तुम्हें अब मेिे सौन्दयथ से प्रेम िै?" वि प्रफुल्ल-हचत्त थी। उसके हपता िेिे िो ? तुमने भगवान के हलए प्रयुक्त िोने वाली माला को अपहवत्र कि हदया िै। कृपया भहवष्य् में ऐसा मत किना।"

पेरिय आलवि ने नयी मालाएाँ बना कि भगवान को अहपथत कीं।ं उस िात उन्होंनें एक स्वप्न देखा। भगवान ने स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे किा- "आण्डाल द्वािा िािण की िुई मालाएाँ मुझे अत्यन्त रुहचकि लगती िैं। वि भू देवी औि मेिी अिाांहगहन िै हिसने मानव-रूप में अवताि ग्रिण हकया िै। अब मेिे पास उसकी पिनी हुई मालाएाँ िी लाया किो।" उस हदन से लोग उसे 'सूहि कोिुत्ता नाहचयाि' किने लगे। िो स्वयं पिले माला िािण कि भगवान् को इसके पश्चात् अहपथत किती िै, उसे इसी नाम से नाहमत हकया िाता िै।

आण्डाल के हलए श्री हवस्ट्ल्लपुत्तूि वृन्दावन िो गया। वि विााँ की समस्त नारियों ंको गोहपयााँ समझती थी औि उनसे कृष्णोपासना का अनुिोि किती थी। उसकी सस्ट्खयााँ गोहपयााँ िो गयीं।ं वटपत्रिायी श्रीकृष्ण िो गये। आण्डाल भी स्वयं को गोपी समझती थी। वि श्रीकृष्ण से एक गोपी की िी भााँहत प्रेम किती थी औि उनके हलए लालाहयत ििती थी। अपनी सस्ट्खयों ंके साथ वि श्रीकृष्ण के िीवन के कुछ प्रसंगों ंका मञ्चन किती थी। उसकी सुन्दि कहवताओं ं

'हतरुप्पावै' अिौ 'नाहचयिा हतरुमोहल' में ऐसे प्रसंगों ंका सुखद वणथन हकया गया िै। ये कहवताएँ मिुयथ तथा ििसोन से ओत-प्रोत िैं।

पेरिय आलविा आण्डाल के हलए एक वि की खोि किने लगे। आण्डाल ने उनसे कि हदया- "मैं हकसी नश्वि से हववाि निीं ंकरूँगी। मेिा मन श्रीिंगम् के भगवान् िंगनाथ पि केस्ट्ित िै। मैंने अपना िीवन एकमात्र उन्हीं ंको समहपथत कि हदया िै। वे मेिे पहत िैं। वे मेिे स्वामी िैं। वे मेिे सवथस्व िैं।
श्रीकृष्ण के मिनिो िाथों ंको िी मुझे आबद्ध किने दीहिए। यहद मेिा हववाि हकसी नश्वि से हुआ, तो मेिा प्राणान्त िो िायेगा। मैं केवल भगवान् िंगनाथ से िी हववाि करूँगी।"

पेरिय आलविा ने एक स्वप्न देखा हिसमें भगवान् िंगनाथ ने उनसे उनकी पुत्री को उस पहवत्र स्थान पि वधू-वेि में लाने को किा। श्रीिंगम मस्ट्न्दि के व्यवस्थापक ने भी ऐसा िी स्वप्न देखा।

आण्डाल को चौदि वषथ की आयु में श्रीिंगम् लाया गया ििाँ उसने मस्ट्न्दि के गभथ-गृि में भगवान् को सपथ–श्य्या पि देखा। आण्डाल तत्क्षण उनके साथ एकाकाि िो गयी। उसके िीवन की आकांक्षा की पूहतथ िो गयी। उसने संसाि को भगवद्-भस्ट्क्त की महिमा की झलक हदखा दी।

आण्डाल पाँच वषथ की आयु से िी हतरुप्पावै गाने लगी थी। इसमें तीस ििमु तथा ििसोक पद िैं। दूसिे संग्रि में इन पदों ंकी संख्या एक सौ तैंताहलस िो गयी। श्रीवैष्णव प्रहतहदन प्रातःकाल हतरुप्पावै का पाठ किते िैं।

हतरुप्पावै में हदसम्बि मास में हकये िाने वाले एक व्रत का हवविण िै। यि भागवत की एक कथा पि आिारित िै। गोहपयाँ कात्यायनी देवी के सिान में इस व्रत का अनुपालन किती थीं।ं उनको हवश्वास था हक इसके माध्यम से उनको श्रीकृष्ण का दिथन सुलभ िो िायेगा।

'नाहचयिा हतरुमोहल' भगवान् के प्रहत आण्डाल की भस्ट्क्त को अहभव्यक्त किता िै। वि भगवान् के दिथन के हलए काम की प्राथथना तथा चातक की चिण-वन्दना किती िै। वि उनके पास मेघ को अपना दूत बना कि भेिती िै। वि स्वप्न में उनको प्राप्त कि िहषथत िोती िै। वि अपने हपता तथा सम्बस्ट्न्धयों ंको स्वयं को कृष्ण के पास ले िाने की प्राथथना किती िै। अन्ततः भगवान् प्रकट िो कि उसे अपना लेते िैं। इसकी एक दिी का गायन श्रीवैष्णवों ंके हववाि के अवसि पि हकया िाता िै। अस्ट्न्तम पंस्ट्क्त में नव-दम्पहत को आिीवाथद हदया गया िै।

आण्डाल अन्य नारियों ंको गोहपयाँ समझ कि उनसे कृष्ण की उपासना का अनुिोि इन िब्दों ंमें किती िै-

"ििमु वृन्दावन की हप्रय गोहपयो, उठो । पहक्षयों ंके गायन का प्रािम्भ िो चुका िै। मस्ट्न्दि से िंख-ध्वहन आ ििी िै। क्या यि ध्वहन तुम लोगों ंको सुनायी निीं ंपिती िै? क्या तुम लोग गोहपयों ंके दहि-मन्थन के स्वि निीं ंसुन ििी िो? क्या तुम लोग बहिि िो ? िमें ज्योहतमथयी यमुना में स्नान कि वृन्दावन के वंिी-वादक तथा देवकी के िषोल्लास भगवान् कृष्ण का दिथन अिौ इसके पिात् नव-चयहनत सुमनों ंसे उनका पूिन किना चाहिए। पुहत्रयो, उठो। अब अिौ अहिक िय्या पि मत ििो। अपने ििा खोलो। कमल प्रसुफुहटत िो चुके िैं।

"क्या तुम लोग अभी तक सो ििी िो? यि लज्जािनक िै। िीघ्र उठो। ब्राह्ममुहतथ बीत िायेगा। यि भगवान् के महिमा-गान, प्राथथना तथा ध्यान का सवोत्तम समय िै।"

आण्डाल भगवान् को इस प्रकाि सम्बोहित किती िै-

"भगवान्, ि म तुम्हािे गुण तथा पहवत्र साहित्य में आये िैं। िमािे हृदय में स्वयं को आसीन कीिए। िमें अपने सतत स्मिण की िस्ट्क्त प्रदान कीिए। िमािे अन्तितम में हदव्य ज्योहत को हनिन्ति प्रोज्ज्वल िोने दो। िे गोहवन्द, िमें अपनी कृपा-दृहष्ट से कृताथथ कीिए। िे िनादथन, िमें अपनी अहवित सेवा का अवसि प्रदान कीिए। िे अच्युत, तुम िमें ऐसा वि दो हिससे िम तुममें स्थायी रूप से हनवास कि सकें। िमािा मन तुम्हािे चिण-कमलों ंमें लीन िो। िे माधव, िमािे िोठों ंपि सवथदा तुम्हािा िी नाम िो।

“योहगयों ंिािा पूहित तुम्हािे उन चिणों ंकी महिमा में वृस्ट्द्ध िो हिन्होंनें हत्रलोक को नाप हलया था। िे नृहसंि, आपने प्रह्लाद की िक्षा के हलए स्तम्भ से हनकलते हुए हवकिाल हिण्य िो हवदीणथ कि हदया था। आपकी महिमा में वृस्ट्द्ध िो। काहलयनाग के फण पि नृत्य किने वाले िे परिरक्षक, आप महिमास्ट्न्वत िो िायेंगी, आपने िासलीला में नृत्य कि गोहपयों ंको िषथ प्रदान हकया था। आपकी महिमा में वृस्ट्द्ध िो।"

भगवान् तथा आण्डाल का हववािोत्सव िुलाई मास में दहक्षण भाित के अनेक मस्ट्न्दिों ंमें धूम-धाम से मनाया िाता िै।

आण्डाल, भू देवी तथा धिती माता महिमास्ट्न्वत िों! ं उन्हें प्रणाम ! उनका आिीष िमािे ऊपि िो !

सन्त आलवन्दाि

दसवीं ंिताब्दी में मदुिै एक पाण्ड्य-िािे के अहधकाि में था। यि अहमल हवद्या का केंद्र था औि विाँ का िािा हवद्वत्ता का मिान् संिक्षक था। िानी भी हवदुषी महिला थी।

विाँ हवद्वान कोलािल नामक एक प्रख्यात पस्ट्ण्डत था हिसे िािा का संिक्षण प्राप्त था। विाँ की हवद्वन्मण्डली उससे आतंहकत ििती थी। वि अत्यन्त उद्धत तथा अहिष्ट था। वि अन्य हवद्वानों ंसे कि के रूप में बलात् धन हलया किता था। उसे चुनौती देने का सािस हकसी में निीं ंथा। वि एक कठोि-हृदय व्यस्ट्क्त था। वि पालकी में चलता था औि अनेक लोग उसका अनुगमन किते थे। ये लोग उसकी हवद्वत्ता का हवज्ञापन हकया किते थे। यहद हकसी पस्ट्ण्डत के ऊपि उसकी िुल्क िाहि िेष िि िाती थी, तो वि उसके प्रहत अत्यन्त कठोि व्यविाि किता था।

ये हकसी वास्तहवक हवद्वान् पस्ट्ण्डत के लक्षण निीं ंिैं। हवद्वत्ता हृदय में गवथ तथा आत्म-प्रवंचना को बद्धमूल किती िै हिससे अिंवृहत्त औि अहधक प्रबल िो उठती िै। हकन्तु यि हवनाि का कािण िै।

भाष्याचायथ एक हवनम्र हिक्षक थे। कोलािल के अहभकताथ िािमिस्ट्न्त्र एक बाि उनकी पाठिाला में आये। उस हदन भाष्याचायथ पाठिाला में निीं ंथे। िािमिस्ट्न्त्र ने यमुना नामक एक हवद्याथी से किा- तुम अपने गुरु से कि देना हक वे िुल्क ले कि पस्ट्ण्डत कोलािल से हमल लें। यहद आि वे उनके निीं ंहमलेंगे, तो परिणाम अनथथकािी िोगा।" हवद्याथी ने किा- "िम धृष्ट तथा गवोन्मत्त मुखों ंको एक भी पैसा निीं ंदेंगे। आप िा कि अपने पस्ट्ण्डत से ििी बात िब्दिः कि दीहिए।"

यमुना के इस धृष्ट उत्ति से कोलािल ने उग्र रूप धािण कि हलया। उसने भाष्याचायथ को वाद-हववाद के हलए आमस्ट्न्त्रत कि हदया। भाष्याचायथ भयभीत िो उठे। यमुना ने किा- पूज्य गुरुदेव, आप कोलािल को सूहचत कि दीहिए हक आपका हिष्य उनको हकसी भी वाद-हववाद के हलए चुनौती दे ििा िै। मैं उनकी आत्म-प्रवंचना को

अंकृहित कि आपके हलए अक्षय कीहतथ अहिथत कि लूाँगा। संकोच के साथ ि सी, भार्ष्ाचायथ ने हिर्ष् के प्रस्ताव का अनुमोदन कि हदया।

यमुना पाण्ड्ड्य-िीने की िि-सभा में गया औि वि हनभथय िो कि कोलिाल के सुिख बैठ गया। सब लोगों ने यिी सोचा हक पस्ट्ण्डत इस बालक को पिाहित कि देगा। िि का भी यिी अनुमान था; हकन्तु िानी यमुना की हनहित हविय के प्रहत पूणथतः आश्वस्त थी। उसने िि से कि- "यहद यि बालक पस्ट्ण्डत को पिाहित निीं किेगा, तो मैं आपकी दासी िो िाऊाँगी।" िि ने कि- "यहद यि बालक हवियी िोगा, तो मैं उसे अपने िाज्य का आधा दे दूाँगा।"

वाद-हववाद प्रािम्भ हुआ। पस्ट्ण्डत ने स्ट्क्लष्ट प्रश्न पूछे हिनके बालक ने यथोहचत उत्ति दे हदये। अब पस्ट्ण्डत ने कि- "िे धृष्ट बालक, अब तुम मुझसे कोई भी प्रश्न किो। मैं उसका उत्ति दे दूाँगा।"

यमुना ने कि- "पस्ट्ण्डत िी, मैं किता हाँ हक आपकी मााँ बन्ध्या निीं िै, िि धमथहनष्ठ िैं औि िानी पहवत्र िैं। यहद आप कि सकते िैं, तो मेिे इस वक्तव्य का खण्डन कीहिए।" पस्ट्ण्डत हकंकतथव्यहवमूढ़ िो गया। वि इसका कोई उत्ति निीं दे सका।

िि ने यमुना से कि- तुम अपने वक्तव्य का स्वयं खण्डन किो।"

यमुना ने कि- "एक वृक्ष से उपवन की सृहष्ट निीं िोती औि एक सन्तान को सन्तान निीं समझना चाहिए। पस्ट्ण्डत िी की मााँ ने केवल एक सन्तान को िन्म हदया िै। इस स्ट्स्थहत में उन्हें बन्ध्या िी कि िायेगा। िि पूणथतः धमथ-हनष्ठ निीं िो सकता: क्योंहक उसे प्रिा का भी पाप ग्रिण किना पड़ता िै। एक नािी सवथप्रथम अहग्न, वरुण तथा इन्द्र को अहपथत की िाती िै। इसके पश्चात् िी वि पहत-समहपथता िोती िै। अतः िानी भी पहवत्र निीं िै।"

पस्ट्ण्डत लज्जा के कािण अवनत-हिि िो गया। श्रोताओं ने युवा मेधावी छात्र की बातों पि कितल-ध्वहन किते हुए िषथ प्रकट हकया। िि ने भी यमुना की कुिाग्र बुस्ट्द्ध की प्रिंसा किते िए उसे अपने िाज्य का आधा प्रदान कि हदया। िानी ने उसे आलवन्दाि (िो िासन किने आया) नाम से अहभहित हकया।

अब यमुना िासक औि पस्ट्ण्डत उसका सेवक िो गया। भार्ष्ाचायथ के आनन्द की सीमा निीं ििी। यमुना का प्रिासन बुस्ट्द्धमत्तापूणथ तथा न्यायपूणथ था। िाज्य में िास्ट्न्त तथा व्यवस्था थी।

आलवन्दाि मिान् भक्त नाथमुहन के पौत्र थे। िब वे मात्र दस वषथ के थे, तभी उनके हपता का देिान्त िो गया था। नाथमुहन ने उनको श्रीिंगम् के भगवान् श्री िंगनाथ की सेवा में अहपथत कि हदया।

मनक्काल नस्ट्म्ब नाथमुहन के हिर्ष् थे। वे मिान् कृतहवद्य तथा भक्त थे, आलवन्दाि की बाल्यावस्था में िी नाथमुहन का देिान्त िो चुका था। मृत्यु के पूवथ नाथमुहन ने मनक्काल नस्ट्म्ब से कि- "मेिे पौत्र के वयस्क िो िाने पि उसे उस अमूल्य हनहध का दिथन किा देना िो मुझे िीवन अत्यन्त हप्रय ििी िै। वि बहुमूल्य हनहध िै। आलवन्दाि के हलए मैं यिी हवपुल िन-िाहि पैतृक सम्पहत्त के रूप में छोड़ कि िा ििा िै। यि िंगनाथ के मस्ट्न्दि के गभथ गृि में प्राप्त िोगी।" नाथमुहन के ये अस्ट्न्तम िब्द थे।

िािा आलवन्दाि अपने िािसी िीवन से सन्तुष्ट निीं थे। वे आत्मा की आन्तरिक तथा अक्षय िास्ट्न्त के अहभलाषी थे। अपने ितुरुओं के हवरुद्ध युद्धित िोने के हलए उन्हें हवपुल िन िाहि की आवश्यकता थी। संकट की इस घड़ी में मनक्काल नस्ट्म्ब मदद आये। उन्होंने आलवन्दाि को दीहक्षत किना तथा उनको अपने गुरु नाथमुहन का सन्देि देना

चिाा। वे उनके िसोइये से हमले। उन्होंनें उसे एक हदव्य अमृत वटी देते हुए किा- "मैं इसे तुम्हें प्रहतहदन हदया करूाँगा। तुम इसे िििा की सब्जी में हमला हदया किना। इससे सब्जी स्वाहदष्ट िो िायेगी औि वि उसे प्रेेमपूवथक ग्रिण किेंगे।" िसोइये ने उनके आदेि का पालन हकया। िििा को वि सब्जी अत्यन्त स्वाहदष्ट लगी। एक हदन नस्ट्म्ब वि बूटी निीं ला सके। िििा को उस हदन की सब्जी सुस्वादु निीं लगी।

आलवन्दाि ने िसोइये से पूछा- "आि सब्जी स्वाहदष्ट क्यों निीं लगी?" िसोइये ने किा- "िििमिाि, आि भक्त मिोदय बूटी ले कि निीं आये।" आलवन्दाि ने किा- "हकस भक्त की बात कि ििे िो?" िसोइये ने किा- "एक भक्त यिााँ प्रहतहदन आते थे औि किते थे हक इस बूटी को सब्जी में हमला कि िििा को स्ट्खलाया किो।" आलवन्दाि ने किा- "उस भक्त को मेिे पास ले आओ।" िसोइया मनक्काल नस्ट्म्ब को साथ ले कि िििा के पास आ गया।

आलवन्दाि ने किा- "िे भक्त, आपकी बूटी से मेिा भोिन िी स्वाहदष्ट निीं हुआ, इससे मेिी आत्मा भी तृप्त िो गयी। मैं आपका कृतज्ञ हाँ। मुझे हकसी सेवा का आदेि दीहिए। मैं आपको प्रचुि धन दूाँगा।"

नस्ट्म्ब-"मैं आपके पास प्रचुि धन-ग्रिण किने निीं आया हाँ। इसके हवपिीत मैं स्वयं आपको उस हवपुल धनिाहि का दिथन किाना चािता हाँ, हिसके आप उत्तिाहिकािी िैं।"

आलवन्दाि- वि धन िाहि कैसी िै? मैं उसका उत्तिाहिकािी कैसे िो गया? वि िै किााँ ? मुझे युद्ध के हलए धन की हनतान्त आवश्यकता िै।"

नस्ट्म्ब - "िििमिाि, आप ध्यानपूवथक सुहनए। नाथमुहन आपके हपतामि िैं औि मैं उनका हनष्ठावान् हिष्य िैं। अपने गो-लोक-वास के कुछ क्षणों पूवथ वे वि हवपुल धनिाहि मुझे िी सौंप गये।"

आलवन्दाि--"िे पूिनीय भक्त, मुझ पि मेिे हपतामि की दया-दृहष्ट ििती थी। उन्होने मुझे प्रचुि धन हदया िै। वि धन इस समय मेिे हलए हनतान्त आवश्यक िै। कृपया मुझे बतलाइए हक वि धन किााँ िै ?"

नस्ट्म्ब - वि धनिाहि दो नहदयों के बीच में िै। एक दीघथकाय सपथ उसकी िक्षा किता िै। एक मन्त्र िािा उसे प्राप्त हकया िा सकता िै। उसको िस्तगत किने के पिात् आप सभी कुछ प्राप्त कि सकते िैं। तब आपकी सािी अहभलाषाएाँ पूणथ िो िायेंगी; हकन्तु उसकी प्रास्ट्प्त के हलए आपमें हविुद्ध प्रेेम तथा दृढ़ इच्छा-िस्ट्क्त का िोना अत्यावश्यक िै।"

आलवन्दाि- "िे भक्त, अब आप चल कि वि हवपुल धनिाहि हदखलाइए। अपने आदिणीय दयालु हपतामि के नाम पि मैं उसे हनःसन्देि प्राप्त कि लूाँगा। मैं हनहित रूप से यि कि सकता हाँ हक उसकी सम्प्रास्ट्प्त के हलए मुझमें हविुद्ध प्रेेम तथा दृढ़ इच्छा-िस्ट्क्त िै।"

नस्ट्म्ब - "सांसारिक वस्तुओं के प्रहत िाग का परित्याग कि आप मेिे साथ चहलए। स्वयं को गिन ध्यान, ज्वलन्त आकांक्षा तथा उत्कट हवश्वास से पूरित कीहिए। आप तत्काल वि धन प्राप्त कि लेंगे।"

आलवन्दाि सुयोग्य व्यस्ट्क्तयों के िाथों में िासन-सूत्र सौंप कि उस धनिाहि की खोि में नस्ट्म्ब के साथ चल पड़े। नस्ट्म्ब गीता के पिम भक्त थे। वे प्रहतहदन इसका पािायण किते थे। आलवन्दाि उनका गीता-पाठ आस्था, भस्ट्क्त तथा एकाग्र हचत्त से सुना किते थे। इससे उनका हृदय हविुद्ध िो गया। उन्होंनें किा- िे पूिनीय भक्त, आप मेिे गुरु िैं। आप मुझे गीता के यथाथथ तत्त्व की हिक्षा दीहिए। मैं गीतामृत-पान के हलए उत्सुक िैं। नस्ट्म्ब ने उनको गीता के साि-तत्त्व से परिहचत किा हदया।

आलवन्दिा गीता के ध्यान में अिो-हवसूमृत िो गये। उन्होंनें सोचा- "इस िाज्य की उपयोहगता िी क्या िै? िाज्य के प्रिासन में मुझे िास्ट्न्त निीं ंप्राप्त िोगी। मैंने अपने िीवन को अब तक नष्ट िी हकया िै। इस मिान् भक्त ने मिे ज्ञान-चक्ष खोल हदये िैं। मैं तत्त्व-अतत्त्व के भेद से परिहचत िो चुका िैं। गीता में प्रचिु आध्यास्ट्कि सम्पदा हनहित ि। इससे मिे मन को िास्ट्न्त प्राप्त िोती िै। इस भक्त के साहिध्य में मुझे आश्वस्ट्स्त प्राप्त िोती िै। वि मिेा हप्रय िै। मैं अपने िीवन को ईश्वि की सेवा में अहपथत कि ईश्वि में िी हनवास करूाँगा। मैं हत्रलोकीनाथ के चिणों ंपि सवथतोभावेन अिो-समपथण कि दूाँगा। िािकीय िीवन अिं-वृहत्त से ओत-प्रोत िै। मैं हसंिासनारूढ़ िोना निीं ंचािता। मेिी इच्छा ि हक ईश्वि मिे हृदय-हसंिासन पि स्वयं िी हविािमान िो िायें। मुझे हकसी सांसारिक सम्पदा की आवश्यकता निीं ं ि। यि हकसी कााँच का भग्नांि मात्र िै।" यि सोच कि उन्होंनें नस्ट्म्ब से किा- "िे गुरुदेव, आप संसाि की हवपुलतम निहि की प्रास्ट्प्त के अहभयान में मेिा पथ-प्रदिथन कीहिए।"

नस्ट्म्ब इस तर्थ् से परिहचत िो गये हक आलवन्दिा का हृदय पूणथतः हविुद्ध िो चुका िै। उन्होंनें किा- "यि सम्पहत्त स्थायी िै। इसे देखने के हलए आप मेिा अनुगमन कीहिए।"

श्रीिंगम् आ कि दोनों ंने भगवान् िंग के मस्ट्न्दि में प्रवेि हकया। उस समय पूिा-चयाथ चल ििी थी। ब्राह्मण वेद-पाठ कि ििे थे। भक्त-गण आलवािों ंद्वािा िहचत भिन गा ििे थे। धूपबत्ती िलती हदखा ििा था। नस्ट्म्ब ने आलवन्दिा से किा-"यिााँ देस्ट्खए। यिी िै संसाि की हवपुलतम सम्पदा हिसे आपके िमथ-हनष्ठ हपतामि आपके हलए उत्तिाहिकाि के रूप में छोड़ गये थे। यि सम्पदा कावेिी तथा कोलेरून नहदयों ंके बीच िै हिसकी िक्षा आहदिेष कि ििे िैं। आप इसे िस्तगत कीहिए औि इसके उपभोग द्वािा अपने हृदय को तुहष्ट प्रदान कीहिए। 'ॐ नमो नािायणाय' इसकी प्रास्ट्प्त का मन्त्र िै।"

आलवन्दिा हदव्य आनन्द में मग्न िो गये। उनको उनका िाज्य हवसूमृत िो गया। उन्होंनें किा "मैं अपने िमथहनष्ठ हपतामि के प्रहत कृतज्ञ िैं हिन्होंनें मुझे उत्तिाहिकाि में यि अमूल्य सम्पदा प्रदान की िै। िे गुरुदेव, मैं अवनत-हिि आपको प्रणाम किता िैं। आप िी के मागथदिथन में मैं यि हवपुल हनहि अहिथत कि पाया िैं। िे भगवान् िरि, मैं आपके चिणों ंपि अिो-समपथण किता हाँ। आप मेिे िक्षक तथा एकमात्र ििण-दाता िैं। मैं पुनः आपकी बाि-बाि चिण-वन्दना किता हाँ। मेिी सािी इच्छाएाँ समाप्त िो चुकी िैं औि मेिे मन को िास्ट्न्त प्राप्त िो चुकी िै। मैं स्वयं को एक बाह्य युद्ध के हलए उद्यत कि ििा था; हकन्तु काम, लोभ, क्रोि, मद, ईष्याथ तथा अिंवृहत्त-िैसे आन्तरिक ित्रु मेिे हृदय के हनभृत कोने में बैठे हुए थे। मैंने आपके िस्ट्क्तिाली मन्त्र द्वािा इन्हें हवनष्ट कि हदया िै। मेिे गुरुदेव नस्ट्म्ब ने मुझे उस अमूल्य हनहि का दिथन किा हदया िै। आप मेिी िाश्वत तथा अक्षय सम्पहत्त िैं। भौहतक सम्पहत्त अहनत्य तथा अथथिीन िै। आप मेिे हृदय में संस्ट्स्थत िैं। आप मेिे िीवन, मेिी आिा तथा मेिे सवथस्व िै।"

आलवन्दिा श्रीिंगम् में िी बस गये ििााँ उन्होंनें िप, कीतथन, ध्यान तथा उपासना में अपना िीवन व्यतीत कि हदया।

ििमिााष्टि के सन्त

समथथ िामदास

उनका िन्म १६०८ ई. में ििमिााष्टि-स्ट्स्थत िम्ब में हुआ था। उनके हपता का िामदास संसिा के मिानतम सन्तों ंमें थे। वि हिविी के पे्रिणा-स्रोत थे। नाम सूयाथिी पन्त तथा उनकी माता का नाम िेणकाबाई था। उनका आद्य नाम

निाायण था। िामदास सन्त तुकिााम के समकालीन थे। वि भगवान् िाम तथा िनुमान् के पिम भक्त थे। उन्होंनें अपने बाल्यकाल में िी भगवान् िाम के दिथन कि हलये थे। स्वयं भगवान् िाम ने िी उन्हें दीहक्षत हकया था।

बाल्यावस्था में िी उन्हें हिन्दू–मथ-ग्रन्थों ंका सामान्य ज्ञान प्राप्त िो िाग्रत िो गयी थी। एक हदन वि स्वयं को एक कमिे में बन्द कि ईश्वि का चुका था औि ध्यान तथा िाहमथक ग्रन्थों ंके अध्ययन के प्रहत उनकी अहभरुहच ध्यान किने लगे। िब उनकी माता ने उनसे पूछा हक वि बन्द कमिे में क्या कि ििे िैं, तब उन्होंनें उत्ति हदया हक वि लोक-कल्याण के हलए ध्यान तथा ईश्वि से प्राथथना कि ििे िैं। पुत्र की इस मिनीय िाहमथक प्रवृहत्त से माता आियथचहकत िोने के साथ-साथ िषथ-हवभोि भी िो उठीं।ं

बािि वषथ की आयु में िी िामदास के हववाि की सािी व्यवस्था सम्पन्न कि ली गयी औि उन्हें विू के सम्मुख बैठा हदया गया। वि-विू के बीच एक यवहनका का व्यविान था। िब पुिोहितों ंने 'साविान' िब्द का उच्चािण हकया, तब िामदास उस स्थान का परित्याग कि पलक झपकते िी किीं ंअन्तिाथन िो गये।

अध्ययन िथा िपस्या

गोदाविी-तट पि स्ट्स्थत नाहसक बािि वषों तक िामदास का वास स्थान िि़ा। वि प्रातःकाल के प्रािस्ट्म्भक क्षणों ंमें िी िय्या का परित्याग कि गोदाविी नदी की औि चले िाते औि दोपिि तक आवक्ष उसके िल में खड़े-खड़े पहवत्र गायत्री-मन्त्र का िप किते ििते। इसके पिात् वे हभक्षा के हलए हनकल पड़ते। प्राप्त हभक्षा को वि पिले अपने इष्टदेव श्री िाम को अहपथत किते औि तत्पिात् उसे प्रसाद-रूप में स्वयं ग्रिण कि लेते। कुछ देि के हवश्राम के पिात् वि नाहसक तथा पंचवटी के हवहभन्न मस्ट्न्दिों ंमें िा कि प्रवचन सुनते। िामदास ने संस्कृत का भी अध्ययन हकया तथा अपने िाथों ंवाल्मीकीय िामायण को हलहपबद्ध हकया। यि पाण्डुहलहप िुबहलया के श्री एस. एस. देव के संग्रिालय में आि तक सुिहक्षत िै।

िामदास ने गोदाविी-तट पि नाहसक के हनकटस्थ तफाली में िाम के त्रयोदिाक्षि-मन्त्र 'श्री िाम िय िाम िय िय िाम' का त्रयोदि लक्ष पुिश्चिण हकया। पुिश्चिण के समापन के पिात् िामदास को भगवान् िाम के एक बाि पुनः दिथन हुए। किा िाता िै हक िामचन्द्र ने िामदास को नाहसक, िरििि, काशी इत्याहद पहवत्र स्थलों ंके परिभ्रमण का आदेि हदया।

एक बाि िामदास ने िाम-नाम का िप किते हुए एक िव को पहवत्र िल से अहभहषक्त कि हदया हिससे वि पुनिीहवत िो गया। िामदास को ऐसा इसहलए किना पड़ा क्योंहक उन्होंनें एक ऐसी नािी को सौभाग्यवती िोने का आिीवाथद हदया था िो कुछ िी क्षणों ंपूवथ हविवा हुई थी।

ीथिाकट्न

ामिदास अैतमतावलम्बी िोने के साथ-साथ भक्त भी थे। उनमें एक ऐसा उदात्त गुण था हिससे उते्प्रेरित िो कि वि प्रते्येक िमथ तथा िाहत के प्रहत सवथदा सहिषु्णु िि। उनका मुख्य उदे्देश्य सिो भित में हिन्फ्दू–मथ को प्रचारित-प्रसारित किना था।

पण्ढिपुि के अस्ट्स्तत्व तक से अपरिहचत िाने के किाण िामदास इस अनुसिा एक हदन पाणु्डुिंग हवठ्ठल ब्राह्मण का वि िाण कि तीन सौ पहवत्र स्थल की यात्रा निीं ंकि सके थे। एक लोक-प्रचहलत हकम्बदन्ती के तीथथयाहत्रयों ंके साथ िामदास के पास आये िौ उन्होंनें उनसे पूछा- क्या आपको भगवान् कृष्ण का दिथन किने में कोई आपहत्त ै?" िामदास का उत्ति हनषििाक था। तत्पिात् पाणु्डुिंग उन्हें पण्ढिपुि ले आये; हकनु्तु भक्त गणों ंके मस्ट्न्दि में प्रहवष्ट िोते िी ब्राह्मण देवता अन्तिाथन िो गये। अब िामदास को ज्ञात हुआ हक उन्हें उस पहवत्र स्थान तक ले आने वाले स्वय भगवान् िी थे। िब वि मस्ट्न्दि के भीति गये, तब उन्हें यि देख कि आियथचहकत िि िाना पिा हक वािाँ श्री िाम एक ईंट पि अकेले खिै िैं।

ामिदास ने अपने इष्टदेव को इन िब्दों ंमें सम्बोहित हकया- "ि प्रभु, आप यिााँ एकाकी क्या कि िि िैं? आपके अनुि लक्ष्मण तथा आपकी पाश्वथवहतथनी सीता माता किााँ िैं? मारुहत किााँ िैं िौ किााँ िै वानिों ंका वि यूथ ?" इन िब्दों ंको सुनते िी उस हवग्रि ने स्वयं को पण्ढिीनाथ के हवग्रि में रूपान्तरित कि हलया। तत्पिात् िामदास ने पाणु्डुिंग की इस कृपा के हलए उनकी सु्तुहत की। उन्होंनें उनके समक्ष भूहमिायी िो कि उनको प्रणाम हकया िौ उनके दुलथभ दिथन–हनत आनन्द में हवभिो िो कि उनका प्रिस्ट्स्त-गायन हकया। अब िामदास की आस्था इस तर्थ् के प्रहत अहिकाहिक सुदृढ़ िोती गयी हक भगवान् के हवहभि अवतिा उनके हवहभि रूपों ंकी िी अहभव्यस्ट्क्त िैं। उन्होंनें अपने उपदिों ंके माध्यम से लोगों ंको इस सत्य से अवगत किाया हक उन्हें उस 'एक' की िी उपासना किनी चाहिए हिसका ध्यान प्राहणमात्र के कल्याण पि केस्ट्न्ित िै। उन्होंनें एकाग्र-हचत्त िो कि पाणु्डुिंग की उपासना की िौ अब उनके प्रहत उनकी भस्ट्क्त इतनी प्रगाढ़ िो गयी हक वि वािाँ हनयहमत रूप से आने–िाने लगे। ामिदास को पण्ढिपुि में िी सन्त तुकािाम तथा पण्ढिपुि के अन्यान्य सन्तों ंका सम्पकथ-लाभ हुआ। अपनी तीथथयात्रा की अवहि में उन्हें भितीयों ंकी सामाहिक, िानैहतक तथा आहथथक दिा एवं उनकी चिम हनिाश्रयता के पयथवेक्षण का अवसि प्राप्त हुआ।

किा िाता िै हक श्री िाम ने िामदास को कृष्णा नदी के तट पि िाने तथा वािाँ िा कि मिािाष्ट्र िाज्य के संस्थापक तथा भगवान् िंकि के अवतिा हिवािी की उदे्देश्य-हसस्ट्द्ध में सिायक हसद्ध िोने का आदिे हदया। िामदास कृष्णा-तट पि गये िौ उन्होंनें मिाबलेश्विि से कोल्हापुि तक के लोगों ंको अपने उपदिामृत से लाभास्ट्ित हकया। उन्होंनें मारुहत के एकादि प्रमुख पीठों ंकी स्थापना की िो िािीरिक हवकास के द्योतक िैं। उन्होंनें चम्पावती में श्री ामिचि के हवग्रिों ंका प्रहतष्ठापन कि िामनवमी मिोत्सव तथा श्री िाम की िथ-यात्रा की पिम्पिा का प्रवतथन हकया। हिंगिवािी (Singanvadi) नामक स्थान पि हिवािी को िामदास ने दीक्षा प्रदान की।

हिवािी अपने हसंिासन पि गुरु की पादुका िख कि उनके आदिे तथा मागथ-दिथन के अन्तगथत उनके प्रहतहनहि के रूप में िाज्य के प्रिासन का उत्तिदाहयत्व विन किते थे। उनके िाष्ट्रीय र्ध्िा का िंग गेरुआ था। सन्त िामदास के प्रहतहनहि के रूप में हिवािी िािा अपने िाज्य के प्रिासन तथा िाष्ट्रीय र्ध्ि के हलए गैरिक वणथ के चयन के सम्बन्ध में मिािाष्ट्र में एक हकम्बदन्ती प्रचहलत िै हिसको एक रुहचकि तथा िोमानी घटना से सम्बद्ध माना िाता िै। एक हदन हिवािी ने अपने िािप्रासाद के चबूतिे से अपने गुरु को िाथ में हभक्षा-पात्र हलये िाते हुए देखा। हिवािी को इस बात पि आियथ हुआ हक िब उन्होंनें अपना सवथस्व अपने गुरुदेव के चिणों ंपि अहपथत कि हदया िै, तब उन्हें हभक्षाटन की क्या आवश्यकता िै। उन्होंनें अपने सखा बालािी को बुलाया िौ उन्हें एक अल्प-कलेवि पत्र दे

कि किा हक गुरु िी के ििाप्रासाद में आने पि वि यि पत्र उन्हें दे दें। लगभग मध्याह्न की बेला में िामदास अपना हभक्षा-पात्र हलये हुए ििाप्रासाद में आये। बालििी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम कि वि पत्र उनके चिणों ंपि िख हदया। उस संहक्षप्त पत्र में मात्र इतना िी हलखा था हक उन्होंनें अपना समूपूणथ िाज्य गुरुदेव को भेंट-स्वरूप अहपथत कि हदया
ै अिौ अब वे हवनम्रतापूवथक केवल उनके आिीवाथद की
हदन प्रातःकाल िामदास ने हिविी के पास िा कि पूछा हक 'उन्होंनें (हिविी कामना किते िैं। गुरु िी ने बालििी से मुस्किाते हुए किा- "ठीक िै।" दूसिे ने) अपने िाज्य को तो उन्हें अहपथत कि हदया िै: हकनुतु स्वयं अपने हवषय में
हिविी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किने के पित् किा हक 'गुरुदेव की सेवा में िीवन-पयथन्त ििने से उन्हें अपाि िषथ िोगा अिौ वे स्वयं को कृतकृत्य समझेंगे।' तब िामदास ने किा- इस हभक्षा पात्र को ले लो। अब िमें हभक्षाटन के हलए चलना िै।" इस प्रकाि वे दोनों ंहभक्षा के हलए सताािा में घूमने लगे। श्रद्धा-हवनत लोगों ंने उन दोनों ंको हभक्षा दी। तत्पित् ये दोनों ंनदी के तट पि आये िााँ िामदास ने अपना सािााण भोिन बनाया। गुरुदेव के भोिन कि लेने के पित् हिविी ने िेषा ग्रिण हकया। इसके पित हिविी ने अपने गुरुदेव से मुस्किाते हुए पूछा हक उनको हभकुषुक बना देने के पित् अब उनके (िामदास के) हलए उनका क्या उपयोग िेष िि िायेगा ? िामदास इस तर्थ् से परिहचत िो गये हक अब ििाा के उदात्त आदिों के प्रसुतुहतकिण का अवसि आ गया िै।

ािमदास ने हिविी को आदिे हदया हक वि उनके (िामदास के) नाम पि िासन किें, अपने ध्वि के हलए गेरुए वस्त् का उपयोग किें, इसके सािन की िक्षा के हलए अपना िीवन तक उत्सगथ कि दें, ईश्वि के समक्ष िाज्य का ािसन न्यायोहचत हवहि से किें एवं स्वयं को इसका अहिपहत न समझ कि इसका एक न्यासी मात्र समझें। हिविी के ध्वि का िंग गेरुआ कैसे हुआ, यि उक्त घटना से स्पष्ट िो िाता िै।

ािमदास ने अपने िीवन के अनेक वषथ पहवत्र तीथथ-स्थानों ंकी यात्रा में व्यतीत हकये। उन्होंनें मिााष्टि में कई िनुमान्-मस्त्न्दिों ंका हनमाथण किाया। तीथथ-यात्रा से लौटने पि उनसे हकसी ने किा हक उनकी माता उन्हें देखने को लालाहयत ैं। उसने उनसे यि भी कि हदया हक पुत्र-हवयोगा–हनत आत्यस्त्न्तक दुःख के किाण वि अन्धी िो गयी िैं। अब ािमदास अपनी माता के दिथन के हलए वििााँ से तत्क्षण चल पड़े। वििााँ पहुँच कि उन्होंनें अपनी माता को साष्टांग प्रणाम हकया। बहुत वषों के अन्तिाल के पित् अपने पुत्र के आगमन से उन्हें अत्यन्त िषथ िआ। िामदास ने अपनी माता के नेत्रों ंका स्पिथ हकया अिौ पुत्र की यौहगक िस्त्क्त के किाण माता को अपनी चकुषु–स्त्क्त की पुनः सम्प्रास्त्प्त िो गयी।

उनका जीवन और उनके धमोपदिे

ािमदास एक हवलक्षण व्यस्त्क्त थे। बाह्य िगत् उनको हवहक्षप्त समझता था। वि अपने पास एक छोटा िनुष िखा किते थे। इसके अहतरिक्त उनके पाश्वथ में पत्थि भी पड़े ििते थे। वि हिस हकसी को भी देखते, उसकी अिौ पत्थि फेंक हदया किते। हिन लोगों ंको उनके उपदिों ंमें रुहच थी, उन्हें वे **'श्री राम जय राम जय जय राम**' का मन्त्र हदया किते थे।

ािमदास के हिषों ंकी संख्या ग्यािा सौ थी हिसमें तीन सौ महिलाएँ थीं।ं ये िमथ-प्राण महिलाएँ प्रवचन की कला में हनष्णात थीं।ं िामदास अपने हिषों ंको हिन्फ्दू–मथ के प्रचाि-प्रसाि के हलए भाित के कोने-कोने में भेिा किते थे। उत्तिांचल-स्त्स्थत उनके मठों ंतथा हिषों ंसे हिविी को प्रत्यक्ष या पिोक्षतः प्रचुि सियोग प्राप्त हुआ किता था। दहक्षण में तंिाविू (Thanjavur) के आस-पास िामदास का िो संगठन था, उससे हिविी के पुत्र िाििााम को हििंी (Jinji) िा कि अिौंगिेब के हवरुद्ध बीस वषों तक युद्धित ििने में अत्यहिक सियता प्राप्त हुई। िब

ामिदास तंाीी गये, तब हिविाी के सौतेले भाई वेंकोाी उनके हिर्ष् बन गये। ािमदास ने अपने हिर्ष् भीमस्वामी को तंाीी मिठ का मिन्त हनयुक्त हकया।

अक्तन्तम डदन

अिण्य-वास ािमदास को रुहचकि लगता था। उनके अनुसाि विााँ उनके ब्यान में कोई व्यहतिेक निीं ंउपस्ट्स्थत िोता था। िीवन के अस्ट्न्तम हदनों ंउनका समय अंतिः साहिस्ट्त्यक गहतहवहि तथा अंतिः उत्ति अौ दहक्षण के हिर्ष्ों ंके योिनाबद्ध चरित्र-हनमाथण तथा मठों ंकी देखिेख में व्यतीत िोता था। उनकी साहिस्ट्त्यक कृहतयों ंमें दासबोि, मनाचे श्लोक (मन को सम्बोहित कहवताएाँ), करुणािातक (भिनावली) तथा ािमायण (केवल लंका-हविय तथा िावण दमन) अत्यहिक लोकहप्रय िैं। उनके प्रहत लोगों ंका यि श्रद्धा-भाव िी था हक उनकी अिसािाण सिनिीलता तथा भाित में हिन्दि-मथ की पुनप्रथहतष्ठा के उनके संकल्प के काण लोगों ंने उनका नाम समथथ ािमदास िख हदया िख हदया िो उनके हलए सवथा उपयुक्त था। मिािाष्ट्र के मिान् गुरु ने सन् १६८२ में सतािा के निदीक सज्जनगढ़ में अस्ट्न्तम सााँस ली। हिविाी ने यि दुगथ उन्हें उनके हनवास के हलए हदया था।

ािमदास ने अस्ट्न्तम श्वास लेते समय ाम मन्त्र का उच्चाण हकया। संसाि से उत्क्रमण किने के समय उनके िीि से नेत्रों ंको स्तब्ध कि देने वाली एक ज्योहत हनःसृत हुई अौ ािमदास भगवान् ाम की प्रहतकृहत में अन्तलीन िो गये।

अपने हिर्ष्ों ंके हलए ािमदास के अस्ट्न्तम अनुदेि थे :

"अपनी दैहिक आवश्यकताओं ंको अहिक मित्त्व मत प्रदान किो। भक्तों ंके सत्संग में िो। अपने हृदय में भगवान् ाम के स्वरूप को अहिहष्ठत कि लो। सवथदा भगवान् ाम के नाम का िप किते िो। काम, क्रोि, लोभ, घृणा तथा अिंका को हवनष्ट कि दो। प्राहणमात्र में भगवान् ाम के दिथन किो। सबसे प्ेरेम किो। सवथत्र भगवान् ाम की हवद्यमानता का अनुभव किो। एकमात्र उसी के हलए िीहवत िो। प्राहणमात्र की सेवा को उसकी सेवा समझो। उसके चिणों ंपि स्वयं को हनष्कपट रूप से सवथतोभावेन समहपथत कि दो। तुम लोग सवथदा केवल ईश्वि में िी हनवास किोगे अौ तुम सबको अमृतत्व तथा िाश्वत आनन्द की प्रास्ट्प्त िोगी।"

नामदेव

मिािाष्ट्र के नामदेव मध्ययुगीन भाित के सन्त थे। वि भगवान् कृष्ण के दास न िो कि उनके सखा तथा अंतिंगि थे।

नामदेव मिािाष्ट्र के सुप्रहसद्ध सन्त ज्ञानदेव के समकालीन थे। वे उनसे पााँच वषथ बड़े थे। उनका िन्म पण्ढिपुि के हवठ्ठल के अनन्य भक्त दहिथयों ंके परिवाि में १२६९ ई. में हुआ था। उस परिवाि के सदस्यों ंमें वािी (Wari) नामक एक िाहमथक प्रथा का प्रचलन था हिसके अनुसाि एक वषथ में दो बाि-आषाढ़ तथा काहतथक मास की प्रथम एकादिी को-तीथाथटन के हलए िाना पड़ता था। सतािा िनपद में किाड़ (Karad) के हनकट कृष्णा नदी के तट पि स्ट्स्थत निसीबामनी (Narsibamani) नामक ग्राम उनका आहद वास-स्थान था; हकन्तु नामदेव के हपता तथा हवठ्ठल के पिम भक्त दामा सेिी (Dama Setti) अपनी भौहतक सम्पहत्त में अहभवृस्ट्द्ध की उद्देश्य-पूहतथ के हलए पुत्र के िन्म के दो-एक वषथ पूवथ पण्ढिपुि चले गये थे।

नामदेव की बाल्यावस्था में िी लोगों ंको उनमें प्रह्लाद के स्वभावगत वैहिष्ट्य के दिथन िोने लगे। दो वषथ की आयु में अपनी वाक्–स्ट्क्त के प्रथम उने्मेष में िी उन्होंनें हिस िब्द का हनभाथन्त उच्चािण हकया, वि था 'हवठ्ठल'। इसके पिात् हबना हकसी के सियोग या अनुदेि के िी वि इस पहवत्र नाम के िप की आवृहत्त में सतत संलग्न िि े। उनकी माता गुनाबाई उन्हें प्रहतहदन अपने इष्टदेव हवठोबा के मस्ट्न्दि में अचथन-पूिन के हलए ले िाया किती थीं।ं इसमें उन्हें बहुत आनन्द आता था। अब उनकी एक दूसिी बानगी देस्ट्खए। सात वषथ की आयु में वि झाँझ की एक िि ोडी ले आये औि अपना समय नृत्य तथा भिन-कीतथन में व्यतीत किने लगे। वे इसमें इस िीहत तल्लीन िो गये हक उन्होंनें अपने छात्रोहचत अध्ययन, ियन-अिन तथा हवश्रामाहद को भी हवसृमत कि हदया। हवठोबा के प्रहत उनकी भस्ट्क्त इतनी अकृहत्रम औि हनष्कपट थी हक वि कभी-कभी उन्हें अपना हप्रय बनु्धु या बाल-सखा समझने लगते थे।

एक हदन िब नामदेव की माता गृि-कायथ में व्यस्त थीं,ं उन्होंनें नामदेव से पूिन-सामग्री ले कि हवठोबा के मस्ट्न्दि में िाने को किा। मस्ट्न्दि में नामदेव ने पूिन की खाद्य सामग्री को हवठोबा के समक्ष िख कि उनसे उसे ग्रिण किने का आग्रि हकया हकनु्तु हवठोबा की औि से िब उनके आग्रि की स्वीकृहत का कोई संकेत निीं ंहमला, तब वि फूट-फूट कि िोने लगे हिसके परिणाम स्वरूप हवठोबा ने मनुर्ष्-रूप िािण कि उस खाद्य सामग्री को कृतज्ञ भाव से ग्रिण कि हलया। िाथ में रिक्त पात्र हलये िषथ-हवह्वल नामदेव ने िब अपनी माता को बताया हक हवठोबा ने मानव-ििीि िािण कि खाद्य सामग्री को उदिस्थ कि हलया था, तब वि आियथचहकत िि गयीं।ं दूसिे हदन वि नामदेव के कथन की यथा-तर्थ्ता के सत्यापन के हलए हछप कि नामदेव के पीछे-पीछे चल पड़ीं।ं हवठोबा के मस्ट्न्दि में िो एक हदन पूवथ हुआ था, विी उस हदन भी हुआ उनकी माता ने हवठोबा को खाद्य सामग्री को साक्षात् ग्रिण किते देखा। यि देख कि वि सनु्तुष्ट िो गयीं ंऔि नामदेव के हलए उनका मन असीम िषथ तथा गवथ से पूरित िो गया। वि इस बात के हलए भगवान् की कृतज्ञ हुईं हक वि एक मिान् भक्त की िननी िैं।

भगवान् डवठोबा-उनकी अडभरुडच का एकमात्र डवषय

नामदेव के स्वभाव का एक अन्य पक्ष भी था िो पिले उनके माता-हपता तथा तत्पिात् उनकी पत्नी एवं उनके अन्य सम्बस्ट्न्धयों ंके हलए िाहनकािक हसद्ध हुआ। िागहतक व्यापाि में उनकी अहभरुहच प्रािम्भ से िी निीं ंथी। छात्रोहचत अध्ययन, पैतृक व्यवसाय या हकसी भी अन्य व्यापाि के प्रहत वि हविक्त िी िि े। वि िात-हदन हवठोबा के अचथन-पूिन में िी संलग्न िि ते थे। उिि उनके माता-हपता वृद्ध से वृद्धति िोते िा िि े थे औि पारिवारिक सम्पहत्त का क्षिण िोता िा िि ा था। इस कािण माता-हपता की यि इच्छा थी हक नामदेव हवठोबा के पूिन-अचथन के हलए कोई समुहचत हकनु्तु हनहदथष्ट समय हनहित कि परिवाि की सुख-सुहविा की अहभवृस्ट्द्ध में भी सिायक हसद्ध िों।ं अतः एक हदन वस्त्-हवक्रय के हलए उन्हें बािाि भेिा गया; हकनु्तु वि व्यावसाहयक कौिल से अनहभज्ञ तथा मूल्य औि मुद्रा के मित्त्व से सवथा अपरिहचत थे। हपता िािा हववि हकये िाने पि िी वि बािाि गये थे। वस्त्-हवक्रय की बात भूल कि वि विाँ एक पत्थि पि बैठ गये। कुछ िी देि बाद सूयाथस्त िो गया। उनके हलए यि बेला सान्ध्यकालीन अचथन-पूिन के हलए मस्ट्न्दि िाने की बेला थी। उसी समय उन्हें याद आया हक अभी तक वे वस्त् हबना हबके हुए ज्यों–ंत्यों ंपड़ीं ंपड़े हुए िैं हिसके परिणाम-स्वरूप उन्हें अपने हपता िािा प्रताहड़त िोना पड़ेगा। दूसिी औि वि मस्ट्न्दि िाने के हलए व्यग्र थे। उन्हें एक हवहचत्र उपाय सूझा। उन्होंनें सािे वस्त् उस पत्थि के िी िाथों ंबेच हदये अथाथत् उन्होंनें उस पत्थि पि वस्त् िख हदये औि एक अन्य पत्थि को प्रहतभू बना हदया। इसका तात्पयथ यि था हक पिला पत्थि अगले हदन दूसिे पत्थि को वस्त् का मूल्य दे देगा। इस प्रकाि वि मस्ट्न्दि िा सके।

नामदेव के हपता अपने पुत्र के इस मूखथतापूणथ अहभयान को सुन कि कु्रुद्ध िो उठे। उन्होंनें उन्हें उस प्रहतभू िोण्ड्ड्य (इसका अथथ पत्थि िोता िै; हकनु्तु इसे मिािाष्ट्र के लोगों ंके एक वगथ-हविेष के नाम के हलए भी प्रयुक्त हकया िाता िै) को बुलाने का आदेि हदया। दूसिे हदन नामदेव ने विाँ िा कि देखा हक िातों–िात वे वस्त् विाँ से लुप्त िो चुके थे। प्रहतभू पत्थि उन वस्त्ों ंका क्या मूल्य दे पाता; अतः उन्होंनें उसे एक कमिे में बन्द कि हदया। इसके पिात्

मस्ट्न्दि में ि‍ा कि उन्होंनें हवठोबा को सिाा वृत्तान्त कि सुनाया। इसके अहतरिक्त उन्होंनें उनके समक्ष अपने संकट को भी स्पष्ट कि हदया। िब नामदेव के हपता ने उनको उनके समक्ष उस प्रहतभू पत्थि को प्रसुतुत किने का आदि हदया, तब नामदेव ने उनसे किा हक वि घि के एक कमिे में बन्द ि‍ै। इतना कि कि वि मस्ट्न्दि चले गये। हपता ने बि कमिा खोला, तब वि यि देख कि आियथचहकत ि‍ि गये हक विााँ एक स्वणथ-हपण्ड पिा हुआ ि‍ै। वि िषथ-हवभोि ि‍ो गये; हकनतुु नामदेव इसके प्रहत उदासीन िी ि‍ि‍े। उन्होंनें ईश्वि की सुतुहत केवल इसहलए की हक हपता की प्रतििाना से उनकी िक्षा हुई थी। हदन इसी प्रकाि व्यतीत ि‍ोने लगे।

उनका डववाह

इस बीच उनका हववाि िािाबाई से ि‍ो गया। िािाबाई उन महिलाओं ंमें थीं ंि‍ो सांसारिकता में िी हलप्त ि‍िती ि‍ैं। नामदेव ने अपने पुत्र के नामकिण संस्काि के सिमािोि में सस्ट्हलत ि‍ोने के हलए हवठ्ठल को आमस्ट्न्त्रत हकया ि‍ो विााँ मनुर्ष् के छद्मवेि में पहुाँचे। उन्होंनें िहुि को 'नािायण' नाम से अहभहित हकया औि अवसि के अनुकूल उसे प्रचुि मात्रा में उपिाि प्रदान हकये।

गृिस्थ-सम्बन्धी उत्तिदाहयत्वों ंके प्रहत नामदेव की उपेक्षा के काण उनके परिवाि की हनिथनता चिम सीमा तक पहुाँच चुकी थी। उनकी माता तथा पत्नी भगवान् कृष्ण को अपिब्दों ंसे सम्बोहित किने लगीं।ं एक हदन वैकुण्ठपुि के िमथ सेठ का छद्म रूप िािण कि नामदेव से अपनी पूवथ-मैत्री की चचाथ किते िुए भगवान् नामदेव के घि पहुाँचे औि िािाबाई को बहुमूल्य वसुतुएाँ भेंट कि अन्तिाथन ि‍ो गये।

परिसा भागवत नामक एक भक्त ने रुस्ट्णी से अपने तुहष्टप्रद प्रसादन के माध्यम िािा एक दिाथहनक के ऐसे हिला-खण्ड को िस्तगत कि हलया ि‍ो लोिे को स्वणथ में रूपान्तरित कि सकता था। एक हदन परिसा की पत्नी ने उस हिला-खण्ड को अपनी हमत्र िािाबाई को दे हदया। िािाबाई ने उस हिला-खण्ड को अपने पहत को हदखाते हुए किा हक उनकी (नामदेव की) भस्ट्क्त परिसा भागवत की भस्ट्क्त के समक्ष नगण्य ि‍ै। नामदेव ने उस हिला-खण्ड को नदी में फेंक हदया। दूसिे हदन इस घटना से अवगत ि‍ो कि परिसा ने नामदेव को बहुत िााँटा-फटकािा। नामदेव ने परिसा को वि स्थान हदखाया ििााँ उन्होंनें उस हिला-खण्ड को फेंका था। परिसा ने विााँ उसकी खोि की; हकनतुु उसने आियथचहकत ि‍ो कि देखा हक विााँ एक हिला-खण्ड न ि‍ो कि अनेक हिला-खण्ड थे। वि नामदेव की त्याग-भावना तथा आध्यास्ट्कि िस्ट्क्तयों ंसे अहभभूत ि‍ो गया।

गृि कायथ, माता-हपता तथा पत्नी-पुत्र के प्रहत उनकी हविस्ट्क्त-भावना में अहिकाहिक वृस्ट्द्ध ि‍ोती गयी। िागहतक िीवन की औि उनके प्रत्यावतथन के हलए उनके हमत्रों ंतथा अन्य लोगों ंके सिे प्रयत्न हनष्फल हसद्ध ि‍ो गये। उनकी अहभरुहच के एकमात्र केि भगवान् हवठोबा थे। वे उनके समक्ष घण्ों ंबैठ कि या तो उनसे आध्यास्ट्कि हवषयों ंपि वाताथलाप किते या भिन किते। नामदेव के हलए हवठोबा िी प्रत्ेयेक वसुतु के आहद तथा अन्त थे।

ज्ञानदेव से उनकी भेंट्

नामदेव िब मिान् सन्त ज्ञानदेव से पण्ढिपुि में पिली बाि हमले, तब उनकी आयु लगभग बीस वषथ थी। नामदेव हवठोबा के मिान् भक्त थे; अतः ज्ञानदेव के हलए उनकी औि आकृष्ट ि‍ोना स्वाभाहवक िी था। यि सोच कि हक नामदेव के सिाचयथ से वि लाभास्ट्ित ि‍ोंगे, उन्होंनें उनको तीथाथटन के हनहमत्त समस्त पहवत्र स्थानों ंकी यात्रा के हलए सिमत कि हलया। पण्ढिपुि के हवठोबा से हवलग ि‍ोने की आिंका से नामदेव उनके साथ िाना निीं ंचािते थे; हकनतुु अन्ततः सत्पिामिथ की हविय हुई औि वि इसके हलए सिमत ि‍ो गये। नामदेव के िीवन की यि सवाथहिक मित्त्वपूणथ कालावहि थी। िब तक मृतुयु ने इन दोनों ंमिान् सन्तों ंका सम्बन्ध हवच्ेछेद निीं ंकि हदया, तब तक

व्यर्थिवातः वे एक-दूसिे से कभी भी हवयुक्त निीं ंहुए। उनके तीथाथटन की इस हवसूतृत परिहि में भित का प्रत्येक भूखण्ड एवं लगभग समस्त पहवत्र स्थान आवेहष्ठत थे।

तीथाथटन के समय नामदेव तथा ज्ञानदेव िािा सम्पि कई एक चमत्किों ंकी बात कि ि िाती िै। एक बाि ये दोनों ं मािवाि़ के मरुस्थल में पहुँचे ििााँ अत्यहिक प्यास के किाण नामदेव मृतप्राय िो गये। विााँ उन्हें एक कुआाँ हमला; हकनु्तु उसमें पानी इतना नीचा था हक सामान्य सािनों ंििाि विााँ तक हुँच पाना असम्भव था। ज्ञानदेव ने अपनी लहघमा-हसस्ट्द्ध से पक्षी का रूप िाण कि अपनी चोंच से पानी लाने का सुझाव हदया; हकनु्तु नामदेव उनसे श्रेष्ठति हसद्ध िुए। उन्होंनें रुस्ट्णी से प्राथथना की औ ि िल का स्ति आयथप्रद हवहि से उठ कि ऊपि तक आ गया। बीकानेि से दि मील दूि स्ट्स्थत कौलायतिी में यि कुआाँ आि भी हवद्यमान िै।

नामदेव तथा ज्ञानदेव नागनाथपुिी में पहुँचे ििााँ मस्ट्न्दि में नामदेव भिन गाने लगे। विााँ अपाि ि न-सूमि था; अतः मस्ट्न्दि के पुिािी को मस्ट्न्दि में प्रवेि किने का कोई मागथ िी न हमला हिससे वि कु्रुद्ध िो उठे। नामदेव मस्ट्न्दि के पहिमी ििा पि चले गये ििााँ उन्होंनें समूपूणथ िाहत्र कीतथन में व्यतीत कि दी। मस्ट्न्दि का हवग्रि स्वयं उनकी औ ि िो गया।

बीदि के एक ब्राह्मण ने नामदेव को अपने घि भिन के हलए आमस्ट्न्त्रत हकया। वि विााँ अनेक भक्तों ंके साथ पहुँच गये। सुलतान ने इन लोगों ंको हविोिी सेना का सैहनक समझ कि सेनापहत किी पन्त को उनका सामना किने को भेिा। सेनापहत ने सुलतान को सूहचत हकया हक यि एक िाहमथक मण्डली िै; हकनु्तु सुलतान ने उनको हगिफ्ताि कि उन्हें दस्ट्ण्डत किने का आदेि दे हदया। उसने नामदेव को एक कटी हुई गाय की औ ि संकेत किते हुए आदेि हदया हक वि या तो इस मृत गाय को िीहवत कि दें या इसलामि-मथ स्वीकाि कि लें। उनको कुचलने के हलए एक िाथी भेिा गया। नामदेव की माता ने पुत्र की प्राणि-क्षा के हलए उनसे इसलाम िमथ स्वीकाि कि लेने की प्राथथना की; हकनु्तु नामदेव मिने को तैयाि थे। उस मृत गाय को पुनिीहवत कि वि सुलतान तथा उसके अमीि-उमिाओं ंििाि प्रिंहसत हुए।

नामदेव तथा ज्ञानदेव ने निसी मेिता से िूनागढ़ में; कबीि, कमाल तथा मुद्गलाचायथ से कािी में; तुलसीदास से हचत्रकूट में; पीपा िी से अयोध्या में; नानक से दक्कन के हकसी स्थान पि एवं दादू, गोिखनाथ तथा मत्स्येन्द्रनाथ से हकसी अन्य स्थान पि भेंट की।

तीथाथटन के समापन के पिात् िब ब्राह्मण-भोि का आयोिन हुआ, तब हवठ्ठल तथा रुस्ट्णी ने पाचक एवं सेवक का उत्तिदाहयत्व विन हकया। इतना िी निीं, ं उन्होंनें नामदेव ििाि प्रयुक्त हकये गये पात्र में िी भोिन हकया।

तीथाथटन की अवहि में ज्ञानेश्वि तथा उनके अग्रि एवं गुरु हनवृहत्त के संसगथ से नामदेव बहुत लाभास्ट्न्वत हुए। संसाि ईश्वि की अहभव्यस्ट्क्त िै, इस तथ्य को देखने-पिखने का हनवृहत्त का दृहष्टकोण अत्यन्त व्यापक था।

िैसा हक िम देख चुके िैं, पण्ढिपुि के उनके इष्टदेव हवठोबा तक िी उनका संसाि सीहमत था। ईश्वि के प्रतीक के रूप में वि हकसी अन्य देवता को स्वीकाि िी निीं ंकि सकते थे। उनका तीथाथटन पााँच वषों में समाप्त हुआ। इस अवहि में ज्ञानदेव नामदेव को हकसी गुरु से दीक्षा ग्रिण का पिामिथ देते ििे हिससे वि स्वयं को सवथव्यापी ईश्वि की अहभव्यस्ट्क्त के आत्यस्ट्न्तक बोि की स्ट्स्थहत में प्रहतहष्ठत कि अपने िीवन के चिम पुरुषाथथ की हसस्ट्द्ध कि सकें। हकनु्तु यि सोच कि हक इससे हवठोबा के प्रहत उनकी हनष्ठा तथा भस्ट्क्त के मागथ में अविोि उपस्ट्स्थत िो िायेगा, वि इससे हिचकते ििे। उन्होंनें स्पष्टतः कि हदया हक िब तक उनको हवठोबा का सेंनेि प्राप्त िै, तब तक उनके प्रहत एकहनष्ठ भस्ट्क्त के अहतरिक्त उनको अन्य हकसी भी वसुतु की कामना निीं ंिै। वसुतुतः हवठोबा िी उनके गुरु थे। अब ज्ञानदेव तथा साथ के अन्य सन्तों ंके समक्ष यि स्पष्ट िो गया हक नामदेव का दृहष्टकोण इस अथथ में संकीणथ था हक वि

एकमात्र पण्ढिपुि के अपने इष्टदेव में ि ी ईश्वि को केस्ट्ित समझते थे। उन लोगों ंकी इच्छा थी हक हिस व्यापक दृहष्टकोण की उन्हें उपलस्ट्ब्ध ि ो चुकी ि ै, वि उन्हें भी प्राप्त ि ो ि ाये।

एक हदन इन लोगों ंने सन्त गोिा, ि ो व्यवसाय से कुम्भकाि थे, से कहा हक वि इस बात का हनणथय किें हक इन लोगों ं में अिथ-पक्व अथाथत् ब्रह्म-साक्षात्काि में असफल कौन ि ै। गोिा ने पात्र पिीक्षण के हलए प्रयुक्त एक काष्ठ-पहिका से उनमें से प्रत्येक के ि ि को थपथपाया। ि ब उसने नामदेव के ि ि को थपथपाया, तब वि स्वयं को अपमानित समझ कि हचल्ला उठे। यि देख कि विाँ एकत्र अन्य ि न यि कि कि ि ँस पड़े हक नामदेव अभी अिथ-पक्व ि ैं औि अध्याि में उनकी प्रज्ञा प्रहतहष्ठत निीं ंि ो पायी ि ै।

इस अवमानना से अत्यहिक क्षुब्ध ि ो कि नामदेव परिवाद के हलए हवठोबा के यिाँ गये। नामदेव ने उनसे कहा हक स्वयं भगवान् कृष्ण से उनका (नामदेव का) अन्तिंग सम्बन्ध ि ै: अतः उन्हें हकसी गुरु से दीक्षा ग्रिण किने की आवश्यकता निीं ंि ै। भगवान् कृष्ण ने कहा हक नामदेव ने उनको पूणथतः निीं ंि ाना ि ै। नामदेव उनके इस कथन से सिमत निीं ंि ो सके। तब भगवान् कृष्ण ने उनको उस हदन अपने स्वरूप से परिहचत ि ोने की चुनौती दे दी हिसे नामदेव ने स्वीकाि कि हलया। भगवान् कृष्ण एक पठान अश्विािोिी के वेश में उनके सामने से हनकल गये; हकन्तु नामदेव उन्हें पिचान निीं ंपाये। तब नामदेव ने गुरु की आवश्यकता के प्रहत अपनी सिमहत व्यक्त कि दी। तत्पश्चात् भगवान् हवठोबा ने उनको हवसोबा खेचि से दीक्षा ग्रिण किने का पिामशथ हदया।

हवसोबा खेचि ज्ञानदेव के हशष्यों ंमें थे। वि उन हदनों ंअवन्ध्या नामक ग्राम में ि ि ते थे। नामदेव ने विाँ के हलए शीघ्र िी प्रस्थान हकया। वि विाँ दोपिि में पहुँचे। हवश्राम के हलए उन्होंनें एक मस्ट्न्दि में शिण ली। उस मस्ट्न्दि में उन्होंनें एक ऐसे व्यस्ट्क्त को देखा हिसके पैि स्वयं देवता पि पड़े हुए थे। नामदेव यि देख कि स्तब्ध ि ि गये। उन्होंनें उसे गिा कि उसके इस अपमानिक एवं देवद्रोिी कृत्य के हलए उसे ि ाँटा-फटकािा। वस्तुतः वि स्वयं हवसोबा थे हिन्होंनें कहा- "नामदेव, तुमने मुझे क्यों ंि गाया ? क्या इस संसाि में कोई ऐसा भी स्थान ि ै ि ि ाँ ईश्वि परिव्याप्त न िो? यहद तुम समझते ि ो हक इस प्रकाि के स्थान का अस्ट्स्तत्व सम्भव ि ै, तो मेिे पैि उठा कि विीं ंि ख दो।" नामदेव ने उनके पैिों ंको अपने ि ाथों ंमें ले कि हकसी अन्य हदशा में घुमा हदया; हकन्तु देवता ििि भी हवद्यमान थे। नामदेव ने उनके पैिों ंको पुनः अन्य हदशा में घुमाया; हकन्तु देवता विाँ भी हवद्यमान हमले। नामदेव को हवसोबा के पैिों ंको िखने के हलए कोई भी ऐसा स्थान न हमला ि ि ाँ देवता के पद-महदथत ि ोने की आशंका न ि ो। ईश्वि सवथव्यापी था। ईश्वि की सवथव्यापकता के इस चिम सत्य के बोध के पश्चात् नामदेव ने हवसोबा के चिणों ंपि कृतज्ञतापूवथक हवनम्र भाव से आत्म-समपथण कि हदया। इसके पश्चात् हवसोबा ने उन्हें अनेक पिामशथ हदये हिनमें से कुछ हनम्नांहकत ि ैं :

"यहद तुम पूणथतः सुखी ि ोना चािते ि ो, तो इस संसाि को भिन तथा प्रभु के नाम-संकीतथन से पूरित कि दो। ि गत् तथा प्रभु ये दोनों ंअहभन्न ि ैं।

समस्त इच्छाओं ंतथा मित्त्वाकांक्षाओं ंका परित्याग कि दो। उनकी हचन्ता उन्हें ि ी किने दो। मात्र हवट्ठल के नाम से सन्तुष्ट ििो। तुम्हें स्वगथ-प्रास्ट्प्त के हलए हकसी प्रकाि के कष्ट-सिन या तप की कोई आवश्यकता निीं ंि ै। वैकुण्ठ स्वयं तुम्हािे पास आयेगा। तुम अपने हमत्रों,ं सम्बस्ट्न्धयों ंतथा इस ि ीवन की हचन्ता मत किो। ये सब मृग-मिीहचका मात्र ि ैं। मनुष्य को यिाँ कुम्भकाि के उस चक्र की भाँहत कुछ क्षण व्यतीत किने ि ोते ि ैं ि ो कुम्भकाि के ि ाथों ंसे हवलग ि ो कि भी कुछ देि तक परिभ्रहमत ि ोता ि ि ता ि ै। हवट्ठल को सवथत्र तथा सबमें परिव्याप्त समझो तथा मन-वचन से उसका सतत स्मिण किते ििो। यि मेिे ि ीवन का अनुभव ि ै।

"चिभागा नदी के तट पि पण्ढिपुि की स्थापना एक नौका के रूप में भव-सागि के सन्तिण के हलए हुई ि ै। विाँ पण्ढीनाथ एक नाहवक के रूप में तुम्हें पाि उतािने के हलए खड़े हुए ि ैं औि सवाथहिक मित्त्वपूणथ बात तो यि ि ै हक

वि यि काम हन:ुल्कि हकया किते िैं। इस प्रकिा उन्होंनें अपने समक्ष आे-समपथण किने वाले कोहट-कोहट िनों ं का उद्धिा हकया िै। स्वयं को उनके िाथों ंमें सौंपं कि इस संसिा में तुम अमत्यथ िो िाओगे।"

हवसोबा से दीक्षा ग्रिण के पिात् नामदेव अहिकाहिक दिाथहनक तथा हविाल-हृदय िोते गये। उनका मस्ट्न्दि चिभागा के तट पि स्ट्स्थत वि संकीणथ एवं परिहमत भूखण्ड निीं ंिि गया। अब इसमें समस्त िगत् समाहवष्ट िो गया आै एकमात्र ििििीिी हवठोबा या हवठ्ठल िी उनके ईश्वि निीं ंिि गये। अब उनका ईश्वि उस पिम सत्ता से अहभि तथा एकिा िो गया िो सवथस्ट्क्तमान् एवं असीम िै।

हवसोबा से दीक्षा ग्रिण किने के कुछ हदनों ंके पिात् नामदेव एक स्थान पि बैठ कि भिन कि िि थे। इस बीच एक कुत्ता उनके मध्याह्न भोिन की िोटी ले कि भाग गया। नामदेव उस कुत्ते के पीछे दौिे; हकन्तु उनके िाथ में ण्डिा न िो कि घृत-पात्र था। उन्होंनें कुत्ते से किा- "िे हवश्वेश्वि, आप सूखी िोटी क्यों ंखाना चािते िैं? इसके हलए कुछ घी भी लेते िाइए। इससे िोटी सुस्वादु िो िायेगी।" अब वि आे-साक्षात्किा की अहतैकावस्था को प्राप्त िो चुके थे।

बि नामदेव तथा ज्ञानदेव अपनी दीघथकालीन तीथथ-यात्रा से लौटे, तब ज्ञानदेव ने आलन्दी में समाहि ग्रिण की इच्छा व्यक्त की। नामदेव ज्ञानदेव से हवलग निीं ंिो सकते थे; अतः वि उस दल के साथ आलन्दी चल पिे। वि अस्ट्न्तम क्षण तक ज्ञानदेव के साथ ििे। तत्पिात् वि उनके अन्य भाइयों,ं हनवृहत्त तथा सोपान एवं उनकी बिन मुक्ताबाई के ििििपात तक उस मण्डली से हवलग निीं ंहुए। नामदेव अपने पीछे इन चािों ंसन्तों ंकी मृत्यु का हवसृतृत हवविण छोिे गये िैं िो सुन्दि कहवताओं ंमें आबद्ध िै। वि इन घटनाओं ंसे इतने ममाथित हुए हक वि िीवन के प्रहत सवथा हविक्त िो गये। १२९५ ई. में छब्बीस वषथ की आयु में वि समाहिस्थ िो गये।

नामदेव हकसी बृिद् ग्रन् के प्रणेता निीं ंथे; हकन्तु वि अपने पीछे भस्ट्क्त-सिुा से ओत-प्रोत तथा ईश्वि-प्रेम से परिपूरित अनेक अभंग तथा अल्प-कलेवि कहवताएँ छोिे गये िैं। ये िचनाएँ अत्यन्त ििुि िैं। इनमें से अहिकांि लुप्त िो गयी िैं; हकन्तु चाि ििि अभंग अभी भी हवद्यमान िैं िो आे भी पाठकों ंके हलए प्रेिणा के मिान् स्रोत िैं। इनमें से कुछ अभंग हसक्खों ंके आहद ग्रन् में भी पाये िाते िैं।

नामदेव के उपदेिों ंका साि इस प्रकिा िै: "सदा-सवथदा भगविाम लेते ििो। भगवान् के अखण्ड स्मिण में लीन ििो। भगवान् की महिमा का श्रवण किो। अपने हृदय में भगवान् का ध्यान किो। अपने िाथों ंसे भगवान की सेवा किो। उनके चिण कमलों ंपि अपना ििि िखो। कीतथन किो। तुम अपनी भूख-प्यास भूल िाओगे। भगवान् तुम्हािो हनकट आ िायेंगे। तुम अमित्व तथा िाश्वत पिमानन्द प्राप्त किोगे।"

नामदेव की सेडवका जनाबाई

िनाबाई के उल्लेख के अभाव में नामदेव के िीवन का कोई भी हवविण अपूणथ िी ििेगा। वि नामदेव की गृि-सेहवका थी। उसके िीवन के हवषय में इसके अहतरिक्त आै कुछ भी ज्ञात निीं ंिै हक वि नामदेव की सेहवका थी। कभी-कभी उसे स्वयं इस बात का स्मिण निीं ंिि पाता था हक नामदेव की सेहवका के अहतरिक्त हकसी अन्य रूप में भी उसका कोई अस्ट्स्तत्व िै। भस्ट्क्त-सम्बन्धी अपनी अनेक कहवताओं ंमें उसने अपना हचत्रण 'नाम की सेहवका' या 'नामदेव की िानी' के रूप में हकया िै। उसकी गणना नामदेव के अन्तिंग अनुयाहययों ंमें की िाती िै। नामदेव की सेवा तथा भगवान् हवठोबा के गुण-गान के अहतरिक्त उसकी अन्य कोई भी मित्त्वाकांक्षा निीं ंथी। उदाििण के हलए उसने अपनी एक कहवता में किा िै :

"तुम्हािो आदेिानुसाि भले िी मुझे इस संसाि में िन्म ग्रिण किना पडे़; हकन्तु तुमसे मेिी प्राथथना िै हक मेिी इच्छाओं ंकी पूहतथ िोती ििे। मेिी इच्छा िै हक मैं अपने प्रत्येक िन्म में पण्ढिपुि का दिथन तथा नामदेव की सेवा किती िहाँ। मुझे पक्षी, िूकि, श्वान या माििथि िोने का खेद निीं ंिोगा; हकन्तु मेिी यि ितथ िै हक उक्त िन्मों ंमें मुझे
पण्ढिपुि के दिथन तथा नामदेव की सेवा के अवसि अहनवायथ रूप से प्राप्त िोते ििें। नामदेव की सेहवका की यिी मित्त्वाकांक्षा िै।"
एक अन्य स्थान पि िनाबाई हलखती िैं :

"िे िरि, तुम मुझ पि बस इतनी िी कृपा किो हक मैं सवथदा तुम्हािो पहवत्र नाम का संकीतथन किती िहाँ। तुम केवल मेिी इस इच्छा की पूहतथ कि दो हक मेिी श्रद्धा तथा सेवा तुम्हें स्वीकाि िोती ििे। मेिी एकमात्र यिी इच्छा िै। कृपया मेिी इस इच्छा को पूणथ कि दो। मेिी कामना िै हक मेिा मन तथा मेिे नेत्र तुम पि केस्ट्ित िौि िोंठ तुम्हािो नाम–रूप में संलग्न ििें। इसके हलए मैं तुम्हािो चिणों ंकी वन्दना किती हाँ।"

उक्त िब्दों ंमें िनाबाई का सम्पूणथ दिथन तथा उसकी अभीष्ट-हसस्ट्द्ध की हवहि हनहित िै। हवठोबा के प्रहत उसकी भस्ट्क्त इतनी प्रगाढ़ एवं हनष्कपट थी हक भगवान् उसके कौटुस्ट्म्बक कतथव्य का भाि विन एक सीमा तक स्वयं कि हलया किते थे। भगवान् के प्रहत अपनी सेवा-भस्ट्क्त के माध्यम से उसने स्वयं को पूणथतः हवसहिथत कि उनसे तादात्म्य स्थाहपत कि हलया था। िनाबाई एक मिान् िािा थी िौि उससे भी मिान् थे नामदेव ।

एकनाथ

एकनाथ मिािाष्ट्र के सुहवख्यात सन्त िैं। उनका िन्म मिािाष्ट्र में स्ट्स्थत पैठण (Paithan) में १५३३ ई. में हुआ था। उनके हपता का नाम सूयथनािायण तथा माता का नाम रुस्ट्क्मणी था। दि वषथ की अल्पायु में िी उनके पूवथ-संस्कािों ं के कािण उनके हृदय में भस्ट्क्त की ज्वाला प्रदीप्त िो चुकी थी। गीता में आया िै-"अपने पूवथ िन्म में प्राप्त संस्कािों ं को विााँ वि पुनः प्राप्त कि लेता िै िौि विााँ से पूणथता की हसस्ट्द्ध के हलए पुनः प्रयत्न किता िै" (६/४३)।

एक बाि एकनाथ ने यि आकािवाणी सुनी- "देवहगरि िा कि िनादथन पन्त के दिथन किो। वि तुम्हें उपयुक्त मागथ हदखा कि तुम्हािा पथ-प्रदिथन किेंगे।"

एकनाथ ने अहवलम्ब देवहगरि के हलए प्रस्थान हकया िौि विााँ िनादथन पन्त के दिथन कि उनके चिणों ंकी वन्दना की। िनादथन ने उन्हें अपने हिष्य के रूप में ग्रिण कि हलया। वि देवहगरि प्रान्त के दीवान थे। अपने गुरु के संसगथ में आठ वषथ तक िि कि एकनाथ ने सवाथन्तःकिण से उनकी सेवा की।

एक हदन िनादथन ने एकनाथ को लेखाबिी में एक पाई की भूल का पता लगाने का आदेि हदया। एकनाथ िात-भि उस भूल का पता लगाते ििे; पिन्तु िात-भि के कहठन परिश्रम के पिात् प्रातःकाल िी इसका पता लग सका हिससे उन्हें अत्यहिक प्रसन्नता हुई। उन्होंनें अपने गुरु को सूहचत कि हदया हक उन्होंनें उस भूल का पता लगा हलया िै। िनादथन ने उनसे किा- "िब लेखाबिी की एक साििाण भूल का पता लगाने के हलए तुमको इतना अहिक एकाग्रहचत्त िोना पड़ा, तब ईश्वि की खोि के हलए तुम्हें हकतनी अहिक एकाग्रता की आवश्यकता िोगी? तुम एक साििाण भूल का पता लगा कि इतना अहिक प्रसन्न िो ििे िो। यहद तुम अपने िीवन की लेखाबिी में अंहकत भूलों ं का पता लगा लोगे, तब तुम्हें हकतनी अहिक प्रसन्नता िोगी?" एकनाथ को एक उपयुक्त सीख हमली िौि अब वि अपने समय का अहिकांि भिन ध्यान तथा िात्म-हवश्लेषण में व्यतीत किने लगे।

उन हदनों ंिब िल आहद यातायात के सािन निीं ंथे, एकनाथ पैदल िी गंगोत्ति की तीथथ-यात्रा पि चले गये। विााँ
उन्होंनें गंगा के स्रोत स्थान से कई पात्रों ंमें िल भिा औि उसे बााँस की कााँवरि िािा अपने कन्धों ंपि िख कि वे विााँ से लौटे। विााँ से वि काशी आये ििााँ उन्होंनें एक पात्र में भिे गंगािल से काशी-हवश्वनाथ का पूिा-अहभषेक सम्पन्न हकया। विााँ से िामेश्विम् आ कि उन्होंनें िामहलंगेश्वि का अहभषेक हकया। एकनाथ ने िामेश्वि से कुछ मील पिले िी मागथ में एक िोगी गिे को देखा िो िलाभाव में मि िा िि था। ििती झुलसाने वाली गिमी पड़ ििी थी। एकनाथ ने
सोचा हक ईश्वि उनकी पिीक्षा लेना चािता िै। वि पिाभस्ट्क्त के सन्त थे। प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक क्षण औि प्रत्येक कमथ में उन्हें ईश्वि का दशथन तथा भान िोता था। उन्होंनें सोचा हक उन्हें इस गदथभ में स्ट्स्थत िामहलंगेश्वि की सेवा का सवोत्तम अवसि प्राप्त िो गया िै। उन्होंनें उस प्राणी को कभी गदथभ निीं ंसमझा। उन्हें नामरूपात्मक िगत् का हवस्मिण िो गया। उन्होंनें गदथभ में पिम तत्त्व, सस्ट्च्चदानन्द तथा अस्ट्स्त-भाहत-हप्रय के दशथन हकये। उन्हें भगवान् कृष्ण के ये शब्द याद आये हिन्हें उन्होंनें उद्धव से किा था- "प्रत्येक वस्तु में मेिे दशथन किो औि गदथभ को भी प्रणम्य समझो।" एकनाथ को िामहलंगेश्वि के पूिन के अवसि से वंहचत िो िाने का लेशमात्र भी दुःख निीं ंहुआ। उन्होंनें किा- "यिी सवोत्तम अवसि िै।" उन्होंनें गंगािल-पात्र को अनावृत कि सािा िल उस गदथभ को हपला हदया।
ईश्वि सवथत्र एवं प्रत्येक प्राणी में हवद्यमान िै। तीव्र आवश्यकता के क्षणों ंमें गदथभ को प्राप्त िल भगवान् िामहलंगेश्वि को पहुाँच गया। विीं ंऔि उसी क्षण एकनाथ को िामहलंगेश्वि के दशथन िो गये।

गुरु के आदेशानुसाि एकनाथ ने गृिस्थाश्रम में प्रवेश हकया। उन्होंनें एक आदशथ तथा हवशुद्ध-हृदय कन्या हगरििाबाई को पत्नी-रूप में ग्रिण हकया।

एकनाथ में नाम-मात्र को भी क्रोध न था। उनके गााँव के कुछ बुिे लोग उन्हें हकसी-न-हकसी प्रकाि उत्तेहित किना चािते थे। उन्होंनें इस कुकृत्य को सम्पन्न किने के हलए एक मुसलमान को कुछ िन भी हदया हिसके हलए वि तैयाि िो गया। हिस नदी में एकनाथ स्नान हकया किते थे, उसके तट पि िा कि वि उनकी प्रतीक्षा किने लगा। स्नान के पश्चात् िब वि बाहि आये, तब उसने उनके मुख-मण्डल पि थूक हदया। हबना कुछ बोले वि मुस्किा कि दूसिी बाि स्नान किने चले गये; हकन्तु बाहि आने पि उसने उन पि पुनः थूका। यि प्रहक्रया एक सौ आठ बाि चलती ििी; हकन्तु सहिष्णुता की प्रहतमूहतथ एकनाथ इससे सवथथा अप्रभाहवत ििे। िब उस मुसलमान ने एकनाथ को पूणथतः शान्त तथा अक्षुब्ध देखा, तब उसने मन-िी-मन सोचा- 'एकनाथ मनुष्य न िो कि कोई देवता िैं।' वि भयभीत िो गया। उसने सोचा हक वि उसे मृत्यु का शाप न दे दें। कााँपते हुए उसने एकनाथ को साष्टांग प्रणाम हकया औि उनसे क्षमा-याचना की। तत्पश्चात् उसने उनको सािा वृत्तान्त कि सुनाया औि बताया हक उसे ग्रामीणों ंने उनको क्रोहित किने के हलए िन हदया था।

दूसिी बाि गााँव वालों ंने उन्हें उत्तेहित किने के हलए एक ब्राह्मण को अहभप्रेरित हकया। ब्राह्मण ने मन-िी-मन सोचा- 'एकनाथ को उत्तेहित किने की सुगम हवहि क्या िोगी। मुझे उनकी पत्नी को पकड़ लेना चाहिए। इससे वे हनहित रूप से क्षुब्ध िो उठेंगे। यि सवोत्तम हवहि िै हिससे मैं अपने प्रयास में सफल िो िाऊाँगा। अतः उसने इस हवहि के कायाथन्वयन का हनश्चय कि हलया। एक हदन िब एकनाथ की पत्नी भोिन पिस ििी थीं,ं उस दुष्ट ब्राह्मण ने घि में प्रहवष्ट िो कि उन्हें पकड़ हलया। एकनाथ एक हशला-खण्ड की भााँहत अचल खड़े ििे औि िोि-िोि से िाँसने लगे। उस घटना से उस व्यस्ट्क्त को क्या प्रभाहवत िोना था िो हकसी ििी, पत्नी तथा अन्य वस्तुओं ंसे एकीकृत निीं ंिो सका था। िो अज्ञान के सागि को पाि कि गया िै, उस सतोगुणी पुरुष के हलए यि सवथथा नगण्य िै। इस परिस्ट्स्थहत में उन्होंनें अपनी पत्नी से किा- "हगरििादेवी, भूखे बालक ने तुम्हें पकड़ हलया िै। तुम उसे भि-पेट दूि हपला दो।" िब उस हनदथय ब्राह्मण ने इस बात पि ध्यान हदया हक एकनाथ इससे लेशमात्र भी हवचहलत निीं ंहुए िैं

ओौ िब उसने उनके सिानुभूहतपूणथ िब्द सुने, तब उसका हृदय िहवत िो गया। वि फूट-फूट कि िोने लगा। उसे इस बात का अत्यहिक पित्ताप हुआ हक उससे एक घोि अपिाि िो गया िै। अवनत-िीहि िो कि उसने एकनाथ से किा- "ििािाि, मुझे क्षमा कीहिए। मुझ हनिथन व्यस्ट्क्त से यि मूखथतापूणथ कायथ िो गया िै। भिण-पोषण के हलए मेिे पास िन निीं िैं। गााँव वालों ने मुझे उत्कोच-रूप में इसहलए िन हदया था हक मैं आपमें क्रोि िाग्रत कि सकूाँ। हनिथन िोने के किाण मैं िन की इस भेंट के प्रहत आकृष्ट िो गया। मुझसे घोि पाप हुआ िै। मुझे क्षमा कीहिए।" दयािथ िो कि उन्होंनें उसके प्रहत सिानुभूहत प्रकट की। उन्होंनें उसे भागवत के पाठ तथा भगवान् कृष्ण के नाम-िप का आदेि हदया। उन्होंनें उसे तुलसी की एक माला भी दी।

गााँव वालों को इस बात का पूणथ हवश्वास था हक इस बाि उनकी योिना अवश्य सफल िोगी; हकन्तु िब उन लोगों ने उस हनिथन ब्राह्मण को गले में तुलसी की माला िािण हकये लौटते हुए देखा, तब वे हनिाि िो गये। ब्राह्मण ने उनसे किा- "मैंने अथक प्रयत्न हकया। मैंने उनकी पत्नी को पकि हलया; हकन्तु इससे वि लेिमात्र भी हवचहलत न िो सके ओौ सवथदा मुस्किाते ििे।

वि देवता िैं ओौ अब मैं उनका हिष्य हाँ। मुझे उन्होंनें मन्त्र हदया िै ओौ उस क्षण से मैंने अपने कुकृत्यों को हतलांिहल दे दी िै। मैं अब भगवान् कृष्ण के दिथन के हलए अनवित प्रयत्न कि ििा हाँ। अब मैंने स्वयं को तुम लोगों से हवलग कि हलया िै।"

असूपृश्य िन के हलए एकनाथ के हृदय में अगाि स्नेि था। वि समदिी थे ओौ सवथभूतों में भगवान् कृष्ण को देखते थे। एक हदन एकनाथ के हपता की मृत्यु की वाहषथकी के अवसि पि उनके घि सुस्वादु पकवान बनाये िा ििे थे हिनकी सुगन्ध के प्रहत आकहषथत िो कि िीमाि-िाहत के कुछ लोग उनके िाि के सामने रुक गये। एकनाथ ने उन्हें तत्काल हनमस्ट्न्त्रत कि स्वाहदष्ट भोिन से तृप्त कि हदया। इसके पिात् पुनः भोिन बनवा कि उन्होंनें ब्राह्मणों को हनमस्ट्न्त्रत हकया; पि उक्त घटना से ब्राह्मण क्षुब्ध िो गये थे। उन्होंनें किा-"एकनाथ, तुमने पिले िीमािों को भोिन किाया; अतः िम तुम्हािे घि भोिन निीं किेंगे।" तब एकनाथ ने अपने भस्ट्क्त-बल से अपने पूवथिों का अपिोक्ष रूप से आह्वान हकया हिन्होंनें विााँ पिाँसी उपस्ट्स्थत िो कि भोिन हकया।

एकनाथ एक मिान् भक्त थे। स्वयं भगवान् कृष्ण एक हनिथन ब्राह्मण बालक के रूप में कास्ट्ण्डया (Kandia) नाम ग्रिण कि बािि वषथ तक उनके परिवाि की सेवा किते ििे। वि विााँ पानी भिने से ले कि पूिा का िल लाने, चन्दन हघसने तथा िाहत्र-भोिन के पिात् भोिन-कक्ष को प्रक्षाहलत किने तक, सभी काम किते थे। बािि वषथ की अवहि के पिात् कास्ट्ण्डया चमत्कारिक रूप से अन्तिाथन िो गये।

एकनाथ ने भागवत की िचना की। यि ग्रन्थ मिािाष्ट्र में उसी प्रकाि समादृत िै हिस प्रकाि तुलसीदास का 'िामचरितमानस' उत्ति भाित में। विााँ के लोगों में यि 'एकनाथ भागवतम्' के नाम से प्रख्यात िै। इसे मिािाष्ट्र के प्रत्येक घि में देखा िा सकता िै।

१५९९ ई. में हछयासठ वषथ की आयु में एकनाथ गोलोकवासी हुए। एक हनष्ठावान् भक्त, एक मिान् भागवत, एक आदिथ गृिस्थ तथा एक वरिष्ठ सन्त के रूप में उनके आदिथ की दीप-हिखा लोगों के समक्ष आि भी प्रदीप्त िै।

तुकािाम

तुकािाम का िन्म िनपद पुणे-स्ट्स्थत देह नामक ग्राम में १६०८ ई. में हुआ था। यि ग्राम ज्ञानेश्वि का समाहि-स्थल िोने के किाण सिान्य आलन्दी नामक स्थान से सात मील तथा मुम्बई-पुणे िेल-मागथ पि स्ट्स्थत िेलिवािी िेलवे

रिन से तीन मील दिू ि ै। उनका परिवाि एक समृद्ध िि ू परिवाि था हिसके ि ीहवकोपािथन का सािन व्यापाि था। इन लोगों ं को मोि (Moray) कि ा िाता था। यि परिवाि देह में बहुत हदनों ं पिले आ बसा था। ये लोग पण्ढिपुि के हवठोबा के पिूक थे। इन लोगों ं ने हवठोबा के नाम पि एक मस्ट्न्दि का भी हनमाथण हकया था औि कई पीहढ़यों ं से पण्ढिपुि की वािी-प्रथा को स्वीकाि कि हलया था। इस प्रथा के अनुसाि इन्हें प्रहतवषथ आषाढ़ तथा काहतथक की एकादहियों ं को पण्ढिपुि की तीथथयात्रा किनी पड़ती थी। तुकािाम के बाल्यकाल में कोई हविेष घटना निीं ं हुई।

तीन भाइयों ं में तुकािाम दूसिे भाई थे। अन्य दो भाइयों ं के नाम थे सावािी एवं कान्हिी। सावािी की कोई सांसारिक मित्त्वाकांक्षा निीं ं थी औि हपता ि ीहमथक प्रवृहत्त के व्यस्ट्क्त थे। इस प्रकाि तेिि वषथ की आयु में िी तुकािाम को परिवाि के भिण-पोषण का भाि विन किना पड़ गया। उन्हीं ं हदनों ं तुकािाम का हवावाि रुिाबाई से िो गया, हकन्तु रुिाबाई रुग्ण िीिि की महिला थीं; ं अतः तुकािाम को पुणे की िीिाबाई से हवावाि किना पड़ा। बीस वषथीय िोने के पूवथ िी तुकािाम ने अपनी गृिस्थी का प्रबन्ध हिस कौिल से हकया, उससे परिवाि के सभी सदस्य सन्तुष्ट थे। १६२५ ई. में उनके माता-हपता का देिान्त िो गया, तब उनकी आयु केवल सत्रि वषथ थी। उन्हीं ं हदनों ं उनकी भाभी का भी देिान्त िो गया, औि उनके बड़े भाई गाँव का परित्याग कि आध्यास्ट्त्मक मुस्ट्क्त की खोि में वािाणसी चले गये। माता-हपता की मृत्यु उनके हलए एक ममाथन्तक आघात हसद्ध हुई। इसके परिणाम स्वरूप १६२६ ई. तथा १६३० ई. के बीच के चाि वषों की घटनाओं ं के परिणाम उनके हलए चक्रवात की भाँहत अत्यन्त दुःखद ििे।

उनके माता-हपता तथा उनकी भाभी की मृत्यु एवं उनके अग्रि सावािी के गृि-त्याग के फल-स्वरूप सांसारिकता के प्रहत तुकािाम का उत्साि िाता ििा। उनकी इस मनःस्ट्स्थहत से लाभ उठाते हुए ऋणी लोग उनको ऋण लौटाने में आनाकानी किने लगे औि दूसिी औि ऋणदाता उनसे अपना प्राप्तव्य प्राप्त किने के हलए उन पि दबाव िालने लगे। तुकािाम ने व्यापाि के कई एक उपक्रमों ं में िाथ िाला; हकन्तु यि सािा कुछ अलाभकि िी हसद्ध हुआ। एक बाि िब वि घि लौट ििे थे, तब कुछ ि ूतों ने हगलट के आभूषण दे कि उनका सािा िन ठग हलया। एक अन्य अवसि पि उन्होंने एक बुभुहक्षत तथा मृतप्राय हनिथन ब्राह्मण को देखा औि उसकी तुहष्ट के हलए उसे मूलिन से उपाहिथत लाभ के अहतरिक्त मूलिन भी दे हदया। यि मूलिन उनकी पत्नी ने हकसी से उिाि हलया था। इस कटु अनुभव के पिात् तुकािाम पि से परिवाि का हवश्वास िाता ििा। िब वि घि से किीं ं दिू िाते थे, तब उन्हें कोई मूल्यवान् वस्तु निीं ं दी िाती थी। िीिाबाई एक बाि पुनः उनकी सिायका हसद्ध हुईं। उनके हलए उन्होंने उनके ग्राम में िी एक छोटी दुकान की व्यवस्था कि दी। ऐसा किते समय वि पहत की मनःस्ट्स्थहत से परिहचत निीं ं थीं। ं तुकािाम दुकान में बैठे-बैठे भिन किते ििते। ग्रािकों ं के प्रहत उनके मन में सिानुभूहत तथा हनष्कपटता के भाव थे। इसके फल-स्वरूप वि हदवाहलया िो गये। उन पि दो पहत्नयों, ं एक पुत्र तथा एक छोटे भाई के भिण-पोषण का भाि था। संकट की इस घड़ी में १६२९ तथा १६३० ई. में भयंकि अकाल पड़ा। तुकािाम की पिली पत्नी अिाभाव में अन्न के हलए तिसती चल बसीं। ं उनका पुत्र भी िाता ििा। उनके पास िो पिु िेष िि गये थे, वे भी अकाल के गाल में समा गये औि परिवाि के प्राहमसिी नोट अन्ध-पत्र हसद्ध िो गये क्योंहक अकाल में उनसे कुछ भी प्राप्त निीं ं िो सकता था। यि अवसि तुकािाम के िीवन की लक्ष्य-पूहतथ के अहभयान का प्रािम्भ-हबन्दु हसद्ध हुआ।

दुभाथग्य के अनेक थपेड़ों ं के फल-स्वरूप तुकािाम िीवन के प्रहत इस सीमा तक हविक्त िो गये हक वि गाँव औि घि का परित्याग कि हनकटस्थ भामनाथ वन में चले गये। विाँ वि पन्द्रि हदनों ं तक सवथिस्ट्क्तमान् ईश्वि का ध्यान किते ििे। इस अवहि में उन्हें अन्न, िल तथा हनद्रा की कोई सुहि निीं ं ििी। पन्द्रिवें हदन के पिात् उन्हें आत्म-साक्षात्काि हुआ औि हवठोबा ने उन्हें अपने यथाथथ स्वरूप में दिथन हदया।

इस बीच तुकािाम की दूसिी पत्नी अपने पहत की खोि सवथत्र किती ििी औि िब उसने उन्हें पिाड़ी पि देखा, तब वि उन्हें घि लौटा लायी; हकन्तु यि तुकािाम उस तुकािाम से हभन्न थे िो उसे एक पक्ष पूवथ छोड़ गये थे। अब तुकािाम के हृदय में गृिस्थी, पत्नी तथा सम्बस्ट्न्धयों ं के प्रहत कोई ममत्व निीं ं िि गया था। वन से लौटने के पिात्

िीघ्रि िी उन्होंनें सम्बस्ट्न्धयों ंके प्रहतवाद की उपेक्षा कि घि में िखे सिो प्राहमसिी नोट तथा हिसाब-हकताब के सभी परिपत्र इियणी नदी में बिा हदये। तत्पिात् उन्होंनें उस मस्ट्न्दि का पुनः हनमाथण हकया िो परिष्किा के अभाव में ध्र्स्त िो गया था। अब वि िात-हदन उस मस्ट्न्दि में भिन-कीतथन में तल्लीन ििने लगे। उस समय की अपनी मनःस्ट्स्थहत का वणथन उन्होंनें इन िब्दों ंमें हकया िै- "िे पिमेश्वि, कृपया तुम मुझे ऐसा विदान दो हक मैं तुम्हें कभी
भी हवसूमृत न कि सकूँ। मैंने पंचतत्त्व से हनहमथत अपना ििीि अपने िीवन-काल तक के हलए उिाि हलया िै औि इस अवहि की परिसमास्ट्प्त के पित् इसे ब्याि सहित प्रत्यहपथत कि देना िै। िे पाण्डुिंग, मैं अन्ततः इसी हनष्कषथ पि पहुँचा हाँ हक तुम्हािे अहतरिक्त मेिा अन्य कोई िुभहचन्तक निीं ंिै।"
तुकािाम की अनन्य भस्ट्क्त औि उनके भिन-कीतथन के फल-स्वरूप उनको पुिस्कि में गुरु-उपदेि की प्रास्ट्प्त हुई। गुरु ने उनको स्वप्न में दिथन हदया। तुकािाम इसे अपने िीवन की सवथश्रेष्ठ घटना मानते िैं। वि किते िैं- "सद्गुरु मेिे पास स्वप्न में आये। मेिे कमथ ऐसे निीं ंथे हक मैं उनका कृपा-पात्र बन सकूँ। हफि भी वे मेिे प्रहत कृपालु थे। मुझसे वे उस समय हमले, िब मैं नदी-स्नान के हलए िा ििा था। उन्होंनें मेिे ससि पि िाथ िख कि मुझे आिीवाथद हदया। उन्होंनें अपना नाम बाबा िी बताते हुए अपने दो पूवथवहतथयों ंके नाम िाघव चैतन्य एवं केिव चैतन्य बताये। उन्होंनें मुझे 'िामकृष्ण हरि' के िप का पिामिथ हदया। माघ मास के िुक्ल पक्ष की दिमी हतहथ को मैंने गुरु से दीक्षा ग्रिण की।" यि घटना िनविी १६३२ ई. में हुई। उस समय उनकी आयु चौबीस वषथ की थी। इस घटना से उनको असीम आनन्द हुआ था।

अब तुकािाम के िीवन का अहिकांि समय भस्ट्क्त-सािना, ज्ञानदेव, नामदेव तथा एकनाथ की कहवताओं, ं इन सन्तों ंकी अन्य कृहतयों, ं गीत एवं भागवत आहद के अध्ययन में व्यतीत िोने लगा। इसके परिणाम स्वरूप वि िीिे-िीिे, हकन्तु अनिाने िी कहवताएँ हलखने लगे। एक हदन स्वप्न में उनके पास पाण्डुिंग के साथ नामदेव आये। इन दोनों ंने उन्हें िगा कि भस्ट्क्त-गीत हलखने का पिामिथ हदया। ये लोग उनसे कोई बिाना निीं ंसुनना चािते थे। पाण्डुिंग ने उन्हें इसके हलए आवश्यक प्रेिणा प्रदान की औि नामदेव ने उनसे एक सिस्र कोहट भस्ट्क्त-िस की कहवताएँ हलखने को किा। कभी उन्होंनें स्वयं इतनी कहवताएँ हलखने का हवचाि हकया था हिनमें से वि चौिानवे किोड़ चालीस लाख कहवताएँ हलख भी चुके थे; हकन्तु अभी पाँच किोड़ साठ लाख कहवताओं ंका लेखन िेष िि गया था हिसे उन्होंनें तुकािाम के हलए छोड़ हदया था। तुकािाम में कहवता-लेखन की इस हदव्य कला का आहवभाथव स्वभावतः िी िो गया था। उनकी कहवताएँ भस्ट्क्त-िस-प्रिान िोती थीं ंहिसके फल-स्वरूप लोग उनकी औि अहिकाहिक आकृष्ट िोते गये। इसका एक कािण यि भी था हक उन्होंनें कभी अपनी भौहतक सुख-सुहविा के हलए हकसी से हकसी सांसारिक वस्तु की याचना निीं ंकी।

तुकािाम िब कभी भी भिन या कीतथन किते. तभी विाँ िन-समूि उमड़ पड़ता। कुछ अपवादों ंको छोड़ कि सभी वगों के लोग उन्हें सन्त समझ कि उनका सम्मान किते थे हकन्तु कुछ लोगों ंमें उनके प्रहत हवदेष की भावना भी िाग्रत िो गयी थी। उन लोगों ंने उनकी अवमानना के अहिकाहिक प्रयत्न हकये। इस प्रयत्न में हवफल िोने के पित् उन्होंनें उस समय के एक हविान् ब्राह्मण िामेश्वि िास्त्री के पास तुकािाम के हवरुद्ध एक प्रहतवेदन प्रस्तुत कि हदया।

तुकािाम ने स्वयं को हनदोष हसद्ध किने के हलए कई एक प्रमाण प्रस्तुत हकये; हकन्तु िास्त्री िी ने उनकी एक न सुनी। अपने हनणथय पि अटल िहते हुए अन्ततः उन्होंनें तुकािाम से किा हक 'उन्होंनें उनकी कहवताओं ंमें श्रुहतयों ंके हसद्धान्तों ंकी व्याख्या का एक सुहवचारित प्रयास देखा िै, िब हक िूद्र िोने के कािण वि इस अहिकाि से वंहचत िैं; अतः भहवष्य में उन्हें इस प्रकाि की कहवताओं ंका लेखन बन्द कि देना औि अब तक हलखी गयी कहवताओं ंको इियणी नदी में बिा देना िोगा।' तुकािाम ब्राह्मणों ंका अत्यहिक सम्मान किते थे; अतः उन्होंनें अपनी सािी कहवताएँ घि से ला कि उनकी एक पोटली बनायी औि उस पोटली को एक पत्थि से सम्बद्ध कि नदी में िाल

हदया। उनके प्रहत हविेष-भाव से ग्रस्त उनके हनन्दक इस घटना से बहुत प्रसि हुए। तुकािाम उन लोगों ंके कटाक्ष से हवचहलत निीं ंहुए; हकनुतु वि हचन्ता-मुक्त भी निीं ंथे। यिााँ वि अपनी कहवताओं ंके माध्यम से ईश्वि का गुण-गान मात्र कि ििे थे हिस पि केवल वेदों ंतथा शुरुहतयों ंका िी अहिकाि निीं ंथा। इसके अहतरिक्त स्वयं पाणुडिंग ने उन्हें अपनी कहवताओं ंके माध्यम से लोगों ंमें भस्ट्क्त के प्रचाि-प्रसाि का आदेि हदया था।

इस घटना के पिात् तुकािाम इन्द्रायणी नदी के तट पि बैठ कि उपयुक्त मागथ-दिथन के हलए पाणुडिंग की अनवित प्राथथना में तल्लीन िो गये। तेिि हदनों ंतक वि अन्न-िल का परित्याग कि अहवचहलत रूप से प्राथथना किते ििे। अस्ट्न्तम हदन पाणुडिंग ने तुकािाम के एक अनुयायी को स्वप्न में दिथन दे कि उससे किा "नदी के तट पि िाओ। विााँ तुकािाम की कहवताओं ंकी पोटली सुिहक्षत रूप में नदी की सति पि प्रवाहित िोती हमल िायेगी।" वि व्यस्ट्क्त तत्काल िी नदी-तट पि िा कि कहवताओं ंकी पोटली उठा लाया। ईश्वि की इस कृपा से हवगहलत-हृदय तुकािाम ने पााँच कहवताओं ंके माध्यम से ईश्वि के वचनों ंपि सन्देि प्रकट किने तथा अपनी कहवताओं ंको िल में तेिि हदनों ंतक सुिहक्षत िखने में हुए उनके कष्ट के हलए स्वयं को दोषी माना। हिि भी तुकािाम के हलए यि पयाथप्त निीं ंथा। इसका काि‍ण यि था हक वि ब्राह्मण-वचन तथा िास्त्-वचन में वैहभन्य दिथन निीं ंकिते थे। इसके अहतरिक्त िामेश्वि िास्त्ी ने उन्हें भहवष् में कहवताएाँ निीं ंहलखने का आदेि दे हदया था।

इस घटना के कुछ िी हदनों ंपिात् एक हदन िामेश्वि िास्त्ी वाघोली (Vagholi) गााँव से िोते हुए एक अन्य गााँव में िा पहुाँचे। उस गााँव में अंगद िाि नामक एक फकीि ििते हुए थे। उनके आिते में एक बड़ा िल-स्रोत था हिससे विााँ चतुहदथक् िीतल िल-प्रक्षेपण िोता ििता था। उस िल-स्रोत से आकहषथत िामेश्वि को विााँ स्नान किने का लोभ हुआ। अपने आिते में एक अपरिहचत व्यस्ट्क्त को प्रहवष्ट िोते देख कि अंगद िाि कुषुब्ध िो उठे। उन्होंनें उनको िाप हदया हक उनका समूपूणथ ििीि भीषि-िीत प्रदािक संवेदन से ग्रस्त िो िाये। िामेश्वि के हलए अंगद िाि के िाप का परिणाम िीघ्र िी पीड़ाप्रद हसद्ध िोने लगा। उस प्रदािक संवेदन से मुस्ट्क्त के उनके सािे प्रयत्न हनष्फल िो गये औि उनका ििीि िीतल न िो सका। उस व्यथा को सिने में असमथथ िो कि वि आलन्दी चले गये ििााँ ज्ञानेश्वि की समाहि के सम्मुख बैठ कि ििीि के प्रदाि-संवेदन से मुस्ट्क्त के हलए वे प्राथथना किने लगे। स्वप्न में उनको ज्ञानेश्वि के दिथन हुए हिन्होंनें उनसे किा- "हवठोबा के मिानतम भक्त तुकािाम के प्रहत तुम्हािे मन में घृणा के भाव िैं। उनके सम्मुख िा कि उनको आत्म-समपथण किो। तुम्हािी ििीरिक पीड़ा समाप्त िो िायेगी।" िामेश्वि को तुकािाम के सम्मुख ििीिी उपस्ट्स्थत िोने में भय िो ििा था। देहू (Dehu) में िो कुछ िो चुका था, वि उससे परिहचत थे औि तुकािाम की मिानता के प्रहत आश्वस्त िो चुके थे अतः उन्हें भय था हक तुकािाम किीं ंउन्हें िाप न दे दें। इस स्ट्स्थहत में उन्होंनें पत्र िािा तुकािाम से क्षमा याचना की। हनःस्व िोते हुए भी तुकािाम के हृदय में प्रत्येक प्राणी के हलए प्रेम था। वि अपने उत्पीड़कों ंतक से प्रेम किते थे। पत्र-प्रास्ट्प्त के पिात् पत्रोत्ति के रूप में उनको हनम्नांहकत आिय की कहवता हलख भेिी :

"यहद मन पहवत्र िै तो तुम्हािे ित्रु भी हमत्र िो सकते िैं। व्याघ्र-सपाथहद-िैसे क्रूि पिुओं ंसे भी तुम्हें समक्ष कोई संकट निीं ंउपस्ट्स्थत िो सकता। तुम्हािे हलए हवष भी स्वगथ के अमृत की भााँहत हितकि िो िायेगा। तुम्हािा सािा दुःख सुख में परिणत िो िायेगा औि दैहिक प्रदाि-िहनत तुम्हािी पीड़ा भी समाप्त िो िायेगी। हिस प्रकाि तुम स्वयं से प्रेम किते िो, उसी प्रकाि तुम प्राहणमात्र से प्रेम किने लगोगे औि समदिी िो िाओगे। तुकािाम किता िै, 'मुझ पि नािायण की कृपा-वृहष्ट हुई िै; अतः मुझमें सवथभूतों ंके प्रहत यि भाव िाग्रत िो गया िै।"

यि पत्र पढ़ते समय िब िामेश्वि की दृहष्ट इन िब्दों ंपि पड़ी, 'दैहिक प्रदाि-िहनत तुम्हािी पीड़ा भी समाप्त िो िायेगी', तब उनका ििीि पीड़ा-मुक्त िो गया। अब वि इस तथ्य से पूणथतः परिहचत िो गये हक उन्होंनें तुकािाम के प्रहत घोि अन्याय हकया िै। उसी क्षण से वि तुकािाम के मिान् प्रिंसक तथा प्रबल अनुयायी िो गये।

इस घटना से तुकािाम की ख्याहत चतुहदथक् व्याप्त िो गयी; हकन्तु वि हनिथन-के-हनिथन िी िि। भिन-कीतथन में सतत संलग्न तुकािाम अपने भिण-पोषण के हलए कुछ भी उपाहिथत न कि सके। उनके परिवाि, हिसमें उनकी पत्नी औि बच्चे थे, के भिण-पोषण का भाि उनकी हववि पत्नी के कन्धों पि पड़ गया। तुकािाम भिन में इतने तल्लीन िो िाते हक उन्हें प्रायः मध्याह्न-भोिन की भी सुहि न ििती। इस स्थिहत में उनकी पत्नी को िाथ में भोिन-पात्र हलये स्थान-स्थान पि उनकी खोि कि उनको भोिन किाना पड़ता। अहिकति वि भामहगरि की पिाड़ी पि ििते थे। परिवाि की देख-िेख में उनकी पत्नी को अनेक कहठनाइयों का सामना किना पड़ता। वि कभी-कभी कुरुद्ध-कुषुब्ध भी िो उठती थीं; हकन्तु मुख्यतः वि एक साधु-वृहत्त की महिला थीं। उनकी मृत्यु के पश्चात् स्वयं तुकािाम ने उनकी भस्क्त तथा हविुद्धता को सिािा था।

एक बाि तुकािाम के एक प्रिंसक ने उनसे किा हक यहद वि उसके मक्के के खेत की देख-भाल तथा पहक्षयों से उसकी सुिक्षा का भाि ग्रिण कि लें, तो वि उन्हें प्रहतहदन कुछ िान्य दे हदया किेगा। यि सोच कि हक इससे उन्हें ईश्वि के गुण-गान के हलए एक एकान्त स्थान हमल िायेगा, तुकािाम ने उसके इस प्रस्ताव को स्वीकाि कि हलया। तुकािाम के खेत में पहुँचते िी सैकड़ों पक्षी उड़ गये। तुकािाम का मन यि देख कि अिान्त िो गया हक उनके काण पहक्षयों को अपने भोिन से वंहचत िो िाना पड़ा; हकन्तु कुछ िी हदनों में पक्षी अपना संकोच औि भय त्याग कि उस खेत में आ कि हनयहमत रूप से दाना चुगने लगे। िब खेत के स्वामी को यि सब ज्ञात हुआ, तब वि तुकािाम को पकड़ कि गाँव के मुस्खया के पास ले गया। तुकािाम ने अपना प्रहतवाद प्रस्तुत किते हुए किा हक ये प्राणी भी ईश्वि की सन्तान िैं हिन्हें उन्मुक्त हृदय से अन्न-दान किना सबका कतथव्य िै। हकन्तु उनकी एक न सुनी गयी औि अब तक हुई क्षहत के अनुरूप खेत के स्वामी को एक वचन-पत्र देना पड़ा। फसल कटने पि देखा गया हक सम्भाहवत पैदावाि में िाहन के स्थान पि दोगुनी वृस्द्ध िो गयी िै। यि देख कि हकसान इतना िषथ-हवह्वल हुआ हक उसने अहतरिक्त िान्य-िाहि तुकािाम को दे दी औि तुकािाम से िैसी आिा की िा सकती थी, उन्होंने यि सािी अहतरिक्त िान्य-िाहि हनिथनों में हवतरित कि दी।

मिािाष्ट्र के मिान् िन-नायक हिवािी तुकािाम के पिम भक्त थे। उन्होंने उनके पास भेंट-स्वरूप अनेक बहुमूल्य वस्तुएँ भेिीं तथा उनको अपनी िाि-सभा में पिािने के हलए हनमस्न्त्रत भी हकया; हकन्तु तुकािाम ने उन बहुमूल्य वस्तुओं को यि कि कि लौटा हदया हक उन्हें पृथ्वीपहतयों से कोई लेना-देना निीं िै। तब हिवािी स्वयं आ कि उनके पास कई हदनों तक ििे। उन्होंने तुकािाम से कुछ भेंट स्वीकाि किने का बहुत आग्रि हकया; हकन्तु उन्होंने इस आग्रि को स्पष्ट िब्दों में अस्वीकाि कि हदया।

एक हदन हिवािी तुकािाम के गीतों तथा भिनों से इस सीमा तक प्रभाहवत हुए हक कुछ क्षणों के हलए उनके मन में यि इच्छा िाग्रत िो गयी हक वि अपने िाज्य का परित्याग तथा तुकािाम का पथानुसिण कि आिीवन भिन में तल्लीन ििें; हकन्तु तुकािाम ने उन्हें ऐसा किने से िोक हदया। उन्होंने हिवािी का ध्यान वणाथश्रम-िमथ, हिन्दू-सम्प्रदाय तथा िाष्ट्र की ओि आकृष्ट किते हुए अन्ततः उनको यि पिामिथ हदया- "ईश्वि के साक्षात्काि के हलए अिंल के परित्याग तथा वन-गमन की कोई आवश्यकता निीं िै। यहद सांसारिक सुख तुम्हें स्वतः प्राप्त िो िाते िैं, तो उनका तुम पूणथतः उपभोग किो; हकन्तु यि सब सवाथन्तयाथमी ईश्वि के नाम पि िी िोना चाहिए। न हकसी वस्तु की इच्छा किो, न हकसी वस्तु का परित्याग किो। यि तुमको मेिा एकमात्र सिि पिामिथ िै।" हिवािी विाँ से अपनी िािसभा में अहिक सुखी तथा अहिक सन्तुष्ट िो कि लौटे।

एक हदन एक ब्राह्मण को तुकािाम से सन्त मुकुन्दिाि की पुस्तक 'हववेक-हसन्धु' पढ़ने की इच्छा हुई। इससे वि तुकािाम की उस पुस्तक की व्याख्या तथा उनके पिामिथ से लाभास्न्वत िोता औि उसे आत्म-साक्षात्काि तथा ब्रह्मैक्य-बोि की उपलस्ब्ध िोती। उसका उद्देश्य भी यिी था। तुकािाम उसके इस प्रस्ताव से सिमत िो गये औि ब्राह्मण वि पुस्तक पढ़ने लगा; हकन्तु तुकािाम ने अपनी आँखें बन्द कि लीं। वि ध्यानस्थ िो कि िप में तल्लीन िो

गये। इससे क्षुब्ध िो कि उस ब्राह्मण ने उनकी उदासीनता का कटु िब्दों ंमें हििवो हकया; हकन्तु उसके िब्दों ंसे अहवचहलत िििे हुए तुकािाम ने इस कहवता के माध्यम से उससे किा- "इसी किाण मैं गृि तथा इन वस्तुओं ंका परित्याग कि वन में चला िाता िै। मुझे ईश्वि से तादात्म्य की इच्छा निीं ंिै। मैं उसके हवग्रि के प्रहत अपने प्रेम से वंहचत िोना निीं ंचािता।

यहद मुझे आत्म-साक्षात्काि की उपलस्ब्ध िो िायेगी, तो भिन-कीतथन की मेिी कामना का अन्त िो िायेगा। मेिी ऐसी कोई इच्छा निीं ंिै। मैं अद्वैतवाद का समथथन किने वाले िब्दों ंको सुनना निीं ंचािता।" एक अन्य अवसि पि उन्होंनें अपनी कहवता के माध्यम से ईश्वि से किा- "मैं तुमसे अपने सम्बन्ध को घहनष्ठतम कि देना चािता हाँ अथाथत् तुम स्वामी, मैं सेवक। तुम उच्चासन पि, मैं तुम्हािे चिणों ंपि। िे पिमेश्वि, तुम मुझे केवल यिी वि दो हक मैं तुम्हें कभी हवस्मृत न कि पाऊाँ औि श्रद्धापूवथक तुम्हािा गुण-गान किता िहाँ।"

तुकािाम की आस्था ईश्वि के नाम िप, भिन तथा उसके गुण-गान के रूप में सगुण भस्क्त के प्रहत थी। उनका किना था हक भस्क्त ईश्विोपासना तथा सेवा का उच्चति स्वरूप िै। यि मुस्क्त से भी उच्चति िै। उनके अनेकानेक हदन तथा उनकी अनेकानेक िातें भिन में िी व्यतीत िोतीं।ं उनको हनकटस्थ गााँवों ंसे विााँ िा कि ग्रामीणों ंके साथ भिन किने के हनमन्त्रण हमलते थे।

एक बाि वि देह के हनकट लोिगााँव में कीतथन कि ििे थे। विााँ एकत्र बृित् िन-समुदाय भी उनके साथ भिन कि ििा था। इसमें िोिी नामक एक ब्राह्मण भी था िो अपनी पत्नी के पास अपने मिणासन्न अल्पवयस्क पुत्र को छोड़ कि विााँ आया था। बालक की मृत्यु िो गयी हिससे माता िोकातथ िो उठी। भिन में लीन तुकािाम के पास िा कि उसने उनकी भत्सथना किते हुए किा हक उन्हीं ंके किाण उसका पहत अपने मिणासन्न पुत्र के प्रहत उदासीन हुआ औि इस प्रकाि वि उसके पुत्र की मृत्यु के हलए उत्तिदायी िैं। तुकािाम तत्काल मृत बालक को िीवन दान देने के हलए ईश्वि से प्राथथना किने लगे। वि अकृहत्रम तथा हृदय-स्पिी स्विों ंमें अपना एक अिु भस्क्त-गीत गाने लगे हिसमें विााँ हवद्यमान श्रोता भी अन्तःस्फूतथ भस्क्त के साथ सस्म्महलत िो गये। पण्ढिीनाथ ने उन लोगों ंकी प्राथथना स्वीकाि कि ली औि उसका मृत पुत्र पुनिीहवत िो कि स्वयं उस भिन मण्डली में सस्म्महलत िो गया।

किा िाता िै हक तुकािाम के िीवन में अनेक चमत्कािपूणथ घटनाएाँ हुई। उनकी ख्याहत का प्रसाि देि-भि में हुआ; हकन्तु वि स्वयं इससे अप्रभाहवत िी ििे। उनको अपने संसाि-त्याग के यथाथथ समय का ज्ञान था। वि अब अपने िीवन से परिश्रान्त िोने लगे। उन्होंनें सोचा हक उनका िो समय कीतथन-भिन औि हवठोबा के गुण-गान में व्यतीत िोना चाहिए था, वि उनकी ििीरिक आवश्यकताओं ंकी पूहतथ में व्यतीत िो ििा था। उन्होंनें भगवान् से प्राथथना की हक उन्हें उनके चिण कमलों ंमें िीघ्राहतिीघ्र ििण प्राप्त िो ििााँ वि उनकी अनवित उपासना में स्वयं को सवथदा के हलए संलग्न िख सकें।

िब उनका अन्त-काल हनकट आ गया, तब उन्होंनें अपने हमत्रों ंसे किा हक उनका प्रयाण-काल हनकट आ गया िै। मिाप्रस्थान की पूवथ-िाहत्र में उन्होंनें कीतथन का आयोिन हकया िो अनेक अथों में स्मिणीय िै। इस कीतथन का हवषय था िरि-कथा। तुकािाम ने किा- "िरि-कथा ईश्वि, भक्त तथा भगवन्नाम, इन तीन नहदयों ंका संगम िै। इसके श्रवण से सािे पाप भस्म िो िाते िैं औि मनुष्य पहवत्र िो िाता िै। विााँ आस-पास पड़े पत्थि के टुकड़े तक इससे पहवत्र िो िाते िैं औि उनका पूिन िोने लगता िै। िो लोग स्वयं को स्वगथ-प्रास्प्त के योग्य बनाना चािते िैं, उनको पहवत्र प्रसाद ग्रिण किना चाहिए। यि स्वगथ-प्रास्प्त का सवोत्तम मागथ िै।"

दूसिे हदन प्रातःकाल उन्होंनें अपनी पत्नी से किा- "तुम्हें िीघ्र िी नािायण नामक एक पुत्र की प्रास्प्त िोगी िो तुम्हािे वंि की अहभवृस्द्ध किेगा। तुम्हािे किाण मेिे हदन सुखमय व्यतीत हुए िैं। मैं तुम्हािी दया के इस ऋण से कभी मुक्त

र्नीं ंिो पाऊाँगा।" उनको मिणासि िान कि गााँव के सिो लोग विााँ एकत्र िो गये हिनको उन्होंनें इस प्रकाि प्रबोहित हकया

"तुम लोगों ंके कन्धों ंपि पारिवारिक िीवन के उत्तिदाहयत्व-विन का भाि िै। हफि भी तुम लोगों ंको पाण्ुडिंग का हवस्मिण र्नीं ंकिना चाहिए। उनको कभी भी हवसृमृत मत किो औि उनका गुण-गान किते ििो। पण्ढिपुि तुम लोगों ंके बित समीप िै। वि इस िििती पि स्वगथ िै। विााँ िा कि प्रभु का पूिन किो। यि मेिा अनुभव िै हक एकमात्र भगवान् का नाम िी मृत्यु-काल में तुम्हािा त्राण किेगा। तुम लोगों ंने एक दीघथ अवहि तक मेिी िक्षा औि देखिेख की िै। मैं तुम लोगों ंका अत्यन्त कृतज्ञ हाँ औि तुम लोगों ंसे उऋण र्नीं ंिो सकता हाँ। मैं हवठोबा से प्राथथना करूाँगा हक वे तुम लोगों ंको आिीवाथद दें औि मृत्यु के उपिान्त तुम्हािे हलए स्वगथ का मागथ प्रिस्त किें। तुम लोगों ंको यि मेिा अस्ट्न्तम प्रणाम तथा पिामिथ िै। तुम लोगों ंके सुख हवनत िो कि अश्ुरुपूणथ नेत्रों ंसे तुमसे सानुनय किता हाँ हक तुम प्रभु के नाम का हवस्मिण कभी मत किो औि भगवान् नािायण का भिन-कीतथन सदैव किते ििो। अपने सांसारिक कुिल-क्ेषेम की हचन्ता मत किो। इसकी हचन्ता स्वयं भगवान् कि लेंगे। यि सब क्षण-भंगुि िै। भगवान् का नाम िाश्वत िै। तुम लोग केवल इसी के मुखापेक्षी ििो। सदा प्रभु का गुण-गान किते ििो। िाम-कृष्ण-िरि का िप किो। वे सदा तुम्हािी िक्षा किेंगे। यि तुम लोगों ंसे मेिा अस्ट्न्तम हनवेदन िै; तुम लोगों ंको मेिा अस्ट्न्तम पिामिथ िै।"

इस प्रकाि मिािाष्टि के मिान् सन्तों ंमें से एक की इिलीला समाप्त हुई। मृत्यु के क्षणों ंमें भी उनके मुख पि भगवान् का नाम था औि उस समय भी वि प्रभु का गुण-गान कि ििे थे। तुकािाम १६४९ ई. में गोलोकवासी हुए। उस समय उनकी आयु इकतालीस वषथ थी। ऐसा हवश्वास हकया िाता िै हक उनको अपने िाम में ले िाने के हलए हवष्ुणु भगवान् ने अपना िथ औि अपने सेवक भेिे थे।

दामा िी

दामा िी पण्ढिपुि के पाण्ुडिंग के मिान् भक्त थे। वि पन्द्रिवीं ंिताब्दी के एक प्रख्यात व्यस्ट्क्त थे। वि बीदि (Bedar), गोलाकोण्डा में स्ट्स्थत मंगलवेद्य (Mangalvedya) के दीवान थे।

एक बाि विााँ भीषण अकाल पड़ा। दामा िी ने नवाब की अनुमहत के हबना िाजकीय अन्न-भण्डाि के द्वाि खोल हदये औि हनिथनों ंमें अन्न का हवतिण कि हदया हिससे लाखों ंलोगों ंकी भुखमिी से िक्षा िो गयी।

उनके प्रहत द्वेष-भाव से ग्रस्त प्रबन्धक ने नवाब को यि सूचना दे दी हक दामा िी ने हबना अनुमहत के िी सािा अन्न हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया िै। इससे क्ुरुद्ध िो कि नवाब ने सेनापहत को आदेि हदया हक वि दामा िी को हगिफ्ताि कि उसके समक्ष प्रस्ुतुत किे। िब दामा िी को नवाब की िाििानी में ले िाया िा ििा था, तब उन्होंनें नवाब के सैहनकों ंसे किा हक वे उन्हें पण्ढिपुि िोते हुए िाििानी ले चलें हिससे वि हवठ्ठल के अस्ट्न्तम दिथन कि सकें। सैहनकों ंने उनका यि आग्रि स्वीकाि कि हलया।

अपने भक्त की िक्षा के हलए भगवान् ने एक मिाि का रूप िािण कि हलया। वे एक काला कम्बल ओढ़े हुए थे औि उनके िाथ में लाठी थी। नवाब ने अहनमस्ट्न्त्रत आगन्ुतुक से पूछा- "कौन िो तुम?"

उन्होंनें उत्ति हदया- "मेिा नाम हवठू िै औि मैं मिाि हाँ। मैं दीवान दामा िी का सेवक हाँ। भीषण अकाल के समय मेिे स्वामी ने मिामहिम के कोषागाि का सािा अन्न उन हनिथन लोगों ंमें हवतरित कि हदया था िो भुखमिी की चपेट

में आ गये थे। उन्होंनें मुझे हवतरित अि का मूल्य दे कि यिााँ भेिा ि ै। कृपया, आप इसे ग्रिण कि मुझे इसकी प्रास्ट्प्त की िसीद दे दें।"

नवाब ने किा- "इसे कोषागाि में िमा कि दो। मैं िसीद पि िस्ताक्षि कि दूाँगा।"

नवाब हवट्टू के ििोक व्यस्ट्क्तत्व से बहुत प्रभाहवत हुआ। हवि्ू कोषागाि में गये ििााँ उन्होंनें अपने झोले में िखा सािा िन कोष में िमा कि हदया; झोला िन से पुनः भि गया। इस प्रहक्रया की पुनः पुनः आवृहत्त िोती ििी, तब तक िोती ििी िब तक दामा िी का देय कोषागाि में िमा न िो गया। कोषाहिकािी इससे आियथचहकत िि गया। हवि्ू िसीद प्राप्त कि नवाब के पास पहुाँचे। नवाब ने िसीद पि अपने िस्ताक्षि कि उसे हवि्ू को दे हदया। िसीद पि हलखा था- "मंगलवेढ्य-स्ट्स्थत अपने अि भण्डाि के अि के मूल्य की समग्र िनिाहश प्राप्त की।"

दामा िी का सेवक इतना द्युहतमान् तथा आकषथक था हक नवाब ने सोचा हक यि हनहित रूप से कोई हदव्य प्राणी िोगा। वि उहिग्न िो उठा औि उसने हवि्ू को पुनः देखना चािा। वि उच्च स्वि में बोला- "हवि्ू, हवि्ू, तुम किााँ िो हवि्ू?" उसने अपने अहिकारियों ंको उसका पता लगाने को किा; हकन्तु हवि्ू विााँ किााँ था िो उसका पता चले !

भगवान् की औि से कुछ औि कौतुक िो गये। हवि्ू ने िसीद ले कि दामा िी की गीता में िख दी। चंद्रभागा नदी में स्नान किके दामा िी गीता का पाठ किने लगे। गीता के भीति नवाब की िसीद देख कि उनको घोि आियथ हुआ। वि समझ गये हक यि सािा चमत्काि हवठ्ठल की कृपा से िी हुआ िै।

इस बीच नवाब स्वयं हवि्ू की खोि में हनकल पड़ा। िाि में उसे दामा िी हमल गये। उसने दामा िी से किा- "िे आदिणीय सन्त, मुझे क्षमा कीहिए। मुझसे घोि पाप िो गया िै। अपने सेवक हवि्ू को बुलाने की कृपा किें।"

दामा िी आियथ चहकत िो गये। उन्होंनें नवाब से किा- "मेिे आदिणीय स्वामी, मेिे पास हवि्ू नामक कोई सेवक निीं ंिै। मैं निीं ंिानता हक यि हवि्ू कौन िै। यहद मिामहिम उसकी आकृहत-प्रकृहत से मुझे अवगत किाने की कृपा किें, तो मैं उसका पता लगा सकता हाँ।"

नवाब ने किा- "आपके उस सेवक का नाम हवि्ू िै िो मेिा िै। वि अि का मूल्य ले कि मेिे पास आया था। वि कम्बल ओढ़े हुए था औि उसके िाथ में एक लाठी थी। उसका िंग काला, मुख-मण्डल ििोक तथा उसके नेत्र द्युहतमान् थे।"

अब दामा िी गीता में िखी िसीद का स्मिण कि आनन्दाहतिेक में नाचने लगे औि उनकी आाँखों ंसे अश्रु-वषथण िोने लगा। उन्होंनें किा- "िे भगवान् हवठ्ठल, िे पाण्डुिंग, मेिे हलए आपको एक मेिा का कायथ किना पड़ा। नवाब िन्य िैं हिन्हें आपने अपने दशथन से कृतकृत्य कि हदया। आप ब्रह्माण्ड के सवोच्च स्वामी िैं। आपने मेिे हलए इतना कष्ट क्यों ंहकया? नवाब मेिी ित्या के अहतरिक्त औि कुछ भी निीं ंकि सकता था तथा मैं कुछ भी सि भुगत लेने को तैयाि था।"

दामा िी उच्च स्वि में बोल उठे- "िे पाण्डुिंग, िे पाण्डुिंग!" भगवान् अपने भक्तों,ं दामा िी तथा नवाब को आशीवाथद देने के हलए पुनः प्रकट हुए। भगवान् बहुत दयालु िैं। िािावल्लभ भगवान् कृष्ण की िय िो ! दामा िी ने दीवान के पद से तत्काल त्यागपत्र दे हदया औि अपने शिीिपात तक िीवन के शेष वषथ पण्ढिपुि में भगवान् हवठ्ठल की सेवा में व्यतीत हकये।

चोखामेला

चोखामेला मिािाष्टि के एक दहलत सन्त थे िो पण्ढिपुि में ििते थे। वि िामानुि के समकालीन थे। बाल्यावस्था से िी वि दहलत वगथ की समस्या, उसकी उपासना पद्धहत तथा अन्य समुदायों ंसे उसके सम्बन्ध के हवषय में हचस्ट्न्तत िि ते थे। उन हदनों ंदहलतों ंको अन्य िाहत के लोग घृणा की दृहष्ट से देखते थे औि उन्हें सवर्णों िि पूहित देवताओं ंके पूिन-अचथन की सुहविा से वंहचत कि हदया गया था। इस तथाकहथत दहलत-वगथ के लोगों ंको मुस्ट्क्त प्राप्त िो सकेगी या निीं,ं इस हचन्ता से उनका मन-प्राण सवथदा आलोहड़त हुआ किता था। एक हदन चोखामेला पण्ढिपुि िा कि भगवान् से प्राथथना किने लगे। कुछ ब्राह्मण उस पंचम को मूहतथ के पास देख कि उसे मािने-पीटने लगे। चोखामेला ने उन ब्राह्मणों ंको आश्वस्त कि हदया हक अब वि भहवष्य् में उस मूहतथ के हनकट निीं ं ियेंगे। इस घटना ने उन्हें उस स्थान का सवथदा के हलए परित्याग कि इस समस्या की समािान-प्रास्ट्प्त के हलए हकन्हीं ंअन्य स्थानों ंकी तीथथ-यात्रा के हलए प्ेरेरित कि हदया।

चोखामेला वािाणसी गये। विााँ उन्होंनें सुना हक नगि में िाम-भक्त मुसलमान सन्त कबीि की कथा िो ििी िै। वि शीघ्रता से उस स्थान पि पहुाँचे औि तन्मय िो कि कथा का श्रवण किने लगे। हिस समय वि कथा सुन िि े थे, उस समय कथा में दहलत सन्त ििीदास से कबीिदास के हववाद का प्रसंग चल ििा था। इस प्रसंग से उत्ेप्रेरित चोखामेला के मन में ििीदास के हनवास-स्थान तथा उनके पूिा-स्थल को देखने की इच्छा िाग्रत हुई। विााँ िाने पि वि ििावल्लभ नामक एक व्यस्ट्क्त से हमले िो ििीदास का वंशि था। उनके मन में इस बात की एक क्षीण आिा का संचाि हुआ हक दहलतों ंको भी पूिा-उपासना की सुहविा प्राप्त िो सकती िै। वि औि अहिक अनुभव की प्रास्ट्प्त के हलए दहक्षण भाित की औि चल पड़े। वि हचदम्बिम् पहुाँचे, िो भगवान् हिव को समहपथत एक पहवत्र तीथथ स्थान था। उसी हदन विााँ एक अन्य हिवोपासक दहलत सन्त नन्दनाि के उत्सव का आयोिन था। उन्होंनें आियथ चहकत िो कि देखा हक नन्दनाि का स्मिणोत्सव एक मस्ट्न्दि में मनाया िा ििा िै। इतना िी निीं,ं उन्होंनें यि भी देखा हक मस्ट्न्दि में नन्दनाि की मूहतथ प्रहतहष्ठत की गयी थी औि उसकी पूिा िो ििी थी। उन्होंनें विााँ एकत्र लोगों ंसे यि सुना हक दहलत नन्दनाि हकस प्रकाि एक ब्राह्मण भूपहत के अिीन कृहष-कमथ किते थे औि उन्होंनें हकस प्रकाि ब्राह्मण िाहत के हविोि किने पि भी भगवान् हिव की कृपा से मुस्ट्क्त प्राप्त की थी।

इसके पिात् चोखामेला दहक्षण भाित के एक अन्य पहवत्र तीथथ-स्थान श्रीिंगम् गये। विााँ उन्होंनें दहलत भक्त मिनाि नस्ट्म्ब का श्राद्ध-कमथ एक ब्राह्मण के िाथों ंसम्पन्न िोते देखा। हतरुप्पन आलवाि दहक्षण भाित के आलवाि सन्त थे िो िन्मना दहलत थे। चोखामेला ने देखा हक विााँ उनका भी आनन्दोत्सव मनाया िा ििा िै। इन घटनाओं ंसे अत्यहिक उत्ेप्रेरित तथा मुस्ट्क्त-प्रास्ट्प्त के हलए पूणथतः आिास्ट्न्वत िो कि वि िामानुि से उपदेि-मन्त्र लेने के पिात् पाण्डुिंग की सेवा में चले गये।

पण्ढिपुि में चोखामेला का हववाि िो गया। उन्हें विााँ के लोगों ंसे पूिा की अनुमहत निीं ंहमली थी। अतः वि अपने घि में िी पूिन-अचथन किने लगे। एक हदन पाण्डुिंग स्वयं उनके घि िा कि उन्हें अपने साथ मस्ट्न्दि के गभथ-गृि में ले गये। मस्ट्न्दि के िाि बन्द थे। विााँ वे चोखामेला से बात किने लगे। इतने में िाि खोल कि एक पस्ट्ण्डत विााँ आ गया। विााँ उसने उस पंचम को अकेले देखा। उसने चोखामेला को लांहछत-अपमाहनत हकया औि अन्य ब्राह्मणों ंके साथ हमल कि उन्हें पण्ढिपुि का परित्याग कि भीमा नदी के तट पि स्ट्स्थत एक गााँव में िि ने को हववि कि हदया।

उस गााँव में अपनी पत्नी के साथ भगवान् का पूिन तथा व्रतों ंका अनुपालन किते हुए चोखामेला अपना िीवन व्यतीत कि िि े थे। एक हदन एकादिी को भगवान् स्वयं चोखामेला के घि आये औि विााँ उन्होंनें उनके साथ प्रसाद ग्रिण हकया। इस प्रकाि भगवान् प्रत्ेयेक एकादिी को उनके घि आ कि उनके साथ प्रसाद ग्रिण किने लगे। एक

हदन ऐसा हुआ हक एकादिी की पूवथि–ाहत्र पहत-पत्नी बहुत दिे तक सोते िि िे हिसके फल-स्वरूप उनकी पत्नी प्रातःकाल दिे से उठी। उन्होंनें पत्नी को िााँटते हुए किा हक एकादिी की हवलम्ब से िय्या-त्याग किने के काण भगवान् के भोिन में भी हवलम्ब िोगा। उनके िि िा से िो कि एक ब्राह्मण िा िि िा था। उसने उनके िब्द सुन हलये। चोखामेला के िीवन के आन्तरिक िि स्य से अपरिहचत उस ब्राह्मण ने समझा हक उनके उन िब्दों ंसे ब्राह्मणों तथा
स्वयं भगवान् का अपमान हुआ िै। अतः उसने इसकी सूचना िि िा को दे दी। िि िा ने आदिे हदया हक चोखामेला को वन में ले िा कि वन्य वृषभों ंसे उनकी ित्या किवा दी िाये। उन्हें वन में ले िा कि वन्य वृषभों ंकी दया पि छोड़ हदया गया; हकन्तु भगवान् की कृपा से वे उग्र-स्वभाव वन्य वृषभ उनकी ित्या न कि प्रेमपूवथक उनका िि िि चाटने लगे। इसी बीच चोखामेला की पत्नी अपने पहत के साथ प्राण-त्याग किने के हलए दौड़ती हुई विााँ आ पहुाँची। पहत-पत्नी को सुिहक्षत देख कि िि िा के सेवकों ंको घोि आियथ हुआ। चोखामेला को एक मिान् सन्त समझ कि िि िा ने अपनी भूल के हलए पिात्ताप किते हुए सिान तथा िुमिाम के साथ उनका स्वागत हकया। तत्पिात् चोखामेला अपनी पत्नी के साथ अपने गााँव लौट गये।

एक बाि पुनः भगवान् चोखामेला के घि आये िि ााँ उनकी पत्नी उन दोनों ंको भोिन किाने लगी। उसी समय चोखामेला की पत्नी के िाथ से भगवान् के वस्त् पि छाछ हगि पड़ी हिससे चोखामेला उहिग्न िो उठे। उन्होंनें अपनी पत्नी को भहवष् में सतकथ ििने को किा। उनकी यि बातें एक अन्य ब्राह्मण को केवल उसके समुदाय के हलए िी निीं, ं अहपतु भगवान् के हलए भी घोि अपमान िनक प्रतीत हुईं। उसने घि में प्रहवष्ट िो कि चोखामेला के गाल पि िोि से चााँटा मािा हिसके फल-स्वरूप चोखामेला के सिो दााँत टूट गये औि वि पृथ्वी पि हगि कि संज्ञािून्य िो गये। ब्राह्मण स्नान कि मस्त्न्दि में गया। वि िि िा खोल कि पूिा प्राम्भ किने िी वाला था हक उसको भगवान् के वस्त् का कुछ भाग छाछ से हसक्त औि उनका कपोल सूिा हुआ हदखायी पड़ गया। वि इस दृश्य से आतंहकत िो उठा। उससे चोखामेला का अपमान हुआ था। अपनी इस भूल पि पिात्ताप किते हुए वि भगवान् के चिणों ंपि हगि कि उनसे क्षमा-याचना किने लगा। तत्पिात् उन्होंनें पुिािी को आदिे हदया हक वि चोखामेला को मस्त्न्दि में िूमिाम के साथ आमस्त्न्त्रत कि उनके कपोल की परिचयाथ किे।

पुिािी मस्त्न्दि के अन्य ब्राह्मणों ंको ले कि दौड़-दौड़ चोखामेला के घि गया िि ााँ उसने सबके साथ मस्त्न्दि में चलने का उनसे हवनयपूवथक आग्रि हकया। वि मस्त्न्दि में गये। विााँ भगवान् ने ब्राह्मण से िो कुछ किा था, चोखामेला ने विी हकया। उनका सूिा हुआ कपोल ठीक िो गया। भगवान् पाण्डुिंग के प्रहत उनकी उत्कट भस्त्क्त के काण लोग उनकी अत्यहिक प्रिंसा किने लगे। पण्ढिपुि के ब्राह्मणों ंकी प्राथथना पि वि अपनी पत्नी के साथ िा कि पण्ढिपुि में ििने लगे। इस प्रकाि भगवान् के नाम का गुण-गान किते हुए तथा भगवद्-भस्त्क्त में अहिकाहिक तल्लीन िोते हुए उन्होंनें मुस्त्क्त-लाभ हकया।

अक्कलकोट स्वामी

अक्कलकोट स्वामी एक ज्ञानी पुरुष थे। वि मिािाष्ट्र-स्त्स्थत अक्कलकोट में ििते थे। अपने िीवन के उत्तिाथ में अपनी बाह्य चेतना को प्रत्यावहतथत कि लेने एवं िकि के हविुद्ध हनहवथिेष तथा हनगुथण ब्रह्म में अवस्त्स्थत िो िाने के फल-स्वरूप वि ब्रह्म-वरिष्ठ कोहट के ज्ञानी िो गये। उनमें बाह्य हवषयाकाि वृहत्त निीं ंथी। हिस प्रकाि हकसी व्यस्त्क्त को उसकी मूस्त्च्छथतावस्था में भोिन हदया िाता िै, उसी प्रकाि उनको चिच से दूि हपलाया िाता था। वि अनािाने िी मल त्याग कि हदया किते थे हिसे लोग साफ कि हदया किते थे। दहक्षण भाित के मिानतम प्रख्यात कुम्बकोणम् मौनी स्वामी की भी यिी स्त्स्थहत थी। इनके िीवन के पचीस वषथ अचेतनावस्था में िी व्यतीत हुए। उनको आिाम-कुिसी पि बैठा कि भोिन किाया िाता था।

एक दरिर ब्राह्मण ने अपनी पुत्री के हववाि सम्पिनो के हलए तपस्या की। उसने भगवान् गणेि को प्रसाहदत हकया हिन्होंनें उसे स्वप्न में दिथन दे कि अक्कलकोट स्वामी के पास िाने को किा। स्वामी िी ने उस पिम्पिा-हनष्ठ ब्राह्मण को कुछ िहियााँ एकत्र किने का आदेि हदया। दरिर ब्राह्मण उनके इस आदेि से उहिग्न िो उठा। हकन्तु उसे िन की हनतान्त आवश्यकता थी, अतः उसे स्वामी िी के आदेिानुसाि कुछ िहियााँ एकत्र किने के हलए हववि िोना पडा। स्वामी िी ने उसे उन िहियााँ को घि ले िाने को किा। ब्राह्मण को इससे अत्यहिक हनिािा हुई। िब वि घि पहुाँचा, तब उसने उन िहियााँ को घि में न िख कि बिामदे के एक कोने में िख हदया। तीन हदन के पिात् उसने उन िहियों ंको फेंक देना चािा। इसके हलए िब उसने पोटली उठायी, तब वि बहुत भािी लगी। िब उसने पोटली को खोला, तब वि यि देख कि आियथ-चहकत िि गया हक उसमें िहियों ंके स्थान पि सोना भिा था। ब्राह्मण ने मन–ी-मन सोचा- 'मुझसे गम्भीि भूल िो गयी िै। मुझे एक ज्ञानी के िब्दों ंके प्रहत पूणथतः आस्थावान् िोना चाहिए था। ये लोग सांसारिक लोगों ंके प्रहत इसी प्रकाि के कौतुक हकया किते िैं। मुझे कुछ औि िहियााँ एकत्र कि लेनी चाहिए थीं।ं' लोभ में ऐसी िी िस्ट्क्त िोती िै। यि तुम्हें संसाि से सम्बद्ध कि देता िै। िास्ट्न्त को भंग किने वाले इस लोभ को नष्ट किो औि सन्तों ंके प्रहत आस्थावान् बनो!

गोिा कुम्हाि

भक्त नामदेव के िीवन काल में ििािाष्ट्र में चन्द्रभागा नदी के तट पि स्ट्स्थत तेिढोकी में गोिा कुम्हाि नामक एक सन्त ििते थे।

उनका पूवथ-नाम हदकाबाथि (Dirkabathar) था। उन्होंनें भगवान् के आदेिानुसाि वैिाग्य के माध्यम से आध्यास्ट्त्मक ज्ञान के प्रचाि-प्रसाि के हलए एक कुम्भकाि परिवाि में िन्म-ग्रिण हकया था। उनके भाई का नाम एत्तन्ना (Ettranna) था। इन दोनों ंने हकिोिावस्था में िी पण्ढिपुि के गुरु वीिसेगि दासि (Veerasegara Dasar) से भगवद्भस्ट्क्त-मागथ की दीक्षा ग्रिण कि ली। कुछ हदनों ंके पिात् गोिा कुम्हाि ने पद्मावती नामक एक कन्या से हववाि कि हलया। ये सभी साथ-साथ ििते हुए भगवान् की भस्ट्क्त तथा नाम-स्मिण में तन्मय ििते थे। गोिा कुम्हाि मृत्तकापात्र के हवक्रय से प्राप्त िन से िीवन-यापन किते थे।

एक हदन दोनों ंभाई पात्रों ंको आाँवे में परिपक्व किने में व्यस्त थे। उसी समय एक हबल्ली अपने िावक के साथ आाँवे के आस-पास घूमने लगी। दुभाथग्य से िावक आाँवे में हगि कि िल मिा। अपनी सन्तान से इस प्रकाि वंहचत िो कि हबल्ली भिे के चािों ंओि घूमने लगी; हकन्तु अन्ततः हनिाि िो कि बािि चली गयी। इस घटना की ओि एत्तन्ना का ध्यान आकृष्ट िो चुका था। अपनी भूल तथा असाविानी के हलए पिात्ताप किते हुए एत्तन्ना ने प्रायहित्त के हलए तीथाथटन पि िाने का हनिय कि हलया। उन्होंनें अपने इस हनिय की सूचना अपने भाई को दे दी औि अपने परिवाि को तेिढोकी में छोड़ कि तीथाथटन पि हनकल पडे।

अपने िाथ अपने पैतक कमथ को तथा हृदय भगवान को अहपथत कि गोिा कुम्हाि प्रहत हदन कुम्भकाि के चाक के पास बैठ कि अपने व्यवसाय में संलग्न ििते थे। एक हदन उनका अल्पवयस्क पुत्र अपने हपता के पास िाने के हलए घुटनों ंके बल चलते हुए गहतमान चाक के पास िा पहुंचा। पद्मावती कुछ िी क्षण पूवथ घि से कहीं ंबािि चली गयी थी। गोिा कुम्हाि ने भी अपनी ओि आते हुए बालक की ओि ध्यान निीं ंहदया। फलतः बालक लुढ़क कि चाक की चपेट में आ गया हिसके फल-स्वरूप उसका ििीि ितििि–त खण्डों ंमें हवभक्त िो गया। बािि से लौटने पि पद्मावती ने इस लोमिषथक दृश्य को देखा; हकन्तु गोिा कुम्हाि इस घटना से अनहभज्ञ िी ििे। पद्मावती के कारुहणक रुदन तथा उसकी चीत्काि से िब उनकी चेतना िाग्रत हुई, तब उन्होंनें देखा हक उनके पुत्र का ििीि अनेक खण्डों ं में हवक्षत िो चुका िै। पद्मावती ने उनको इस बात के हलए बहुत भला-बुिा किा हक उन्होंनें अपनी ओि अग्रसिण किते हुए बालक की ओि ध्यान भी निीं ंहदया था। इससे क्रुद्ध िो कि गोिा कुम्हाि ने चाक िािा उसकी ित्या

किनी चािी। उसी क्षण पद्मावती ने उच्च स्वि में उनसे किा- "तुम्हें अपने भगवान् पाणुड्रिंग की िपथ िै हक भहवर्ष् में तुम कभी भी मेिा स्पिथ न किना।" ये िब्द गोिा कुम्हिा के क्रोि को िान्त किने के हलए पयाथप्त थे। वि चाक को यथा-स्थान िख कि अपने पुत्र के िितः खस्ट्ण्डत िव को ले कि दाि-संस्कािा के हलए श्मिान की ओि चले गये विााँ से लौट कि अपने कमथ में पूवथवत् संलग्न िो गये; हकन्तु उस हदन से उन्होंनें अपनी पत्नी का स्पिथ कभी निीं हकया। इतना िी निीं,ं उन्होंनें उसके हनकट िा कि अपने हलए कुछ किने के हलए भी कभी निीं ंकिा। अपने पहत को इस कठोि व्रत के अनुपालन में संलग्न देख कि पद्मावती को अपने उन िब्दों ंसे अत्यहिक ग्लाहन हुई हिन्होंनें उनको पूणथतः परिवहतथत कि हदया था।

पद्मावती को अपनी भूल पि अत्यन्त पिात्ताप हुआ। उसे सन्तान की कामना थी। अतः उसने गोिा कुम्हिा से अपनी बिन पंकिाक्षी के हववाि का हनिय कि हलया। इस उदे्देश्य की पूहतथ के हलए उसने अपने माता-हपता के सियोग से गोिा कुम्हिा को पंकिाक्षी से हववाि किने के हलए उते्प्ररित हकया; हकन्तु उन्होंनें हकसी की एक न सुनी। अन्ततः वे लोग उनके गुरु वीिसेगि (Veerasegarar) के यिााँ गये हिन्होंनें गोिा कुम्हिा को उस कन्या से हववाि किने का आदेि हदया। गोिा कुम्हिा ने भी पंकिाक्षी से अपने हववाि के प्रस्ताव के प्रहत अपनी सिमहत व्यक्त कि दी। हववाि के पिात् पंकिाक्षी के हपता ने गोिा कुम्हिा को अपनी दोनों ंपहत्नयों ंके प्रहत हनष्पक्ष व्यविाि का पिामिथ हदया। उनका यि पिामिथ गोिा कुम्हिा के हलए सौभाग्य तथा पद्मावती के हलए दुभाथग्य हसद्ध हुआ। गोिा कुम्हिा पंकिाक्षी के प्रहत विी व्यविाि किने लगे िो व्यविाि वि अपने इस हववाि के पूवथ पद्मावती के प्रहत किते थे। इसका तात्पयथ यि िै हक वि अपनी हकसी भी पत्नी का स्पिथ निीं ंकिते थे।

इस प्रकाि के हवयोग के दंि को सिन किने में असमथथ उन दोनों ंबिनों ंने एक ऐसी युस्ट्क्त सोची हिससे गोिा कुम्हिा को उनके स्पिथ के हलए हववि िोना पड़ता औि इस प्रकाि उनसे उन दोनों ंके बीच का व्यविान समाप्त िो िाता। एक िात िब गोिा कुम्हिा प्रगाढ़ हनद्रा में हनमग्न थे, दोनों ंबिनों ंने अपनी चािपाइयााँ उनकी चािपाई के दोनों ंओि लगा दीं।ं कुछ क्षणों ंके पिात् उन्होंनें उनका एक-एक िाथ अपने ििीि पि िख हलया। िागने पि गोिा कुम्हिा ने देखा हक उनके िाथ उनकी दोनों ंपहत्नयों ंके ििीि पि पड़े हुए िैं। इसे अपना घोि तथा िघन्य अपिाि मानते हुए उन्होंनें अपनी िय्या का परित्याग कि हबना हकसी हििक के छुिे से अपने दोनों ंिाथ काट िाले। संकट की उस घड़ी में गोिा कुम्हिा की दिा से अवगत स्वयं पाणुड्रिंग उनके भाई एन्द्रिा के छद्मवेि में गोिा कुम्हिा के घि िा पहुाँचे। अपने िाव-भाव से उन्होंनें यिी प्रदहिथत हकया मानो वे तीथथयात्रा के पिात् घि लौटे िों।ं घटना स्थल पि िा कि उन्होंनें िो कुछ देखा, वि एक भयंकि हवभीहषका थी िो उनके हलए असिनीय थी। हफि भी उन्होंनें अपने भाई तथा असमंिस-ग्रस्त एवं दुःखाहतिेक से अहभभूत उनकी दोनों ंपहत्नयों ंको सान्त्वना प्रदान की। उस हदन से भगवान् एन्द्रिा के छद्मवेि में गोिा कुम्हिा की सेवा इस हवहि से किने लगे हक गोिा कुम्हिा को न तो अपने िाथों ंके कट िाने का कोई दुःख हुआ, न िी उनको अपने िपथ-भंग की आवश्यकता की अनुभूहत हुई।

एक हदन भक्त नामदेव भगवान् के पूिन के हलए मस्ट्न्दि में गये; हकन्तु उन्होंनें हवग्रि में भगवान् पाणुड्रिंग को अनुपस्ट्स्थत पाया। गिन ध्यान के पिात् उन्हें ज्ञात हुआ हक भगवान् एन्द्रिा के छद्मवेि में गोिा कुम्हिा के घि में हवद्यमान िैं। उिि पण्ढिपुि में िोने वाले उत्सव की हतहथ हनकट आती िा ििी थी; अतः नामदेव अपने अनुयाहययों ंके साथ गोिा कुम्हिा के घि इस उदे्देश्य से पहुाँचे हक वि उक्त उत्सव के अवसि पि भगवान् को विााँ ले िा कि उनको उनके आसान पि अहिहष्ठत कि सकें। गोिा कुम्हिा के घि पहुाँच कि नामदेव ने उनकी तथा गोिा कुम्हिा की चिण-वन्दना की। भगवान् ने भी इस उदे्देश्य से नामदेव की चिण-वन्दना की हक अन्य लोगों ंके समक्ष उनका यथाथथ रूप अनावृत न िो िाये। नामदेव के आमन्त्रण को स्वीकाि कि भगवान् ने पण्ढिपुि िाने के हलए अपनी सिमहत प्रदान कि दी। तत्पिात् नामदेव पण्ढिपुि लौट गये। एन्द्रिा भी, िो छद्मवेि में स्वयं भगवान् िी थे, गोिा कुम्हिा तथा उनके परिवाि को ले कि उत्सव में सस्ट्म्महलत िोने के हलए पण्ढिपुि पहुाँचे गये। उस समय विााँ भक्त नामदेव कीतथन कि ििे थे। गोिा कुम्हिा भी अपनी पहत्नयों ंके साथ कीतथन में सस्ट्म्महलत िो गये। िब वि कीतथन में

पूणथतः तल्लीन िो गये, तब विाँ एकत्र सभी लोगों ंने आियथचहकत िो कि देखा हक उनके िाथ उनके ििी से पूवथवत् संयुक्त िो गये िैं। तत्पिात् वि अपनी पहत्नयों ंके साथ पाणुडुिंग के हवग्रि के पास गये ििाँ उनका मृत पुत्र हिस्मय हवहि से उनसे आ हमला। वि भगवान् के चिणों ंकी ओि से घुटनों ंके बल चलते हुए उनकी ओि स्वयं चला आ ििा था। गोिा कुम्हाि अपने गुरु विसोबा खेचि को िो वचन दे चुके थे, उनकी िक्षा के हलए वि अपनी दोनों ं पहत्नयों ंतथा पुत्र के साथ ििोिागी िो कि सुखपूवथक िीवन व्यतीत किने लगे।

ज्ञानदेव

मिािाष्ट्र का प्रत्येक व्यस्ट्क्त सन्त ज्ञानेश्वि के नाम से परिहचत िै। वि एक िन्मिात हसद्ध तथा उच्च कोहट के योगी थे। पञ्च-मिाभूत उनके विवती थे। उनकी कृहत 'ज्ञानेश्विी' मिाठी-साहित्य की चूिामहण िै। अकृहत्रम िैली, सुरुहचपूणथ उद्धिणों ंतथा उपयुक्त उपमाओं ंने इस कृहत को आकषथक, ििोक तथा अत्यहिक उपादेय बना हदया िै। हिन्दी भाषा-भाषी लोगों ंके हृदय में िो स्थान तुलसीकृत 'िामचरितमानस' का िै, विी स्थान मिािाहष्ट्रयों ंके हृदय में 'ज्ञानेश्विी' का िै। ज्ञानदेव कुछ िी वषों तक िीहवत ििे; हकन्तु इस अल्पावहि में िी उनसे अनेक चमत्कािपूणथ कृत्यों ंका हनष्पादन िोता ििा। वि प्रचण्ड मेिा के स्वामी, गिन आध्यास्ट्त्मक अनुभव प्राप्त योगी तथा उच्चतम कोहट के सन्त थे। वि अपने पूवथवहतथयों ंकी हनभीक आलोचना किते थे। वि एक मिान् सामाहिक औि िाहमथक सुिािक थे। मिािाष्ट्र में मिान् भस्ट्क्त-आन्दोलन का सूत्रपात उन्होंनें िी हकया था। वि एक उत्कृष्ट कहव थे।

मिान् सन्तों,ं पैगम्बिों ंतथा िगद्गुरुओं ंके िीवन-वृत्त, उनका उद्भव तथा उनके िीवन से सम्बद्ध अन्यान्य हवविण अत्यहिक हवलक्षण तथा हिस्मय िोते िैं। ज्ञानदेव एक संन्यासी के पुत्र थे। मेिी के गभथ में भगवान् ईसा का िन्म एक हनष्कलंक गभाथिाण की घटना के परिणाम-स्वरूप हुआ था। वि एक काष्ठ-तक्षक (बढ़ई) के पुत्र थे। उनका िन्म हकसी ििप्रासाद में न िो कि एक अश्विाला या अन्ध कक्ष में हुआ था ििाँ मात्र कुछ घास-फूस पिा हुआ था। कबीि एक िुलािे की सन्तान थे हिन्हें एक सिोवि के हनकट पाया गया था। िंकि कालहि के एक हनिथन बालक थे।

ज्ञानदेव, हिन्हें कभी-कभी ज्ञानेश्वि भी किा िाता िै, की गणना मिािाष्ट्र के प्राचीन सन्तों ंमें की िाती िै। वि तथा मुकुन्दिाव मिािाष्ट्र में भस्ट्क्त-पन् के प्रवतथक थे। मुकुन्दिाव वयःश्रेष्ठ थे तथा उन दोनों ंके िीवन-काल के बीच लगभग सौ वषों का अन्ति था।

तेििवीं ंिताब्दी में अपेगाँव में गोहवन्द पन्त नामक एक ग्राम्य लेखाकाि ििते थे। उनके एकमात्र पुत्र का नाम हवठ्ठल पन्त था। यिी हवठ्ठल पन्त ज्ञानदेव के हपता थे। हवट्ठल पन्त बाल्यावस्था से िी िमथ-पिायण थे। हवषयों ंके प्रहत उनकी आसस्ट्क्त निीं ंथी। पहवत्र स्थानों ंकी तीथथयात्रा उनको रुहचकि लगती थी। वि संस्कृत के गम्भीि हविान् थे औि आत्म-साक्षात्काि उनके हृदय का अभीस्ट्प्सत हवषय था। उनमें संन्यास-दीक्षा ग्रिण की बलवती कामना थी।

हवठ्ठल पन्त का हववाि आलन्दी के श्रीिि पन्त की पुत्री रुक्माबाई से हुआ। आलन्दी पुणे से बािि मील दूि िै। यिाँ ज्ञानदेव का समाहि-स्थल िै।

हवठ्ठल पन्त के मन में सांसारिक िीवन के प्रहत हवतृष्णा थी। वि एक बाि तीथथयात्रा पि गये। विाँ से आलन्दी लौटने पि वि संन्यास लेने की बात सोचने लगे; हकन्तु उनकी पत्नी तथा उनके श्वसुि निीं ंचािते थे हक वि संन्यास लें।

हवठ्ठल पन्त ने वािाणसी िा कि श्रीपाद यहत (िामानन्द स्वामी) से संन्यास-दीक्षा ले ली। यि सुन कि हक उसके पहत िीवन के चतुथथ आश्रम में प्रहवष्ट िो गये िैं, रुक्माबाई िोकाकुल िो गयीं।ं उन्होंनें सवाथन्तःकिण से भगवान् से अपने

पहत से पुनहमथलन की प्राथथना की। एक बाि हवठ्ठल पन्त के गुरु िामेश्विम् िाते हुए आलन्दी में रुके। रुिाबाई ने उनके पास िा कि उनको साष्टांग प्रणाम हकया। यहत ने उन्हें अिीवाथद देते हुए किा- "तुम्हें आठ पुत्रों ंकी िननी िोना िै।"

रुिाबाई फूट-फूट कि िोने लगी। यहत ने किा- "भिे, तुम सौभाग्यवती िो। मैं तुम्हािे दुःख का कािण िानना चािता हाँ।" तब रुिाबाई ने उनके समक्ष सािी बातें स्पष्ट कि दीं।ं

यहत ने सोचा हक हिस युवक को उन्होंनें संन्यास आश्रम में दीहक्षत हकया िै, विी इस स्त्री का पहत िोगा। िामेश्विम्-यात्रा का कायथक्रम स्थहगत कि वि वािाणसी लौट गये। विााँ अपने हिष्य को िााँटते हुए उन्होंनें किा- "तुम गृिस्थाश्रम में लौट कि अपनी पत्नी के साथ सुखमय िीवन व्यतीत किो। वि तुम्हािी सेवा किना चािती िै। मेिा अिीवाथद तुम्हािे साथ ििेगा।"

गुरु के आदेि को ििीिोधायथ कि हवठ्ठल पन्त आलन्दी लौट आये औि रुिाबाई के साथ ििने लगे। आलन्दी के रूहढ़ग्रस्त ब्राह्मणों ंने उन्हें तथा उनकी पत्नी को िाहत-बहिष्कृत कि हदया। उनका किना था- "संन्यास-ग्रिण कि पुनः दाम्पत्य िीवन व्यतीत किना िास्त्र-सित निीं ंिै।" हकन्तु, हवठ्ठल पन्त का हवचाि था हक गुरु के आदेिानुसाि वि िो-कुछ भी कि ििे िैं, उहचत िै।

इस बीच हवठ्ठल पन्त तथा रुिाबाई की चाि सन्तानें हुईं। हनवृहत्तनाथ, ज्ञानदेव, सोपान तथा मुक्ताबाई- इन चािों ं का िन्म क्रमिः १२७३ ई., १२७५ ई., १२७७ ई. तथा १२७९ ई. में हुआ। इनमें हनवृहत्त को हिव का, ज्ञानदेव को हिरि का, सोपान को ब्रह्मा का एवं मुक्ताबाई को सिस्वती का अवताि किा िाता िै।

एक बाि हवठ्ठल पन्त अपने परिवाि ंके साथ नाहसक के हनकट गोदाविी नदी के उद्गम के प्रहतवेि में स्तस्थत त्र्यम्बकेश्वि िा ििे थे। िब वे ब्रह्महगरि पवथत के हनकट पहुाँचे, तब मागथ में उनको एक िेि हमल गया। हवठ्ठल पन्त तो अन्य लोगों ंको ले कि विााँ से बच हनकले; हकन्तु हनवृहत्तनाथ विीं ंिि गये। वि गिनीनाथ की गुफा में प्रहवष्ट िो गये। गिनीनाथ ने हनवृहत्त को योग के ििस्यों ंमें दीहक्षत कि उन्हें अपनी समस्त आध्यास्त्मक सम्पदा प्रदान कि दी।

हनवृहत्त ने गिनीनाथ का हिष्यत्व ग्रिण कि हलया। गिनीनाथ गोिखनाथ के हिष्य थे औि गोिखनाथ को मत्स्येन्द्रनाथ ने दीहक्षत हकया था। मत्स्येन्द्रनाथ को स्वयं भगवान् हिव से दीक्षा की सम्प्रास्त्प्त हुई थी। हनवृहत्त तथा ज्ञानदेव ने अपने हपता के संिक्षण में वेदाध्ययन हकया। आध्यास्त्मक ग्रन्थों ंके अनुिीलन में उनकी प्रगहत सुत्युत्य थी।

आलन्दी से लौटने पि हवठ्ठल पन्त को ब्राह्मणों ंने िाहत-बहिष्कृत कि हदया। उनको तथा उनके परिवाि को हनमथमतापूवथक अहभिंहसत-अपमाहनत हकया गया। ग्राम के अन्य बालक उनके बालकों ंके साथ निीं ंखेलते थे।

िब चािों ंपुत्र कौमायाथवस्था को प्राप्त हुए, तब उनके माता-हपता को उनका यज्ञोपवीत-संस्काि किने की इच्छा हुई; हकन्तु ब्राह्मणों ंने उस संस्काि के हनष्पादन में स्पष्ट िब्दों ंमें अपनी अस्वीकृहत व्यक्त कि दी। उन्होंनें किा- "हकसी संन्यासी को वैवाहिक िीवन निीं ंव्यतीत किना चाहिए। उसके पुत्र का यज्ञोपवीत-संस्काि िास्त्रानुमोहदत निीं ंिै। संन्यासी के पुत्र यज्ञोपवीत धािण के अहधकाि का उपभोग निीं ंकि सकते। उनकी गणना ब्राह्मणों ंमें निीं ंकी िा सकती। तुम तथा तुम्हािी पत्नी दोनों ंने िास्त्रों ंके पहवत्र हवधान का उल्लंघन हकया िै। तुम दोनों ंके हलए एकमात्र प्रायहित्त यिी िै हक तुम लोग प्रयाग की हत्रवेणी में िा कि प्राण त्याग किो।"

हवठ्ठल पन्त तथा रुिबाई ने प्रयाग ि◌ा कि गंगा-यमुना के संगम पि प्राण-हवसिथन कि हदया। उन्होंनें सोचा था हक इससे ब्राह्मण उनके पुत्रों ◌ंपि दया कि उनका यज्ञोपवीत-संस्कि◌ा सम्पि किवा देंगे। उस समय हनवृहत्त, ज्ञानदेव तथा कहनष्ठ पुत्र की आयु क्रमिः लगभग दि, आठ तथा पााँच वषथ थी।

ज्ञानदेव अपने माता-हपता की इच्छा पूहतथ के हलए यज्ञोपवीत ि◌ि◌ाण के हलए अत्यन्त उतु्सुक थे। उन लोगों ◌ंने इसी प्रयोिन की हसस्ट्द्ध के हलए अपने प्राण हवसहिथत हकये थे। वि पुनः आलन्दी के ब्राह्मणों ◌ंके पास गये। इस बाि इन हनिाहश्रत बालकों ◌ंकी दिा पि उनको दया आ गयी। उन लोगों ◌ंने उनसे किा- "तुम लोग पैठण ि◌ा कि वि◌ााँ के कृतहवद्य ब्राह्मणों ◌ंसे एक अनुमोदन-पत्र ले आओ। इसके पिात् ि◌म लोग तुम्हाि◌ा यज्ञोपवीत-संस्कि◌ा कि देंगे।"

बालकों ◌ंने पैठण ि◌ा कि वि◌ााँ के ि◌ास्त्रहवद् ब्राह्मणों ◌ंके समक्ष वेद-पाठ हकया। ब्राह्मणों ◌ंने किा- तुम लोग वेद-पाठ के अहिकािी निीं ि◌ो; अतः वेद-पाठ मत कि◌ो। तुम लोग उस संन्यासी के पुत्र ि◌ो ि◌ो गृिस्थाश्रम में पुनः लौट आया था।"

ज्ञानदेव ने किा- "कोई भी व्यस्ट्क्त वेद-पाठ कि सकता ि◌ै। यिााँ तक हक यि भैंसा भी वेद-पाठ कि सकता ि◌ै।" इतना कि कि उन्होंनें भैंसे की पीठ पि अपना ि◌ाथ ि◌ख हदया औि वि भैंसा एक घण्े तक वेद-पाठ किता ि◌ि◌ा। आियथ तो यि ि◌ै हक उन बालकों ◌ंके वेद-पाठ को हिस स्थान पि ि◌ोक हदया गया था, भैंसे ने उसी स्थल से वेद-पाठ का प्रािम्भ हकया था। उसका वेद-पाठ लय तथा स्वि-ि◌ैली के दृहष्टकोण से सवथा हनभाथन्त था।

इस चमत्कि◌ा को देख कि ब्राह्मण स्तब्ध ि◌ि◌ गये। उन्होंनें किा- "ये सामान्य बालक न ि◌ो कि ि◌ंकि, हवष्णु तथा ब्रह्मा के साक्षात् अवताि ि◌ैं।" वास्तव में वे बालक ि◌िन्मिात हसद्ध थे। यद्यहप ब्राह्मणों ◌ंने बालकों ◌ंकी मिानता को स्वीकाि कि हलया, तथाहप उन्होंनें उनका यज्ञोपवीत-संस्कि◌ा किना स्वीकाि निीं ◌ंहकया। उस भैंसे का देिान्त पुणे हिले के अले (Ale) नामक स्थान पि हुआ था। वि◌ााँ उसकी समाहि ि◌ै हिसे आि भी देखा ि◌ा सकता ि◌ै।

पैठण में ि◌ि◌ कि उन बालकों ◌ंने वि◌ााँ के लोगों ◌ंको गीता की हिक्षा दी। वि◌ााँ ज्ञानदेव से अनेक चमत्कि◌ा हुए। एक ब्राह्मण को अपने मृत हपता को हपण्ड-दान देना था; हकन्तु ब्राह्मण उस सि◌ािोि में सस्ट्हिलत निीं ◌ंहुए। तब ज्ञानदेव ने उसके हपतिों ◌ंको स्वगथ से पृथ्वी पि बुला हलया। उन्होंनें सस्ट्च्चदानन्द पावा नामक एक मृत व्यस्ट्क्त को पुनिीहवत कि हदया।

ज्ञानदेव ने पंद्रि वषथ की अल्पायु में ि◌ी गीता पि 'ज्ञानेश्विी' नामक एक अप्रहतम भाष्य की ि◌चना की। इस भाष्य के लेखन का समापन ि◌िले अिमदनगि में प्रवि◌ा (Pravara) नदी के तट पि स्ट्स्थत नेवासा (Nevasa) में हुआ था। इस भाष्य की गणना गीता के सवथश्रेष्ठ भाष्यों ◌ंमें की ि◌ाती ि◌ै। वाि◌ाणसी में संस्कृत के पस्ट्ण्डतों ◌ंकी एक बिृद् सभा में ज्ञानदेव को उसका अध्यक्ष हनवाथहचत हकया गया।

हनवृहत्त, ज्ञानदेव, सोपान तथा मुक्ताबाई ने पण्ढिपुि, प्रभास, ि◌ि◌ाका, अयोध्या, मथुि◌ा, ि◌ि◌ििि◌ि, वाि◌ाणसी, कांची, उज्जैन, हतरुपहत, ि◌ामेश्विम्, मदुिै, गोकणथ तथा अन्य पहवत्र स्थलों ◌ंकी तीथथयात्रा की। उनकी इस तीथथयात्रा में उन्हें नामदेव के सािचयथ का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

'ज्ञानेश्विी' गीता के लेखन की समास्ट्प्त के पिात् ज्ञानदेव लगभग छि वषथ तक िीहवत ि◌िे।

ज्ञानदेव प्रख्यात सन्त चांगदेव से भी हमले ि◌ो काल की अवज्ञा किते हुए अपनी योग-ि◌स्ट्क्त से चौदि सौ वषों तक िीहवत ि◌िे। वि वटेश्वि में ि◌ि◌ा किते थे। उनको अपनी यौहगक हसस्ट्द्धयों ◌ंपि बहुत गवथ था। उन्हें भूत-हसस्ट्द्ध थी अथाथत् समस्त िीहवत प्राणी उनके विवती थे। वि ि◌ि◌े पि सवाि ि◌ो कि ि◌ाथ में सपथ का चाबुक हलये चला किते

थे। वि ज्ञानदेव को देखने को उतुसुक थे। एक बाि वि अनेक हिष्ों ंके साथ िि पि सवाि िो कि िाथ में सपथ का चाबुक हलये उनके दिथनाथथ चल पड़े। ज्ञानदेव औि उनके भाइयों ंने उन्हें अपनी औि िूमिाम से आते हुए देखा। उस समय ज्ञानदेव एक दीवाि पि बैठे हुए थे। उन्होंनें दीवाि को आदेि हदया हक वि अग्रसिण किे हिससे वि चांगदेव का स्वागत कि सकें।

चांगदेव ज्ञानदेव के इस चमत्काि के स्वयं साक्षी थे। वसुतुतः इससे उनको अवमाहनत िोना पड़ा था। उन्होंनें िान्त भाव से िि से नीचे उति कि ज्ञानदेव को साष्टांग प्रणाम हकया औि उनका हिष्त्व ग्रिण कि हलया।

चांगदेव चौदि सौ वषथ के एक वृद्ध पुरुष थे; हकन्तुु चतुदथि वषीया बाला मुक्ता ने उनसे किा- "चांगदेव, सुनो, यहद तुम मुक्त िोना चािते िो, तो सवथप्रथम तुम्हें हनष्कपट भस्ट्क्त की सािना किनी िोगी। तुम्हें भस्ट्क्त से वैिाग्य औि वैिाग्य से ज्ञान प्राप्त िोगा। अतः ज्ञान तुम्हािा लक्ष्य औि भस्ट्क्त इस लक्ष्य-हसस्ट्द्ध का माध्यम िोना चाहिए।"

मिाभूतो पि ज्ञानदेव का पूणथ हनयन्त्रण था। पाकिाला में िब कभी पात्राभाव िो िाता था, तब उनकी बहिन उनकी पीठ पि िोहटयााँ सेक हलया किती थी। ज्ञानदेव को भगवान् कृष्ण का अवताि माना िाता िै।

हनवृहत्त ज्ञानदेव के वास्तहवक गुरु थे। उन्होंनें ज्ञानदेव को एक ऐसे स्वतन्त्र ग्रन् की िचना का आदेि हदया हिसमें उनके ज्ञान-सम्बन्धी समस्त अनुभवों ंका समावेि िो। इस आदेि का पालन किते हुए ज्ञानदेव ने 'अमृतानुभव' नामक ग्रन् की िचना की। इसकी आठ सौ हिपहदयों ंमें उनके उच्चतम आध्यास्ट्कि अनुभव सहिहित िैं।

ज्ञानदेव ने अपने हमत्रों ंतथा भाइयों ंके समक्ष िीतेिी समाहि (संिीविनी समाहि) लेने की इच्छा व्यक्त कि दी। बाईस वषथ की आयु में १२९६ ई. के अक्तूबि मास के लगभग अन्त में काहतथक के कृष्ण पक्ष की त्रयोदिी हतहथ को आलन्दी में उन्होंनें अपनी इस इच्छा की पूहतथ भी कि ली।

उन्होंनें अपने प्राणों ंको ब्रह्मिन्ध्र में केस्ट्ित कि अपने भौहतक ििीि का परित्याग कि हदया। यहद कोई उनकी समाहि के पाश्वथ में उनकी गीता को पढ़ ले, तो उसे अपनी सभी िंकाओं ंका समािान प्राप्त िो िायेगा।

इसके पिात् आठ मिीने की अल्पावहि में िी उनके अन्य भाइयों ंतथा उनकी बहिन ने भी अपने ििीि का परित्याग कि हदया। सोपान ससवाि (Saswad) में किि (Karha) नदी के तट पि समाहिस्थ हुए। यि स्थान पुणे के हनकट पण्ढिपुि की पिाड़ी की उपत्यका में िै। चांगदेव ने पुनतम्बा नामक गााँव में समाहि ली औि मुक्ताबाई ने अठािि वषथ की आयु में स्वयं को पंच-मिाभूतों ंमें हवलीन कि हदया। उस समय एक भयंकि झंझावात आया था। हनवृहत्त ने गोदाविी के उद्गम पि स्ट्स्थत त्र्यम्बक में समाहि ली।

इस प्रकाि पााँच मिान् आत्माएाँ इस भौहतक संसाि का परित्याग कि अपने अस्ट्न्तम गन्तव्य को प्राप्त िो गयीं।ं उन्होंनें पचीस वषों की अवहि में तत्कालीन ब्राह्मणों ंकी िमाथन्धता को समाप्त कि उन्हें अज्ञान के अन्धकाि से मुक्त हकया। उनसे उन ब्राह्मणों ंको मुस्ट्क्त के हलए भस्ट्क्त तथा ज्ञान के सुदृढ़ माध्यम की भी सम्प्रास्ट्प्त िुई। इसके अहतरिक्त उन मिान् आत्माओं ंने लोगों ंके मन में इस तथ्य् को बद्धमूल कि हदया हक संसाि में सभी समान िैं औि मानव की महिमा-मस्ट्ण्डत उपलस्ट्ब्धयों ंतथा उसके उत्कषथ का काित्र संयोगवित् हकसी कुलीन परिवाि में उसका िन्म-ग्रिण या मात्र वेद-वेदान्त का अध्ययन न िो कि उसका हदव्य कमथ िै। दिी नामदेव, नामदेव की सेहवका िानी, स्वणथकाि निििि, कुम्िाि चोखामेला, नाई सेना, कुम्भकाि गोिा, माली सावन्त तथा मिारिन भागू- ये सभी ज्ञानदेव के अनुयायी थे। ये लोग कृष्ण के पिम भक्त थे औि लोग इन्हें श्रद्धा की दृहष्ट से देखते थे।

ज्ञानदेव विाकिी-सम्प्रदाय नामक एक संस्था के संस्थापक थे िो िमिााष्टि में अपनी पुिातन गरिमा के साथ आि भी िीहवत िै। िो लोग इस सम्प्रदाय के प्रहत आस्थावान् िैं, उन्हें प्रहतवषथ आषाढ़ तथा काहतथक मास की एकादिी को पण्ढिपुि की यात्रा किनी िोती िै। यहद हकसी कािण ऐसा सम्भव निीं ंिो पाता, तो प्रहतवषथ कम-से-कम एक बाि तो विााँ िाना िी पड़ता िै। इसे इतना पहवत्र समझा िाता िै हक अस्वस्थ व्यस्ट्क्तयों ंको छोड़ कि अन्य सभी लोग

आिीवन प्रहतवषथ पण्ढिपुि की यात्रा किते िैं। यि पिम्पिा पीहढ़यों ंसे चली आ ििी िै।

ज्ञानदेव का िीवन आप सब लोगों ंके हलए प्रेिणा-स्रोत बने ! 'ज्ञानेश्विी' तथा 'अमृतानुभव' का सम्यक् अध्ययन कि आप लोग ज्ञान के उच्चति परिमण्डल में अबाि हवचिण किें! आप सबको हसद्धयोगी ज्ञानदेव का आिीवाथद प्राप्त िो! आप सबको उनकी ियन्ती के अवसि पि आलन्दी में उनकी समाहि के दिथन के हलए िाने का सुअवसि प्राप्त िो औि आप लोग विााँ उस सन्त के आिीवाथद से कृतकृत्य िों ंिो आि भी अपने भक्तों ंको गुप्त रूप से अमित्व का अमृत-पान किाया किता िै!

उत्ति भित के सन्त
गोस्वामी तुलसीदास

तुलसीदास का िन्म उत्ति प्रदिे के िनपद बाँदा-स्ट्स्थत िािापुि ग्राम में संवत् १५८९ अथाथत् सन् १५३२ में हुआ था। न्मिना वे सियूपािीण ब्राह्मण थे औि उन्हें संसूकृत में िहचत िामायण के िचहयता वाल्मीहक का अवतिा माना िाता िै। िन्म के समय उन्होंनें रुदन निीं ंहकया था। अपने बत्तीस दाँतों ंके साथ िी उन्होंनें िन्म-ग्रिण हकया था िो पूणथतः अक्षत थे। बाल्यावस्था में उनका नाम तुलसीिाम या िामबोला था।

तुलसीदास की पत्नी का नाम बुस्ट्द्धमती (ित्नावली) तथा उनके पुत्र का नाम तािक था। अपनी पत्नी के प्रहत तुलसीदास की आसस्ट्क्त असीम थी। उससे उनका एक हदन का पाथथक्य भी उनके हलए असह्य था। एक हदन उनकी पत्नी हबना उनको सूहचत हकये अपने हपता के घि चली गयी। तुलसीदास एक िात उसे देखने के हलए हछप कि अपने श्वसुि के घि चले गये। इससे बुस्ट्द्धमती अत्यन्त लस्ट्ज्जत हुई। उसने तुलसीदास से किा- "मेिा ििीि अस्ट्स्थ-चमथ से हनहमथत िै। मेिे इस कालुष्मयी देि के प्रहत आपको हितना प्रेम िै, उसका आधां भी यहद भगवान् िाम के प्रहत िो, तो आप संसाि-सागि को पाि कि अमित्व तथा िाश्वत आनन्द प्राप्त कि लेंगे।" पत्नी के इस िब्द-बाण से वे ममाथित िो गये। वे विाँ एक क्षण के हलए भी निीं ंरुके औि गृि-त्याग कि तपस्वी िो गये। चौदि वषों तक वे हवहभि पावन तीथथ स्थलों ंमें भ्रमण किते ििे।

िौच हक्रया से हनवृत्त िो कि लौटते समय वे पात्र के िेष िल को एक वृक्ष की ि़ि पि डाल हदया किते थे। उस वृक्ष पि एक प्रेत ििता था िो तुलसीदास से बहुत प्रसि था। उसने उनसे किा- तुम मुझसे कोई विदान प्राप्त किो।" तुलसीदास ने किा- मुझे भगवान् िाम का दिथन किवा दो।" प्रेत ने किा- तुम िनुमान् मस्ट्न्दि में िाओ। विाँ िनुमान् िामायण सुनने के हलए एक कोढ़ी के वेि में आया किते िैं। वे विाँ आने वालों ंमें प्रथम औि िाने वालों ंमें अस्ट्न्तम िोते िैं। उन्हीं ंको पक़िो। वे तुम्हािी सिायता किेंगे।" इस पिामिथ के अनुसाि तुलसीदास ने िनुमान् का दिथन हकया। उनकी कृपा से उन्हें भगवान् िाम के दिथन हुए।

तुलसीदास ने बािि पुस्तकों ंकी िचना की। इनमें सवाथहिक प्रख्यात 'िामचरितमानस' िै हिसे उन्होंनें हिन्दी में हलखा था। उन्होंनें इस ग्रन् की िचना िनुमान् के हनदेिन में की। उत्ति भित के प्रत्येक हिन्फ्दू के घि में तुलसी-िामायण का पठन तथा पूिन अत्यन्त आदि के साथ िोता िै। यि एक प्रेिणाप्रद ग्रन् िै। इसकी प्रत्ये हिपहदयों ंमें सौन्दयथ-मस्ट्ण्डत तुक तथा छन्दोबद्धता के दिथन िोते िैं। हवनयपहत्रका तुलसीकृत एक अन्य मित्त्वपूणथ िचना िै।

एक बाि कुछ चोि उनके आश्रम में चोिी किने के हलए आये। विाँ उन्होंनें देखा हक नील-वणथ का एक प्रििी िाथों ंमें धनुष-बाण हलये आश्रम के द्वाि की औि सतकथतापूवथक देख ििा िै। वे ििााँ-ििााँ िाते थे, विाँ-विाँ वि उनका अनुगमन किता था। वे भयभीत िो गये। प्रातःकाल उन्होंनें तुलसीदास से पूछा- "िे पूिनीय सन्त, िम लोगों ंने आपके आश्रम के द्वाि पि िाथों ंमें धनुष-बाण हलये एक युवा प्रििी को देखा िै। वि व्यस्ट्क्त कौन िै?" तुलसीदास कुछ क्षणों ंतक मौन ििे औि तत्पश्चात् रुदन किने लगे। उन्हें ज्ञात िो गया हक भगवान् िाम उनकी सम्पहत्त की सुिक्षा के हलए स्वयं कष्ट कि ििे िैं। उन्होंनें तत्क्षण अपनी सम्पहत्त हनधथनों ंमें हवतरित कि दी।

तुलसीदास कुछ हदनों ंतक अयोध्या में ििे। तत्पश्चात् वे वािाणसी चले गये। एक हदन एक ित्यािा ने उनसे िोते हुए किा- "िाम के प्रेम के नाम पि आप मुझे कुछ हभक्षा दीहिए। मैं ित्यािा हाँ। तुलसीदास उसे अपने घि ले आये ििााँ उन्होंनें उसे भगवान् को अहपथत पावन प्रसाद हदया। उन्होंनें यि भी घोहषत कि हदया हक इस ित्यािा का अब

ुस्ट्द्धकिण िो गया िै। इस पि विाणसी के ब्राह्मणों ंने तुलसीदास की भत्सथना किते हुए किा- "हकसी ित्यिो को कैसे पाप-मुक्त हकया िा सकता िै? आप उसके साथ भोिन कैसे कि लेते िैं? यहद हिव का पहवत्र वृषभ नन्दी उसके िाथों ंसे अि ग्रिण कि लेगा, तो िम इस बात को स्वीकाि कि लेंगे हक उसका िुस्ट्द्धकिण िो चुका िै।" उस ित्यिो को मस्ट्न्दि में लाया गया ििााँ वृषभ ने उसके िाथों ंसे अि ग्रिण हकया। इस घटना से ब्राह्मण अत्यन्त लस्ट्ज्जत हुए।

तुलसीदास एक बाि वृन्दावन गये। विााँ एक मस्ट्न्दि में िा कि उन्होंनें भगवान् कृष्ण की प्रहतमा देखी। उन्होंनें किा- "िे भगवान्, मैं तुम्हािो सौन्दयथ का वणथन हकस प्रकाि कि सकूाँगा ! िब तुम अपने िाथों ंसे िनुष-बाण ग्रिण किोगे, तभी तुम्हािो सुिख तुलसी का ििि अवनत िो पायेगा।" तब भगवान् ने स्वयं को िनुष-बाण के साथ तुलसीदास के समक्ष प्रकट कि हदया।

एक बाि तुलसीदास के आिीवाथद से एक हनिथन स्त्ी का मृत पहत पुनिीहवत िो गया। हदल्ली का मुगल सम्राट् तुलसीदास के इस चमत्काि से अवगत िो गया औि उसने उन्हें बुलाया। ििासभा में तुलसीदास के उपस्ट्स्थत िोने पि सम्राट् ने उनसे हकसी चमत्काि के प्रदिथन का अनुिोि हकया। तुलसीदास ने उत्ति हदया- "मुझमें कोई अलौहकक िस्ट्क्त निीं ंिै। मैं केवल िाम का नाम िानता हाँ।" इस पि सम्राट् ने उन्हें कािागृि में िाल हदया औि किा- "िब तुम मेिे समक्ष हकसी चमत्काि का प्रदिथन कि दोगे, तब मैं तुम्हें मुक्त कि दूाँगा।" तब तुलसी ने िनुमान् की प्राथथना की हिसके फल-स्वरूप िस्ट्क्तिाली बन्दिों ंके असंख्य समूि ििासभा में प्रहवष्ट िो गये। सम्राट् भयभीत िो गया। उसने किा- "िे सन्त, मुझे क्षमा कीहिए। मैं आपकी मिानता से परिहचत िो गया हाँ।" उसने तुलसी को उसी क्षण कािागृि से मुक्त कि हदया। तुलसी सन् १६२३ में इक्यानवे वषथ की आयु में विाणसी के असी घाट पि अपने नश्वि ििीि का परित्याग कि िाश्वत आनन्द के पिमिाम में प्रहवष्ट िो गये।

कबीि

कबीि का िन्म १४४० ई. में तथा उनका दिेान्त गोिखपुि के हनकट मगिि में सम्भवतः १५१९ ई. में हुआ। वे कािी के समीप ििितािा िलाि में एक कमल-पत्र पि ििुवत् ििहयत पाये गये थे। विााँ उन्हें नीरू नामक एक हनःसन्तान िुलािो ने देखा िो अपनी पत्नी नीमा के साथ एक हनकटस्थ गााँव में हकसी सम्बन्िी से हमलने िा ििा था। पहत-पत्नी परित्यक्त ििुि को देख कि दयािथ िो उठे। उसे अपने घि ला कि उन्होंनें उसका पुत्रवत् पालन-पोषण हकया। बालक के नामकिण के हलए एक कािी को बुलाया गया; हकन्तु उसने नीरू से किा हक यि बालक एक दुष्टात्मा िै औि इसकी ित्या िीघ्राहतिीघ्र कि देनी चाहिए। तभी एक चमत्काि हुआ। बालक के हृदय में एक छुिा प्रहवष्ट िो गया; हकन्तु िक्त का एक हबन्दु भी बािि निीं ंआया। कबीि के मुाँि से एक छन्द के बोले फूटे हिससे लोगों ंको यि ज्ञात िो गया हक यि बालक िक्त-मांस का एक सािािण हपण्ड मात्र निीं ंिै। तत्पश्चात् उसे कबीि नाम से अहभहित हकया गया िै। अिबी भाषा में कबीि का अथथ िोता िै मिान्।

कबीि के माता-हपता सम्भवतः हिन्दू थे; हकन्तु एक दत्तक पुत्र के रूप में उनका पालन-पोषण इसलामी संस्कािों ंके अनुरूप हुआ। किा िाता िै हक वे एक हविवा ब्राह्मण कन्या के पुत्र थे हिसने स्वयं को लज्जामुक्त किने के हलए ििुि को तालाब के पास िख हदया था। हकन्तु कबीि अपने एक पद में इस िािणा का खण्डन किते हुए किते िैं हक वे अि िैं औि वे कभी गभथस्थ निीं ंििे (देस्ट्खए, मैकोहलफ हलस्ट्खत "हसख िेहलिन", पृष्ठ १२२)। मुसलमान िोते हुए भी कबीि का ििीि बािथक्य को प्राप्त िोता ििा हिसके फल-स्वरूप नीरू तथा नीमा हचस्ट्न्तत िोने लगे। इसके पश्चात् कबीि एक बछड़े का दूि पीने लगे। वि बछड़ा प्रहतहदन एक चमत्कारिक हवहि से दूि हदया किता था।

कबिी का िीवन ििस्य से आवृत ििा। िमें उनके प्रािस्ट्म्भक प्रहिक्षण तथा िीवन-वृत्त के हवषय में कुछ भी ज्ञात निीं िै। उनके अिोकर्थ्ाकि हवविणों से भी िो-कुछ ज्ञात िोता िै, वि अपयाथप्त िै। इस तर्थ् के अहतरिक्त हक वे एक िुलािे थे, हक वे हनहिथन माता-हपता की सन्तान थे, हक हसकन्दि लोिी के िासन-काल में उनकी कमथ-भूहम
कािी ििी, हक वे मिान् िाहमथक सुिािक िामानन्द के हिष्य थे अिौ हक वे कुछ ऐसे हिष्यों के गुरु िि हिन्होंनें प्रचुि ख्याहत अहिथत की, िम कबिी के हवषय में साहिकाि कुछ भी किने की स्ट्स्थहत में निीं िैं।
अपनी बाल्यावस्था के प्रािस्ट्म्भक चिण से िी कबिी की प्रवृहत्त िमोन्मुख ििी। उनका स्वभाव मननिील था। उनकी मनोदिा प्रायः ििस्यािक िो िाया किती थी। अपनी बाल्यावस्था में िी वे सािुओं से ईश्वि-सम्बन्धी वाद-हववाद हकया किते थे। वे सािु-सन्तों का आदि-सत्काि आत्यस्ट्न्तक भस्ट्क्त तथा श्रद्धा के साथ किते थे। नीरू ने उनका हववाि कि हदया था; हकन्तु गृि-परिवाि के प्रहत वे सदा हवित्त िी ििे। वे पावन पुरुषों की संगहत में हवचिण हकया किते थे। उनके िीहवकोपािथन का स्रोत किघा था।

कबीर की दीक्षा

कबिी बहुत हदनों तक गुरु-कृपा से वंहचत ििे। वे िामानन्द से दीहक्षत िोना चािते थे; हकन्तु उन्हें यि सन्देि था हक उनके मुसलमान िोने के किण सम्भवतः वे उन्हें हिष्य के रूप में ग्रिण न किें। एक हदन उन्होंनें स्वयं को गंगा-घाट की सीहढ़यों पि हछपा हलया। िामानन्द प्रहत हदन प्रातः स्नान के हलए उन्हीं सीहढ़यों से िो कि घाट पि पहुँचते थे। पूवथवत् उस हदन भी मिान् उपदेिक िामानन्द विााँ स्नान के हलए आये। अन्धकाि में उन्होंनें सीहढ़यों पि लेटे कबिी को निीं देखा अिौ उनके वक्षस्थल पि अपना पैि िख हदया; हकन्तु िैसे िी उन्हें ज्ञात हुआ हक उन्होंनें हकसी व्यस्ट्क्त को पद-महदथत कि हदया िै. वे िाम-िाम बोल उठे। कबिी उठ खड़े हुए। उन्होंनें किा- "अन्ततः मैंने उन्हें पा िी हलया।" िामानन्द के चिणों पि हगि कि उन्होंनें किा- "आपने मुझे दीक्षा-मन्त्र हदया िै अिौ अब मैं आपका हिष्य हाँ। िामानन्द उनके हनष्कपट भाव तथा भस्ट्क्त से स्तब्ध िि गये अिौ उन्होंनें कबिी को अपने हिष्य के रूप में ग्रिण कि हलया।

कबिी के गुरु तत्कालीन प्रख्यात मुल्लाओं तथा ब्राह्मणों से िमथ तथा ििथन पि वाद-हववाद हकया किते थे। इन वाद-हववादों में कबिी भी सस्ट्महलत िोने लगे। एक बाि तकथ-िास्त्-कुिल सवथहित नामक एक ब्राह्मण कािी आया। कािी के पस्ट्ण्डतों ने िामानन्द को उस सुहवज्ञ ब्राह्मण के आगमन की सूचना देते हुए किा हक उस बहुश्रुत ब्राह्मण को अभी तक कोई भी पस्ट्ण्डत पिास्त निीं कि सका िै। िामानन्द ने उसके साथ वाद-हववाद के हलए कबिी को भेिा। उस रूहढ़वादी पस्ट्ण्डत ने कबिी से पूछा- "कबिी, तुम्हािी िाहत क्या िै?" कबिी ने किा- "मैं एक िुलािा हाँ।" उस दम्भी पस्ट्ण्डत ने उन्हें घृणास्पद दृहष्ट से देखते हुए उनसे अवज्ञा-हमहश्रत स्विों में पूछा हक 'िुलािा क्या िोता िै।'

कबिी ने किा- "िुलािे का ििस्य कोई निीं िानता। भगवान् ने समूचे संसाि का ताना बुना िै। वेद-पुिाणों का श्रवण किो। तब तुम्हें भगवान् की यि वाणी सुनायी पड़ेगी - 'मेिा ताना बहुत लम्बा-चौड़ा िै। पृथ्वी अिौ आकाि मेिी कायथिाला िै। सूयथ अिौ चन्द्र बािी-बािी से गहत किें-मैंने इसकी व्यवस्था कि िखी िै।' ऐसे िुलािे से मैं प्रसन्न हाँ।"

कबिी नानक के सदृि थे। हिन्दू तथा मुसलमान, दोनों के हलए वे समान भाव से हप्रय थे। उनका हकसी एक िमथ तथा एक िाष्ट्र से कभी कोई सम्बन्ध निीं ििा। वे सावथभौम भ्रातृत्व के मसीिा थे अिौ िाहतगत हवहि-हनषेि का अनुपालन निीं किते थे। उनकी आस्था हिन्दुत्व तथा इसलाम के उच्चति समन्वय के प्रहत थी। वे इस सत्य से सुपरिहचत थे हक िमथ, अध्यात्म, प्रेम, भस्ट्क्त तथा हदव्य िीवन पि हकसी िमथ-हविेष का आहिपत्य निीं िै अिौ वे सवथहनष्ठ िैं। कबिी का िमथ सिल तथा अकृहत्रम था। उनके हलए एकमात्र ईश्वि-भस्ट्क्त िी मुस्ट्क्त की माध्यम थी। हवश्व

कबिी का घि, समस्त मानवि–ाहत उनका बनुधु तथा स्वगथस्थ हपता (ईश्वि) उनका मिान् हपता था। कबिी ने कठोि तप तथा ध्यान के हलए संसाि-त्याग निीं ◌ंहकया। उनके योग में गत्यिाकता थी। किघा चलाते समय भी उनका ध्यान सवथदा ईश्वि पि केस्ट्ति ि◌िता था।

कबिी के प्रहत बहुसंख्यक लोग आकृष्ट ि◌ोने लगे। इनमें से अनेक उनके हिर्ष् ि◌ो गये। वे उनके ििमुि, ओिोत्प्रेिक तथा उत्कृष्ट पदों ◌ंके हलए उनकी तन्ुतिुाला या ि◌ाट-ििबाि में उनके पास एकत्र ि◌ो ि◌ाते। पैगम्बिों ◌ंतथा सन्तों ◌ंके कायथ-कलाप ि◌िस्मय ि◌ोते ि◌ैं। उनके उपदेिों ◌ंमें अनावश्यक ि◌ब्द-बाहुल्य निीं ◌ंि◌ोता। केवल ज्ञानी ि◌न ि◌ी उनसे लाभास्ट्ति ि◌ो सकते ि◌ैं। एकमात्र यिी लोग उन उपदेिों ◌ंके तत्त्व-ग्रिण में समथथ ि◌ोते ि◌ैं। कबिी मानव-मानव के बीच एकत्व-स्थापन के हलए प्रयत्निील ि◌िे। वे हवहभि मले में पिास्परिक िसौाथ के हलए भी प्रयासित ि◌िते थे। किाी के रूहढ़वादी ब्राह्मणों ◌ंने उन्हें पिाभूत किने के अथक प्रयत्न हकये। उन्होंनें उन्हें प्रलोहभत किने के हलए उनके पास एक सुन्दि तथा युवती गहणका को भेिा; हकनु्तु कबिी की आध्यास्ट्कि ि◌स्ट्क्त के किाण बाइहबल की कथा की मैगिेलेन (Magdalene) की भााँहत उसका स्वभाव भी रूपान्तरित ि◌ो गया।

'कबिी हनगुथण भस्ट्क्त के प्रहतपादक थे। उनके हृदय में सवथभूतों ◌ंके प्रहत आत्यस्ट्न्तक पे्रम था। वे अत्यहिक दयालु तथा संवेदनिील थे। उनमें भय निीं ◌ंथा। उन्होंनें हकसी से अपने अनुगमन का आग्रि-अनुिोि निीं ◌ंहकया। वे अपने पदों ◌ं का सस्वि पाठ किते हुए समूपूणथ देि का पयथटन किते ि◌िे। उन्होंनें औपचारिकता तथा कमथकाण्ड की भत्सथना औि रूहढ़ग्रस्त हवचािों ◌ंकी कटु आलोचना की। वे एक सामाहिक क्रास्ट्न्तकािी थे औि उन्होंनें लोगों ◌ंके मामाहिक, नैहतक तथा आध्यास्ट्कि उत्थान के हलए श्रम-साध्य प्रयत्न हकये। यिी किाण ि◌ै हक उनके प्रहत लोगों ◌ंकी श्रद्धा आि भी अकु्षण्ण ि◌ै।

कबिी एक मिान् प्रचािक थे; हकनु्तु उनके प्रचाि की हवहि हनतान्त मौहलक थी। उन्होंनें अपने चतुहदथक् हवद्यमान हवहविता में एकता एवं समस्विता लाने के हलए अथक प्रयत्न हकये। उनके पदों ◌ंमें मुल्लाओं ◌ंतथा पस्ट्ण्डतों ◌ंकी आलोचना के स्वि पूणथतः मुखि हुए ि◌ैं। उन्होंनें मुसहलम तथा हिन्फ्दू रूहढ़वाहदता के हवरुद्ध युद्ध में अपने हकसी भी स्ट्िास्ट् को लक्ष्यिीन निीं ◌ंि◌ोने हदया। कबिी आि-साक्षात्काि से कृतकृत्य एक समथथ सन्त थे हिसके फल-स्वरूप वे भय तथा हवघ्न-बािा से हवयुक्त ि◌ीवन-यापन तथा सत्योपदेि के वास्तहवक अहिकािी ि◌ो गये थे।

कबिी किते ि◌ैं- "मैं अल्लाि तथा ि◌ाम दोनों ◌ंकी सन्तान हााँ।" यि किना अत्यन्त दुष्कि ि◌ै हक वे ब्राह्मण थे या मुसलमान, सूफी थे या वेदान्ती, वैष्णव थे या ि◌ामानन्दी। हिन्फ्दू उनको ब्राह्मण सन्त तथा मुसलमान सूफी मानते ि◌ैं। उत्ति भाित के लक्ष लक्ष लोग कबिीपन्ी ि◌ैं; हकनु्तु कबिी पन् की स्थापना कबिी ने निीं,◌ं अहपतु उनके अनुयाहययों ◌ं ने की थी। ििााँ तक कबिी का प्रश्न ि◌ै, वे मत-मतान्तिों ◌ंका अहतक्रम कि चुके थे। उनकी मृतुयु के पिात् उनके ि◌व को प्राप्त किने के हलए हिन्फ्दुओं ◌ंतथा मुसलमानों ◌ंमें पिस्पि-हववाद हुआ था। इन दोनों ◌ंसम्प्रदायों ◌ंमें से प्रते्यक सम्प्रदाय उनको अपने ि◌मथ का अनुयायी मानता था। इस आख्यान से उक्त कथन की स्पष्ट पुहष्ट ि◌ो ि◌ाती ि◌ै। उनके समकालीन सन्तों ◌ंमें निसी मेिता, हवद्यापहत, उमापहत, ि◌ैदास तथा मीिाबाई प्रमुख ि◌ैं।

भाितीय ि◌िस्यवाद के इहतिास में अन्य साािकों ◌ंकी अपेक्षा काेि के सन्त-कहव कबिी का व्यस्ट्क्तत्व अहिक आकषथक था। वे एक लब्ध-प्रहतष्ठ दाथहनक, कुिल संगीतज्ञ तथा समथथ कहव थे। वे पैगम्बि थे। उनके चमत्कारिक गीतों ◌ंमें उनके आध्यास्ट्कि अनुभव तथा पे्रम की स्वतःसूफूतथ अहभव्यस्ट्क्तयााँ हनहित ि◌ैं। उन्होंनें अपने गीतों ◌ंमें स्थानीय रूपकों ◌ंका प्रयोग हकया औि अपने ि◌मथ को लोकहप्रय पदावली के माध्यम से अहभव्यक्त हकया। उत्ति प्रदेि तथा पंिाब के लगभग प्रते्यक घि में उनकी कहवताओं ◌ंकी आवृहत्त हुआ किती ि◌ै। उनके हसद्धान्त ओिोत्प्रेिक तथा उदाि एवं उनकी कुछ कहवताएाँ अत्यन्त ि◌िस्यािक ि◌ैं।

कबीि की आध्यास्त्मक िस्त्क्त अद्‌भुत थी। उन्होंनें कई एक चमत्कािों ंका प्रदिथन हकया। कहा िाता ै हक स्वयं कृष्ण ने उनको एक वस्त् बुन कि हदया था िो कबीि में उन हदनों ंतक देखे गये वस्त्ों ंमें सवाथहिक सुंदि था। इसका वनय तन्तु से न िो कि सूयथ की िस्त्श्मयों ंसे हुआ था हिस पि स्थान-स्थान पि पुरुष की सुदिथन स्त्श्ममालाओं ंका हचत्रांकन हकया गया था।

एक बाि कबीि ने गो−त्या कि दी; हकन्तु गो−त्या के िघन्य अपिाि से कबीि की मुस्त्क्त के हलए उन्होंनें गौ को पुनिीहवत कि हदया।

कुछ लोगों ंने हसकन्दि लोदी के समक्ष कबीि पि हमर्थ्ा हसद्धान्तों ंके प्रचाि-प्रसाि द्वािा लोगों ंको हदग्भ्रहमत किने का आिोप लगाया। कबीि को सम्राट् के सम्मुख प्रस्तुत हकया गया िहाँ िािसभा के सभासदों ंने उनको सम्राट् का अहभवादन किने के हलए कहा। कबीि ने कहा- "मुझे सम्राट् से कुछ लेना-देना नहीं ंहै। मेिा सम्बन्ध एकमात्र ईश्वि से है िो संसाि का आलम्बन तथा वास्तहवक िगत्पहत है। मैं उसके नाम से परिहचत हाँ औि केवल उसी का गुण-गान तथा ध्यान कि सकता हाँ। मैं हकसी सम्राट् के सम्मुख अवनत-हिि होने की कला से सवथा अनहभज्ञ हाँ। मैं अब तक हकसी भी सम्राट् की िािसभा में उपस्त्स्थत नहीं ंहुआ हाँ।" कबीि के इन िब्दों ंसे हसकन्दि लोदी क्रुद्ध हो गया। हकन्तु वह एक सुसंस्कृत व्यस्त्क्त था; अतः उसने उन्हें हनिापद चले िाने हदया। कबीि की प्राण−क्षा तो हो गयी; लेहकन उन्हें कािी नगिी से हनवाथहसत होना पड़ा। यह घटना १४९५ ई. में हुई थी। उस समय उनकी आयु ५६ वषथ थी।

कबीि की पत्नी का नाम लोई औि उनके पुत्र का नाम कमाल था। िमथदास उनके प्रमुख हिष्य् थे। हचत्तौड़ की िानी झाली उनकी हिष्या थीं।ं कबीि नगि से बाहि एकान्त स्थान में एक कुहटया में सपत्नीक िहा किते थे। िो भी सािु-संन्यासी उनके यहाँ आते थे, वे उन्हें भोिन किाते थे। एक हदन िब उनके घि में कुछ भी नहीं ंथा, उनकी कुहटया के द्वाि पि कई कुिाहित संन्यासी आ पहुँचे। कबीि की मनोदिा अिान्त हो गयी। यह देख कि उनकी पत्नी ने उनसे कहा- "हे स्वामी, यहद आप अनुमहत देंगे, तो मैं िहनक के पुत्र से कुछ िन माँग सकती हाँ।" कबीि ने कहा- "वह तुम्हें िन क्यों ंदेने लगा? वह तो महाकृपण है।" उनकी पत्नी ने उनसे कहा- "वह मुझ पि आसक्त है। कल उसने मुझे कुछ िन देने को कहा था। उससे िन ले कि हमें उसको समुहचत पाठ पढ़ाना चाहहए।" कबीि ने कहा- "अच्छी बात है। तुम िीघ्र ही उसके पास िा कि उससे िन ले आओ। संन्याहसयों ंकी क्षुिा तीव्र हो गयी है। तीन हदनों ंसे उन्होंनें अन्न ग्रहण नहीं ंहकया है।"

लोई िहनक के घि िा कि उसके युवा पुत्र से हमली। उसने उसको िात में हमलने का वचन हदया। िहनक के पुत्र ने तत्काल उसे उसकी आवश्यकता की पूहतथ के हलए िन दे हदया। घि आ कि लोई ने वह िन कबीि को दे हदया हिसके फल-स्वरूप संन्याहसयों ंने उस हदन भिपेट भोिन हकया।

उस हदन भयंकि वृहष्ट हो िही थी औि झंझाहनल की गहत अत्यन्त तीव्र थी। वृहष्ट तथा प्रभंिन की उस िात में कबीि ने अपनी पत्नी को कम्बल से ढक हदया तथा अपने कन्धों ंपि लाद कि उसे िहनक के घि पहुँचा हदया। लोई िहनक के पुत्र के कक्ष में प्रहवष्ट हुई। िहाँ कबीि उसे घि से ले िाने के हलए उसकी प्रतीक्षा कि िहे थे। वह युवक लोई को देख िहषथत हो उठा; हकन्तु उसे झंझाहनल तथा वृहष्ट की इस िात में अपने कक्ष में देख कि उसे आियथ भी कम नहीं ंहुआ। उसने उससे कहा- "हप्रये, तुम इस समय यहाँ कैसे पहुँच गयी? तुम भीगी नहीं ंहो औि तुम्हािो पैि भी स्वच्छ है। इन पि कीचड़ भी नहीं ंलगा है। यह अत्यन्त आियथप्रद है।" लोई ने कहा- "मेिे पहत मुझे यहाँ तक अपने कन्धों ंपि उठा कि ले आये।" वह युवक यह सुन कि स्तब्ध िह गया। उसका स्वभाव तत्क्षण परिवहतथत हो गया औि वह फूट-फूट कि िोने लगा। इतना ही नहीं,ं वह उसी क्षण से लोई को अपनी माता समझने लगा औि उसके चिणों ंपि हगि कि उच्च स्वि में किने लगा- "तुम मेिी माता हो। मेिे दुिाचाि के हलए मुझे क्षमा कि दो।" इसके पिात् वह उस स्थान की औि दौड़ पड़ा िहाँ कबीि खड़े थे। वह उनके चिणों ंपि हगि कि कहने लगा- "हे

मे श्रदे्धेय गुरु, मैं मिापापी हाँ। मुझे पहवत्र कि दीहिए। मुझे ऊपि उठा कि आिीवाथद दीहिए। मैं आपके चिण-कमलों ंमें ििण-ग्रिण किता हाँ। मैं आपके सुिख अनुनय-हवनय कि ििा हाँ। मैं आपका हवनम्र भक्त हाँ।" उसी हदन से िमान का पुत्र कबीि का हनष्ठावान् भक्त िो गया।

सन्तों ंतथा पैगम्बिों ंके हक्रया-कलाप ििस्यमय िोते िैं। उनके स्पिथ तथा दिथन मात्र से घोि पापी तथा दुिथन भी मिान् सन्त िो िाते िैं औि ििोगुण के आहिक्य का अग्रसिण सतोगुण की हदिा में िोने लगता िै। िमान का पुत्र हिसका मनस् ििस्-प्रिान था, एक पहवत्र तथा सास्ट्त्त्वक व्यस्ट्क्त में रूपान्तरित िो गया।

एक हदन ििनगश्त नामक एक मुसलमान फकीि कबीि की प्रख्याहत सुन कि उन्हें देखने चला गया। कबीि के प्रहत उसमें ईर्ष्ाथ की भावना थी। उन्होंनें अपने िाि पि एक िूकि बााँि हदया हिसे देख कि फकीि कुहटया के आाँगन में निीं ंिा सका। कबीि ने उसे बुला कि किा- "तुम यिााँ से भाग क्यों ंििे िो? मैंने अपने िाि पि इस दूहषत िूकि को बााँि िखा िै। हकन्तु तुम्हािा हृदय क्रोि, अिंकाि, लोभ तथा ईर्ष्ाथ के कल्मष से ओत-प्रोत िै।" फकीि का हिि लज्जावि अवनत िो गया। उसने कबीि से क्षमा-याचना की औि वि उनका हिर्ष् िो गया।

कबीर का देहावसान

कबीि के देिान्त के पिात् उनके िव की प्रास्ट्प्त के हलए हिन्फ्दू तथा मुसलमान, दोनों ंसम्प्रदायों ंके लोगों ंने अपना- अपना दावा प्रस्तुत हकया। कािी-ििेि तथा उनके साथ सिस्रों ंहिन्फ्दुओं ंने उनके मृत ििीि का दाि-संस्काि किना चािा। उनका दावा था हक कबीि हिन्फ्दू थे; अतः उनका दाि-संस्काि िोना चाहिए। िाि हबििी खााँ तथा उनके साथ ििािों ंमुसलमानों ंने उनके िव को कब्र में दफनाना चािा। उनका दावा था हक कबीि मुसलमान थे; अतः उनके िाहमथक संस्काि के अनुसाि उनके िव को कब्र में दफनाना चाहिए।

िब यि हववाद चल ििा था, तब कबीि की आत्मा ने विााँ प्रकट िो कि किा- "मैं न हिन्फ्दू था, न मुसलमान। मैं दोनों ंथा। मैं कुछ भी निीं ंथा औि इसके साथ िी मैं सब-कुछ था। मैं दोनों ंमें ईश्वि का दिथन किता था। यिााँ न कोई हिन्फ्दू िै न मुसलमान। ये दोनों ंएक िैं। कफन को िटा कि यि चमत्काि स्वयं देख लो।"

कफन िटाने पि विााँ कुसुम-िाहि देखने को हमली हिसका आिा कािी-ििेि ले गये औि हिसको गंगा के पावन-तट पि अहग्न को समहपथत कि हदया गया। इसके पिात् भस्म को भू-गभथ में स्थाहपत कि विााँ एक मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया गया हिसे कबीिचौिा किते िैं। कबीि-पस्ट्न्यों ंका यि एक मिान् तीथथ-स्थान िै। दूसिा आिा मुसलमान ले गये हिसे उन्होंनें मगिि, ििााँ कबीि का देिान्त हुआ था, में कब्र में दफना हदया। विााँ उस कब्र पि एक मस्ट्स्िद का हनमाथण हकया गया। यि स्थान मुसलमानों ंका तीथथ स्थल िै।

कबीर की रचनाएँ

कबीि की िचनाएाँ मुख्यतः हवहभन्न छन्दों ंमें प्राचीन हिन्दी में हलस्ट्खत पदों ंका संग्रि िैं। उनकी बीस कृहतयााँ िैं हिनमें सवाथहिक मित्त्वपूणथ तथा सुप्रहसद्ध िैं कबीि बीिक, सुकहनिान, सबद, साखी, िेख्ता, मंगल, वसन्त तथा िोली आगम। कबीि बीिक को कबीि-पस्ट्न्यों ंके समस्त िाहमथक हवषयों ंतथा हसद्धान्तों ंका प्रामाहणक ग्रन्थ माना िाता िै।

कबीि की भाषा अत्यन्त सिल तथा उनकी िैली सौन्दयथमयी िै। उनके हवचािों ंकी अहभव्यस्ट्क्त में हनभथयता का पुट िै। उनकी कहवताओं ंमें कृहत्रमता के दिथन निीं ंिोते। इनका प्रत्येक छन्द गिन-अथथ-गहभथत एवं इसमें प्रयुक्त उपमा तथा रूपक पूणथतः सटीक िैं। उनकी कहवताओं ंका अन्य वैहिष्ट्य भावनाओं ंकी गिनता तथा कथ्य की

स्पष्टता ै। कबिी की अहभव्यस्ट्क्तयााँ उनके अन्तितम से समुद्भूत ोती ैं। संवेदन या अनुभूहत के पुंकिो एक सामान्य छन्द में संहपंहित कि देने का उनका किौल अद्भुत एवं अप्रहतम ै। उनकी उस्ट्क्तयााँ अहितीय तथा उनकी कहवताएाँ ओिोते्प्रिक एवं पे्रिणाप्रद ैं। उनके हवचाि गिन तथा उनकी अन्तदृथहष्ट ममथभेहदनी ै।

कबीर की उक्तियाँ

१. माला फेिते ीवन व्यतीत ो ाता ै; हकन्तु हृदय का अन्धकाि हवनष्ट न ीं ोता। ाथ की माला का परित्याग कि हृदय की माला फेिो।

२. ईश्वि-भस्ट्क्त के अभाव में तीथाथटन से कोई लाभ न ीं। तुम सम्पूणथ देि का परिभ्रमण कि सकते ो; हकन्तु तुम्हािा हृदय अपहवत्र ी िेगा। भगवान् हवश्वनाथ के दिथन के पिात् यहद हकसी के पाखण्ड, काम तथा लोभका हनिाकिण औि उसमें भगवद्भस्ट्क्त का उदे्रक न ीं हुआ, तो उसे कुछ भी प्राप्त न ीं ोगा।

३. मैं अपने हप्रयतम (ईश्वि) के वचनों के श्रवण के हलए अत्यन्त लालाहयत िता हाँ। यहद मुझे कोई अन्य हवहि से सान्त्वना प्रदान किना चा ता ै, तो उससे मुझे आश्वस्ट्स्त-प्रास्ट्प्त न ीं ोती। यहद तुम हकसी मछली को स्वहणथम िय्या पि सुला कि उसे एम्ब्रोहसया हपला देते ो, तो उसकी तत्काल मृत्यु सुहनहित ै।

४. एकमात्र ीिे का मूल्य-हनिाथिक ी ीिे के मूल्य से अवगत ो सकता ै। ईश्वि की प्रास्ट्प्त उसी के हलए सम्भव ै हिसके हृदय में भस्ट्क्त की गंगा प्रवाहित ोती ै।

५. ो तोको कााँटा बुवै, ताहि बोऊ तू फूल, तोहि फूल को फूल ै वाको ै हतिसूल।

६. इस नश्वि िीि का हवश्वास मत किो। अपनी प्रत्येक श्वास में ईश्वि का स्मिण किो। मुस्ट्क्त का एकमात्र मागथ य ी ै।

७. माटी क े कुम्हाि से तू क्या िौंदे मोहि, एक हदन ऐसा आयेगा, मैं िौंदूाँगी तोहि।

८. य िीि एक पान्िा तथा मन एक पक्षी ै। इस पान्िा में इस पक्षी ने स्वेच्छा से आश्रय-ग्र ण हकया ै। एकमात्र सत्य य ी ै हक हकसी का हकसी से कोई सम्बन्ध न ीं ै।

९. ि ााँ करुणा ै व ााँ पुण्य ै, ि ााँ लोभ ै व ााँ पाप ै, ि ााँ क्रोि ै व ााँ मृत्यु ै औि ि ााँ क्षमा ै व ााँ ईश्वि ै।

१०. प्रत्येक वन में चन्दन न ीं हमलते, प्रत्येक सेना में कतथव्यहनष्ठ सैहनक न ीं हमलते औि प्रत्येक समुद्र में मोती न ीं हमलते। इसी प्रकाि संसाि में प्रत्येक स्थान पि सािु-सन्त या म ात्मा न ीं हमलते।

११. िैयथ िािण किो। हकसी भी वस्तु की सम्प्रास्ट्प्त समय पि ी ोती ै। माली पौिों का अहभहसंचन प्रत्येक हदन किता ै; हकन्तु वे ऋतु-हविेष में ी पल्लहवत-पुस्ट्ष्पत ोते ैं।

१२. यहद मैं सम्पूणथ पृथ्वी को कागि, समस्त वृक्षों को लेखनी तथा सातों समुद्रों को महस बना दूाँ, तो भी इनसे ईश्वि का वणथन पूणथरूपेण न ीं हकया ा सकता।

१३. अपिब्द से बड़ा कोई पाप न ीं ै। य प्रत्येक वस्तु को िला कि भस्म कि देता ै। इसके हवपरित मिुि वचन वि वृहष्ट ै ो वेगवहत अमृतिािा बन कि बिसती ै।

१४. यहद हकसी िब्द का समुहचत प्रयोग िो, तो वि अमूल्य िो िाता िै। अतः उच्चािण के पूवथ इसे हृदय की तुला पि भली-भााँहत तौल हलया किो।

१५. काल्हह किो सो अिु कि, अिु किो सो अब्ब, पल में पिलय िोत िै, बहुरि किोगे कब्ब !

१६. एकमात्र सूिमा वीि िै हिसकी पााँचों ंइस्ट्रियााँ उसके वि में िैं। हिसकी इस्ट्रियााँ अहनयस्ट्रन्त्रत िैं, उसे ईश्वि की प्रास्ट्प्त कभी निीं ंिोती।

१७. िकथिा-भक्षण के पिात् मूक व्यस्ट्क्त इसके स्वाद का वणथन निीं ंकि सकता। इसी प्रकाि आत्म-साक्षात्काि से कृतकृत्य व्यस्ट्क्त भी अपनी अनुभूहत को वाणी निीं ंप्रदान कि सकता।

१८. िकथिा-हनहमथत स्ट्खलौने िकथिा से हनहमथत िोते िैं हिनमें िकथिा हवद्यमान ििती िै। इसी प्रकाि समूपूणथ ब्रह्माण्ड ब्रह्म में औि ब्रह्म समूपूणथ ब्रह्माण्ड में अनुसूयूत िै।

१९. िकथिा तथा िकथिा हनहमथत स्ट्खलौने दो न िो कि एक िैं। इसी प्रकाि िब पिा ज्ञान की उपलस्ट्ब्ध िो िाती िै, तब हवश्व के अनेकत्व में एकत्व-दिथन िोने लगता िै।

२०. हिस प्रकाि बीि में वृक्ष तथा वृक्ष में बीि स्ट्स्थत िैं, उसी प्रकाि हवश्व ब्रह्म में स्ट्स्थत िै।

सन्त िािािाा पीपा

पीपा का िन्म १५२५ ई. में हुआ था। वि गागिाउन्ध्रा (Gagaraumghra) िाज्य के िमथप्राण अहिपहत थे। उनकी प्रिासन-हवहि में न्याय तथा बुस्ट्द्ध, दोनों ंका हमश्रण था। वि संन्याहसयो, तपस्ट्स्वयों ंतथा ब्राह्मणों ंकी सेवा में संलग्न ििते थे। उनके प्रहत उनमें उत्कट भस्ट्क्त-भाव था। िािा िोते हुए भी वि अत्यन्त सिल थे। हवलाहसता से वि कोसों ंदि ििते थे। वि हनयहमत रूप से भगवान का ध्यान तथा पहवत्र िास्त्रों ंका अध्ययन हकया किते थे। सािु तथा योगी भगवान् से प्राथथना हकया किते थे हक पीपा सािु-वृहत्त ग्रिण कि लें।

एक बाि पीपा को एक सन्त का हदव्य दिथन हुआ हिन्होंनें उनसे किा- "हप्रय पीपा, तुम वािाणसी िा कि मिान् गुरु िामानन्द की सेवा किो।" पीपा तत्काल वािाणसी की ओि चल पड़े। विााँ िा कि उन्होंनें अपने एक सन्देिे के माध्यम से श्री िामानन्द को यि सूचना दी हक वि उनको अपनी श्रद्धा अहपथत किना चािते िैं। िामानन्द ने उनसे अपने उत्ति में किा- "यिााँ हकसी िािा का कोई काम निीं ंिै। मेिा आश्रम तो केवल हनिथन तथा यायावि सािु-संन्याहसयों ंके हलए िै।"

तत्पिात् पीपा अपनी िाििानी में लौट आये। यिााँ आ कि उन्होंनें अपनी समस्त वैयस्ट्क्तक सम्पहत्त हनिथनों ंमें हवतरित कि दी। इसके पिात् वि िामानन्द के दिथनाथथ पुनः वािाणसी चले गये। िामानन्द को पीपा की हनष्कपटता के पिीक्षण की इच्छा हुई। उन्होंनें उनकी गुरु-भस्ट्क्त को पूणथरूपेण पिखना चािा। उन्होंनें पीपा से किा- "मुझे यि सुन कि प्रसिता हुई िै हक तुम हनिथनों ंमें अपने िन का हवतिण कि स्वयं हनिथन िो गये िो। इससे यि स्पष्ट िो िाता िै हक तुममें हववेक औि वैिाग्य का सुफुिण िो गया िै। अब तुम एक कुएाँ में कूद िाओ।"

पीपा िीघ्र िी हनकट के एक कुएँ में कूदने के हलए चल प़िे; हकन्तु िामानन्द के हिष्ों ंने उनको ऐसा किने से िोक
हदया। पीपा की हनष्कपटता तथा भस्ट्क्त से िामानन्द अत्यहिक सन्तुष्ट हुए। उन्होंनें उनको हिष्-रूप में स्वीकाि कि उनको दीक्षा प्रदान की। आिकल यहद कोई गुरु हिष् के पिीक्षण के हलए उसके प्रहत हकसी कठोि िब्द का प्रयोग कि देता िै, तो हिष् तत्क्षण उस गुरु का परित्याग कि देता िै। इसी कािण आिकल के हिष् आध्यास्ट्त्मक क्षेत्र में अपेहक्षत प्रगहत निीं ंकि पाते।
गुरु के आदेिानुसाि पीपा अपनी िाििानी में लौट आये। विााँ वि अपने गुरु के हनदेिानुसाि सािु-सन्तों ंकी सेवा तथा हनयहमत ध्यान का अभ्यास किने लगे।

पीपा ने अपने गुरु को अपने यिााँ आने के हलए हनमस्ट्न्त्रत हकया हिसे उनके गुरु ने स्वीकाि कि हलया। वि अपने हिष्ों ंके साथ िाििानी पहुाँच गये ििााँ पीपा ने नंगे पैि दौ़ि कि उनका स्वागत हकया। उन्होंनें उनके हिष्ों ंको भी अपने श्रद्धा-सुमन अहपथत हकये औि हनिथनों ंको िूमिाम के साथ भोिन किाया। अपने िािप्रासाद में उन्होंनें संकीतथन का भी आयोिन हकया।

िामानन्द ने िािका िाने की इच्छा प्रकट की हिससे पीपा को िाहदथक दुःख हुआ। वि अपने गुरु के पावन साहिध्य से वंहचत िोना निीं ंचािते थे। िामानन्द ने उनसे किा- "पीपा, यहद तुम मेिा अनुगमन किना चािते िो, तो तुम्हें तापहसक वृहत्त ग्रिण किनी िोगी।" पीपा ने अपने पुत्र को िाहसंिासन सौंप कि तापहसक वृहत्त ग्रिण कि ली औि इस प्रकाि वि िामानन्द के साथ चल प़िे। उनकी पत्नी सीता भी तपस्ट्स्वनी िो गयी औि उन सभी लोगों ंने िािका के हलए प्रस्थान हकया।

भगवान् बुद्ध तथा िािा गोपीचन्द ने िाज्य का परित्याग कि हदया था औि िािा भतृथिरि ने इसे एक हतनके की भााँहत िेय तथा उपेक्षणीय समझ हलया था। वस्तुतः िाज्य-सुख ईश्वि-साक्षात्काि के सुख की तुलना में सवथा नगण्य िै। आध्यास्ट्त्मक सम्पदा यथाथथतः अक्षय सम्पदा िै। इस सत्य के साक्षात्काि के पिात् पीपा ने भी िाज्य का परित्याग कि हदया।

िािका में पीपा श्रीकृष्ण के लोकोत्ति मस्ट्न्दि के दिथनाथथ समुद्र में कूद प़िे ििााँ भगवान् ने प्रेमपूवथक उनका स्वागत हकया। विााँ उनके साथ कुछ हदन व्यतीत कि वि लौट आये। अब वि दूि-दूि तक प्रख्यात िो गये। उनके दिथनाथथ िन-समूि उम़िने लगा। इससे उनकी भस्ट्क्त-सािना के मागथ में अविोि उपस्ट्स्थत िो गया। उन्होंनें चुपचाप िािका से हवदा ले ली। मागथ में कुछ पठानों ंने उनकी पत्नी का अपििण कि हलया; हकन्तु स्वयं िाम ने उनका उद्धाि कि आक्रान्ताओं ंकी ित्या कि दी।

वन में पीपा को एक क्रोिोन्मत्त व्याघ्र हमला। उन्होंनें उसके गले में माला िाल कि उसे हवहिवत िाम का मन्त्र दे हदया हिसके परिणाम-स्वरूप वि क्षण-भि में िी िान्त िो गया। इसके पिात् उन्होंनें उस व्याघ्र के सुिम मनुष्ों ंऔि पिुओं ंके भक्षण के अनौहचत्य पि प्रवचन हकया। इससे व्याघ्र में प्रायहित्त की भावना िाग्रत िो गयी औि वि भहवष् में इस क्रूि कमथ की आवृहत्त न किने के संकल्प के साथ विााँ से चला गया।

एक हदन पीपा नदी में स्नान किने गये ििााँ उन्होंनें स्वणथमुद्राओं ंसे भिा एक पात्र देखा; हकन्तु उन्होंनें उसका स्पिथ तक निीं ंहकया। िात में इस बात का उल्लेख उन्होंनें अपनी पत्नी से हकया। कुछ चोि िो इस बात को सुन ििे थे, उन स्वणथमुद्राओं ंकी खोि में उस स्थान पि गये; हकन्तु उन्हें उस पात्र में स्वणथमुद्राओं ंके स्थान पि एक कुण्डहलत सपथ हदखायी प़िा। उन्होंनें सोचा हक सन्त ने उनकी ित्या का षड्यन्त्र िचा था। वे सपथ-सहित उस पात्र को उनके घि में िाल आये। पीपा ने देखा हक वि पात्र पूवथवत् स्वणथमुद्राओं ंसे भिा था। उन्होंनें वे स्वणथमुद्राएँ हनिथनों ंतथा हभक्षुओं ंके भोिनाथथ व्यय कीं।ं

पीपा के पास एक गाय थी हिसका दूि वे सािु-सन्तों ंको दे हदया किते थे। एक हदन चोिों ंने यि गाय चुिा ली। वे अल्पायु बछड़े को अपने साथ हलये चोिों ंके पीछे उच्च स्वि में यि किते दौड़े- "कृपया, इस बछड़े को भी अपने साथ लेते िाओ। यहद तुम इसे अपने साथ निीं ंले िाओगे, तो तुम्हें दूि निीं ंहमल पायेगा।" उनके इन िब्दों ंसे चोिों ंका हृदय िहवत िो उठा औि अपने कुकमथ पि पिात्ताप किते हुए उन्होंनें उनको गाय लौटा दी।

एक बाि पीपा औि उनकी पत्नी श्रीिि नामक एक भक्त के दिथन के हलए गये। श्रीिि हनतान्त हनिथन थे। अहतहथयों ंके स्वागताथथ वि अपनी पत्नी के वस्त्र तक बेच देते थे। वे सभी भोिन किने बैठे। सीता ने किा- "िे पहवत्र सन्त, आपकी पत्नी किााँ िैं?" श्रीिि ि़ड़वत् बैठे ििे। वसुतुतः उनकी पत्नी अिथ-वस्त्राच्छाहदत थीं।ं सीता उनकी अनुपस्स्थहत के किाण से परिहचत िो गयीं।ं उन्होंनें सोचा हक श्रीिि की पत्नी की भस्क्त तथा सेवा की तुलना में उनकी भस्क्त तथा सेवा सवथा नगण्य िै। उन्होंनें अपने वस्त्र का आिा भाग उन्हें दे हदया हिसे िािण कि वि उन लोगों ंके सम्मुख आ सकीं।ं

पीपा तथा सीता ने अपने िीवन का िेष भाग िप, कीतथन, ध्यान, िास्त्राध्ययन तथा सािु-सन्तों ंएवं भक्तों ंकी सेवा में व्यतीत हकया।

पीपा तथा सीता िुहचता, भस्क्त औि सेवा की प्रहतमूहतथ िैं। आिुहनक िीिाओं ंतथा िाहनयों ंको उनसे प्रेिणा ग्रिण कि वैसा िी आदिथमय िीवन व्यतीत किना चाहिए िैसा उन्होंनें व्यतीत हकया था !

पीपा, सीता तथा उनके साथ िी उनके गुरु श्री िामानन्द भी महिमा-मस्ण्डत िों ंहिन्होंनें ज्ञानांिन से उन दोनों ंकी आाँखें खोली थीं!ं

निसी मेिता

निसी मेिता गुििात-स्स्थत काहठयावाड़ के िूनागढ़ के एक नागि ब्राह्मण-परिवाि के सदस्य थे। उनका िन्म एक हनिथन परिवाि में हुआ था। बाल्यावस्था से िी उनके हृदय में श्रीकृष्ण के प्रहत अगाि भस्क्त थी। वि अपने भाई के साथ ििते थे। वि सवथदा भगवान् कृष्ण तथा गोपीलीला से सम्बस्न्धत गीत गाते तथा आनन्दाहतिेक में नाचते ििते थे। वि गृिस्थाश्रम के कतथव्यों ंसे हवमुख ििते थे। इसके अहतरिक्त उनमें अथोपाजथन की बुस्द्ध भी निीं ंथी हिसके फल-स्वरूप उनकी भाभी उनका उपिास तथा उनके प्रहत दुव्यथविाि हकया किती थी; हकन्तु निसी अपने िीहवकोपाजथन के सम्बन्ध में कुछ सोचते तक निीं ंथे। उन्हें इस बात का दृढ़ हवश्वास था हक भगवान् उनकी सभी आवश्यकताओं ंकी पूहतथ किते ििेंगे। उनके पूवथ-संस्काि िी उनके इस दृढ़ हवश्वास का किाण थे। वि एक हचन्तामुक्त तथा सवथदा प्रसन्न ििने वाले व्यस्क्त थे। समुद्र-तट पि स्स्थत गोपीनाथ नामक स्थान पि वि तपस्या हकया किते थे। भगवान् हिव की कृपा से उन्होंनें भगवान् कृष्ण के दिथन हकये थे। घि लौट कि उन्होंनें हववाि कि हलया। उनके श्यामलदास नामक पुत्र तथा कुाँविबाई नामक एक पुत्री थी।

निसी मेिता मीिाबाई के समकालीन थे। उनमें सख्य-भाव की प्रिानता थी। वि कृष्ण को इस प्रकाि सम्बोहित किते थे मानो वे एक-दूसिे के प्रहत समानता का व्यविाि किते िों।ं वि एक सिल-हृदय तथा स्पष्टवादी व्यस्क्त थे। वि सवथ भूतों ंमें औि सवथत्र भगवान् कृष्ण का दिथन किते थे। उनमें पिाभस्क्त के भाव थे औि उनकी चेतना ब्रह्माण्डीय थी। उन्होंनें 'ििमाला' िीषथक से एक कहवता की िचना की थी। किा िाता िै हक उनकी पुत्री का हववाि स्वयं श्रीकृष्ण के संिक्षण में अत्यहिक िूमिाम से सम्पन्न हुआ था। निसी मेिता अत्यन्त हनिथन थे; हकन्तु उस हववाि

के अवसि पि कुँविबाई की सास को िो बहुमूल्य उपहाि भेंट हकये गये, उन्हें देख कि लोग आश्चयथ चहकत िि गये।

निसी मेिता के िीवन में अनेक चमत्कािि हुए। उन्होंनें कई एक अवसिों ंपि भगवान् कृष्ण के दिथन हकये। एक बाि वि अपने भाई के साथ कहीं ंिा िि थे। उन्हें बहुत भूख लगी थी; हकन्तु मागथ में उन्हें कहीं ंभोिन नहीं ंहमल सका। विाँ कृष्ण ने एक ग्वालिया बालक के वेि में उन्हें एक कुहटया में ले िा कि उनके सुख सुस्वादु भोिन से भिा पात्र िख हदया। निसी ने अपने रूहढ़ग्रस्त भाई से यि कि कि भोिन किने का आग्रि हकया हक स्वयं कृष्ण भगवान् यि भोिन दे गये िैं; हकन्तु उनके भाई को इस बात पि हवश्वास नहीं ंहुआ। अब उन दोनों ंने अपनी यात्रा पुनः प्रािम्भ की। निसी के भाई अपना पात्र उस कुहटया में िी छोड़ आये थे। वि उस कुहटया की ओि दौड़ पड़े; हकन्तु उस स्थान पि उनका पात्र तो था, पि विाँ न तो वि कुहटया थी न वि ग्वालिया बालक था। यि सब उन कृष्ण की कृपा थी िो अपने इन गीतोक्त िब्दों ंकी मयाथदा के िक्षणाथथ अपने भक्त की सेवा हकया किते िैं :

"अनन्याडश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पयुकपासते।
तेषां डनत्याडभयुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।" (अध्याय : ९/२२)

निसी के भाई को निसी के साथ विाँ भोिन न किने का बहुत पश्चात्ताप हुआ।

एक अन्य अवसि पि निसी अपने हपता का श्राद्ध कि िि थे (श्राद्ध हपतिों ंको प्रहतवषथ हदये िाने वाले हपण्डदान को किते िैं)। उस समय विाँ घी की कमी िो गयी। निसी घी खिीदने बािाि गये। मागथ में उन्हें एक संकीतथन-दल हमल गया। घी की हचन्ता छोड़ कि वि भी उस दल में सस्म्महलत िो कि आनन्दाहतिेक में िरि-भिन गाने तथा नृत्य किने में संलग्न िो गये। श्राद्ध तथा घी के हवषय में उन्हें सािी बातें हवस्मृत िो गयीं।ं इधि उनकी हनधथन पत्नी उत्सुकतापूवथक उनकी प्रतीक्षा कि ििी थी। उसी समय दो चमत्कािि हुए। कृष्ण अपने भक्तों ंपि इसी प्रकाि कृपा हकया किते िैं। पिला चमत्कािि तो यि हुआ हक सूयथ अपने मागथ पि पूणथतः स्स्थि िो गया। हकसी को यि ज्ञात न िो सका हक वास्तव में हकतना समय व्यतीत िो गया। दूसिा चमत्कािि यि हुआ हक निसी का रूप धािण कि स्वयं श्रीकृष्ण निसी की पत्नी को घी दे गये हिसने देि के हलए निसी, िो स्वयं कृष्ण थे, को एक िलकी हझड़की भी दे दी। सभी ब्राह्मणों ंको हवहिवत् भोिन किाया गया औि वे प्रसन्न-हचत्त घि लौटे। इस प्रकाि उस अनुष्ठान का समापन हुआ। इसके पश्चात् निसी की पत्नी उस स्थान के प्रक्षालन तथा वस्तुओं ंको व्यवस्स्थत किने में संलग्न िो गयीं।ं उसी समय िाथ में घृत-पात्र हलये निसी विाँ आ गये औि देि के हलए अपनी पत्नी से क्षमा माँगने लगे।

पत्नी तथा पुत्र की मृत्यु के पश्चात् निसी औि अहिक स्वतन्त्र िो गये। अब उनका समय पूणथतः भिन-पूिन में व्यतीत िोने लगा। अहत-वणाथश्रमी िो कि उन्होंनें स्वयं को िाहतगत प्रथाओं ंतथा िास्त्रीय हविानों ंसे सवथा मुक्त कि हलया। वि मेितिों ंतथा अन्य हनम्न िाहतयों ंके घि िा कि भी कीतथन किने लगे। नागि ब्राह्मणों ंने उन्हें घृणा का पात्र समझ कि िाहत-बहिष्कृत कि हदया। उन्होंनें अपने एक भोि में उन्हें हनमस्न्त्रत भी नहीं ंहकया। एक चमत्कािि इस अवसि पि भी िो गया। विाँ प्रत्येक ब्राह्मण के पाश्वथ में एक िोम, िो हनम्नति िाहत का िोता िै, बैठा हदखायी पड़ने लगा। इस घटना से उन क्रुद्ध ब्राह्मणों ंको उनके समक्ष हवनत िो िाना पड़ा औि अब वे निसी के प्रहत अपनी श्रद्धा व्यक्त किने लगे। उन्होंनें निसी को िाहत में सस्म्महलत कि यि घोहषत कि हदया हक वि एक मिान् भक्त िैं।

इस युग में निसी से मिान् भक्त कोई नहीं ंहुआ। उनकी भस्क्त अप्रहतम कोहट की भस्क्त थी। उन्होंनें संसाि को भस्क्त की सम्यक् हदिा प्रदान की। इसी कािण वि आि भी िमािे मन औि प्राण में बसे हुए िैं तथा इसी कािण एक हनष्कपट वैष्णव का हवविण प्रस्तुत किने वाला उनका प्रेिणाप्रद गीत - "वैष्णव िन तो तेणे कहिये" आि तक सभी भक्तों ंिािा गाया िा ििा िै।

निसी महिमास्ट्ति िों;ं िरि तथा उनका नाम महिमास्ट्ति िंिों

दादू

दादू व्यवसायतः िहनया थे। उनका िन्म अिमदाबाद में लगभग १५४४ ई. में अिौ उनकी मृतुयु लगभग १६०३ ई. में हुई। यि अकबि के िासन-काल की समास्ट्प्त तथा िििाँगिी के िासन काल के प्रािम्भ का काल था। िब दादू की आयु िबिा वषथ की थी, तब उन्हें अिमेि-स्ट्स्थत सांभि (Sambhur) िभे हदया गया। इसके पिात् वि कल्याणपुि चले गये। बि वि सैंतीस वषथ के हुए, तब वि निैना चले गये। निैना सांभि से आठ मील तथा ियपुि से बीस मील दिू िै। विााँ आकािवाणी के माध्यम से उन्हें स्वगथ से चेतावनी देते हुए किा गया हक वि अब िाहमथक िीवन व्यतीत किें। अतः वि निैना से दि मील दि स्ट्स्थत िििोना (Vaherana) पवथत पि िा कि एकान्तवास किने लगे। कुछ हदनों ंके पिात् वि अन्तिाथन िो गये अिौ विााँ उनका कोई भी हचह्न प्राप्त निीं ंिो सका। उनके अनुयाहययों ंका हवश्वास िै हक वि ईश्वि में अन्तलीन िो गये थे।

दादूपन्ी ललाट पि हकसी प्रकाि का कोई हवहिष्ट हतलक निीं ंलगाते। वे हकसी प्रकाि की कोई माला भी निीं ं पिनते। वे अपने पास एक सुहमिनी िखते अिौ एक हवहिष्ट प्रकाि की सफेद टोपी पिनते िैं। इस टोपी में चाि कोने अिौ इसके पृष्ठभाग में लटकता हुआ एक पल्ला िोता िै।

दादूपस्ट्न्यों ंके हनम्नांहकत तीन संवगथ िैं :

(१) **डविि-** ये मुस्ट्ण्डतििी िोते िैं। इनके पास केवल एक वस्त् तथा एक िल-पात्र िोता िै।

(२) **नागा-**ये कुिल सैहनक तथा िस्त्िािि िोते िैं।

(३) **डवस्तरधारी-** ये सामान्य गृिस्थ िीवन व्यतीत किते िैं।

मािवाड़ तथा अिमेि में दादूपस्ट्न्यों ंका बाहुल्य िै। निैना इनका मुख्य उपासना-स्थल िै। यिााँ इनके िमथग्रन्ों ंको सुिहक्षत िखा िाता िै अिौ उनका पूिन िोता िै। फिविी मास में यिााँ एक मेला भी लगता िै। िििोना के हिस स्थान से दादू अन्तिाथन हुए थे, विााँ एक छोटा-सा स्मािक बना हदया गया िै। दादूपस्ट्न्यों ंके हसद्धान्त कई हिन्दी ग्रन्ों ंमें अन्तहवथष्ट िैं। इन पुस्तकों ंमें कबीि की िचनाओं ंके अनेक उद्धिण सहिहवष्ट िैं। दादूपस्ट्न्यों ंके पहवत्र ग्रन्ों ं तथा कबीि की िचनाओं ंके सामान्य स्वरूप में कोई अन्ति निीं ंिै। दादूपन्ी कबीि के अनुयाहययों ंसे हमत्रवत् व्यविाि किते िैं।

दादू लोदीिाम के पुत्र थे। गिीबदास तथा हमस्कीनदास उनके हिष् थे। दादू का देिान्त उनसठ वषथ की आयु में हुआ। व्यवसायतः वि िुलािा थे। उनकी आस्था कबीि के वैष्णववाद के प्रहत थी। िामानन्द की हिष्-श्रेणी में उनका छठा स्थान िै।

कबीि, कमाल, िमाल, हवमल अिौ बुिन उनके पूवथवती थे। बुिन उनके गुरु थे।

दादू की वाणी तथा उनके गीत पुस्तक-रूप में संग्रहित िैं। इस पुस्तक में पााँच सिस्र िचनाएाँ िैं। वाहणयों ंमें नैहतक प्रवचन िैं अिौ गीत स्तोत्र या पहवत्र भिन िैं। दादू के गीत उल्लास तथा हदव्य प्रेम के हवस्फोट िैं। उन्होंनें हवश्व-प्रेम तथा िास्ट्न्त का उपदेि हदया।

दादू की भाषा सिल तथा ििैली सवथ-सुलभ िै। उनके िब्द संगीत से ओत-प्रोत िैं। यि संगीत मानव-मन की गिनता तक का स्पिथ कि लेता िै।

दादू ने हदव्य िीवन की एकता का उद्घोष हकया। उनका दिथन तत्त्वतः व्याविारिक था। हसद्धान्तों ंतथा आध्यास्ट्कि वाद-हववाद से वि दूि िी िििते थे।

अक्खा

अक्खा गिुित के एक प्रख्यात् सन्त थे। व्यवसायतः वि स्वणथकाि थे। वि वािाणसी गये। वािाँ स्वामी ब्रह्मानन्द िाहत्र में कुछ लोगों ंको वेदान्त की हिक्षा हदया किते थे। वेदान्त की इस पाठिाला में अक्खा का प्रवेि सम्भव न िो सका; हकन्तु वि हनिाि निीं ंहुए। वि िाहत्र में स्वामी ब्रह्मानन्द के वास-स्थान के पीछे एक क्रूिदान में हछप कि उनके प्रवचन सुनने लगे। उनका यि अहभयान एक वषथ तक चलता ििा। एक हदन िब स्वामी िी का एक हवद्याथी उनके एक प्रश्न का उत्ति न दे सका, तो दीवाल के पीछे से अक्खा ने उच्च स्वि में उसका हनभाथन्त उत्ति दे हदया। स्वामी िी इसे सुन कि उलझन में पि़ गये। उन्हें यि िानने की इच्छा हुई हक हविुद्ध उत्ति देने वाला यि व्यस्ट्क्त कौन िै। अक्खा ने विीं ंसे किा- "मैं अक्खा हाँ औि गिुित से यिाँ आया हाँ।" स्वामी िी ने किा- "तुम भीति आओ, अक्खा।" अक्खा ने भीति िा कि उनको साष्टांग प्रणाम हकया।

स्वामी िी ने पूछा- "अक्खा, तुम कौन िो औि इस समय तुम यिाँ कैसे आ गये?" अक्खा ने किा- "स्वामी िी, मैं एक स्वणथकाि िँ; हकन्तु मुझमें मुमुक्षुत्व की प्रबल भावना िै। मैं एक वषथ से इस क्रूिदान में हछप कि प्रहतहदन ध्यानपूवथक आपका प्रवचन सुनता आ ििा हाँ। कृपया मुझे दीक्षा दीहिए।" स्वामी िी अत्यन्त प्रसि हुए। उन्होंनें उन्हें सुयोग्य अहिकािी समझ कि कैवल्य के ििस्यों ंमें दीहक्षत कि हलया। इस प्रकाि अक्खा पूणथ ज्ञानी िो गये। उनके ज्ञान-सम्बन्धी गीतों ंको संग्रहित कि उनको पुस्तक रूप में प्रकाहित कि हदया गया िै औि मुम्बई हवश्वहवद्यालय ने इस पुस्तक को एम. ए. कक्षा की पाठ्य-पुस्तक के रूप में स्वीकृत कि हलया िै।

हतब्बत के हमलिोपा

हमलिोपा (Milarepa) हतब्बत के सुप्रहसद्ध योगी थे।

यि बाल्यावस्था से िी प्रापंहचक सत्ता के समस्त प्रारूपों ंके नश्वि तथा अहनत्य स्वभाव औि समस्त प्राहणयों ंको आप्लाहवत हकये ििने वाले िागहतक क्लेिों के मिाणथव के हनहिताथथ से पूणथतः परिहचत िो चुके थे। उनके हलए यि संसाि एक हविाल अहग्नकुण्ड था हिसमें प्राहणमात्र का दिन हकया िा ििा िै। उनका संवेदनिील हृदय इस दुःख से इतना अहभभूत िो गया था हक वि ब्रह्मा तथा इन्द्र िािा भोग्य स्वगथलोकों ंके आनन्द को सांसारिक ऐश्वयथ से प्राप्त आनन्द से भी तुच्छ समझते थे औि इनके प्रहत उनके मन में ईर्ष्ाथ के भाव भी न थे।

दूसिी औि वि िास्त्रोक्त ििहचता तथा हनवाथण अथाथत् आत्यस्ट्न्तक मुस्ट्क्त के हदव्य सौन्दयथ पि इतने मुग्ध थे हक वि अपने इस अभीस्ट्प्सत पदाथथ की सम्प्रास्ट्प्त के हलए प्राणोत्सगथ के हलए भी उद्यत िििते थे। उनमें श्रद्धा, कुिाग्र बुस्ट्द्ध तथा सवथभूतों ंके प्रहत असीम प्रेम तथा सिानुभूहत थी हिनसे उनके आध्यास्ट्कि अहभयान की सफलता सुहनहित थी।

मन के वायवीय तथा आध्यास्ट्कि स्वभाव पि हनयन्त्रण के अलौहकक ज्ञान की उपलस्ट्ब्ध के किाण उन्हें आकाि गमन की हसस्ट्द्ध प्राप्त िो चुकी िी। वि आकाि में अबाि हवचिण तथा ियन में समथथ थे। इसी प्रकाि वि अपने िीिि से अहग्न-सुफुहलंगों ंतथा िल-स्रोतों ंकी सृहष्ट कि सकते थे। इतना िी निीं,ं वि अपने िीिि को हकसी भी पदाथथ में परिणत किने में समथथ थे। इससे नास्ट्स्तकों ंमें ईश्वि के प्रहत हवश्वास की भावना िाग्रत िोती थी औि इसके फल-स्वरूप वि िमथ-मागथ का अनुसिण किने लगते थे।

हमलिोपा चतुहवथि-ध्यान में हनष्णात थे। इसके परिणाम-स्वरूप वि अपने हदव्य िीिि को एक िी साथ अहिष्ठातृ योगी के रूप में उन चौबीस िामों ंपि प्रक्षेहपत कि सकते थे ििााँ देवगण आध्यास्ट्कि सम्पकथ के हलए एकत्र िोते थे।

हमलिोपा देवताओं ंतथा मिाभूतों ंपि प्रभुत्व-स्थापन में समथथ थे िो उनके आदेि का अहवलम्ब पालन किते थे। अलौहकक हसस्ट्द्धयों ंमें वि पूणथतः दक्ष थे। बुद्धों ंके अगहणत स्वगथलोकों ंतथा आकाि में संक्रमण में वि समथथ थे। अपनी अप्रहतम भस्ट्क्त के किाण उन्हें विााँ के अहिपहत बुद्धों ंतथा बोहिसत्त्वों ंसे िमथ-हवषयक परिसंवाद का सुअवसि प्राप्त हुआ किता था औि इस प्रकाि विााँ उनके संक्रमण तथा अहिवास से स्वगथलोक भी पहवत्र िो िाया किते थे।

गोिखनाथ

आलन्दी के ज्ञानदेव की भााँहत गोिखनाथ भी एक मिान् योगी थे। गोदाविी-तट पि स्ट्स्थत चिहगरि ग्राम में िसूि नामक एक ब्राह्मण िािते थे। उनकी पत्नी सिस्वती एक िमथपिायण तथा सद्‌गुण-सम्पन्न महिला थीं।ं हकन्तु हनस्सन्तान िोने के किाण ब्राह्मण-दम्पहत बहुत दुःखी ििते थे। एक बाि योगी मत्स्येन्द्रनाथ हभक्षा के हलए इनके घि आये। उन्हें देख कि उन िमथ-पिायणा नािी को अपाि िषथ हुआ। उन्होंनें उनकी श्रद्धा-भस्ट्क्त-पूवथक सेवा की। स्वयं को हनस्सन्तान बताते हुए उनके समक्ष उन्होंनें अपने इस दुभाथग्य का भी उल्लेख कि हदया। योगी ने एक चुटकी पहवत्र हवभूहत देते िुए उन्हें आिीवाथद हदया। कुछ हदनों ंके पिात् सिस्वती देवी ने एक पुत्र को िन्म हदया। पुत्र–िन्म के बािि वषों के पिात् मत्स्येन्द्रनाथ उनके घि आये औि समुहचत हिक्षा-दीक्षा के हलए उस बालक को अपने साथ लेते गये। उन्होंनें उसे हिष्य-रूप में ग्रिण कि उसे तप के हलए बदिीनाथ भेि हदया ििााँ देवताओं ंतथा अप्सिाओं ं ने उसे पथ-भ्रष्ट किने के हलए अनेक प्रयत्न हकये; हकन्तु वि समस्त प्रलोभनों ंपि हविय प्राप्त किते हुए अपने अहभयान में दृढ़तापूवथक संलग्न ििा हिसके फल-स्वरूप उसे आियथिनक हसस्ट्द्धयााँ प्राप्त हुईं। मत्स्येन्द्रनाथ ने भी उसे अपनी हवद्या तथा िस्ट्क्त प्रदान कि दी। यिी बालक कालान्ति में गोिखनाथ नाम से हवख्यात हुआ।

गोिखनाथ केवल वायु-पान कि बािि वषथ तक तप किते ििे। उन्हें हवस्मयकािी योग–स्ट्क्त प्राप्त हुई। िब मत्स्येन्द्रनाथ ने िनुमान् के आदेिानुसाि एक नािी-हविेष की सन्तानोत्पहत्त के हलए अपनी पिकाया-प्रवेि की हसस्ट्द्ध ििा एक ििा के मृत िीिि में प्रवेि हकया, तब गोिखनाथ ने अपनी कामरूप नामक योग–स्ट्क्त का प्रयोग कि एक नािी का रूप ग्रिण कि हलया। एक अन्य अवसि पि उन्होंनें हमिी से एक स्ट्खलौना बनाया औि उसे सिीव कि एक ग्राम-हविेष के बालकों ंको खेलने के हलए दे हदया। एक बाि उन्होंनें पवथत के एक भाग को स्वणथ बना कि उसे पुनः उसके पूवथ-रूप में परिणत कि हदया। उन्होंनें एक हिला पि मूत्र-त्याग हकया हिसके परिणाम-स्वरूप वि स्वणथ बन गयी। एक बाि गोदाविी-तट पि कुम्भ-मेले के अवसि पि अपनी योग–स्ट्क्त से उन्होंनें विााँ एकत्र लोगों ंको उनका इस्ट्च्छत एवं पुहष्टकि भोिन किाया। उसी मेले में उन्होंनें अपनी अहणमा-हसस्ट्द्ध ििा मिक का रूप ग्रिण कि हलया। एक अन्य अवसि पि उन्होंनें अपनी योग–स्ट्क्त ििा स्वयं को िला कि भस्म कि हदया

ओौ इसके पिात् उन्होंनें अपना पूवथ-रूप ग्रिण कि हलया। वि आकिा गमन तथा उसमें हवचिण में समथथ थे। उनकी हसस्ट्द्धयों ◌ंके बल पि उनसे अनेक चमत्किा हुए। िाा भतृथिरि उनके हिर्ष् थे।

सन्त िरिदास

हकसी हनष्कपट सन्त का िीवन वसुतुतः िमाथनुमोहदत हवहि-हनषेि का व्याविारिक प्रदिथन िै। यि आध्यास्ट्कि िीविन में समूपृक्त यथाथथ का िी वन्त दृष्टान्त िै । उसका प्रत्येक हक्रया-कलाप िा स्तों ◌ं के आदिे-उपदिे को प्रामाहणक हसद्ध कि देता िै। ऐसे लोग मिान् सत्यों ◌ंको महिमास्ट्ति किते िैं हिससे अन्य लोग सोत्साि उनके आकांक्षी बन सकें।

िरिदास का िीवन उपयुथक्त तर्थ् का एक अप्रहतम एवं अनुकिणीय दृष्टान्त िै। िरिदास नाम-हनष्ठा के मूतथ रूप थे। हदव्य नाम के प्रहत उनकी ओियथपद आस्था तथा अहवचल हनष्ठा को एक चमत्किा िी कि िा सकता िै। हिन्फ्दू–मथ से सम्बस्ट्न्धत पहवत्र ग्रन्थों ◌ंतथा िनशुरुहतयों ◌ंमें भगवान् के हदव्य नाम की िस्ट्क्त तथा क्षमता के हवषय में िो कुछ भी हनियपूवथक कि िा चुका िै, उसकी स्पष्ट अहभव्यस्ट्क्त िरिदास के कृतकृत्य िीवन में परिलहक्षत िोती िै। वसुतुतः भक्त-िहिोमहण िरिदास ने यि हसद्ध कि हदया हक मनुर्ष् का िीवन केवल अि पि अवलस्ट्म्बत निीं ◌ंिै। भगवान् का नाम स्मिण भी उसके िीवन का पाथेय बन सकता िै।

िमिा िरिदास का िन्म बंगाल के िैसिो िनपद के बिन नामक ग्राम में हुआ था। िन्मना वि मुसलमान थे। उनकी बाल्यावस्था में िी उनके माता-हपता का दिेान्त िो चुका था। अनाथ िरिदास भगवान् के नाम का गुण-गान किते हुए नगि-भि में हवचिण हकया किते थे। उनके पास िल-पात्र (कमण्डलु) तक निीं ◌ंथा। उनके हदन िरि-नाम के संकीतथन में िी व्यतीत िोते थे। वि चौबीस घण्टे में िरि-नाम का तीन लाख िप कि लेते थे ओौ ओियथ की बात तो यि िै हक उनका िप उपांशु नि िो कि सस्वि हुआ किता था। हवहवक्तसेवी, वनवासी तथा एक हदन में तीन लाख िरि-नाम की सस्वि तथा सुिमिु आवृहत्त किने वाले िरिदास से लोग ििीिि–ी परिहचत िोने लगे। लोग दिू-दिू से उनके दिथन के हलए आने लगे; हकनुतु कुछ दिुथनों ◌ंके हलए उनकी प्रहसस्ट्द्ध असिनीय िो गयी। वे अकािण िी उनसे ईर्ष्ाथ किने लगे।

इन दिुथनों ◌ंमें हनकटवती कसे्बे का भूहमपहत िामचि खान भी था िो िरिदास के नाम को कलंहकत किना चािता था। उसने अनेक प्रलोभनों ◌ंके माध्यम से उन सन्त को स्खहलत किना चािा, हकनुतु उसकी एक न चली; क्योंहक स्वयं भगवान् उनके िक्षक थे। भगवान् के भक्तों ◌ंका अहित किना हकसी के हलए भी सम्भव निीं ◌ंिै। िब िामचि खान ने देखा हक उसके प्रलोभनों ◌ंसे िरिदास का स्खलन असम्भव िै, तब उसने उनके भिन में अविोि उपस्ट्स्थत किने के हलए एक वेश्या को हनयुक्त हकया। वि इस तर्थ् से अपरिहचत था हक िो हनत्य-प्रहत िरि-नाम का संकीतथन हकया किता िै, उसके हलए िागहतक सौन्दयथ हनतान्त तुच्छ तथा घृहणत िै।

उस िनशून्य वन में भी वि वेश्या िरिदास को हवचहलत किने में समथथ न िो सकी। उनको प्रलोहभत किने के उसके सिो प्रयत्न व्यथथ हसद्ध हुए। वि उनको ईश्वि की उपासना तथा उसके प्रहत उनकी अहवचल श्रद्धा से हवचहलत निीं ◌ंकि पायी। उनमें त्याग तथा अनासस्ट्क्त के िो भाव थे, वे अद्भुत थे ओौ उनका इस्ट्न्द्रय-हनग्रि सुतुत्य था। काहमनी को आध्यास्ट्कि व्यस्ट्क्त के मागथ का प्रबलतम अविोि कि िाता िै; हकनुतु िरिदास के हलए उनके प्रेम-पात्र ईश्वि के अहतरिक्त अन्य कोई भी वसुतु अभीस्ट्प्सत न थी। वि पूवथवत् पहवत्र िरि-नाम-कीतथन में संलग्न िि :

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे करष्ण हरे करष्ण करष्ण करष्ण हरे हरे ।।

चाि हदन व्यतीत िो गये। वि नििी विााँ प्रहतहदन आती ििी; हकन्तु वि अपनी कायथ-हसस्द्ध में असफल िी ििी। वि
उनसे िब कभी कुछ पूछती, वि उससे कि देते-कृपया कुछ दिे प्रहतक्षा कीहिए। मुझे अपने िप की हनिाथरित संख्या पूिी किनी िै। इसके पिात् िी मैं आपसे कोई बात कि सकूाँगा। वि विााँ प्रहतहदन प्रातःकाल आ िाती औि मध्याह्न तक बैठी ििती। इस बीच ििरिदास नाम-संकीतथन में संलग्न ििते। वि अिम नििी विााँ प्रहतहदन आती औि घण्टों बैठ कि उनके साथ िरि-नाम का िप किती ििती। वि विााँ िाम को भी आती औि आिी िात के बाद तक नामिप में संलग्न ििती। ििरिदास का नामिप भी हबना हकसी अविोि के चलता ििता।
चाि हदनों के पहवत्र िरि-नाम के गुण-गान तथा सत्संग के कािण वि नििी पाप से पुण्य की औि उन्मुख िो गयी। अब उसके मन में पिात्ताप की भावना िाग्रत िो उठी औि वि अनुतप्त भाव से उनके चिणों पि हगि कि उनसे क्षमा-याचना किने लगी।

उसने इस हनष्कपट भाव से अत्यहिक प्रभाहवत िो कि ििरिदास ने उसे सान्त्वना प्रदान की। इसके पिात् उन्होंनें उससे आश्वासन-सूचक िब्दों में बात किते हुए उसे हदव्य नाम की दीक्षा प्रदान कि दी। उन्होंनें उसे ििरिदासी नाम हदया िो आस-पास के लोगों में भी प्रचहलत िो गया।

अपनी सािी सम्पहत्त हनिथनों में हवतरित कि ििरिदासी ििरिदास के ििािाण कुटिी में ििने लगी। ििरिदास स्वयं िास्न्तपुि चले गये। वे विााँ के एक हनकटवती ग्राम फुहलया में एक कुहटया बना कि ििने लगे। विााँ उन्होंनें स्वयं को िरि-नाम के गुण-गान में पूणथतः संलग्न कि हलया। वस्तुतः िरि का भक्त िििााँ भी िाता िै, अपनी झोली में आनन्द-कुसुम हलये िाता िै औि स्वयं को भस्क्त के अथाि सागि में िुबाये ििता िै; अतः वि दुःख को निीं प्राप्त िोता।

िब गोिाई नामक एक स्थानीय िािी उनकी प्रहतष्ठा तथा उनके प्रभाव से अवगत हुआ, तब उनके प्रहत उसके मन में ईर्ष्ाथ की अहग्न प्रज्वहलत िो उठी। बहुत-कुछ सोचने-हवचािने के पिात् उसने ििरिदास के हवरुद्ध िािकीय न्यायालय में एक आिोप-पत्र प्रस्तुत कि उन्हें हगिफ्ताि किा हलया। मुकदमे की सुनवायी के पिात् ििरिदास को यि दण्ड हदया गया हक उन्हें फूहलया की गहलयों में सावथिहनक स्थान पि कोड़े लगाये िायें। न्यायालय िािा हनयुक्त कोड़े लगाने वाले उन्हें बन्दी बना कि उन पि कोड़े बिसाते िुए बािाि में ले गये। इस हृदयिीन कािाघात के कािण ििरिदास की पीठ से िक्त की ििा फूट हनकली; हकन्तु आियथ की बात तो यि िै हक उस बन्दी सन्त के िोठों से उसके हप्रयपात्र का नामोच्चािण उस समय भी अनवित रूप से िोता ििा औि इस नामोच्चािण के आनन्द के अहतिेक के कािण उन्हें कािाघात के ददथ की अनुभूहत तक निीं हुई।

इस प्रकाि िक्तस्नात ििरिदास को िािकीय भृत्य उस समय तक घसीटते ििे, िब तक वि इस िािाज्ञा की इस हवभीहषका के कािण स्नायु के हकनािे हगि कि संज्ञािून्य निीं िो गये। उनको मृत िान कि भृत्यगण उन्हें गोिाई के पास ले गये हिसने उन्हें नदी में फेंक देने का आदेि हदया; क्योंहक वि उसके मतानुसाि कब्रगाि में दफनाये िाने के योग्य न थे।

पहवत्र नदी के िीतल िल के प्रभाव से संज्ञािून्य भक्त में चेतना का पुनः संचाि हुआ औि उसकी वेगवती िािा उनको बिा कि फुहलया के नदी-तट की सीहढ़यों तक पहुाँचा गयी। इस घटना का प्रचाि सवथत्र िो गया औि उनके दिथन के हलए िन-समूि उमड़ पड़ा। यि बात गोिाई के कानों तक पहुाँच गयी औि उसे अपने कुकृत्य के हलए घोि पिात्ताप िोने लगा। वि हनष्कलुष हृदय से घटना-स्थल पि िीघ्राहतिीघ्र पहुाँच गया। विााँ उनके चिणों पि हगि कि वि उनसे क्षमा-याचना किने लगा।

वास्तव में हनष्कपट भक्तों ंकी महिमा यिी ि हक उनके सत्संग से केवल उन लोगों ंका हृदय-परिवतथन निीं ीोता िो उन्हें अपने प्रेम या अपनी श्रद्धा का पात्र समझते िैं; अहपतु इससे उनके ितुरुओं ंका भी हृदय-परिवतथन िी िोता िै। हिनके हलए भक्तों ंकी क्षहत अहभप्रेत िोती िै, उनके स्वभाव में भी उन भक्तों ंके साहन्नध्य के किाण परिवतथन तथा
रूपान्तिण िोने लगता िै। भक्त िरि-नाम की मुस्ट्क्त-प्रदाहयनी िस्ट्क्त का मूतथ रूप िोता िै। भक्त तुकािाम का
उत्पीिक भी अन्त में उनका पिम आज्ञाकािी भक्त बन गया था। इन बातों ंसे यि हनिपवाद रूप से हसद्ध िो िाता
[illegible] सम्पूणथ हृदय से हदव्य नाम की िणि में चला िाता िै, तब क्या संसाि की कोई भी िस्ट्क्त उसका अहित कि सकती िै? वसुतुतः प्रकृहत एक अिेय एवं अनाक्रान्त िस्ट्क्त के रूप में हविोिी िस्ट्क्तयों ंसे भक्त को सतत सुिक्षा प्रदान किती ििती िै। वि उसे एक िस्यमयी आन्तरिक िस्ट्क्त प्रदान कि देती िै हिससे वि घोितम यातना को भी मुस्काते हुए सिन कि लेता िै। वि िस्ट्क्त दुःख को िास्ट्न्त तथा आनन्द, घृणा को प्रेम औि पाप को पुण्य में रूपान्तरित कि देती िै।

अब सन्त िरिदास फुहलया के हनकट एक गुफा में ििने लगे। हिस प्रकाि पूहणथमा की दीस्ट्प्त से िाहत्र ज्योहतमथयी िो उठती िै, उसी प्रकाि विााँ भी उनके सन्त-सुलभ व्यस्ट्क्तत्व से हदग्-हदगन्त उद्भाहसत िो उठा। उनके दिथन के हलए उनके आश्रम में प्रहतहदन हविाल िन-समूि उमिने लगा; हकन्तु विााँ पहुाँचने पि प्रत्येक आगन्तुक तत्काल िी एक तीव्र अनपेहक्षत संवेदन से आक्रान्त िो उठता था। उनके दिथनाहथथयों ंके हलए यि एक कष्टप्रद पिीक्षण का हवषय बन गया। खोिबीन के पिात् अन्त में यि ज्ञात हुआ हक गुफा में एक हविाल सपथ की उपस्ट्स्थहत के किाण िी दिथनाहथथयों ंको उस संवेदन-िन्य यन्त्रणा से ग्रस्त िोना पड़ता था। उसके िािि से हनकलने वाले हवषाक्त वाष्प से विााँ का वाताविण अत्यहिक उष्ण िो उठता था। विााँ एकत्र सभी भक्तों ंने एकमत िो कि सन्त से उस स्थान के परित्याग का आग्रि हकया; हकन्तु िरिदास की ऐसी कोई इच्छा न थी, क्योंहक वि सपथ उनके हलए कष्टदायक निीं ंथा। तब भक्तों ंने स्वयं अपने हलए उनसे ऐसा किने को किा।

इसके पिात् िरिदास इस हनष्कषथ पि पहुाँचे हक इस हवपहत्त से मुस्ट्क्त के हलए भगवान् के सवथिस्ट्क्तमान् नाम की िणि में िाना हितकि िोगा।

इस हनणथय के अनुसाि उन्होंनें एक संकीतथन-दल की व्यवस्था की। इस दल ने कीतथन का प्राि्भ उत्कट उत्साि तथा औपूणथ भाव से हकया। िब इस िोमांचक कीतथन के हविय-घोष से गुफा गूंि उठी, तब विााँ एक हविाल तथा हवस्मय-िनक सपथ की फुत्काि सुनायी पिने लगी औि लोग उस सपथ को एकटक देखने लगे: हकन्तु वि िेंगता हुआ उस स्थान से सवथदा के हलए चला गया। इस प्रकाि उस हदव्य कीतथन की िस्ट्क्त के माध्यम से भक्तों ंको उस हदन से उस कष्ट से मुस्ट्क्त प्राप्त िो गयी।

भगवान् के भक्तों ंका ऐसा िी प्रभाव िोता िै। इनसे नीलग्रीव भगवान् हिव भी भयभीत ििते िैं। सन्तों ंकी नाम-सािना की यिी महिमा िै। इस हवषय में िमें श्रीमद्भागवत में वहणथत देवों ंके इस मत से अवगत िोना चाहिए:

"िो भगवान् के िमुि नाम का गुणगान किता िै, िो उसके भक्तों ंको हप्रय िै, िो स्वगथलोक के सभी अहिपहतयों ंअथाथत् ब्राह्मणों, ंआचायों तथा अन्य लोगों ंकी सेवा किता िै, वि हनहित रूप से िमािे हलए पूिनीय िै। तात्पयथ यि िै हक िम देवता तो हत्रलोक के हलए पूिनीय िैं; हकन्तु ऐसा भक्त िम लोगों ंके हलए भी पूिन-अिथन का पात्र िै।"

आहदपुिाण में श्रीकृष्ण अिुथन के समक्ष इसका प्रहतपादन किते हुए किते िैं :

"िो लोग केवल मेिे भक्त िैं, वे मेिे सच्चे भक्त निीं ंिैं। मेिे सवाथहिक सच्चे भक्त तो वे िैं िो मेिे भक्तों ंके भक्त िैं।"

इस तर्थ् पि हवचाि कीहिए। िरिदास को हकसी एक िनून्य स्थान पि िि कि गिन सिना में संलग्न िना चाहिए था; हकन्तु आिुहनक कृहत्रम वेदास्ट्न्तयों ंके हवपिीत वि प्राहणमात्र के दु:ख से हचस्ट्न्तत िते थे। वि भगवान् के यथाथथ भक्त थे: क्योंहक वि भगवान् के भक्तों ंके भक्त थे।

अब सभी लोगों ंके प्रहत उनकी समपथण-भावना के एक अन्य दृष्टान्त पि हवचाि हकया िाये। एक बाि वि भगवान के नाम का सस्वि गुण-गान कि िि थे। नाम का सस्वि गुणगान मौन गुण-गान से हनम्नति माना िाता ै: हकन्तु िरिदास को इसकी हचन्ता निीं ंथी। वि कि कते थे हक मौन गुण-गान केवल उनके हलए हितकि तथा प्रभावप्रद हसद्ध िोगा, िब हक सस्वि गुण-गान की गूंि सभी प्राहणयों ंके कानों ंमें िोती ै औि उससे उनके अहतरिक्त सिस्रों ंव्यस्ट्क्तयों ंके उत्थान तथा मोक्ष का मागथ प्रिस्त िोता ै। िरिदास की भस्ट्क्त-सािना की प्रत्ेयेक प्रहक्रया के मूल में यिी हदव्य तथा मानवतावादी अहभपे्रिक तत्त्व हनहित था।

इस प्रकाि भगवान् के हदव्य नाम की महिमा को प्रहतहष्ठत कि सन्त िरिदास उनके उत्कट पे्रम के अथाि सागि में पूणथतः हनमस्ट्ज्जत िो गये। िब उन्होंनें सुना हक गौिांग नवद्वीप में अवतरित िो कि समस्त भक्तों ंके हृदय पि भस्ट्क्त-सुिा का वषथण कि िि ैं, तब उनमें उनके सान्निध्य की इच्छा िाग्रत िो उठी। आनन्दाहतिेक में नाचते तथा भगवान् का नाम-संकीतथन किते हुए उन्होंनें स्वयं को भगवान् के चिण-कमलों ंपि सवथतोभावेन समपथण कि हदया। उन्हें हदन–ात तथा काल की गहत का भान तक निीं ंििा। सिस्र-सिस्र िहव–हि की भाँहत उनकी उत्कट भस्ट्क्त की ज्योहत ने यथाथथ तत्त्व की उपलस्ट्ब्ध का एक महिमामय दृष्टान्त प्रसुतुत हकया हिसे िम संस्काहविीन िोने के काइण उपेहक्षत समझ िि ैं। ैसा हक आि िम हनिपवाद रूप से देख िि ैं, िरिदास के िीवन की प्रत्ेयेक घटना मिें केवल ईश्वि-साक्षात्काि के परिमण्डल की औि निीं ंउन्मुख किती; अहपतु वि िमािो मागथ पि िमें अपना सािचयथ प्रदान कि िमें पे्रम तथा पहवत्रता के प्रकाि की औि अग्रसिण की पे्रिणा प्रदान किती ै, िमािो मागथ के अविोिों ंको नष्ट किती ै औि मािहक पािों ंसे िमािी िक्षा किती ै।

हिसकी हिह्वा पि सवथदा भगवान् का पहवत्र नाम हवद्यमान ििता ै, भले िी वि अकुलीनों ंमें भी अकुलीन िो, हकसी भी उच्चकुलोत्पि व्यस्ट्क्त से पहवत्र तथा श्ेरेष्ठ ै। िो उनके महिमामय नाम का संकीतथन अनवित रूप में हकया किता ै. उसे समस्त तपो, पावन सकीतथनों,ं यज्ञों,ं ध्यान की हवहवि हविाओं ंतथा सत्कमों के फल की सम्प्रास्ट्प्त तत्क्षण िो िाती ै।

मुसलमान माता-हपता की सन्तान िोते िुए भी िरिदास वैष्णवों ंमें एक ित्न की भाँहत ज्योहतमथय थे। वि इस पहवत्र भूहम के िरि-भक्तों ंकी आकाि-गंगा के एक दीस्ट्प्तमान नक्षत्र थे। मनुर्ष् का मूल्य हनिाथिण केवल िन्म से िी निीं,ं उसके कमथ से भी िोता ै। िब कोई व्यस्ट्क्त भगवान् के नाम का आश्रय ग्रिण कि लेता ै, तब उसकी दृहष्ट में िेष वसुतुएँ मिस्त्विीन िो िाती ैं। यज्ञ, िाहमथक अनुष्ठान, कमथ तथा ध्यान - इन सबका लत महिमामय भगवान् को प्रसि किना ै, िब हक भगवान् का नाम स्वा भगवान् को उनके प्रत्यक्ष अवतिण के हलए हववि कि देता ै। भगवान् के नाम-स्मिण तथा भगवद्-दिथन में कोई भेद निीं ंै!

भगवान् के हदव्य चिणों ंके प्रहत आस्थावान् भक्त महिमा-मस्ट्ण्डत ैं। िमें उनका आिीवाथद प्राप्त िोता िि हिससे िम उनके मागथ तथा गन्तव्यः परिहचत िो सकें !

दहक्षण भिात के सन्त

हतरुवलु्लुवि

दो ि़ििा वषथ पूवथ चेिई (मिास) के मैलापुि (Mylapore) में वलु्लुवि नामक एक िन्मिात हसद्ध तथा कहव िोते थे। स्थानीय लोगों में उनका हतरुवलु्लुवि (Thiruvalluvar) नाम अहिक प्रचहलत था हिसका अथथ िोता िै वलु्लुवा िाहत का भक्त। वलु्लुवा दहलत िोते िैं। उनका व्यवसाय नगिों बिा कि लोगों को िािाज्ञा से अवगत किाना था। एक हनशु्रुहत के अनुसाि हतरुवलु्लुवि भगवान् नामक एक ब्राह्मण तथा आहि (Adi) नामक एक दहलत स्त्री की सन्तान थे। ये दोनों पहत-पत्नी थे।

हतरुवलु्लुवि का िन्म पाण्ड्यों की िाििानी मदुिै में हुआ था। उन्हें ब्रह्मा का अवताि माना िाता िै। उनकी पहवत्र-हृदय पत्नी वासुकी एक पहत-समहपथता स्त्री थीं। वि एक आदिथ नािी थीं औि अपने पहत के आदेि का पालन किती थीं। हतरुवलु्लुवि ने लोगों के समक्ष यि दृष्टान्त प्रस्तुत किा हक मनुष्य गृिस्थाश्रम में िि कि भी हवद्वत्ता तथा पहवत्रता से पूणथ हदव्य िीवन व्यतीत कि सकता िै। उनके समस्त ज्ञानविथक प्रवचनों तथा उपदेिों को हतरुकु्किल (Thirukkural) नामक पुस्तक में संग्रिीत हकया िा चुका िै। उनमें से कुछ हनम्नांहकत िैं ::

> "हिस प्रकाि सभी अक्षिों का प्रािम्भ 'अ' से िोता िै, उसी प्रकाि सृहष्ट का प्रािम्भ ईश्वि से िोता िै।"

***

> "पिले िास्त्रों का आद्योपान्त अध्ययन किो औि इसके पिात् उनके आदेिानुसाि आचिण किो।"

***

> "अनीचा का फूल सूंघते िी मुिझा िाता िै। हकन्तु आहतथेय की लेिमात्र उपेक्षा से भी अहतहथ हवचहलत िो उठता िै।"

***

"मौत है कब्र में जा सो रहना,
डजन्दगी सुबह की अँगडाई है।"

इन पदों की संख्या १३३० िै हिनमें वेदों, उपहनषदों तथा षड्दिथनों का साि-तत्त्व हनहित िै।

हतरुकु्किल को सावथिनीन बाइहबल किा िाता िै। यि गीता, कुिान तथा िेन्द आवेस्ता के समकक्ष िै।

कुछ हिज्ञासुओं ने हतरुवलु्लुवि से पूछा- "मिािाि, गृिस्थ तथा संन्यास-इन दो आश्रमों में कौन-सा आश्रम श्रेष्ठ िै?"

हतरुवलु्लुवि ने इस प्रश्न का कोई उत्ति निीं हदया। वि मौन िि गये। वस्तुतः वि उन लोगों को गृिस्थाश्रम की महिमा का उपदेि हकसी दृष्टान्त के माध्यम से देना चािते थे।

एक हदन हतरुवल्लुवि ठण्ढे चावल खा ििे थे। उन्होंनें वासुकी से किा- "वासुकी, चावल बहुत गिम िैं। इन्हें ठण्ढा किने के हलए पंखा ले आओ।" िब उन्होंनें वासुकी से ऐसा किा, तब वि कुएँ से पानी हनकाल ििी थी। वि ििो छोड़ कि पंखा हलये उनके पास पहुँच गयी। उन्होंनें अपने पहत से यि निीं ंकिा हक ठण्ढे चावल गिम कैसे िो सकते िैं औि इसके हलए पंखे की क्या आवश्यकता िै। उन्हें तो पहत के आदेि का पालन किना था िो उन्होंनें कि हदया। हकन्तु आियथ की बात तो यि थी हक िल-पात्र कुएँ के भीति हबना हकसी आश्रय के अपनी पूवाथवस्था में िी अिि में लटका हुआ था। यि उनके सुदृढ़ पाहतव्रत–मथ की िस्ट्क्त से िी सम्भव िो सका था। हिज्ञासुओं ंने इस घटना तथा वासुकी के उदात्त आचिण को आियथचहकत िो कि देखा।

एक अन्य अवसि पि दोपिि में हतरुवल्लुवि ने अपनी पत्नी को बुला कि उससे किा- "वासुकी, िीघ्राहतिीघ्र तुम एक दीपक ले आओ। मैं कपड़े में टाँका लगा ििा हाँ; लेहकन मुझे सुई का हछि निीं ंहदखायी पड़ ििा िै हिससे इसमें िागा िालना सम्भव निीं ंिो पा ििा िै।"

"मध्याह्न-काल में तुम्हें दीपक की क्या आवश्यकता िै? तुम तो सुई के हछि को स्पष्ट रूप से देख सकते िो।" यि न कि कि उनकी पत्नी ने उनके आदेि का पालन कि हदया। हिज्ञासुओं ंको हतरुवल्लुवि के आदिथमय िीवन तथा वासुकी के प्रिंसनीय आचिण से प्रचुि प्रेिणा प्राप्त हुई। उन्होंनें सन्त से हफि कुछ न किा। वे उनकी अनुमहत ले कि विाँ से पूणथतः सन्तुष्ट िो कि चले गये। वे हतरुवल्लुवि तथा वासुकी के व्याविारिक तथा अनुकिणीय िीवन से बहुत प्रभाहवत हुए। इससे उन्होंनें यि हिक्षा प्राप्त की हक एक आदिथ गृिस्थ हकसी भी िति उस आदिथ संन्यासी से हनकृष्ट निीं ंिै िो हिमालय की गुफाओं ंमें बैठ कि हनवृहत्त तथा तप के मागथ का अनुसिण किता िै। विाँ िा कि उन लोगों ंको यि भी ज्ञात हुआ हक अपने-अपने देि, काल तथा परिस्ट्स्थहतयों ंमें इनमें से प्रत्येक मिान् िै।

हप्रय पाठको, ऐसी नारियाँ अपने पहत के हृदय-हसंिासन पि सवथदा आसीन ििती िैं। हनःसन्देि अब इनके दिथन कहठनाई से िी िो पाते िैं। इसका कािण यि िै हक वे स्वयं को हवज्ञाहपत निीं ंकितीं। ंहफि भी ऋहषयों ंतथा सन्तों ंकी ििमी इस ििती पि इनकी संख्या कम निीं ंिोगी। यहद िम इस प्रकाि की नैहतक िुहचता को सम्पोहषत-संवहिथत निीं ंकिेंगे, तो आिुहनक सभ्यता तथा वैज्ञाहनक प्रगहत के इस युग में िमािा पतन सुहनहित िै। यहद आिुहनक पहत हतरुवल्लुवि की भाँहत व्यविाि किेगा, तो उसकी पत्नी कि देगी- "मेिा पहत हवहक्षप्त िो गया िै। वि पिले से िी ठण्ढे चावलों ंको पंखे से हफि से ठण्ढा किने को किता िै।" इस व्यविाि के कािण पहत्नयाँ अपने पहतयों ंको बुिा-भला कि कि उनसे लड़ने को तैयाि िो िायेंगी।

हिस घि में पत्नी हनष्ठापूवथक अपने पहत की सेवा तथा पाहतव्रत्य–मथ का हनवाथि किती िै, उस घि को पृथ्वी का स्वगथ समझना चाहिए। इसके हवपिीत हिस घि में पत्नी अपने पहत से लड़ती-झगड़ती औि उसके आदेि का अनादि किती िै, वि हनहित रूप से ििती का वास्तहवक निक िै। पहत-सेवा पूिा िै। पहतव्रता नारियों ंको न हकसी मस्ट्न्दि में िाने की आवश्यकता िै, न हकसी व्रत या तप किने की। उनके हलए तो पहत की सेवा िी पूिा बन िाती िै। वे पहत-सेवा के माध्यम से िी ईश्वि-साक्षात्काि कि सकती िैं। पहतयों ंको भी उदात्त गुण सम्पि तथा आदिथ पुरुष बनना चाहिए। पहत्नयों ंको हकसी आचायथ से दीक्षा ग्रिण किने की आवश्यकता निीं ंिै। उनके पहत िी उनके गुरु या आचायथ िोते िैं। पाहतव्रत–मथ का पालन किने वाली प्रिंसनीय नारियों ंकी महिमा अक्षुण्ण ििे !

कनकदास

भगवान् हकसी भक्त की िाहत एवं उसके मत तथा वणथ को निीं ंदेखते। वि उसके हृदय में झाँकते िैं। वि हकसी व्यस्ट्क्त का मूल्यांकन बाह्य आचिण से न किके उसके हृदय, उसकी गुह्य अहभप्रेिणाओं ंतथा आकांक्षाओं ंसे किते िैं। भाित के िाहमथक इहतिास में दहलत समुदाय ने अपना हवहिष्ट योगदान हदया िै।

कनकदास दहक्षण भित के दहक्षण कनि (Kanara) ि नपद में स्ट्स्थत उद्धहप के एक मिान् कृष्ण-भक्त थे। ि न्मना अक्लीन ि ोने के किाण उनका मस्ट्न्दि-प्रवेि वहिथत था। मस्ट्न्दि के पिुिी पूिा के हलए उनको मुख्य िि ा तक भी निीं ं आने देते थे।

एक हदन मस्ट्न्दि की परिक्रमा किते समय उन्होंनें मस्ट्न्दि के पीछे एक छोटी स्ट्खिकी देख ली। वि तत्क्षण उस स्ट्खिकी के सामने बैठ कि कृष्ण के गुण-गान में तन्मय ि ो गये। उनके संगीत के मािुयथ तथा भस्ट्क्त की गिनता से आकहषथत ि ो कि लोगों ंने उन्हें घेि हलया। भगवान् कृष्ण उन्हें दिथन देने के हलए विााँ स्वयं उपस्ट्स्थत ि ो गये। यि देख कि पिुिी हवस्ट्स्मत ि ो गये। आि भी तीथथयाहत्रयों ंको वि स्ट्खिकी तथा स्थान हदखाया ि ाता ि ै िि ााँ कनकदास ने नाम-संकीतथन हकया था। दहक्षण कनि के कई लोग आि भी कनकदास के उन आिोत्कषथक गीतों ं को गा कि ि स्ट्क्त, आनन्द तथा ि ास्ट्न्त प्राप्त किते ि ैं।

हचदम्बिम् के भगवान् नटिाि के मिान् भक्त, हिन्होंनें हदव्य ज्योहत से तादात्म्य स्थाहपत कि हलया था, एक दहलत थे। चमाि ि ाहत के ि ैदास भी एक मिान् सन्त थे। वि हचत्तौि की ििािानी मीिाबाई के गुरु थे। ि ब वािाणसी के पस्ट्ण्डतों ंने उनकी अकुलीनता के किाण उनके प्रहत अत्यन्त घृणास्पद व्यविाि हकया, तब ि ैदास ने उन्हें अपना ििीि हदखा हदया हिस पि उन पस्ट्ण्डतों ंने एक ि ि स्यमय दीस्ट्प्तमान यज्ञोपवीत देखा।

आलवन्दाि के हिर्ष् मिनाि (Maranar), कुिल (Kural) के ख्याहत-प्राप्त ि चहयता हतरुवलुलुवि, हतरुप्पन आलवाि तथा चोखामेला- ये सभी दहलत सन्त थे। इनके सन्देि सावथभौम थे। ये ईश्वि में हनवास किते थे।

नाभा ने सन्तों ंके ि ीवन के सम्बन्ध में भक्त-माल नामक एक पुस्तक हलखी थी। वि स्वय एक मिान् सन्त थे। उनका ि न्म भी समाि की हनम्नति श्रेणी के एक परिवाि में हुआ था।

उन दहलत सन्तों ंकी महिमा में वृस्ट्द्ध ि ोती िि ै ि ो मानवता की सुख–िास्ट्न्त के हलए हक्रयािील िि ै, हिन्होंनें ि ाश्वत सत्य का प्रचाि-प्रसाि हकया, हिन्होंनें महिमा-मस्ट्ण्डत भित के ि ाहमथक आख्यानों ंको समृद्ध हकया ि ाा मागथदिथन कि िि े ि ैं! उन लोगों ंने अपने ि ीवन में ि ो कुछ हकया ि ै औि ि ो ि ाि ो हृदयस्थ ि ो कि आि भी अपने उपदेिों ंतथा उदािणों ंमे यहद आप लोगों ंने अपने दैहनक ि ीवन में उसके ि ितांि का भी अभ्यास का हलया. तो आप हदव्य पुरुष, अहतमानव या सन्त के रूप में रूपान्तरित ि ै ि ायेंगे।

िम कनकदास, नन्दा तथा ि ैदास का अहभनन्दन किते ि ैं।

नीलकण्ठ दीहक्षताि

तीन सौ वषथ पूवथ दहक्षण भित में नीलकण्ठ दीहक्षताि नामक एक मिापुरुष िि ते थे। वि प्रचण्ड मेिा के स्वामी, हवलक्षण दािथहनक, अप्रहतम भक्त तथा लब्ध-प्रहतष्ठ िि ाजनेता थे। उनकी संवेदनिील बुस्ट्द्ध अत्यन्त कुिाग्र थी। एक बाि पढ़ लेने से िी उनके मस्ट्स्तष्क में सब-कुछ अंहकत ि ो ि ाता था।

नीलकण्ठ दीहक्षताि बौस्ट्द्धक क्षमता तथा आध्यास्ट्त्मक बोि के अप्रहतम प्रतीक अप्पय्य दीहक्षताि के अनुि थे। अप्पय्य दीहक्षत ने दािथहनक हवषय पि अनेक पुस्तकों ंकी ि चना की थी। उनको भगवान् हिव का अवताि माना ि ाता था।

पारिवारिक सम्पहत्त के हवभािन के समय िब अप्पय्य दीहक्षति ने नीलकण्ठ से उनके अंि के सम्बन्ध में पूछा, तब पूणथप्रज्ञ तथा हववेकिील अनुि ने उनसे ज्ञान तथा उनके आिीवाथद के अहतरिक्त अन्य हकसी भी बसुतु की माँग निीं की। अप्पय्य ने अत्यन्त प्रसि िो कि ज्ञान तथा आिीवाथद के साथ-साथ उन्हें भौहतक सम्पदा भी प्रदान की।

एक हदन नीलकण्ठ पिम्पिागत तथा प्रभावोत्पादक िैली में देवी-मिात्म्य पि व्याख्यान दे िि े थे। उपस्स्थत श्रोताओं ंमें पाण्ड्य-साम्राज्य के अहिपहत हतरुमलै नायक भी थे। अगाि ज्ञान, प्रचण्ड मेिा तथा उदात्तता से समपृक्त उस हकिोि के व्याख्यान को सुन कि वि स्तब्ध िि गये। उन्होंनें नीलकण्ठ को अपना प्रिानमन्त्री तथा िािपस्ण्डत बनाने की बात सोची।

उस समय विाँ के प्रिानमन्त्री पद के हलए एक ित्थ थी िो बहुत कहठन न िोते हुए भी एक ऐसी प्रिेहलका के समान थी हिसको सुलझा पाना सिल निीं ंथा। इसके समािान में विाँ के कृतहवद्य पुरुष भी असमथथ िो िाते थे; हकन्तु नीलकण्ठ के हलए यि अत्यन्त सिल हसद्ध हुआ। उन्होंनें िाििािा के समक्ष इसका समािान प्रस्तुत कि हदया।

िािकीय वैभव तथा िषोल्लास के वातावाि में भी वि हकसी िमथहनष्ठ व्यस्क्त की भाँहत सिल, हकसी दािथहनक की भाँहत प्रिान्त, हकसी एकान्तवासी की भाँहत संयमी तथा हकसी िस्यवादी की भाँहत समहपथत िीवन व्यतीत किते थे।

नीलकण्ठ के प्रत्यक्ष पयथवेक्षण में सुन्दिमूहतथ आसािी नामक एक मूहतथकाि ने हतरुमलै नायक की िमथपत्नी की मूहतथ को पाणु्डमण्डपम्, िो अभी हनमाथणावस्था में था, में प्रहतहष्ठत किने के हलए उसका तक्षण कि हदया। वि इस कला में हनष्णात था; लेहकन दुभाथग्य से एक अवांछनीय घटना िो गयी। िािानी की मूहतथ के दहक्षण उरुप्रदेि का एक अल्पांि मूहतथ का परित्याग कि आकाि में हवलीन िो गया औि उस स्थान पि एक स्पष्ट रिस्क्त के दिथन िोने लगे। मूहतथकाि ने पुनः प्रयत्न हकया; हकन्तु उसका प्रयत्न व्यथथ हसद्ध िो गया। देि-काल को आक्रान्त किने वाली अन्तव्याथहपनी दृहष्ट वाले नीलकण्ठ ने मूहतथकाि को िािानी के उरुप्रदेि के एक हतल के सम्बन्ध में सब-कुछ बता हदया। यि सुन कि मूहतथकाि अत्यन्त उहिग्न िो उठा औि मूहतथ को उसकी पूवाथवस्था में िी छोड़ कि विाँ से चला गया।

िाििािा इस घटना से पूणथतः अवगत िो गये। उनका हृदय सन्देि, भ्रम तथा आक्रोि से बोहझल िो उठा औि बुस्द्ध-हवपयथय के काि उन्होंनें नीलकण्ठ को बन्दी बनाने का आदेि दे हदया।

उस समय नीलकण्ठ अपनी उपास्य देवी िगज्जनी मीनाक्षी को कपूि की आिती हदखा िि े थे। देवी की कृपा तथा अपनी अन्तदथहष्ट के काि उनको िाििािा के मन में उठे उस झंझाहनल औि उनके आदेि का पूवाथभास िो गया। उन्होंनें आिती-पात्र में कुछ औि कपूि िाल कि उसे अपनी आँखों ंमें लगा हलया हिसके फल-स्वरूप वि अन्धे िो गये।

इस दुःखद घटना से अवगत िोने पि िाििािा के ज्ञान-चक्षु खुल गये। अनुताप तथा पिात्ताप के हसन्धु में िूबते-उतिाते वि हनमथल-हृदय नीलकण्ठ के पास िा कि उनसे क्षमा-याचना किने लगे। करुणा, मािुयथ तथा अनुकिणीय भस्क्त-भाव से सम्पि नीलकण्ठ ने अपनी नेत्र-ज्योहत की प्रास्प्त तथा िाििािा को अनुताप औि पिात्ताप से मुक्त किने के हलए स्व–िहचत पाँच सौ पाँच पदों ंके माध्यम से अपने हृदय की सािी भावनाएँ िगज्जननी के चिणों ंपि उँड़ेल दीं।ं

उस हदन से नीलकण्ठ ने िािसभा से अपना सम्बन्ध हवच्छेद कि हलया। िाििािा हतरुमलै नायक ने पालमिै की िागीि उन्हें भेंट स्वरूप दे दी। पालमिै हतरुनेलवेली से चाि मील की दूिी पि िै।

अपने ीवन के अस्ट्न्तम हदनों ंमें भस्ट्क्त-सुिा के पान से उन्मत्त सन्त नीलकण्ठ ने अनेक कृहतयों ंका प्रणयन हकया िो अकृहत्रम, प्रविामयी, भव्य, हवित्तापूणथ तथा आन्तरिक भावनाओं ंसे ओत-प्रोत थीं।ं उन्होंनें संन्यास ले हलया तथा कुछ हदनों ंके पित् वि समाहिस्थ िो गये।

पुिन्दिदास

पुिन्दिदास एक मिान् सन्त तथा कहव थे। इसके अहतरिक्त वि एक मिान् संगीतज्ञ भी थे; हकन्तु अिन्तिाा की संगीत-सुिा के पान के पित् उन्होंनें बाह्य संगीत की िोमांचकता से सम्बन्ध हवच्छेद कि हलया।

एक सन्त के रूप में पुिन्दिदास समस्त भाित के हलए पूिनीय थे। वि अन्य िाज्यों ंके कबीि, सूिदास, गौिांग, तुकािाम तथा त्यागिाि-िैसे सन्तों ंकी कोहट के सन्त थे।

सोलिवीं ंिताब्दी में हवियनगि के कनाथटक साम्राज्य के गौिवपूणथ हदनों ंमें पुिन्दिदास अपने वचनामृत से लोगों ंको उपकृत कि ििे थे। बंगाल, मिािाष्ट्र, मािवाि, उत्ति प्रदेि तथा तहमल नािु में हिस प्रकाि क्रमिः गौिांग. तुकािाम, मीिाबाई, तुलसीदास तथा त्यागिाि समादृत िैं, उसी प्रकाि कनाथटक में पुिन्दिदास को पूिनीय समझा िाता िै।

गौिांग, वल्लभाचायथ तथा पुिन्दिदास समकालीन थे। पुिन्दिदास मिािाष्ट्र-स्ट्स्थत प्रहसद्ध तीथथस्थान पण्ढिपुि के अहिष्ठातृ देवता भगवान् हवठ्ठल के पूिक थे।

पुिन्दिदास का िन्म १४८४ ई. में आिुहनक पुणे नगि से पन्दिि मील दूि स्ट्स्थत पुिन्दिगढ़ में एक समृद्ध ब्राह्मण परिवाि में हुआ था। कृष्ण-भक्त िोने के पूवथ उनको श्रीहनवास नायक के नाम से अहभहित हकया िाता था। उन्होंनें सिस्वती बाई से हववाि हकया िो एक िमथ-पिायणा तथा समृद्ध महिला थीं।ं संगीत के प्रहत पुिन्दिदास का अनुिाग उत्कट था औि इस कला में वि हनष्णात थे। वि हवलासपूणथ िीवन व्यतीत किते थे। व्यवसाय से वि िौििी तथा साहूकाि थे। उनकी हवपुल सम्पदा के काण उन्हें 'नव कोहट नािायण' किा िाता था।

समृद्ध िोते हुए भी श्रीहनवास नायक मिाकृपण थे। पिोपकाि में उनका एक पैसा भी खचथ निीं ंिोता था। संन्याहसयों,ं ब्राह्मणों ंतथा हनिथन लोगों ंको वि कभी भी भोिन निीं ंकिाते थे। नायक की िमथ-हनष्ठ तथा ईश्विभीरू पत्नी सिस्वती अपने पहत के भौहतकवादी तथा अिाहमथक स्वभाव के काण मन-िी-मन अत्यन्त दुःखी ििती थी।

एक ब्राह्मण अपने पुत्र का यज्ञोपवीत-संस्काि किाना चािता था। एक हदन पुिन्दिदास के घि िा कि उसने कुछ िन की याचना की। सिस्वती ने किा हक उसकी अपनी सम्पहत्त के नाम पि उसके पास कुछ भी निीं ंिै। हकन्तु उस वृद्ध ब्राह्मण ने उससे किा हक वि अपनी नाक में िीिे की िो नथ पिने हुए िै. उसे उसके माता-हपता ने हदया था औि उसे वि अपने इच्छानुसाि उसे दे सकती िै। इस पि सिस्वती ने उस ब्राह्मण को वि नथ प्रसन्नतापूवथक दे दी।

ब्राह्मण ने उस नथ को श्रीहनवास नायक के पास हगिवी िख कि ऋण की याचना की। नायक ने तत्काल समझ हलया हक वि नथ उनकी पत्नी की िै। ब्राह्मण ने उनके हकसी भी प्रश्न का उत्ति निीं ंहदया। वि नायक की दुकान से उनसे यि कि कि चला गया हक वि अपने िन के हलए उनके पास िीघ्र िी आयेगा।

नायक उस नथ को अपनी लिो की हर्तिौी में िख कि िीघ्र िी अपने घि पहुाँचे िााँ उन्होंनें सिस्वती से वि नथ ले आने को किा। हंकंकतथव्यहवमूढ़ सिस्वती ने सोचा हक अब उसका पहत उसे कठिोतापूवथक प्रताहड़त किेगा; अतः उसने हवष-पान कि आत्मित्या किने का हनिय कि हलया। वि हवष-पान किने िी वाली हक उसे हवष-पात्र में हकसी वसुतु के हगिने का आभास िो गया। हवष-पात्र से उस वसुतु को हनकाल कि उसने आियथ चहकत िो कि देखा हक वि उसकी विी नथ थी हिसे उसने उस वृद्ध ब्राह्मण को दान-स्वरूप हदया था। उसने ईश्वि की इस मिती कृपा के हलए उसे न्यिवाद देते हुए उस नथ को अपने पहत के समक्ष िख हदया।

नथ को देख कि नायक स्तब्ध िि गये। वि तत्काल िी अपनी दुकान पि गये; हकनुतु उन्हें उस लिो की हर्तिौी में वि नथ निीं हमली। उन्होंनें अपनी पत्नी को इस नथ से सम्बस्ट्न्धत सािा वृत्तान्त बताने का आदेि हदया। सिस्वती ने सािी घटना का आद्योपान्त वणथन कि हदया। अब नायक को इस सत्य की स्पष्ट अनुभूहत िो गयी हक वि वृद्ध ब्राह्मण िो दुकान से िाने के बाद हफि कभी निीं लौटा, ईश्वि के अहतरिक्त अन्य कोई न था िो वािाँ उसके पिीक्षण-प्रहिक्षण के हलए आया था। इस घटना से उनका स्वभाव पूणथतः परिवहतथत िो गया। िन के प्रहत उनकी आत्यस्ट्न्तक आसस्ट्क्त समाप्त िो गयी औि वैिाग्य की भावना से उनका हृदय पूरित िो उठा। अपनी सािी सम्पहत्त को पिोपकाि में दे कि उन्होंनें गृि-त्याग कि हदया। वि तुंगभिा नदी के तट पि स्ट्स्थत कनाथटक की िािािानी हवियनगि चले गये।

उन हदनों कनाथटक के अहिपहत कृष्णदेव िािा थे हिनकी ख्याहत सुदूि-हवसृतृत थी। उस समय व्यासिाि साम्राज्य के संिक्षक सन्त थे िो एक मिान् कृतहवद्य एवं िस्यवादी थे। नायक उनके हिष्य िो गये। उन्होंनें अपने िीवन के िेष चालीस वषथ अपने गीतों के माध्यम से इस िािी पि भस्ट्क्त के प्रचाि-प्रसाि में व्यतीत हकये। १५६४ ई. में अस्सी वषथ की आयु में हवियनगि में उनका देिान्त हुआ।

पुिन्दिदास को नाद ऋहष का अवताि माना िाता िै। संगीत की कनाथटक िैली के वि िनक थे। िाग-ताल का उन्हें हवद ज्ञान था। कनाथटक साहित्य को उनका योगदान अप्रहतम तथा उनकी साहिस्ट्त्यक िैली अत्यन्त उतृकृष्ट िै।

भाषा पि अहिकाि, अहभव्यस्ट्क्त का सौन्दयथ, कहव-सुलभ प्रहतभा तथा प्राचीन संसृकृत ग्रन्थों का हवद ज्ञान - पुिन्दिदास में ये सभी गुण हवद्यमान थे। इसके अहतरिक्त िााँ तक स्वि-संगीत तथा लयबद्धता का सम्बन्ध िै, उन्हें संगीत का युस्ट्क्तयुक्त ज्ञान था। साथथक भावों से समस्ट्ित लयबद्ध गहत को नाय किते िैं। वि इस कला में भी दक्ष थे; हकनुतु उनकी सवाथहिक मित्त्वपूणथ उपलस्ट्ब्ध तो यि थी हक वि स्वयं को अपिोक्षानुभूहत से कृतकृत्य कि चुके थे।

पुिन्दिदास सन्तों की एक ऐसी पंस्ट्क्त को दीहक्षत कि गये िो अपने आध्यास्ट्त्मक सन्देि से कनाथटक को िताब्दियों तक लाभास्ट्न्वत किती ििी।

पुिन्दिदास ईश्वि को लक्ष्मीपहत मानते थे। उन्होंनें अपनी सािी सम्पहत्त ईश्वि के चिणों पि अहपथत कि दी। अपनी भौहतक सम्पदा के परित्याग के पिात् उन्हें आध्यास्ट्त्मक सम्पदा की सम्प्रास्ट्प्त िो गयी। यि आध्यास्ट्त्मक कोष एक पीढी से दसूिी पीढी को प्राप्त िोता ििा औि इसमें ह्रास न िो कि वृस्ट्द्ध िी िोती गयी।

पुिन्दिदास अपने गीतों के माध्यम से भगवान् से हनवेदन किते िैं :

अहंकार-अज्ञान-ग्रस्त था मेरा यौवन,
अगडणि इच्छाओं से बोडिल मेरा जीवन,
प्रिडमि हुई अभी िक भी कामाडि न मेरी,

एक बार भी डकया नही ोंहरर-नाम-स्मरण।

गिुड़ को िमा प्रदान डकया करिी है मिाा,
मिुको भी िुम िमा करो हे डवश्व-डवधािा,
दास बना कर अपना मन की िाक्न्त मिु दो,
िुम समथक हो और दिुःखी जन के हो त्रािा।

िुम हो लक्ष्मी-पडि, करिे हो धन का वषकण,
िुम्ही ोंआडद आचायक िुम्ही ोंपरथ्वी-पडि भगवन्,
पडिि-पावनी सुरसररिा के िुम स्रष्टा हो,
िुमसे ही हािेा असहायो ोंका पररत्रण।

कूट्-कूट् कर मिुमें भरे हुए हैं दगुिुकण,
नही ोंडकया पर िुमने मेरा डछद्रान्वेषण,
िुमने मेरे पापो ोंको है िमा कर डदया,
मिु पर हुआ िुम्हारी डदव्य करपा का वषकण।

करपा िुम्हारी मिु अयोग्य पर,
अज्ञानी पर, कैसे करूँ प्रसन्न िुम्हें, डकस डवडध से सत्वर ?
कमल-सिुोडभि नाडभ-पिात्र है डदव्य िुम्हारा,
पूजन करूँ िुम्हारा मैं सुमनो ोंसे सुन्दर ?

रडव-िडि नेत्र िुम्हारे करिे जग को ज्योडिि,
रख दूँ पाद-पद्म पर क्या मैं स्वणक अपररडमि ?
पर धन-देवी स्वयों पाश्वकवडिकनी िुम्हारी
गोंगा-जल से करूँ िुम्हारा पद-प्रिालन ?

पर पदारडवन्द से ही डनिःसरिे गोंगा-जल
िब क्या करूँ, पुरन्दर के उपास्य हे डवठ्ठल ?
मैं क्या अडपकि करूँ चरण-कमलो ोंपर पावन ?
वर दो, अिुण्ण रहे नाम जप-अडभिम अडवरल ।

तायुमानवि

दो सौ तीस वषथ पूवथ दहक्षण भाित के तंिाविू िनपद में स्ट्स्थत वेदािण्यम् नगि में केहटल्य हपल्लैै (Ketilya Pillai) नामक एक व्यस्ट्क्त िहते थे। वि बहुत हविान् तथा िमथहनष्ठ थे। वि हिव मस्ट्न्दि के प्रबन्धक थे। उनकी प्रहतभा, हवित्ता तथा सद्‌गुणों ंसे अवगत िो कि हतरुहचिापल्ली के िािा मुतुथु हविय िघुनाथ चोक्कहलंग नायक ने उन्हें अपनी चल-अचल सम्पहत्त का प्रबन्धक हनयुक्त कि हदया। केहटल्य हपल्लैै के हचदम्बिम् हपल्लैै नामक एक पुत्र था हिसे उनके अग्रि ने अपना दत्तक पुत्र बना हलया। केहटल्य हपल्लैै हतरुहचिापल्ली के तायुमानेश्वि-मस्ट्न्दि में प्रहत हदन िा कि सन्तान प्रास्ट्प्त के हलए भगवान् से प्राथथना किने लगे। सवथिस्ट्क्तमान् भगवान् की कृपा से उनको एक

पुत्र की प्रास्ट्प्त हुई। उसने तायुमानेश्वि की कृपा से िन्म-ग्रिण हकया था; अतः केहटल्य हपलै्लै ने उसे भगवान् का नाम दे हदया।

बालक तायुमानवि अत्यन्त मेिावी था। उसने अल्पावहि में िी उपहनषदों,ं पुिाणों,ं इहतिास, व्याकिण आहद का अध्ययन कि हलया। उस कृतहवद्य बालक का पास्ट्ण्डत्य अप्रहतम था। अपने हपता की मृत्यु के पिात हतरुहचिापल्ली के िािा के आग्रि पि उसने चौदि वषथ की अल्पायु में िी िािा एक अत्यहिक सुन्दि बालक था। वि ओिानुबिा था हिसे हिन्दुओं ंमें की सम्पहत्त के प्रबन्धक के रिक्त पद का कायथभाि ग्रिण हकया। तायुमानवा मिानता का प्रतीक समझा िाता िै। तायुमानवि सत्योिेषी था। उसने िािसभा के पस्ट्ण्डतों ंको पुिाहित कि हदया औि उन्हें सत्योिेषण के हलए िािसभा से िीिा भी हदया। िािा तायुमानवि से अत्यहिक प्रसि हुआ।

'मेिी शंकाओं ंका हनिाकिण कि मुझे ज्ञान प्रदान किने वाला गुरु कब हमलेगा', यि हवचाि तायुमानवि को सवथदा उहिलत हकये िता था। उन्हीं ंहदनों ंहतरुमूल नायनाि की हशष्-पिम्पिा के मौनगुरु स्वामी नामक एक सन्त तायुमानेश्वि के दशथन के हलए हतरुहचिापल्ली आये। बालक तायुमानवि उनकी औि आकहषथत िो गया औि उनकी चिण-वन्दना कि छाया की भााँहत उनका अनुगमन किने लगा। उसने मौनगुरु से अनेक दशथन के हवहभि िहटल हवषयों ंपि वाद-हववाद तथा वाताथलाप हकया। अब उसके मन में वैिाग्य-भाव िाग्रत िो गया औि वि अपने िािकीय उत्तिदाहयत्व के प्रहत पूणथतः हविक्त िो गया। यि देख कि िािा ने उसे उसके कायथ-भाि से मुक्त कि हदया। इसके पिात् वि स्वयं उनका हशष् िो गया।

हववाि के प्रहत पूणथतः उदासीन िोते हुए भी तायुमानवि ने अपने गुरु तथा अग्रि की प्रसिता के हलए हववाि कि हलया। उनके एक पुत्र था हिसका नाम कनगसभापहत हपलै्लै था। अपनी पत्नी की मृत्यु के पिात् गुरु के आदेशानुसाि वि संन्यासी िो गये। गृि-त्याग के समय उनके पास एक कौपीन के अहतरिक्त औि कुछ भी न था। वि योगाभ्यास किने लगे औि उनका सािा समय ध्यान तथा समाहि में व्यतीत िोने लगा। उन्हें प्रेिणा तथा साक्षात्काि की सम्प्रास्ट्प्त इन गीता को संग्रहित कि उन्हे पुस्तक रूप ने हदया। अरुलकि िुई। उनके कण्ठ से अनेक प्रेिणाप्रद गीत हनःसृत िुए। उनके हशष् अरुलयाि ने को ज्ञान की िास्यिाक हववा में दीहक्षत हकया। इसके पिात् वि िामनाथपुिम् चले गये। वि हनहवथकल्प समाहि में प्रहवष्ट िुए।

तायुमानवि स्वामी के आत्म-साक्षात्काि-सम्बन्धी गीत समस्त दहक्षण भाित में प्रहतहदन गाये िाते िैं। ये गीत उत्थापक, ओिोद्दीपक, भव्य भावों ंसे ओतप्रोत तथा चमत्काि‍पूणथ िैं। उनमें सूक्ष्म दाशथहनक भाव गहमथत िैं िो श्रोताओं ंके अन्तस्तल में प्रहवष्ट िो िाते िैं।

तायुमानवि वेदों ंकी प्रहतमूहतथ थे। वि ईश्वि-साक्षात्काि के िीवन्त आश्वासन थे। अपने प्रवचन के हलए उन्होंनें कभी हकसी मंच का उपयोग निीं ंहकया। वि पूणथ ज्ञानी तथा ब्रह्म के साथ तद्रूप थे। ब्रह्म के तास्ट्त्वक स्वरूप से वि एक िो चुके थे। िंकि के सगुण-अपि ब्रह्म में लीन िोने के काiण उन्हें हदव्य अष्ट गुणों ंकी प्रास्ट्प्त िो चुकी थी।

ज्ञानी िोने के काiण उनका तादात्म्य सवथभूतों ंसे स्थाहपत िो चुका था। उनके कायों तथा प्रकृहत के हनयमों ंमें समरूपता िोती थी। उनके कायथ वायु, वषाथ तथा सूयथ की हकिणों ंकी हक्रयाशीलता के अनुरूप िोते थे। यहद कोई ज्ञानी दि व्यस्ट्क्तयों ंको अहनष्टमूलक अहवद्या से मुक्त कि उन्हें ऊर्ध्वगामी बना देता िै, तो उसके इस कायथ को लोक-संग्रि किा िायेगा। सामाहिक तथा िािनैहतक कायों से ज्ञानी का कोई सम्बन्ध निीं ंिोता।

तायुमानवि स्वामी के िीवन-चरित्र तथा उपदेशों ंको ज्ञानबोहिनी, चेन्नै ने पााँच खण्डों ंमें प्रकाहशत हकया गया िै। उनके गीत ग्रामोफोन पि भी बिाये िाते िैं।

योगी मुकुन्द िाय

योगी मुकुन्द िाय एक असािाण पुरुष थे िो लगभग सात सौ वषथ पूवथ दहक्षण भाित-स्ट्स्थत हवियनगिम् में िित थे। हवियनगिम के िि प्रासाद में उपलब्ध अहभलेखों ंसे ि में यिी िा नकािी प्राप्त ि ई िै। हवियनगिम के तत्कालीन
िािा ियपाल के दिबाि में िब कोई भिक्षु या संन्यासी आता यहद भिक्षु उन्हें सन्तुष्ट किने में हवफल िो िाता था, तो वि उसे सिोवि था, तब वे उससे किा किते थे- मुझे ब्रह्म का दिथन किाओ।" के उत्खनन िैसे श्रमसाध्य कायों में संलग्न कि देते थे। िािा को ब्रह्म का दिथन किा पाने में असमथथ सैकिो सािु इस उत्खनन कायथ में लगे हुए थे।

'नारायण, जय नारायण, जय जय नारायण' इन िब्दों ंके माध्यम से िरि-नाम का गुण-गान किते हुए एक हदन योगी मुकुन्द िाय भी दिबाि की ओि चल पड़े। िािा पि खड़े हसपािी ने उन्हें भीति प्रहवष्ट िोने से िोकते हुए किा हक वहाँ िाने पि उन्हें भी उत्खनन कायथ में लगा हदया िायेगा। योगी मुकुन्द िाय ने किा हक यहद उन्हें िािा के दिथन िो िाते िैं, तो उन्हें उत्खनन कायथ पि कोई आपहत्त निीं ंिोगी। िािा ने उनसे भी विी प्रश्न हकया िो अन्य भिक्षुओं ंसे हकया किते थे। मुकुन्द िाय ने किा- "िाँ, मैं हनहित रूप से आपको ब्रह्म का दिथन किा दूँगा। आप एक घोड़ा माँगाइए।" इसके पिात् उन्होंनें िािा से घोड़े पि सवाि िो िाने को किा। िािा घोड़े पि चढ़े; हकन्तु वि अभी उस पि बैठ भी निीं ंपाये थे। उनका बायाँ पैि िकाब में था औि उनका दाहिना पैि िकाब में न िो कि िवा में झूल ििा था। वि घोड़े के दूसिे पाश्वथ में निीं ंिा सका था। तभी योगी ने कोड़े का कठोितापूवथक घोड़े पि प्रिाि कि हदया। इसके पिात् तत्क्षण िािा विीं ंपि समाहिस्थ िो गये। वि सात हदनों ंतक समाहिस्थ ििे। घोड़ा भी विीं ंपि िान्ति भाव से खड़ा ििा। आठवें हदन िब िािा की समाहि भंग हुई, तब उसने उनको साष्टांग प्रणाम किते हुए किा- "िे पूिनीय मिापुरुष, िे मेिे गुरु, मैं आपका हिष्य् हाँ। मैं आपकी हकसी भी सेवा के हलए उद्यत िैं।" योगी ने किा- "मुझे हकसी भी वस्तु की आवश्यकता निीं ंिै। आप इन सािुओं ंको उत्खनन कायथ से मुक्त कि दीहिए औि भहवष्य् में इनको इस प्रकाि पीहड़त तथा दास हाँ। मत कीहिए।"

योगी मुकुन्द िाय ने िािा के हलए 'प्रेमामृत' तथा 'हवचाि-हसन्धु' नामक वेदान्त-हवषयक दो पुस्तकें हलखीं।ं अध्ययन तथा गिन ध्यान के हलए उपयोगी ये दोनों ंपुस्तके आि भी उपलब्ध िैं।

पिमिंस तैलंग स्वामी

पिमिंस तैलंग स्वामी ने आन्ध्र प्रदेि में हविाखपत्तनम् िनपद-स्ट्स्थत िोहलया के एक ब्राह्मण-परिवाि में िन्म-ग्रिण हकया था। उनके हपता नृहसंििि (Nrisinghadhar) बहुत पिोपकािी सज्जन थे। वि अपनी हवित्ता के हलए भी हवख्यात थे। नृहसंििि तथा उनकी पत्नी, दोनों ंिमथ-पिायण थे। बहुत हदनों ंतक ये लोग सन्तान-सुख से वंहचत ििे, अतः नृहसंििि ने अपना दूसिा हववाि कि हलया; हकन्तु इस घटना से उनकी कोमल-हृदया प्रथम पत्नी ममािित िो उठी। वि एक अनुष्ठान का प्रािम्भ कि सन्तान प्रास्ट्प्त के हलए भगवान् हिव से प्राथथना किने लगी। समय आने पि उसने एक पुत्र को िन्म हदया हिसका नाम हिवािाम िखा गया। िब हिवािाम केवल पाँच वषथ का था, तभी उसके हपता का देिान्त िो गया। वेदों ंतथा िास्त्रों ंके अध्ययन के हलए उसे एक हवद्वान् व्यस्ट्क्त के पास भेिा गया। माता की मृत्यु के पिात् हिवािाम के िीवन में एक परिवतथन आया औि उसने संसाि का परित्याग कि हदया। उसने भाित के हवहभन्न पहवत्र तीथथस्थानों ंकी यात्रा की। इस प्रकाि का तीथाथटन मध्ययुगीन संस्कृहत तथा आध्यास्ट्त्मक हिक्षण का एक सुपरिहचत अंग हुआ किता था। एक स्थान से दूसिे स्थान के इस परिभ्रमण-काल में उसे एक सन्त के दिथन हुए हिनके व्यस्ट्क्तत्व से वि इस सीमा तक प्रभाहवत हुआ हक वि िीघ्र िी उनका हिष्य् बन गया औि उनके साथ
उसने समस्त भाित की यात्रा की। उसने सन्त से योग की हवहभन्न हवहियों ंतथा ध्यान एवं सािना की अन्य

ीस्यिमयी प्रहक्रयाओं ंका प्रिास्ट्म्भक ज्ञान अहिथत हकया। इसके पित् लोग उसे गणपहत स्वामी या तैलंग स्वामी के नाम से िानने लगे।

अपने गुरु के ििीि त्याग के पित् तैलंग स्वामी िामेश्विम् चले गये। विााँ उन्होंनें सभी िाहतयों ंके अनेक हिष्ों ंको एकत्र कि उन्हें प्रहिहक्षत हकया। एक अवसि-हविेष पि उन्होंनें एक मृत व्यस्ट्क्त को पुनिीहवत कि हदया। इसके अहतरिक्त उन्होंनें लोगों ंके समक्ष फहलत ज्योहतष से सम्बस्ट्न्धत अनेक चमत्कािों ंके प्रदिथन हकये। इन घटनाओं ंसे वि नगि में प्रख्यात िो गये औि उनके दिथन के हलए िन-समूि उमड़ने लगा, हकन्तु इससे उनको असुहविा िोने लगी; क्योंहक लोग अनावश्यक प्रश्नों ंििा उनको कष्ट देने लगे। इस उत्पीड़न से मुस्ट्क्त के हलए वि योग के अध्ययन को स्थहगत का िामेश्विम् से नेपाल चले गये; हकन्तु विााँ भी लोग उनके एकान्त में हवघ्न उपस्ट्स्थत किने लगे। अतः विााँ से वि हतब्बत चले गये। विााँ उन्होंनें मानसिोवि में अपनी इच्छा के अनुसाि योगाध्ययन का समापन हकया। योग की प्रहक्रयाओं ंमें पूणथ दक्षता की प्रास्ट्प्त के पित् वि वािाणसी चले आये ििााँ वि अपने िीवन के अस्ट्न्तम हदन तक ििे। वािाणसी आने के पित् उन्होंनें अपने हिष्ों ंके अहतरिक्त अन्य हकसी से भी कोई बात न की। अपने हिष्ों ंििा हदये गये अन्न-िल से िी वि सन्तुष्ट ििते थे। वि न तो हकसी से हकसी वस्तु की याचना किते थे, न दी हुई हकसी वस्तु को अस्वीकाि किते थे। संक्षेप में यिी किा िा सकता िै हक वि हविुद्ध अथथ में एक पिमिंस िो गये थे।

एक बाि तैलंग स्वामी ने तत्कालीन िाज्यपाल की तलवाि गंगा में फेंक दी। िब िाज्यपाल ने उनसे अपनी तलवाि मााँगी, तब वि िल में कूद पड़े औि विााँ से दो तलवािें ले कि बािि हनकले। िाज्यपाल यि निीं ंसमझ सके हक उन दो तलवािों ंमें उनकी तलवाि कौन-सी िै।

एक बाि कुछ दुष्टों ंने उनके मुाँि में चूने का पानी डाल हदया; हकन्तु तैलंग स्वामी ने िंख पचाि (Sankh Pachar) हक्रया ििा अपने गुदाद्वाि से इसे बािि हनकाल हदया।

पिमिंस तैलंग स्वामी को दो सौ अस्सी वषथ की आयु तक िीहवत ििने का श्रेय प्राप्त िै। वि एक उदाि हृदय सन्त, पूणथ तपस्वी एवं सिलता तथा मनोहनग्रि की प्रहतमूहतथ थे। प्रेम तथा नये युग की भाविाक आध्यास्ट्त्मकता से उनका हृदय आप्लाहवत था। एक सन्त के रूप में वि अकृहत्रम दयालुता, पिोपकाि तथा उदाि हृदयता के हलए सुप्रहसद्ध थे। उनके यिााँ सभी िाहतयों ंतथा मतों ंके हिष्ों,ं वे चािे हनम्नकुलोत्पन्न िों या अज्ञ िन िी क्यों ंन िों, को िािण प्राप्त िोती थी। वि अपने हिष्ों ंको ईश्वि-प्रेम तथा मैत्री-भाव के िी उपदेि हदया किते थे, उनमें सद्गुरु की महिमा तथा कृपा के प्रत्यक्ष दिथन िोते थे।

मानवता को स्वामी िी की मुख्य देन िाहमथक दिथन पि उनकी मिान् कृहत 'महावाक्य-ित्नावली' िै।

पहिणतुथु हपलैैयिा

उन हदनों ंचोल िाज्य के अन्तगथत आिुहनक तंिािूि िनपद तथा हनकटवती कुछ अन्य भू-भाग आते थे। कावेिीपूमपहिनम् इसी िाज्य में स्ट्स्थत था। किा िाता िै हक यिााँ पहिणतुथु हपलैैयिा के रूप में कुबेि ने स्वयं अवताि ग्रिण हकया था। पहिणतुथु के पास हवपुल िन-िाहि थी। उनका एक अन्य नाम हतरुवेंकिवि (Thiruvenkadavar) भी था। उनकी पत्नी का नाम हिवकला था। ये लोग हनःसन्तान थे। उन्हीं ंहदनों ंभगवान् हिव के

पिम भक्त एक ब्राह्मण दम्पहत, सरुमि (Sarumar) तथा सुिीला अपनी हनिथनता के काािण अत्यन्त हचन्ताग्रस्त ििते थे। एक िात भगवान् हिव ने स्वप्न में दिथन दे कि उन्हें दूसिे हदन मस्ट्न्दि में िाने का पिामिथ हदया औि किा हक उन्हें विााँ एक हििु हमलेगा। भगवान् ने उनसे यि भी किा हक वे उस हििु को हतरुवेंकिवि के पास ले िायें ििााँ

उन्हें प्रहतफल के रूप में प्रचुि मात्रा में अथथ-प्रास्ट्प्त िोगी। भगवान् के आदेिानुसाि वे लोग उस िािु को अगले हदन हतरुवेंकिवि के पास ले गये ििााँ उन्हें अत्यहिक िन हमला। िािु का नाम मरुतस्ट्प्पिान (Maruthappiran) था। हतरुवेंकिवि तथा उनकी पत्नी ने उस िािु का पालन-पोषण हवहिवत् अपने पुत्र की भााँहत िी हकया।

िब मरुतस्ट्प्पिान की आयु सोलि वषथ की िुई, तब एक हदन उसने हतरुवेंकिवि से व्यापाि किने के हलए समुि-पाि िाने की अनुमहत मााँगी। हतरुवेंकिवि उसे ििााँ भेिना निीं चािते थे. हफि भी दुःखी मन से उसे उन्होंनें समुि-पाि िाने की अनुमहत प्रदान कि दी। कुछ हदनों के पिात् मरुतस्ट्प्पिान अपने साथ ले िायी गयी समस्त पूाँिी के हवहनमय में केवल कुछ गोबि औि बालू ले कि लौटा। िब वि घि के हनकट आया, तब वि अपने एक नौकि को अपने हपता को देने के हलए एक पेहटका दे कि विााँ से अदृश्य िो गया। पेहटका में गोबि औि बालू देख कि उसके हपता को उसकी मूखथता से घोि हनिािा हुई। हकन्तु िब गोबि के एक टुकड़े को तोड़ा गया, तब उसमें एक बहुमूल्य िीिा हनकला औि वि बालू स्वणथ में परिणत िो गया। पेहटका से कुछ सुइयााँ तथा कागि का एक टुकड़ा भी हनकला। कागि पि हलखा था-"ये टूटी सुइयााँ भी तुम्हािे साथ निीं िायेंगी।" हतरुवेंकिवि के ज्ञान-चक्षु तत्क्षण खुल गये। वि समझ गये हक वि स्वयं भगवान् हिव थे। उन्होंनें अपने मुख्य अहिकािी सेन्दनाि (Sendanar) को अपनी सािी सम्पहत्त को फेंक देने का आदेि दे हदया। उन्होंनें संन्यास की दीक्षा ग्रिण कि ली। वि पिले हिस नगि में ििते थे, उसी नगि में हभक्षा पि िीवन-यापन किने लगे। इस वस्तु-स्ट्स्थहत से अवगत उनके सम्बन्धी बहुत दुःखी हुए। उनकी बिन तो इतनी दुःखी हुई हक उसने सोच हलया हक उसके भाई की इस दिा से श्रेयस्कि उसकी मृत्यु िोगी। उसने उन्हें हवष देने का हवचाि कि हलया। उसने हमष्टान्न में हवष हमला कि उन्हें दे भी हदया। पहिणत्तुथु हपल्लैयाि ने किा- "हकसी व्यस्ट्क्त का पाप स्वयं उस व्यस्ट्क्त को िी भस्म कि देता िै; हकन्तु इस हमष्टान्न से इस घि को िी भस्म िोने दो।" उन्होंनें वि हमष्टान्न अपनी बिन के घि की छत पि फेंक हदया औि वि घि िल कि भस्म िो गया।

कुछ िी हदनों के बाद पहिणत्थ हपल्लैयाि की माता का देिान्त िो गया। उन्होंनें उनके दाि-संस्काि में कदली-स्तम्भ का उपयोग हकया। उनकी ज्ञानाहि-स्ट्क्त से उन कदली- स्तम्भों से िी अहग्न प्रज्वहलत िो गयी। वि विााँ से पिले हतरुहवडैमरुतूि औि तत्पिात् हतरुवलूिूि चले गये। उन्होंनें एक मृत व्यस्ट्क्त को पुनिीहवत कि हदया। वि कोन्फ्गुनाडु के प्रत्येक हिव-मस्ट्न्दि में गये। इसके पिात् वि तुलुव नाडु चले गये। तदुपिान्त वि हचदम्बिम् तथा कालिस्ट्स्त के सुप्रहसद्ध मस्ट्न्दिों में गये। विााँ उन्होंनें हिव के अनेक स्तोत्रों का गायन हकया।

पहिणत्तुथु हपल्लैयाि भिहगरि िािमिाा के नगि में गये। विााँ एक गणेि-मस्ट्न्दि में वि ज्ञान-हनष्ठा में प्रहवष्ट िो गये। उसी िात कुछ चोिों ने िािमिाा के िािप्रासाद को लूट हलया औि लौटते समय एक िीिक-िहित िाि भगवान् गणेि को अहपथत कि हदया। पहिणत्तुथु हपल्लैयाि भगवान् गणेि की प्रहतमा के हबलकुल हनकट बैठे हुए थे। अतः वि िाि उनके गले में आ हगिा। प्रातःकाल िब विााँ पुहलस अहिकािी पहुाँचे, तब उन्होंनें देखा हक उस संन्यासी के गले में िाि था। वे उन्हें चोि समझ कि िािमिाा के पास ले गये हिन्होंनें उन्हें सूली पि लटका देने का दण्ड हदया। स्वामी को सूली के स्तम्भके पास लाया गया; हकन्तु उस समय भी वि मुस्किा ििे थे। उन्होंनें यि हिव-गीत गाया - "मैं कुछ निीं किता। तुम्हािे आदेि के हबना एक पिमाणु भी गहतिील निीं िो पाता। ििीि-ग्रिण के पिात् मुझसे कोई पाप निीं हुआ िै। अपने पूवथिन्म के पाप के कािण िी आि मुझे यि हदन देखना पड़ गया िै।" इसी गीत की समास्ट्प्त के पिात् तत्क्षण सूली के उस स्तम्भ में आग लग गयी। नौकिों ने इस हवहचत्र घटना की सूचना िािमिाा को दे दी। िािमिाा इस घटना से आियथ के कािण स्तब्ध िि गये। वि नंगे पााँव दौड़ कि उनके चिणों पि िा हगिे। यि देख कि हक िािमिाा ज्ञान के उपयुक्त अहिकािी िैं, स्वामी ने उनको हतरुहवडैमरुतूि िाने का आदेि हदया।

पहिणत्थ हपल्लैयाि ध्यान के हलए हतरुहवडैमरुतूि के मस्ट्न्दि के पूवी िाि के समीप बैठा किते थे। ििा भिहगरि िािमिाा हभक्षाटन तथा गुरु-सेवा के पिात् मस्ट्न्दि के पहिमी िाि के हनकट बैठते थे। एक हदन एक छोटी कुहतया,

ि भूखी थी, भिहगरि के हनकट आ कि दुम हिलाने लगी। कुहतया पि दया कि भिहगरि ने हभक्षिा का िेषांि उसे दे हदया। इस प्रकाि वि कुहतया कुछ हदनों ंतक उन्हीं ंके साथ ििी। इस घटना से अवगत िो कि भगवान् पहिणतुथु हपलैलैयिा के पास गये। उन्होंनें स्वयं को कुषुहित बता कि उनसे हभक्षात्र की याचना की। पहिणतुथु हपलैलैयिा ने किा- "मुझ संन्यासी के पास एक कौपीन के अहतरिक्त औि कुछ भी निीं ंिै। िाँि पहिमी िाि पि एक गृिस्थ िािता िै। आप उसके पास िाइए। हभक्षा अवश्य हमलेगी।" भगवान् हिव ने भिहगरि के पास िा कि पहिणतुथु हपलैलैयिा के कथन की आवृहत्त कि दी। भिहगरि ने अत्यन्त उहिग्न िो कि किा- "इस पात्र तथा इस कुहतया ने िी मुझे गृिस्थ बना िखा िै।" इतना कि कि उन्होंनें हविक्त-भाव से उस पात्र को फेंक हदया; हकन्तु वि पात्र कुहतया के हिि पि िा हगिा हिसके फल-स्वरूप विीं ंपि उसका प्राणान्त िो गया। इसके पिात् भगवान् हिव अन्तिाथन िो गये।

कालान्ति में उस कुहतया ने किाी-िािे की पुत्री के रूप में िन्म-ग्रिण हकया। िब वि हववाि के योग्य हुई, तब िािा ने पुिोहितों ंसे उसके हववाि की व्यवस्था किने को किा। पुत्री ने किा- "मेि भाग्य में हववाि निीं ंिै। मेि गुरु हतरुहवैमरुतूि के हिव-मस्ट्न्दि के पहिमी िाि पि ध्यानस्थ िैं। मुझे मेि गुरु के पास भेि दीहिए।" तब िािा उसे भिहगरि के पास ले गये। भिहगरि ने अपनी समाहि भंग कि अपनी योग-दृहष्ट से देखा हक वि कुहतया उनके पास एक कन्या के रूप में पुनः आ गयी िै। वि उसका िाथ पकि कि उसे अपने गुरु पहिणतुथु हपलैलैयिा के पास ले गये। उन्होंनें गुरु से पूछा- "क्या िो कुहतया मेि हभक्षिा का िेषांि ग्रिण हकया किती थी, एक कन्या के रूप में िन्म-ग्रिण कि सकती िै?" पहिणतत्थ् हपलैलैयिा ने किा- यि सब भगवान् की इच्छा पि हनभिि िै।" इसके पिात् उन्होंनें हिव की प्राथथना की। तत्क्षण एक प्रोज्ज्वल प्रकाि का आहवभाथव िआ औि उस प्रकाि में वि कन्या तथा भदहगरि, दोनो अदृश्य िो गये। उनके साथ िी वि प्रकाि भी िाता ििा।

अन्ततः पहिणतत्थ् हपलैलैयिा हतरुवोहियिू चले आये। यि स्थान चेन्नई से बािि मील दूि िै। विााँ वि गेरिया िाहत के लिकों ंके साथ खेला किते थे। खेलते समय वि मानव-िीवन तथा अिंकाि की अथथिीनता का वणथन किने वाला हनम्नांहकत गीत भी गाया किते थे :

"कीचु कीचु अम्बलम्,
कीय कीय अम्बलम्,
मचुचु मचुचु अम्बलम्,
माय माय अम्बलम्।।"

"Keechu Keechu Ambalam,
Keeya Keeya Ambalam,
Machu Machu Ambalam,
Maya Maya Ambalam."

िन्म ग्रिण किते िी बिुिा 'कीचु कीचु' कि कि हचल्लाने लगता िै। पूणथ वयस्क िोने पि िब उसे हवश्वहवद्यालय की उपाहि तथा कोई पद प्राप्त िो िाता िै, तब वि अिंकाि-ग्रस्त िोकि-इिि भाग-दौि किने लगता िै। इसे 'कीय कीय' किते िैं। इसके पिात् उसके केि श्वेत िो िाते िैं औि वि वािथक्य को प्राप्त िो कि िगमगाते पैिों ंसे चलने
लगता िै। यि 'मचुचु मचुनु' िै। तत्पिात् उसकी मृतुयु िो िाती िै। इसे 'माय माय' किते िैं; हकन्तु वि उस 'अम्बलम्'
से वि अपरिहचत िी ििता िै हिसे हचद्दाकाि, हनिपेक्ष सत्ता या पिब्रह्म किते िैं।
इसके पिात पहिणतुथु हपलैलैयिा ने हतरुवोहियिू में एक हिवहलंग का रूप ग्रिण कि हलया। इस समय विााँ एक मस्ट्न्दि िै ििााँ तीथथयाहत्रयों ंका ताांता लगा ििता िै। पहिणतथ हपलेलेयिा की गणना दहक्षण भाित के पिम आदिणीय

सन्तों ंमें की िाती िै। उनके गीत अत्यन्त पे्रिणाप्रद िैं। वे पाठकों ंके मन में वैिाग्य-भाव को िीघ्र िी िाग्रत कि देते िैं।

त्यागििा

त्यागििा दहक्षण भाितीय तेलुगु ब्राह्मण थे। उनके हपता का नाम िामब्रह्मम् था। पंचापकेसन तथा िामनाथन उनके भाई थे। त्यागििा के केवल एक पुत्री थी हिसका नाम सीतालक्ष्मी था। उसके एक पुत्र था हिसका नाम उसके एक हपतामि के नाम पि त्यागििा िखा गया था।

त्यागििा दहक्षण भाित के एक मिान् संगीतज्ञ सन्त थे। वि दहक्षण भाितीय संगीत के िनक तथा भगवान् िाम के भक्त थे। उनके अहिकांि भस्ट्क्त-गीत भगवान् िाम के सुतुहतपिक गीत िैं िो अत्यहिक पे्रिणाप्रद तथा उत्थान में सिायक िैं।

कि िाता िै हक त्यागििा ने भगवान् िाम की सुतुहत में चौबीस सिस्र कीतथनों ंया गीतों ंकी िचना की िै। इनमें अहिकांि तेलुगु में तथा कुछ संसूकृत में िैं। आिुहनक युग के गायक उनके लगभग पााँच सौ गीत िी गाते िैं। िब भस्ट्क्त-गीतों ंका गायन श्रद्धा तथा हनष्ठापूवथक िोता िै, तब उनसे आि तत्क्षण िी आध्यास्ट्मिकता के उच्चति हििि की ओि आकषथण किने लगती िै। इस स्ट्स्थहत में वि भगवान् से तदू्रप िो िाते िैं हिससे उनको हदव्य साहिध्य तथा भाव-समाहि की प्रास्ट्प्त िो िाती िै।

त्यागििा का गायन हतरुवैयारु में देवी के मस्ट्न्दि में हुआ किता था। अपने दैहनक हभक्षाटन पि िाने के पूवथ वि देवी का पूिन हकया किते थे। समग्र दहक्षण भाित के लोगों ंके हलए वि एक सुपरिहचत सन्त थे। इसके अहतरिक्त अनेक िािा-मिािािा उनको अपने दिबािी संगीतज्ञ के पद पि प्रहतहष्ठत किना चािते थे; हकन्तु उन्होंनें उंछ-वृहत्त ग्रिण कि ली थी औि वि मात्र हभक्षा पि िीवन-यापन किते थे।

त्यागििा स्वामी एक अहतमानव थे। अनेक अवसिों ंपि उनको भगवान् िाम के प्रत्यक्ष दिथन िए थे। वि हिन हवग्रिों ंका पूिन हकया किते थे, एक बाि उनको हकसी ने नदी में फेंक हदया। एक वषथ के पश्चात् त्यागििा ने स्वप्न में भगवान् िाम का हनदेिन प्राप्त कि नदी के उस स्थान का पता लगा हलया ििााँ वे हवग्रि बालुका-िाहि में दबे हुए थे।

एक बाि पुदुक्कोट्टै के तत्कालीन िािा ने गायकों ंकी योग्यता का पिीक्षण एक हवहचत्र हवहि से हकया। िािा ने उनके बीच एक बुझा हुआ दीपक िख कि अपनी कला में हनष्णात उन गायकों ंको यि चुनौती दी हक वे हबना हकसी अहग्न-िलाका या हकसी अन्य सािन का उपयोग हकये केवल एक गीत की िस्ट्क्त से उस दीपक को ज्योहतत कि दें। त्यागििा स्वामी ने एक क्षण के हलए नाद का ध्यान कि ज्योहतः स्वरूहपणी िाग में गीत गाया औि दीपक स्वयं िल उठा। सभी लोग आश्चयथ चहकत िो गये।

एक बाि एक व्यस्ट्क्त हतरुपहत की तीथथ-यात्रा से लौटते समय एक मस्ट्न्दि के कुएाँ में हगि कि डूब गया हिसे त्यागििा स्वामी ने पुनिीहवत कि हदया। उन्हें भौहतक ििीि से अपनी आत्मा के हनष्क्रमण की हतहथ तथा घहटका का भी यथाथथ ज्ञान था। हदव्य ऋहष नािद ने उच्च कोहट के संगीत के प्रचाि-प्रसाि के हलए उन्हें 'स्विाणथवम्' नामक एक पुस्तक दी थी।

त्यागिगा में िन या समिा में हकसी पद की कभी कोई आकांक्षा न थी। वि हवनम्र थे। उन्होंनें हनिथनता का चयन स्वयं िी हकया था। एक बाि तंिावूि के तत्कालीन अहिपहत िािबािी ने उनके पास एक सन्देिवािक भेिा। सन्देिवािक ने उनसे किा- "कृपया, आप एक या दो ऐसे गीतों ंकी िचना कि दीहिए हिनमें िािा का प्रिस्स्त-गायन िो। इसके हलए वि आपको दि एकड़ भूहम तथा स्वणथ से भिी एक पेहटका प्रदान किेंगे।" त्यागिगा ने उत्ति हदया-"मैं कलुहषत िीवन व्यतीत किने वाले िािा की चाटुकारिता के हलए अपने गीतों ंका प्रयोग क्यों ंकरूं? उस अहभिप्त तथा घृहणत स्वणथ को हिक्काि िै िो पाप तथा हवषयासस्क्त में हलप्त िोने के हलए अहभप्रेरित किता िै। उन्होंनं कल्याणी में एक गीत गाया - "हनहि चाला सुखमा। इस गीत का अथथ िै- "भगवान् िाम की उपासना तथा स्वणथ, इन दोनों ंमें मित्ति सुख की प्रास्प्त हकससे िोती िै? िे मेिी अन्तिात्मा, तुम सत्य बोलो। दूि, मक्खन तथा दिी एवं िाम के ध्यान तथा भिनामृत के सिा-तत्त्व में अहिक मिुि तथा स्वाहदष्ट कौन िै? मन की पहवत्र गंगा में िुबकी या भ्रष्टाचाि के पंहकल कूप में िुबकी, इन दोनों ंमें अहिक स्वास्थ्यकि कौन िै? अिंकाि-ग्रस्त मनुर्ष् का प्रिस्स्त-गायन तथा दयालु एवं सवथिस्क्तमान् पिमात्मा का सुतुहत-गान, इन दोनों ंमें अहिक श्रेयस्कि कौन िै?" त्यागिगा की बातें सुनने के पिात् सन्देिवािक के कण्ठ से एक भी िब्द निीं ंहनकला। वि मौन िो कि विााँ से चला गया।

एक बाि टिावनकोि के तत्कालीन मिािािा ने उनके पास अपने सन्देिवािक को इसहलए भेिा हक वि उन्हें हकसी भी प्रकाि उनके पास ले आये। सन्देिवािक ने त्यागिगा को प्रलोभन देते हुए किा हक मिािािा उन्हें हवपुल िन-िाहि तथा पद-प्रहतष्ठा प्रदान किेंगे। हकन्तु त्यागिगा ने उससे किा- "मैं िन को मनुर्ष् की उिहत में बािक समझता हाँ। इससे मनुर्ष् को आनन्द की उपलस्ब्ध निीं ंिो पाती। इसके हवपिीत यि उसकी दुगथहत का कािण बन िाता िै। िन के हलए केवल अज्ञानी िन िी लालाहयत ििते िैं।" तत्पिात् उन्होंनें सकाल भैिहव िाग में गाये 'पदहव नी सद्भस्क्त' िीषथक गीत की उसके समक्ष व्याख्या किते हुए किा- "हिस मनःस्स्थहत में मनुर्ष् िाम के प्रहत पिोक्ष रूप से आस्थावान् िोता िै, विी िीवन की यथाथथ स्स्थहत िै। संसाि में ऐसे अनेक लोग िैं िो तोते की भााँहत वेद–िास्त्रों ं तथा उपहनषदों ंकी आवृहत्त कि सकते िैं; हकन्तु ऐसे लोग इनके हनहिताथथ के अनुसाि िीवन-यापन निीं ंकि पाते। क्या ऐसे व्यस्क्तयों ंके सम्बन्ध में यि किा िा सकता िै हक उन्हें अपनी यथाथथ स्स्थहत की प्रास्प्त िो चुकी िै? ििती पि ऐसे लोगों ंका अभाव निीं ंिै हिनके पास अपाि िन तथा अनेक पत्नी-पुत्र िैं एवं हिन्हें मिािािाओं ंकी मैत्री का भी सौभाग्य प्राप्त िै। क्या ऐसे लोगों ंने स्वयं को अपनी यथाथथ स्स्थहत में प्रहतहष्ठत कि हलया िै? समाि में तथाकहथत प्रहतष्ठा का उपभोग किने वाला िो व्यस्क्त अिुभ वासनाओं ंतथा घोि अज्ञान से आक्रान्त िै. उसके हवषय में क्या यि किा िा सकता िै हक उसे अपनी यथाथथ स्स्थहत की प्रास्प्त िो चुकी िै? निीं,ं निीं।ं िो िाम के प्रहत पूणथ रूप से आस्थावान् िै, िो भगवान् का भिन किता िै औि हिसे उनकी हदव्य कृपा की प्रास्प्त िो चुकी िै, केवल विी अपनी यथाथथ स्स्थहत में प्रहतहष्ठत िै।" सन्देिवािक विााँ से मौन िो कि चला गया।

हकतना हविाल हृदय था त्यागिगा का ! उन्होंनें िन तथा पद-प्रहतष्ठा को सदैव हतिसृकृत हकया। िो ईश्वि-साक्षात्काि के िन तथा आनन्द से कृतकृत्य िै, उसके समक्ष हत्रलोक की सम्पदा भी नगण्य िै। उदात्त आत्माओं ंकी स्स्थहत अवणथनीय िै।

त्यागिगा की समाहि कावेिी-तट पि स्स्थत हतरुवैयारु में िै िो तंिावूि से सात मील की दूिी पि िै। दहक्षण भाित के समस्त गायक यिााँ प्रहतवषथ िनविी मास में एकत्र िो कि अपाि िषथ के साथ उनके ियन्ती-समािोि का आयोिन किते िैं। १९४२ ई. की िनविी में उनकी ९५ वीं ंियन्ती मनायी गयी।

उन त्यागिगा स्वामी की महिमा में वृस्द्ध िोती ििे हिनके गीत श्रोताओं ंके हृदय में भस्क्त, उल्लास तथा आनन्द का आिोपण किते िैं।

नन्दनिा

नन्दनिा दहक्षण भित के एक दहलतवगीय परिवाि के सदस्य थे। वि हवनम्रता, ियथ तथा हनष्कपटता की प्रहतमूहतथ एवं हचदम्बिम् के भगवान् नटिाि के मिान् भक्त थे। हचदम्बिम को दहक्षण कािी किा िाता िै। विााँ एक हविाल मस्ट्न्दि िै। भगवान हिव का एक अन्य नाम नटिाि िै। इस मस्ट्न्दि में इन्हीं ंकी पूिा िोती िै। सवथसािाण को यि हवश्वास िै हक यहद कोई कुछ हदनों ंतक हचदम्बिम्-वास किे, तो उसके पाप नष्ट िो िायेंगे।

नन्दनिा एक ब्राह्मण भूहमपहत की भूहम पि भृत्य-रूप में कृहष-कमथ हकया किते थे। एक हदन उन्होंनें अपने स्वामी से भगवान् हिव के दिथन के हलए हचदम्बिम् िाने की अनुमहत मााँगी। इस पि उस उद्धत भूहमपहत ने उनको लांहछत-अपमाहनत किते हुए किा- "तुम िो नीच कुल में उत्पि दहलत िो, ब्राह्मणों ंके आिाध्य देवता हिव का पूिन किना चािते िो? यिााँ से चले िाओ औि िा कि अपने कुल देवताओं,ं भूत-प्रेतों ंका पूिन किो।" नन्दनिा भगवान् नटिाि के पिम भक्त थे औि श्रद्धा-भस्ट्क्त-पूवथक सदैव उनकी प्राथथना हकया किते थे। उनके बाि-बाि प्राथथना किने पि उस ब्राह्मण भूहमपहत ने उनसे किा- "ठीक िै। यहद तुम समय ििते २५० एकि भूहम पि िान का िोपण कि दोगे, तो मैं तुम्हें विााँ िाने की अनुमहत दे दूाँगा।" इससे नन्दनिा अत्यन्त िहषथत हुए। वि हचदम्बिम् में प्रहत वषथ िोने वाले उत्सव में सस्ट्म्हलत िोना चािते थे; हकन्तु कहठनाई यि थी हक उन्हें िान के िोपण का कायथ मात्र दो हदनों ंमें िी पूिा किना था। अपने को हिक्कािते हुए वि सािी िात भगवान् नटिाि की कृपा तथा उनके मागथदिथन के हलए उनकी प्राथथना किते ििे। भगवान् नटिाि ने एक चमत्काि पूणथ हवहि से अपने भक्त की सिायता कि दी। दूसिे हदन प्रातःकाल २५० एकि का समूपूणथ खेत िान के ििे-भिे पौिों ंसे लिलिा ििा था। ब्राह्मण भूहमपहत यि देख कि स्तब्ध िि गया औि समझ गया हक नन्दनिा एक मिान् भक्त िैं। उसने िीघ्र िी उन्हें हचदम्बिम् िाने की अनुमहत दे दी।

इस प्रकाि नन्दनिा को हचदम्बिम् िाने का सुअवसि प्राप्त िो गया; हकन्तु विााँ उन्हें एक अन्य समस्या से िूझना पड़ा। विााँ के मस्ट्न्दि के ब्राह्मण पुिोहित दीहक्षतिों ंने हनम्न कुल में उत्पि िोने के काि ण उन्हें मस्ट्न्दि-प्रवेि की अनुमहत निीं ंदी। भगवान् नटिाि ने उनके स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे किा- "पुिोहितो, तुम लोग हविुस्ट्द्धकिण के सािे आवश्यक अनुष्ठानों ंका आयोिन सम्पि किो। वि मेिा पिम भक्त िै। उसे मस्ट्न्दि में मेिे पूिन की अनुमहत प्रदान किो।"

ब्राह्मणों ंने भगवान् नटिाि के आदेिानुसाि सभी अनुष्ठानों ंको सम्पि कि नन्दनिा को मस्ट्न्दि के गभथ गृि में िाने की अनुमहत प्रदान कि दी। विााँ िा कि नन्दनिा ने नटिाि का पूिन-अचथन हकया। उस समय उनका हृदय हदव्यानन्द से परिपूणथ था। िीघ्र िी विााँ एक देदीप्यमान प्रकाि के दिथन हुए औि नन्दनिा अन्तिाथन िो गये। भगवान् नटिाि से उन्होंनें तादात्म्य स्थाहपत कि हलया था।

भगवान् को उच्चकुलोत्पि ब्राह्मणों ंतथा हनम्नकुलोत्पि दहलतों ंमें भेद-दिथन निीं ंिोता। वि तो बस हनष्कपट भस्ट्क्त के भूखे िैं। मस्ट्न्दि के ब्राह्मण पुिोहितों ंकी अपेक्षा नन्दनिा उनको अहिक हप्रय थे। भस्ट्क्त के क्षेत्र में िाहतगत, हसद्धान्तगत तथा वणथगत भेद के हलए कोई स्थान निीं ंिोता। भस्ट्क्त-भाव से परिपूणथ कोई भी व्यस्ट्क्त भगवान् का हप्रयपात्र िै।

भिाचलम् िामदास

भिाचलम् के िामदास श्रीिाम के पिम भक्त तथा सन्त कबीि के समकालीन थे। वि िैदिाबाद, दहक्षण भाित में भिाचलम् के तिसीलदाि थे। उनको गोपिा के नाम से भी िाना िाता था।

गोपिा एक नैहष्ठक वैष्णव आन्ध्र ब्राह्मण हलंगिा के पुत्र थे। हलंगिा िाम-भक्त तथा उस क्षेत्र के एक लोकहप्रय व्यस्ट्क्त थे। उन हदनों िैदिाबाद का िासक हनिाम तानीिा था। वि अपने िाज्य का िासन मिान् अकबि की भााँहत अत्यन्त िाहमथक सहिष्णुता के साथ किता था। उसके दो मन्त्री, अक्किा तथा मादिा भी हलंगिा के िी नैहष्ठक ब्राह्मण परिवाि के सदस्य थे।

िैदिाबाद का यि तानीिा अपने पूवथ िन्म में वािाणसी का एक हनिथन ब्राह्मण था। यि कुष्ठिोगग्रस्त ब्राह्मण वषों तक वािाणसी की गहलयों में घूमता तथा अत्यहिक श्रद्धा-भस्ट्क्त के साथ भगवान हिव का पूिन-अहभषेक किता िि; हकन्तु उसे भगवान के दिथन निीं िो सके। इससे क्रुद्ध िो कि उस ब्राह्मण ने हिव-हलंग के ऊपि अपना पात्र फेंक हदया। भगवान् हिव ने उसके समक्ष प्रकट िो कि उससे किा हक अपनी उत्कट भस्ट्क्त के कािण अपने अगले िन्म में वि एक िािकुमाि के रूप में िन्म ग्रिण किेगा। उन्होंने यि भी किा हक उसके स्वभाव में क्रोि के समावेि के कािण उसे मुस्ट्क्त निीं प्राप्त िो सकेगी। इसके पिात् भगवान् हिव ने उससे किा हक अगले िन्म में िब वि िासक िोगा, तब वि श्रीिाम के रूप में दिथन दे कि उसको पहवत्र कि देंगे।

भिाचलम् हनिाम के िाज्य के अन्तगथत था (आिकल आन्ध्र प्रदेि के खम्मम् हिले में िै) औि एक तीथथस्थान के रूप में दूि-दूि तक प्रहसद्ध था। विााँ िाम, लक्ष्मण, सीता तथा िनुमान् का मस्ट्न्दि था। मध्य युग तक इसकी दिा सन्तोषिनक थी; हकन्तु िीिे-िीिे यि िीणाथवस्था को प्राप्त िोने लगा। इस प्रकाि मूलतः पल्लवों द्वािा हनहमथत इस मस्ट्न्दि का मुस्ट्स्लम आक्रमण के पिात् हवध्वंस िो गया।

गोपिा की पत्नी का नाम कमलिा था। वि उसके साथ गोलकोण्डापल्ले में भगवान् का भिन-कीतथन हकया किते थे। एक हदन इनसे कबीिदास की भेंट िो गयी हिन्होंने भगवान् िाम के प्रहत उनकी आत्यस्ट्न्तक भस्ट्क्त देख कि उन्हें भगवान् िाम के इस ताक-मन्त्र की दीक्षा दे दी :

"श्री राम राम रामेडि रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम ततुल्यों रामनाम वरानने ।।"

उस समय से गोपिा ने कबीि द्वािा प्रदत्त मन्त्र के िप के साथ स्वयं को भगवान् के भिन-पूिन में पूणथतः संलग्न कि हदया। पहत-पत्नी दोनों प्रहतहदन नाम-स्मिण, कीतथन तथा िरि-भिन में अपना िीवन व्यतीत किने लगे। इसके फल-स्वरूप उन्हें उन लोगों की िुभकामनाएाँ प्राप्त िोने लगीं िो उनके प्रहत अपनी श्रद्धा पिले िी अहपथत कि चुके थे। अपने हदव्य उद्देश्यों के प्रचाि-प्रसाि में गोपिा हितना िन व्यय किते थे, वि उनकी आय के अनुरूप निीं था।

एक हदन िब लोग अत्यन्त िषोल्लास के साथ िामनवमी पवथ के दिवें हदन का उत्सव मना ििे थे. गोपिा का अल्पवयस्क पुत्र गिम चावल के पानी से भिे पतीले में हगि गया हिसके परिणाम स्वरूप उसकी मृत्यु िो गयी। कमलिा ने दिौ कि उसके िव को गोपिा तथा अन्य लोगों की अनहभज्ञता में चटाई में लपेट हदया। िब गोपिा भिोन समाप्त कि घि के भीति पहुाँचे, तब अपनी आन्तरिक वेदना को हनयस्ट्न्त्रत किने में असफल कमलिा फूट-फूट कि िोने लगी। पुत्र के िव को श्रीिाम के हवग्रि के समक्ष िख कि गोपिा उनकी प्राथथना किने लगे। कुछ िी देि के बाद माता-हपता तथा विााँ उपस्ट्स्थत अन्य लोगों ने आियथ चहकत िो कि देखा हक बालक पुनिीहवत िो गया िै औि उसे देखने से ऐसा लग ििा था मानो वि प्रगाढ़ हनिा से िागा िो।

अब श्रीाम के प्रहत िामदास की भस्ट्क्त में अहिकाहिक वृस्ट्द्ध िोती गयी ऄौ वि इसी िन्म में उनके दिथन के हलए पूवाथपेक्षा ऄौ अहिक आतुि िो उठे। वि कबीि के पास गये। कबीि ने उनसे किा हक भगवान् उन्हें अगली िात दिथन देने वाले िैं। यि सुन कि िामदास घि लौट आये। घि आ कि उन्होंनें अपने उस कमिे को कलिाक हवहि से सािया-सँवािा हिसमें प्रभु का प्रवेि िोने वाला था। वि उनकी प्रतीक्षा में सािी िात िागते ििे। अिथिाहत्र के पिात् उस कमिे में एक भैंसे ने प्रवेि हकया ऄौ अपने ििीि पि लगे पंक से उस कमिे को भी पंहकल कि हदया। भैंसे के इस कुकृत्य से कुरुद्ध िो कि गोपिा ने अपने मुहष्टका-ििाि से उसे बािि हनकल हदया। दूसिे हदन कबीि के पास िा कि उन्होंनें उस घटना का वणथन हकया। सब-कुछ सुन कि कबीि ने उनसे किा हक उन्होंनें एक बहुमूल्य अवसि गँवा हदया िै; क्योंहक उस भैंसे का रूप ग्रिण किके स्वयं भगवान् उनके कमिे में आये थे। यि सुन कि गोपिा को अत्यहिक पिात्ताप हुआ। कबीि ने उनसे किा हक अपने मूखथतापूणथ कृत्य के प्रायहित्त के हलए उनको प्रहतहदन भिाचलम् के मस्ट्न्दि की परिक्रमा किनी चाहिए। इस प्रकाि गोपिा अपनी पत्नी के साथ भिाचलम् में िा कि बस गये ऄौ विाँ प्रहतहदन मस्ट्न्दि की परिक्रमा किने लगे।

भिाचलम् में वि िास्ट्न्तमय सुखी िीवन व्यतीत किने लगे। उनका भस्ट्क्त-भाव भी हनिन्ति वृस्ट्द्ध को प्राप्त िोता गया; हकन्तु उनकी आय में वृस्ट्द्ध के स्थान पि िास िोने लगा हिसके परिणाम स्वरूप वि िीहवकोपािथन के हकसी सािन की खोि में लग गये। अथाथभाव से हववि िो कि वि हकसी नौकिी की ऄािा में अक्किा, मादिा के पास गये। ये दोनों ंउनके चाचा थे ऄौ िैदिाबाद में ििते थे। विाँ उनकी ऄािा पूणथ हुई। स्वयं तानािा ने प्रसन्नतापूवथक उन्हें भिाचलम् का तिसीलदाि हनयुक्त कि हदया। तिसीलदाि के पद पि हनयुक्त िो कि गोपिा ने अपना कायथ-भाि सँभाल हलया। उनके कायथ से हनिाम पूणथतः सन्तुष्ट था। स्थानीय लोग भी उनके कायथ से अत्यन्त िहषथत थे। अपने हनष्पक्ष हनणथय तथा िािकोष में िािस्व िमा किने में अपनी हनयहमतता से उन्होंनें हनिाम का हवश्वास िीत हलया ऄौ िनता के हलए भी वि पिम आदिणीय िो गये; हकन्तु िाज्य के प्रहत उनकी कतथव्य-हनष्ठा भगवान् िाम के प्रहत उनकी प्रगाढ़ भस्ट्क्त में कभी बािक हसद्ध निीं ंहुई।

एक हदन वि भिाचलम् के मस्ट्न्दि की िीणाथवस्था से इस सीमा तक प्रभाहवत हुए हक उन्होंनें मन-िी-मन इसके पुनहनथमाथण का हनिय कि हलया। इसके हलए उन्होंनें िाज्य के िािस्व के उपयोग का भी संकल्प कि हलया। अपनी इस इच्छा से उत्प्रेरित िो कि उन्होंनें िीणाथवस्था को प्राप्त उस मस्ट्न्दि को नया आकाि-प्रकाि देने में िोने वाले व्यय के आकलन के हलए अपने ऄौनस्थ कमथचारियों ंको आदेि दे हदया। इस आकलन के अनुसाि इसमें अनुमानतः आठ लाख ििा (Varahas) लग सकते थे। गोपिा को यि देख का ऄाियथ हुआ हक िािकोष में आवश्यकता से अहिक िन था। परिणाम की हचन्ता न कि उन्होंनें मस्ट्न्दि के पुनहनथमाथण, देवताओं ंके हलए नये आभूषणों ंके क्रय तथा कुम्भाहभषेक के भव्य अनुष्ठान में िोने वाले व्यय के हलए िािकोष के एक-एक पैसे के उपयोग का हनिय कि हलया। परिश्रमी तथा उत्सािी श्रहमकों ंके सियोग ने मस्ट्न्दि के पुनहनथमाथण में समय-सम्बन्धी एक कीहतथमान प्रस्तुत कि हदया। इसके पिात् गोपिा ने कुम्भाहभषेक का अनुष्ठान भव्य िीहत से सम्पि हकया। हकन्तु इसके पिात् उन्होंनें कोष को पूणथतः रिक्त पाया। िैसा हक उनका पूवाथनुमान था, वि उस वषथ समयानुसाि िािस्व निीं ंिमा कि पाये। इसके परिणाम स्वरूप भिाचलम् तिसील पि साढे सात लाख ििा का बकाया चढ़ गया। विाँ उनके दो चाचा मन्त्री थे; हकन्तु िब तानािा ने इस बकाया िन को िीघ्राहतिीघ्र िमा किने को किा, तब वे दोनों ंभी उनकी कोई सियता न कि सके। अतः तानािा ने उन्हें उस समय तक कठोि कािावास का दण्ड भोगने का आदेि हदया, िब तक वि बकाया िन िमा निीं ंकि देते। उन्हें कािागृि में डाल हदया गया।

गोपिा कािागृि में बािि वषथ तक पड़े ििे। इस बीच हृदयिीन िेलिों ंने उन्हें असिनीय यन्त्रणाएँ दीं।ं उन पि कोड़े बिसाये गये ऄौ उनको कई हदनों ंतक भूखा िखा गया। संक्षेप में यिी किा िा सकता िै हक उन्हें बािि वषथ की इस अवहि में मृत्यु के अहतरिक्त सभी प्रकाि के दण्ड भोगने पड़े।

किागृ की यन्त्रणाओं ंतथा कहठनाइयों ंको सि पाने में असमथथ गोपिा ने हवषपान िाा इस नश्वि िीिी के परित्याग का हनिय कि हलया। एक हदन अपने पाश्वथ में हवषपात्र िख कि वि भगवान् िाम की प्राथथना किने लगे। इसी बीच गत िबिा वषों में गोपिा िाा झेली गयी हवपहत्तयों ंपि हवचाि कि भगवान् िाम लक्ष्मण के साथ िाि ात को भिाचलम् के तिसीलदिा के हसपाहियों ंके रूप में तानीिा के व्यस्क्तगत कक्ष में िा पहुँचे। दो हसपाहियों ंके आकस्स्मक आगमन से चहकत तानीिा ने अपनी पत्नी को हकसी अन्य कक्ष में चले िाने को किा िाि इसके पित् उन हसपाहियों ंसे पूछा हक वे कौन िैं िाि इस समय यिाँ उनके आकस्स्मक आगमन का उद्देश्य क्या िै? िामचि िनै उसे अपना नाम िामहसं तिथा लक्ष्मण का नाम लक्ष्मणहसं बिताया। उन्होंनें अपने-आप िाि लक्ष्मण को भिाचलम् के तिसीलदिा के हसपिी बताते हुए किा हक िाज्य का िो िन गोपिा पि बकाया था िाि हिसके हलए वि इतने हदनों ंतक किावास का दण्ड भोगते िि, वे उसी को चुकाने आये िैं। उन्होंनें तत्क्षण उनकी मुस्क्त की माँग भी कि दी।

तानीिा के सभी प्रश्नों ंके उत्ति देने के पित् िामचि िी ने उसके समक्ष सोने की िमिों उाँलि दीं।ं गोपिा को िाज्य को हितना देना था, उसकी अपेक्षा इन िमिों ंका मूल्य अहिक था। िामचि िी ने पिले से िी तैयिा की गयी एक िािकीय िसीद तानीिा को उसके िस्ताक्षि तथा उस पि िािकीय िमिो लगाने के हलए दे दी हिससे बकाया नि के भुगतान को प्रमाहणत हकया िा सके। इसके साथ िी उन्होंनें उसे एक कलम तथा उस िसीद पि अंहकत किने के हलए िािकीय िमुि भी दे दी। विाँ िोनाई निीं ंथी; हकन्तु िामचि िी के अनुिोि पि उगलदान में पिी पान की पीक में कलम िाल कि तानीिा ने उस िसीद पि अपने िस्ताक्षि कि हदये। बकाया िन के भुगतान की सिीद प्राप्त कि तथा तानीिा से गोपिा की मुस्क्त की माँग कि िामहसं िाि लक्ष्मणहसं अन्तिाथन िो गये। उन्होंनें उसी िात तानीिा िाा िस्ताक्षरित िसीद किागिा में दण्ड भोग िि गोपिा को दे दी। दूसिे हदन प्रातःकाल तानीिा ने गोपिा के प्रहत हकये गये अपने दुव्यथविाि पि पित्ताप किते हुए गोपिा से क्षमा-याचना की िाि उन्हें किागिा से ससिान मुक्त कि हदया। तत्पित् उसने उनसे उन हदव्य सन्देिवािकों ंके दिथन किाने की प्राथथना की हिनका गत िाहत्र उसके व्यस्क्तगत कक्ष में आकस्स्मक आगमन हुआ था। गोपिा से अपने पूवथ-पद पि पुनः प्रहतहष्ठत िोने का आग्रि हकया गया हिससे भिाचलम् के हनवाहसयों ंको अत्यहिक िषथ हुआ। एक िािाज्ञा के अनुसिा उन्हें उक्त पद पि स्थायी रूप से हनयुक्त कि हदया गया। तानीिा, उसके परिवाि तथा अन्य लोगों ंिाा गौिवास्न्वत िो कि गोपिा िूमिाम के साथ भिाचलम् लौटे िाि विाँ उन्होंनें तिसीलदिा का कायथ-भिा ग्रिण कि हलया।

एक हदन िब लोग उन्हें मस्स्िद में प्राथथना किते देख कि आनन्द-हवह्वल िो िि थे, एक हदव्य वाणी िाा संसिा को यि सूहचत हकया गया हक अब गोपिा को भक्त िामदास के नाम से अहभहित हकया िायेगा। कुछ वषों तक िास्न्त तथा आनन्द से परिपूणथ िीवन व्यतीत किने के पित् भिाचलम के सन्त-तिसीलदिा िामदास अक्षय िास्न्त से पूणथ ईश्वि के उच्चतम िाम में चले गये। इसके पित् उनकी पत्नी तथा तानीिा को भी भगवान् िाम की कृपा से िाश्वत िास्न्त की उपलस्ब्ध िुई।

एक हदन िामदास ने कबीि से पूछा हक भगवान् िाम का भक्त िोते हुए भी उन्हें इतने कष्ट क्यों ंभोगने पिे? कबीि ने उनके पूवथ-िन्म के एक िस्य को अनावृत हकया हिसके अनुसिा अपने पूवथ िन्म में वि एक ब्राह्मण थे। उनके पास एक पालतू तोता था हिसे वि िात-हदन हपंिि में बन्द िखते थे। मुक्त आकािा उसके हलए स्वप्न था। उनके प्रहिक्षण के फल-स्वरूप वि तोता िाम-नाम की िट लगाता िता था। उस तोते को हपंिि में आबद्ध किने के किाण िामदास को िबिा वषों तक किागिा की यन्त्रणा भोगनी पिी।

हवल्वमंगल

हवल्वमंगल के हपता िामदास एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण थे िो दहक्षण भित में कृष्णवेणी नदी के तट पि स्ट्स्थत एक छोटे
से गााँव में िि ते थे। उन्होंनें हवल्वमंगल को िाहमथक प्रहिक्षण दे कि उन्हें िास्त्ों ंके अध्ययन के हलए उते्प्रेरित हकया;
हकनु्तु हवल्वमंगल की हकिोिावस्था में िी उनका दिेान्त िो गया। उनकी अनुपस्ट्स्थहत में अब हवल्वमंगल को हनयस्ट्न्त्रत किने वाला कोई निीं ंिि गया हिसके फल-स्वरूप उनके चरित्र में नैहतक मूल्यों ंके हलए कोई स्थान न ििा। उनके सिचि भी दृष्ट प्रकृहत के थे। उत्तिाहिकािी िोने के कािण हपता के दिेान्त के पिात् अब उनकी सम्पहत्त के एकमात्र स्वामी थे। उन्होंने हमत्रों ंके साथ हचन्तामहण नामक एक नतथकी का नृत्य देखा। वि उस पि आसक्त िो उठे। उन्होंनें अपनी सािी सम्पहत्त उसे दे दी। वसु्तुतः वि उसके दास िो गये।

एक हदन हवल्वमंगल अपने हपता की पुण्यहतहथ पि उनका श्राद्ध-कमथ कि ििे थे; हकनु्तु उस हदन भी वि हचन्तामहण का िी हचन्तन कि ििे थे। उसेको श्राद्ध-कमथ का हनष्पादन हनरुत्सािी मन तथा असम्बद्ध हवहि से िी हकया। एक क्षण के हलए भी उसका पाथथक्य सिन निीं ंिो पाता था। उन्होंनें श्राद्ध-कमथ के प्रहत उनके मन में श्रद्धा के भाव निीं ंथे। उस पहवत्र अवसि पि भी वि उसके दिथन के हलए लालाहयत िो उठे : हकनु्तु एक नदी को पाि किने के बाद िी उसके घि पहुंचा िा सकता था। अन्धकाि छाया हुआ था औि झंझावात, मेघ गिथन तथा तहित्पात के कािण मागथ अत्यन्त दुगथम िो गय था; हकनु्तु हवल्वमंगल को इसकी हचन्ता न थी। वि हकसी भी मूल्य पि उम नतथकी से हमलने के हलए कहटबद्ध थे। नदी के पाि िाने के हलए वे एक नाहवक के पास गये; हकनु्तु उसने उनके अनुिोि को स्पष्ट िब्दों ं में अस्वीकाि का हदया। तब वि नदी में कूद गये। सौभाग्य से उन्हें एक महिला का िव हमल गया हिसे उन्होंनें लकिी का कुन्दा समझ हलया औि हिसके सिािे वि हकसी प्रकाि उस पाि सुिहक्षत रूप से पहुाँच गये। वि नदी पाि किने के प्रयास में पूणथतः हनवथस्त् िो गये थे। उन्होंनें हचन्तामहण के घि पहुाँच कि उसका िाि खटखटाया। "काम अन्धा िोता िै" - यि किावत पूणथतः हनभाथन्त िै। कामातुि व्यस्ट्क्त में न भय िोता िै न लज्जा िोती िै : **"कामातुिाणां न भयं न लज्जा।"**

हचन्तामहण को उस हदन हवल्वमंगल के आने की आिा न थी; क्योंहक वि हदन उनके हपता के श्राद्ध का हदन था। अतः भीति से िाि बन्द कि वि सोने चली गयी थी। हवल्वमंगल ने उसे बाि-बाि पुकािा; पि उन्हें कोई उत्ति निीं ं हमला। तब वि हकसी वसु्तु को िस्सी समझ कि उसके सिािे दीवाल पि चढ़ गये। हकसी प्रकाि उसके ियन कक्ष में िा कि उन्होंनें उसे िगाया। हचन्तामहण उन्हें उस घृहणत तथा कुस्ट्त्सत दिा में देख कि स्तब्ध िि गयी। उनके ििीि से घृणास्पद दगथन्ध आ ििी थी। बािि िा कि हचन्तामहण ने हविालकाय कोबिा सपथ देखा। हवल्वमंगल ने इसी को िस्सी समझ हलया था। करुणा-हवगहलत स्वि में उसने उनकी भत्सथना किते हुए किा- "तुमको हिक्काि िै। िे अभागे, तुम स्वयं को एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण का पुत्र समझते िो। हकतनी लज्जा की बात िै यि! तुमने अपने परिवाि को कलंहकत कि हदया िै। इस पुण्य हतहथ की पहवत्रता की िक्षा किने के स्थान पि तुम आि इस घृहणत दिा में मेिे पास आ पहुाँचे। क्या तुम मूखथ तथा घृणा के पात्र निीं ंिो? मल-मूत्र से समूपूरित मेिे इस अस्ट्स्थ-चमथ-िक्त-हनहमथत ििीि से क्यों ंसम्मोहित िो ? वि घृहणत िव हिसके सिािे तुमने नदी को पाि हकया औि हिसकी दुगथन्ध अब तुम्हािे हलए असिनीय िो गयी िै, अभी कल तक मेिे घृहणत ििीि, हिससे तुम इतना अहिक पे्रम किते िो, से अहिक आकषथक था। भगवान् सौन्दयथ के उत्स या यों ंसमझ लो हक अप्रहतम सौन्दयथ के मूतथ रूप िैं। यहद तुम्हािे हृदय में उनके दिथन की तीव्र इच्छा िोती, तो तुम्हें बहुत पिले िी मुस्ट्क्त तथा िाश्वत आनन्द की प्रास्ट्प्त िो गयी िोती।"

हचन्तामहण के इन िब्दों ंसे हवल्वमंगल का हृदय हवगहलत िो गया। उनकी आाँखें खुल गयीं।ं उन्हें अपनी बाल्यावस्था के उन हदनों ंका स्मिण िोने लगा, िब वि िाहमथक ग्रन्ों ंका अध्ययन हकया किते थे। हफि उन्हें अपने हपता के प्रहत अपनी श्रद्धा का स्मिण हुआ। वि फूट-फूट कि िो उठे। उनके ज्ञान-चकु्षु खुल गये औि अब उनमें

हदव्य पे्रेम िाग्रत िो उठा। उन्होंनें हचन्तामहण को हृदय से अपना गुरु मान हलया। उन्होंनें किा- "माँ तुमने मेि भ्रम का हनिाकिण कि हदया िै। मैं तुम्हिाा कृतज्ञ हाँ। तुम मेिी आध्यास्ट्कि गुरु िो।" उसकी चिण-वन्दना कि वि विााँ से चले गये औि भगवान् की खोि में इतस्ततः भ्रमण किने लगे।

कुछ हदनों ंके पित् उन्होंनें मागथ में एक सौन्दयथ-मस्ट्ण्डत महिला को देखा। उनकी वासना िाग्रत िो उठी औि उनका मन उहिलत िो गया। उनकी आँखें उस पि िी हटकी। उन्होंनें उसके घि तक उसका अनुगमन हकया हकन्तु वि घि के भीति िा कि अदृश्य िो गयी। वि उदास मुिा में बिामदे में बैठ गये। गृिपहत वहणक था। उसने उनके पास िा कि विााँ उनके आगमन का किण पूछा। हवल्वमंगल ने उसके समक्ष अपने आगमन के उदे्देश्य का यथाथथ वणथन कि हदया। उन्होंनें उससे किा हक वि उस महिला को उनके सुिख बस एक बाि ला दे हिससे वि उसके मुख-मण्डल को देख कि स्वयं को तृप्त कि सकें। वहणक सज्जन था। वि हवल्वमंगल के सन्तोष के हलए उसे ले आने के हलए भीति चला गया। वि महिला उसकी पत्नी थी।

अब दयामय भगवान् हवल्वमंगल की िक्षा के हलए विााँ आ गये। उन्होंनें उनके मन को ज्ञान तथा पित्ताप की भावना से समूपूरित कि हदया। हवल्वमंगल हनकटस्थ बेल-वृक्ष से दो काँटे तोि़ लाये। वि वहणक अपनी पत्नी को ले कि आ गया। हवल्वमंगल ने उसे देखा औि अपनी भत्सथना किते हुए किा- "िे दुष्ट नेत्र-युगल, तुम्हिी िी किण मैं पथभ्रान्त हुआ। मैं इसके हलए तुम्हें कठोि दण्ड दूँगा।" यि प्रकिण ईसा के 'पवथत पि के उपदेि' से हमलताि्ुलता िै हिसमें किा गया िै- "यहद तुम्हिी नेत्रों ंसे अहनष्ट िोता िै, तो तुम उसे बािि हनकाल दो। यहद तुम्हिी िाथों ंसे अहनष्ट िोता िै, तो उन्हें काट दो।" हवल्वमंगल ने उन काँटों ंसे अपनी आँखें फोि़ लीं ंहिसके फल-स्वरूप उनसे अहवित िक्त-वषथण िोने लगा; हकन्तु हवल्वमंगल आनन्दाहतिेक में नृत्य किते हुए उच्च स्वि से भगवान् के नाम का कीतथन किने लगे। भगवत्कृपा से अब उनका हृदय हनष्कलुष िो गया था। भगवान् के दिथन की उनकी लालसा अत्यहिक तीव्र िो गयी। उनका हृदय हविविाहग्न में िलने लगा। वि हदन-प्रहत-हदन क्षीणकाय िोते गये। उनके नेत्रों ंसे अश्रुु-वषथण िोता िििता औि वि हबना अिि्ल के वन में घूमते िििते।

एक बाि भगवान् कृष्ण एक ग्वाल-बाल के रूप में उनके समक्ष प्रकट हुए। उन्होंनें हवल्वमंगल से किा- "मैं आपके हलए कुछ हमष्टिा तथा फल लाया हाँ। कृपया इसे स्वीकाि कीहिए।" यि सुन कि हवल्वमंगल को अत्यहिक िषथ हुआ। उन्होंनें उस बालक से पूछा- "हप्रय बालक, तुम्हिाा नाम क्या िै? तुम िििते किााँ िो? किते क्या िो?" बालक ने उत्ति हदया- "हप्रय मिोदय, मैं हनकट िी िििता िैं। मेिा अपना कोई नाम निीं ंिै। आप मुझे हकसी भी नाम से सम्बोहित कि सकते िैं। मैं गायें चिाता िै। िो मुझसे पे्रेम किते िैं. उनसे मैं भी पे्रेम किता हाँ। मैं प्रहतहदन यिााँ आ कि आपको भोिन किाऊँगा।" बालक के मिििोक िब्दों ंसे हवल्वमंगल अत्यन्त आनस्ट्न्दत हुए। वि यि निीं ं िानिते थे हक बालक स्वयं श्रीकृष्ण िै। बालक ने उनका हृदय िीत हलया था। एक बाि विााँ पुनः आ कि उसने उनसे पूछा- क्या आप मेिे साथ वृन्दावन चल सकेंगे?"

वृन्दावन का नाम सुन कि हवल्वमंगल को अपाि िषथ हुआ। उन्होंनें किा- "हप्रयवि, मैं तो अन्धा हाँ। वृन्दावन कैसे िा सकूाँगा?" बालक ने किा- "हप्रय मिोदय, आप इस लकुटी का एक हसिा पकि़ लीहिए। मैं इसका दूसिा हसिा पकि़ कि आपका मागथ-दिथन किता चलूाँगा।" हवल्वमंगल सिमत िो गये। भगवान् कृष्ण लकुटी के मिििो उनका पथ-प्रदिथन किते िििे। वि हकतने दयालु िैं! बालक ने किा- "अब िम लोग वृन्दावन आ गये िैं।" हवल्वमंगल ने इसे बालक की हवनोद-वृहत्त िी समझा। उन्हें उसके िब्दों ंपि हवश्वास निीं ंहुआ। उन्होंनें उसे पकि़ हलया। उस चुम्बकीय स्पिथ से उनके ज्ञान-चकुषु खुल गये औि वि िोमांहचत िो उठे। उन्होंनें अपने पे्रेमपात्र भगवान् कृष्ण का देदीप्यमान मुख-मण्डल देख हलया। उन्होंनें किा- "भगवन्, मैं वषों के संघषथ के पित् आपको पाने में समथथ िो सका हाँ। मैं अब आपको अपने से हवलग निीं ंिोने दूँगा।" भगवान् कृष्ण ने एक िि़के झटके से अपने-आपको उनके बन्धन से मुक्त कि हलया।

हवल्वमंगल ने किा- "ि कृष्ण, तुमने अपने-आपको मेि भुि-बन्धन से तो मुक्त कि हलया; हकन्तु मैं तुमको चुनौती देता हाँ हक तुम स्वयं को मेि हृदय से हनकाल कि तो देखो। मैंने तुम्हें वाििाँ भली-हवहि प्रहतहष्ठत कि हलया िै।" भगवान् कृष्ण ने किा- "मेि हप्रय हवल्वमंगल, मैं हनहवथवाद रूप से तुमसे पिाहित िो चुका हाँ। मुझे एकमात्र यथाथथ प्रेम की िोि से िी बााँिा िा सकता िै। तुमने मुझे इसी िोि से बााँिा िै। मैं इससे मुक्त कैसे िो पाऊाँगा ! मैं तो तुम्हािा दास हाँ।"

भगवान् कृष्ण ने हवल्वमंगल के नेत्रों ंपि अपनी उाँगहलयााँ फेि दीं ंहिससे उनको उनकी नेत्र ज्योहत पुनः प्राप्त िो गयी। उन्होंनें भगवान् के सौन्दयथ-मस्ट्ण्डत मुख-मण्डल को देखा औि वि उनके चिण-कमलों ंके सम्मुख साश्रु-नयन अवनत-िहि िो गये।

भगवान् कृष्ण ने उन्हें उठा कि आहलंगनबद्ध कि हलया। नतथकी बाला हचन्तामहण, वि वहणक तथा उसकी पत्नी - इनको भी भगवान् के दिथन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

हवल्वमंगल, हिन्हें सूिदास भी किा िाता िै, ने अपने िीवन के िेष हदन भस्ट्क्त तथा भगवान् के नाम की महिमा के प्रचाि-प्रसाि में व्यतीत हकये। उनके प्रेिणादायी गीतों ंको सम्पूणथ भाित में गाया िाता िै। अन्ततः वि िास्ट्न्त के िाश्वत तथा आनन्दमय पिम िाम में चले गये।

योगी वेमाि

जन्म िथा प्रारस्ट्म्भक जीवन

भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण किते िैं- "घोितम पाप में हलप्त व्यस्ट्क्त भी ज्ञान की नौका िािा अपने पाप-सागि के पाि उति सकता िै। उसके हलए कतथव्यहनष्ठा तथा िाश्वत िास्ट्न्त पूणथतः सम्भव िै।" वेमाि, अरुणहगरि तथा सन्त आगराइन के सम्बन्ध में यि कथन हनतान्त सत्य िै। अपनी युवावस्था में ये लोग पाप-कमथ में हलप्त थे; हकन्तु तत्पश्चात् उनकी गणना संसाि के प्रख्यात सन्तों ंमें िोने लगी। इससे पाहपयों ंमें इस उत्साि तथा आिा का संचाि िोता िै हक वे भी मिान् सन्त िो सकते िैं।

वेमाि का िन्म गोदाविी िनपद के एक समृद्ध परिवाि में १८२० ई. में हुआ था। उनके अग्रि का नाम िािा अनु वेमा िेड्डी था। वेमाि िेड्डी िाहत के थे।

िािा अन वेमा िेड्डी की पत्नी का नाम नसिाि था। वि सदाचारिणी, िमथपिायणा, दयालु, पिोपकारिणी तथा सत्यहनष्ठ महिला वेमाि की प्रथम गुरु थी। वेमाि के प्रहत उसका व्यविाि अत्यन्त स्नेिहसक्त था। वेमाि भी उसका आदि माता की भााँहत िी किते थे।

एक नतथकी वेमाि की िखैल थी। हदन-िात वि उसी के घि में ििते थे; हकन्तु नसिाि ने उन्हें उसके मोि-पाि से मुक्त किवा हदया। अतः उसको उनका गुरु किना युस्ट्क्तयुक्त िी िै।

हनस्ट्ष्क्रय वेमाि समय के सदुपयोग की कला से हनतान्त अनहभज्ञ थे; एक हदन वि िाज्य के सुनाि की दुकान में पहुाँच गये। वि अहभमाि िाज्य के हलए िेवलों ंका तक्षण कि ििा िै। वेमाि ने कुछ हदनों ंतक उसके कायथ का पयथवेक्षण हकया। उनका यि पयथवेक्षण कायथ कुछ हदनों ंतक इसी प्रकाि चलता ििा। एक हदन वि हदन-भि दुकान

में ि◌ी ि◌े। उन्होंनें अहभिाम से विाँ हवलम्ब से आने का किाण पूछा। अहभिाम ने किा- "स्वामी, मैं ब्राह्ममुहतथ में स्नान कि पूिन-अचथन तथा ध्यान किता हाँ। अतः मैं आपसे हवनम्र भाव से प्राथथना किता हाँ हक दिे से आने के हलए आप मुझे क्षमा किें।" वेमिा ने किा- "मैं इसे हकसी भी प्रकाि सिन निीं ◌ंकि सकता। अपना यि सािा काम तुम कुछ पिले समाप्त कि हलया किो औि यिाँ ठीक छि बिे आ िाया किो! इसके पिात् हवलम्ब के हलए मैं तुम्हें हकसी भी स्स्थहत में क्षमा निीं ◌ंकरूँगा।"

वेमिा के इस कठोि अनुिासन से िािा भी अवगत िो गये। उन्होंनें किा- "हकतनी हवहचत्र बात िै! वेमिा हवलम्ब से आने के हलए अहभिाम की भत्सथना किता िै। वि उसे क्षमा निीं ◌ंकि सकता। हकन्तु वि स्वयं िात-हदन वेश्या के घि में पड़ा ििता िै।"

िािा की इस हटप्पणी ने वेमिा के अिंकाि को आित कि हदया। अब उन्होंनें यि िानना चािा हक अहभिाम प्रातःकाल के प्रािस्म्भक क्षणों ◌ंमें क्या हकया किता िै। उन्होंनें हनिय कि हलया हक यहद उसने अपनी प्रातःकालीन चचाथ के सम्बन्ध में हमथ्या हवविण हदया िोगा, तो वि उसे दण्ड देंगे।

डिवयोगी द्वारा दीिा

वेमिा प्रातःकाल के प्रािम्भ में िी अहभिाम के घि के हनकट हछप कि बैठ गये औि विीं ◌ंसे उसकी गहतहवहि का हनिीक्षण किने लगे।

अहभिाम ब्राह्ममुहतथ में िय्या त्याग कि घि से एक मील दूि हनकल गया। िौचाहद से हनवृत्त िो कि उसने एक तालाब में स्नान हकया औि सूयथ भगवान् को नैवेद्य अहपथत किने के पिात् पद्मासन पि बैठ कि एक घण्टे तक ध्यान हकया। तत्पिात् हनकट की िी वाहटका से फूल ले कि वि एक गुफा में एक सन्त को अपनी श्रद्धा अहपथत किने चला गया। सन्त को लोग लस्म्बका हिवयोगी किते थे।

योगी को साष्टांग प्रणाम किने के पिात् उसने उनके चिणों ◌ंपि फूल अहपथत हकये। योगी ने उससे किा- "हप्रय हिष्य, मैं तुम्हािी सेवा तथा भस्क्त से अत्यन्त प्रसन्न हाँ। तुम कल प्रातःकाल यिाँ आ िाना। मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा। कल मुझे इस नश्वि ििीि का परित्याग किना िै।"

वेमिा ने हछपे-हछपे अहभिाम तथा योगी के बीच का यि संवाद सुन हलया। अहभिाम ने गुरु को िन्यवाद हदया। वि यि िान कि िषथ-हवह्वल िो गया हक वि अगले हदन दीक्षा ग्रिण किेगा। योगी से हवदा ले कि वि दुकान में चला गया। उस हदन वेमिा ने उससे दिे से आने का किाण निीं ◌ंपूछा। अहभिाम को इससे बहुत आियथ हुआ।

वेमिा ने दूसिे हदन हिवयोगी से स्वयं दीक्षा ग्रिण किना चािा। उसने एक ऐसी योिना बनायी हिससे अहभिाम अपने गुरु के पास न िा सके। उसने अपनी भाभी से किा हक वि अहभिाम को ऐसा आदेि दे हिससे हक वि दूसिे हदन दुकान पि ठीक छि बिे प्रातःकाल पहुँच िाये।

वेमिा की भाभी ने िािा से किा- "मेिा कणथफूल खो गया िै। कृपया आप अहभिाम को यि आदेि दीहिए हक वि प्रातःकाल तक कणथफूल बना दे। यि मुझे आठ बिे तक हकसी भी प्रकाि हमल िाना चाहिए।" िािा ने ऐसा िी हकया।

अहभिाम हिहविा में पड़ गया। यहद वि दूसिे हदन प्रातःकाल हिवयोगी के दिथन निीं ◌ंकिेगा, तो उसकी दीघथकालीन सेवा अथथिीन हसद्ध िो िायेगी। उसे गुरु का आदेि मानना चाहिए या िािा का, इस वैचारिक संघषथ के

किाण उसका मन उिेहलत िो उठा। गम्भीि हचन्तन के पिात् वि इस हनष्कषथ पि पहुँचा हक उसे विी काम किना चाहिए िो उसके िन्म तथा व्यवसाय के अिुरूप उपयुक्त िो। वि िि बिे दुकान में पहुँच गया। विाँ कणथफूल बना कि उसने िानी के पास भेि हदया।

वेमा ब्राह्ममुहतथ में िी उठ गये। हपछले हदन अहभिाम ने हिस तालाब में स्नान हकया था, उसी में उन्होंने स्नान हकया, हनकट की वाहटका से कुछ फूल चुने औि उन्हें हिवयोगी के चिणों ंपि अहपथत कि उन्हें साष्टांग प्रणाम हकया।

हिवयोगी ने पूछा- "तुम यिाँ हकस हलए आये िो?" उन्होंने उत्ति हदया - "आदिणीय गुरुदेव, मेिे स्वामी अहभिाम हकसी आवश्यक कायथ से घि िि रुक गये िैं। उन्होंने मुझे हनदेि हदया िै हक मैं आपके प्रहत अपनी श्रद्धा व्यक्त करूँ औि यिीं ििँ।"

हिवयोगी ने किा- "िा कि देखो हक अहभिाम आ ििा िै हक निीं।ं" वेमा ने इधि-उधि देखने का बिाना किने के बाद उनसे किा हक वि निीं ंआ ििा िै। कुछ देि की प्रतीक्षा के पिात् हिवयोगी ने पुनः किा- "देखो हक वि आ ििा िै या निीं।ं" इस बाि भी वेमा ने विी उत्ति हदया। कुछ देि बाद हिवयोगी ने उससे तीसिी बाि किा- "एक बाि औि िा कि देखो।" वेमा ने इस बाि िा कि इधि-उधि देखने का बिाना हकया औि आ कि किा हक वि निीं ं आ ििा िै।

हिवयोगी ने किा- "अहभिाम वास्तव में सवाथहिक ितभाग्य व्यस्ट्क्त िै। मैं उसे एक ििस्यमय मन्त्र की दीक्षा देना चािता था। यि पिला हदन िै िब वि यिाँ निीं ंआ सका। इन कुछ वषों में वि यिाँ प्रहतहदन आता ििा। बड़ी हवहचत्र बात िै। भाग्य हकतना हनमथम िै! हफि भी मैं अब तुम्हीं ंको दीहक्षत करूँगा क्योंहक अब मैं इस नश्वि ििीि का परित्याग किने िा ििा िै।" हिवयोगी ने वेमा के कानों ंमें अत्यन्त मन्द स्वि में एक मन्त्र का उच्चािण हकया औि इसके बाद उसकी िीभ पि बीिाक्षि हलख हदया। उन्होंने उनके नेत्रों ंको दबाया। वेमा ने देदीप्यमान् प्रकाि की एक झलक देखी िो सैकड़ों ंसूयो की दीस्ट्प्त से िगमगा ििी थी। वि इसे देख कि स्तब्ध िि गये।

हिवयोगी ने तत्क्षण अस्ट्न्तम साँस ली। वेमा अपने अपिाि-बोध से दुःखी िो कि घि लौट आये। दुकान पि िा कि उन्होंने अहभिाम के पैि पकड़ हलये। उन्होंने उसे साष्टांग प्रणाम कि उससे क्षमा-याचना की। अहभिाम उनके इस व्यविाि से अहतिय चहकत िो गया; क्योंहक इसके पूवथ उसके प्रहत उनका व्यविाि कठोि, उद्धत तथा रुक्ष ििता था औि देि से आने के किाण वि उसकी भत्सथना भी हकया किते थे। वेमा ने उनके पैि तब तक निीं ंछोड़े, िब तक उसने उन्हें क्षमा निीं ंकि हदया।

इसके पिात् वेमा ने, िो कुछ घट चुका था, उसका सािा हवविण अहभिाम के समक्ष प्रस्तुत कि हदया। उन्होंने उसके प्रहत इस बात के हलए आभाि भी व्यक्त हकया हक उसने उन्हें हबना हकसी ितथ के हिषथ क्षमा कि हदया। उन्होंने अपनी एक कहवता के माध्यम से उसके उदात्त गुणों ंका उल्लेख किते हुए अपने उस कुकृत्य के हलए पिात्ताप भी प्रकट हकया हिसके किाण उसे हिवयोगी द्वािा दीहक्षत िोने के बहुमूल्य अवसि से वंहचत िो िाना पड़ा। अपनी एक कहवता में उन्होंने अपनी भाभी को अपना प्रथम गुरु, अहभिाम को हितीय गुरु तथा हिवयोगी को आचगुरु माना।

हिस क्षण हिवयोगी ने वेमा की हिह्वा पि बीिाक्षि का अंकन हकया, उसी क्षण से वि एक अपौरुषेय कहव बन गये। उन्हें आध्यास्ट्त्मक ज्योहत की सम्प्रास्ट्प्त िो गयी। योगी िो कि उन्होंने अहनत्य वैषहयक आनन्द का परित्याग कि हदया। उनके उपदेि उनकी अनायास प्रणीत कहवताओं ंमें सहिहवष्ट िैं। उन्होंने अपनी कहवताओं ंमें अहभिाम के नाम का उल्लेख किते हुए उसके प्रहत अपनी कृतज्ञता प्रकट की औि इस प्रकाि उन्होंने उसकी सूमृहत को अमित्व प्रदान कि हदया। अपनी एक कहवता में वि किते िैं "िोदय िो कुछ िो चुका िै, उसके हलए दुःखी िोने की कोई

आवश्यकता निीं ंिै। मैं आपका अत्यन्त आभिी हाँ। अन्तितः आप मेिे आिाध्य िैं। मेिी सिस्र-सिस्र कहवताओं ं का प्रणयन आपकी कृपा से िी सम्भव िो सका िै। मेिे श्रद्धेय गुरु, मैं अवनत-शिि आपको प्रणाम किता हाँ।"

वेमिा की माता ने पुत्र के हववाि के हलए अथक प्रयत्न हकये; हकन्तु पुत्र की िठिहमथता के आगे माता की एक न चली।

उनके चमत्कार

बि वेमिा की माता वािाणसी की तीथथ-यात्रा के हलए प्रस्थान किने लगी, तब वेमिा ने एक माला के बीच ताँबे का एक टुकिा बााँि कि उसे उनके गले में िाल हदया औि किा- "माँ, तुम्हािे वािाँ आ िाने पि यहद ताँबे का यि टुकिा स्वणथ में परिणत िो िाये, तो तुम्हें इस तर्थ् के प्रहत पूणथतः आश्वस्त िो िाना चाहिए हक पहवत्र गंगा–िल से तुम्हािे समस्त पापों ंका मािथन िो गया िै। यिी इसका मापदण्ड िै। तुम हनष्कपट भाव से ईश्वि की उपासना किती ििो।"

वेमिा की माता तीथथयात्रा से एक वषथ बाद लौटी। वेमिा ने दौड़ कि उनको साष्टांग प्रणाम हकया औि उनसे किा- "माँ, तुम मुझे वि स्वणथ-मुद्रा दे दो। क्या ताँबे का वि टुकिा सोना बन गया िै?" वेमिा की माता ने अपने गले में देखा; हकन्तु ताँबे का वि टुकिा अपनी पूवाथवस्था में िी हवद्यमान हदखायी पड़ा।

वेमिा ने किा- "वािाणसी की तीथथयात्रा में तुम्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े। तुमने पहवत्र गंगा में स्नान हकया; हकन्तु तुम्हें इस तर्थ् के प्रहत तीव्र श्रद्धा तथा हवश्वास निीं ंथा हक तुम्हािे तीथाथटन तथा गंगा-स्नान के कािण ताँबे का यि टुकिा स्वणथ का िो िायेगा। इससे यि स्पष्ट िो िाता िै हक तुम्हािी भस्ट्क्त हनष्कपट निीं ंिै। यहद तुम्हािे हृदय में उत्कट तथा यथाथथ भस्ट्क्त िै, तो तुम्हािे हलए प्रत्येक स्थान वािाणसी िै। यहद भस्ट्क्त में हनष्कपटता निीं ंिै, तो इस कष्टप्रद तीथाथटन का उपयोग िी क्या िै?"

माता के यि पूछने पि हक ताँबा सोना कैसे बन सकता िै, वेमिा ने किा- “पूिनीया माता, यथाथथ श्रद्धा से इस कायथ का हनष्पादन सम्भव िै। मैं तुम्हािे समक्ष इसका प्रयोग प्रस्तुत कि दूँगा।" इतना कि कि उन्होंनें अपनी माता से ताँबे का वि टुकिा ले कि उस पि पानी हछड़क हदया औि वि ताम्र-खण्ड तत्क्षण स्वणथ में परिणत िो गया। उन्होंनें उसे अपनी माता के िाथों ंमें िख हदया। उनकी माता तथा विाँ उपस्ट्स्थत अन्य लोग इसे देख कि आश्चयथ चहकत िि गये।

***

एक हदन वेमिा ताँबे का एक टुकिा ले कि अपने अग्रि िािा के पास गये। उन्होंनें उनसे किा- "पूज्य भाई, ताँबे का यि टुकिा ले कि मुझे इसके बदले में एक एकड़ भूहम दे दीहिए। मैं खेती किना चािता हाँ।"

सांसारिक हवद्या-बुस्ट्द्ध से सम्पन्न लोग सन्तों ंतथा योहगयों ंके हक्रया-कलाप को समझने में असमथथ िोते िैं। िािा ने िँसते हुए किा- "वेमिा, कृषक बनने का तुम्हािा प्रस्ताव अत्यन्त हवनोदपूणथ िै औि इससे भी अहिक हवनोदपूणथ िै भूहम का वि मूल्य हिसे तुम मुझे देने िा ििे िो।" िानी निसम्मा ने अपने पहत से किा- "वेमिा की बातों ंको मित्त्विीन मत समहझए। वि एक मिान् योगी तथा भक्त िैं। उनका व्यस्ट्क्तत्व ििस्यमय िै। वि आपको िो-कुछ भी दे ििे िैं, उसे ले कि उन्हें भूहम दे दीहिए।" िािा सिमत िो गये औि वेमिा को एक एकड़ भूहम दे दी गयी।

वेमिा ने दो वृद्ध तथा क्षीणकाय बैल खिीदे। उनको देखने से ऐसा लगता था मानो बहुत हदनों ंसे उनको पेट-भि चािा नर्ीं ंहमला ो। वेमिा खेत की ुताई किने लगे। कृहष-कमथ में नव-दीहक्षत इस कृषक के हवहचत्र कायथ-कलाप पि लोग र्ँसी उड़ाने लगे। वेमिा ने उस खेत में क्रिवे खिबूिे के बीज ाल हदये। समय आने पि उसमें प्रचुि पैदावाि हुई।

एक हदन एक वृद्ध महिला ने वेमिा के पास आ कि किा- "मैं अपने तीन पौत्रों ंके साथ भूखों ंमि ि ी हाँ। मुझे कुछ काम दीहिए।" वेमिा ने किा- "इन खिबूिों ंको एकत्र कि इनकी ढेिी लगा दो। तुम्हें इसका पारिश्रहमक ात में हमल ायेगा।" वृद्ध महिला ने उनकी बात मान कि फलों ंकी एक ब़िी ढेिी लगा दी। वेमिा ने उस हदन उसके पारिश्रहमक में उसे एक खिबूिा हदया। उस वृद्ध महिला को इससे ाहदथक दु:ख हुआ। उसने मन-ी-मन सोचा- "मैं अब बच्चों ंको क्या स्ट्खलाऊँगी! वे भूखों ंमि ि े ैं। इस एक फल से क्या ोगा ? दु:खी ो कि वि अपने घि लौट गयी। उसके दो अल्पवयस्क पौत्र उसे देखते ी उसके पास दौ़ि कि आये। उन्होंनें किा- "दादी, आज तुमको हकतना पारिश्रहमक हमला?" वृद्ध महिला ने उन्हें सािा वृत्तान्त कि सुनाया औि एक पौत्र के ाथ पि वि खिबूिा िख हदया। यि देख कि पौत्र अत्यन्त क्रुद्ध ो उठा। उसने किा- "वृद्ध ोते हुए भी मेिी दादी कठोि परिश्रम किती ै। क्या इस कठोि परिश्रम के हलए उसे यिी पुिस्काि हदया गया ै।" उसने उस खिबूिे को फेंक पि दे मािा। इसके पश्चात् वि तत्काल ी संज्ञाशून्य ो कि हगि प़िा। फेंक पि हगिे हुए खिबूिे से चमकते हुए दाने हनकले थे हिससे उसकी आँखें चौंहिया गयी थी औि वि हनःसंज्ञ ो गया था। कुछ ी क्षणों ंमें उसकी चेतना लौट आयी।

वृद्ध महिला हबखिे हुए सभी दाने एक दुकानदाि को दे कि उसके बदले मे चावल, दाल, घी तथा अन्य वस्तुएँ ले आयी। ि ब उसके पौत्रों ंने प्रचुि मात्रा में खाद्य सामग्री देखी, तब उनकी प्रसन्नता की सीमा न ि ी।

दूसिे हदन वृद्ध महिला, उसके दोनों ंपौत्र तथा कुछ अन्य श्रहमक वेमिा के खेत में काम किने लगे। वेमिा ने ाम को पारिश्रहमक के रूप में उन्हें एक-एक फल हदया। उसमें से कुछ श्रहमक फल चुिा कि भी ले गये। श्रहमकों ंने ि ब पारिश्रहमक में हमले फलों ंको काटा, तब उनमें से सोने के दाने हनकले: लेहकन चुिाये गये फलों ंसे क्रिवे बीि हनकले।

***

एक हदन वेमिा अपने अग्रि ि ा के पास गये। उन्होंनें उनसे अपने खेत पि चल कि फलों ंकी पैदावाि देखने की प्राथथना की। ि ा उसके इस प्रस्ताव पि ँसने लगे। उन्होंनें किा- "तुम अपना काम स्वयं देखो औि अपने फलों ंकी पैदावाि का उपभोग भी अपने ी आप किो।" इसके पश्चात् वेमन्ना ने अपनी भाभी से ा कि किा हक उनके अग्रि ने उनके खेत में चलने के उनके प्रस्ताव को अस्वीकाि कि हदया ै हिसके फल-स्वरूप वि बहुत दु:खी ैं।

निसा ने अपने पहत के पास ा कि किा- "अपने भाई के प्रस्ताव को अस्वीकाि किना आपके हलए उहचत नर्ीं ं था। उनको बहुत दु:ख हुआ ै। कृपया उनके खेत में ा कि उन्हें सन्तुष्ट कीहिए। वि योगी, भक्त तथा कहव ैं।"

ि ािा खेत में ा कि पैदावाि देखने के वेमिा के प्रस्ताव से सिमत ो गये। वि मस्ट्न्त्रयों ंतथा ानी के साथ खेत में गये। वेमिा ने उनको वािाँ फलों ंकी दो ब़िी-ब़िी ढेरियाँ हदखा कि अपने ाथ से उनका स्पिथ कि हदया। उनके स्पिथ मात्र से उन ढेरियों ंके सिे फल सुवणथ ो गये। इसे देख कि सभी लोग आियथ चहकत ि गये।

***

एक अन्य अवसि पि वेमिा ििाप्रासाद के भीति चले गये। विाँ िानी बैठी िई थी। उन्होंनें अपने नखों ंसे िानी के वक्षस्थल पि एक खिोंचं लगा दी। इसके फल-स्वरूप उस अंग से िक्त-पात िोने लगा। िानी को वेमन्त्रा का यि हवहचत्र व्यविा सवथा हनदोष प्रतीत हुआ। उसने सोचा हक हनहित रूप से इसका कोई हवहिष्ट प्रयोिन िोगा। वि इस सत्य से परिहचत थी हक वेमिा एक मिान् योगी िैं।

दाहसयों ंििा यि बात ििा के कानों ंतक िा पहुँची। उन्होंनें िानी से उनके इस आचिण का किाण पूछा। िानी के उपयुक्त उत्ति से ििा की सािी िंकाएँ हनमूथल िो गयीं।ं सान्ध्य प्रिि में िानी ििाप्रासाद के उद्यान में गयी ििाँ उसको एक नाग ने िस हलया। वि संज्ञािून्य िो कि हगि पिी। दाहसयों ंने ििाप्रासाद में िा कि ििा को इसकी सूचना दी। ििा उस स्थान पि आये ििाँ िानी अचेतनावस्था में पिी हुई थी। ििाप्रासाद के कहिविा ने आ कि उन्हें हवषािििणी औषहि देने का प्रयत्न हकया; हकन्तु हवष वक्षस्थल पि लगी खिोंचं से ििा हनकलने लगा औि िानी की चेतना लौट आयी। उसने वेमिा को इस प्राण-दान के हलए िन्यवाद हदया। ििा तथा िानी को प्रातःकाल की उस समस्या का समािान प्राप्त िो गया। उन्होंनें किा हक वेमिा हदव्यदृष्टी तथा भहवष्य-द्रष्टा िैं।

**

एक हदन वेमिा की माता ने उनसे किा- "हप्रय पुत्र, तुम िमथहनष्ठ बनो औि अपने अग्रि की भााँहत ब्राह्ममुहतथ में स्नान किने के पिात् ईश्वि की उपासना किो।" वेमिा ने किा - "आदिणीय माता, मेिे अग्रि िािीरिक िुस्द्ध के प्रक्षालन के हलए स्नान तथा अहिकाहिक िन की प्रास्प्त के हलए िप तथा ईश्वि का पूिन-अचथन किते िैं। उनमें यथाथथ श्रद्धा-भस्क्त का अभाव िै। तुम मेिे साथ तालाब चलो। विाँ मैं अपनी स्नान-हवहि का प्रदिथन करूँगा।"

वेमिा अपनी माता को तालाब पि ले गये। वि तालाब में प्रहवष्ट िो गये। इसके पिात् अपना पेट फाड़ कि उन्होंनें आन्तरिक मल का प्रक्षालन कि हदया। तालाब से बािि आने पि उनका पेट पूवाथवस्था को प्राप्त िो गया। उनकी माता के आियथ की सीमा न ििी। इसके पिात् वेमिा पलक झपकते विाँ से अदृश्य िो गये। पुत्र के पाथथक्य के किाण माता को िाहदथक दुःख हुआ। वि िीघ्र िी घि पहुँची। उन्हें यि देख कि अत्यन्त िषथ हुआ हक विाँ वेमिा बैठे हुए िैं।

**

वेमिा की छोटी बिन अपने हववाि के पिात् पहत-गृि िाते समय अपने अग्रि के प्रहत अपनी श्रद्धा अहपथत किने तथा उनका आिीवाथद प्राप्त किने के हलए उनके पास आयी। उसने वेमिा को साष्टांग प्रणाम हकया। उन्होंनें उसे कुछ सड़े-गले फल हदये िो महण-माहणक्य तथा ििीिों ंमें परिणत िो गये।

उनके अक्तन्तम डदन

वेमिा एक पयथटक योगी िो गये। समस्त आन्ध्र प्रदेि का भ्रमण कि उन्होंनें अपनी तेलुगु कहवताओं ंका प्रचाि-प्रसाि हकया। उनकी कहवताओं ंके संग्रि में चाि ििाि कहवताएँ संग्रहित िैं। इन कहवताओं ंमें अद्वैत वेदान्त के स्पष्ट दिथन िोते िैं। इनकी अहिकांि कहवताएँ अनेकाथथक िैं। सिल िब्द-संयोिन, संवेदनिीलता, िैली की प्रांिलता, दृहष्ट की तीक्ष्णता, हवचाि-गाम्भीयथ तथा गिन मनोभावों ंके सम्यक् हचत्रांकन में उनकी कहवताएँ तेलुगु साहित्य में अप्रहतम िैं। लोगों ंमें िब तक तेलुगु भाषा का प्रचलन ििेगा, तब तक तेलुगु प्रदेि में वेमिा की प्रहतष्ठा अक्षुण्ण ििेगी।

अपने पयथटन की परिसमास्ट्प्त के पित् वेमिा कतारुपल्ली में स्थायी रूप से िि कि अपने हिष्ीं ंतथा अनुयाहययों ं को अनुदेहित किते िि। उन्होंनें मिासमाहि यिीं ंली। हिस स्थान पि उनकी अस्ट्स्थयों ंको भूहमसात हकया गया था, उसके ऊपि उनके हिष्ीं ंने उनकी समाहि का हनमाथण कि हदया। आि भी उस गााँव में उनकी ियन्ती िूमिाम से मनायी िाती िै औि आि भी उस समाहि के हनकट कुछ चमत्कािि िोिाया किते िैं।

एक बाि वेमिा की समाहि पि हबिली हगिी; हकन्तु उससे वि क्षहतग्रस्त निीं ंिो सकी। वेमिा एक बािा वषीय बालक का रूप ले कि अपने िाथ में हबिली हलये समाहि से बािा आ गये। उनके हिष् भी विीं ंथे। उनमें से एक हिष् ने उनकी अभ्यथथना में एक ित-स्तोत्र का पाठ हकया हिसमें संसूकृत के एक सौ श्लोक थे। इसके पित् वेमिा समाहि में प्रहवष्ट िो गये।

चमत्कारिक योगी, मिान् भक्त एवं अपौरुषेय कहव तथा दािथहनक बेमिा की महिमा वृस्ट्द्ध को प्राप्त िोती िि औि उनके आिीवाथद से िम सब कृतकृत्य िोते िैं!

यिदेव

मेघैमेदुरमम्बरों वनभुविः श्यामास्तमालद्रुमै - नक्तिं
भीरुरयों त्वमेव िडदमों राधे गरहों प्रापय।
इत्थों नन्दडनर्दिश्चडलियोः प्रत्यध्वकुोंजदुरुमों
राधामाधवयोजकयक्तन्त यमुनाकूले रहिःकेलयिः ।।

"िे िािो! बादलों ंसे नीले गगन तथा तमालवृक्षों ंकी पंस्ट्क्त से श्याम (काली) इस िाहत्र में घि से बहुत दूि हनकल आये इस बालक को अब तुम िी इसके घि पहुाँचाओ, इस प्रकाि नन्द के आदेि से यमुना के तट पि चलते मागथ के लता-कुंि औि वृक्षों ंके नीचे िािा एवं मािव की एकान्त-क्रीडाएाँ िय प्राप्त किती िैं" (गीतगोहवन्द : १/१)।

यिदेव की अमिकृहत 'गीतगोहवन्द' की ये प्रािस्ट्म्भक पंस्ट्क्तयााँ िैं। मूल पुस्तक संसूकृत में िै तथा इसकी हवषय-वसुतु िािा तथा कृष्ण का पािस्परिक हदव्य प्रेम िै। इसके प्रणेता ियदेव एक मिान् तथा प्रख्यात भक्त थे। वि पााँच सौ वषथ पूवथ उत्कल-स्ट्स्थत पहवत्र नगिी िगिाथपुिी के हनकटस्थ हबल्वगाम नामक ग्राम के हनवासी थे। 'गीतगोहवन्द' यिदेव की सवाथहिक प्रिंहसत काव्य-कृहत िै।

उनका जन्म

यिदेव के हपता नािायण िास्ट्स्िा एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण थे। ियदेव की माता का नाम कमलाबाई था। वि एक मिथपिायण तथा हनष्ठावान महिला थीं।ं वषों तक वे लोग हनःसन्तान िि। िास्ट्स्िा सन्तान के इच्छुक निीं ंथे; हकन्तु कमलाबाई मनिी-मन सन्तान की कामना किती ििती थीं।ं उन्होंनें अपनी इस कामना से अपने पहत को अवगत निीं ंिोने हदया। वि भगवान् से हनिन्ति प्राथथना किती िितीं ंहक उनकी कृपा से उन्हें एक सुन्दि सद्गुण-सम्पि पुत्र की प्रास्ट्प्त िो। लोगों ंिािा बन्ध्या किे िाने पि उन्हें लस्ट्ज्जत िोना पडता था।

एक िात नािायण िास्त्ी ने स्वप्न में देखा हक भगवान् उनके समक्ष प्रकि िो कि कि िि िैं हक उनकी पत्नी की इच्छा की पूहतथ िोगी औि उन्हें िीघ्र िी एक यिस्वी पुत्र की िननी िोने का सौभाग्य प्राप्त िोगा। िास्त्ी ने अपने पत्नी को इस स्वप्न से अवगत किाने के बाद पूछा हक क्या उन्होंनें सन्तान के हलए ईश्वि से प्राथथना की थी। कमलाबाई का उत्ति स्वीकृहत-सूचक था। नािायण िास्त्ी को इस बात से अत्यन्त दुःख हुआ हक उसके स्वाथथपि प्रयोिन के

किाण उनके सिो िप-तप हनष्फल िो गये। उन्होंनें अपनी पत्नी से कुरुद्ध स्वा में किा- "मूखथ निाी, तुमको भगवान् से पुत्र के हलए प्राथथना निीं ंकिनी चाहिए थी। तुम्हें हलए आिा के िाश्वत आनन्द के हलए प्राथथना किना श्रेयस्कि िाता। तुमने अपने साथ-साथ मुझे भी नष्ट कि हदया।" उसी क्षण से उन दोनों ंके बीच संवादिीनता की स्ट्स्थहत उत्पि िो गयी। कमलाबाई ने उनसे क्षमा-याचना की; हकनुतु रुष्ट िास्त्री पि इसका कोई प्रभाव न पिा। एक-दो हदन तक वे दोनों ंहर्षिनिाा भी िि।

एक हदन उनके घि आ कि एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण ने उन दोनों ंके दुःख का किाण पूछा। उस ब्राह्मण के प्रयास से उनमें समझौता िो गया। उसने किा- "यि भगवान् की िी इच्छा िै हक तुम दोनों ंको एक ऐसे सदाचािी पुत्र की प्रास्ट्प्त िो िो भहवर्ष् में एक मिान् तथा यिस्वी सन्त िो।"

निाायण िास्त्री ने सोचा हक स्वयं भगवान् िी मानव-रूप में उनके घि आये थे। कुछ हदनों ंके पिात् कमलाबाई के एक पुत्र हुआ िो ियदेव के नाम से हवख्यात हुआ।

निाायण िास्त्री वानप्रस्थ िीवन व्यतीत किने के हलए अपनी पत्नी के साथ वन में चले गये।

उनका डववाह

ििगाथपुिी में देव िमाथ नामक एक ब्राह्मण ििता था। वि भगवान् िगिाथ का पिम भक्त था। हकनुतु वि हनःसन्तान था। एक हदन उसने भगवान् से प्राथथना की- "भगवन् ! यहद तुम्हािी कृपा से मुझे सन्तान प्रास्ट्प्त िो िायेगी, तो मैं उनमें से प्रथम सन्तान को हनहित रूप से तुम्हें चिणों ंमें अहपथत कि दूँगा। यि तुमसे मेिी हनष्कपट िाहदथक प्राथथना िै। मेिी इस इच्छा की पूहतथ किने की कृपा किो।" इस हनवेदन के पिात् वि घि लौट गया।

समय पि उस भक्त ब्राह्मण देव िमाथ की पत्नी ने एक कन्या को िन्म हदया। इसके पिात् देव िमाथ को कई सच्चरित्र तथा प्रहतभािाली पुत्रों ंके हपता िोने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक हदन वि अपनी पत्नी के साथ अपनी पुत्री को ले कि भगवान् िगिाथ के मस्ट्न्दि में गया। उसने किा- "भगवन्, आपकी कृपा से मेिी इच्छा की पूहतथ िो गयी। अपने वचन के अनुसाि मैं अपनी इस प्रथम सन्तान को आपको अहपथत किता हाँ। आप इसे स्वीकाि किने की कृपा कीहिए।" इसके पिात् विााँ उपस्ट्स्थत सभी पुिारियों ंको सािा वृत्तान्त बता कि वि घि लौट गया।

उस िात उसके स्वप्न में प्रकट िो कि भगवान् ने उससे किा- "मैं तुमसे अत्यन्त प्रसि िो कि तुम्हािी सन्तान को स्वीकाि किता हाँ; हकनुतु तुम अपनी इस कन्या का िाथ ियदेव को दे दो। वि मेिा पिम भक्त िै।" पुिारियों ंने भी स्वप्न में यिी देखा।

उन हदनों ंियदेव गााँव की सीमा से बािि एक पणथ-कुटी में ििते थे। वि विााँ भगवान् िगिाथ का ध्यान हकया किते थे। भौहतक दृहष्टकोण से उनको हनिथन िी किा िा सकता था; हकनुतु उनके मुख-मण्डल पि दृहष्टपात किने में यि स्पष्ट िो िाता था हक वि अत्यन्त सुखी िैं। एक हदन विााँ देव िमाथ आये। उसने ियदेव के सम्मुख अवनत-िीि िो कि उनसे किा- "भगवान िगिाथ के आदेिानुसाि मैं अपनी कन्या पद्मावती को ले कि आपके पास आया िाँ। इसे स्वीकाि किने की कृपा कीहिए।" ियदेव ने उसकी इस भेंट को अस्वीकाि किते हुए किा हक अत्यन्त हनिथन िोने के किाण इस कन्यादान को स्वीकाि किने की क्षमता उसमें निीं ंिै। उनकी सिमहत प्राप्त किने के हलए बहुत प्रयत्न हकये गये; हकनुतु ियदेव ने स्वयं को उस कन्या के हलए अनुपयुक्त मान कि उसे स्वीकाि निीं ंहकया। देव िमाथ अपने कथन के सत्यापन के हलए पुिारियों ंको भी ले आया।

इसके पिात् उसने अपनी कन्या को अपने हनकट ख़िी कि किा- "मेिी हप्रय पुत्री, आि से यि तुम्हािो पहत िैं। तुम को प्रहतहदन इनकी पूिा किनी चाहिए। पहत-सेवा में संलग्न स्त्ी को अक्षुण्ण सुख की प्रास्ट्प्त िोती िै।" इतना कि कि वि अपने घि चला गया।

कन्या ियदेव के हनकट बहुत देि तक ख़िी ििी। उन्होंनें उससे किा- "तुम्हािो माता-हपता तुम्हें यिााँ छो़ि कि चले गये। तुम इस भयावि वन में कैसे िि पाओगी?" पद्मावती ने किा- "िे स्वामी, यि आप क्या कि ििे िैं! मेिे हपता ने मुझे आपके िाथों ंमें सौंप हदया िै औि अब मैं आपकी िी िूँ। मैं यिााँ अकेली निीं ंिूँ: क्योंहक आप सदैव मेिे साथ िैं।" पद्मावती के िब्दों ंको सुन कि ियदेव ने सोचा- "इसका कथन सत्य िै। इसका परित्याग हनिय िी मेिे हलए पाप िोगा। मुझे हवहि-सित अनुष्ठान के पिात् इससे हववाि कि लेना चाहिए।" यि हनिय कि उन्होंनें पद्मावती से ब्राह्मणों ंमें प्रचहलत हवहि के अनुसाि हववाि के हलए उससे अपने साथ उसके माता-हपता के घि चलने को किा।

पद्मावती ने किा "मेिे हपता ने मुझे आपके आदेि के हनहवथवाद पालन की आज्ञा दी िै। अतः आपके आदेिानुसाि आचिण किना मेिा सौभाग्य िोगा। यि कि कि वि उनके पाश्वथ में ख़िी िो गयी।

तत्पिात् ियदेव ने देव ििमाथ की पुत्री से हववाि कि हलया। वि उदाि थे तथा हनिथनों ंको अन्न औि ब्राह्मणों ंको भेंट हदया किते थे। भोिन के समय उनके साथ कोई-न-कोई अहतहथ अवश्य भोिन किता था। हनिाथयण िास्त्ी िो थो़िा-बहुत िन छो़ि गये थे, वि अब हनःिेष िो गया। इसके परिणाम-स्वरूप ियदेव ब्राह्मणों ंकी पिम्पिागत वृहत्त के अनुसाि हभक्षाटन द्वािा अन्न की व्यवस्था किने लगे। इस हवपिावस्था में भी ियदेव पद्मावती के साथ सुखपूवथक िीवन व्यतीत कि ििे थे। अभावग्रस्त िोने पि भी वि कुछ अहतहथयों ंके साथ िी भोिन किते थे। उनका हृदय हविुद्ध प्रेम तथा श्रद्धा से समूपूरित था। सभी लोग उनका सिान किते थे।

गीतगोहवन्द

ियदेव ने 'गीतगोहवन्द' नामक हिस भव्य तथा काहलियी काव्य की िचना की, उसमें िािा तथा कृष्ण के हदव्य प्रेम का वणथन िै। इस छोटे-से हबल्वगाम के हनवासी इसके अष्टकों ंका गायन हकया किते थे तथा वाहषथकोत्सव के अवसि पि इनका गायन भगवान् िगन्नाथ के सिुख हुआ किता था। 'गीतगोहवन्द' की उदात्त संगीतमयी कहवता से लोग स्तब्ध िि िाते थे। यि प्रिंसनीय कृहत िै। ियदेव का यि हदग्-हदगन्त में व्याप्त िो गया।

'गीतगोहवन्द' के अिांि के प्रणयन के पिात् एक स्थान की पूहतथ के हलए उनको कुछ उपयुक्त िब्द निीं ंसूझ ििे थे। वि पाण्डुहलहप को कमिे में िख कि स्नान के हलए चल गये।

भगवान् कृष्ण ने स्वयं ियदेव का रूप िािण कि पद्मावती से पाण्डुहलहप लाने को किा। उसने उन्हें अपना पहत समझ कि उनको पाण्डुहलहप दे दी।

भगवान् कृष्ण ने स्वयं अपनी हलहप में उस छन्द को हलख हदया। इसके पिात् वि तत्काल नदी-स्नान को चले गये।

कुछ देि बाद स्नान कि ियदेव घि लौटे औि पाण्डुहलहप ले कि स्वयं–िहचत कहवता हलखने बैठ गये। हकन्तु आियथ चहकत िो कि उन्होंनें देखा हक हकसी ने वि कहवता उनकी पाण्डुहलहप में पिले िी हलख दी िै। उन्होंनें पत्नी से किा- "यि कहवता कौन हलख गया ? यि तो अत्यन्त सुन्दि िै। मैं स्वयं ऐसा निीं ंहलख सकता था।"

पद्मावती ने कहा- "अचानक आ कि आप ि इसे हलख गये िौ इसके पित् स्नान किने चले गये।" ियदेव हवस्ट्स्मत िो गये। भगवान् कृष्ण ने उनके स्वप्न में प्रकट िो कि किा- "ियदेव, वि कहवता मैंने स्वयं िी हलखी ि।"
ििगने पि ियदेव को िाहदथक आनन्द हुआ।

बि वििाँ का िििा 'गीतगोहवन्द' की महिमा तथा प्रख्याहत से अवगत हुआ, तब ियदेव से वि ईर्ष्ाथ किने लगा; क्योंहक वि स्वयं कहव था। उसने एक अन्य 'गीतगोहवन्द' की िचना कि िाली।

एक बाि िििा िगिाथ के मस्ट्न्दि में आया। उस समय ियदेव अपनी पुस्तक 'गीतगोहवन्द' की कहवताओं का पाठ किते हुए नृत्य कि ििे थे। िििा ने उनसे पूछा- "तुम मेिी कहवताएँ क्यों निीं गा ििे िो?" ियदेव ने किा- "भगवान् आपकी कहवताओं से उतने प्रसि निीं िैं हितने मेिी कहवताओं से िैं। क्यों न इनका पिीक्षण अभी कि हलया िाये!"

िििा ने दोनों िचनाओं को भगवान् के समक्ष प्रस्तुत किने का आदेि हदया। उसने भगवान् से प्राथथना की- "इन दोनों िचनाओं में िो आपको सुन्दि तथा हप्रयति लगे, उसे आप िीषथ पि िखने की कृपा कीहिए।" इसके पित् सब लोग बािि आ गये िौ ििा बन्द कि हदया गया। कुछ दे बाद सब लोग भीति प्रवेि किने लगे। सबसे पिले िििा ने ििा खोला िौ देखा हक ियदेव की कृहत उसकी कृहत के ऊपि हवद्यमान िै।

यि देख कि िििा को िाहदथक दुःख हुआ। उसने िीवन का परित्याग कि हदया। भगवान ने उसके स्वप्न में प्रकट िो कि उससे किा- तुम्हें यि अनावश्यक दुःख क्यों िो ििा िै? मेिे हलए 'गीतगोहवन्द' से अहिक हप्रय अन्य कोई िचना निीं िै। मैं तुम्हािी िचना से भी प्रसि िूँ; हकन्तु तुम्हें इस सत्य से परिहचत िो िाना चाहिए हक ियदेव का 'गीतगोहवन्द' तुम्हािी िचना की अपेक्षा श्रेष्ठति िै। तुम सािे दे में 'गीतगोहवन्द' का प्रचाि-प्रसाि किो।" हनिा-त्याग के बाद िििा को स्फूहतथ प्राप्त हुई। वि ियदेव का पिम भक्त िो गया। उसने पूणथ मनोयोग से ियदेव िहचत 'गीतगोहवन्द' का अध्ययन कि दे-भि में इसका प्रचाि-प्रसाि हकया।

एक बाि हवक्रय के हलए फल एकत्र किते समय एक महिला वन में मिुि स्वि में 'गीतगोहवन्द' के गीत गा ििी थी। भगवान् उसके कणथहप्रय गायन से अत्यन्त प्रसि हुए। उसे सुनने के हलए वे वन में इतस्ततः घूमते ििे। उनके इस िण्य-परिभ्रमण में कण्टकत झाहड़यों के किाण उनके वस्त् फट कि ताि-ताि िो गये।

ब्राह्ममुहतथ में मस्ट्न्दि के पुिािी तथा िििा ने देखा हक भगवान् का पीताम्बि पूणथतः िीणथ-िीणथ िो गया िै। वे पीताम्बि की इस िीणाथवस्था का किाण िानने में असमथथ थे। उन्होंनें इसके हलए भगवान् से प्राथथना की।

भगवान् ने उनको स्वप्न में दिथन दे कि किा- "एक नािी वन में 'गीतगोहवन्द' की पदावली गा ििी थी। मैं उसे सुनने के हलए दौड़-दौड़ वन में चला गया। मेिा पीताम्बि इसी दौड़-धूप में काँटों से उलझ कि फट गया।"

िििा तथा पुिािी ने ियदेव िौ उस नािी का गुण-गान हकया। िििा ने अपने िाज्य में बुला कि उसे अपरिहमत िन हदया। िििा के सुख वि प्रहतहदन 'गीतगोहवन्द' की पदावली का गायन किती थी।

भगवान् अपने भक्तों के दास िैं। वे उनके हलए सब-कुछ किने को उद्यत ििते िैं।

डाकुओं ने जयदेव के हाथ-पैर काटे

एक हदन ियदेव के श्वसुि अपने दामाद को देखने आये। वि ियदेव के यिााँ कुछ हदन रुक गये। इसके पिात् वि कुछ हदनों ंके हलए पद्मावती को साथ ले कि अपने घि लौट गये। पद्मावती की माता अपनी पुत्री को देखना चािती थी।

एक बाि हनकटवती ग्राम के एक समृद्ध वहणक ने हबल्वगाम िा कि ियदेव से प्राथथना की हक वि उसके घि में कुछ हदन अहतहथ के रूप में ििें। ियदेव उससे सिमत िो कि उसके साथ चल पड़े। कुछ हदनों ंतक उसका आहतर्थ् स्वीकाि हकया। तत्पिात् उस वहणक ने उनको बहुमूल्य भेंट प्रदान कि अपने िथ द्वािा उनके घि भेिा। इन दोनों ंगााँवों ंके बीच एक अल्प-हवस्तृत वन था। विााँ डाकुओं ंने उन पि आक्रमण कि हदया। ियदेव ने उन्हें अपना सब-कुछ दे हदया। उन्होंनें यि सब उन्हें हबना हकसी प्रहतिोध के दे हदया था। इस कािण डाकुओं ंको यि सन्देि िो गया हक वि पुहलस को सूहचत कि उन्हें दस्ट्डत किवाने का प्रयत्न कि सकते िैं। अतः उन्होंनें उनके िाथ-पैि काट कि उन्हें एक िल-हविीन कुएाँ में डाल हदया।

ियदेव ने यि सािा कष्ट धैयथपूवथक सिन कि हलये। इतना िी निीं,ं उन्होंनें भगवान् से यि प्राथथना की हक वे उन डाकुओं ंको उनके कुकृत्य के हलए क्षमा कि दें। उन्होंनें स्वयं को भगवान् के िाथों ंमें सौंप हदया। उन्होंनें उनसे इसका परिवाद कभी निीं ंहकया। उन्होंनें सोचा हक इस घटना से उनके हकसी कुकृत्य का परिमाियन िी हुआ िै। उनको इस बात का पूणथ हवश्वास था हक उनके साथ िो-कुछ भी हुआ िै, उसका उत्तिदाहयत्व उन डाकुओं ंपि निीं ं था। इसका हनष्पादन उनके हिताथथ स्वयं भगवान् ने हकया था। हनष्कपट भक्तों ंका यिी भाव िोता िै। वे हवपहत्त तथा हवपहत्त के स्वागत के हलए सदैव तत्पि ििते िैं।

उस प्रान्त का शासक आखेट के हलए उधि िी गया हुआ था ििााँ ियदेव असिाय पड़े हुए थे। प्यासा िोने के कािण वि उस कुएाँ के हनकट यि देखने के हलए गया हक उसमें पानी िै हक निीं।ं हकन्तु उसने देखा हक उस ििविीन कुएाँ में एक क्षत-हवक्षत मानव शिीि पड़ा हुआ िै। उसने अपने नौकिों ंको उसे बािि हनकालने का आदेश हदया, हिसका पालन तत्क्षण हकया गया। िािा ने ियदेव को अपने साथ ले िाने की व्यवस्था की। ििधानी िाते समय मागथ में िािा ने ियदेव से उनका नाम पूछा। िब उसे ज्ञात हुआ हक वि सवथत्र प्रख्यात ियदेव िैं, तब वि उनके चिणों ंपि हगि पड़ा। उसने उनसे प्राथथना की हक वि उसे अपना हशर्ष् बना लें। उसने उन्हें अपना गुरु मान कि उनका पूिन हकया। ियदेव को पालकी पि ले िाया िा ििा था। नगि में एक भव्य शोभा-यात्रा का आयोिन था हिसमें संगीत का कायथक्रम भी चल ििा था। ियदेव को िाज्य के मुख्य गुरु के पद पि प्रहतहष्ठत कि हदया गया।

ियदेव के सन्त-स्वभाव, उनकी धमथहनष्ठा, उनके हवशद ज्ञान, उनकी आध्यास्ट्त्मक उपलस्ट्ब्ध तथा ईश्वि-इच्छा के प्रहत उनके आत्म-समपथण ने िािा को अत्यन्त प्रभाहवत हकया। एक हदन िािा ने गुरु के पास िा कि संन्यास-दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की।

ियदेव ने किा- "ििािा, संन्यास बाह्य परित्याग निीं ंिै। वास्तहवक संन्यास का सम्बन्ध मन से िोता िै। पत्नी, पुत्र तथा सम्पहत्त के परित्याग से िी मनुर्ष् संन्यासी निीं ंिो िाता; क्योंहक मानहसक रूप से वि इनके प्रहत मोिासक्त िि सकता िै। बाह्य संन्यास से अहधक लाभ निीं ंिोता। आप गृिस्थ संन्यासी का िीवन व्यतीत कीहिए। मैं भी इसी िीवन के हलए प्रयत्नशील हाँ। बाह्यतः आप िािा बने िहिए औि अन्तितः संन्यासी िो िाइए।"

ियदेव को गृिस्थ िान कि िािा को बहुत आियथ हुआ। वि इस भ्रम में था हक ियदेव ने संसाि का परित्याग कि हदया िै। उसने सोचा हक ियदेव ने उन्हें िो पिामशथ हदया था, उसमे एक मिान् सत्य हनहित िै। उसने पद्मावती को ले आने के हलए कुछ दाहसयों ंको पालकी के साथ हबल्वगाम भेिा।

कुछ हदनों ंतक अपनी माँ के घि िि ने के पित् पद्मावती हबल्वगाम लौट गयी : हकन्तु विाँ अपने पहत को न पा कि उसने सोचा हक उन्होंनें उसका परित्याग कि संन्यास-ग्रिण कि हलया िै। उसके हपता ने हनकटस्थ सभी गाँवों ंमें उनकी खोि की; हकन्तु वि किीं ंनिीं ंहमले। उसने सोचा हक ियदेव सािना किने के हलए वन में चले गये िैं। हपता के घि से लौटने पि पद्मावती ने अपने घि को हनतान्त िनून्य पाया। विाँ उसके पहत निीं ंथे औि उनकी खोि के हलए िी प्रयत्न हकये गये थे, वे हवफल िो चुके थे। हकन्तु िब दाहसयों ंसे उसने अपने पहत के हवषय में सुना, तब उसके िषथ की सीमा निीं ंिीि। पद्मावती ने िििप्रासाद में िा कि अपने पहत के दिथन हकये। उसने उनके पहवत्र चिणों ंपि हगि कि उन्हें प्ेरम तथा श्रद्धा के िल से प्रक्षाहलत हकया। ियदेव ने उसे अपनी हवकलांगता का सािा वृत्तान्त कि सुनाया। अपने पहत के क्षत-हवक्षत िीिि को देख कि उसे घोि कष्ट हुआ। उसने भगवान् से प्राथथना की- "मेिे पहत के िाथ-पैि पूवाथवस्था को प्राप्त िो िायें, क्या इसके हलए भगवान् ििगाथ कुछ निीं ंकि सकेंगे?" भगवान् ने उसकी प्राथथना स्वीकाि कि ली औि उसके स्पिथ मात्र से ियदेव को उनके िाथ-पैि पुनः प्राप्त िो गये। वे दोनों ंििाि के संिक्षण में सुखपूवथक िि ने लगे।

कहानी का एक अन्य प्रारप

ििाि के हलए पद्मावती देवी लक्ष्मी की भाँहत सम्माननीय थीं। ंवि अपनी माता से अहिक उनका आदि किता था। उसने अपने िाज्य तथा इसके प्रहतवेिों में इस आिय की घोषणा का आदेि दे हदया हक वि सभी मतों ंके प्रहत आस्थावान् भक्तों ंका भव्य स्वागत हकया िायेगा औि उन्हें भेंट के रूप में प्रचुि मात्रा में िन हदया िायेगा। विाँ िो भी सािु आता था, पिले ियदेव का दिथन किता था। इसके पित् ियदेव उसे ििाि के पास भेि हदया किते थे। ििाि के पास िाने वाले इन सभी सािुओं ंको बहुमूल्य भेंट दे कि सम्माहनत हकया िाता था।

ियदेव को कष्ट पहुँचाने वाले िाकुओं ंने ििाि के इस आहतथ्य सत्काि तथा उसकी दानिीलता की बात सुनी। वे संन्यासी का वेि िािण कि ियदेव के पास िा पहुँचे। उन्होंनें उनको देखते िी पिचान हलया। ियदेव ने भी उनको पिचान हलया। दण्ड की आिंका से भयभीत िो कि वे िििप्रासाद से हछप कि बािि हनकल गये। ियदेव ने उनको बुलाने के हलए कुछ लोगों ंको भेि हदया िो उनको पुनः विाँ ले आये। ियदेव उनके सम्मुख हवनम्र भाव से अवनत-िीषथ िो गये। िब विाँ ििाि का आगमन हुआ, तब उन्हें हनदेि देते हुए उन्होंनें किा हक वि उन्हें साष्टांग प्रणाम तथा माल्यापथण कि उनके प्रहत सम्माहनक व्यविाि किें। इसके पित् उनको एक भव्य भवन में ले िा कि उनका इस प्रकाि आदि-सत्काि हकया गया हक मानो वे िाि-परिवाि के िी सदस्य िों। ंहफि भी वे विाँ सुखी निीं ंथे। उनके मन में प्रहत क्षण मृत्यु-दण्ड का भय बना ििता था। अतः एक हदन उन लोगों ंने किा हक वे अपने हनवास स्थान को िाना चािते िैं। ियदेव ने उल्लहसत मन तथा परिवादिून्य भाव से ििाि से किा- "मागथ में एक हवस्तृत वन िै। इन अहंकंचन पस्ण्डतों ंके िक्षाथथ इनके साथ कुछ सैहनक भेि दीहिए। वन में दुदाथन्त िाकू भी ििते िैं।"

ििाि ने उन िाकुओं ंको पयाथप्त वस्त्राभूषण तथा हवपुल िनिाहि दे कि हवदा हकया। उनकी िक्षा के हलए उन्हें पाँच सैहनक भी हदये गये। मागथ में हवश्राम के हलए वे एक वृक्ष के नीचे बैठ गये। बहुत देि के वाताथलाप के पित् सैहनकों ंने उनसे पूछा- "िम लोगों ंको आप लोग यि बताइए हक आप लोग कौन िैं औि कहववि से आप लोगों ंका क्या सम्बन्ध िै? उन्होंनें आप लोगों ंकी सिायता की तथा आप लोगों ंको पयाथप्त सुहविा प्रदान किने के हलए स्वयं ििाि से अनुिोि हकया।"

िाकू मुस्किाने लगे। उनमें से एक ने सैहनकों ंसे किा- "इन सबका कािण मैं तुम लोगों ंको बता ििा हाँ। एक हदन िम लोग हभक्षाटन के हलए कनाथटक के िििप्रासाद के हनकट बैठे थे। तभी विाँ वि ब्राह्मण िन की खोि में आ गया। विाँ उस लोभी तथा घृहणत ब्राह्मण ने एक व्यस्क्त के घि से कुछ िन चुिा हलया। वि व्यस्क्त उस कहव को ले कि िाि-दिबाि में पहुँच गया। उस समृद्ध व्यस्क्त ने ििाि से किा- "ििािाि, वस्तुतः यि व्यस्क्त ब्राह्मण िै िी

र्निीं।ं यि बहुत ब्रिा चोि ि ै। चोिी ि ी इसके ि ीहवकोपािथन का सािन ि ै। इसने मेिे घि से ि न चुिाया ि ै। मैं इसे अपने नौकिों ं ि ािा बाँिवा कि मिामहिम के समक्ष ले आया हाँ।" ि ािा ने एक दहलत को बुला कि उससे किा हक वि इसे इस दिे की सीमा से बािि ले ि ा कि इसकी ि त्या कि दे। वि दहलत उसे खींचं कि उस दिे से बािि ले गया। विााँ ि म लोगों ंने उसे असिायावस्था में क्रन्दन किते हुए पाया। ि म लोगों ंने उस दहलत से आग्रि हकया हक वि उसकी ि त्या न किे। ि म लोगों ंने उससे यि भी किा हक वि उसे दिे के बािि हनकाल कि उसकी ि त्या किने के स्थान पि केवल उसकी उाँगहलयााँ काट कि ि ािा के सुिख प्रसुतुत कि दे। हकनुतु दहलत से उस ब्राह्मण को दिे से बािि ले िा कि उसके ि ाथ-पैि काट ि ाले औि उसके कटे हुए अंग को ले ि ा कि ि ािा के समक्ष प्रसुतुत कि हदया। वि ब्राह्मण मि लोगों ंकी अभ्यथथना इस किाण कि ि ा ि ै हक ि म लोगों ंने उसे ि ािा के कठोि आदिे से मुक्त किवा हदया था।"

िाकूि अभी कुछ औि किने ि ी ि ा ि ािा था हक आकाि में घोि गिथन हुआ औि उन सभी के िीि पि हबिली हगि पिी हिसके फल-स्वरूप विीं ंउनकी मृतुयु ि ो गयी। ि ाज्य कमथचािी अचेतनावस्था में मूहतथवत् विीं ंखिे-के-खिे ि ि गये। ि ब उनकी चेतना ि ाग्रत हुई, तब वे उस लोमिषथक दृश्य को देख कि स्तब्ध ि ि गये। इसके पिात् वे िािप्रासाद में गये। हकनुतु ि ािा अभी तक ि यदेव के घि से निीं ंलौटा था। अतः ि ािा ि ािा उन ि ाकुओं ंको दी गयी सम्पहत्त को ले कि वि ि यदेव के घि गये। उन्होंनें ि ाथ िोि ो कि ि ािा से किा- "मिािािा, तहित्-पात के किाण उन पस्ट्ण्डतों ंकी तत्काल मृतुयु ि ो गयी। आपने उन्हें ि ो ि न तथा वस्त् हदये थे. उन्हें ले कि ि म आपकी सेवा में उपस्ट्स्थत ि ैं।" ि ािा इस चमत्कािपूणथ परिवतथन को निीं ंसमझ सका। ि ो कुछ ि ो चुका था, वि उससे अनहभज्ञ ि ी ि गया। उसने व्यग्र ि ो कि पूछा- क्या हुआ? क्या हुआ? तब सैहनकों ंने उन मृत व्यस्ट्क्तयों ंतथा ि यदेव की हवकलांगता के सम्बन्ध में उनके ि ािा प्रसुतुत हवविण ि ािा को कि सुनाया।

यि सुन कि दयालु-हृदय ि यदेव हचल्ला उठे। वि अपने क्षत-हवक्षत अंगों ंको ि िती पि पटकते हुए अत्यहिक पीिा के किाण हससकने लगे; हकनुतु उसी क्षण उनके ि ाथ-पैि अपनी सामान्य पूवाथवस्था को प्राप्त ि ो गये। (यि एक अन्य हवविण ि ै।) हकनुतु इस आियथिनक घटना को देख कि सभी लोग स्तब्ध ि ि गये। उन बबथि लोगों ंकी मृतुयु की सूचना से ि यदेव को ि ाहदथक दुःख हुआ। ि यदेव की दयनीय दिा से ि हवत ि ो कि भगवान् पुरुषोत्तम ने उनको उनके प्रािस्ट्म्भक ि ाथ-पैि दे हदये।

उक्त घटना की वास्तहवकता के ि िस्य के अनाविण के हलए व्यग्र ि ािा ि ािा बाि-बाि पूछे ि ाने पि ि यदेव ने िाकुओं ंतथा उनके बीच हुई घटना का वृत्तान्त उनको आद्योपान्त कि सुनाया। ि ािा इस चमत्कािपूणथ किानी को सुन कि बहुत प्रसि हुआ। उसने उनकी प्रिंसा किते हुए किा - "ि यदेव, तुम संसाि के सवाथहिक सौभाग्यिाली प्राणी ि ो। तुम अहितीय ि ो। मुझे उस व्यस्ट्क्त के प्रत्यक्ष दिथन का सौभाग्य प्राप्त हुआ ि ै ि ो अपने हमत्रों ंतथा ि तुरुओं ं के प्रहत समान व्यविाि किता ि ै। मैं एक तुच्छ प्राणी हाँ; हकनुतु इस बात के हलए मैं अपने को सौभाग्यिाली समझता हाँ हक तुमसे मेिा व्यस्ट्क्तगत सम्बन्ध ि ै।"

यिदेव के पुनः पुनः प्रिस्ट्स्त-गायन के पिात् ि ािा ि ािप्रासाद में चला गया। विााँ उसने अपनी पत्नी, अपने पुत्रों ं तथा मस्ट्न्त्रयों ंको उस अद्भुत घटना से सम्बस्ट्न्धत सािी बातें बतायीं।ं

पद्माविी का पाहिव्रत्य

एक हदन वृद्धावस्था के किाण ि ािा के भाई का दिेान्त ि ो गया। उसकी ि मथहनष्ठ पहतव्रता पत्नी ने पहत का अनुगमन किने के हलए सती ि ोने का हनिय कि हलया। ि ािा–ि ानी इस दृश्य को देखने के हलए घटना-स्थल पि गये। उसी समय पद्मावती भी अहग्न में प्रहवष्ट ि ोने को तत्पि उस नािी के दिथन के हलए विााँ आ गयी। ि ानी ने उससे पूछा- "पद्मावती, क्या तुम यिााँ सती को देखने आयी ि ो ?" पद्मावती ने किा- "हछः हछः ! यि कैसी पहतव्रता ि ै ि ो अपने

पहत की मृतुयु की सूचना हमलते िी िल कि भस्म निीं ंिई! पहत की मृतुयु के पिात् काष्ठ में प्रज्वहलत अहग्न में लिने के प्रयास से क्या लाभ! पहत की मृतुयु की सूचना पाते िी यहद पत्नी ने प्राणों ंका परित्याग निीं ंहकया, तो पहत के प्रहत
उसकी श्रद्धा, उसका प्ेरम तथा उसकी पहवत्रता, ये सभी अथथिीन िी िैं।"
ानी ने किा- "तुम क्या कि ििी िो? क्या तुम इस सत्य के प्रहत आश्वस्त िो हक तुम्हािे ये िब्द तुम्हािे हवषय में कभी हनभाथन्त हसद्ध िो सकेंगे? यि कैसे सम्भव िो सकता िै? एक हदन मैं तुम्हािी पिीक्षा लूूँगी। मुझे उस अवसि की प्रतीक्षा िै।"

एक हदन ििा के मन में पुरुषोत्तम के दिथन की इच्छा िाग्रत हुई। वि अपने हमत्र ियदेव के साथ मस्ट्न्दि गया। उसने ियदेव के साथ वि िात मस्ट्न्दि में िी व्यतीत की।

प्रातःकाल के पूवथ क्षणों ंमें िी िानी ने पद्मावती को बुलाया। पद्मावती ने विाूँ िीघ्राहतिीघ्र पहुूँच कि पूछा हक वि नगण्य नािी उसकी क्या सेवा कि सकती िै? िानी घोि दुःख के कािण छाती पीट-पीट कि िोने लगी। उसने पद्मावती से किा- "ििा कल तुम्हािे पहत के साथ भगवान् पुरुषोत्तम के दिथन के हलए मस्ट्न्दि गये। हकन्तु मैं तुमसे यि हकस मुूँि से कहूँ हक विाूँ तुम्हािे पहत का दिेान्त िो गया। अपने अहभि हमत्र की मृतुयु से ममाथित ििा अभी तक मस्ट्न्दि से निीं ंलौटे िैं। मुझे यि दुःखद समाचाि विाूँ से लौटे हुए सेवकों से हमला।"

िानी के इन िब्दों ंसे पद्मावती को ममाथन्तक पीडा िई। पिले वि मूस्ट्च्छथत िोकि हगि पड़ी, हनःसंज्ञ हुई औि तत्पिात् उसका दिेान्त िो गया।

िािा तथा ियदेव मस्ट्न्दि से लौटे। िािप्रासाद में प्रवेि के पिात् उन लोगों ंने देखा हक पद्मावती फिि पि मृत पड़ी हुई िै। ििा ने अपनी पत्नी से पूछा- "पद्मावती को क्या िो गया?" िानी ने किा- "मैं पद्मावती के पाहतव्रत्य की पिीक्षा ले ििी थी। िब आपके छोटे भाई की पत्नी हचता पि आरूढ़ िोने िा ििी थी, तब उसने उन पि कटाक्ष हकया था। अतः मैंने हवनोद में िी उससे कि हदया हक उसके पहत का दिेान्त िो गया। उसी क्षण चेतनािून्य िो कि वि हगि पड़ी औि तत्पिात् उसका दिेान्त िो गया। आप इसके हलए मुझे क्षमा कीहिए।"

िािा ने अप्रसन्न मुद्रा में िानी से किा- "मैं तुम्हािा परित्याग किता हूँ। तुम यिाूँ से चली िाओ।" ियदेव ने उन्हें िान्त किते हुआ किा- "िानी हनदोष िै। भावुकता तथा उत्तेिना के विीभूत िो कि लोग कभी-कभी झूठ बोल देते िैं।" इतना कि कि उन्होंनें अपने िाथ में पद्मावती के िाथों ंको ले कि भगवान् कृष्ण का ध्यान हकया। इसके पिात् वि उनकी महिमा का गुण-गान किने लगे। कुछ िी क्षणों ंके पिात् पद्मावती भी उठ कि अपने पहत के साथ भगवान् का प्रिस्ट्स्त-गान किने लगी। िानी ने उसके चिणों ंपि हगि कि उससे क्षमा-याचना की।

जयदेव के अन्तिम हदन

ियदेव ने प्रहतज्ञा की हक वि िीवन पयथन्त गंगा में िी स्नान किेंगे। वि अब वृद्ध िो गये थे। एक हदन गंगा-स्नान के पिात् लौटते समय वि मूस्ट्च्छथत िो कि हगि पड़े। कुछ देि बाद उनकी मूच्छाथ भंग हुई। ििा ने उनके हलए एक पालकी की व्यवस्था कि दी; हकन्तु ियदेव ने इसे स्वीकाि निीं ंहकया। ियदेव की तपस्या तथा भस्ट्क्त के कािण गंगा कमल के पुष्पों ंके साथ उनके घि के कुएूँ में स्वयं प्रकट िो गयीं।ं

िो हवनम्र, हनष्कपट, अकृहत्रम स्वभाव तथा कृष्ण के मिानतम भक्त थे, हिनमें संग्रि-वृहत्त का सवथथा अभाव था, हिन्हें कृष्ण के ध्यान में सदैव आनन्दानुभूहत हुआ किती थी, िो एक पूणथपुरुष तथा क्षमािीलता की प्रहतमूहतथ थे, उन ियदेव का महिमामय िीवन ऐसा िी था। संन्यास के ििस्य से परिहचत िोने के कािण वि पत्नी के साथ ििते

एि भी संन्यासी थे। वि िानते थे हक इस्ट्यि-हनग्रि के पित् िो मनःस्ट्स्थहत िोती िै, विी संन्यास िै। उनका िीवन इस बात का एक दृष्टान्त िै हक गृिस्थाश्रम में भी ईश्वि-साक्षात्कि सम्भव िै।

मि सबके हलए प्रेिणाप्रद ियदेव की महिमा उत्तिोत्ति वृस्ट्द्ध को प्राप्त िो।

हवद्यािण्य

श्री आहद िंकिाचायथ भगवत्पाद से प्रािम्भ िंकिाचायों की क्रम-पिम्पिा के अनुसाि श्री हवद्यािण्य इक्कीसवें िंकिाचायथ थे। हवियनगि साम्राज्य तथा वेद-हवद्या उन्हीं की ऐहिक तथा आध्यास्ट्त्मक सृहष्ट िैं।

मिान् मर्ध् तत्कालीन समि में परिव्याप्त दुव्यथवस्था, िाििकता एवं दैन्य के स्थान पि हिन्फ्दू-संस्कृहत के पुनरुद्धाि तथा हिन्फ्दू-प्रभुसत्ता की स्थापना के प्रबल आकांक्षी थे। अपनी इस आकांक्षा की पूहतथ के हलए वि हकस्ट्ष्कन्धा के हनकट ऋष्यमूक पवथत की एक िीतल गुिा में देवी बाला के आिीवाथद की प्रास्ट्प्त के हलए तप कि ििे थे। तप के प्रहत उनके दृढ़ हनिय के काििण देवी उनकी भाव-समाहि में उनके समक्ष प्रकट िो गयीं। उन्होंने उनसे िो-कुछ किा, उसका तात्पयथ यिी था हक उनकी िाहदथक इच्छा की पूहतथ उनके आगामी िन्म में िी िो पायेगी। यि सुन कि उस मिान् योगी ने संन्यास-ग्रिण का हलया। संन्यास का अथथ िी िोता िै दूसिा िन्म-ग्रिण। उन्होंने देवी का पुनः आह्वान हकया। एक हकंवदन्ती के अनुसाि वििाँ लगभग तीन घण्टों तक स्वणथ, महण-माहणक्य तथा मोहतयों का वषथण िोता ििा औि मिान् मर्ध् संन्यासी हवद्यािण्य के रूप में परिणत िो गये। वि हिन्द-साम्राज्य की स्थापना कब कैसे तथा किाँ किें, इसके हलए उन्हें आवश्यक हनदेि भी प्राप्त िो गये।

तुगभिा के उत्तिी तट पि अनेगस्ट्न्ड नामक एक स्थान था। अतः यि स्थान हवरूपाक्ष मस्ट्न्दि के चतुहदथक िोने के काििण नदी के दहक्षण तट पि पड़ता था। उस मिान् सन्त ने अपने योिनानुसाि अपने हवद्यानगि का हनमाथण हकया। िब वि तपस्या कि ििे थे, तब दो गड़रिये उनकी सेवा हकया किते थे। ये दोनों सिोदि भाई थे िो उनके हलए प्रहतहदन दुग्धाहद आवश्यक सामग्री की व्यवस्था किते थे। उन्होंने उन्हें हुक्का तथा बुक्का नामों से अहभहित कि वििाँ का ििा बना हदया औि अपने भाई को मस्ट्न्त्र-पद प्रदान कि वि स्वयं साम्राज्य के सामान्य प्रिासन की देख-िेख किने लगे। उनके उदात्त आध्यास्ट्त्मक व्यस्ट्क्तत्व के काििण लोग उन्हें हनमथिमि किा किते थे। हिस पहवत्र मण्डप में बैठ कि हनमथिमि आध्यास्ट्त्मक सािना हकया किते थे, उसके अविेष को िम्पी नामक स्थान पि तुंगभिा नदी के गभथ में आि भी देखा िा सकता िै। िम्पी गुन्टकल-बंगलौि िेलवे लाइन के िोसपेट िेन से आठ मील दूि िै। इसी प्रकाि मिान् हवरूपाक्ष मस्ट्न्दि की दहक्षणी परिक्रमा पि हनमथिमि की इष्टदेवी बाला की वेहदका को भी देखा िा सकता िै। िमािी आयथ-संस्कृहत की भााँहत िम्पी के नाम पि आि उसका ध्वंसाविेष मात्र िेष िि गया िै िो अहत-हवस्तृत िै। हवद्यािण्य ििा हनहमथत अहवस्मिणीय हवद्यानगि का हचत्र भव्यता में अहितीय िै।

भाितीय तथा हवदेिी साक्ष्यों के अनुसाि अट्ठाि मील लम्बा तथा दि मील चौड़ा यि हवस्मयिनक नगि आयताकाि रूप में अवस्ट्स्थत था। तुंगभिा नदी को हवहभन्न सिहणयों में इस प्रकाि अपवहतथत कि हदया गया था हक नगि के कोने-कोने में िुद्ध तथा स्वच्छ िल उपलब्ध था। नगि-हनमाथण-योिना हनदोष, स्वास्थ्य-सम्बन्धी उपक्रम उत्तम, व्यापाि समुन्नत तथा िास्ट्न्त-व्यवस्था अनुकिणीय थी। नागरिक सच्चरित्र, न्याय हप्रय, हवनम्र तथा अहतहथ-सत्काि में कुिल थे। मिान् चक्रय ने इसे इसके स्वहणथम काल में देखा था। कैथोहलक पादिी सन्त फ्रास्ट्न्सस िेहवयि हिन्फ्दू िाज्य की मिानता से हवस्ट्स्मत िो गया था। वि इससे इस सीमा तक प्रभाहवत हुआ हक उसे यिााँ के हनवाहसयों के िमाथन्तिण सम्बन्धी अपनी मित्त्वाकांक्षा की हवफलता का पूवाथभास हमलने लगा। उसने अपने अहभयान को केवल दहक्षणी भाग तथा कोिोमण्डल के तटीय क्षेत्रों तक िी सीहमत िखा। यि नगि िामानुि तथा मर्ध् के सम्प्रदायों के िमाथध्यक्षों का हवश्राम स्थल बन गया; क्योंहक हवद्यानगि स्पष्ट रूप से सभ्यता का स्रोत-स्थान था।

इस भव्य नगि की स्थापना के पित् हनमथमेि दहक्षण में िकिाचायथ की आध्यास्ट्कि पीठ शृंगेिी चले गये। वििाँ वि वेद-भार्ष् के अपने पूवथ-हनहदथष्ट लेखन-कमथ में संलग्न िो गये। मिान् वेदव्यास ने वेदों ंका हिस रूप में संहिताकिण हकया था, उससे ि म परिहचत िैं। ि तास्ट्ब्दयाँ बीती औि हिन्फ्दू-पिाक्रम व्यविाितः लुप्त िो गया। मंच पि हविहमथयों ं
का केवल अवतिण िी निीं ंहुआ, अहपतु उन्होंनें लोगों ंपि अपने प्रभुत्व-स्थापन के अहभयान का प्रािम्भ भी कि हदया। हणों ंतथा तुकों के आक्रमण के पूवथ िी प्राचीन वैहदक िाखाओं ंके अनेकानेक अनुयाहययों ंको पलाहयत िोना पड़ा था। िमाथन्ध तथा उन्मत्त मुसलमान हिन्फ्दू-सभ्यता तथा संसूकृहत के सवथश्ेरेष्ठ स्मािकों ंको हवनष्ट कि ििे थे। हकनुतु इस परिस्ट्स्थहत में भी हवियनगि साम्राज्य उत्थान को प्राप्त हुआ हिसके परिणाम-स्वरूप लोगों ंको असुिक्षा की भावना से मुस्ट्क्त प्राप्त हुई। हकनुतु दिे की संसूकृहत की पुनःप्रहतष्ठा का कायथ अभी िेष िी िि गया था। इस अहभयान की सफलता के हलए हवद्याण्य साठ वषथ की आयु में भी उद्यत िो गये। किा िाता िै हक वि इसके पित् भी नब्बे
श्रीमर्ध्िकिीौहंस्वामी-ग्रिण के पित् हवद्याण्य के नाम से हवख्यात हुए, का िन्म १३५० ई. में कुण्डिीम, बेल्लािि में हुआ। उनके हपता का नाम मायन (Mayana) तथा उनकी माता का नाम सुमहत था। मर्ध् के दो भाई थे। इनमे सायन (Sayana) अनुि तथा बोिनाथ अग्रि थे। ििभिाा गोत्रीय मर्ध् का सम्बन्ध युिवेद तथा बोिायन-सूत्र से था। ब्रह्मचयाथश्रम में उनका प्रवेि आठ वषथ की आयु में िआ। वि इस आश्रम में गुरु सवथज्ञ हवषुणु के संिक्षण में छत्तीस वषों तक ििे। इस अवहि में उन्होंनें चािों ंवेदों ंका सांगोपांग अध्ययन कि इनके दबोि तथा गुह्य अंिों ंके ििस्योदघाटन में स्वयं को हनष्णात हसद्ध कि हदया।

हवद्याण्य के हनष्ठावान् हिर्ष् बुक्का अथाथत् बुक्कि िािा ने उनसे चािों ंवेदों ंकी भार्ष्-िचना की प्राथथना की औि इसके हलए अपने गुरु तथा पिामिथदाता को समस्त िािकीय सािन उपलब्ध किा हदये। वेदों ंके एक नये भार्ष् की हवद्याण्य की यि योिना इतनी मित्त्वपूणथ तथा श्रमसाध्य थी हक वि कायथ एक व्यस्ट्क्त के हलए असम्भव था। अतः हवद्याण्य ने अपने हनदेिन में कायथ किने के हलए भाित के प्रत्ेयेक भाग के वेदज्ञ पस्ट्ण्डतों ंसे उनके सियोग की याचना की। उनके इस आह्वान पि हवियनगि में सिस्रों ंकृतहवद्य िन पहुँच गये। उनके आगमन से हवियनगि की सांसूकृहतक गरिमा में प्रचुि वृस्ट्द्ध हुई। िम्पी में हवरूपाक्ष, हवट्ठलस्वामी तथा ििि िामास्वामी के प्रस्ति हनहमथत मण्डपों ंसे िम उन सुहवसूतृत सभा-भवनों ंकी परिकल्पना कि सकते िैं हिनमें हविज्जन हवचाि-हवमिथ के हलए एकत्र हुआ किते थे। वििाँ इस प्रकाि के अनेक भवन थे हिनमें कमल-मण्डप के अविेष को आि भी देखा िा सकता िै। यि एक भव्य संिचना थी। इन भवनों ंके अहतरिक्त वििाँ सिस्रों ंलोगों ंको ििण देने में समथथ अनेक िान्ति-िीतल गुफाएँ भी थीं।ं इन सबसे िम उन पस्ट्ण्डतों ंकी संख्या का सिलतापूवथक अनुमान कि सकते िैं िो ििमािी लुप्त संसूकृहत के पुनरुद्धाि में संलग्न थे। हविज्जनों ंकी भौहतक सुख-सुहविा के हलए सम्राट् स्वयं प्रयत्निील ििते थे। उनके इस कायथ से वैहदक पुरुत्थान के अहभयान को िस्ट्क्त प्राप्त िोती थी। वेदों ंके पूवथ भार्ष्काि कुछ वेद-मन्त्रों ंके अहभप्राय के सम्बन्ध में हकसी हनहित हनष्कषथ पि निीं ंपहुँच सके थे; हकनुतु हवद्याण्य ने इन मन्त्रों ंके हनहिताथथ को सवथा स्पष्ट रूप से प्रसुतुत हकया।

मर्ध् हवद्याण्य िािा प्रणीत प्रथम ग्रन् 'िैहमनीय न्यायमाला' िै। इनके दसिे ग्रन् का नाम िै 'नैयाहयक न्यायमाला'। इसके पित् उन्होंनें युिवेद की तैहत्तीय संहिता तथा इसी वेद के ब्राह्मणों ंतथा आिण्यकों ंपि भार्ष् हलखे।

भावस्वामी ने 'बोिायन गृह्य सूत्र का भार्ष् हकया था। इसे अहिक परिषूकृत तथा परिमाहिथत रूप से प्रसुतुत किने के हलए हवद्याण्य ने 'बोिायन गृह्य सूत्र' पि अपना एक स्वतन्त्र भार्ष् हलखा।

श्री हवद्याण्य ने युिवेद के अर्ध्युथ काण्ड, ऋग्ेवेद के मन्त्रों,ं संगीतमय सामवेद तथा अथवथवेद के यज्ञ का हनरूपण किने वाले अंिों ंका भार्ष् हलखा। इसके पित् उन्होंनें िमथ-सूत्रों,ं ििपिाा-सूमृहत तथा गीता-भार्ष् की औि ध्यान

हदया। वि अमिकोि–से हकसी िब्दकिो की िचना के हलए भी प्रख्यात िैं। उन्होंनें ज्योहतष तथा औषहि-हवज्ञान से सम्बस्ट्न्धत पास्ट्ण्डत्यपूणथ ग्रन्थों ंकी िचना की। इन ग्रन्थों ंमें 'गीता-भार्ष्' तथा 'अमिकोि' अभी तक उपलब्ध निीं ं िो सके िैं।

िोिोि तक हविुद्ध तथा हविद ज्ञान का सम्बन्ध िै, लोगों ंके मतानुसाि उनका ऋग्वेद-भार्ष् एक चमत्कािपूणथ कृहत िै। उन्होंनें इस भार्ष् की िो भूहमका हलखी िै, वि पाठकों ंकी बुस्ट्द्ध को तीक्ष्णता प्रदान किती िै औि उनकी बोि-िस्ट्क्त को िाग्रत किती िै।

पिात्य िगत् के हलए इसका सवथप्रथम अनुवाद मैक्स मूलि ने हकया। इसके पिात् फ्रेन्च तथा िमथन भाषाओं ंमें भी इसके अनुवाद हुए। इस तर्थ् से परिहचत िोने के पिात् िी िम स्वयं को इस भार्ष् के सम्बन्ध में कुछ कि पाने की स्ट्स्थहत में पा सकते िैं हक इसमें िेढ़ लाख श्लोक िैं तथा इसमें िोती पि हवद्यमान सभी मनोगम्य पदाथों का हववेचन हकया गया िै। इस ग्रन्थ के लेखन के हलए उनको मुख्यतः यास्क के हनरुक्त तथा पूवथवती भार्ष्किों–स्कन्द, नािायण, उद्गीत औि वेंकट माधव की कृहतयों ंपि हनभथि िोना पड़ा था।

ऋग्वेद तथा इस पि हवद्यािण्य का भार्ष् सुहवचारित तथा बहुआयामी अनुसन्धान के हवषय ििे िैं। सुहवसृतृत सागि की भाँहत इनसे िमें अमूल्य ित्नों ंकी सम्प्रास्ट्प्त िोती िै; हकन्तु इसके ििस्य से िम अभी तक पूणथतः परिहचत निीं ंिो सके िैं। ऋग्वेद पि हवद्यािण्य के भार्ष् के सम्पादन के हलए आिुहनक हविानों ंको पचीस वषों तक परिश्रम किना पड़ा।

प्रख्यात वैहदक हविानों ंने व्याकिण, भूगोल, खगोल हवद्या, औषहि-हवज्ञान, ज्याहमहत तथा वास्तुकला के क्षेत्र में हवद्यािण्य के असािािण पास्ट्ण्डत्य की पुहष्ट की िै। शृंगेिी के हविाल मस्ट्न्दिों ंका अप्रहतम सौन्दयथ, हिल्प तथा इनके हनहिताथथ उनकी हिल्प तथा मन्त्रिास्त्र् में गििी पैठ के साक्षी िैं। वस्तुतः हवद्यािण्य िी शृंगेिी के गौिव तथा इसकी गरिमा के स्रष्टा थे। यि गरिमा आि भी अक्षुण्ण िै। हवद्यानगि के हवध्वंस-काल में मुसलमानों ंने हवद्यािण्य के हविाल पुस्तकालय को िला कि भस्म कि िाला। तालीकोटा के युद्ध के पिात् हवद्यानगि के हवघटन के कािण हुई अस्त-व्यस्तता के फल-स्वरूप िब शृंगेिी के िंकिाचायथ को अन्यत्र िाने को हववि िोना पड़ा, तब अनेक पाण्डुहलहपयाँ खो गयीं।ं इनमें कई पाण्डुहलहपयाँ मौहलक थीं।ं

श्री हवद्यािण्य ऐसे मिान् सन्त थे हिन्होंनें वेदों ंके ििस्य तथा इनकी दुबोिता को पूणथतः अनावृत तथा सिल-सुबोि कि हदया। अपने इस कृत्य से उन्होंनें पिवती पीढ़ी को वि क्षमता प्रदान की हिससे वि प्राचीन आयथ-संसूकृहत का अमृत-पान कि गौिवपूणथ तथा सािथक िीवन व्यतीत कि सके। उत्ति में उज्जैन से दहक्षण में कन्याकुमािी तक तथा पहिम में िािका से पूवथ में पुिी तक, हविेषतः गंगा, नमथदा, गोदाविी, कृष्णा, कािेिी तथा ताम्रपणी–िैसी पहवत्र नहदयों ंके तटीय क्षेत्रों ंमें कृतहवद्य ब्राह्मणों ंके उपहनवेि स्थाहपत िो चुके थे।

इस हवसूतृत हवविण का एकमात्र उद्देश्य हनमथिमेि को इस गौिव-गाथा का प्रणेता हसद्ध किना िै हिनकी िम सांसूकृहतक सन्तान िैं। हवद्यािण्य का ऋग्वेद-भार्ष्, व्याकिण पि उनकी उत्कृष्ट कृहत, अपनी इष्टदेवी बाला के सम्बन्ध में िहचत 'हवद्याणथवम' नामक ग्रन्थ में मन्त्र–िास्त्र् का हववेचन. उपहनषदों ंके दबोि हसद्धान्तों ंसे समस्ट्ति 'ब्रह्मगीता' तथा िस्ट्क्त-उपासना की भस्ट्क्त-सािना से सम्बस्ट्न्धत 'सौभार्ष् ित्नाकिम् - िैसे ग्रन्थ िम लोगों ंमें अहिकांि के हलए बोिगम्य निीं ंिै। अतः इन्हें सामान्य िन के अध्ययन िे हलए अनुमोहदत निीं ंहकया िा सकता। हकन्तु उनकी सांसूकृहतक सन्तान िोने के नाते उनके 'पंचदिी', 'िंकि हवियम् (भगवत्पाद श्री आहद िंकिाचायथ का िीवनवृत), 'पिािि सूमृहत' की व्याख्या औि अन्ततः उनकी अहितीय साहिस्ट्त्यक उपलस्ट्ब्ध 'ऋग्वेदभार्ष्' िैसे अपेक्षाकृत सुबोि ग्रन्थों ंमें गहभथत उनके ज्ञान का अमृत-पान िमािा कतथव्य िै।

हवद्यािण्य की महिमा अमि िि े !

अप्पय्य दीहक्षिता

पानीपि के समरांगण के
अडि-भस्म से सरडष्ट हुई थी मुगल राज्य की।
उन्ी ोंडदनो ों
रोंगराजुध्वारी के घर में
जन्म डलया उस ड़िि ने डजसकी िों ख-ध्वडन से डदिा-डदिा गूँडजि हो गयी, हुए उद्बुद्ध सभी जन।
न्यायोडचि िओि भरा उनके प्राणो ोंमें, जो थे वेदो ोंके, उपडनषदो ोंके सोंरिक,
मोह-पाि से सबको मुि कर डदया उसने। करुण डवलाप-श्रवण में हुए समथक सभी जन।
भारि के परररिप्त आत्म को भेद,
पुरािन गौरव से जो डमर्थ्ा िु डष्ट प्राप्त होिी थी सबको, अब न छलेगी डकसी व्यक्ति को।
सन्त िथा करिडवद्य मनीषी,
महाप्राण अप्पय्य दीडि ने
'मा फलेषु कदाचन' का उद्घोष कर डदया।
िेष रह गया कमक,
उसी का वरण करें हम। दाय में डमला जो है,
उसके परररिण के डलए डकया अडभप्रेररि सबको।
दिकन में डनष्णाि सन्त का डकया वरण वैदुष्य-महादेवी ने ित्क्षण, और अमषक-ग्रस्त हो गये सभी वे
जो थे िथाकडथि पक्तिि उस युग के।
पर ज्ञानाकोंिी जन-मन की
श्रद्धा के वे पात्र बन गये।
डिव-स्तोत्र के गाये गीि उन्ोनें
डजनमें स्वर-लाडलत्य मनोहर-मधुररम ।
उस कडववर के गीिो ोंके पीयूष का वषकण अभी जनो ोंके कणो ोंमें अब भी होिा है। डवद्वज्जन के डलए डवद्वत्तापूणक डवधा से चिुवेद का पयाकलोकन करके उनके डसद्धान्तो ोंको

ईष्याकमयी दृडष्ट से अकलुष ि था अनाहि
ग्रन्थो ों में गुक्तफफि कर ि ाला,
डजनसे पररडचि हुए सभी जन ।
एक बार पहुँचे अप्पय्य डिरुपडि के मक्तन्दर,
मक्तन्दर का महन्त रुष्ट हो गया,
गरज कर बोला उनसे
"वडजकि िैव-प्रवेि यहाँ है,
इस पररसर से बाहर जाओ।"
सन्त को हुआ रोष,
उन्ोनें ि ान्त भाव से,
गुह्य ि क्ति से एक रि में
डिव-डवग्रह में
लक्ष्मी-पडि की प्रडिमा को पररणि कर ि ाला।
मि-याचना की महन्त ने।
उसके आग्रह पर वह डवग्रह
पूवक रप में हुआ प्रडिडष्ठि ।

दीर्डिार ऐसे ही सन्तो ों में थे,
वे थे ि ोंकर के अविार डजन्ें सब
ज्ञानी, मेधावी होने के कारण
दि हैं सम्मान अभी ि क।

अप्पय्य दीहक्षति का ि न्म १५५४ ई. में उत्ति आकाथट ि नपद-स्ट्स्थत आहणथ (Ami) के हनकट अियपालम् में उत्ति प्रौस्थपाद नक्षत्र समुदाय में प्रमाहद वषथ की कन्या ि ाहि में हुआ। उनके हपता का नाम ि ंगिाुर्धिीि था। नामकिण-संस्किा के समय अप्पय्य को हवनायक सुब्रह्मण्यम् नाम से अहभहित हकया गया। आचायथ दीहक्षति या अच्छि दीहक्षति उनके अनिु थे। अप्पय्य ने गुरु ि ाम कहव के संक्षिण में पहवत्र ि मथग्रन्ों ंका अध्ययन हकया। उन्होंनें अल्पायु में ि ी चतुदथि हवद्याओं ंमें दक्षता प्राप्त कि ली। इसको एक चमत्कािा ि ी कहा ि ायेगा।

िाज्य के मुख्य पस्ट्ण्डत ि ंगिाा के दीवान्त के पित् वेलूलि के ि ाा हचिबोि ने अप्पय्य तथा अच्छि दीहक्षति को अपनी िाि ानी में आमस्ट्न्त्रत हकया। हकन्तु दीवान ताताचािी िैवों ंको फूटी आँखों ंभी नहीं ंदेख सकता था। भगवान् हिव के उपासकों ंको वि ि य तथा हनन्दनीय समझता था। अप्पय्य भगवान् हिव की लीला तथा महिमा का गुण-गान किते थे।

अप्पय्य अत्यन्त मेिावी थे। वि तकथिास्त् में हनष्णात थे। इसके अहतरिक्त उनको व्याकिण, तत्त्विास्त् तथा ज्ञान-हवज्ञान की अन्य हविाओं ंमें भी दक्षता प्राप्त थी। वि सवथिास्त् ममथज्ञ थे। वेदान्त की उनकी व्याख्या अप्रहतम थी। वि सब लोगों ंकी ि ंकाओं ंका समािान किते थे औि दूि-दूि तक प्रख्यात थे। तंजािवूि, कालिस्ट्स्त तथा हतरुपहत के िाि ा उनको आमस्ट्न्त्रत हकया किते थे।

डववाह

त्निखेत श्रीहनवास दीहक्षति ि ो संसूकृत के बहुशुरुत हविान् तथा कांचीपुिम् की कामाक्षी देवी के उपासक थे, चोल साम्राज्य की ि ासभा के मुख्य पस्ट्ण्डत थे। चोल सम्राट् ने एक हदन उनसे पूछा- "पस्ट्ण्डत ि ी, आि कौन-सा हदन

ैं?" पस्ट्ण्डत िी ने उनके प्रश्न के उत्ति में किा - "अिो पूहणथमा िै।" हकनुतु वास्तव में उस हदन िुक्ल पक्ष का प्रथम हदन था। उनका उत्ति सुन कि सब लोग िाँस पड़े हिससे वि बहुत दु:खी हुए। वि कामाक्षी देवी के पिम भक्त थे। देवी उन पि सदैव कृपालु िािती थीं।ं श्रीहनवास ने उनसे प्राथथना की। देवी ने उनके समक्ष प्रकट िो कि उन्हें अपना एक कणथफूल हदया अिौ किा वि इसे आकािा में फेंक दें। श्रीहनवास ने ऐसा िी हकया। वि कणथफूल पूणथचंद्र का आकािा ग्रिण कि आकािा में देदीप्यमान िो उठा। िािा, मस्ट्न्त्रगण तथा अन्य लोगों ंने इस चमत्कािा को अियथ चहकत िो कि देखा। िािा ने उन्हें स्वणथ-हसंिासन पि आसीन हकया तथा महण-माहणक्य से अलंकृत कि उन्हें श्रद्धापूवथक सिाहनत हकया।

श्रीहनवास को ज्ञात हुआ हक अप्पय्य एक मिान् हविान् िैं। उन्होंनें उन्हें पिास्त किना चािा। उन्होंनें कामाक्षी देवी का अिीवाथद प्राप्त किने के हलए उनके प्रसादन के हनहमत्त कांचीपुिम् के हलए प्रस्थान हकया। विााँ उन्होंनें कठोि तप हकया। देवी ने उनके समक्ष प्रकट िो कि वि मााँगने को किा। इस पि श्रीहनवास ने किा - "आप समस्त कलाओं ंको मेिी हिह्वा पि अवस्ट्स्थत कि दें हिससे मैं अप्पय्य को पिाहित कि सकूं। वि आप िी की कृपा से मिान् हविान् तथा वक्ता िो सका िै। सािो संसाि में मै प्रख्यात िै। मेिी यि प्रख्याहत सुिहक्षत ििे, इसके हलए आप मेिी सिायता कीहिए।"

देवी ने किा- "िे भक्त, अप्पय्य सामान्य प्राणी निीं ंिै। वि भगवान् हिव का साक्षात् अवताि िै। मैं भी तुम्हािा प्रहतरूप िै। अप्पय्य के प्राहणग्रिण की व्यवस्था कि तुम उसके श्रद्देधेय श्वसुि िो िाओ। तुम्हािी साथ हववाद में मत उलझो। उसके साथ अपनी पुत्री मगलास्ट्म्बका के कामना की पूहतथ इसी हवहि से िो सकेगी।"

उस समय भगवान हिव ने अप्पय्य के स्वप्न में प्रकट िो कि उनसे किा- "िे वत्स, तुम काचीपुिम् िाओ। श्रीहनवास हववाि में तुमे्हे अपनी कन्या प्रदान किेगा।"

अप्पय्य तत्काल कांचीपुिम् िा कि ििने लगे। विााँ श्रीहनवास अपनी पुत्री के साथ उनके वास-स्थान पि पहुाँचे। अप्पय्य ने अयथ, पाद्य तथा आसनाहद से उनका हवहिवत् सिान हकया। श्रीहनवास ने उनसे किा- "देवी ने मुझे आदेि हदया िै हक मैं तुमसे अपनी कन्या का हववाि कि दूाँ। तुम इससे हववाि कि ख्याहत, सम्पहत्त तथा िास्ट्न्त प्राप्त किो।"

मंगलास्ट्म्बका से हववाि कि अप्पय्य गृिस्थ िीवन व्यतीत किने लगे। देि के हवहभन्न भागों ंसे हितने भी हवद्याथी उनके पास आते थे, वे सबको हिक्षा प्रदान किते थे। िािा ने उनसे िमथ की हिक्षा ग्रिण की। अप्पय्य ने संसूकृत हवद्या का दूि-दूि तक प्रचाि-प्रसाि हकया।

अप्पय्य की दो पुहत्रयााँ थीं।ं कहनष्ठ पुत्री मंगलाम्बा भगवान् हिव की अनन्य भक्त थी। नीलकण्ठ अप्पय्य का पौत्र था।

सोमयज्ञ

अप्पय्य को दीहक्षति भी किा िाता था। उन्होंनें चिमौलीश्विि के प्रसादन के हलए सोमयज्ञ का अनुष्ठान हकया। काचीपुिम् में उन्होंनें वािपेययज्ञ का भी अनुष्ठान हकया हिसमे सत्ति अश्वों ंकी बहल दी गयी। कुछ पस्ट्ण्डतों ंका अिोप था हक यज्ञ में हिंसा िोती िै; हकनुतु अप्पय्य ने विााँ उपस्ट्स्थत सभी लोगों ंको यि हदखा हदया हक वेद-मन्त्रों ंके पाठ से विााँ का कण-कण पहवत्र िो गया था अिौ उन अश्वों ंको मुस्ट्क्त प्राप्त िो गयी थी। दिथकों ंने देखा हक अश्व अपने सूथूल ििीि का परित्याग कि स्वगाथिोिण कि ििे िैं अिौ हसद्धों,ं चािणों ंतथा गन्धवों ंिािा उनका प्रिस्ट्स्त-गायन िो ििा िै। उन अश्वों ंने आकािा से अप्पय्य का गुण-गान किते हुए किा - "आप िी की कृपा से िमें स्वगथ-प्रास्ट्प्त का सौभाग्य प्राप्त हुआ िै।" इसके पिात् पस्ट्ण्डतों ंको अपनी िंका का समािान प्राप्त िो गया।

अनेक ि ा अप्पय्य के यिााँ आ कि उनको अपनी श्रद्धांहिल अहपथत किते औि उनका आिीवाथद प्राप्त किते; हकन्तु अपने मन्त्री ताताचायथ की मन्त्रणा ि ा उद्घान्त वेल्लिो का ि ा हचिबोा उनके यिााँ नहीं ं ाता था; हकन्तु कुछ हदनों ंके पित् विापेययज्ञ में अपनी अनुपस्ट्स्थहत पि उसे घोि पित्ताप हुआ। अब वि अप्पय्य के असािाण गुणों ंतथा हवहिष्ट आध्यास्ट्कि महिमा से अवगत ि ो चुका था। वि उन्हें अपने ि ाज्य में लाना चािता था। उनको आमस्ट्न्त्रत किने के हलए उसने उनके पास कई पस्ट्ण्डतों ंको भेिा। अप्पय्य उसके आमन्त्रण को स्वीकाि कि वेल्लिो गये। हचिबोा ने उनका हवहिवत् स्वागत-सत्काि हकया औि उनके हलए 'सवथतो भिम्' नामक आश्रम का हनमाथण कि हदया। उसने उनको अपना प्रिानमन्त्री बना हदया। ताताचायथ के मन में उनके प्रहत अत्यहिक ईर्ष्ाथ के भाव ि ाग्रत ि ो उठे।

ताताचायथ के कुकमथ

ताताचायथ से उत्प्रेरित कुछ लोगों ंके अहभचाि के काित ि ानी ि ोगग्रस्त ि ो गयी। अप्पय्य ने उन्हें ि ोग-मुक्त कि हदया। ताताचायथ के काित अप्पय्य को अनेक कष्ट उठाने पड़े। उसने हवष्णु-मस्ट्न्दि के पिुिोहित को उनको हवष देने के हलए घूस दी। पिुिोहित ने चिणामृत में हवष हमला कि अप्पय्य को दे अप्पय्य ने भगवान् ि िि से प्राथथना की हिसके परिणाम स्वरूप वि हवष में रूपान्तरित ि ो गया।

ताताचायथ ने अप्पय्य की ि त्या की योिना बनायी। उसने उन्हें एक हलखा हिसमें उनसे आिी ि ात को हचिबोा से हमलने की प्राथथना की गय पत्र में हचिबोा के ि ाली ि स्ताक्षि थे। ताताचायथ ने सेनानायक को अिि की ि त्या के हलए सिस्त् सैहनकों ंको भेिने का आदेि हदया। अिि आिी हनिाथरित समय पि ि ा से हमलने चल पड़े। सैहनक उनकी ि त्या के हलए तैयाि थेः हकन्तु अप्पय्य को देखते ि ी वे ि ाथों ंमें तलवाि हलये अपने स्थान पि ि ी स्तम्भवत् बद्धमूल ि ो गये।

एक बाि अप्पय्य ने हवरिहचपुिम में मागथिीषथ उत्सव में सस्ट्हलत के हलए अपने हिष्ों ंके साथ प्रस्थान हकया। मागथ में ताताचायथ ि ा हनदि ि ाकुओं ंने उन्हें घेि हलया। स्वयं ताताचायथ उन ि ाकुओं ंके साथ था। अय ने उनको हिक्षा देने का हनिय हकया। उनकी आाँखों ंसे हचनगारियााँ हनकलने लगीं ंहिनसे ि ल कि वे सभी ि ाकू भस्म ि ो गये; हकन्तु दयालु-हृदय अपाय ने अपने ि ाथों ंसे उस भस्म का स्पिथ कि उन्हें पुनिीहवत कि हदया। ता ताताचायथ ने उनको इस प्रकाि सम्बोहित हकया- "भगवन्, मैं मिान् पापी ि ूाँ मैंने आपको बहुत कष्ट हदया ि ै। मैं आपके चिणों ंमें अवनत-ििि हाँ। आप ि ी मेिे एकमात्र ि िणदाता ि ैं। मुझे क्षमा कि मेिी ि क्षा कीहिए।" ताताचायथ ने से ि ी अप्पय्य के चिणों ंपि आि-समपथण हकया, वैसे ि ी उसके समस्त पापों ंक प्रक्षालन ि ो गया। वि अप्पय्य का अहभि हमत्र बन गया औि उनके प्रहत उसके सािे वैि-भाव समाप्त ि ो गये। अप्पय्य ने उसको पहक्षतीथथ में ि ि कि अड़तालीस हदनों ं तक ईश्विोपासना किने का आदेि हदया। ताताचायथ ने उनके इस आदेि का पालन हकया। उसने विााँ के मस्ट्न्दि का पुनहनथमाथण भी हकया।

तीथथयात्रा

अप्पय्य ने अड्यपालम् में एक मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया औि अपने दैहनक पूिन-अचथन के हलए उसमें कालकण्ठेश्वि के हवग्रि को प्रहतहष्ठत कि हदया। उन्होंने नस्ट्न्दपवथत, मध्याि ुथन, पंचनदम् (हतरुवैयारु), मदुिै, िामेश्विम्, हिवगंगा, ि मुबुकेश्विम्, श्रीिंगम्, श्वेतािण्य, कांचीपुिम्, कािी, वेदािण्यम्, मातुरुभूतेश्विम्, हचदम्बिम्, हवरुदाचलम्, हतरुवामलै, हवरिहचपुिम् तथा अन्य तीथथस्थानों ंकी यात्रा की।

एक बाि अप्पय्य की पत्नी, उनके प्रिंसकों ंतथा अन्यान्य लोगों ंने उनसे उनके यथाथथ स्वरूप के प्रदिथन की प्राथथना की। अप्पय्य तत्क्षण समाहिस्थ ो गये। उनके ीिि से एक द्युहतमान् पुरुष, ो स्वयं भगवान् हिव थे, का उद्भव हुआ ो रिाक्ष, हवभूहत तथा हवहभि हदव्य िस्त्रास्त्रों ंसे अलकृत था।

चमत्कार

एक बाि अप्पय्य तीव्र ज्वि से ग्रस्त ो गये। िाा हचहकबिो उन्हें देखने आया। अप्पय्य ने अपने ज्वि को एक मृग-चमथ में स्थानान्तरित कि हदया। वि मृग-चमथ ज्वि के कािण काँपने लगा। िाा यि देख कि स्तब्ध ि गया।

एक चमत्कि कांचीपुिम् में हुआ। विाँ अप्पय्य ने पुिबन्ध यज्ञ का अनुष्ठान हकया। आियथ की बात तो यि ै हक वे सभी पीताम्बि तथा अन्य आभूषण हिन्हें यज्ञाहग्न में िहव के रूप में अहपथत कि हदया गया था, उन्हें विदिा की मूहतथ में आवेहष्ठत देखा गया। इसके अहतरिक्त यज्ञ-कुण्ड की अहग्न ने आकाि में ऊर्ध्ािोहण किते हुए अप्पय्य की महिमा के गीत गाये औि उनके िाा िहव के रूप में अहपथत सिो पीताम्बि उनको भेंट-स्वरूप दे हदये। तंिौ के िाा निहसं तथा अन्यान्य लोग इसके साक्षी थे।

अप्पय्य के समकालीन

श्री ित्नाकि दीहक्षता, सावथभौम कहव, ताताचायथ, समिपुगव दीहक्षता निहसं स्वामी, दोड्याचायथ, हविये, व्यास भि, िपा भि, विनस्ट्न्द िभो, नीलकण्ठ दीहक्षता (अप्पय्य दीहक्षत के भाई का पौत्र), गुरु ाम कहव, गोहवन्द दीहक्षता, नािायण अर्धिि, ाचूिामहण दीहक्षता, अहतव यज्वा, िघुनाथ या बालकहव, हगिवन योगी (नीलकण्ठ दीहक्षता के मन्त्रगुरु) तथा वेंकटेश्वि माखी आहद अप्पय्य के समकालीन थे।

अत्तन्तम डदन

अप्पय्य कुछ हदनों ंतक हचदम्बिम् में िे। उन्होंनें किा हक उनका पौत्र नीलकण्ठ मदुै ा कि पाण्ड्य सम्राट् का मन्त्री िोगा औि हिवीैत का प्रचाि-प्रसाि कि ेगा।

मागथिीषथ मास की चैत्र पूहणथमा को बित्ति वषथ की आयु में अप्पय्य े हचदम्बिम् के नटिाि के साथ तादात्म्य प्राप्त कि हलया।

उनका जीवन िथा उनकी करडियाँ

श्री िंकिाचायथ भगवान् हिव के अवताि थे। उन्होंनें बाल्यावस्था में ी। संन्यास-ग्रिण कि लोगों ंको इस चतुथथ आश्रम अथाथत् संन्यास की महिमा तथा मित्ता से अवगत किाया था। उसी प्रकाि श्रीमद् अप्पय्य दीहक्षता भगवान् हिव के अंिावताि थे। उन्होंनें हितीय आश्रम अथाथत् गृिस्थाश्रम में प्रहवष्ट ो कि इस आश्रम के लोगों ंके समक्ष मुस्ट्क्त-प्रास्ट्प्त के प्रबल माध्यम के रूप में प्रस्तुत हकया। हनवृहत्तमागी िोते हुए भी िंकिाचायथ ने प्रवृहत्तमात अथाथत् कमथ को उपेक्षणीय निीं ंमाना। 'सािना पंचक' में वे किते ैं- **"वेदो डनत्यमधीयिाां िदुडदिां कमक स्वानुष्टीयिाम्"** अथाथत्- वेदों ंके पठन-पाठन के साथ इसके समादेिानुसाि कमथ भी किो। श्रीमद अप्पय्य संन्यास की उपेक्षा निीं ंकी। वि अनेक वेदान्त-ग्रन्थों ंके प्रणेता ि हिनमें समस्त उपहनषदों ंके साितत्त्व हनहित ैं। उन्होंनें अनेक सुपात्र िनों ंको हनवृहत्तमागथ की दीक्षा दी; हकन्तु दृष्टान्तों ंतथा िास्त्रों ंके उद्धिणों ंके प्रमाण प्रस्तुत कि उन्होंनें हितीय तथा तृतीय आश्रमों ंके प्रहत उत्तिदाहयत्व विन के पिात् ी चतुथथ आश्रम में प्रवेि को समुहचत बताया।

श्री ंिकिाचायथ हिव के अवतिा थे, इस कथन की पुहष्ट के हलए िमें 'हिविवस्य' में यि उद्धिण हमलता िै, **"चिुडभक सह डिषै्यैस्थ िोंकरोविाररष्यडि"** अथाथत् "ंिकि चिा हिष्ों ंके साथ अवतिा-ग्रिण किेंगे।" इसी प्रकाि दीहक्षतिा के सम्बन्ध में भी िमें ऐसा िी िास्त्-सित उद्धिण हमलता िै, **"दीििडोडप भवि् कडश्श्र् चैवाच्छान्दोग्यवोंजिा।"**

अप्पय्य के अवतिा-ग्रिण के मूल में अनेक काििण तथा प्रयोिन हवद्यमान थे। प्रथम प्रयोिन िास्त्-सित ब्रह्मचयाथश्रम से प्रािम्भ िो कि क्रमानुसाि अन्य आश्रमों ंििाा इस िमथ-सित मागथ के अनुगमन के माध्यम से सनातन िमथ की स्थापना था। हितीय प्रयोिन था अिैत वेदान्त का प्रचाि-प्रसाि। िैत तथा हवहिष्टैत मतों ंकी आलोचनिाक पृच्छा के माध्यम से व्यास–िचत ब्रह्मसूत्र के ंिकि भाष् में प्रहतपाहदत अिैत दिथन की श्रेष्ठता का पुनः प्रहतष्ठापन तृतीय प्रयोिन था। अप्पय्य दीहक्षत ने दहक्षण भाित में िैव-मत को नव-सूफूहतथ तथा अभीहवन्यास प्रदान हकया। उन्होंनें लोगों ंको भस्ट्क्त-मागथ के अनुसिण के हलए अहभप्रेरित हकया। स्वयं को दृष्टान्त-रूप में प्रसुतुत कि उन्होंनें नास्ट्स्तकों ंका मत-परिवतथन हकया अिौ उनमें वैहदक अनुदिों ंतथा हिव-भस्ट्क्त के प्रहत अहभरुहच िाग्रत की। इतना िी निीं,ं आगे बढ़ कि उन्होंनें अपनी 'हिवाकथमहण दीहपका' नामक कृहत में यिााँ तक कि हदया हक वैयस्ट्क्तक या सगुण ईश्वि की कृपा से िी लोग वेदान्त-दिथन के प्रहत आकहषथत िो सकेंगे।

श्री अप्पय्य ंिकि-दिथन के यथातर्थ् प्रहतपादन में अप्रहतम थे। उन्होंनें ंिकि के कालियी ब्रह्मसूत्र-भाष् तथा उनके अन्य वेदान्त-मतों ंमें प्रहतपाहदत स्थापनाओं ंसे पाठकों ंको पूणथतः अवगत किा हदया। हिन लोगो अप्पय्य दीहक्षतिा िािा हलस्ट्खत मूल ससूकृत ग्रन्ों ंका अध्ययन हकया िै. ने इस कथन से अवश्य सिमत िोंगें।

अन्य िमों तथा दिथनों ंके प्रहत अप्पय्य दीहक्षतिा के मत सवथा हनष्पल थे। उनके 'चातुमथत सािसंग्रि नामक ग्रन् के अध्ययन से यि स्पष्ट िो िाता िै हक िैत. हवहिष्टैत तथा ििुद्धािैत आहद मतों ंके प्रहत वि पूवाथग्रि-ग्रा निीं ंथे। देवताओं ंके प्रहत भी उनका कोई पूवाथग्रि निीं ंथा।

हकसी हविेषण से असमूपृक्त िोमांचकािी िब्द 'दीहक्षति' से हकसी अन्य का निीं,ं मात्र श्री अप्पय्य दीहक्षतिा का बोि िोता िै।

अप्पय्य दीहक्षतिा एक सौ चाि से अहिक पुस्तकों ंके प्रख्यात लेखक तथा संसूकृत भाषा तथा साहित्य की सभी हविाओं ंके सुयोग्य प्रहतहनहि िैं। उन्होंनें मुख्यतः अपने वेदान्त-सम्बन्धी ग्रन्ों ंसे मिान् ख्याहत अहिथत की। उनकी लेखनी से वेदान्त के प्रहत आस्थावान् सभी मतों ंको अहितीय हनभाथि प्रमाणों ंतथा प्रोत्सािन की सम्प्रास्ट्प्त हुई। उनके वेदान्त-ग्रन्ों ंमें 'चातुमथत साि संग्रि' में िैत, हवहिष्टैत, हिवैत तथा अिैत- इन चाि मिान् सम्प्रदायों ंििाा प्रहतपाहदत मतों ंकी हनष्पक्ष तथा न्यायपूणथ समीक्षा की गयी िै हिससे वि ग्रन् अत्यहिक प्रख्यात हुआ िै। कहवता, अलंकािास्त् तथा दिथन, संसूकृत वाङ्मय की इन सभी हविाओं ंमें अप्पय्य दीहक्षत अपने समकालीन पस्ट्ण्डतों ंकी तुलना में श्रेष्ठति थे। उनके पित् दिकों ंतक उनकी यि वरिष्ठता अक्षत ििी अिौ आि भी वि उसी रूप में हवद्यमान िै। उनके ग्रन् 'कुवलयानन्द'पा उनके समकालीन तथा प्रहतिन्िी पस्ट्ण्डतिाि िगिाथ ने अपनी कृहत 'िसगंगािा' के माध्यम से कुछ आक्षेप हकये; हकनुतु हवद्याहथथयों ंके बीच उसकी लोकहप्रयता पि कोई आाँच निीं ंआयी। हिव-सुतुहत-सम्बन्धी उनकी कहवताएाँ हिव के उपासकों ंके हलए अत्यन्त श्रद्धास्पद िै। दीहक्षतिा ने वेदान्त पि 'परिमल' नामक भाष् भी हलखा िो उनके पास्ट्ण्डत्य का एक िीवन कीहतथ स्तम्भ िै।

अप्पय्य दीहक्षतिा ज्ञान के सभी क्षेत्रों ंमें एक हववादास्पद हविान के रूप में प्रहसद्ध थे। उनकी मिानता का हवहिष्ट लक्षण अपने हिििोिी के सवोच्च िथा अकाय हवचािों ंका यथासम्भव स्पष्ट प्रसुतुहतकिण था। 'चातुमथत साि संग्रि' में उनकी यि दक्षता अपने उतृकृष्टतम तथा उच्चतम रूप में परिलहक्षत िोती िै। तत्त्वतः यि इसके चाि अध्यायों–ं िैत, हवहिष्टैत. हिवैत तथा अिैत में वहणथत िै। बादिायण–िचत ब्रह्मसूत्र पि चमूपूिैली में हलस्ट्खत यि ग्रन् एक िीवन्त वणथन िै हिसका हवषय-हनरूपण अनेक अहिकिणों ंमें हकया गया िै। अपनी इस कृहत में अप्पय्य दीहक्षतिा

ने वेदान्त के प्रते्येक मत की व्याख्या उस मत के सवथश्रेष्ठ कृतहवद्य प्रहतपादक की व्याख्या के अनुरूप की िै। इसमें उनके वैयस्ट्क्तक अहभप्राय का लेिमात्र भी परिलहक्षत निीं ंिोता।

'चातुमथत सिा संग्रि' के प्रते्येक अध्याय को हभि-हभि नामों ंसे अहभहित हकया गया िै। िैत की व्याख्या किने वाले अध्याय को 'न्यायमुक्तावली' किा गया िै। हितीय अध्याय में िामानुिाचायथ के हवहिष्टैौत की व्याख्या की गयी िै औि इसे 'न्यायमयूखमाहलका' किते िैं। तृतीय अध्याय में श्रीकान्त के दिथन तथा चतुथथ में श्री िंकि के मत की व्याख्या की गयी िै हिसे क्रमिः 'न्यायमहणमाला' तथा 'न्यायमंििी' किा िाता िै।

अप्पय्य दीहक्षति की पास्ट्ण्डत्यपूणथ कृहत 'हिवाकथमहण दीहपका' तथा 'परिमल', हिनमें हिविैौत की मीमांसा की गयी िै, के अध्ययन से यि स्पष्ट िो िाता िै हक इन दोनों ंदिथनों ंकी व्याख्या में अप्पय्य की मेिा पूणथतः समथथ थी। वि सुस्पष्ट िब्दावली में िैत तथा हवहिष्टैौत मतों ंका प्रबल हविोि किते िैं। िैत-मत का खण्डन किने वाला उनका ग्रन् 'मिवतन्त्र-मुखमदथन' अत्यहिक प्रभावप्रद िै। इसी प्रकाि वि अपनी एक अन्य कृहत 'िामानुिशंगभंग' में अपनी मौहलक तथा पास्ट्ण्डत्यपूणथ परिपक्वता के साथ िामानुि की स्थापनाओं ंके समक्ष प्रश्नहचह्न ख़िा कि देते िैं। इसके साथ िी अप्पय्य ने 'न्यायमुक्तावली' तथा 'न्यायमयूखमाहलका' िैसे ग्रन्ों ंकी भी िचना की िो इन दोनों ंमतों ंको इनके कृतहवद्य अनुयाहययों ंसे भी अहिक कौिल के साथ हनरूहपत किते िैं। वि अपनी स्थापनाओं ंकी हसस्ट्द्ध तो किते िी िैं. इसके साथ िी वि अपने हविोहियों ंके मतों ंका भी हनष्पक्ष एवं साहिकाि हनरूपण किते िैं।

न्यायमंििी आद्योपान्त एक पद्यबद्ध िचना िै। इसके कम-से-कम दो श्लोकों ंमें ब्रह्मसूत्र के प्रते्येक अहिकिण के हनहिताथथ को व्यक्त कि हदया गया िै। इनमें से एक पूवथ पक्ष को औि दूसिा हसद्धान्त को प्रस्तुत किता िै। अप्पय्य दीहक्षति तथा िंकि के ब्रह्मसूत्र भाष्ों ंमें साम्य के दिथन िोते िैं। 'न्यायमंििी' की हवहिष्टता इसका ३८६ कस्ट्ण्डकाओं ंमें हवभािन तथा इसमें हवहभि १८२ छन्दों ंका प्रयोग िै। इनमें से अहिकांि छन्द दुष्प्राप्य िैं औि इन्हें उच्चस्तिीय ग्रन्ों ंमें निीं ंपाया िाता।

अप्पय्य दीहक्षत प्रचण्ड मेिा के स्वामी थे। लोगों ंमें आि भी उनके हलए आदि की भावना हवद्यमान िै। अपने िीवन काल में भी वि लोगों ंके सिान के पात्र ििे। एक बाि वि उस गााँव में गये िो उनकी पत्नी का िन्म स्थान था। उनके प्रहत अपनत्व की भावना िखने में गवथ का अनुभव किने वाले ग्रामीणों ंने उनका भव्य स्वागत हकया। लोग इस समाचाि से िषोन्मत्त िो उठे थे हक उनके बीच मिान् दीहक्षति का आगमन िोने वाला िै। उनके प्रत्याहित आगमन के पूवथ लोगों ंमें केवल उन्हीं ंकी चचाथ िोती ििी। अन्ततः वि िुभ हदन भी आया, िब अपने हवहिष्ट अहतहथ व्याघ्र-पुरुष दीहक्षति के दिथन के हलए एकत्र िन-समूि ने उनका भव्य स्वागत हकया। एक वृद्ध महिला अपने कौतूिल की िास्ट्न्त के हलए िाथ में लाठी हलये इस दृश्य के अवलोकनाथथ वािाँ चली आयी। इस आयु की महिलाओं ंको ऐसे अवसिों ंके हलए िो सुहविाएाँ प्राप्त िैं, उनके कािण वि उनके हनकट पहुाँच गयी। उसने उनको कुछ क्षणों ंतक स्ट्स्थि दृहष्ट से देखा। तत्पिात् उसके स्मृहत-पटल पि एक व्यस्ट्क्त का अस्पष्ट हचत्र उभिा। उसने अपनी स्मिण-िस्ट्क्त के प्रहत पूणथतः आश्वस्त िो कि हनियपूवथक किा- "मैंने इस व्यस्ट्क्त को किीं-न-किीं ंअवश्य देखा िै।" उसने दीहक्षति से पूछा- क्या तुम अच्छ (Achha) के पहत निीं ंिो?" उस मिान् पस्ट्ण्डत ने अपने स्ट्स्मत संकेत के माध्यम से उसके अनुमान को हनस्ट्न्त बता हदया। महिला हििािा िो गयी। उसका सािा उत्साि िाता ििा। अपने घि लौटते समय वि किती गयी- "अच्छ के पहत के हलए यिााँ इतनी चिल-पिल क्यों ं?" इस घटना को अमित्व प्रदान किते हुए अप्पय्य ने यि कहवता हलखी "अस्ट्स्मन ग्रामे अच्छ प्रहसद्धा" अथाथत इस ग्राम में अच्छ का नाम िी प्रहसद्ध तथा अग्रगण्य िै।

अप्पय्य दीहक्षति को भगवान् हिव का एक अवताि माना िाता िै। िब वि दहक्षण भाित के हतरुपहत मस्ट्न्दि में गये, तब वैष्णवों ंने उनके मस्ट्न्दि-प्रविे पि िोक लगा दी; हकन्तु दूसिे हदन प्रातःकाल उन्होंने देखा हक मस्ट्न्दि की

हवषु्णु-मूहतथ हिव-मूहतथ में परिवहतथत ि◌ो गयी। मिन्त इस अप्रत्याहित घटना से स्तब्ध ि◌ि◌ गया। उसने क्षमा-याचना किते हुए उनसे प्राथथना की हक वि उस हवग्रि को हवषु्णु-मूहतथ का पूवथ रूप प्रदान किने की कृपा किें।

काव्य के क्षेत्र में दीहक्षतिा पस्ट्ण्डतिाि ि◌गिाथ के प्रबल प्रहतिन्द्वी थे। ि◌ंकि वेदान्त के सैद्धास्ट्न्तक पक्ष के प्रहत उनका कोई स्वतन्त्र दृहष्टकोण निीं ◌ंथा। हकनु्तु वल्लभ के अनुयाहययों ◌ंके साथ ि◌यपु ि तथा अन्य स्थानों ◌ंपि उनका उग्र वाद-हववाद हुआ। ि◌ंकि के अनुयाहययों ◌ंके पािस्परिक सैद्धास्ट्न्तक मतभेद के सम्बन्ध में अप्पय्य दीहक्षतिा-हिचत हसद्धान्तलेि नामक लघु पुस्ट्स्तका एक सवाथहिक प्रिंसनीय कृहत ि◌ै। हनःसने्दि भाित में अब तक हिन मिान् तथा ज्वलन्त आध्यास्ट्कि नक्षत्रों ◌ंका उदय हुआ ि◌ै, उनमें अप्पय्य दीहक्षतिा को एक हवहिष्ट स्थान प्राप्त ि◌ै। उनके िीवन-वृत्त का हवसृ्तत हवविण उपलब्ध निीं ◌ंि◌ै; हकनु्तु उनकी मिानता की हसस्ट्द्ध के हलए उनकी कृहतयों ◌ंका साक्ष्य िी पयाथप्त ि◌ै।

िंकि के पिात् संसाि ने श्री अप्पय्य की कोहट का कोई मिावी, योगी, भक्त तथा कृतहवद्य निीं ◌ंदेखा।

भगवान् हिव के अवताि अप्पय्य दीहक्षतिा की महिमा में हनिन्ति वृस्ट्द्ध ि◌ोती िि◌े औि ि◌म सबको उनका आिीवाथद प्राप्त ि◌ो !

सदाहिव ब्रह्म

सदाहिवेन्द्र सिस्वती एक प्रख्यात संन्यासी तथा ि◌न्मिात हसद्ध थे। उनका ि◌ीवन-काल अठािवीं ◌ंि◌िताब्दी का प्रािम्भ था। वि हतरुहचिापल्ली ि◌नपद स्ट्स्थत करूि नगि में िि◌ते थे। सामान्यतः लोग उन्हें सदाहिव ब्रह्म के नाम से िानते थे।

सदाहिव ि◌न्मतः एक तेलुगु ब्राह्मण थे। उनके हपता का नाम सोमनाथ योगी, उनकी माता का नाम ि◌ान्ता तथा स्वयं उनका नाम हिवािामकृष्ण था। उनका ि◌न्म मदुि में हुआ था। वि एक अत्यन्त मेिावी छात्र थे। उन्होंनें संसृ्कत में दक्षता प्राप्त कि प्रस्थानत्रयी तथा षड्दिथन का अगाि ज्ञान प्राप्त हकया। हतरुहवसनलू्लूरु में उन्होंनें ि◌ामभि ि◌ास्त्री का हिष्यत्व ग्रिण कि वेदान्त का अध्ययन हकया।

छात्र-िीवन में ि◌ी सदाहिव का हववाि ि◌ो गया। एक हदन उनकी माता को यि सूचना हमली हक उनकी पुत्र-वधू वयःसस्ट्न्ध को प्राप्त ि◌ो गयी; अतः उस हदन उन्होंनें कुछ अहतरिक्त स्वाहदष्ट भोिन की व्यवस्था की। सदाहिव ि◌ब अपने गुरु के घि से लौटे, तब उन्हें अपने घि में भोिन के हलए दो घणे् तक प्रतीक्षा किनी पड़ी। उन्होंनें मन-िी-मन सोचा- "गृिस्थ का ि◌ीवन अत्यन्त दयनीय ि◌ै। अभी मेिे वैवाहिक ि◌ीवन का प्रािम्भ भी निीं ◌ंहुआ हक मुझे दो घणे् तक उपवास किना पड़ा। अभी तो यि मेिे वैवाहिक ि◌ीवन के दुःखों ◌ंका श्रीगणेि मात्र ि◌ै; हकनु्तु इतने से ि◌ी मुझे अपने वैवाहिक ि◌ीवन के भावी दुःखों ◌ंका एक अस्पष्ट आभास तो हमल ि◌ी ि◌ाता ि◌ै। मेिे हलए इतना ि◌ी पयाथप्त िै।" इस हवचाि के पिात् वि गृिस्थ ि◌ीवन के परित्याग का हनिय कि घि से गुरु की खोि में हनकल पड़े।

पिम हिवेन्द्र सिस्वती सदाहिव के गुरु थे हिनके हनदेि में उन्होंनें योगाभ्यास हकया। लोगों ◌ंके साथ वाद-हववाद में वि प्रायः उते्तहित ि◌ो ि◌ाया किते थे। इसकी उलािना के हलए कुछ लोग उनके गुरु पिम हिवेन्द्र सिस्वती के यिााँ गये। उन्होंनें किा- "सदाहिव, तुम अपना मुाँि बन्द कब ि◌खोगे?" सदाहिव ने तत्क्षण आिीवन मौन-व्रत-िािण की ि◌पथ ग्रिण कि ली। इसके पिात् वि कुछ हदनों ◌ंतक एक परिव्राािक पिमिंस की भााँहत परिभ्रमण किते ििे।

सदाहिव ने अपना अहिकांसिमय कोयम्बतूि िनपद में अमिावती तथा काविी नहदयों ंके मनिोम तट पि ध्यान में व्यतीत हकया। एक बाि काविी के बालुकामय तट पि ध्याननत सदाहिव समाहिस्थ िो गये। अकस्मात् नदी में बाढ़ आ गयी हिसने उन्हें बाि कि बालुकाि–ाहि में दबा हदया। वषाथ ऋतु की समास्ट्प्त पि िब एक श्रहमक तट पि एक गिा खोद ििा था, उसका फावड़ा िक्त–ंहित िो गया। यि देख कि वि स्तब्ध िि गया। उनसे अपने कुछ हमत्रों ंके सियोग से उस स्थान के चािों ंओि एक बहुत गििा गिा खोदा हिसमें उसने सदाहिव को बहुत गििाई में दबा पाया। उनको बाि-बाि हिलाने-ुलाने पि िी उनकी चेतना पुनः िाग्रत िो पायी। वि विााँ से िान्त भाव से इस प्रकाि चले गये िैसे विााँ कुछ हुआ िी न िो।

सदाहिव ब्रह्म को देिाध्यास निीं ंथा। वि नग्नावस्था में भी घूमने लगते थे। एक हदन वि इसी अवस्था में एक नवाब के हिहवि में प्रहवष्ट िो गये। उस हिहवि में कुछ महिलाएाँ भी थीं।ं नवाब क्रोिोन्मत्त िो उठा। उसने तलवाि से उनका एक िाथ काट हदया; हकन्तु सन्त उसके इस हनस्ष्ट्ठु कृत्य से सवथा अप्रभाहवत ििे। उन्होंनें इस बात पि भी कोई ध्यान निीं ंहदया हक उनका एक िाथ काटा िा चुका िै। वि पूवथवत् िी इिि-उिि घूमते ििे। नवाब ितप्रभ िो गया। उसे यि ज्ञात िो गया हक यि हनवथस्त् व्यस्ट्क्त एक मिान् सन्त िै। इसके पिात् सदाहिव ििााँ-ििााँ गये, विााँ-विााँ वि उनका अनुगमन किता ििा। बहुत हदनों ंके बाद सन्त ने इस बात पि ध्यान हदया हक एक मुसलमान उनका अनुगमन कि ििा िै। सदाहिव ने उस मुसलमान से पूछा- "तुम मेिे पीछे-पीछे क्यों ंआ ििे िो?" नवाब ने किा- "श्रदे्धेय सन्त िी, मुझसे एक घोि अपिाि िो गया िै। कृपया, मुझे क्षमा कीहिए।" सदाहिव ने किा- "मिोदय, आपसे मेिा कोई अहनष्ट निीं ंहुआ िै। क्या मैं िान सकता हाँ हक आपसे क्या अपिाि हुआ िै?" नवाब ने किा- "मिािाि, आप नग्नावस्था में मेिे हिहवि में प्रहवष्ट िो गये थे। उस समय विााँ मेिे साथ मेिी पत्नी तथा पुहत्रयााँ भी थीं।ं आत्यस्ट्न्तक क्रोि के विीभूत िो कि मैंने आपका एक िाथ काट हदया था। मुझे यि ज्ञात निीं ंथा हक आप एक मिान् सन्त िैं।" यि सुनने के बाद िी सदाहिव को यि ज्ञात हुआ हक उनका एक िाथ काटा िा चुका िै। इससे यि स्पष्टतः परिलहक्षत िो िाता िै हक िब उनका िाथ काटा गया, तब उनको देिाध्यास निीं ंथा। उन्होंनें दूसिे िाथ से अपने अिक्त िाथ का स्पिथ हकया िो अपनी पूवाथवस्था में उनके ििीि से पुनः संयुक्त िो गया। यि चमत्कारिक घटना हकतनी अद्भुत थी! आियथ चहकत नवाब ने उनसे उनके आिीवाथद की याचना की। सदाहिव उसको आिीवाथद दे कि पूवथवत् परिभ्रमण पि हनकल पड़े। सन्तों ंमें उनके उत्पीड़कों ंके प्रहत भी मात्सयथ के भाव निीं ंिोते। वे कृपा-हसनु्धु िोते िैं। उनकी ित्या किने को उद्यत लोगों ंको भी उनका आिीवाथद प्राप्त िोता िै।

बचे्चे उनके साथ खेला किते थे। एक हदन उन्होंनें सन्त से किा- "स्वामी िी, आप िमें मदुिै ले चहलए। िम आि िाति मस्ट्न्दि में िोने वाला भव्य सम्मिोि देखना चािते िैं।" उन्होंनें उन बच्चों ंको अपने ििि, अपनी पीठ तथा अपने कन्धों ंपि चढ़ने का संकेत हकया। इसके पिात् बच्चों ंने देखा हक वे मदुिै में मस्ट्न्दि के सामने खड़े िैं। उन्होंनें सम्मिोि के आनन्द का उपभोग हकया। सदाहिव ब्रह्म उनको प्रातःकाल के पूवथ िी घि ले कि चले आये।

एक बाि कुछ लोग उनको लाहठयों ंसे पीटने आ गये; हकन्तु उन लोगों ंने अपने िाथ हिलाने में स्वयं को असमथथ पाया। एक बाि हचदम्बिम् में उन्होंनें उबलता हुआ ििा पी हलया। एक लड़की सपथ-दंि से मि चुकी थी; हकन्तु उन्होंनें उसे पुनिीहवत कि हदया।

लोगों ंद्वािा उनको एक िी समय में एकाहिक स्थानों ंपि देखा िाना सदाहिव के हलए कोई असामान्य बात निीं ंथी।

सदाहिव ने संसृकृत में कई ग्रन्ों ंकी िचना की। इनमें 'ब्रह्मसूत्रवृहत्त' सवाथहिक मित्त्वपूणथ िै। उन्होंनें बािि उपहनषदों ंके हलए दीहपकाओं ंकी भी िचना की। आतिसमम्मिि, आत्महवद्याहवलास, हसद्धान्तकल्पवल्ली, सुतसंहिताश्रम, योग-सूत्रवृहत्त आहद उनकी गौण कृहतयााँ िैं। आत्महवद्या-हवलास बासठ श्लोकों ंकी एक लघु कहवता िै। इस पुस्तक में एक आत्म-साक्षात्काि-प्राप्त योगी की मिानता का वणथन िै। यि ििोक पुस्तक मन को

अहभभूत कि देती ि◌ै। सदाहिव की ि◌चनाएँ पाठकों ◌ंको उद्बुद्ध कि उनको हदव्य ज्योहत तथा भव्यता के उतुंतुंग हिखि पि आरूढ़ कि देती ि◌ैं।

सदाहिव ने करूि के हनकटस्थ ग्राम नेरूि के ब्राह्मणों ◌ंसे किा हक वि एक हविेष हदन को समाहिस्थ ि◌ो ि◌ायेंगे। उन्होंनें यि भी किा हक उस हदन किीं का एक ब्राह्मण विाँ एक बाण-हलंग ले कि आयेगा हिसे उनकी समाहि के पाश्वथ में हनहमथत एक मस्ट्न्दि में प्रहतष्ठाहपत कि देना ि◌ोगा। इस हनदेि के अनुसाि ब्राह्मण सन्त के हलए एक गिा खोद कि उस हदन की प्रतीक्षा किने लगे। उन लोगों ◌ंको यि देख कि घोि आियथ हुआ हक किीं से एक ब्राह्मण बाण-हलंग ले कि विाँ आ पहुँचा ि◌ै। सदाहिव उस गड्ढे में उतिे औि हनहवथकल्प समाहि में प्रहवष्ट ि◌ो कि ज्योहतयों ◌ंकी ज्योहत पिब्रह्म के साथ तूिप ि◌ो गये। ब्राह्मणों ◌ंने उस समाहि का हवहिवत् पूिन कि उसके पाश्वथ में एक मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया हिसमें उस बाण हलंग को प्रहतहष्ठत कि हदया गया। आि भी प्रहतवषथ ि◌यन्ती के अवसि पि सिस्रों ◌ं लोग उनके समाहि-स्थल पि एकत्र ि◌ो कि इस सिंमाोि को भव्य रूप प्रदान किते ि◌ैं। सदाहिव ने एक ि◌ी साथ चािों ◌ंस्थानों ◌ंनेरूि, किीं, ओंकंाि तथा कांचीपुिम् में मिासमाहि ग्रिण की।

सदाहिव ब्रह्म एक मिान् हसद्ध, एक श्रेष्ठ सन्त तथा एक परिपक्व योगी थे। वसुतुतः वि इन तीनों ◌ंके समस्ट्ति रूप तथा एक आध्यास्ट्कि ि◌त्न थे। वि एक अविूत तथा अहत-वणाथश्रमी थे। ि◌ाहत-भेद के प्रहत उनकी आस्था निीं ◌ंथी। वि हकसी के भी ि◌ाथ से अि ग्रिण कि लेते थे। वि समदिी थे औि उन्हें एक ि◌ी आिा का सवथत्र दिथन ि◌ोता था। वि अपने अभीस्ट्प्सत स्थानों ◌ंका भ्रमण हकया किते थे। वि हनभथय तथा हनष्काम थे। उन्होंनें भौहतक समृस्ट्द्ध की कभी कोई इच्छा निीं ◌ंकी। वि सम्राटों ◌ंके सम्राट्, ि◌ाििाओं ◌ंके ि◌ािा तथा योहगयों ◌ंके योगी थे। वि ज्ञान के प्रकाि स्तम्भ तथा मुमुकुषुओं ◌ंके हलए एक भव्य दीप-स्तम्भ थे।

अप्पय्याचायथ

अप्पय्याचायथ का ि◌न्म पत्तमैि में लगभग १८३० ई. में हुआ था। लोग उन्हें अप्पय्य हिवम् भी किते थे। वि अहत-समृद्ध भूहमपहत पणै्णै सुबै्बैय्यि के पौत्र तथा पी. एस. वेंगु अय्यि के अग्रि थे। पी. एस. वेंगु अय्यि ि◌ा. पी. वी. कुपुपुस्वाहम अय्यि के हपता थे। अप्पय्याचायथ की दियहष्ट सौन्दयथ-मस्ट्ण्डत तथा सुगहठत एवं उनका व्यस्ट्क्तत्व तेिोमय था।

वि संसूकृत के उद्भट हविान् ि◌ोने के साथ-साथ अनुभव-ज्ञानी, हसद्ध सन्त तथा भगवान् हिव के पिम भक्त थे। उन्होंनें ि◌मथ तथा दिथन पि अनेक ग्रन्ों ◌ंकी ि◌चना की। इसके अहतरिक्त उन्होंनें गीता, उपहनषदों ◌ंतथा ब्रह्मसूत्र पि भाष्् भी हलखे।

हथयोसोहफकल सोसायटी, अड्यािि से सम्बद्ध तथा मुम्बई से प्रकाहित 'ि◌ेरिटेि' के सम्पादक स्वगीय कृष्णािस्ट्स्टगल उनके हिष्् थे। उन्होंनें अपनी माहसक पहत्रका में उनकी कई ि◌चनाएँ प्रकाहित कीं।◌ं 'कल्याण कल्पतरु' में उनकी एक संहक्षप्त ि◌ीवनी प्रकाहित हुई थी।

अप्पय्याचायथ अन्तमुथखी थे। नािायनिालपुिम् में ताम्रपणी नदी के तट पि ििि◌ कि उन्होंनें वषों तक ध्यान-योग की कहठो सािना की। उनके आध्यास्ट्कि व्यस्ट्क्तत्व से असंख्य लोग प्रभाहवत ि◌ुए। प्रचाि तथा प्रहसस्ट्द्ध से दूि ििि◌ कि उन्होंनें सदैव एकाकी ि◌ीवन व्यतीत हकया। आि-हवज्ञापन से वि कोसो दूि ििि◌े। उनके प्रिंसकों,◌ं हिष्ीं ◌ंतथा भक्तों ◌ंमें कई एक अहत-समृद्ध थे: हकनुतु वि अपनी हनिथनता से ि◌ी सनुतुष्ट ििि◌े। कभी-कभी वि उंछवृहत्त तथा कीतथन के हलए अन्यत्र चले ि◌ाते थे। वि भगवान् हिव की भाँहत तेिोमय थे। उनके संसूकृत-गीत लोगों ◌ंके हलए ममथस्पिी ििि◌े थे।

वि िकि की भाँहत मीवी एवं मिागुहि के िु िास्ट्स्गल तथा अियपालम् के अप्पय्य दीहक्षता की भाँहत प्रख्यात थे। पहवत्र िमथग्रन्ों ंका उनका ज्ञान अत्यन्त गिन था। उनके पास हवहभि क्ेषेत्रों ंके लोग िमथ तथा हववादास्पद ाहमथक स्थापनाओं ंके हवषय में पिामिथ लेने के हलए आया किते थे।

लगभग १९०० ई. में सत्ति वषथ की आयु में अप्पय्याचायथ ने मिासमाहि में प्रवेि हकया।

मीवी, िष्टा, भक्त, सन्त, मिान् लेखक, कहव तथा मिहषथ अप्पय्याचायथ की महिमा में हनिन्ति वृस्ट्द्ध िोती िै !

आप सबको उनका आिीवाथद प्राप्त िो !

पोतना

पोतना १४०० ई. तथा १४७५ ई. के बीच की अवहि में आन्ध्र प्रदेि के किपा िनपद-स्ट्स्थत ओस्ट्न्टहमि गााँव में िते थे। मूलतः वि हनिक्षि थे। हकसी हवद्यालय की औपचारिक हिक्षा उन्हें प्राप्त निीं ंिो सकी थी। एक बाि िब वि अपने पिुओं ंको चिा िे थे, योगी हितानन्द से उनकी भेंट िो गयी हिन्होंनें उन्हें दीक्षा प्रदान कि दी। इसके फल-स्वरूप उन्हें बौस्ट्द्धक उदबोिन के साथ-साथ आध्यास्ट्कि ज्ञान की भी प्रास्ट्प्त हुई।

तेलुगू प्रदेि में पोतना का स्मिण अत्यहिक आदि तथा सिान के साथ हकया िाता िै। तेलुगु पदावली में हलस्ट्खत पोतना 'भागवतम्' उनका सुप्रहसद्ध ग्रन् िै। 'नािायणितकम्', 'भोहगनीदण्डकम्' तथा 'वीिभिहवियम्' उनकी अन्य कृहतयााँ िैं।

पोतना का िन्म एक हनिथन ब्राह्मण परिवाि में हुआ था। उनके माता-हपता के नाम क्रमिः लक्षिा तथा केिना थे। हनिथन िोते हुए भी पोतना अहतहथयों ंके आदि-सत्काि में सदैव तत्पि िते थे। वि अपनी दैहनक सुख-सुहविा के प्रहत सवथा उदासीन िते थे।

पोतना सन्त-कहव थे। वि भगवान् िाम के उपासक तथा आदिथ भक्त थे। भगवान् िाम ने उनके समक्ष स्वयं प्रकट िो कि उन्हें तेलुगु में भागवतम् की िचना का आदेि हदया था।

मिापस्ट्ण्डत तथा िािकहव श्रीनाथ उनके चचेिे भाई थे। एक हदन वि पालकी में बैठ कि पोतना से हमलने गये। उस समय पोतना अपने खेत में बैठ कि भागवतम् हलख िे थे औि उनका पुत्र मल्लना िल चला िा था। श्रीनाथ ने पालकी के अग्रभाग के वािकों ंको पालकी छोड़ देने का आदेि हदया। वि पोतना को यि हदखाना चािते थे हक वि इस स्ट्स्थहत में भी पालकी को गहतमान िखने में सक्षम िैं। पोतना ने अपने पुत्र को िल में संलग्न दो बैलों ंमें से एक को िल से हवलग किने का आदेि हदया; हकन्तु िल एक बैल के बल पि िी चलता िा। इसके पिात् श्रीनाथ ने पालकी के पृष्ठभाग के वािकों ंको भी पालकी छोड़ देने का आदेि हदया; हकन्तु इसके बाद भी पालकी की गहत में कोई अन्ति निीं ंआया। इसके पिात् पोतना ने अपने पुत्र को िल से दूसिे बैल को भी हवलग किने का आदेि हदया; हकन्तु इस स्ट्स्थहत में भी िल पूवथवत् चलता िा। यि देख कि श्रीनाथ ने अपनी अिंकाि–िन्य िृष्टता के हलए पोतना से क्षमा-याचना की।

श्रीनाथ ने पोतना को भागवतम् को िािा को समहपथत किने का पिामिथ हदया। उन्होंनें उनसे किा हक इससे उनको पुिस्काि-स्वरूप प्रचुि िन िाहि की प्रास्ट्प्त िोगी हिसके फलस्वरूप उनके दारिद्र्य का हनिाकिण िो िायेगा।

श्रीनाथ ने िािा को यि सूचना दे दी हक पोतना ने िािा को अपने ग्रन् भागवतम् के समपथण के प्रहत अपनी सिमहत प्रदान कि दी िै। इस सुखद समाचाि से िािा अत्यन्त प्रसि हुआ। वि उत्सुकतापूवथक पोतना के आगमन की प्रतीक्षा किता िाि; पि पोतना उसके पास कभी निीं ंगये।

पोतना ने िािा के उस पुिस्काि को तृणवत् समझ कि अपना ग्रन् िाम को समहपथत कि हदया। इससे िािा अत्यन्त क्रोहित हुआ। वि उन्हें हवहभि प्रकाि से उत्पीहित किने लगा। उसने उन्हें पकिने के हलए कई सैहनक भेिे; हकन्तु भगवान् ने िािा का रूप ग्रिण कि उन सभी सैहनकों ंकी ित्या कि दी। इसके पिात् िािा ने अपने भृत्यों ंको उनका घि िलाने का आदेि हदया; हकन्तु िनुमान् िािा उनके घि की तथा भगवान् के चक्र िािा उनके ग्रन् की खिवाली के काि कोई अहनष्ट निीं ंिो पाया। इसके हवपिीत स्वयं िािप्रासाद िी िल कि भस्म िो गया।

पोतना को गााँव से हनष्काहसत कि हदया गया था। िािा की सम्पहत्त तथा उसके िाज्य का हवनाि िो गया। अब उसे अपने अमानवीय कृत्यों ंपि पिात्ताप िोने लगा। उसने पोतना को पुनः बुला कि उनसे क्षमा-याचना की तथा उन्हें नि दे कि भेंट स्वरूप उनको उनका गााँव भी दे हदया।

श्रीनाथ ने 'भागवतम्' के उस अध्याय की आलोचना की हिसमें गिेन्द्र के उद्धाि का वणथन िै। उनका प्रश्न था हक भगवान् िरि अपने िंख के अभाव में गिेन्द्र के परित्राण में कैसे प्रवृत्त िो गये। पोतना ने अब उन्हें एक सीख देने की सोची। उन्होंनें श्रीनाथ के पुत्र को एक सुिहक्षत स्थान पि िख कि उनसे किा हक उनका पुत्र कुएाँ में हगि पिा िै। श्रीनाथ उस समय भोिन कि िि थे।

यि सुनते िी वि भोिन छोि कि हबना िाथ-मुाँि धोये कुएाँ की ओि दौिे पिे। पोतना ने उनसे किा- "िस्सी या हकसी अन्य उपकिण के हबना आप अपने पुत्र की िक्षा कैसे कि सकते िैं?" इसके पिात् उन्होंनें उनसे किा हक उनका पुत्र सुिहक्षत िै। उन्होंनें उनको यि भी बता हदया हक यि सब केवल इसहलए हकया गया था हक वि इस तथ्य से परिहचत िो सकें हक उनको हिती हचन्ता अपने पुत्र के कुएाँ में हगिने की बात सुन कि हुई थी, उससे अहिक हचन्ता गिेन्द्र की पुकाि पि भगवान् को हुई थी औि इस स्स्थहत में परित्राण के हलए हकसी सािन पि सोच पाना भी असम्भव था। यि बात श्रीनाथ के अन्तमथन में बैठ गयी। वि इससे समुहचत हिक्षा ग्रिण कि भगवान् के भक्त िो गये।

पोतना ने अपना िेष िीवन प्रभु की सेवा में व्यतीत कि िाश्वत आनन्द के लोक की प्रास्प्त की।

महिला सन्त

मदालसा

मदालसा ज्ञानी थी। उसने अपने सभी पूत्रों ंको भी ज्ञानी बना हदया। अपने बच्चों ंको पालने में झूलूाते समय वि गाया किती थी: "ि**ुद्धोऽडस बद्धोऽडस डनरोंजनोऽडस सोंसारमायापररवडजकोऽडस** - िे वत्स, तुम हविुद्ध िो, बुद्ध िो, हनिंनि तथा िन्म-मिण के बन्धनों ंसे मुक्त िो।" बचे्चे माता के दुग्ध के साथ-साथ वेदान्त की इस हिक्षा को भी ओसात् कि समय आने पि सन्त िो गये।

सभी नारियों ंको मदालसा के पदहचह्नों ंका अनुसिण किते हुए अपनी सन्तान को सत्य तथा न्याय के मागथ के अनुगमन के हलए प्रहिहक्षत किना चाहिए।

मीीाबाई

मीीा को िीाा का अवतिा किा िाता िै। उसका िन्म संवत १५५७ अथवा १४९९ ई. में िीास्थान-स्ट्स्थत मािवा़ के एक छोटे िाज्य मेीता के हनकटस्थ कुखी गााँव में हुआ था। वि ितनहसंि िणथिो की पुत्री तथा मेीता के दूदा िी की पौत्री थी। मेीता के िणथिो हवषुणु के पिम भक्त थे। मीीा का पालन-पोषण वैष्णव-मत-प्रभाहवत वाताविण में हुआ था हिसके फल-स्वरूप वि भगवान् कृष्ण के भस्ट्क्त-मागथ की ओि उनुमुख िो गयी। चाि वषथ की अल्पायु में िी उसमें िाहमथक प्रवृहत्त के दिथन िोने लगे। एक बाि उसके हनवास-स्थान के सिुख से कोई बाीात िा िीी थी। दूल्हा आकषथक परििान िीाण हकये हुए था। बाहलका मीीा ने उसे देख कि अपनी मााँ से बाल-सुलभ िीसिता से पूछा- "मााँ. मीा दुल्हा कौन िै?" मीीा की मााँ मुस्किा उठीं।ं उन्होंनें कुछ हवनोदपूणथ तथा कुछ गाम्भीयथ-हमहश्रत भाव से श्रीकृष्ण की प्रहतमा की ओि संकेत किते हुए किा- "मीी हप्रय मीीा, यि सुन्दि प्रहतमा िी तुम्हािा दूल्हा िै।"

अब बाहलका मीीा कृष्ण की प्रहतमा से अत्यहिक पे्रम किने लगी। उसके समय का अहिकांि प्रहतमा के प्रसािन में िी व्यितीत िोता था। वि प्रहतमा का पूिन किती, उसके साथ सोती, उसके चतुहदथक् नृत्य किती औि उसके सिुख िीिु गीत गाती। प्रहतमा के साथ उसका वाताथलाप भी िोता था।

मीीा के हपता ने मेवा़-स्ट्स्थत हचत्तौ़ के िाणा कुम्भा के साथ मीीा के हववाि का आयोिन हकया। मीीा एक कतथव्यपिायण पत्नी थी। वि अपने पहत के आदेि का हनष्ठापूवथक पालन किती थी। गृि-कायथ से मुक्त िो कि वि प्रहतहदन भगवान् कृष्ण के मस्ट्न्दि में चली िाती तथा पूिन के पिात् उनकी प्रहतमा के समक्ष गायन तथा नृत्य हकया किती। वि लघु हवग्रि उठ कि मीीा का आहलंगन किता, वंिी बिाता तथा उसके साथ वाताथलाप किता था। ईर्ष्ाथहद सांसारिक कालुर्ष् से ग्रस्त िाणा की मााँ तथा िािप्रासाद की कुछ अन्य महिलाएँ मीीा के इस आचिण को उहचत निीं ंसमझती थीं।ं मीीा के प्रहत उनके मन में आक्रोि के भाव थे। मीीा की सास प्रायः उसकी भत्सथना हकया किती तथा उसे दुगाथ की पूिा किने के हलए हववि हकया किती थी; हकनुतु मीीा का हनिय सुदृढ़ था। उसने किा- "मैंने अपना िीवन अपने पे्रमी भगवान् कृष्ण को अहपथत कि हदया िै।"

मीीा की ननद उदाबाई एक षड्यन्त्र िच कि हनदोष मीीा की हनन्दा किने लगी। उसने िाणा को सूहचत हकया हक मीीा कुछ लोगों ंसे गुप्त रूप से पे्रम किती िै औि उसने मीीा को उसके पे्रहमयों ंके साथ मस्ट्न्दि में स्वयं देखा िै। उसने िाणा से यि भी किा हक यहद वि उसके साथ कभी िात को मस्ट्न्दि में चलें, तो वि उन्हें उसके पे्रहमयों ंको

हदखा भी देगी। उसने ािणा से यिाँ तक कि ािला हक मीिा ने अपने आचिण से हचत्तौ़ि के ािणा-परिवाि की प्रहतष्ठा को कलंहकत कि हदया िै। ािणा कुम्भा क्रोिोन्मत्त िो उठे। ाथ में तलवाि हलये वि मीिा के आवास के आन्तरिक कक्षों ंकी ओि दौ़ि प़िे। सौभाग्य से मीिा अपने कक्ष में निीं ंथी। ािणा के एक दयालु सम्बन्धी ने उन्हें ान्त किते हुए किा- "ािणा, ीघ्रता मत किो। आवेि में कुछ किने से तुमको भहवष्् में पिात्ताप किना िोगा। घटनाओं ं के सतकथतापूणथ हनिीक्षण के पिात् ी बास्तहवकता के सम्बन्ध में हकसी हनष्कषथ पि पहुँचो। मीिा एक मिान् भक्त महिला िै। िो कुछ तुमने सुना िै, वि उसके हवरुद्ध हनन्दा का एक हमर्थ्ा अहभयान भी िो सकता िै। मीिा के सवथनिा के हलए कुछ ईर्ष्ाथलु महिलाओं ंकी यि एक दुिहभसस्ट्न्ध भी िो सकती िै। इस समय तुम ान्त ििो।" िाणा कुम्भा अपने सम्बन्धी के इस हववेकपूणथ पिामिथ के प्रहत सिमत िो गये। ािणा की बिन उन्हें आिी ात को मस्ट्न्दि में ले गयी। िब ािणा िाि खोल कि मस्ट्न्दि के भीति गये, तब उन्होंनें विाँ मीिा को एकाकी पाया। वि आनन्दाहतिेक में कृष्ण भगवान् के हवग्रि से वाताथलाप कि ििी थी। कि ािला हक मीिा ने अपने आचिण से हचत्तौ़ि के िाणा-परिवाि की प्रहतष्ठा

िाणा ने मीिा से किा- "मीिा, तुम इस समय हकससे बात कि ििी िो? अपने प्रेमी को मेिे सामने ले आओ।" मीिा ने उत्ति हदया- "मेिे हृदय को चुिाने वाला स्वामी यिीं ंबैठा िै।" इतना कि कि वि मूस्ट्च्छथत िो गयी। कुछ लोगों ंने यि हमर्थ्ा प्रचाि कि हदया हक मीिा सािुओं ंसे हनःसंकोच हमला-िुला किती िै। हनःसन्देि उसके हृदय में सािुओं ंके प्रहत आदि तथा सिान की भावना थी औि वि उनसे हबना हकसी हझझक के हमलती-िुलती थी। मीिा ने इस अथथिीन अपकीहतथ की ओि कभी कोई ध्यान निीं ंहदया। वि सवथदा अहिग तथा अक्षुब्ध ििी।

िाणा तथा उनके सम्बस्ट्न्धयों ंिािा मीिा को कई प्रकाि से उत्पीह़ित हकया गया। उसके प्रहत विी व्यविाि हकया गया िो हिहिण्यकहिपु ने अपने पुत्र प्रह्लाद के प्रहत हकया था। िरि ने प्रह्लाद की िक्षा की। इसी प्रकाि श्रीकृष्ण मीिा की िक्षा के हलए सदैव तत्पि ििे। एक बाि ािणा ने एक टोकिी में एक नाग बन्द कि मीिा के पास इस सन्देि के साथ भेिा हक इसमें फूलो का िाि िै। मीिा स्नान से हनवृत्त िो कि पूिा किने बैठ गयी। इसके पिात् िब उसने टोकिी खोली, तब उसे उसमें श्रीकृष्ण की एक मनोिि मूहतथ तथा फूलों ंका एक िाि हमला। इसके पिात् ािणा ने उसके पास हवष का एक प्याला भेि कि उसे अमृत बताया। मीिा ने उसे भगवान को अहपथत कि हदया औि तत्पिात् इसे प्रसाद-रूप में स्वयं ग्रिण कि हलया। यि उसके हलए वास्तहवक अमृत था। इसके पिात् ािणा ने उसके ियन के हलए कण्कों ंकी िय्या भेिी। मीिा अपनी पूिा समाप्त कि उस पि सो गयी औि आियथ की बात तो यि िै हक कण्कों ंकी वि िय्या गुलाब के फूलों ंकी िय्या में रूपान्तरि िो गयी।

अपने पहत के सम्बस्ट्न्धयों ंिािा इस प्रकाि उत्पीह़ित तथा अहभिंहसत मीिा ने तुलसीदास िी को एक पत्र भेि कि यि पूछा हक इस स्ट्स्थहत में क्या किना उहचत िोगा। उसने पत्र में हलखा था- "सािुओं ंके साथ ििने के कािण मेिे सभी सम्बन्धी मुझे प्रताह़ित किते िैं हिसके कािण मैं अपनी भस्ट्क्त-सािना हवहिवत् निीं ंकि पाती। अपने बाल्यकाल से िी मैंने हगरििि गोपाल को अपना सखा मान हलया िै औि उनके साथ मैं घहनष्ठ रूप से सम्बद्ध िो चुकी हूँ। मैं इस सम्बन्ध को तो़ि निीं ंसकती।"

तुलसीदास ने उस पत्र के उत्ति में हलखा- "िो लोग िाम तथा सीता की पूिा निीं ंकिते, उन्हें ितुरु समझ कि उनका परित्याग कि दो, भले िी वे तुम्हािे हनकटतम सम्बन्धी िी क्यों ंन िों।ं भगवान् की साहिध्य प्रास्ट्प्त के हलए प्रह्लाद ने अपने हपता का परित्याग हकया, हवभीषण ने अपने भाई िावण का परित्याग हकया, भित ने अपनी माता का परित्याग हकया, बहल ने अपने गुरु तक का परित्याग हकया औि व्रि की गोहपयों ंने अपने पहतयों ंका परित्याग हकया। ऐसा किने के पिात् इन लोगों ंके आनन्द में वृस्ट्द्ध िी हुई। पहवत्र-हृदय सन्तों ंका किना िै हक भगवान के प्रहत अनुिस्ट्क्त तथा प्रेम िी सत्य तथा िाश्वत िै। अन्य सािे सम्बन्ध हमर्थ्ा तथा क्षहणक िैं।"

एक बिा अकबि तथा उसकी ििा-सभा के संगीतज्ञ तानसेन छद्मविे में मीिा के उते्प्रिक भस्ट्क्त-गीत सुनने के हलए हचत्तौ आये। मस्ट्न्दि में प्रविे कि उन लोगों ंने मीिा के आिोद्दीपक गीत सुने हिनसे उनका हृदय लुप्त िो गया। वसुतुतः अकबि उन गीतों ंसे अत्यहिक प्रभाहवत हुआ। विााँ से चलने से पूवथ उसने मीिा के पावन चिणों ंका स्पिथ हकया औि प्रहतमा के सुिख भेट-स्वरूप पिे का एक िाि िख हदया। हकसी प्रकाि िाणा को भी यि ज्ञात िो गया हक अकबि ने छद्मविे में मस्ट्न्दि में प्रहवष्ट िो कि मीिा के चिणों ंका स्पिथ किने के पिात् भेंट-स्वरूप उसे एक िाि प्रदान हकया था। वि क्रोिाहग्न में िल उठे। उन्होंनें मीिा से किा- "तुम नदी में िूब मिो हिससे संसाि भहवर्ष् में तुम्हािा मुख न देख सके। तुमने मेिे परिवाि को कलंहकत कि हदया।"

मीिा पहत की आज्ञा िीिोिायथ कि गोहवन्द, हगिीिि, गोपाल–िरि के इन नामों ंका स्मिण किते हुए नदी में िूबने के हलए हनकल पड़ी। मागथ में वि उल्लहसत िो कि गीत गाती तथा नृत्य किती ििी। नदी के तट पि पहुाँच कि िब उसने उसमें कूदने के हलए अपना पैि उठाया, तब पीछे से एक िाथ ने उसे पकड़ हलया। पीछे मुड़ कि देखने पि उसे अपने हप्रयतम कृष्ण के दिथन हुए। वि मूस्ट्च्छथत िो गयी। कुछ क्षणों ंके उपिान्त उसकी आाँखें खुलीं।ं भगवान् ने मुस्किाते हुए उससे किा- "मेिी हप्रय मीिा, तुम्हािा पहत एक नश्वि प्राणी िै हिससे अब तुम्हािा कोई सम्बन्ध निीं ं िि। अब तुम पूणथतः स्वतन्त्र िो। हृदय को प्रमुहदत किो। तुम मेिी िो। अब तुम व्रि के कुंिवनों ंतथा वृन्दावन की गहलयों ंकी ओि िीघ्र प्रस्थान किो। मेिी बच्ची, तुम मेिी खोि विीं ंकिो। िीघ्रता किो।" इसके पिात् वे अन्तिाथन िो गये।

मीिा ने उस हदव्य आह्वान का िीघ्र िी अनुसिण हकया। वि िािस्थान की तप्त बालुकामयी भूहम पि नंगे पााँव चल पड़ी। मागथ में महिलाओं,ं बालक-बाहलकाओं ंतथा भक्त िनों ंने श्रद्धापूवथक उसका स्वागत-सत्काि हकया। वृन्दावन पहुाँचते िी उसे उसके मुिलीिि के दिथन िो गये। कुछ िाि की िास्ट्न्त के हलए वि वृन्दावन में हभक्षाटन किती औि गोहवन्द-मस्ट्न्दि में िा कि अपने आिाध्य का पूिन किती। तबसे यि मस्ट्न्दि अहिकाहिक प्रख्यात िो गया औि अब तो यि एक तीथथस्थान बन गया िै। उसके भक्त उसके दिथनाथथ हचत्तौड़ से वृन्दावन आये। िाणा कुम्भा एक हभकु्षक के वेि में उससे हमल्हने वृन्दावन आये औि उसके समक्ष स्वयं को अनावृत किते िुए उन्होंनें अपने पूवथ-कुकमों तथा हनमथम कृत्यों ंके हलए पिात्ताप हकया। मीिा िीघ्र िी अपने पहत के चिणों ंपि अवनत-िीि िो गयी।

वृन्दावन के वैष्णवों ंमें िीव गोस्वामी िीषथस्थ थे। मीिा उनका दिथन किना चािती थी। उन्होंनें उसकी इस इच्छा को अस्वीकाि कि हदया। उन्होंनें मीिा को इस आिय की सूचना दे दी हक वि अपने समक्ष हकसी भी नािी को आने की अनुमहत निीं ंदेंगे। मीिाबाई ने इसका प्रहतवाद किते हुए किा- "वृन्दावन का प्रते्येक व्यस्ट्क्त नािी िै। एकमात्र हगििि गोपाल िी यिााँ पुरुष िैं; हकनु्तु आि मुझे ज्ञात हुआ हक यिााँ उनके अहतरिक्त एक अस पुरुष भी िै।" मीिा के इन िब्दों ंसे िीव गोस्वामी को लस्ट्ज्जत िोना पड़ा। वि इस हनष्कषथ पि पहुाँचे हक मीिा एक मिान् भक्त महिला िै। िीघ्र िी उसके पास पहुाँच कि उन्होंनें उसे समुहचत सिान प्रदान हकया।

मीिा दूि-दूि तक प्रख्यात हुई। अगहणत िािकुमारियााँ तथा मिािाहनणथ इस ििती पि आयाथ औि चली गयीं।ं इस संसाि के िंग-मंच पि अनेक िाहनयों,ं िािकुमारियों ंतथा मिािाहनयों ंका अवतिण हुआ औि वे काल के गभथ में हवलीन िो गयीं;ं हकनु्तु हचत्तौ की मिािानी का स्मिण िम आि भी किते िैं। इसका काििण क्या िै? क्या इसका काििण उसका सौन्दयथ िै? क्या वि मात्र अपने कहवत्व-कौिल के हलए स्मिणीय िै? निीं।ं इसका काििण उसकी त्याग, भगवान् के प्रहत उसकी अनन्य भस्ट्क्त तथा ईश्वि-साक्षात्काि िै। वि श्रीकृष्ण के सुिख आ कि उनसे बात किती थी। अपने उस हप्रयतम कृष्ण के साथ-साथ भोिन किती तथा उनके प्रे्रेम–िस का पान किती थी। उसकी आिा उसके हप्रयतम तथा उसके अनुभवों ंके गीतों ंकी स्रोत उसके अन्ततथम से हनःसृत हुआ िै। उसने कृष्ण के चिणों ंपि आत्म-समपथण तथा उनके प्रहत प्रे्रेम के गीत गाये िैं।

मीिा का दृहष्टकोण अत्यन्त व्यापक था। उसे अस्ट्खल ब्रह्माण्ड में कृष्ण के दिथन िोते थे। उसके हलए वृक्ष, पत्थि, लता, फूल, पक्षी ये सभी कृष्णमय थे। िीिती पि िब तक कृष्ण का नाम ििेगा, तब तक मीिा का नाम भी ििेगा।

मीिा सन्त, दािथहनक तथा मनीषी थी। वि बहुमुखी प्रहतभा की स्वाहमनी तथा उदािचरित्र महिला थी। ऐसे हकसी व्यस्ट्क्त की खोि अत्यन्त दुष्कि िै िो उसके समकक्ष िो। उसके अहिसाण तथा चमत्कािपूणथ सौन्दयथ से प्रदीप्त व्यस्ट्क्तत्व में एक हवलक्षण आकषथण था। वि एक ििाकुमािी थी; हकन्तु अपने उच्च पद की गरिमा के अनुरूप उसे िी सुख-सुहविा तथा हवलासोपकिण उपलब्ध थे, उनका परित्याग कि उसने अपने हलए हनिथनता, तप, त्याग हतहतक्षा तथा वैिाग्य के िीवन का चयन कि हलया। मीिा एक सुकुमाि युवती थी; हफि भी वि हवघ्न-बािाओं ंके बीच आध्यास्ट्त्मक मागथ पि अपनी संकटमयी यात्रा पि हनकल पड़ी। इस बीच उसने अपने सुिख उपस्ट्स्थत हविाट् अविोिों ंका प्रहतिोि सािस तथा हनभीकता के साथ हकया। दृढ़ संकल्प वाली मीिा अपने हनिय पि सदैव अटल ििी।

मीिा के गीत पाठकों ंके मन में आस्था, सािस, भस्ट्क्त तथा ईश्वि-प्रेम का संचाि किते िैं। वे हिज्ञासुओं ंको भस्ट्क्त-मागथ पि अहभप्रेरित कि उनके मन में एक अद्भुत िोमांच की सृहष्ट कि देते िैं हिससे हृदय िहवत िो उठता िै।

मीिा का ऐहिक िीवन आपहत्तयों ंतथा अिोस्ट्न्त से ग्रस्त ििा। उसे उत्पीहड़त हकया गया। लोगों ंसे उसे कष्ट-ि-कष्ट हमले; हकन्तु उसकी भस्ट्क्त तथा उसके आिाध्य कृष्ण की कृपा से उसके अहिपोय औि तथा मस्ट्स्तष्क के सन्तुलन का स्खलन कभी न िो सका। ििाकुमािी िोते हुए भी उसे हभक्षाटन किना पड़ा औि कभी-कभी तो उसे मात्र िल से िी िीवन-हनवाथि किना पड़ा। उसका िीवन पूणथ त्याग तथा भगवान के प्रहत आि-समपथण का िीवन था।

मीिा में िागानुिागा अथवा िागास्ट्त्मका भस्ट्क्त थी। वि लोगों ंकी आलोचना तथा िास्त्रीय अनुिेिों ंपि कभी कोई ध्यान निीं ंदेती थी। वि िन-पथ पि नृत्य हकया किती थी। उसे िास्त्-हवहित पूिन-अचथन का ज्ञान निीं ंथा। कृष्ण के प्रहत उसमें सिल-हनिि अनुिस्ट्क्त थी। उसने सािन भस्ट्क्त का अभ्यास निीं ंहकया था। बाल्यावस्था से िी वि कृष्ण पि अपने प्रेमाि्-स का वषथण किती आ ििी थी। कृष्ण उसके पहत, हपता, उसकी माता, उसके सखा, सम्बन्धी तथा गुरु थे। कृष्ण िी उसके प्राणनाथ थे। मीिा ने भस्ट्क्त के प्रािस्ट्म्भक चिणों ंको अपने पूवथि्-न्म में िी हनष्पि कि हलया था।

हनसगथतः मीिा एक हनभीक महिला थी। उसका स्वभाव हनष्कपट था। उसके आचिण में प्रफुल्लता, िालीनता तथा सुरुहच के दिथन िोते थे। उसने स्वयं को हगरििि गोपाल की प्रेम-गंगा में िुबो हदया था। उसके िोठों ंपि सवथदा हगरिििि गोपाल का नाम ििता था। स्वप्न में भी वि स्वयं को श्रीकृष्ण में हवलीन कि हदया किती थी।

अपने हदव्योन्माद में मीिा सावथिहनक स्थान पि नृत्य किने लगती थी। उसमें काम-भाव निीं ंथा। उसकी उदात्त अवस्था को िब्दों ंमें उपयुक्त हवहि से आबद्ध कि पाना असम्भव िै। वि प्रेम-हसन्धु में िूबी ििती थी। उसे हििि तथा प्रहतवेि का अध्यास निीं ंथा। हकसी भी व्यस्ट्क्त के हलए उसकी भस्ट्क्त की गिनता का माप किना असम्भव था। उसके मिाभाव को समझने में कौन समथथ था? उसके हविाल हृदय के हवस्ताि का माप किना हकसके हलए सम्भव था?

मीिा की भस्ट्क्त-सुिहभ से दिे-दिान्ति तक सुगन्धमय िो उठे। उसके सम्पकथ में िो भी आया, वि उसके प्रेम-हसन्धु की बलवती लिि से प्रभाहवत िो गया। वि गौिांग की भाँहत प्रेम तथा हनष्कपटता की प्रहतमूहतथ थी। उसका हृदय भस्ट्क्त का मस्ट्न्दि तथा उसका मुख-मण्डल प्रेम का कमल-कुसुम था। उसकी दृहष्ट में दयालुता, बातों ंमें प्रेम, उसके प्रवचन में प्रफुल्लता, भाषण में िस्ट्क्त तथा गीतों ंमें उत्सािा था। वि हकतनी चमत्कािपूणथ महिला थी! उसका व्यस्ट्क्तत्व हकतना आियथिनक था औि उसके रूप में कैसी िसिोकता थी !

ीविन का दु:सि भिा हलये इस संसिा में घिो परिश्रम किने वाले हिन लोगों ंकी ीहिाएँ क्लान्त-श्रान्त ि ो चुकी िैं, उन भग्न-हृदय लोगों ंके हलए मीिा के िस्यवादी गीत उपिामक औषहि की भााँहत िैं। उसके गीतों ंका ीमुि संगीत श्रोताओं ंपि अपना सौम्य-सुखद प्रभाव छोि़ ि ाता िै। वि उनकी हवसंगहत तथा हवस्विता का हनिाकिण कि उन्हें सुख की नींदं सुला देता िै। मीिा की भाषा में इतनी िस्ट्क्त िै हक एक घिो नास्ट्स्तक का हृदय भी उसके भस्ट्क्त-गीतों ं से िवीभूत ि ो ि ायेगा।

मीिा ने संसिा के िंगमंच पि अपने हनहदथष्ट कतथव्य का पालन कुिलतापूवथक हकया। उसने लोगों ंको ईश्वि-प्ेरेम की ओि उन्मुख हकया। उसने अपने पारिवारिक संकटों ंके झंझावातग्रस्त हसन्धु में अपनी नौका का कुिलतापूवथक परिचालन किते हुए स्वयं को चिम ि ास्ट्न्त तथा अबाहित हनभीकता के दूसिे तट अथाथत् उत्कटतम प्ेरेम के हदव्य ाज्य में पहुाँचा हदया। वि एक नािी थी। हफि भी उसके व्यस्ट्क्तत्व में हकतनी हनभीकता तथा हकतना सािस था! हिकोिावस्था से ि ी वि उत्पीि़न सिती ि ी; हकन्तु उसने कभी इसका प्रहतवाद निीं ंहकया। उसने संसिा के ममथभेदी उपिास तथा उसकी व्ंयंगिाक आलोचनाओं ंको विीतापूवथक सिन हकया। वि संसिा पि अपनी अहमट छाप छोि़ गयी। उसकी कीहतथ-गाथा एक पीढ़ी से दूसिी पीढ़ी को िस्तान्तरित ि ोती ििेगी।

वृन्दावन से मीिा ि ािका चली गयी। विााँ वि िणछोि़ ि ी के मस्ट्न्दि में भगवान कृष्ण की प्रहतमा में अन्तलीन ि ो गयी।

साकूबाई

ीमिााष्ट्र में कृष्णा नदी के तट पि क्रिा (Krar) नामक एक गााँव िै। उस गााँव में एक ब्राह्मण अपने पुत्र, अपनी पत्नी तथा पुत्रविू के साथ ििता था। पुत्रविू का नाम साकूबाई था।

साकूबाई पण्ढिपुि के भगवान् कृष्ण की पिम भक्त थी। उसके ओठों ंपि सदैव भगवान् का नाम ििता था। वि आज्ञाकारिणी, हवनम्र, हनष्कपट तथा सद्गुण-सम्पि महिला थी। उसकी सास हनदथयी, आत्मश्लाघी तथा प्रस्ति-हृदय थी। ब्राह्मण तथा उसके पुत्र को इस महिला के कठोि हनयन्त्रण में ििना पि़ता था। साकूबाई के प्रहत उसका व्यविाि अत्यन्त कटु था।

साकूबाई अपने पारिवारिक कतथव्यों ंका पालन अत्यन्त कुिलतापूवथक किती थी; हकन्तु कठोि परिश्रम किने पि भी उसको अपनी सास के िाथों ंप्रताहि़त िोना पि़ता था। उसको वि पयाथप्त भोिन तक निीं ंदेती थी। साकूबाई को बासी या पयुथहषत अि से िी कुिुिा िास्ट्न्त किनी पि़ती थी; हकन्तु वि िैयथपूवथक सब-कुछ सिन किती िाती थी। प्रहतवाद के हलए उसका मुाँि कभी निीं ंखुलता था। उसके पहत पि उसकी सास का कठोि हनयन्त्रण था; अतः उससे वि अपनी व्यथा-कथा भी निीं ंकि सकती थी। वि मन-ि ी-मन किा किती थी-"मैं भगवान् के प्रहत अत्यन्त कृतज्ञ हाँ; क्योंहंक यहद मैं हकसी हितकि परिवाि की विू िोती, तो मैं उनका स्मिण निीं ंकि पाती।"

एक हदन पि़ोस की एक महिला ने साकूबाई से किा- "बिन, मुझे तुम पि दया आती िै। क्या तुम्हािे माता-हपता निीं ंिैं? यि कैसी बात िै हक उनमें से कोई तुमको देखने तक निीं ंआता।" साकूबाई ने मुस्किा कि किा- "मेिे माता-हपता पण्ढिपुि में ििते िैं। भगवान् कृष्ण मेिे हपता औि रुस्ट्क्मणी मेिी माता िैं। इनके असंख्य पुत्र-पुहत्रयााँ िैं। इसी किाण इन दोनों ंने मुझे हवस्मृत कि हदया िै; हकन्तु मुझे पूणथ हवश्वास िै हक वे एक हदन मेिे कष्ट हनवािण के हलए मेिे पास अवश्य आयेंगे।"

पण्ढिपुि एक पहवत्र तीथथ-स्थान ि ै। आषाढ़ मास के िुक्ल पक्ष की एकादिी को विााँ एक बिृद् मेले का आयोिन हुआ किता ि ै। भगवान् हविल के दिथन के हलए विााँ हवहभन्न स्थानों ंसे लोग एकत्र िोते िैं। वे िाथ में छोटी-छोटी पताकाएाँ हलये क्रि गााँव से िो कि पण्ढिपुि पहुाँचते िैं। वे मागथ में िरि-कीतथन किते. झााँझ-हसताि बिाते औि नृत्य किते हुए चलते िैं।

साकूबाई ने भक्तों ंके एक दल को देखा। इस दल के साथ पण्ढिपुि िाने की उसकी इच्छा प्रबल िो उठी; हकन्तुु परिवाि के लोग उसे इसकी अनुमहत निीं ंदे सकते थे। हफि भी वि तीथथयाहत्रयों ंके उस दल में सस्म्हलत िो गयी।

पड़ोस की एक महिला ने साकूबाई को उस दल में सस्म्हलत िोते देख कि उसकी सास को यि सूचना दे दी। उसकी सास ने अपने पुत्र को उसे लौटा लाने का आदेि हदया। पुत्र उसके बालों ंको पकड़ कि उसे घसीटते हुए घि ले आया। मागथ में उसे अपमाहनत किते हुए उस पि कई बाि पदाघात भी हकया।

ब्राह्मण, उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र ने साकूबाई को एक खम्भे में बााँध हदया। साकूबाई ने भगवान् से प्राथथना की- "िे पण्ढिपुि के हवठ्ठल, मैंने स्वयं को तुम्हािे चिण-कमलों ंमें आबद्ध किना चािा था; हकन्तुु यिााँ मुझे एक िस्सी से बााँध हदया गया ि ै। मेिा ििीि बन्धन में ि ै; हकन्तुु मेिा मन स्वतन्त्र ि ै िो तुम्हािे चिण-कमलों ंपि दृढ़ रूप से स्स्थि ि ै। मुझे मृत्युु या ििीरिक यन्त्रणा से कोई भय निीं ंि ै। मैं हकसी भी मूल्य पि तुम्हािा दिथन किना चािती हाँ। मेिे माता-हपता, मेिे गुरु तथा मेिे िक्षक तुम्हीं ंिो? िे कृपाहनधान, क्या तुम मेिी इस हवनम्र प्राथथना को स्वीकाि निीं ं किोगे?"

अन्तमथन की प्राथथना को भगवान् सुन लेते िैं। उन्होंनें इस प्राथथना के प्रहत अपनी प्रहतहक्रया ि ीघ्र िी व्यक्त कि दी। साकूबाई की पुकाि ने भगवान् कृष्ण को ममाथित कि हदया औि वे हवचहलत िो उठे। उन्होंनें एक नािी का रूप ग्रिण हकया औि साकूबाई के समक्ष िा कि किा- "हप्रय बिन, मैं पण्ढिपुि िा ििी िूँ। क्या तुम्हें विााँ निीं ंचलना ि ै?" साकूबाई ने किा- "इस खम्भे से बाँधी िोने के कािण मैं विााँ कैसे िा सकूाँगी ? वैसे मेिी विााँ िाने की प्रबल इच्छा ि ै।"

उस नािी ने किा- "बिन, मैं तुम्हािी सखी हाँ। मैं इस खम्भे से तुम्हािे स्थान पि स्वयं अपने को बााँध लेती हाँ। अब तुम पण्ढिपुि िा सकती िो।" उसने साकूबाई को बन्धनमुक्त कि स्वयं अपने-आपको खम्भे से बााँध हलया औि भगवान् की कृपा से साकूबाई ने स्वयं को एक क्षण में िी पण्ढिपुि में पाया। उसके आनन्द की सीमा न ििी। उसने मन-िी-मन किा- "भगवान की कृपा से मैं कृतकृत्य िो गयी। मैं मात्र उस िज्जुु-बन्धन से मुक्त न िो कि िीवन के बन्धन से भी मुक्त हुई हाँ। अि मैं हकतनी प्रसन्न हाँ!"

भगवान् साकूबाई का रूप ग्रिण कि अपने भक्त के दास िो गये। हत्रलोक के हिन स्वामी के नाम स्मिण से माया के बन्धन हवस्च्छन्न िो िाते िैं, वे उस हदन एक भक्त के प्रहत अपने अनुग्रि के कािण एक स्तम्भ से स्वयं आबद्ध िो गये। हकतने दयालु िैं वे ? ब्राह्मण, उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र ने नयी साकूबाई को पूवथवत् अपमाहनत-प्रताहड़त हकया; हकन्तुु भगवान् को इससे प्रसन्नता िी हुई।

पन्द्रि हदन बीत गये। इस बीच नयी साकूबाई को भोिन का एक ग्रास तक निीं ंहदया गया। अब पहत को कुछ सोचने पि हववि िोना पड़ा। उसने सोचा-"यहद इसकी मृत्युु िो िाती ि ै, तो लोग मुझे गाहलयााँ देने लगेंगे। सब लोगों ं को यि ज्ञात ि ै हक मेिे माता-हपता क्रूि-हृदय िैं। इस स्स्थहत में मुझे कोई दूसिी पत्नी भी निीं ंहमल सकेगी।" उस पि उसे दया आ गयी औि अपने हनमथम कृत्यों ंपि उसे पश्चात्ताप भी हुआ। उसने उसे बन्धन-मुक्त कि उससे किा- "हप्रय साकू, मैंने तुम्हािे प्रहत क्रूितापूणथ व्यविाि हकया ि ै। मेिे माता-हपता के कािण भी तुम्हें बहुत कष्ट भोगने पड़े ि ैं। अब तुम मुझे क्षमा किने की कृपा किो औि स्नान किने के पश्चात् भोिन कि लो।" अवनत ििि नयी साकूबाई

ने एक समहपथता पत्नी की भााँहत, यि सब-कुछ सुना। भगवान् ने सोचा हक यहद वि विााँ से ीघ्र अन्तिाथन ो ाते ैं, तो साकूबाई के लौटने पि ये लोग उसके प्रहत औि अहिक कटु व्यविाि किेंगे; अतः उन्होंनें विााँ रुक कि साकूबाई की भााँहत उस परिवाि की सेवा किते िने का हनिय कि हलया।

साकूबाई (भगवान्) ने स्नान कि स्वाहदष्ट भोिन बनाया औि उन तीनों ने भोिन हकया। साकू (भगवान्) ने अन्त में भोिन हकया। उन सभी लोगों ने साकू की पाकिास्त्रीय कला की भूरि-भूरि प्रिंसा की। यि पिला अवसि था िब साकू ने वैसा भोिन हकया ो परिवाि के अन्य लोगों ने हकया था। साकू ने सास के पााँव दबाये औि पारिवारिक कतथव्य का सन्तोषिनक रूप से पालन हकया। अब वि ब्राह्मण, उसकी पत्नी तथा पुत्र- ये सभी साकू से अत्यन्त प्रसि थे।

वास्तहवक साकू ने पण्ढिपुि पहुाँच कि चिभागा नदी में स्नान हकया। तत्पिात् उसने हवट्ठल अथाथत् भगवान् कृष्ण का दिथन हकया। उसने हनिय कि हलया हक वि पण्ढिपुि का परित्याग कभी निीं किेगी। वि हदव्य आनन्द में मग्न िो गयी। तत्पिात् वि संज्ञािून्य िो कि िती पि हगि पड़ी औि तत्क्षण उसका देिान्त िो गया।

क्रिा के हनकटस्थ हकवल गााँव का एक ब्राह्मण उस हदन उस मस्न्दि में ी था। उसने साकूबाई को पिचान कि अपने कुछ हमत्रों के सियोग से उसका दाि-संस्कािि कि हदया।

इस बात से भगवान् कृष्ण की अिाांहगनी रुस्क्मणी हंककतथव्यहवमूढ़ िो गयीं। उनके स्वामी क्रिा में िि कि मृत साकूबाई, हिसका दाि-संस्कािि तक िो चुका था, का उत्तिदाहयत्व विन कि ििे थे। उन्होंनें सोचा- "मैं अपने स्वामी को क्रिा से हकस प्रकाि लौटा सकती ूँ?" उन्होंनें अपनी योग–स्क्त से एक नूतन साकूबाई की सृहष्ट कि दी।

रुस्क्मणी ने नयी साकूबाई के स्वप्न में प्रकट िो कि उससे किा- "हप्रय साकू, तुमने पण्ढिपुि न छोड़ने की िपथ ग्रिण की थी। हिस ििीि में िि कि तुमने यि िपथ ग्रिण की थी, उसका दाि-संस्कािि हकया िा चुका ै; हकन्तु मैंने तुम्हें एक नया ििीि प्रदान कि हदया ै। अब तुम अपने गााँव लौट िाओ। तुम भगवान् का आिीवाथद प्राप्त कि चुकी िो।"

साकूबाई अपने गााँव लौट गयी। वि नदी के तट पि अपनी उस बिन से हमली। उसने उससे किा- "मैंने तुम्हािी सिायता से िी भगवान् के दिथन हकये ैं। मैं तुम्हािी कृतज्ञ हूँ। िो कुछ मुझे तुमसे प्राप्त हुआ ै, उसके प्रहतदान में मैं तुम्हें दे भी क्या सकती हूँ?"

भगवान् ने साकू को घड़ा देते हुए किा हक वि उसे अपने घि पहुाँचा दे। इतना कि कि वे विााँ से चले गये। साकू पानी का घड़ा हलये अपने घि िा कि गृि-कायथ में पूवथवत् संलग्न िो गयी। उसे यि देख कि बहुत आियथ हुआ हक अब उसके प्रहत उसके सास-ससुि तथा पहत के व्यविाि में बहुत अन्ति आ गया ै। दूसिे हदन हकवल गााँव का वि ब्राह्मण साकूबाई की मृत्यु की सूचना देने क्रिा आया; हकन्तु विााँ यि देख कि वि स्तब्ध िि गया हक साकूबाई अपने गृि-कायथ में संलग्न ै। उसने साकूबाई के ससुि से किा- "पण्ढिपुि में तुम्हािी पुत्र-वधू का देिान्त िो गया था औि मैंने कुछ हमत्रों के सियोग से उसका अस्न्तम संस्कािि कि हदया था। मेिे हवचािानुसाि आपके घि में उसका प्रेत आ पहुाँचा ै।" में

साकूबाई के श्वसुि तथा पहत ने किा- "साकूबाई सवथदा यिीं ििी ै। वि पण्ढिपुि कभी निीं गयी। आपने हकसी अन्य महिला के ििीि का दाि-संस्कािि हकया िोगा।"

हकवल के ब्राह्मण ने किा- आप अपनी पुत्र-वधू को बुला कि पूहछए हक वि पण्ढिपुि गयी थी हक निीं।"

ब्राह्मण ने साकूबाई से पूछा- साकू, तुम सत्य तथा हनभीकता के साथ यि बताओ हक क्या तुम पण्ढिपुि गयी थी? ि◌ो कुछ भी हुआ ि◌ै, उसे यथाथथतः बता दो।"

साकू ने कि◌ा-पण्ढिपुि ि◌ाने की मि◌ेी प्रबल इच्छा थी। ि◌ब मुझे खम्◌्भे से बाि◌ाँ हिदया गया, तब एक महिला, ि◌ो मुझसे बहुत हमलतीि◌ुलती थी. ने आ कि मुझे बन्धन-मुक्त कि हदया। इसके पित् उसने मि◌ेा स्थान ग्रिण कि मुझे पण्ढिपुि ि◌ाने को कि◌ा ओि◌ मैं वि◌ााँ चली गयी। वि◌ााँ भगवान् हवठ्ठल के समक्ष मि◌ेी चेतना लुप्त ि◌ो गयी। एक ि◌ात रुस्ट्णिी ने मुझसे स्वप्न में कि◌ा- "तुम्ि◌ािे ि◌ीि◌ि का दि◌ा-संस्कि◌ा तो ि◌ो चुका ि◌ै; हकनुतु मैंने तुम्हें एक नया ि◌ीि◌ि तथा नया ि◌ीवन प्रदान कि हदया ि◌ै। अब तुम अपने गााँव चली ि◌ाओ।" वि◌ााँ से आते समय मैंने उस महिला को नदी के हकनिे देखा। उसने मुझे घि ले ि◌ाने के हलए पानी का घ्ि◌ा हदया ओि◌ इसके पित् वि चली गयी। अब मैं हनहित रूप से यि कि सकती हाँ हक वि महिला स्वयं भगवान् कृष्ण अथाथत् भगवान् पाण्डुि◌ंग थे। आप लोग भगवान् के दिथन से कृताथथ ि◌ो गये।"

अब उस ब्राह्मण, उसकी पत्नी तथा उसके पुत्र को भी यि हवश्वास ि◌ो गया हक वि महिला हनहित रूप से पण्ढिपुि के भगवान् थे। भगवान् के प्रहत अपने दुषृकृत्य के कि◌ाण उन्हें बहुत दुःख हुआ। भगवान् के सम्पकथ के कि◌ाण वे तीनों ◌ंपहवत्र ि◌ो गये ओि◌ उनका हृदय-परिवतथन ि◌ो गया। अब उन्होंनें भस्ट्क्तपूवथक भगवान् का पूि◌न-अचथन प्रिाम्भ कि हदया। उन्होंनें कि◌ा- "भगवन, ि◌म लोगों ◌ंको क्षमा कीहिए। ि◌म लोगों ◌ंने आपकी भक्त साकूबाई के प्रहत नृि◌ंस व्यवि◌ाि हकया ि◌ै। आपके प्रहत भी ि◌म लोगों ◌ंसे दुव्यथवि◌ाि ि◌ी हुआ ि◌ै। ि◌े कृपा-हनिान, आप ि◌म सबको क्षमा कीहिए। ि◌म सब आपके चिण कमलों ◌ंकी वन्दना किते ि◌ैं। ि◌म लोगों ◌ंकी ि◌क्षा कीहिए।" वे सब साकूबाई की भी पूि◌ा किने लगे।

मुक्ताबाई

हनवृहत्तनाथ, ज्ञानदेव, सोपान तथा मुक्ताबाई ये हवठ्ठल पन्त तथा रुि◌ाबाई की चाि सन्तानें थीं।◌ं ये लोग पुणे के हनकट आलन्दी में ि◌िते थे हनवृहत्त, ज्ञानदेव, सोपान तथा मुक्ताबाई को क्रमिः भगवान् हिव, श्रीकृष्ण, ब्रह्मा तथा सिस्वती या आहद ि◌स्ट्क्त का अवताि माना ि◌ाता ि◌ै।

हवठ्ठल पन्त बाल्यावस्था से ि◌ी सन्तोषी थे। गृि-त्याग कि वि काि◌ी चले गये ि◌ि◌ााँ उन्होंनें संन्यास-ग्रिण कि हलया। ि◌ब हवठ्ठल पन्त के गुरु को यि ज्ञात हुआ हक उनका नव-दीहक्षत हिष् हववाहित ि◌ै ओि◌ उसकी युवा पत्नी भी ि◌ीहवत ि◌ै, तब उन्होंनें हवठ्ठल पन्त को घि ि◌ा कि गृिस्थ-ि◌ीवि व्यतीत किने का आदि◌े हदया। हवठ्ठल पन्त घि लौट कि अपनी पत्नी के साथ ि◌िने लगे। यि◌ााँ उनके तीन पुत्रों ◌ंतथा एक पुत्री ने ि◌न्म-ग्रिण हकया। हवठ्ठल पन्त तथा उनके परिवाि के लोगों ◌ंके प्रहत गााँव के लोगों ◌ंका व्यवि◌ाि अत्यन्त कटु था। इस कष्टप्रद तथा अपमाहनत ि◌ीवन के कि◌ाण भग्न-हृदय दम्पहत का असमय ि◌ी दि◌ेान्त ि◌ो गया ओि◌ इस प्रकाि अल्पायु में ि◌ी उनकी सन्तान अनाथ ि◌ो गयी।

हनवृहत्तनाथ ने अपने अल्पवयस्क भाइयों ◌ंतथा अपनी बिन का पालन-पोषण हकया। गिनीनाथ हनवृहत्तनाथ के, हनवृहत्तनाथ ज्ञानदेव के तथा ज्ञानदेव सोपान एवं मुक्ताबाई के गुरु थे। ये सभी पण्ढिपुि के हवठ्ठल के भक्त, पूि◌ािाि तथा ि◌मथहनष्ठ थे।

ज्◌ेयेष्ठतम पुत्र हनवृहत्त का अभी यज्ञोपवीत-संस्कि◌ा ि◌ोना था। वि संन्यासी के पुत्र थे; अतः ब्राह्मणों ◌ंने उनके यज्ञोपवीत-संस्कि◌ा का अनुष्ठान किना अस्वीकाि कि हदया। ज्ञानदेव ने एक भैंसे के ि◌ीि◌ि पि अपना ि◌ाथ ि◌खा ओि◌ वि भैंसा उनके ि◌ाथों ◌ंके हदव्य स्पिथ के कि◌ाण वेद-मन्त्रों ◌ंका पाठ किने लगा। इस घटना से ब्राह्मणों ◌ंके भ्रम

का हनवािण िो गया औि उनकी आँखें खुल गयीं।ं उन्होंनें उनको यि हदखा हदया हक यथाथथ ब्राह्मणत्व हकसी पूवथ-हनिाथरित कमथ-काण्डीय व्यवस्था या हसद्धान्त पि आिारित न िो कि आन्तरिक पहवत्रता तथा सच्चरित्रता पि आिारित िै।

एक बाि चांगदेव एक ििे पि बैठ कि उन प्रख्यात भाइयों ंको देखने गये। ज्ञानदेव भी उनसे कम निीं ंथे। यि योगी थे। अपने भाई-बिन के साथ वि हिस घि में बैठे थे, वि घि िी उन चािों ंको हलये िए चांगदेव के स्वागत के हलए चल पि़ा। अब चांगदेव को लस्ट्ज्जत िो कि उनके समक्ष अवनत ििि िोना पि़ा। उन्होंनें ज्ञानदेव की मित्ता को स्वीकाि कि हलया। ज्ञानदेव ने इक्कीस वषथ की आयु में सिीव समाहि ली। एक गुफा में प्रहवष्ट िो कि उन्होंनें प्राण को ब्रह्मिन्ध्र में पहुँचा हदया। 'ज्ञानेश्विी' नामक उनका गीता-भार्ष् एक कालियी भार्ष् िै।

मुक्ताबाई आिीवन कुमािी ििी। वि एक हसद्ध महिला थी। वि चांगदेव की गुरु थी। एक हदन मुक्ताबाई अपने भाइयों ंके साथ आश्रम में बैठी हुई थी। चांगदेव किीं ंसे उिि िी आ ििे थे। मुक्ताबाई हवहिवत् वस्त् िािण हकये हुए थी; हकन्तु चांगदेव को ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वि हबलकुल नग्नावस्था में िो। वि घूम कि दूसिी औि चल पि़े। मुक्ताबाई ने उनसे किा हक अभी वि हसद्धावस्था को प्राप्त निीं ंिो सके िैं, क्योंहंक अभी उनमें हलंग-भेद तथा लज्जा-भाव हवद्यमान िैं। इसके अहतरिक्त वि प्रत्ेयेक भूत में ईश्वि-दिथन में भी अक्षम िैं। इस प्रकाि मुक्ताबाई से चांगदेव को एक अमूल्य हिक्षा प्राप्त हुई। उन्होंनें गिन सािना कि इस दुबथलता से मुस्ट्क्त प्राप्त कि ली।

एक बाि पण्ढिपुि के मस्ट्न्दि में अत्यहिक संख्या में भक्त एकत्र हुए। चांगदेव, गोिा कुम्हाि, ििौीदास, नामदेव, चोखामेला तथा सव्जता के अहतरिक्त विाँ अन्य कई भक्त आये िए थे। मुक्ताबाई ने नामदेव का ज्ञानविथन किना चािा। उसने कुम्भकाि गोिा कुम्हाि से उन सभी सन्तों ंका पिीक्षण किने को किा। कुम्भकाि को पात्र के स्पिथ से उसकी परिपक्वता का ज्ञान िो िाता िै। गोिा कुम्हाि ने सभी सन्तों ंके ििि का स्पिथ हकया। िब उन्होंनें नामदेव से ििि का स्पिथ हकया, तब नामदेव हचल्ला उठे। गोिा कुम्हाि ने तत्क्षण कि हदया- "यि पात्र अभी पूणथतः परिपक्व निीं ंिो पाया िै।"

नामदेव दौि़ कि कृष्ण के पास गये औि उस सभा में िो कुछ हुआ था, उसका हवविण उन्होंनें उनके समक्ष प्रसुतुत कि हदया। श्रीकृष्ण ने उनसे किा- "िााँ, नामदेव, अभी तुम कचे्चे अथाथत् अपरिपक्व िो। तुम्हें आत्यस्ट्न्तक बोि की सम्प्रास्ट्प्त अभी निीं ंिो सकी िै। तुम खेचि स्वामी के पास िा कि उनसे दीक्षा ग्रिण किो।"

मुक्ताबाई ने आठ वषों की अवहि में सिस्रों ंलोगों ंको प्रबुद्ध हकया औि इसके पिात् वि िाश्वत आनन्द के पिम िाम में चली गयी।

हिबया

ििित िहबया एक मिान् इिममतावलम्बी महिला सन्त थी। उसका हृदय पहवत्रता तथा िमथहनष्ठा से ओत-प्रोत था। वि कठोि तपस्या हकया किती थी। उसके हृदय में हदव्य पे्रम की अहग्न प्रज्ज्वहलत िोती ििती थी औि वि स्वयं को हदव्यता में अन्तलीन हकये ििती थी। बाल्यावस्था में िी उसके हृदय में भस्ट्क्त-भाव का अंकुिण िो चुका था।

हिबया का िन्म बसिा में ७१७ ई. में हुआ था। वि एक हनिथन परिवाि की सन्तान थी। उसकी तीन ब़िी बिनें थीं।ं उसके िन्म के कुछ िी हदनों ंके पिात् अकाल में उसके माता-हपता का देिान्त िो गया। मातृ-हपतृ–िीन िहबया एक ऐसे व्यस्ट्क्त के िाथ आ गयी हिसने उसे एक िन–िान्य-सम्पि व्यस्ट्क्त के िाथों ंबेच हदया औि इस प्रकाि िहबया गुलाम बना दी गयी।

अपनी बाल्यावस्था में एक बाि िब िहबया स्रिक पि घूम ििी थी, उसके हनकट एक व्यस्ट्क्त आ पहुाँचा। उससे भयभीत िो कि िहबया विााँ से भाग गयी, हकन्ुतु ऐसा किते समय वि हगि प्ऱी हिससे उसकी कलाई टूट गयी। उसने िूल में अवनत-हिि िो कि किा- "भगवान्! मैं मातृ-हपतृ–ीन अनाथ तथा एक हनिथन गुलाम िैं। मेिी कलाई टूट गयी िै; हकन्ुतु मैं इस किाण दुःखी निीं ंहाँ। मैं तो केवल तुमको प्रसि िखना चािती हाँ। मुझे यि िान कि अत्यन्त िषथ िोगा हक तुम मुझसे प्रसि िो।"

हिबया को अपने स्वामी के यिााँ कठिो परिश्रम किना प़िता था हिसका पारिश्रहमक उसे उपवास के रूप में हमलता था। वि हदन-भि भूखी ििती औि िात का अहिकांसिमय प्राथथना तथा ध्यान में व्यतीत किती।

एक िात िहबया के स्वामी को कुछ िब्द सुनायी पिे। उसने स्ट्खिकी से देखा हक आाँगन में िहबया अवनत हिि िो कि भगवान् से प्राथथना कि ििी िै-"मेिा हृदय तुम्हािे सुख सदैव अनावृत िै औि मेिी आाँखें सदा तुम्हीं ंपि लगी ििती िैं। मैं तुम्हािी उपासना में सदैव लीन ििना चािती हाँ; हकन्ुतु तुमने मुझे गुलाम बना हदया िै। इस स्ट्स्थहत में मैं कि भी क्या सकती हाँ। मेिे हलए तुम्हािी हनिन्ति सेवा हकस प्रकाि सम्भव िै? गुलाम िोने के किाण मैं तुम्हािी उपासना केवल िात में िी कि सकती हाँ।"

उसके स्वामी ने िहबया के हिि पि ज्योहत देखी हिससे सािा घि दीस्ट्प्तमय िो उठा। वि आियथचहकत िो उठा। उसने सोचा हक िहबया एक िमथहनष्ठ महिला िै। दूसिे हदन प्रातःकाल उसने िहबया को मुक्त कि उससे क्षमा-याचना की। इसके पिात् उसने िि को छोि़ हदया। वि मरुभूहम में िा कि एक पणथकुटी में ििने लगी।

कुछ हदनों ंके पिात् वि बसिा आ गयी ििााँ वि मृतुयु पयथन्त ििी। मृतुयु के समय उसकी आयु नब्बे वषथ थी।

हिबया एकान्तहप्रय थी औि उसका िीवन सिल, सिि तथा अकृहत्रम था। उसके हदन हनिथनता में व्यतीत हुए; हकन्ुतु उसने इसके हवरुद्ध कभी कोई प्रहतवाद निीं ंहकया। उसके हिष्यों ंमें समृद्ध लोगों ंका अभाव निीं ंथा; हकन्ुतु वि आिीवन अपनी िीणथ–िीणथ कुहटया में िी ििी। उसके पास मात्र दो-तीन भग्न मृहत्तका पात्र औि दो वस्त्-खण्ड थे। वि प्रायः उपवास हकया किती तथा हदन–िात इबादत औि ध्यान में लीन ििती। स्त्ी-पुरुष उसके आिीवाथद के हलए उसकी कुहटया में आते औि उससे आध्यास्ट्कि हिक्षा ग्रिण किते। उसके पास हववाि के कई एक प्रस्ताव आये; हकन्ुतु उसने कि हदया - "मैं स्वयं को ईश्वि को समहपथत कि हदया िै औि अब मुझे मानवीय सम्बन्धों ंकी कोई कामना निीं ंिै। मैं ईश्वि से सम्बद्ध िो चुकी िै। इस स्ट्स्थहत में मुझे सिचिण के हलए पहत की क्या आवश्यकता िै? ईश्वि से सम्बन्ध-हवच्ेछेद की कल्पना भी मेिे हलए दुःखद िै।"

चमत्कार

हिबया के ईश्वि-प्ेरम तथा उसकी उपासना का लक्ष्य अन्य कोई प्राप्तव्य न िो कि स्वयं ईश्वि िी था। वि अपनी इस मान्यता पि अत्यहिक बल देती थी। वि ईश्वि की उपासना हकसी पुिस्काि की आिा या दण्ड के भय से निीं ंकिती थी। हिबया के अनुसाि ईश्वि हप्रयतम िै। उसने संसाि को बताया हक प्ेरमी को अपनी प्रत्ेयेक वसुतु का परित्याग कि उस 'हदव्य इच्छा' (Divine Will) के िाथों ंस्वयं को सवाांततः सौंपं देना चाहिए। उसे उसके चिणों ंपि अपनी इच्छा को भी हवसहिथत कि देना िोगा। उसमें मुस्ट्क्त की कामना भी िेष निीं ंििनी चाहिए।

एक बाि िब िहबया मक्का के हनकट गयी, तब काबा अपने स्थान का त्याग कि उसके स्वागत के हलए उसके पास आ गया। िहबया ने किा- "मुझे तो इस घि के हनवासी के दिथन की इच्छा िै। इस घि से मेिा क्या लेना-देना?"

एक बाि िहबया तीथाथटन पि िा ििी; हकन्तु मागथ में िी उसका ऊाँट मि गया औि वि कािवााँ से पीछे िि गयी। तभी एक चमत्काि हुआ औि ऊाँट पुनिीहवत िो गया।

एक बाि िब घि में अाँििेा था, कुछ सूफी उसके यिााँ आ गये। िहबया ने अपनी उाँगली पि फूंक मािी औि घि में िात-भि प्रकाि छाया ििा। िब वि पिाहड़यों ंमें चलती थी, तब पिु-पक्षी उसके चतुहदथक एकत्र िो िाते थे।

जीवन की कुछ िााँडकयााँ

एक बाि सूहफयों ंकी एक सभा में िसन ने किा- "िो अपने ईश्वि िािा दण्ड हदये िाने पि िैयथ िािण निीं ंहकये
िािा, वि अपने दावे के प्रहत गम्भीि निीं ंिै।" िहबया ने किा- "मुझे उसके िब्दों ंसे अिंकाि की गन्ध आती िै। िकीक ने किा- "िो अपने ईश्वि के दण्ड के हलए उसके प्रहत कृतज्ञ निीं ंिै, उसमें हनष्कपटता निीं ंिै।" िहबया ने सोचा हक इससे भी कुछ अहिक बुस्ट्द्ध-सित बात िोनी चाहिए। तब महलक दीनाि ने किा- "ईश्विीय दण्ड भोगते समय हिसे आनन्द की अनुभूहत निीं ंिोती, वि हनष्कपट निीं ंिै।" िहबया ने किा- "यि भी पयाथप्त निीं ंिै।" तब उन लोगों ंने िहबया से अपना हवचाि प्रकट किने को किा। उसने किा- "हिसे ईश्विीय दण्ड का हवस्मिण निीं ं िािा, वि हनष्कपट निीं ंिै।"
हिबया ने एक ऐसे व्यस्ट्क्त को देखा िो अपने हिि के चािों ंओि पिी बााँिे हुए था। पूछने पि उसने बताया हक उसके हिि में पीड़ा िै। िहबया ने उसकी आयु पूछी। उसने बताया हक उसकी आयु तीस वषथ िै। िहबया ने उससे पुनः पूछा- "क्या तुम्हािा िीवन का अहिकांि पीड़ा औि कष्ट में िी व्यतीत हुआ िै?" उसने उत्ति हदया- "निीं।ं यि पिला अवसि िै िब मेिा हिि पीड़ाग्रस्त हुआ िै।" िहबया ने किा- "ईश्वि ने तुम्हािा िीिि को तीस वषों तक स्वस्थ औि सन्तुष्ट िखा; हकन्तु इस पि कभी तुमने उसके प्रहत कृतज्ञता की पहिका निीं ंबााँिी, लेहकन अपने हिि की अल्पकालीन पीड़ा के हलए तुमने उसके हवरुद्ध परिवाद की पहिका बााँि ली।"

एक हदन िहबया ने एक व्यस्ट्क्त को वस्त् खिीदने के हलए पैसे हदये। वि चला गया; हकन्तु िीघ्र िी लौट कि उसने हिबया से पूछा- "वस्त् हकस िंग का िोना चाहिए?" िहबया ने किा- "िब िंग का प्रश्न आ गया, तब तुम मुझे पैसे लौटा दो। िंग इस्ट्न्द्रयों ंका हवषय िै।" उसने उस व्यस्ट्क्त से पैसे ले कि टाइहग्रस नदी में फेंक हदये।

एक हदन लोगों ंने देखा हक िहबया एक िाथ में आग औि दूसिे िाथ में पानी की बाल्टी हलये दौड़ ििी िै। लोगों ंने उससे पूछा- "तुम किााँ िा ििी िो?" िहबया ने किा- "मैं स्वगथ में आग लगाने औि नकथ की आग बुझाने िा ििी हाँ हिससे तीथथयाहत्रयों ंके हलए ये दोनों ंआविण नष्ट िो िायें, उनके अहभप्राय की पूणथ हसस्ट्द्ध िो िाये तथा स्वगथ की आिा एवं नकथ के भय के अभाव में िी ईश्वि के भक्त उसका दिथन कि सकें।"

हिबया से पूछा गया हक वि ईश्वि की उपासना क्यों ंकिती िै? उसने उत्ति हदया- "क्या इसके उत्ति में मेिा इतना िी कि देना पयाथप्त निीं ंिोगा हक मुझे उसकी उपासना के हलए िी िाथ हदये गये िैं। उसकी उपासना के कािणों ंकी व्याख्या के हलए हकसी अन्य अहभप्रेिक के साक्ष्य की आवश्यकता निीं ंिै।" एक अन्य अवसि पि िहबया ने किा- "मैंने नकथ के भय के कािण ईश्वि की सेवा निीं ंकी िै। यहद मेिी सेवा के मूल में भय की भावना हवद्यमान िै, तो मुझे हकिाये का एक अिम टट्टू िी समझा िायेगा। मैंने स्वगथ-प्रास्ट्प्त की आिा में भी उसकी सेवा निीं ंकी िै। यहद मैंने ऐसा हकया िोता, तो मुझे एक कृतघ्न सेवक समझा िाता। मैंने उसकी सेवा हकसी पुिस्काि के लोभ में भी निीं ंकी िै। मैंने उसके प्रहत अपने प्रेम के कािण िी उसकी सेवा की िै।"

एक समृद्ध व्यस्ट्क्त ने िहबया को कुछ िन देना चािा। िहबया ने किा- "मैं सांसारिक वसुतुओं ंकी माँग तो सिो संसिा के अहिपहत ईश्वि से भी निीं ंकि सकती; हफि मैं उस व्यस्ट्क्त से कुछ क्यों ंमाँगू हिसका इस पि कोई अहिकाि निीं ं
ि।"
एक अन्य व्यस्ट्क्त ने िहबया के हलए एक घि बना कि उससे उसमें ििने का आग्रि हकया। िहबया ने विाँ िा कि उस घि के अलंकिण की बहुत प्रंिसा की; हकन्तु इतना कि कि वि िीघ्र िी लौट गयी- "मुझे भय िै हक मैं इस घि के प्रहत आसक्त िो कि अपने संकल्प से स्खहलत िो िाऊँगी। मेिी एकमात्र इच्छा स्वयं को ईश्वि की सेवा में अहपथत कि देना िै।"

रुग्ण िोने पि िहबया ने कभी कोई परिवाद निीं ंहकया। एक बाि हकसी व्यस्ट्क्त ने िोग-मुस्ट्क्त के हलए उसे ईश्वि की प्राथथना किने का पिामिथ हदया। उसने उससे पूछा- "क्या मेिे िोग के मूल में तुम्हें ईश्वि की इच्छा के दिथन निीं ं
िोते?" उसने किा- "िोते िैं।" िहबया ने किा- "तब तुम मुझे वैसा किने को क्यों ंकिते िो िो उसकी इच्छा के हवपिीत िै? अपने हप्रयतम का हविोि उहचत निीं ंिोता।"

हकसी ने िहबया से पूछा- "सेवक ईश्वि के प्रहत हनष्कपट आत्म-समपथण कब किता िै?" उसने किा- "िब हवपहत्त में प्राप्त दुख औि समृस्ट्द्ध में प्राप्त सुख अहभन्न िो िायें, तब समझ लेना चाहिए हक हनष्कपट आत्म-समपथण िो चुका ि।"

कुछ सूहफयों ंने किा- "द्वाि उसी के हलए खुलता िै िो इस पि दस्तक देता िै।" िहबया ने किा- "तुम कब तक दस्तक देते ििोगे? इसे खोलेगा कौन? इसे बन्द हकसने हकया िै?"

हकसी ने िहबया से पूछा- "आपकी इच्छा क्या िै?" उसने किा- "मैं सेहवका हूँ। एक सेहवका को इच्छा से क्या लेना-देना िै? यहद मुझे हकसी वसुतु की इच्छा िो औि ईश्वि की इच्छा भी इस इच्छा के प्रहतकूल िो, तो यि पािस्परिक हवश्वास के अभाव का िी प्रतीक िोगा। उसी की इच्छा में तुम्हािी इच्छा का पयथवसान िोना चाहिए। तभी तुम उसके सच्चे सेवक िो सकोगे।"

रडबया की उक्तियाँ

संसाि से घृणा किो: क्योंहक िब तुम इसको िेय दृहष्ट से देखते िो, तो यि अत्यहिक सुखद प्रतीत िोता िै।

***

यहद सेवक को स्वामी के साहिध्य की इच्छा िै, तो सेवक के पास स्वामी के अहतरिक्त औि कुछ निीं ंिोना चाहिए।

***

हिस प्रकाि तुम अपने दुष्कमों को हछपाते िो, उसी प्रकाि अपने सत्कमों को भी हछपाओ।

आवियक्काल

भगवद्भक्तों ंमें सामान्यतः यि िािणा प्रचहलत िै हक भगवान् हिव ने इस संसाि में कालहि के श्री िगद्गुरु आहद िंकिाचायथ के रूप में तथा माता पावथती ने िेन्कोाई की श्रीमती आवियक्काल के रूप में अवताि ग्रिण हकया

था। माता पावथती के अवतित ग्रिण का प्रयोिन स्पष्ट रूप से यि हसद्ध किना था हक इस कहलयुग में भी नारियााँ आिो-साक्षात्कािा में समथथ िैं।

आवियक्काल दहक्षण भाित-स्स्थत िेन्किोई के एक िमथहनष्ठ िैव विम दम्पहत की सन्तान थी। बाल्यावस्था से िी उसमें उच्चति मानहसकता के दिथन िोने लगे थे। स्वेच्छया वि कोई काम निीं िंकि पाती थी। इसके हलए उसे हकसी अहभप्रेिक की आवश्यकता हुआ किती थी। िो भी आिि-वस्त् उसे हमल िाता था, उससे उसकी आवश्यकताओं ं की पूहतथ िो िाया किती थी। ििााँ उसको िाने का आदेि हमलता, विााँ वि चली िाती औि हिस काम में उसे संलग्न िोने को किा िाता, उसमें वि संलग्न िो िाती थी। बाल्यावस्था में िी उसका हववाि एक ब्राह्मण कुमाि के साथ कि हदया गया।

उपयुक्त आयु को प्राप्त िोने पि उसकी सुिागिात का आयोिन हकया गया। उसकी सम्बन्धी महिलाएाँ उसे उस अवसि के अनुकूल सुन्दि वस्त्ों ंसे सुसस्ज्जत कि वि-कक्ष में पहुाँचा आयीं ंऔि तत्पिात् कक्ष ििाि से बन्द कि हदया गया। उसका िय्यासीन पहत उसे देख ििा िै। कुछ क्षणों ंके पिात् वि िय्या पि पड़ी फूलों ंकी माला उठा कि सूाँघने लगा; हकन्तु उस माला में एक हवषैला नाग था हिसने उसे तत्काल डस हलया। इसके परिणाम स्वरूप वि मूस्च्छत िो गया औि इसके कुछ िी क्षणों ंके पिात् उसका देिान्त िो गया।

दूसिे हदन प्रातःकाल प्रचलन के अनुसाि घि की महिलाओं ंने वि-कक्ष का िाि खोला। उनको यि देख कि आियथ हुआ हक आवैि उस स्थान पि अभी भी मूहतथवत् खड़ी िै ििााँ गत िाहत्र वे उसे छोड़ गयी थीं।ं उससे पूछा गया हक वि अब तक विीं ंक्यों ंखड़ी िै ? उत्ति में उसने किा- "तुम लोगों ंने मुझे यिीं ंखड़े ििने को किा था।" िब उन महिलाओं ंकी दृहष्ट उसके पहत पि पड़ी, तब वे संियग्रस्त िो उठीं।ं िय्या के पास िा कि उन्होंने देखा हक उसका देिान्त िो चुका िै। वे इसे आवैि का दुभाथग्य समझ कि उसे तथा उसके मृत पहत को कक्ष से बािि ले आयीं।ं

पहत के अस्न्तम संस्काि की हवहिवत् समास्प्त के पिात् आवैि का मुण्डन कि हदया गया औि उसके आभूषण उताि कि उसे श्वेत वस्त् दे हदये गये; हकन्तु आवैि पि अपने पहत की मृत्यु की कोई प्रहतहक्रया निीं ंहुई। उसे हवववा घोहषत कि हदया गया। हवववा िब्द अमंगल का प्रतीक िै। अब उसे अपने कक्ष से वहिगथमन तथा हकसी उत्सव में सस्महलत िोने से वंहचत कि हदया गया। आवैि को ब्राह्ममुहतथ में स्नान के हलए नदी की औि िाना पड़ता था; क्योंहक घि के अन्य लोगों ंके िय्या-त्याग के पूवथ उसके हलए विााँ से लौट आना अहनवायथ था।

एक हदन प्रातःकाल आवैि स्नान के हलए नदी में गयी। स्नान के पूवथ उसने दन्त-प्रक्षालन के हलए नदी से आम का एक पत्ता उठा हलया। वि ज्यों-िी उस पत्ते को अपने दााँतों ंके पास ले गयी, उसे एक इस्न्द्रयातीत अनुभव हुआ।

ऐसा हुआ हक उसी हदन िगत्-प्रहसद्ध सन्त सदाहिव ब्रह्म के गुरुभाई सन्त अय्यवाल एक पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कि ध्यान कि ििे थे। उसी हदन नदी के तट पि उन्होंने आम के पत्ते से दन्त-प्रक्षालन कि उसे नदी में फेंक हदया था। आवैि ने उसी पत्ते का उपयोग हकया था। हिस क्षण वि सन्त के उस्च्छष्ट पत्र को अपने मुाँि में ले गयी, उसी क्षण उसकी आिो-ज्योहत को आवृत किने वाले कश्मल का प्रिाण िो गया औि वि आिो-साक्षात्कािा से कृतकृत्य िो गयी। वि तत्काल पीपल के नीचे ध्यानस्थ सन्त के चिणों ंमें पहुाँच गयी।

उसने सन्त अय्यवाल को साष्टांग प्रणाम हकया औि सन्त ने उसके हिि पि िाथ िख कि अथाथत् उसे िस्त-दीक्षा दे कि किा - "ब्रह्म सत्यम्।" आवैि का हृदय प्रदीप्त िो उठा। वि समाहिस्थ िो गयी अथाथत् वि उस अवस्था को प्राप्त िो गयी हिसे हदव्य चेतना किते िैं। इसके कुछ क्षणों ंके उपिान्त सन्त पुिः के हलए उसे एक हिव हलंग दे कि विााँ से चले गये।

उसी क्षण आविै की हिह्वा पि सिस्वती का वास िो गया औि उसके कण्ठ से हदव्य तथा पे्रिणादायी गीतों ंके माध्यम से उसके अतीस्ट्यि अनुभव हनःसृत िोने लगे। उसने अपने अिसिााण ज्ञान से सभी नगिवाहसयों ंको चमत्कृत कि हदया। वि िो कुछ किती थी, िो कुछ गाती थी, उससे उसकी आन्तरिक दीस्ट्प्त का िी िेखांकन िोता था। लोगों ंने यि सोच कि हक वि हवहक्षप्त िो गयी िै, उसे उसके कमिे में बन्द कि हदया।

इस बीच आविै के माता-हपता का दिेान्त िो गया। इससे उसकी गहत-हवहि पि कोई प्रहतबन्ध निीं ििि गया। वि तत्क्षण अपने कमिे का िाि खोल कि इस उन्मुक्त संसाि में आ गयी िो उसका स्व-गृि था। अब युवावस्था को प्राप्त वि आविै ज्ञान-गीत गाते औि लोगों ंमें ज्ञान-ज्योहत को हवकीणथ तथा समे्प्रेहषत किते इतस्ततः एकाकी हवचिण किने लगी।

एक बाि आविै हतरुवनन्तपुिम् गयी। तालाब में स्नान कि उसने हलंग-पूिन किना चािा। विााँ का िािा उसके बेल-पत्र िािा हनयहमत हलंग-पूिन से परिहचत था। उसने उसकी पूिा के हलए एक टोकिी स्वणथ-हनहमथत बेल-पत्र भेिे हदये। तालाब में स्नान कि आविै उसके तट पि उन स्वणथ-हनहमथत बेल-पत्रों ंसे पूिा किने लगी। िैसा प्रचलन िै, पूिा की समास्ट्प्त के पश्चात् उन स्वणथ-हनहमथत बेल-पत्रों ंको हनमाथल्य (अहपथत पुष्प-पत्राहद) समझते हुए उसने उन्हें तालाब में िाल हदया। यि सुन कि िािा स्तब्ध िि गया। आविै के मिान् त्याग तथा पि-वैिाग्य से वि पूणथतः परिहचत िो गया। आविै के हलए स्वणथ तथा बेल-पत्र में भेद-दिथन असम्भव था।

हतरुवनन्तपुिम् से आविै िाहमथक सम्प्रदायों ंके पीठािीशों ंके एक सम्मेलन में चली गयी। विााँ उसने अपने ज्ञान-गहभथत प्रवचन से श्रोताओं ंको मन्त्र-मुग्ध किते हुए सभी मतों ंकी एकता को हसद्ध हकया। प्रािम्भ में उसके मुस्ट्ण्डत हसि की औि संकेत कि लोगों ंने उसे 'मोिै' (Mottai) िब्द से सम्बोहित हकया। प्रत्युत्ति में उसने किा- "कौन िै मोिै? क्या यि मेिा ििीि िै? क्या यि मेिा मन िै? क्या यि मेिा प्राण िै? क्या यि मेिा िीव िै? क्या यि मेिा आत्मा िै? मैं कौन हाँ? मैं मोिै कैसे िो सकती हाँ?" अन्ततः वे लोग उसके हदव्य ज्ञान के हलए उसकी भूरि-भूरि प्रिंसा किते हुए उसके चिणों ंके समक्ष अवनत िहि िो गये।

एक अन्य अवसि पि हकसी िािा ने आविै को अपनी िािसभा में बुला कि उसके समक्ष उससे अपने हववाि का प्रस्ताव प्रस्तुत कि हदया। उसने किा- "तुम एक सुन्दि युवती िो। तुमको इस प्रकाि स्वच्छन्द हवचिण निीं ंकिना चाहिए। तुम मेिी िानी बन कि िािप्रासाद में िाि-सुख तथा िस्ट्क्त का उपभोग किो।" आविै ने उसके प्रस्ताव की स्वीकृहत का स्वााँग किते हुए उससे किा हक उसे पिले उसके प्रश्नों ंके उत्ति देने िोंगे; हकन्तु उसके प्रश्न इतने उदात्त तथा भव्य थे हक िािा को उसके समक्ष लस्ट्ज्जत िो िाना पड़ा। उसने आविै से ज्ञान-दीक्षा ग्रिण कि ली।

आविै ने अपने गुरुदेव श्री अय्यवाल के पुनः दिथन हकये। वि उनकी हिष्य-मण्डली में सस्ट्महलत िो गयी। उस दल की वि एकमात्र महिला सदस्य थी। सन्त के हिष्य उसके प्रहत दुव्यथविाि किते थे औि उसे अन्तेवाहसनी न मान कि आश्रम की उस्ट्च्छष्ट-भोिी कुहतया समझते थे। श्री अय्यवाल ने उन्हें एक हिक्षा देनी चािी।

एक हदन श्री अय्यवाल के सभी हिष्य नौका िािा कावेिी नदी के मध्य स्ट्स्थत बालू के एक टीले पि िा कि ध्यान किने लगे। अय्यवाल नदी-तट पि थे। िीघ्र िी हिष्यों ंको नदी के िल-स्ति में वृस्ट्द्ध का आभास िोने लगा। वे संकट का पूवाथनुमान कि विााँ से लौटने की बात सोचने लगे। पिन्तु आविै गिन समाहि में लीन थी। अन्य हिष्यों ंने उसका पिीक्षण किना चािा। वे उसे विीं ंछोड़ कि चले गये। िल तीव्र गहत से ऊपि उठता िा ििा था। िीघ्र िी ऐसा प्रतीत िोने लगा हक आविै िूब िायेगी। समाहि से उठने पि उसने देखा हक अन्य सभी लोग विााँ से िा चुके िैं। उसने अपने गुरुदेव की औि देखा। गुरुदेव ने अपने िाथ उठा कि उससे सांकेहतक भाषा में किा- "विीं ंरुकी ििो।" आविै ने उनके आदेि का पालन हकया औि इसके पश्चात् िो चमत्काि हुआ, वि अवणथनीय िै। आविै विााँ

तीन हदनों ंतक ख़्िी ि्ी औ उफनती बाढ़ ने उस स्थान का स्पिथ तक निीं ंहकया ि्ाँ उसके पै हटके थे। तीन हदन के पिात् िब नदी का पानी पूवथवत् सामान्य स्ति पि पहुाँच गया, तब वि विााँ से चली गयी।

इस घटना के साथ-साथ ऐसी ि्ी अन्य घटनाओं ंसे आश्रम का प्रत्येक अन्ेतेवासी उस निाी सन्त की मिानता से परिहचत िो गया। इसके पिात् श्री अय्यवाल ने भी उसकी महिमा को गुप्त िखना उहचत निीं ंसमझा। लोग आिीवाथद के हलए उसके पास आने लगे। उसके कण्ठ से हदव्य संगीत की ि्ाा हनःसृत िोती ि्ी औ उसके गीतों ंसे उपहनषदों ंका हदव्य ज्ञान प्रवाहित िोता ि्ा।

सूफी सन्त
लिालुद्दीन रूमी

लिालुद्दीन रूमी एक प्रख्यात फिासी मनीषी, सन्त तथा कहव थे। उनका िन्म ३० हसतम्बि १२०७ ई. में बल्ख में हुआ था। उनके हपता बिाउद्दीन वलाद एक नैहष्ठक तथा सुसंसृकृत व्यस्ट्क्त थे। वि एक सुप्रहसद्ध अध्यापक तथा एक मिाहवद्यालय के प्राचायथ थे।

वि परिवाि अन्ततः बल्ख छोि़ कि कोरिया (Qoriya) में बस गया।

लिाल में बाल्यावस्था से िी हवलक्षण प्रहतभा तथा अहतमानवीय िस्ट्क्त के दिथन िोने लगे थे। बाल्यावस्था में हवलक्षण प्रहतभा की सम्प्रास्ट्प्त इस सत्य की ओि संकेत किती िै हक बालक का पुनिथन्म हुआ िै। अनेक िन्मों ंमें अहिथत हवपुल अनुभवों ंके संचयन के माध्यम से हवलक्षण मेिा तथा अलौहकक प्रहतभा से सम्पि िोने के हलए मनुर्ष् को अनेक िन्म ग्रिण किने पि़ते िैं।

छि वषथ की अल्पायु में िी िलाल को ओयथिनक इलिाम तथा अनुभव िोने लगे थे। उन्होंनें अद्‌भुत हसस्ट्द्धयों ंका प्रदिथन हकया था। अपने हपता की मृतुयु के पित् िलाल अध्यापक िो गये। अहििाण मेिा के स्वामी िोने के किाण उनके पास अध्ययन के हलए हवहभि क्ेषेत्रों ंसे हवद्याथी आने लगे।

कुछ हदनों ंके पित् िलाल ने हववाि कि हलया। उन्होंनें कोरिया में यिस्वी सुफी सन्त तथा अपने गुरु िम्स तबिीि के दिथन हकये। िलाल को देख कि िम्स तबिीि अत्यहिक प्रसि हुए। उन्होंनें उनको सूफी-मत से सम्बस्ट्न्धत आध्यास्ट्त्मक उपदेि-अनुदेि हदये।

सूफी-मत तथा वेदान्त में सादृश्य के दिथन िोते िैं। सूफी सन्त का हृदय हविाल िोता िै। उसकी प्ेरेम-परिहि में समूपूणथ मानवता का समावेि िो िाता िै। वि समस्त नाम-रूपों ंमें भगवान् के दिथन किता िै। उसकी दृहष्ट ब्रह्माण्डीय िोती िै औि वि अपने प्ेरेम-पाि में सभी को आबद्ध कि लेता िै। वि दया का सागि िोता िै औि उसका प्ेरेम असीम िोता िै। वि प्ेरेम की प्रहतमूहतथ िोता िै।

िाहमथक हवषयों ंमें िलाल अत्यन्त सहिषु्णु थे। वि समदिी थे तथा उनका प्ेरेम सावथभौम था। उनके हिष्ों ंमें कुछ ईसाई भी थे।

दीवानी िम्सी तबिे़ (Diwani Shamsi Tabriez) तथा मसनवी-इ-मनावी (Masnavi-i-Ma'navi) नामक उनकी दो सुप्रहसद्ध कृहतयाँ अत्यन्त प्ेरिणाप्रद, ममथस्पिी तथा ओिोद्दीपक िैं। िलाल के ग्रन्थों ंकी प्रत्ेयेक पंस्ट्क्त से हदव्य प्ेरेम की वीणा के स्वि झंकृत िोते िैं। हदव्य प्ेरेम के हनिन्ति हवकास तथा ईश्वि से तादात्म्य-स्थापन की हवहि के सम्बन्ध में इनमें स्पष्ट हनदेिों ंका उल्ेलेख हकया गया िै।

लिालुद्दीन रूमी को मौलाना की उपाहि से हवभूहषत हकया गया था। िनवान् तथा हनिथन, सम्भ्रान्त तथा सामान्य-िन सभी लोगों ंके हलए आदिणीय थे। उनकी कहवताओं ंका पाठ असंख्य लोगों ंद्वािा हकया िाता िै। उनके प्रहत यूिोहपयन हविानों ंके मन में भी गिन श्रद्धा के भाव िैं। वे उनको फिासी सूहफयों ंमें सवथश्ेरेष्ठ ज्ञानी तथा िहस्यवादी कहवयों ंमें मिानतम कहव मानते िैं। उनके अनुसाि वि एक उच्चति सम्बोहि-प्राप्त मिान् सन्त थे।

लिाल के सिाभूत उपदिे हनम्नांहकत िैं-

"िमथहनष्ठ तथा लघ्वासी बनो। हनिा तथा िागिण की मात्रा को सनुतुहलत िखो। अल्पभाषी तथा सदाचािी बनो। समस्त दुगुथणों ंको नष्ट किो। कामुकता का मूलोच्छेदन किो। अपमान तथा आघात को ियथपूवथक सिन किो। कुसंगहत से दूि ििो। ज्ञानी मनीहषयों ंसे सम्पकथ स्थाहपत किो। लोगों ंके हलए हितकि बनो। हसस्ट्द्धयों ंको आध्यास्ट्कि मागथ का अविोि समझ कि उनसे दूि ििो।"

लिालुद्दीन का दिेान्त कोरिया में सन् १२७३ ई. में हुआ।

मनूसि

मनूसि को बगदाद का सन्त किा िाता िै। वि बगदाद के खलीफा िारुन-अलिशीद के समकालीन थे। यि चाि सौ वषथ पूवथ की बात िै। वि एक िमथहनष्ठ, सदाचािी तथा हनिथन मुसलमान फकीि थे। वि अनवित ध्यान का अभ्यास किते थे औि उनको समस्त नाम-रूपों ंमें ईश्वि के दिथन िोते थे। वि पिमात्मा के हविाट् तथा ब्रह्माण्डीय स्वरूप-दिथन में सक्षम थे। उन पि हदव्य ज्योहत का अवतिण िोता था औि उन्हें आत्म-साक्षात्काि िो चुका था। वि हविुद्ध आत्मा से तादात्म्य स्थाहपत कि चुके थे। उन्होंनें संसाि के सामने **'अनल हक'** के हसद्धान्त का उद्घोष हकया। **'अनल हक'** का अथथ िै- 'मैं ईश्वि हाँ।' ईश्वि के हदव्य िस-पान से उन्मत्त मनूसि िाँ-किीं ंभी िाते थे, **'अनल हक'** का उद्घोष किते थे। मनूसि के 'अनल िक' एवं वेदास्ट्न्तयों ंके **'सोऽहम्', 'हिवोऽहम्' या 'अहों ब्रह्मास्मि'** में पयाथप्त साम्य के दिथन िोते िैं। मुसलमानों ंने मनूसि को नास्ट्स्तक या काहफि घोहषत हकया। वे उनको पाखण्डी किा
किते थे।
मनूसि एक भि व्यस्ट्क्त थे। अतः मौलहवयों ंतथा मुल्लाओं ंको उन पि दया आती थी औि वे उन्हें इस बात का हवश्वास हदलाना चािते थे हक उनका 'अनल िक' का उद्घोष हनतान्त भ्रामक िै। इसके हलए उन्होंनें अथक प्रयत्न हकये; हकन्तु वि अपनी आस्था से हवचहलत निीं िो सके। तब मौलहवयों ंने उन्हे सावथिहनक स्थान पि फाँसी देने का फतवा िािी कि हदया। एक स्तम्भ में उनके िाथ-पैि बाँि हदये गये। िल्लाद उनका सिि काटने को उद्यत खडे थे। उनको अस्ट्न्तम बाि अपने मत-परिवतथन तथा **'अनल हक'** के उदघोष के परित्याग का आदेि हदया गया। उनसे किा गया हक वि अपने िीवन तथा अपने हवश्वास में से हकसी एक का चयन कि लें हकन्तु मनूसि अपने हवश्वास पि अटल ििे। दिथक उनके इस हनणथय से स्तब्ध िि गये।

पिले मनूसि के पैि काटे गये; हकन्तु मनूसि ने मुस्किाते हुए **'अनल हक'** का उदघोष हकया। इसके पिात् उनके नेत्र-गोलकों ंको बािि हनकाल हदया गया; हफि भी वि मुस्किाते हुए 'अनल िक का उद्घोष किते ििे। इसके पिात् उनके िाथों ंकी बािी थी। दिथक मनूसि के प्रहत दयाद्र िो उठे। उन लोगों ंने मौलहवयों ंसे उनकी मुस्ट्क्त की प्राथथना की। तभी लाखों ंलोगों ंने 'अनल िक' का उद्घोष कि हदया। अब मनूसि को अत्यहिक सन्तोष हुआ। हकन्तु मौलहवयों ंने लोगों ंकी प्राथथना पि कोई ध्यान निीं ंहदया औि उनका सिि काट हदया गया। उनके िि से हनकलने वाले िक्त ने भी 'अनल िक' का उद्घोष हकया। उनके ििीि को िला हदया गया हिसकी भस्म ने भी **'अनल हक'** का उद्घोष हकया।

कुछ हदनों ंके बाद मौलहवयों ंको भी अपने कुकृत्य पि पिात्ताप हुआ। अब उन्हें इस बात का पूणथ हवश्वास िो चुका था हक उनके िाथों ंएक सन्त की नृिंस ित्या हुई थी; हकन्तु अब पयाथप्त देि िो चुकी थी। मौलहवयों ंको इस बात का स्पष्ट अनुभव िो चुका था हक मनूसि के ििीि के भस्म को िाने पि भी उनकी आत्मा हवद्यमान थी। िक्त तथा भस्म द्वािा 'अनल िक' के उद्घोष से वे आियथचहकत िि गये थे। अपने **'अनल हक'** के हसद्धान्त के प्रहतष्ठापन के हलए

मनूसिू को बहुत मिाँगी कीमत चुकानी प़िी; हकनु्तु इस मिाँगी कीमत के किाण उन्होंनें अपने नाम तथा इसके साथ-साथ 'अनल िक' को भी अमित्व प्रदान कि हदया। मनूसिू का दिेान्त चाि सौ वषथ पूवथ हुआ था; हकनु्तु उनके 'अनल कि' की गूंि संसाि में आि भी हवद्यमान िै। संसाि में एक भी ऐसा मुसलमान निीं ंहमलेगा िो उस मिान् सन्त के िीवन से अनहभज्ञ िो, िो अपने िाथों ंतथा नेत्र-गोलकों ंसे वंहचत िोने के बाद भी अपने हसद्धान्त के प्रहत आस्थावान् बना ििा।

मिान् मनूसिू लोगों ंके हृदय में आि भी िीहवत िैं। सन्तों ंके इहतिास के हकसी भी आख्यान में कोई भी ऐसा सन्त निीं ंहमलेगा िो उस मनूसिू के समकक्ष िो हिसे अपने हवश्वास के हलए सवाथहिक मिाँगी कीमत चुकानी प़िी थी।

मनूसिू महिमास्ट्ति िों ं!

म्सि तबिे़

म्सि तबिे़ मुलतान के एक अन्य ब्रह्मज्ञानी थे। मुलतान प्रह्लाद की िन्मभूहम िै। मनूसिू भी यिीं ंिििते थे। यि नगि 'ग, ग, ग, ग' के हलए प्रहसद्ध िै। इन चािों ं'ग' से गिमी, गदथ (िूल), गदा (फकीि) औि गोिस्थान (मकबिा) का बोि िोता िै।

म्सि तबिे़ का िीवन-काल चाि सौ वषथ पूवथ का था। वि एक हिन्फ्दू संन्यासी थे। वि अपने नाम के आगे पुिी िब्द लगाते थे। दिनामी संन्याहसयों ंका एक समुदाय भी अपने नाम के आगे पुिी िब्द लगाता िै। स्वपक्षीय हसद्ध किने के हलए मुसलमानों ंने उन्हें िम्स तबिे़ नाम से अहभहित कि हदया था। तत्कालीन बादिाि के हलए वि एक अवांहछत तत्त्व थे। इसका किाण यि था हक वि **'अनल हक'** का िप हकया किते थे।

एक हदन िब िम्स तबिे़ बहुत भूखे थे, हकसी ने उन्हें कच्चे मांस का एक टुक़िा दे हदया। मांस के इस टुक़िे को भूनने के हलए उन्होंने प़िोहसयों ंसे आग माँगी : हकनु्तु बादिाि के दण्ड के भय के किाण हकसी ने उन्हें आग निीं ंदी। तब िम्स तबिेि ने गोस्त के उस टुक़िे का रुख सूयथ की ओि कि आदेि हदया िीघ्र िी भून दो।" सूयथ ने तत्काल नीचे आ कि उस मांस-हपण्ड को भून हदया- "िे सूयथ, मैं बहुत भूखा िँ। तुम िलती पि उति कि मांस के इस टुक़िे हदया हिसे िम्स तबिेि ने सानन्द उदिस्थ कि हलया। सूयथ की गमी झुलसाने वाली हकिणों ंके किाण मुलतान-वाहसयों ंके साथ-साथ विाँ का बादिाि भी ताप-ग्रस्त िो गया। भयभीत बादिाि ने उनके समक्ष अवनत ििि िो कि किा- "िे स्वामी, मुझे क्षमा कीहिए औि सूयथ को अपने पूवथ-स्थान को िाने को कहिए। यहद ऐसा निीं ंहुआ, तो िम लोगों ंका िीघ्र िी प्राणान्त िो िायेगा।" िम्स तबिेि ने तब सूयथ को आदेि हदया- "तुम अपने आहद स्थान को लौट िाओ।" सूयथ ने उनके आदेि का पालन हकया।

ज्ञानी स्वयं िी ईश्वि िोता िै औि अपने सतं्संकल्प से सब-कुछ कि सकता िै। िनिीन िोने पि भी वि िािाओं ंका िािा िै। सम्राटों ंके सम्राट् संन्यासी के समक्ष एक तुच्छ बादिाि सवथा नगण्य िै।

बादिाि के आदेिानुसाि िब िम्स तबिे़ की त्वचा को उनके ििीि से हवलग हकया िा ििा था, तब भी वि िँसे िा ििे थे।

बुले्िाि

बुले्ि्लैा एक सूफी सन्त थे। उनकी गणना पंाबि के मिान् सन्तों ंमें की िाती िै। वि सूफी सन्त हमयााँ मिी के हिर्ष् थे।

सूफी-मत के दिथन तथा वेदान्त में साम्य के दिथन िोते िैं। सूफी-मत में प्ेरेमी तथा 'प्ेरेम-पात्र' के पािस्परिक सम्बन्ध को िेखांहकत हकया िाता िै। सूफी में िमाथन्धता निीं ंिोती। वि वेदान्ती की भााँहत िान्त तथा अनुहिग्न िोता िै। वस्तुतुः वि एक सन्त िोता िै िो प्ेरेम तथा दया से परिपूणथ िोता िै।

बुले्ि्लैा बुखािा के हनकटस्थ नगि बल्ख के बाििदिा थे। उनका हववाि िो चुका था औि वि हवपुल िन-सम्पहत्त के स्वामी थे; हकनु्तु भौहतक सम्प्रास्ट्प्त उन्हें अपनी औि आकहषथत किने में असमथथ थी। ऐहिक पदाथों के सािोन उनके हलए अथथर्हीन्य थे। उनका हृदय हववेक तथा वैिाग्य के भाव से ओत-प्रोत था। उनके िीवन में कृहत्रमता तथा कपट के हलए कोई स्थान निीं ंथा। उनके हवचाि उदात्त तथा भव्य थे। वे ईश्वि-साक्षात्काि, हनिपेक्ष स्वातन्त्र्य, पूणथता तथा िाश्वत आनन्द के आकांक्षी थे।

बुले्ि्लैा को हदव्य आह्वान हुआ औि उनके हृदय में आध्यास्ट्त्मकता की अहग्न प्रज्वहलत िो उठी। ऐहिक िीवन की अथथिीनता से वि परिहचत िो गये। उन्हें इस सत्य का सम्यक् बोि िो गया हक यिााँ िो कुछ भी िै, अहनत्य तथा क्षणभंगि िै। उनमें सत्संग तथा सािू-सन्तों ंके सािचयथ की इच्छा िाग्रत िो उठी औि वैिाग्य की दीस्ट्प्त से उनका हृदय आलोहकत िो गया।

एक हदन बुले्ि्लैा ने सन्त हमयााँ मिी की मिानता की गौिव-गाथा सुनी। वि उसी समय अपने स्थान पि अपने पत्र को बल्ख का बाििदिा हनयुक्त कि सैकिों ंपरिचािकों ंतथा एक िििी के साथ सन्त की कुहटया की औि चल पडे। यि कुहटया लाििौि से तीन मील पूिब में थी। सन्त की कुहटया में प्रवेि किते िी उनके ईश्वि-प्ेरेम में वृस्ट्द्ध िोने लगी तथा प्ेरेम औि भस्ट्क्त से उनका हृदय ओत-प्रोत िो उठा। उनको सन्त के दिथन की इच्छा हुई। इसके हलए उन्होंनें विााँ के लोगों ंसे प्राथथना भी की; लेहकन उनकी प्राथथना अस्वीकाि कि दी गयी।

बुले्ि्लैा ने सन्त के चिण-कमलों ंपि आत्म-समपथण किने का हनश्चय कि हलया। उन्होंनें अपने परिचािकों ंतथा िििी से बल्ख लौट िाने को किा। इसके पश्चात् अपने साथ लायी हुई समस्त सम्पहत्त को हवतरित कि वि सूफी फकीि को गये। उस हिमर्िीतल हििहि ऋतु में भी उनके पास मात्र एक कम्बल िि गया।

इस प्रकाि िािोहचत गरिमा तथा वैभव के स्वामी बुले्ि्लैा हनिथनता का विण कि एक अहकंचन हभकु्षुक िो गये। अब उन्होंनें सन्त के दिथन के हलए अनुनय-हवनय की। हमयााँ मिी ने उनके पास यि सने्दि भेिा हक अभी इसके हलए उहचत अवसि निीं ंआया िै। उन्होंनें बुले्ि्लैा को िावी नदी के तट पि ििने वाले एक फकीि के पास िा कि बािि वषों तक कठोि आत्म-संयम औि आत्मानुिासन का िीवन व्यतीत किने का आदेि हदया। इसके पश्चात् िी वि हमयााँ मिी के दिथन कि सकते थे।

आदेि का पालन किते हुए बुले्ि्लैा िावी नदी के तट पि ििने वाले फकीि के पास िा पहुाँचे। विााँ उन्होंनें बािि वषथ तक सास्ट्त्त्वक भोिन ग्रिणण किते हुए योग का कठोि अभ्यास हकया।

बुले्ि्लैा ने आत्मर्िोन कि अपने कालुर्ष्य का हनिाकिण कि हदया हिसके परिणाम स्वरूप उनका हृदय हदव्य गुणों ंसे पूरित िो गया। अब हनिपेक्ष सत्य की सम्प्रास्ट्प्त के हलए उनका मन एकाग्र, प्रखि तथा सूक्ष्म िो गया। फकीि ने उनसे किा- "बुले्ि्लैा, अब तुम परिपक्व िो गये िो। हमयााँ मिी के दिथन के हलए अब तुम यिााँ से िीघ्र प्रस्थान किो। वि सिषथ दिथन दे कि तुम्हें औि अहिक आध्यास्ट्त्मक हनदेि देंगे। देि न कि विााँ के हलए िीघ्राहतिीघ्र प्रस्थान किो।"

बुले्ाााि ने तत्काल हमयााँ मिी की कुहटया के हलए प्रस्थान हकया। हमयााँ मिी ने से्नि तथा पे्रम के साथ उनका स्वागत हकया। इसके पिात् उन्होंनें बुले्ाााि को हनिपेक्ष सत्य के ि िस्यों ामें दीहक्षत कि उन्हें आिीवाथद हदया। उन्हें बुले्ाााि के रूप में एक ऐसा उपयोगी माध्यम प्राप्त िो गया िो मानव के उच्चति कल्याण के हलए प्रयुक्त उनके अहभयान को गहत प्रदान किने में समथथ था।

एक बाि मौलहवयों ाने उनसे पूछा हक वि कौन िै? बुले्ाााि ने 'अनल िक' अथाथत् "मैं 'वि' हाँ" कि हदया। मौलवी उनको हगिफ्ताि कि तत्क्षण नवाब के पास ले गये हिससे उन्हें दस्ट्ण्डत हकया िा सके। नवाब ने उन्हें सन्त समझ कि मुक्त कि हदया।

एक अन्य अवसि पि बुले्ाााि ने स्वयं को सम्राट् घोहषत कि हदया। इससे मौलवी अत्यन्त रुष्ट िो गये। वे उन्हें नवाब के पास ले गये। बुले्ाााि ने नवाब को समझाते हुए किा हक उनका साम्राज्य अिाि के अन्तगथत िै िो असीम, अन्तिीन तथा हनत्य िै। नवाब सन्त की आध्यास्ट्कि मिानता तथा दीस्ट्प्त के प्रहत पूणथतः आश्वस्त िो गया। उसने घोहषत कि हदया हक कोई भी व्यस्ट्क्त इस सन्त की चचाथ में नतो हकसी प्रकाि का कोई िस्तक्षेप किेगा, न इन्हें क्षुब्ध किेगा । यहद कोई व्यस्ट्क्त इसआज्ञा का उल्लंघन किेगा, तो उसे कठोि दण्ड हदया िायेगा ।

बुले्ाााि की कहवताओं ामें अिैत के साि-तत्व हनहित िैं ।

ईसाई िि्स्यवादी
सन्त आगराइन

गीता (११-३०, ३१) में भगवान् कृष्ण किते िैं- "यहद कोई घोि दुिाचािी भी अनन्य भाव से मेिी पूिा किता िै, तो उसे मिात्मा िी समझना चाहिए; क्योंहंक उसका हनिय उहचत एवं उपयुक्त िै। वि िीघ्र िी धमाथत्मा िो िाता िै औि उसे हचिस्थायी िास्न्त प्राप्त िो िाती िै। िे कुन्ती-पुत्र अिुथन, इस बात को तुम हनहित रूप से समझ लो हक मेिा भक्त कभी नष्ट निीं ंिोता।"

सन्त आगराइन के हवषय में भी भगवान् का यि कथन सत्य िै। अपने समस्त पापों ंके हलए पिात्ताप किते हुए उसने हनष्कलुष िीवन-यापन का दृढ़ हनिय कि हलया औि वि भी एक मिान् तथा प्रख्यात सन्त िो गया।

औिहलयस आगराइन एक िोमन अफ्रीकन था। उसका िन्म १३ नवम्बि ३५४ ई. में अफ्रीका में िोमन प्रदेि की िािधानी काथेि के हनकटस्थ थगारे (Thagaste) नामक एक छोटे गााँव में हुआ था। उसका हपता पैहटिहसयस (Patricius) एक हनिथन व्यस्क्त था; हकन्तु हनिथन हपता का पुत्र िोते हुए भी वि काथेि हवश्वहवद्यालय की पिीक्षाओं ंमें हविेष योग्यता के साथ उत्तीणथ िोता ििा। उसकी प्रौढ़ावस्था के प्रािम्भ में िी उसके हपता का देिान्त िो गया।

आगराइन वक्तृत्व-कला का हिक्षक िो गया। इस क्षेत्र में उसने प्रचुि ख्याहत तथा हवपुल सम्पहत्त अहिथत की। सन् ३८३ ई. में अफ्रीका छोड़ कि वि हमलान हवश्वहवद्यालय में छन्दिास्त् का प्राचायथ िो गया। पादिी एम्ब्रोसे से उसका परिचय यिीं ंहुआ।

आगराइन ने अपनी युवावस्था में स्वेच्छाचािी िीवन व्यतीत हकया। वि अपनी प्रिंसा का अहभलाषी था औि भौहतक पदाथथ उसके हप्रय हवषय थे: हकन्तु इसके पिात् उसने आकांक्षाओं ंतथा असंयम का परित्याग कि ईसा के चिणों ंपि आत्म-समपथण कि हदया। तत्पिात् अफ्रीका लौट कि उसने अपना सािा िन हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया। उसने एक आश्रम की स्थापना की ििााँ वि अपना समय प्राथथना. ध्यान तथा अध्ययन में व्यतीत किने लगा। वि एक मिान् भक्त िो गया।

आगराइन पिले पुिोहित (Priest) औि तत्पिात् ३९५ ई. में धमाथध्यक्ष (Bishop) िो गया। उसके िीवन का िेषांि अफ्रीका के एक छोटे नगि हिप्पो में व्यतीत हुआ। ४३० ई. में िब बबथि तथा कलाकृहत-हवध्वंसक आक्रान्ताओं ंने हिप्पो पि घेिा डाला, तब वि नगि में िी था। उसने अपने लोगों ंका परित्याग कि पलायन किना स्वीकाि निीं ंहकया। घेिे के तृतीय मास में वि िोग-ग्रस्त िो गया। उसने अपने हमत्रों ंसे अपने ियन कक्ष की दीवाि पि सुस्पष्ट अक्षिों ंमें बाइहबल के पिात्ताप-सम्बन्धी स्तोत्रों ं(Penitential Psalms) को अंहकत किने को किा हिससे वि उन्हें अपनी िय्या से िी पढ़ सके। नगि पि उन बबथि आक्रान्ताओं ंके अहधकाि के कुछ िी हदनों ंपूवथ उसका देिान्त िो गया।

आगराइन असंख्य लोगों ंका प्रेम-पात्र था। वि अपने हमत्रों ंसे सवथा हघिा ििता था। बाल्यावस्था में उसमें सन्त के लक्षण निीं ंथे। वि खेल-कूद का िहसया था। वि गम्भीितापूवथक भगवान से प्राथथना हकया किता था हक उसे हवद्यालय में प्रताहड़त न िोना पड़े; हकन्तु उसकी प्राथथना स्वीकृत निीं ंिोती थी। अतः वि प्राथथना की उपयोहगता के प्रहत िंकालु िो उठा। उसकी सन्त-स्वभाव माता मोहनका ने उसके हृदय में ईश्वि के प्रहत श्रद्धा तथा ईसा के नाम के प्रहत प्रेम िाग्रत किने का प्रयत्न हकयाः हकन्तु आगराइन आध्यास्त्मक हवषयों ंपि कम िी ध्यान देता था।

हवश्वहवद्यालय में उसकी गणना सवाथहिक मेिावी तथा योग्यतम छात्रों ंमें की िाती थी। वि हवहि के प्रहत आेवन आस्थावान् थिा। उसकी बुस्ट्द्ध हकसी भी हवषय के अथथ ग्रिण में कुिाग्र, अेषक तथा हवश्लेषक थी।

आगराइन स्वयं को मुख्यतः यौन सम्बन्धी पापों ंके दो प्रलोभनों ंके हलए अहभिंहसत किता था। अठािा वषथ की आयु में वि एक पुत्र का हपता बन गया था। एहियोटस की माँ से उसका सम्बन्ध था; हकन्तुु उसके प्रहत उसकी आसस्ट्क्त की अवहि अत्यल्प िी थिी। उसका हृदय-परिवतथन िो गया आै वि सत्य की प्रास्ट्प्त के हलए लालाहयत िो उठा। उसने प्राचायथ के पद का परित्याग कि हदया। उसने दाथहनक ग्रन्ों ंकी िचना की। वि हनःसृपृि तथा सवथसंकल्पत्यागी िो गया। सन्त पाल की िचनाएँ उसके हलए आनन्दप्रद थीं।ं वि एकान्तहप्रय था। उसने थगारे के हनकट एक आश्रम की स्थापना की िो मठ-चयाथ की आगराइन थािा अनुमोहदत प्रणाली का एक प्रहतमान था। उस आश्रम में थिने वालों ंको हकसी व्रत-हविेष का पालन निीं ंकिना पड़ता था।

आगराइन एक सिल-थिस हमतािाी व्यस्ट्क्त था। वि इस सत्य से परिहचत िो चुका था हक सम्पहत्त ईश्वि-साक्षात्कि के मागथ में एक प्रबल अविो िै। अतः वि अपनी समग्र सम्पहत्त का परित्याग कि हनष्कपटता तथा आे-संयम के मागथ का अनुसिण किने लगा।

आगराइन ने बाइहबल के अनेक खण्डों ंपि भाषर् हलखे। 'द हटिहनटी' तथा 'द हसटी आफ गाि'- उसकी ये दो कृहतयाँ िचनाक िमथ-हवज्ञान की मिान् कृहतयाँ िैं। हिप्पो का िमाथध्यक्ष िोने के दो-एक वषथ बाद उसने 'कनफेिन्स' नामक ग्रन् हलखा। यि िोमांचक ग्रन् उसकी आकथा िै। 'हटिहनटी' उसके तीस वषों के श्रम का परिणाम िै। इसकी गणना ईसाई–िमथ-हसद्धान्त के श्रेष्ठ ग्रन्ों ंमें की िाती िै। 'हसहवटस िेट' उसकी मिानतम कृहत िै िो िमािे समक्ष उसके आन्तरिक आध्यास्ट्कि िीवन की िास्ट्न्त तथा आनन्द की झाँकी प्रसुतुत किती िै। उसको 'द हसटी आफ गाथ' हलखने में थेिि वषथ लगे। उसके ग्रन्ों,ं उसके पत्रों ंतथा उसके िमोपदेिों ंके माध्यम से उसके प्रभहवषुणु आै उदात्त हवचािों ंका प्रचाि-प्रसाि समस्त िोमन साम्राज्य में िो गया। वसुतुतः ईसाइयत इनसे आि तक प्रभाहवत िोती आ िेिी िै।

आगराइन बत्तीस वषथ की आयु में ईसाई िमथ में दीहक्षत हुआ। उसका िमाथन्तिण उसके हलए एक नया िन्म था। इसने उसके िीवन की समस्त योिनाओं ंको एक नयी हदिा प्रदान कि उसकी वैयस्ट्क्तकता के केि को स्थानान्तरित कि हदया। उसने 'कनफेिन' नामक अपना ग्रन् ईसाई िमथ में दीहक्षत िोने के दि वषथ बाद हलखा। उसकी प्राथथनाएँ िो उसके भावोद्गाि िैं, स्वयं ईश्वि को सम्बोहित की गयी िैं। ये एक अनुतापी हनष्कपट हृदय के पिात्ताप, आेयथ, हवस्मय, श्रद्धा, कृतज्ञता, िषथ तथा प्रेम की दीघथ पुकाि िैं।

आगराइन अपने पापों ंको हकस प्रकाि स्वीकाि किता िै, इस पि ध्यान दीहिए- "मैं तुम्हािी करुणा के प्रेम आै तुम्हािे लावण्य के मािुयथ में िी िाग्रत िोता हाँ हिससे हनबथल बलवान् िो उठता िै। मेिे िुभ कमों के मूलािाि तुम्हीं ं िो। मैं अपने पापों ंको आि-हमहश्रत एक गुप्त वेदना के साथ एक गोपनीय उल्लास से उतुफ़ुल्ल िो कि केवल तुम्हािे समक्ष निीं ंस्वीकाि किता हाँ। मैं इसे उन आस्ट्स्तकों,ं अपने िषथ के भागीदािों,ं नश्विता के अपने सिभाहगयों,ं अपने हमत्र नागरिकों ंतथा अपने उन सिचािी तीथथयाहत्रयों ंके सुख भी स्वीकाि किता हाँ िो पिले िा चुके िैं या िो मेिे सिचि के रूप में इस यात्रा का प्रािम्भ किने वाले िैं।"

आगराइन इसका प्रािम्भ इस प्रकाि किता िै "िे प्रभु, तुम मिान् िो। तुम पिम पूिनीय िो; तुम्हािी िस्ट्क्त मिान् आै तुम्हािी प्रज्ञा असीम िै।"

आै, इसका अन्त इस प्रकाि िोता िै- "अब िब सब-कुछ हकया िा चुका िै, मुझे आिा िै हक तुम्हािे पहवत्र नगि में मैं हवश्राम करूँगा। तुम हचि िान्त िो। िमें तुमसे कुछ प्रश्न किने िैं, तुमसे कुछ प्राप्त किना िै आै तुम्हािा िा

पि दस्तक देनी िै। इस प्रकाि में विााँ कुछ उपलब्ध िोगा जिसे मिो हलए तुम्हािे िा उन्मुक्त िो िायेंगे। आमीन
!"

आगराइन स्वयं को अहभिंहसत किते हुए किता िै िे प्रभु, मैने तथाकहथत उदािपन्ी कला से सम्बस्ट्न्धत ग्रन् हलखे। मैं घृहणत अनस्ट्क्त का अिम दास िूँ। मैंने स्वि–हचत इन ग्रन्ों ंको स्वयं पढ़ा तथा समझा िै; हकन्त इन सबसे
मुझे उपलब्ध िी क्या हुआ? तुम्हािो हदव्य प्रकाि के सिुख मो िििी का पृष्ठभाग िी िा िि मैं तुमसे हवलग िो कि वेश्याओं ंके यिााँ अपनी िस्ट्क्त तथा सम्पहत्त का अपव्यय किता िा। िे प्रभु, मिी उन पुष्कल क्षमताओं ंसे मुझे क्या उपलब्ध हुआ जिसका कभी कोई सदुपयोग िीं ि कि सकूँ?"
हकसी व्यस्ट्त्ु की ि िम स्ट्थहत में ि ि उसमें यथाथथ विाग्य तथा हववेक के भाव िाग्रत िोते िैं।

यिााँ आगराइन के आन्तरिक आध्यास्ट्कि अनुभवों ंके कुछ हववण प्रसुतुत हकये िा ििे िैं िो उसकी देवत्व-प्रास्ट्प्त तथा भगवद्-दिथन के िीवन्त साक्षी िैं। वि किता िै-

"िे प्रभु, तुमने िमिी सृहष्ट स्वयं अपने हलए की िै िि िब तक तुममें िमिा पयथवसान निीं ंिो िाता, तब तक िमिा हृदय िान्त तथा ििा िी ििेगा।

"मिी ििा का भवन संकीणथ िै। िे प्रभु, मिे गुप्त दोषों ंका मािथन किो। गुप्त रूप से िी सिी, मिे कणधाि तो तुम्हीं ंिो। स्वयं को तुमसे हवलग किने के पित् िब मैं तुम्हािो मागथ का परित्याग कि गिवोत-िहि स्व-चयहनत मागथ का अनुसिण कि िा था, तब भी मुझ पि तुम्हािी कृपा-दृहष्ट बनी िी। तुमने मिा पथ-प्रदिथन हकया, तुमने कभी मिा परित्याग निीं ंहकया िि तुमने मिे प्रहत सुखद िायथप्रद व्यविाि हकया। िे प्रभु, अपने कोमलतम तथा कृपालु िाथों ंसे मिे हृदय का िास्ट्न्त-प्रदायक स्पिथ किते हुए तुमने मुझे समुहचत हवहि से हनदेहित हकया।

"मैं ईश्विीय झााँकी के अवणथनीय मािुयथ का िसास्वादन किता िूँ। ईश्वि के समीपति िोना मिे हलए िुभ िै। मैं उस पावन पिी के िािवाथद के सुफल का उपभोग कि िा िै िो हनष्कलुष देवदतों ंके ऊपि स्ट्स्थत िै।

"ईश्वि प्रकाि तथा हदव्य आनन्द िै। िो िुभ िै, उससे वि प्रेम किता िै। उसके िाश्वतत्व तथा यथाथथ िीवन में कोई भेद निीं ंिै। ईश्वि के सत्य में िाश्वत प्रकाि तथा उसकी उत्तमता में हनत्य आनन्द हवद्यमान िै। िब ििा अपने-आपको ईश्वि को समहपथत कि देती िै, तब स्वयं यज्ञ बन िाती िै हिससे वि भौहतक आकांक्षाओं ंका परित्याग तथा स्वयं को हनत्य प्रेम में रूपान्तरित कि उसकी प्रेमाहग्न से प्रदीप्त िो सके िि उसके हदव्य सौन्दयथ को प्राप्त कि उसकी प्रेम-पात्र बन सके।"

उस सन्त आगराइन की महिमा में वृस्ट्द्ध िो िो गीता के श्रीकृष्ण के उन उपदेिों ंके उदािण के रूप में िमािो सिुख िि भी हवद्यमान िै हिनमें किा गया िै- "यहद तुम सभी पाहपयों ंमें भी घोितम पापी िो, तो भी तुम ज्ञान की नौका से इन सभी पापों ंका सन्तिण कि लोगे। यहद घोि पापी भी अनन्य भाव से मिी पूिा किता िै तो वि िाश्वत िास्ट्न्त को प्राप्त िो िाता िै।" सन्त आगराइन दुःखी तथा हनिाि लोगों ंके हृदय में ििा का संचाि कि उन्हें आध्यास्ट्कता के मागथ पि अग्रसिण की प्रेिणा प्रदान किता िै।

उत्तम आध्यास्ट्कि संस्कािों ंके साथ िन्म ग्रिण किने वाले हकसी व्यस्ट्क्त को यहद ईश्वि-साक्षात्काि िो िाता िै, तो इसमें िायथ की कोई बात निीं ंिै; हकनुतु यहद आगराइन, अरुणहगरि, िल्नाकि, िगाई, मिाई तथा वेमाि–से व्यस्ट्क्तयों ंको भी ईश्वि-साक्षात्काि की उपलस्ट्ब्ध िो िाती िै. तो इससे हवस्ट्स्मत िोना िी पिता िै। इन पिवती लोगों ं के हलए इस मागथ का अनुसिण अत्यन्त संघषथमय तथा दुष्कि िोता िै।

असीसी का सन्त फ्रास्ट्न्सस

सन्त फ्रास्ट्न्सस को असीसी का नगण्य हनिथन व्यस्ट्क्त किा ि ाता ै। उसका ि न्म इटली के असीसी नगि मे ११८२ ई. में हुआ था। उसके हपता का नाम बेनाथिोन (Bernardone) था ि ो असीसी का एक अत्यन्त समृद्ध व्यापिाी था। उसकी माता का नाम पैका (Pica) था। फ्रास्ट्न्सस एक सुदिथन बालक था। कोमल हृदय तथा प्रसि-हचत्त ि ोने के किाण उसके अनेक हमत्र थे। सम्भ्रान्त तथा कुलीन व्यस्ट्क्तयों ंके सभी पुत्र उसके सिचि थे।

फ्रास्ट्न्सस का पालन-पोषण आमोद-प्रमोद तथा हवलाहसता में हुआ। अमयाथहदत सुखोपभोग में उसने अपनी सम्पहत्त के अहिकांिका अपव्यय कि हदया। वि स्थानीय ि ि ाकुमिाों ंके साथ मद्यपान हकया किता था।

एक हदन फ्रास्ट्न्सस अपने हमत्रों ंके साथ आमोद-प्रमोद में संलग्न था। तभी विाँ एक हभकुषुक हभक्षा के हलए आ पहुँचा। कोमल हृदय फ्रास्ट्न्सस की ि ेब में ि ो कुछ भी था, उसे उसने उस हभकुषुक को दे ि ाला। उसके सिचि उसकी इस दानीलता का उपिास किने लगे। इस पि उसके मन में अनासस्ट्क्त का उदय ि ोने लगा। उस हभकुषुक को देख कि वि सांसारिक ि ीवन की हनिथनता तथा इसके दु:ख-दैन्य पि सोचने को हववि ि ो उठा। अब वि हनिथनों ंको अत्यहिक ि न देने लगा। उसके हपता ने यि सोच कि हक वि ि न का अपव्यय कि ि ि ा ि ै, उसकी भत्सथना की।

कुछ हदनों ंके पित् फ्रास्ट्न्सस हकसी गम्भीि ि ोग से पीहड़त ि ो कि मिीनों ंतक ि ोगि–य्या पि पड़ा ि ि ा। मृत्यु उसके हनकट आ चुकी थी; हकन्तु ईश्वि ने उसकी प्राणि–क्षा कि दी, क्योंहक उसे एक हवहिष्ट अहभयान का हनष्पादन किना था। अब फ्रास्ट्न्सस की प्रकृहत में आमूल परिवतथन ि ो गया। वि प्रकिा तथा मागथ-दिथन के हलए ईश्वि से प्राथथना किने लगा हिससे उसका भहवर्ष् हनष्कलुष बना ि ि े। उसे भगवान् ईसा की झलक हदखायी पड़ी औि उसने अपनी पुिानी ि ीवन-पद्धहत का परित्याग किके अपने ि ीवन को मानवता की सेवा में अहपथत किने तथा सिल-सिि ीवन व्यतीत किने का दृढ़ हनिय कि हलया।

स्वस्थ ि ोते ि ी फ्रास्ट्न्सस ने अपने इस दृढ़ हनिय की सूचना अपने माता-हपता को दे दी। उनको पुत्र के इस हनिय से हनिािा ि ुई औि वे उससे कुरुद्ध ि ो गये। फ्रास्ट्न्सस अपने पुिाने स्वभाव का परित्याग कि ईश्वि की सेवा में तत्पि ि ो गया। उसने अपने ि न-वस्त्ाहद सिो सामान हनिथनों ंमें हवतरित कि हदये। फ्रास्ट्न्सस के प्रहत उसके हपता का आक्रोि उग्रति हुआ औि उसने उससे पूछा- "मेि प्रहत तुम्हािी यिी कृतज्ञता ि ै? मैंने घिो परिश्रम से प्रचुि ि न अहिथत हकया हिसे तुम इन तुच्छ तथा नगण्य लोगों ंपि लुटा ि ि े ि ो।"

फ्रास्ट्न्सस के हमत्रों ंने उसका उपिास हकया औि उसके हपता ने उसे घि से हनकाल बािि हकया। फ्रास्ट्न्सस को एक हभकुषुक का ि ीवन व्यतीत किने के हलए हववि ि ोना पड़ा। उसके पुिाने हमत्रों ंने उस पि कीचड़ तथा पत्थि फेंके; हकन्तु वि ि ैयथपूवथक सब-कुछ सिन किता ि ि ा। वि मोटा वस्त् ि ाि ण किने लगा तथा उसका भोिन सािािण ि ो गया।

फ्रास्ट्न्सस असीसी की एक पवथतीय गुफा में दो वर्षों तक प्राथथना तथा ध्यान में तल्लीन ि ि ा। कभी-कभी कुछ दयालु लोग उसे भोिन दे देते थे; हकन्तु उसे अहिकति हनिािा ि ी ि ाथ लगना पड़ता था।

फ्रास्ट्न्सस िािीि को 'गदथभ भाई' कि किता था। वि अपने इस 'गदथभभाई' को पूणथ अनुिासन तथा हनयन्त्रण में िखता था। कभी-कभी वि इसे अि–ल से भी वंहचत कि देता था। अतीत में ि ो इसका हप्रय तथा हवहिष्ट भोिन था, वि अब इसके हलए दुष्प्राप्य ि ो गया।

फ्रास्ट्न्सस हवनम्र था। उसे ईश्वि-हनहमथत सभी प्राहणयों ंसे प्रेम था। वि पिु-पहक्षयों ंसे प्रेम किता था। वि पद-दहलत तथा िाहत-बहिषृकृत लोगों ंको प्याि किता था। वि पिु-पहक्षयों ंतथा सभी प्राहणयों ंको भाई-बिन समझता था।

फ्रास्ट्न्सस ने गााँव-गााँव िा कि ईश्वि प्रेम का उपदेि हदया। उसने अपने सेवा-व्रत में सस्ट्हिलत िोने के हलए इच्छुक लोगों ंको आमस्ट्न्त्रत हकया। असीसी का बनाथिथ नामक एक समृद्ध व्यस्ट्क्त उसके सिु-स्वभाव के प्रहत अत्यहिक आकहषथत हुआ। वि फ्रास्ट्न्सस का प्रथम अन्यायी था। उसने ईश्वि की वेदी पि अपनी सािी सम्पदा अहपथत कि दी। िग्यिा अन्य लोग भी फ्रास्ट्न्सस के साथ िो गये। उन्होंनें अपना सािा िन हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया। फ्रास्ट्न्सस तथा उसके अनुयायी लोगों ंको अपने उपदेि, हिक्षण तथा आिीवाथद से लाभास्ट्वित किते हुए समस्त इटली का भ्रमण किते थे। वे लोग रुग्ण व्यस्ट्क्तयों ंकी परिचयाथ भी किते थे।

फ्रास्ट्न्सस की दयालुता तथा उसके प्रेम की गाथा का प्रचाि समस्त यिूोप में िो गया आिै अब उसे सन्त फ्रास्ट्न्सस के नाम से अहभहित हकया िाने लगा। लोग उसे असीसी का नगण्य हनिथन व्यस्ट्क्त किते थे। वि लोगों ंके हृदय में सवथदा के हलए हवद्यमान िो गया।

सन्त फ्रास्ट्न्सस के अनुयाहययों ंकी संख्या में वृस्ट्द्ध िोती गयी। उसने 'आिथि आफ मेस्ट्न्डकेन्ट फ्रायसथ' (Order of Mendicant Friars) अथवा 'फ्रास्ट्न्सस्कन्स' (Franciscans) नामक िमथ-संघ की स्थापना की। इस संघ के सदस्यों ंको हनिथनता तथा प्रेम का व्रत ग्रिण किना पड़ता िै।

सन्त फ्रास्ट्न्सस का देिान्त १२२८ ई. में हुआ। सन्त फ्रास्ट्न्सस के अनुयाहययों ंने असीसी की पिाड़ी पि एक सुन्दि चचथ का हनमाथण हकया। सन्त फ्रास्ट्न्सस को यि पिाड़ी अत्यहिक हप्रय थी। सन्त फ्रास्ट्न्सस का प्रभाव तथा उनके तपोमय िीवन की पावन सुिहभ अनन्त काल तक अक्षुण्ण िििेगी।

वि सन्त फ्रास्ट्न्सस महिमास्ट्वित िो िो असीसी का हनिथन नगण्य व्यस्ट्क्त िोने पि भी एक यिस्वी सन्त था !

सन्त फ्रास्ट्न्सस िेहवयि

सन्त िेहवयि का िन्म स्पेन के एक छोटे िाज्य नवाने में १५०६ ई. में हुआ था। िब उसकी आयु नौ वषथ थी, तब उसके हपता का देिान्त िो गया था। उसके दो अग्रि सैहनक थे। सैहनक िीवन फ्रास्ट्न्सस की रुहच के अनुकूल निीं ं था। वि पेरिस हवश्वहवद्यालय में प्राचायथ िोना चािता था।

१५२५ ई. में उसने पेरिस हवश्वहवद्यालय में प्रवेि हकया ििााँ वि ग्यािि वषों तक ििा। उस क्रीड़ा-प्रेमी सुन्दि व्यस्ट्क्त की मुखाकृहत आकषथक थी। १५३० ई. में उसने कला में उपाहि ग्रिण की। वि चचथ में हकसी पद का अहभलाषी था।

िेहवयि एक भाषाहवद् था। लैहटन, स्पेहनि, फ्रेन्च, पोचुथगीि तथा बास्क्यू -वि इन पााँच भाषाओं ंका ज्ञाता था। वि एक बहुश्रुत दािथहनक तथा मिान् िमथिास्ट्त्री था। उसके व्यस्ट्क्तत्व में भावुकता तथा संवेदनिीलता का आहिक्य था। उसमें कपट तथा स्वाथथ की भावना निीं ंथी। वि हवनम्र तथा स्पष्टवादी था।

इग्नेहियस लायला एक भूतपूवथ हवकलांग सैहनक था। उसका एक पैि तोप के गोले से उड़ गया था आिै अब वि 'चचथ आफ क्राइस्ट' का 'नाइट' (Knight) था। उसने हवश्वहवद्यालय में फ्रास्ट्न्सस िेहवयि से बात की। वि प्रायः किा किता था- "मािे फ्रास्ट्न्सस, यहद आत्मज्ञान-िून्य व्यस्ट्क्त समस्त संसाि का अहिपहत भी िो िाये. तो उसको उपलब्ध िी क्या िोगा ?" िेहवयि को उसके सािचयथ तथा उसके साथ वाताथलाप से आनन्द प्राप्त िोता था; हकन्तु वि सांसारिक

ीविन की मित्त्वाकांक्षाओं ंका परित्याग किना निीं ंचािता था। वि एक युवा तथा सुयोग्य प्राचायथ था। िब अिसूतू पि उसका भाषण िोता था, तब उसे सुनने के हलए लोग बहुत ब्रिी संख्या में एकत्र िो िाते थे। उसका भहवष्र् अत्यन्त उज्ज्वल था। प्रहसस्ट्द्ध तथा प्रहतष्ठा उससे दिू निीं ंथी; हकन्तुतु इगे्नेहियस के ये िब्द, "यहद अिज्ञानि–्ून्य व्यस्ट्क्त समस्त संसाि का अहिपहत भी िो िाये, तो उसको उपलब्ध िी क्या िोगा, उसके कानों ंमें सवथदा गूंिते िते थे।

इमेहियस के िब्दों ंके अथथपूणथ अहभप्राय पि गिन हचन्तन किते ििने के पिात् फ्रास्ट्न्सस िेहवयि ने अपनी सािी मित्त्वाकांक्षाओं,ं पद-प्रहतष्ठा तथा सम्पहत्त का परित्याग कि हदया। हवश्वहवद्यालय के प्राचायथ का पद अब उसके हलए आकषथक निीं ंिि गया। उसने हनिथनता तथा पहवत्रता के मागथ का अनुसिण किते हुए क्राइि के चिणों ंपि अनन्य भाव से आि-समपथण का हनिय कि हलया। उसके अन्ततथम में हववेक-वैिाग्य का उदय हुआ औि िागहतक पदाथथ उसको सिोहित किने में असमथथ िो गये। उसने इगे्नेहियस को पथ-प्रदिथक तथा आध्यास्ट्कि आचायथ के रूप में स्वीकाि कि हलया। वि अपने समय का अहिकांि प्राथथना तथा ध्यान में व्यतीत किने लगा। उसने यरुसलम की तीथथ-यात्रा की।

िेहवयि ने अपना सवथस्व हनिथनों ंमें हवतरित कि हदया। वि िसाण तथा मोटे वस्त् िािण किने लगा। िाथ में दण्ड तथा कन्धे पि एक लबादा ले कि उसने पैदल िी वेहनस के हलए प्रस्थान हकया। मागथ में उसे अनेक हवघ्न-बािाओं ंका सामना किना पिा। उसने फ्रान्स की वषाथ तथा िमथनी की कठोि िीत को सिन हकया। वि तुषाि मस्ट्ण्डत अल्पाइन पवथत से िो कि यात्रा कि िि था।

बि िेहवयि अल्पाइन के बिफानी मागथ से िो कि िा िि था, तब उसके साथ हकसी िािदूत का सहचव भी था। वि अपने घोड़े से हगि कि उस हविाल तुहिनि–ाहि में दब गया िो एक हफसलन-भिी औनुमुखी हिला पि संहचत िो गयी थी। उसके नीचे तीव्र िल-प्रवाि था। सहचव के हमत्रों ंमें उसकी प्राणि–्षा के प्रयास का सािस निीं ंथा; हकन्तुतु िेहवयि ने उसके िीवन को अपना िीवन समझ कि उसके त्राण के हलए अपने प्राणों ंकी बािी लगा दी। हकतना हविाल हृदय था िेहवयि का !

िेहवयि १५३७ ई. में वेहनस पहुँचा। वि यात्रा की कहठनाइयों ंसे श्रान्त िो गया था। उसने वेहनस में अपने सेवा-काय थ को प्रािम्भ कि हदया। उसने हचहकत्सालय में असाध्य िोगों ंसे ग्रस्त कई िोहगयों ंकी परिचयाथ की। उसने लोगों ंको ईसा के प्रेम से अवगत किाया। कािागाि में िा कि उसने बस्ट्न्दयों ंकी सेवा तथा उनके साथ ईश्वि की प्राथथना की। इसके पिात् वि िोम की औि पैदल िी चल पिा। िुि अनवित रूप से मूसलािाि वषाथ िो ििी थी। दिे में इतना पानी भि गया था हक यात्रा में किीं–किीं ंपानी उसके वक्षस्थल तक आ िाता था; हकन्तुतु िेहवयि सवथदा प्रफुल्ल-हचत्त ििा। गाँव-गाँव में िा कि उसने लोगों ंको ईसाइयत की हिक्षा दी। उसने लोगों ंसे हकसी भी वसुतु की याचना निीं ंकी। उसने उनकी भेंट को भी स्वीकाि निीं ंहकया। उसके इन कायों से लोग अत्यहिक प्रभाहवत हुए। वे सोचते थे हक िेहवयि हनःस्वाथथ भाव तथा उदाि हृदय से लोगों ंके लाभ तथा उनकी मुस्ट्क्त के हलए कायथित िै।

िेहवयि िोगग्रस्त िो गया। रुग्णावस्था की इस अवहि में उसे अनेक कहठनाइयों ंका सामना किना पिा। अपने दीघथकालीन कष्ट तथा िोग के कािण वि हनष्प्रभ तथा हवरूप िो गया। उसकी आयु उन हदनों ंकेवल बत्तीस वषथ थी; हकन्तुतु इसी आयु में वि िव की भाँहत श्रीिीन िो गया था।

१५४१ ई. में िेहवयि ने समुि के मागथ से हलस्बन से भाित के हलए प्रस्थान हकया। उस समय उसके पास तीन-चाि िीणथ–िीणथ वस्त् तथा दो पुस्तकें थीं;ं हकन्तुतु उन िीणथ–िीणथ वस्त्ों ंमें भी वि हकसी िािकुमाि की भाँहत सुदिथन तथा भव्य प्रतीत िो िि था औि उसके व्यस्ट्क्तत्व में लोगों ंको आध्यास्ट्किता के दिथन िो ििे थे।

पुतथगाल के सम्राट् िान ने िहवयि के हलए ीिा में प्रथम श्रेणी के हटकट की व्यवस्था कि दी; हकन्तु िहवयि ाक्टि, सेवक, परिचािक, ईसाइयत का हिक्षक तथा िसोइया-इन सभी का काम किने लगा। वि यथासम्भव याहत्रयों ंकी प्रत्येक सेवा के हलए तत्पि िता था। वि ीिा के अपने प्रथम श्रेणी के कक्ष को एक रुग्ण यात्री को दे कि स्वयं िस्ट्स्सयों ंके ढेि पि सोने लगा। वि हनिथन तथा रुग्ण याहत्रयों ंके वस्त्-प्रक्षालन किता था। वि िाज्यपाल के साथ भोिन किने का अहिकािी था; हकन्तु वि सामान्य लोगों ंकी पंस्ट्क्त में बैठ कि भोिन किता था। उसके हलए उत्तम भोिन की व्यवस्था थी: हकन्तु वि उसे िोहगयों ंमें हवतरित कि हदया किता था। वि िोहगयों ंके ीि तथा वस्त्ों ंका प्रक्षालन किता था औि उन्हें अपने िाथ से स्ट्खलाता था। वि अत्यहिक रुग्ण व्यस्ट्क्तयों ंको िषोल्लास तथा
त्वरित िोग-मुस्ट्क्त का आश्वासन प्रदान किता था।

१५४२ ई. में िहवयि भाित के समुि-तट पि उतिा औि गोवा पहुँचा। तब उसकी आयु छत्तीस वषथ थी। यात्रा में सतत कष्ट-सिन तथा बहुिा ज्वि-ग्रस्त िने के कािण उसका ीि दुबथल िो गया था; हकन्तु उसका हृदय आन्तरिक ऊिथ, उत्साि, मानवता की सेवा की प्रबल इच्छा तथा असीम प्रेम का अक्षय स्रोत था।

िहवयि पोताश्रय के हनकट एक अस्पताल में िा। वि गम्भीि रूप से िोग-ग्रस्त व्यस्ट्क्तयों ंकी िोग–य्या के औिभाग के नीचे फिथ पि इसहलए सोता था हक आवश्यकता पिने पि वि उनकी सेवा के हलए तत्काल उपलब्ध ि सके।

यथाथथ सेवा यिी ै औि यिी ै वास्तहवक सुमन हिसे ईश्वि की वेहदका पि अहपथत हकया िा सकता ै। आध्यास्ट्कि मागथ के अनुसिण के नव-दीहक्षत आकांहक्षयों ंको अपने हृदय में िहवयि के ओयथिनक सेवा-भाव को ग्रिण कि कमथयोग के मागथ पि िहवयि के पदहचह्नों ंका अनुगमन किना चाहिए। केवल इसी प्रकाि की सेवा से मानव-हृदय हविुद्ध, मृदुति एवं हदव्य प्रकाि: तथा भगवत्कृपा की प्रास्ट्प्त में समथथ िोता ै।

िहवयि गाँव-गाँव घूम कि कुष्ठिोहगयों,ं बुभुहक्षतों ंतथा बस्ट्न्दयों ंके हलए हभक्षा माँगा किता था। इस प्रकाि उसने प्रचुि िन एकत्र कि हलया हिससे हनस्साय व्यस्ट्क्त स्थायी रूप से लाभास्ट्न्वत हुए।

िहवयि के पुिाने वस्त् अत्यहिक िीणथ–िीणथ िो गये थे। उसको िेमी वस्त् हदये गये; हकन्तु उसने उन्हें निीं ंहलया।

वि बस्ट्न्दयों ंको ईसाइत के िाहमथक अनुष्ठानों ंसे अवगत किाने िेल में िाता था औि हवद्यालय के छात्रों ंको प्राथथना तथा ईसाई-मत के िमहदों ंकी हिक्षा हदया किता था।

एक अवसि पि उसने छतिी का उपयोग हकया। उसकी हवलाहसता की एकमात्र सामग्री यि छतिी िी थी। वि िीणथ–िीणथ चोगा पिन कि नंगे पाँव घूमा किता था। उसने समुि-तट पि पैंताहलस चचों के हनमाथण में योगदान हदया। कभी-कभी वि पेि पि बैठ कि छि ीिा श्रोताओं ंके समक्ष स्थानीय भाषा में भाषण हदया किता था। उसने ईसाई िमथ में अनेक लोगों ंको दीहक्षत हकया।

िहवयि कष्ट-सिन का अभ्यस्त था। वि ग्रीष्म में हकसी ब्रि िनपद की ज्वहलत मरुभूहम पि पैदल िी गमनागमन हकया किता था। उसका िािा अत्यल्प तथा नीिस हुआ किता था। वि हदन में केवल एक बाि चावल-दाल लेता था औि मद्यपान निीं ंकिता था। वि िात में केवल दो-तीन घण्टे सोता था।

िहवयि मलक्का तथा श्रीलंका भी गया। इसके पित् १५४९ ई. में उसने िापान के हलए प्रस्थान हकया। वि िि मन में उत्कट अिा साँिे गया था; हकन्तु पुतथगाहलयों ंकी हनमथमता के कािण उसका यि अहभयान हवफल िा।

उसने सवथप्रथम यार्ििो नामक एक िापानी को िमाथन्तरित हकया; हकन्तु वि बहुत कम िापाहनयों ंका िी मिाथन्तिण कि पाया।

िेंवयि भित लौट आया। उसने चीन में भी ईसाई िमथ का प्रचाि किना चािा: हकन्तु र्ििा में स्थान प्रास्ट्प्त के हलए उसे कहठनाइयों ंका सामना किना पड़ा। वि िोग-ग्रस्त िो गया औि उसे हर्िनिाा तथा हनिाहश्रत िोना पड़ा । सेन्ट ानि द एवान्फ्हिलस के मिोत्सव के हदन उसने बाइहबल के कुछ स्तोत्रों ंका पाठ किते हुए र्ििी-त्याग कि हदया । वि इस िििती पि केवल पैंताहलस वषथ िी िि पाया ।

हसक्ख गुरु
गुरु नानक

हसक्ख िमथ के संस्थापक गुरु नानक का िन्म पंाबि में िावी तट पि स्ट्स्थत तलवन्डी नामक गााँव में िआ था। उनको पंाबि तथा हसन्ध का पैगम्बि किा िाता ि ै। तुप्ता तथा मेिता कालू क्रमिः उनके माता-हपता थे। बाल्यावस्था से ि ी वि मननिील तथा िाहमथक प्रकृहत के थे औि अपना समय ध्यान तथा आध्यास्ट्कि सािना में व्यतीत हकया किते थे।

गुरु नानक के हपता ने अपने पुत्र के मन को हवषयोनुमुख किने का अथक प्रयत्न हकया। उन्होंनें उनको कृहष-कमथ में संलग्न किने का प्रयास हकया; हकन्तु नानक की रुहच इस औि निीं ंथी। वि खेत में ि ा कि भी ध्यान किने लगते थे। बि उनसे उनकी हनस्ट्ष्क्रयता का कािण पूछा गया, तब उन्होंनें किा- "मैं हनस्ट्ष्क्रय निीं ंहाँ। मैं अपने खेत की खिवाली कि ि ा हाँ। मेिा ििीि एक खेत, मन िलवािा, सदाचाि कृहष-कमथ तथा िील इस खेत के अहभहसंचन के हलए प्रयुक्त िल ि ै। मैंने अपने इस खेत में भगवान् के पहवत्र नाम का बीि वपन हकया ि ै।" नानक के हपता को इससे घोि हनिािा हुई। उन्होंनें पुनः एक बाि सांसारिक हवषयों ंकी औि आकृष्ट किने के हलए बहुहवि प्रयत्न हकये; पि उनके िाथ असफलता ि ी लगी।

नानक का हवावि िनपद गुिदासपुि स्ट्स्थत बटाला गााँव के हनवासी मुला की पुत्री सुलक्षणी के साथ हुआ था। उनके दो पुत्र थे। यि सांसारिक सम्बन्ध हकसी भी रूप में उनकी आध्यास्ट्कि खोि में कोई अविोि निीं ंउपस्ट्स्थत कि सका। नानक को सुलतानपुि के नवाब के भण्डाि-गृि का प्रभािी हनयुक्त हकया गया। विााँ उन्होंनें अपने कायथ का हनष्पादन अत्यहिक समुहचत हवहि से हकया। उन्होंनें अपने हलए कुछ िख कि िेषांि को पिोपकाि में हवतरित कि हदया।

नानक ने भण्डाि गृि के प्रभािी के कायथ-भाि से स्वयं को मुक्त का हलया। इसके पिात् हनिथनों ंमें अपनी सािी सम्पहत्त हवतरित कि वि फकीि िो गये। अब वि एकान्त में िि कि कठोि तप तथा गिन ध्यान किने लगे। वि िो ईश्वि-प्रेरित भिन गाया किते थे, उनको हसक्खों ंकी पहवत्र पुस्तक 'आहद ग्रन्' में संकहलत कि हलया गया ि ै िो आि तक सुिहक्षत ि ैं।

चौंतीस वषथ की आयु में नानक एक सावथिहनक उपदेिक िो गये। मदाथना उनका प्रथम हिष्् था। उनके उपदेि लोगों ंके हलए अत्यन्त प्रभावप्रद िोते थे। नानक ने कुछ हदनों ंतक एक परिव्रािक का िीवन भी व्यतीत हकया। बाबि उनसे बहुत प्रभाहवत था औि उन्हें अत्यहिक सिान की दृहष्ट से देखता था। नानक मक्का, मदीना, श्रीलंका, म्यांमाि, तुकी, अिब, बगदाद, काबुल, कन्धाि औि श्याम तक गये। विााँ उन्होंनें सवथत्र अपने िाहमथक हसद्धान्तों ंका प्रचाि हकया। उन्होंनें लोगों ंको सदाचाि, बनुधुत्व तथा पािस्परिक सत्काि का िीवन व्यतीत किने का उपदेि हदया। उन्होंनें हिक्षा दी- "ईश्वि का नाम-स्मिण किते िि ो। उससे प्रेम किो। एक ि ी ईश्वि की भस्ट्क्त किो। अपने हमत्रों ंकी सेवा किो। ईश्वि सवथस्व ि ै। उसकी सदैव प्राथथना किो। उसका तादात्म्य-लाभ किो।" नानक हिन्दू-मुसहलम एकता के हलए प्रयत्निील ि े।

मक्का, िसन अबुदुल तथा अन्य स्थानों ंपि नानक ने अनेक चमत्कािों ंका प्रदिथन हकया। वि एक िसािक थे। उन्होंनें प्राहणमात्र के प्रहत प्रेम तथा िास्ट्न्त का सन्ेदि हदया। वि उदाि तथा सहिष्णु थे। उनमें सैद्धास्ट्न्तक औि िाहतगत भेद की भावना निीं ंथी।

उनके िारा गायी गयी िि स्यवादी कहवताएँ 'िपूी' में संग्रहित िैं। इसमें हसक्खों ंकी प्रातःकालीन प्राथथनाएँ सस्ट्हलत िैं। 'सोहिला' सन्ध्याकालीन प्राथथनाओं ंका संग्रि िै। उसमें नानक ने ईश्वि-साक्षात्कािा के हवहवि मागों ंकी
अौ संकेत हकया िै। उन्होंनें िीवन की अनेक िहटल समस्याओं ंपि भी स्पष्ट प्रकाि डाला िै।
नानक के अनुयाहययों ंके हलए 'वाि गुरु गुरु-मन्त्र िै। 'ग्रन् साहिब' हसक्खों ंका पहवत्र ग्रन् िै। इसमें प्रथम पााँच गुरुओं ंकी वाहणयााँ संकहलत िैं। इसके अहतरिक्त इसमें कबीि आहद हवहभि समकालीन सन्तों ंकी कुछ वाहणयााँ संग्रहित िैं। बाद में दिवें गुरु गोहवन्द हसंि िािा इनमें नौवें गुरु की वाहणयों ंको भी सस्ट्हलत कि हलया गया। गुरु नानक की वाहणयों ंका िचना-भण्डाि बृिद् िै।

िीवन के अस्ट्न्तम काल में नानक किताििुि में बस गये थे। १५३८ ई. में उनित्ति वषथ की आयु में उनका दिेान्त िो गया। गुरु अंगद उनके उत्ताहिकािी हुए।

गुरु अंगद

गुरु अंगद (लाहिना) का िन्म १५०४ ई. में पंिाब के हििोिपुि िनपद में स्ट्स्थत मुक्तसि के हनकटस्थ सिायमत्ता में हुआ था। सिायमत्ता को आिकल सिायनागा किा िाता िै। लाहिना फेरू नामक एक व्यवसायी के पुत्र थे। वि खत्री थे। उन्होंनें खीवी (Khive) नामक एक महिला से हववाि हकया हिससे उनके अमिो नामक एक पुत्री तथा दासू (Dasu) अौ दातू (Datu) नामक दो पुत्र उत्पि हुए।

लाहिना ज्वालामुखी की देवी दुगाथ के भक्त थे। वि देवी के मस्ट्न्दि में हनयहमत रूप से प्रहतवषथ िाते थे। एक हदन उन्होंनें खडूि के िोि नामक एक हसक्ख को गुरु नानक की ये पंस्ट्क्तयााँ गाते हुए सुना- "उस ईश्वि का सतत स्मिण किते िो हिसकी उपासना से तुम्हें आनन्द प्राप्त िोगा। दष्कमथ का सवथा परित्याग कि दो। अपनी दृहष्ट में ििकमी बनो। पासे इस प्रकाि फेंको हिससे ईश्वि के समक्ष तुमे्ह कुछ खोना न पडे। निीं, ं निीं, ं तुम पासे इस प्रकाि फेंको हिससे तुम्हें कुछ लाभ िो सके।" लाहिना के हलए यि गीत ममथस्पिी हसद्ध िुआ। उन्होंनें िोि से उस गीत के िचहयता का नाम पूछा। उनको ज्ञात हुआ हक नानक िोि के गुरु िैं। इसके बाद किताििुि िा कि उन्होंनें गुरु नानक के दिथन हकये। अब उनमें दुगाथ पूिन की इच्छा निीं ंििी। उन्होंनें नानक की सेवा का हनिय कि हलया।

एक अवसि पि लाहिना ने गुरु को खेत में घास के तीन गट्ठिों ंको उठा पाने में असमथथ देखा। गुरु उन गट्ठिों ंको अपनी गायों ंके हलए ले िाना चािते थे िो घि पि थीं।ं घास भीगी तथा कीचड़ से सनी थी। गुरु-पुत्र श्रीचन्द तथा लक्ष्मणदास एवं विााँ उपस्ट्स्थत अन्य हसक्खों ंने भी उन गट्ठिों ंको ले िाने में अपनी अस्वीकृहत व्यक्त कि दी; हकन्तु लाहिना ने उन तीनों ंगट्ठिों ंको अपने हसि पि उठा कि गुरु के घि पहुाँचा हदया। नानक की पत्नी ने इस बात के हलए अपने पहत की भत्सथना की हक उन्होंनें एक आगन्तुक पि कीचड़ लगे गट्ठिों ंको लाद हदया हिससे उसके वस्त्ों ंमें भी कीचड़ लग गया। गुरु ने किा- "यि कीचड़ निीं, ं भगवान् के दिबाि से प्राप्त केसरिया िंग िै हिसे स्वगथ के हलए चयहनत लोगों ंको हदया िाता िै।" ऐसा नानक के मुाँि से ये िब्द हनकले अौ इधि लाहिना के वस्त्ों ंपि लगे कीचड़ का िंग केसरिया िो गया। आस्थावान् हसक्ख इन तीन गट्ठिों ंको आध्यास्ट्त्मकता, सांसारिकता तथा गुरु-गौिव का प्रतीक मानते िैं।

लाहिना अत्यन्त हनष्ठावान् तथा हनष्कपट थे। गुरु नानक के प्रहत उनमें गिन भस्ट्क्त-भाव था। उन्होंनें गुरु के प्रहत अपनी हनष्ठा तथा भस्ट्क्त का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत हकया था। गुरु नानक ने उनको १५३७ ई. में अपना उत्ताहिकािी घोहषत हकया। लाहिना गद्दी पि बैठ गये। गुरु नानक ने उनके समक्ष पााँच पैसे तथा एक नारियल िखा अौ उनके

सिुख अवनत ंहिे ो कि चाि बाि उनकी परिक्रमा की। इसके बाद उन्होंनें घोहषत कि हदया हक अब इसी क्षण से उनकी आिा लाहिना के ंशिीि में प्रहवष्ट िो गयी िै आिौ अब उन दोनों ंमें हकसी को भेद दिथन नंिीं ंकिना चाहिए। उसी अवसि पि लाहिना का नाम अंगी खुद अथाथत अंगद (मिेा अपना ंशिीि) िो गया। इस प्रकाि हसक्खों ं में यि हवश्वास बद्धमूल िो गया हक नानक का आध्यास्ट्कि प्रकाि प्रत्येक उत्ताहिकािी गुरु को उत्ताहिकाि में प्राप्त िोता आया िै।

गुरु अंगद नानक के सवाथहिक हनष्ठावान सेवक थे। उन्होंनें अपने गुरु के अनुदेिों ंका िब्दिः पालन हकया। वि अपने मिान् गुरु के हसद्धान्तों ंके प्रहत सवथदा हनष्ठावान् िि। वि रुक्ष मूंज की िस्सी बट कि अपना िीहवकोपाथन किते थे। वि सवथदा ध्यानस्थ िित थे। वि प्रत्येक मत के लोगों ंको भोिन देते थे। उन्होंनें अपनी भस्ट्क्त-सािना तथा ध्यान के अनुभवों ंको हलहपबद्ध कि हलया था हिन्हें बाद में 'आहद ग्रन्' में सस्ट्हिलत कि हलया गया। उनको िो कायथ-भाि सौंपा गया था, उसका हनष्पादन उन्होंनें पूणथ मनोयोगपूवथक हकया। वि एक अत्यन्त प्रहतभा सम्पन्न व्यस्ट्क्त निीं ंथे; हकनु्त अपने गुरु तथा गुरु-हमत्र बाला से िो-कुछ भी सुनते थे, उसे हलहपबद्ध किते िाते थे। अंगद गुरु-गद्दी पि लगभग तेिि वषों तक िि। १५५३ ई. में खदिू में उनका देिान्त हुआ।

सम्राट् हुमायूूँ को ंशेिशाि ने हिन्फ्दुस्तान से पलायन किने के हलए हववि कि हदया था। हुमायूूँ तलाि में उस हसद्ध पुरुष या हसद्ध सन्त की खोि में आया िो ितुरु ंति हवहित उसके िाज्य की पुनःसम्प्रास्ट्प्त में उसे अपना सियोग प्रदान कि सके। उसने अंगद के हवषय में सुना था। अतः वि उनके दिथन के हलए खदिू पहुूँच गया। वि उनके हलए प्रचुि भेंट ले कि इस आिा से गया था हक मुझे गुरु का अनुग्रि प्राप्त िो िायेगा। उस समय अंगद गिन ध्यान में लीन थे। अतः हुमायूूँ को कुछ देि तक प्रतीक्षा किनी पड़ी हिससे रुष्ट िो कि उसने अपनी तलवाि की मूँठ पि िाथ िखा। वि अंगद का ंशिि काटना चािता था; हकनु्त उसकी तलवाि म्यान से ंबािि निीं ंहनकल पायी। अंगद ने किा- "िब तुमको ंशेिशाि के हवरुद्ध तलवाि उठानी चाहिए थी, तब तुमने तलवाि निीं ंउठायी लेहकन आि िब तुम एक सन्त के समक्ष खडे िो, तब तुम उसे प्रणाम न कि उस पि तलवाि उठा ििे िो।"

इस पि हुमायूूँ ंशान्त िो गया आिौ उनसे क्षमा याचना की। अंगद ने किा- "यहद तुमने अपना िाथ अपनी तलवाि की मूठ पि निीं ंिखा िोता तो तुम्हे तुम्हािा िाज्य हमल गया िोता: लेहकन अब तुम्हे फािस िाना िोगा। विाूँ से लौटने पि तुम्हािा िाज्य तुम्हें पुनः प्राप्त िो िायेगा।"

यि भहवर्ष्वाणी सत्य हसद्ध हुई। हुमायूूँ को भाित से ंबािि हनकाल हदया गया। ंशेिशाि की मृतु्य के पिात् भाित लौट कि उसने अपने िाज्य पि पुनः अहिकाि प्राप्त कि हलया।

माना नामक एक हसक्ख अंगद का िसोइया था। हवलाहसता के काििण वि बहुत सूथूलकाय तथा दम्भी िो गया था। वि अन्य सेवकों ंसे सदा झगड़ता ििता था। वि अकमथण्य तथा आलसी िो गया था। एक हदन उससे रुष्ट िो कि गुरु ने किा- "माना, वन में िा कि तुम स्वयं को अहग्न में भस्म कि दो।" माना ने वन में िा कि लकहड़याूँ एकत्र कीं ं आिौ उसमें आग लगा दी। उसकी ज्वाला िैसे-िैसे ऊपि उठती गयी, वैसे-वैसे माना का अहग्न में कूद कि भस्म िो िाने का हवचाि क्षीणति िोता गया। उस समय एक चोि ने विाूँ आ कि माना से पूछा हक वि यिाूँ क्या कि ििा िै। माना ने उस चोि को अपने हवषय में सब-कुछ बता हदया। उसने उस चोि के समक्ष अपने गुरु की भूरि-भूरि प्रिंसा की हिन्हें वि श्रदे्धय समझता ििा था। चोि माना के इस कथन से अत्यन्त प्रभाहवत हुआ। उसने चुिाये गये स्वणाथभूषणों ंकी गठिी उसे दे दी। माना ने उसको आश्वासन हदया हक इस अहग्न में भस्म िो िाने के पिात् उसे मुस्ट्क्त प्राप्त िो िायेगी। माना की इस बात पि हवश्वास कि चोि अहग्न में कूद गया। िब उसका ंशिीि िल कि भस्म िो गया, तब माना ने ंबािाि में िा कि उन आभूषणों ंको बेचने का प्रयास हकया। विाूँ सन्देि पि उसे हगिफ्ताि कि हलया गया आिौ आभूषणों ंके स्वामी को वे आभूषण लौटा हदये गये। माना को मृतु्य-दण्ड दे हदया गया। माना के

दु:खद अन्त को सुन कि गुरु ने किा- वसुतुतः एक हवकृत-बुस्ट्द्ध व्यस्ट्क्त अपने दोनों ंलोक गाँवा बैठता ि ै। यहद उसके हृदय से मूखथता का हनिाकिण निीं ंि ोता, तो गुरु का सामीप्य भी उसे मुस्ट्क्त प्रदान निीं ंकि सकता।"

एक हदन गोहवन्द नामक एक व्यस्ट्क्त ने अंगद के पास आ कि किा, "आदिणीय गुरुदेव, मैंने प्रहतज्ञा की थी हक यहद मैं यि मुकदमा ि ीत लेता हाँ, तो आपके सिान में आपके नाम पि मैं एक नगि का हनमाथण करूाँगा। मैंने वि मुकदमा ि ीत हलया ि ै अौ इसके साथ ि ी मैंने सम्राट् से नगि-हनमाथण के हलए व्यास नदी के तट पि भूहम भी प्राप्त कि ली ि ै। मैंने इसके हनमाथण कायथ का प्रिाम्भ भी कि हदया ि ै। हचनाई का कायथ व्यवस्ट्स्थत हवहि से चल ि ि ा ि ै; हकनुतु अहनष्टकि दुष्टिाएाँ हदन में बनी हदवालों ंको ि ात में हगिा देती ि ैं। कृपया इन दुष्टिाओं ंको यिााँ से दूि कि इस हनमाथणिीन नगि को अपने नाम का गौिव प्रदान कीहिए।"

अंगद ने किा- "सांसारिक समस्याओं ंसे हचस्ट्न्तत ि ोने की आवश्यकता निीं ंि ै। मनुर्ष् के हलए 'सतनाम' से हप्रयति कोई पदाथथ निीं ंि ै।" उन्होंनें अपने हिर्ष् अमिदास को अपनी छ़िी दे दी। उन्होंनें गुरु की छ़िी से उन दुष्टिाओं ं को विााँ से हनष्काहसत कि नगि की सीमा को ि ेखांहकत कि हदया। अमिदास ने हनमाथता के नाम पि इस नगि का नाम गोहवन्दवाल ि ख हदया। आि भी यि नगि गोहवन्दवाल के नाम से ि ाना ि ाता ि ै।

खदूि का एक तपस्वी अंगद से ईर्ष्ाथ किने लगा। उस साल अकाल प़िा था। गााँव वालों ंने तपस्वी के पास ि ा कि सिायता की याचना की। तपस्वी ने किा हक यि अकाल उन लोगों ंको दण्ड देने के हलए पिा ि ै। ईश्वि उन लोगों ंसे इसहलए रुष्ट ि ै हक वे उसर्े से संन्यासी के स्थान पि अंगदर्े से हववाहित गुरु का आदि-सत्किा किते ि ैं। उसने किा- "यहद तुम लोग उसे नगि से हनष्काहसत कि दोगे, तो चौबीस घण्टों ंके भीति ि ी यिााँ वषाथ ि ोने लगेगी।"

गााँव वाले तपस्वी के इस वचन से उते्तेहित ि ो उठे। उन लोगों ंने अंगद के पास ि ा कि किा- या तो तुम यिााँ पानी बिसाओ या नगि का त्याग किो।"

अंगद ने पानी बिसाना अस्वीकाि कि हदया। इस पि गााँव वालों ंने उन्हें खदा से हनष्काहसत कि हदया। तपस्वी उनके हनष्कासन से ि षथ-हवह्वल ि ो उठा। अब गााँव वालों ंने तपस्वी से पानी बिसाने के हलए किा। वि कुछ हदि तक टाल-मटोल किता ि ि ा। अन्ततः गााँव वालों ंका ि ैयथ ि ाता ि ि ा अौ उन्होंनें उसे मािा-पीटा। इसके पिात् उन्होंनें उसे विााँ से हनष्काहसत कि हदया। उसके इस हनष्कासन में अमिदास का भी कुछ ि ाथ था। इसके पिात् गााँव वाले अंगद को खदूि लौटा ले आये। अंगद ने अमिदास की भत्सथना किते हुए किा- "तुमको अपने अन्तगथत क्षमािीलता हवकहसत कि अौ हकसी के कृत्य पि ध्यान न दे कि उसका हित-सािन किना चाहिए। तुम्हें हवनम्र ि ोना चाहिए; क्योंहंक हवनम्र सदा उत्कषथ को प्राप्त ि ोता ि ै। मोती छोटा ि ोता ि ै; हकनुतु यि हकतना बहुमूल्य ि ोता ि ै! तुम पीपल के छोटे से फल को तो देखो। लघुतम आकाि का ि ोते हुए भी वि हकतना बृिद् ि ो ि ाता ि ै अौ समूपूणथ वन को हकस प्रकाि आच्छाहदत कि लेता ि ै!"

हिस प्रकाि गुरु नानक ने अपने उत्तिाहिकािी के चयन में अपने पुत्रों ंकी अपेक्षा अपने हिर्ष् को विीयता प्रदान की थी, उसी प्रकाि अंगद ने अपने पुत्र के स्थान पि अमृतसि के हनकटस्थ बसिका (Basarka) के एक खत्री अमिदास को अपना उत्तिाहिकािी हनयुक्त कि हदया। ि ब अंगद के ि ीवन का अन्त ि ोने वाला था, तब उन्होंनें अमिदास को स्नान किा कि उन्हें गद्दी पि बैठा हदया। उन्होंनें अमिदास के सिुख तााँबे के पााँच हसक्के तथा एक नारियल ि खा अौ उनके एक अन्य हिर्ष् भाई बुद्धा ने अमिदास के ललाट पि गुरुत्व का हतलक लगा हदया।

अंगद ने गुरु नानक के हवचािों ंपि हचत्त स्ट्स्थि कि १५५२ ई. में इस नश्वि संसाि का परित्याग कि हदया। मृतुयु के समय उनके ओठों ंपि 'वािे गुरु ि ब्द थे। उनके ि ि ि ी का दाि-संस्काि चन्दन की हचता पि हुआ।

गुरु अमिदास

गुरु अमिदास भल्ला कुल के खत्री थे। उनका िन्म अमृतसि के फगनाथ में बसिका नामक स्थान पि १४७९ ई. में आि था।

अमिदास अहत सािाण-कुलोत्पि व्यस्ट्क्त थे। उन्होंनें हकिाये पि एक ि ले हलया था हिस पि सामान लाद कि वि इि से उि ले िाया किते थे। यिी उनके िीहवकोपाथन का साधन था। वि एक सत्संग-हप्रय व्यस्ट्क्त थे। उनको एक मिान् आध्यास्ट्कि गुरु की खोि थी। वि वैष्णव थे। एक हदन उन्होंनें गुरु नानक की कुछ वाहणयों ंका पाठ सुना हिससे वि अत्यन्त प्रभाहवत हुए। बासठ वषथ की आयु में खदिू पहुँच कि उन्होंनें गुरु अंगद को गुरु-रूप में स्वीकाि कि हलया। उन्होंनें अनन्य भाव से गुरु की सेवा की औि उनकी सुख-सुहविा के हलए अपनी सुख-सुहविा की बहल दे दी।

वि प्रत्येक अिथिाहत्र को अपने गुरु के प्रातः-स्नान के हलए खदिू से चाि मील दूि बिने वाली व्यास नदी से िुद्ध-स्वच्छ िल लाया किते थे। ऋतु कैसी भी क्यों ंन िो, आँिी-पानी का प्रकोप हकतना भी क्यों ंन िो, वि हनयहमत रूप से इस कायथ का हनष्पादन हकया किते थे। वि पाकिाला के हलए लकड़ी लाने वन में िाया किते थे। वि ईश्वि के नाम के मानहसक िप में सदैव संलग्न ििते थे। अपने दैहनक कायों के समय भी उनका यि िप चलता िािता था।

गुरु के भण्डािा-गृि से उन्होंनें कभी भी अि ग्रिण निीं ंहकया। गुरु के प्रहत उनकी श्रद्धा इतनी उत्कट थी हक उन्होंनें अपने ििीि के पृष्ठभाग को गुरु तथा गुरु-गृि के सिुख कभी निीं ंिोने हदया। भले िी उनको आगे िाना िो या पीछे लौटना िो, उनका मुख सवथदा गुरु-गृि के सिुख िी ििता था। नदी की अपनी अिथिाहत्र की यात्रा में भी वि अपने गन्तव्य की औि पीठ किके िी चलते थे हिससे गुरु-गृि सदा उनके सिुख ििे। उन्होंनें अपनी सेवाओं ंका कभी किीं ंन्यूनतम उल्लेख भी निीं ंहकया।

एक हदन अमिदास नदी से िल ले कि लौट ििे थे। िात अंिेिी थी औि उसमें घन गिथन, तहित्-पात तथा वषाथ का उत्पात चल ििा था। संयोगवि अमिदास एक िुलािे के घि के अत्यन्त समीप एक खूटी से ठोकि खा कि उसके किघे के गतथ में िा हगिे। हकन्तु वि पानी से भिा हुआ घिा ले कि उस गतथ से बािि हनकल आये। ििो सुन कि िुलािे ने अपनी पत्नी से पूछा- "यि कौन आदमी िै िो आिी िात को इिि-उिि घूम ििा िै?" पत्नी ने उत्ति हदया- "यि विी अभागा तथा गृि-हविीन अमिदास िोगा िो िोटी के एक टुकड़े के हलए गुरु की सेवा हकया किता िै।"

यि समाचाि गुरु अंगद तक पहुँच गया। उन्होंनें किा- "अमरु गृि-हविीन न िो कि गृि-हविीनों ंके हलए गृि, असुिहक्षतों ंके हलए दुगथ तथा हनिाहश्रतों ंके हलए ििण-स्थल िै। वि हनबथलों ंका बल, हमत्रिीनों ंका हमत्र औि समस्त संसाि तथा इसकी आस्था का अवलम्बन िै। िो उसका अनुसिण किेगा, वि ईश्वि का साहिध्य प्राप्त किेगा।"

अमिदास को गुरु अंगद का उत्तिाहिकािी घोहषत कि हदया गया। अवनत-हिि गुरु अंगद ने अमिदास को पाँच पैसे तथा एक नारियल की भेंट दे कि चाि बाि उनकी परिक्रमा की। गुरु अंगद को अपना उत्तिाहिकािी बनाते समय गुरु नानक ने भी ऐसा िी हकया था।

अंगद के देिान्त के पिात् उनके पुत्र दातू ने उनके स्थान का बलपूवथक अहिग्रिण कि लेना चािा। उसने घोहषत हकया- "अमिे वृद्ध िो गया िै। वि मेिा सेवक िै। गुरु के वंि-क्रम के अनुसाि मैं उत्तिाहिकािी हूँ औि गुरु-गद्दी मेिी िै।"

हसक्खों ंने दात को मान्यता प्रदान निीं ंकी। गुरु अमिदास की प्रहसस्ट्द्ध के किाण उसके मन में ईर्ष्याथहग्न प्रज्वहलत ि
उठी। उसने उन पि पदाघात कि उन्हें गोहवन्दवाल की गद्दी से बिाि हनकाल हदया। उसने उनसे किा- "अभी कल तक तुम मेिे घि में पानी भिा किते थे औि आि यिााँ तुम एक गुरु की तिि हविािमान िो।"
गुरु ने हवनम्रतापूवथक किा- "मिािाि, आप मिान् िैं। मुझे क्षमा कीहिए। आपके चिणों ंको हनिय की कष्ट हुआ िोगा।" इतना कि कि वि हवन्दवाल को छोि कि अपने िन्म-स्थान बसिका (Basarka) चले गये।

हसक्खों ंके हृदय में दातू के प्रहत आदि की भावना निीं ंथी। वे उसे हकसी प्रकाि की भेंट भी निीं ंदेते थे। दातू अमिदास की सािी सम्पहत्त ऊाँट पि लाद का खदूि (Khadur) की ओि चल पिा; हकन्तु मागथ में िाकुओं ंने उस पि आक्रमण कि ऊाँट पि लदी सािी सम्पहत्त लूट ली। िब उसने प्रहतिोि हकया, तब िाकुओं ंने उसके उसी पैि पि लाठी मािी हिससे उसने गुरु अमिदास पि आघात हकया था। उसका वि पैि सूि गया औि उसे असिनीय पीिा भोगनी पिी।

अब अमिदास गोहवन्दवाल पहुाँच कि गुरु-गद्दी पि आसीन िो गये। एक उपदेिक तथा हिक्षक के रूप में उन्होंनें हवपुल ख्याहत अहिथत की। उन्होंनें अनेक लोगों ंको हसक्ख-मत में दीहक्षत हकया। उनके प्रवचन को अकबि भी ध्यानपूवथक सुना किता था। अमिदास न्याय-हप्रय, ज्ञानी, हवनम्र तथा िैयथवान् थे। उन्होंनें गुरु नानक के मत का प्रचाि-प्रसाि दूि-दूि तक हकया। उन्होंनें अनेक सुन्दि कहवताओं ं(वाहणयों)ं की िचना की िो सिल-सिस िब्द-योिना तथा हवचािों ंकी हविुद्धता के किाण लोगों ंमें अत्यन्त प्रिंहसत हुई। उन्होंनें नानक के िमथ के प्रचाि-प्रसाि के हलए अपने बाईस योग्यतम हिष्यों ंको देि के हवहभन्न भागों ंमें भेिा।

अमिदास ने नानक के पुत्र श्रीचन्द द्वािा स्थाहपत उदासी-सम्प्रदाय के अकमथण्य लोगों ंको सहक्रय तथा प्रगहतिील हसक्खों ंसे पृथक् कि हदया। उन्होंने एक बिृद सावथिहनक पाकिाला की व्यवस्था की हिसके द्वाि सभी पतों ंतथा िाहतयों ंके हलए मुक्त िेिते थे। इसमें ब्राह्मण, क्षहत्रय, वैश्य तथा िूद्र सभी वगों के लोग हबना हकसी भेद-भाव के एक िी पंस्ट्क्त में बैठ कि साथ-साथ भोिन किते थे। भेंट में प्राप्त समग्र आय का उपयोग एकमात्र पाकिाला के िी हलए िोता था। विााँ यि पूछने का अहिकाि हकसी को न था हक भोिन पकाने वाला कोई ब्राह्मण िै या हनम्नकुलोत्पि हसख। अमिदास के आदेिानुसाि हकसी दिथनाथी को उनके दिथन की अनुमहत तभी दी िाती थी, िब वि लंगि में िा कि भोिन कि ले। कााँगिा-स्ट्स्थत िरिपुि के तत्कालीन िािा को भी लंगि में अन्न-ग्रिण कि लेने के पिात् िी गुरु के दिथन की अनुमहत प्राप्त िो सकी थी।

सम्राट् अकबि ने भी लंगि में भोिन हकया था। उसने पाकिाला के हवहिवत् परिचालन के हलए गुरु के सुिख िागीि में बािि गााँव देने का प्रस्ताव प्रसुतुत हकया; हकन्तु गुरु ने इसे अस्वीकाि किते हुए किा- "ईश्वि स्वयं पाकिाला की व्यवस्था कि ििा िै; अतः इसके हलए हकसी बाह्य सिायता की आवश्यकता निीं ंिै।" तब अकबि ने बािि गााँवों ंकी यि भेंट गुरु की पुत्री बीबी भेनी को भेंट कि दी।

अमिदास सती प्रथा के समथथक निीं ंथे। उन्होंनें इसका प्रचलन समाप्त कि हदया। उन्होंनें हववाि तथा मृतुयु के अनुष्ठानों ंको एक नया रूप प्रदान हकया।

अमिदास ने गोहवन्दवाल में एक बावली, चौिासी सीहढ़यों ंवाला एक आयाताकाि बिृद् तालाब तथा याहत्रयों ंके हलए हवश्राम-कक्षों ंका हनमाथण हकया। 'िपुिी' का पाठ किते हुए इस तालाब में स्नान किना पुण्य-प्रदायक माना िाता िै। गुरु अमिदास की सृमहत में यिााँ प्रहतवषथ दो मेलों ंका आयोिन हकया िाता िै हिनमें बहुसंख्यक हसक्ख सस्ट्म्महलत िोते िैं।

एक बिा हसक्खों ंने गुरु से पूछा- "ि श्रद्धेय गुरु, सच्चे हसक्ख के क्या लक्षण िैं?" गुरु अमिदास ने किा- "हिस प्रकिा कोई मोती वषाथ की एक बूँद से सन्तुष्ट िो कि एक नये मोती की उत्पहत्त के हलए ओिभाग में चला िाता िै, उसी प्रकिा एक हसक्ख को भी गुरु-मन्त्र की प्रास्प्त के पिात् सन्तुष्ट िो िाना चाहिए। उसे ईश्वि के नाम का िप सदैव किते ििना चाहिए। उसे यि समझ लेना चाहिए हक यि संसाि तथा इसकी समस्त सम्पदा ईश्वि िी िै। परिस्स्थहत अनुकूल िो या प्रहतकूल, मनुष्य को अपने मन को सवथदा सन्तुहलत िखना चाहिए। उसे एक िी ईश्वि की
उपासना किनी चाहिए िो सब-कुछ किने में समथथ िै। उसे अनन्य भाव से एकमात्र उसी पि हनभथि ििना चाहिए। उसे हकसी समाहि-स्थल या श्मिान का पूिन निीं ंकिना चाहिए।"

एक अन्य अवसि पि गोहवन्दवाल के एक स्वणथकािा तथा उसकी पत्नी ने गुरु-चिणों ंपि हगि कि उनसे एक सन्तान की याचना की। गुरु ने उनसे हवनोदपूवथक पूछा- "क्या मैं लोगों ंको देने के हलए अपने पास सवथदा सन्तान हलये ििता हाँ?" स्वणथकािा ने किा- "सन्तान-दान के हलए गुरु की वाणी िी पयाथप्त िै।" स्वणथकािा के इन िब्दों ंसे प्रसि िो कि गुरु अमिदास ने किा- "तुम लोगों ंके दो बच्चे िोंगे।" समय आने पि स्वणथकािा की पत्नी दो पुत्रों ंकी माँ बनी।

अमिदास के मोिन तथा मोििी (Mohri) दो पुत्र तथा दानी औि बीबी भेनी दो पुहत्रयाँ थीं।ं भेनी का हववाि िामदास से हुआ था हिसे लोग िेठा किा किते थे। दानी का हववाि िाम से हुआ िो गुरु नानक के परिवाि का था।

अमिदास ने िेठा को दो तालाबों ंकी खुदाई का आदेि हदया। िेठा ने उनके आदेि का पालन हकया। एक तालाब को सन्तोकसि के नाम से, दूसिे को अमृतसि के नाम से अहभहित हकया गया औि इस प्रकिा सुप्रहसद्ध नगि अमृतसि की स्थापना हुई।

एक बाि अमिदास ने अपने दोनों ंदामादों ंके पिीक्षण का हनिय हकया। उन्होंनें उनको एक-एक चबूतिा बनाने का आदेि हदया हिनमें से एक पि प्रातःकाल तथा दसिे पि िाम को बैठ सकें। िाम ने चबूतिे का हनमाथण पिले कि हदया; हकन्तु गुरु ने उस पि आपहत्त प्रकट किते हुए उसे दूसिे चबूतिे का हनमाथण का आदेि हदया। िाम ने उस चबूतिे को हगिा कि दूसिे चबूतिे का हनमाथण हकया; हकन्तु गुरु इससे भी सन्तुष्ट न िो सके। उन्होंनें इसे हगिा कि दूसिे चबूतिे के हनमाथण का आदेि हदया। िाम ने उनके इस आदेि का भी पालन हकया; हकन्तु िब गुरु ने तीसिी बाि आपहत्त प्रकट की, तब िाम ने चबूतिे को हगिा तो हदया; पिन्तु उसके स्थान पि दूसिा चबूतिा बनाना अस्वीकाि कि हदया। उसने किा- "वृद्ध िोने के कािण गुरु की हववेक–िस्क्त कुस्ण्ठत िो गयी िै।"

इसके पिात् गुरु ने िेठा को भी इसी प्रकिा के आदेि हदये। िेठा ने चबूतिे को सात बाि हगिाया तथा सात बाि बनाया औि इस बीच उसने कोई आपहत्त भी निीं ंप्रकट की। गुरु ने उसे अपनी बाँििों ंमें भि कि किा- "तुमने मेिे आदेि का सात बाि पालन किते हुए यि चबूतिा बनाया िै; अतः इस गुरु-गद्दी पि तुम्हािी सात पीहढ़याँ आसीन िोती ििेंगी।

गुरु अमिदास ने अपनी पुत्री भेनी को यि आश्वासन हदया हक यि उत्तिाहिकाि उसकी सन्तहत को िी प्राप्त िोता ििेगा।

१५७४ ई. में गुरु ने िेठा को अपना उत्तिाहिकािी घोहषत हकया। इसके दो हदनों ंके पिात् ९५ वषथ की आयु में गोहवन्दवाल में उनका देिान्त िो गया। बासठ वषथ की आयु में उन्होंनें गुरु अंगद की सेवा प्रािम्भ की थी। उन्होंनें ग्यािि वषों तक अपने गुरु की सेवा की औि बाईस वषों तक गुरु का उत्तिाहिकाि वहन हकया।

गुरु िामदास

गुरु िामदास सोढ़ी खत्री थे। उनका िन्म १५३४ ई. में लिाौ नगि की चुनी मण्डी में हुआ था। िब उनकी आयु मात्र सात वषथ थी, तब उनके हपता का दिान्त िो गया औि वि गोहवन्दवाल चले गये। वािाँ िा कि वि उबली हुई दालें तथा अन्य खाद्य पदाथथ बेच कि अपना िीहवकोपाथिन किने लगे। एक हदन गुरु अमिदास अपनी पुत्री बीबी भेनी के हलए एक उपयुक्त वि की खोि में हकसी ब्राह्मण को भेिने िा िि थे। उस समय िामदास पूवथवत दालें बेचते हुए सड़क पि चले िा िि थे। अमिदास की पत्नी ने उस ब्राह्मण से किा- "मैं चािती हूँ हक मेिा दामाद िामदास–िैसा िो।"

गुरु अमिदास ने किा- ऐसे िी आदिथ युवक को िमािा दामाद िोना चाहिए। इसके पश्चात् उन्होंनें हकसी को भेि कि िामदास को बुलवाया औि उनसे अपनी पुत्री भेनी का हववाि कि हदया। गोहवन्दवाल में नव-दम्पहत के ििने के हलए एक पृथक् घि की व्यवस्था कि दी गयी। हपथीचन्द, मिादेव तथा अिुथन िामदास के तीन पुत्र थे। अमिदास ने िामदास को इस उच्चासन के हलए उपयुक्त समझ कि उनको गद्दी पि बैठा हदया।

गुरु िामदास प्रत्येक दृहष्ट से एक सुयोग्य व्यस्क्त थे। उनकी प्रकृहत िान्त एवं वास्तहिा तथा ऊिथस्स्वता हवस्मयिनक थी। उनकी रुहच साहित्य में भी थी। वि कहवताएँ हलखते थे औि सुन्दि तथा आकषथक भिनों के माध्यम से अपने हसद्धान्तों के प्रहतपादन में हनष्णात थे। उनके कुछ भिनों को 'आहद ग्रन्' में भी समाहवष्ट हकया गया िै। उनको सवाथहिक सिानीय गुरु समझा िाता िै।

गुरु नानक के ज्येष्ठ पुत्र श्रीचन्द ने एक नये सम्प्रदाय की स्थापना कि ली थी। इसे उदासी-सम्प्रदाय किते िैं। िो लोग संसाि के प्रहत हविक्त िोते िैं, उन्हें उदासी किा िाता िै। एक बाि श्रीचन्द ने गुरु िामदास के पास िा कि उनसे किा- "हकतनी लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली िै आपने!" िामदास ने किा- "मैंने यि दाढ़ी इसहलए बढ़ा ली िै हक मैं इससे आपका चिण-प्रक्षालन कि सकूँ। इतना किते िी िामदास ने सचमुच िी अपनी दाढ़ी से उनके चिण प्रक्षाहलत कि हदये। उनकी इस आत्यस्न्तक हवनम्रता के कािण श्रीचन्द लस्ज्जत िो उठे औि उनको यि स्वीकाि किना पड़ा हक िामदास हसक्ख-समुदाय के िीषथस्थ पद के वास्तहवक अहिकािी िैं।

िामदास ने हसक्खों को हववाि तथा सन्तानोत्पहत्त के हलए प्रोत्साहित हकया। वि तप के पक्षपाती निीं थे।

एक बाि लिाौ में िामदास सम्राट अकबि से हमले। अकबि को यि ज्ञात िो गया हक िामदास हनिथनों तथा पीहितों की सेवा किते िैं। उसने उनके नाम एक भूखण्ड हलख हदया। िामदास ने वािाँ एक पुिाने तालाब का परिष्काि कि उसका नाम अमृत-सागि िख हदया। उन्होंनें तालाब के बीच में एक मस्न्दि का हनमाथण हकया हिसके चतुहदथक अन्य छोटे-छोटे मस्न्दिों का भी हनमाथण हकया गया। गुरु के अनुयाहययों ने वािाँ अनेक कुटीि भी बनवा हदये। इस नव-हनहमथत नगि को 'गुरु का चक' नाम हदया गया। तत्पश्चात् इसे अमृतसि किा िाने लगा औि यिी नाम आि भी प्रचहलत िै।

िामदास के हृदय में हनिथनों के प्रहत अपाि सिानुभूहत थी। वि कृषकों की अहिकाहिक सिायता किते थे। अतः लोग उन्हें 'सच्चा बादिाि' किते थे।

गुरु िामदास ने हसक्खों के हृदय को बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत हकया। उन्होंनें गुरु नानक के मत की समृहि के हलए अत्यहिक प्रयास हकये। उन्होंनें अमृतसि नगि की स्थापना के माध्यम से एक िाष्ट्र के रूप में हसक्खों की भावी मिानता का हिलान्यास हकया। अमृतसि का स्वणथ-मस्न्दि उपासना का एक साविथहनक स्थान बन गया।

हसक्खों ंने एकताबद्ध ि◌ो कि बनुधुत्व-पे्रेम से अनुप्राहणत ि◌ोने की हिक्षा ग्रिण की हिससे दि-भस्ट्क्त के हसद्धान्तों ंपि आिारित एक ि◌ाष्ट्ि-कुल के हनमाथण के हलए मागथ प्रिस्त ि◌ो सका।

हपिथी सांसारिकता में हलप्त, कुहटल-हृदय तथा एक स्वाथी व्यस्ट्क्त था; अतः ि◌ामदास ने अपने उत्तिाहिकािी के रूप में अिुथन हसंि को नामांहकत कि हदया। १५८१ ई. में गोहवन्दवाल में सैंताहलस वषथ की आयु में ि◌ामदास का दीन्त ि◌ो गया। वि गुरु की गद्दी पि लगभग सात वषों तक आसीन ि◌ि◌े। ि◌ामदास ने अिुथन को अमृतसि में दो तालाबों ंके हनमाथण का स्पष्ट आदि हदया।

गुरु अिुथन हसंि

हसक्खों ंके पंचम गुरु अिुथनदेव का ि◌न्म १५६३ ई. में हुआ था। वि गुरु-गद्दी पि १५८१ ई. से १६०६ ई. तक आसीन ि◌ि◌। वि चतुथथ गुरु ि◌ामदास के कहनष्ठतम पुत्र थे। जे्येष्ठ पुत्र हपिथीचन्द अवज्ञाकािी तथा हमर्थ्ाभाषी था; अतः उसके हपता ने उसे बहिषृकृत कि हसक्खों ंको उससे सम्बन्ध हवचे्छेद का आदि दे हदया। हदतीय पुत्र मिादेव सदैव गिन ध्यान में लीन ि◌िता था। उसने समि का परित्याग कि हदया था। कहनष्ठतम पुत्र अिुथन प्रत्येक दृहष्ट से योग्य घे; अतः १५८१ ई. में उनको अमृतसि में गुरु-गद्दी पि आसीन कि हदया गया। गुरु अमिदास ने भहवर्ष्वाणी की थी-
"मिा पौत्र अिुथन लोगों ंको संसाि-सागि से पाि उतािने के हलए एक नौका हसद्ध ि◌ोगा।"

अजुकन द्वारा ि◌ालाब ि◌था स्वणक-मक्तन्दर का डनमाकण

गुरु ि◌ामदास ने अमृतसि का तालाब खुदवा कि नगि का हिलान्यास हकया औि गुरु अिुथन ने तालाब तथा नगि के हनमाथण कायथ को पूणथ हकया।

उन्होंनें पहवत्र ि◌ि-मस्ट्न्दि का भी हनमाथण हकया ि◌ो दिबाि सािब या स्वणथ-मस्ट्न्दि के नाम से अहिक हवख्यात ि◌ै। उनके अनुयाहययों ंने उनसे किा हक मस्ट्न्दि आस-पास की सािी इमाितों ंकी अपेक्षा अहिक ऊँचा ि◌ोना चाहिए। गुरु अिुथन ने उनसे किा- "ऐसा निीं ंि◌ोना चाहिए। ि◌ो हवनम्र ि◌ै, उसी की प्रिंसा ि◌ोनी चाहिए। वृक्ष ि◌ैसे-ि◌ैसे फलों ंसे बोहझल ि◌ोने लगता ि◌ै, वैसे-वैसे उसकी ि◌ाखाएँ पृथ्वी की औि अिोमुखी ि◌ोने लगती ि◌ैं। तुम लोग हकसी भी मागथ से मस्ट्न्दि में पिुँचो, तुम्हें विाँ से नीचे उतिने में केवल आठ-दि पग ि◌ी लगने चाहिए। अतः ि◌ि-मस्ट्न्दि की ऊँचाई इसकी हनकटस्थ इमाितों ंसे हनम्नति ि◌ोनी चाहिए।"

गुरु अिुथन ने १५८९ ई. में स्वणथ-मस्ट्न्दि की नींवं में पिली ईंट ि◌खी। संयोगवि एक ि◌ाहमस्ट्त्री से वि ईंट स्थानान्तरित ि◌ो गयी। उसी समय अिुथन ने भहवर्ष्वाणी कि दी हक कभी-न-कभी इस नींवं का पुनहनथमाथण किना ि◌ोगा। उनकी यि भहवर्ष्वाणी उस समय सत्य हसद्ध ि◌ो गयी, ि◌ब अफगाहनस्तान के ि◌ािा अिमिदिा अब्दाली ने मस्ट्न्दि को ध्वर्स्त तथा तालाब की पहवत्रता को कलुहषत कि हदया। दो वषों के बाद हसक्खों ंने मस्ट्न्दि के र्ध्ंसावषेि के स्थान पि पुनः मस्ट्न्दि की नींवं ि◌खी औि उस पि मस्ट्न्दि का पुनहनथमाथण हकया। वि नव हनहमथत मस्ट्न्दि औि अहिक भव्य ि◌ै।

हसक्ख गुरुओं ंके मत के प्रचाि-प्रसाि तथा ि◌स्ट्क्त-संविथन में गुरु अिुथन का योगदान अत्यन्त मित्त्वपूणथ ि◌ै। वि माला तथा सन्त के बाने का परित्याग कि बहुमूल्य वस्त् ि◌ािण किते थे। उनके यिाँ अनेक परिकि तथा ि◌ाथी-घोड़े थे। उन्होंनें हसक्खों ंको एक समुदाय में संगहठत कि हदया। उनके यिाँ एक व्यवस्ट्स्थत प्रिासन-तन्त्र था। लोगों ंको अपनी आय का दिांि देना पड़ता था। इसकी वसूली के हलए समिताथओं ंको हनयुक्त हकया गया था। व्यापाि तथा

अपने मत के प्रसािण के हलए उन्होंनें अपने हिष्िों ंको तुहकथस्तान–िसे दिेों ंमें भी भेिा था। हसक्ख-मत का प्रसाि काबुल, कन्धाि, हसन्ध तया मालवा तक हुआ था।

िि-मस्ट्न्दि के परिरूप के सम्बन्ध में गुरु अिुथन ने एक नये उपक्रम का प्राम्भ हकया िो सामान्य मस्ट्न्दिों ंके परिरूप के अनुरूप निीं ंथा। हिन्फ्दू-मस्ट्न्दिों ंके िाि तीन ओि से बन्द िोिे कि केवल पूवाथहभमुख अथाथत् सूयोदय की हदिा की ओि िोते िैं; हकन्तु िमाि हसक्ख-मस्ट्न्दि के िाि चािों ंहदिाओं ंमें मुक्त िैं। इसका यिी अथथ िै हक प्रत्येक व्यस्ट्क्त हसक्ख-मत-प्रहतपाहदत उपासना का अहिकािी िै ओि सूयोपासना से इसका कोई सम्बन्ध निीं ंिै।

अजुकन द्वारा 'आडद ग्रन्थ' का सोंकलन

गुरु-अिुथन ने 'आहद ग्रन्' या 'ग्रन् साहिब' का संकलन हकया। उन्होंनें अपने पूवथवती गुरुओं ंकी वाहणयों ंको एक िी ग्रन् में संग्रहित हकया। उन्होंनें सोचा हक यि पहवत्र ग्रन् हसक्खों ंके हलए सावथकाहलक पथ-प्रदिथक हसद्ध िोगा। उन्होंनें इस 'आहद ग्रन्' में स्वयं अपनी ि चनाओं ं के अहतरिक्त तत्कालीन अन्य ि माथवलम्बी िसािकों ं की चिनाओं ं
को भी सस्ट्हिलत कि हलया ओि प्रख्यात हसक्ख कहव भाई गुरुदास से 'ग्रन् साहिब' के िुरुत-लेखन का कायथ सम्पि किवाया। 'ग्रन् साहिब' को अमृतसि के पहवत्र मस्ट्न्दि के मध्य में िखा िाता िै ओि एकत्र िन-समूि के सुख प्रहतहदन इसका हनयहमत पाठ िोता िै।

डपरथी के दुष्करत्य

गुरु िामदास ने गुरु-गद्दी के हलए अपने ज्येष्ठ पुत्र हपिथीचन्द को नामांहकत निीं ंहकया था; अतः वि गुरु को सवथदा अपना ितुरु समझता िाि। उसने अिुथन को गुरु-गद्दी से वंहचत किने के हलए अथक प्रयास हकये। उनके हवरुद्ध उसने न्यायालय में कई मुकदमे दायि हकये; हकन्तु इस अहभयान में वि सवथदा असफल िोता िाि। गुरु अिुथन की उदािता के किाण तथा मकानों ंके हकिाये से अहिथत िनि–ाहि का कुछ अंि उसको भी हमल िाता था। इसके अहतरिक्त वि सीमा–िुल्क से प्राप्त कुछ िन अपने अग्रि मािदेव को भी हदया किते थे। स्वयं उनका काम उनके हनष्ठावान् अनुयाहययों ंिािा स्वेच्छापूवथक अहपथत भेंट से िी चलता था।

गुरु अिुथन के प्रहत हपिथी की ईर्ष्ाथहग्न को उसकी पत्नी किमो ओि अहिक प्रज्वहलत कि हदया किती थी। हपिथी को आिा थी हक गुरु अिुथन के हनःसन्तान िोने के किाण उसका पुत्र मििबान हसंि गुरु-गद्दी का उत्तिाहिकािी िोगा।

कुछ वषों के पिात् गुरु अिुथन की पत्नी गंगा ने एक पुत्र को िन्म हदया, हिसका नाम िििगोहवन्द िखा गया। इस समाचाि से हपिथी तथा किमो की क्रोिाहग्न ओि अहिक प्रज्वहलत िो उठी। अपने भाई के प्रहत हपिथी की अरुहच अब दुदथम्य घृणा में रूपान्तरित िो गयी। उसने िििगोहवन्द को हवष देने के अनेक प्रयत्न हकये। एक बाि उसने एक परिचारिका को िििगोहवन्दको दुग्ध-पान किाने के हलए भेिा। उस परिचारिका ने उसके आदेिानुसाि अपने स्तनों ं पि हवष का लेपन कि हलया था; हकन्तु इसके पूवथ हक वि अपने स्तनों ंको िििि की ओि ले िाती. मूस्ट्च्छत िो कि हगि पिी। मूच्छाथ-भंग के पिात् उसने विाँ अपने आगमन के दुष्प्रयोिन को स्पष्ट रूप से व्यक्त का हदया। दूसिी बाि हपिथी ने एक सँपेिे को इस बात के हलए प्रचुि िन हदया हक वि सपथदंि के माध्यम से िििगोहवन्द की ित्या किवा दे; हकन्तु उसका यि षड्यन्त्र भी हवफल िाि। इसके बाद हपिथी ने एक ब्राह्मण को प्रचि िन का प्रलोभन दे कि ििि के दूि में हवष हमलाने के हलए भेिा; हकन्तु गुरु को सन्देि िो गया ओि उन्होंनें वि दूि एक कुत्ते को हपला हदया हिससे उसकी मृत्यु िो गयी।

हपिथी ने ििाौ सूबे के एक मुसलमान अहिकािी को नगि से कि-उद्ग्रिण के बिाने अमृतसि को लूटने के हलए प्रेरित हकया। अकबि के पास िा कि उसने गुरु अिुथन पि हमर्थ्ा दोषािोपण हकया; हकन्तु मिान् सम्राद ने उसकी एक न सुनी। उसने हपिथी के आवेदन-पत्र को हमर्थ्ा मान का अस्वीकृत कि हदया। उसने गुरु से भेंट कि उनके तथा 'आहद ग्रन्' के प्रहत अपना सिान व्यक्त किते हुए उनको वस्त्ाहद तथा स्वणथ-मुिाएँ अहपथत की। वि गुरु िा
हनहमथत मस्ट्न्दि को देख कि अत्यन्त िहषथत हुआ। उसने स्वयं को गुरु का दास बताते हुए उनसे हनदेि प्राप्त की
प्राथथना की। गुरु के आहतर्थ्-सत्काि तथा उनकी हवित्ता पि मुग्ध िो कि उसने पंिाब के उस वषथ के िािस्व को भेंट के रूप में उनको अहपथत कि हदया।
गुरु अिुथन ने अपने अनुयाहययों ंको एक िानैहतक समुदाय के रूप में संगहठत कि बहुसंख्यक लोगों ंको हसक्ख-मत में दीहक्षत कि हलया हिनमें पवथतीय भू-खण्ड कुलुलु, चम्बा, मण्डी, िरिपुि तथा चुकेत के अहिपहत भी सस्ट्हिलत थे। उन्होंनें हसक्ख मत का प्रचाि-प्रसाि कश्मीि तक में हकया।

चन्फ्दू िाह का षड्यन्त्र

हपिथीचन्द के अहतरिक्त चिू िाि नामक एक व्यस्ट्क्त भी गुरु का ित्रु था। वि सम्राट् अकबि का दीवान तथा हवत्तमन्त्री था। अिुथन हसंि ने उसकी पत्री सदा किौ को अपने पुत्र िािगोहवन्द की वाग्दता बनाना अस्वीकाि कि हदया। चिू िाि की गणना समृद्धतम लोगों ंमें की िाती थी। उसने गुरु के प्रहत कुछ अपमानिनक िब्द किे औि उनसे अपनी तुलना किते हुए उनको हकसी भवन के नीचे की गन्दी नाली बताते हुए स्वयं को भवन का ििोभाग बताया। इसका यि तात्पयथ था हक वि अपनी पुत्री का िाथ उस व्यस्ट्क्त को देने िा िािा था हिसकी सामाहिक स्ट्स्थहत उसकी तुलना में सवथा नगण्य िै। चन्फ्दू िाि ने पुिोहित से किा- "तुम भवन के अलंकृत िीषथस्थ खण्ड को एक दूहषत नाली में िालना चािते िो।" हसक्खों ंने उसकी इस हतिस्काि-युक्त गवोस्ट्क्त की सूचना गुरु को देते हुए उनसे प्राथथना की हक वि वाग्दान को अस्वीकाि कि दें। फलतः इसे अस्वीकाि कि वाग्दान में प्राप्त उपिाि लौटा हदये गये।

इससे चन्फ्दू िाि क्रोिोन्मत्त िो उठा। इस स्ट्स्थहत को िान्त किने के हलए उसने गुरु को एक पत्र िािा सूहचत कि हदया हक वि अपने अपिब्दों ंको वापस ले िािा िै; हकन्तु इसके साथ–ी-साथ उसने यि िमकी भी दे िाली हक यहद कोई समझौता निीं ंहुआ, तो वि अपना सियोग हपिथी को प्रदान किेगा। गुरु अिुथन ने उसके इस पत्र का उत्ति निीं ंहदया हिसके फल-स्वरूप चन्फ्दू िाि गुरु अिुथन का घोितम ित्रु िो गया।

चन्फ्दू िाि ने अकबि को सूहचत हकया हक 'आहद ग्रन्' में इस्लाम तथा इसकी भहवर्ष्वाणी को हतिस्कृत तथा अवमाहनत हकया गया िै। अकबि ने 'आहद ग्रन्' माँगवा कि उसमें संग्रहित अिुथन हसंि तथा अन्य गुरुओं ंकी वाहणयों ंका पिीक्षण किवाया। इस पिीक्षण के पिात् वि इस हनष्कषथ पि पहुँचा हक ये वाहणयाँ सवथा हनदोष तथा हनष्कलुष िैं। उसने गुरु को अनेक बहुमूल्य उपिाि दे कि हवदा हकया।

इसके कुछ िी हदनों ंके पिात् मिान् अकबि का देिान्त िो गया औि उसका पुत्र ििााँगीि हसंिासनारूढ़ हुआ। ििााँगीि के पुत्र खुसिो ने हविोि कि हदया; हकन्तु पिाहित िो कि वि अफगाहनस्तान की ओि चल पड़ा। मागथ में वि गुरु के हनवास स्थान तिनतािन में रुका ििााँ उसे काबुल तक पहुँचने के हलए पाथेय के रूप में पाँच सिस्र रुपये प्राप्त हुए।

िि चन्फ्दू, हपिथी तथा हपिथी के पुत्र ममिबान गुरु के प्रहत सम्राट ििााँगीि के मन में क्रोिाहग्न प्रज्वहलत किने के हलए संघबद्ध िो गये। उन्होंनें सम्राट् को यि सूचना दे दी की गुरु ने खुसिो की केवल सियता िी निीं ंकी। अहपतु उसे आिीवाथद देते हुए यि भहवर्ष्वाणी भी कि दी हक एक हदन हसंिासन पि उसी का अहिकाि िोगा।

सम्राट् ने गुरु को बुला कि किा- "तुम िनी-हनिथन, सबको सम दृहष्ट से देखते िो। मिे ितुरु खुसिो को आहथथक सियता देना तुम्हिो हलए उहचत निीं ंथा।"

गुरु अिुथन ने किा- "कोई हिन्फ्दू िो या मुस्ट्मि, िनी िो या हनिथन, हमत्र िो या ितुरु, मैं इन सभी का हनिासक्त भाव से आदि किता हाँ औि ऐसा किते हुए मुझमें उनके प्रहत न प्ेरेम की भावना िोती िै न घृणा की। यिी किाण िै हक मैंने तुम्हिो पुत्र को उसके यात्रा-व्यय के हलए कुछ रुपये दे हदये। मैंने उसे तुम्हिाा ितुरु समझ कि रुपये निीं ंहदये। यहद मैंने उसकी हवपिावस्था में उसकी कुछ सियता न की िोती औि इस सियता के माध्यम से तुम्हिो दयालु हपता के प्रहत सिान प्रकट निीं ंहकया िोता, तो लोग मिीं इस हृदयिीनता तथा कृतघ्नता के हलए मुझसे घृणा किने लगते औि किते हक मैं तुमसे भयभीत िो गया था। गुरु नानक के हकसी हिर्ष् के हलए यि स्ट्स्थहत अिोभन तथा लज्जास्पद िोती। मिा अहभप्राय सम्राट् के ितुरु की सियता किना निीं ंथा।"

सम्राट ने उनको दो लाख रुपयों ंका अथथ-दण्ड हदया औि इसके साथ िी उनको यि आदेि भी हदया हक 'ग्रन् साहिब' से उन सभी वाहणयों ंिो िटा हदया िाये हिससे हिन्फ्दुओं ंतथा मुसलमानों ंकी भावनाएँ आित िोती िों।ं

गुरु अिुथन ने किा- "मैं एक सन्त िीं। मिे पास िो कुछ भी िै, वि भेंट से िी प्राप्त हुआ िै। यि सावथिहनक सम्पहत्त िै हिसका उपयोग हनिथनों ंतथा सिुओं ंकी सेवा के हलए िोता िै। यहद तुम्हें हकसी प्रकाि की आहथथक सियता की आवश्यकता िै. तो मैं उस सियता के हलए उद्यत िीं; हकनुतु यहद तुम अथथ-दण्ड के रूप में इसका अहिग्रिण किना चािते िो, तो मैं तुम्हें एक कौिी भी निीं ंदूाँगा। अथथ-दण्ड पुिोहितो तथा सन्तों ंपि न लगा कि गृिस्थों ंपि िी लगाया िाता िै। ििााँ तक 'ग्रन् साहिब' से कुछ वाहणयों ंको िटाने का प्रश्न िै, मैं उन वाहणयों ंको न तो िटाऊाँगा, न उनमें कुछ परिवतथन िी करूाँगा। मैं एक अहवनािी ईश्वि की भस्ट्क्त किता हाँ िो सवोच्च अिा िै। उस ईश्वि के अहतरिक्त अन्य कोई सम्राट् निीं ंिै। उसकी कृपा से गुरुओं ंमें हिन अपौरुषेय भावों ंका सुफुिण हुआ, उन्हें 'ग्रन् साहिब' की वाहणयों ंके रूप में हलहपबद्ध कि हलया गया। इन वाहणयों ंमें हकसी हिन्फ्दू अवताि या मुस्ट्मि पैगम्बि के प्रहत अनादि के दिथन निीं ंिोते। मिा मुख्य उदे्देश्य सत्य का प्रचाि तथा हमथ्याा प्रिाण िै। यहद इस लक्ष्य की पूहतथ में मिा िीिान्ति भी िो िाता िै, तो मैं स्वयं को कृतकृत्य िी समझेंगा।"

िब लािौि के हसक्खों ंने अथथ-दण्ड की बात सुनी, तब उन्होंनें सावथिहनक अंदिान िािा इसकी अदायगी का हवचाि हकया; हकनुतु गुरु अिुथन ने इसकी अनुमहत निीं ंदी।

गुरु को चन्फ्दू िाि के िाथों ंसौंपं हदया गया। वि उन्हें अपने घि ले आया। विााँ उसने गुरु से उस वाग्दान को स्वीकाि किने का अनुिोि हकया हिसे पिले िी अस्वीकाि हकया िा चुका था। उसने उन्हें दिेि में प्रचुि िन-िाहि देने का भी प्रलोभन हदया; हकनुतु गुरु ने उससे स्पष्ट िब्दों ंमें किा हक उनके िब्द पत्थि पि अंहकत िेखाएँ िैं हिनको हमटा पाना असम्भव िै। उन्होंनें यिााँ तक कि हदया हक यहद उन्हें दिेि में सािा संसाि भी दे हदया िाये, तो भी वि चि िाि की पुत्री से अपने पुत्र का हववाि निीं ंकिेंगे।

चन्फ्दू िाह द्वारा अजुकन को यन्त्रणा

इसके पिात् चि िाि ने उनके प्रहत कठोितम व्यविाि की िमकी दी। गुरु ने किा हक हनयहत का हनवािण असम्भव िै। उन्होंनें इसके फल-स्वरूप िोने वाले कष्टों ंको सिन किने की अपनी इच्छा भी व्यक्त कि दी। उनके प्रहत हनमथम व्यविाि हकये गये। उनके समस्त िीि पि हिंसाक आघात के हचह्न दृहष्टगत िोने लगे। उनको कािागाि में िाल हदया गया ििााँ ब्राह्मणों ंतथा काहियों ंने उनको हवहभि प्रकाि की अमानुहषक यन्त्रणाएँ दीं।ं पााँच हदनों ंतक गुरु प्रहतिीि चन्फ्दू िाि के िाथों ंअकथनीय यन्त्रणा भोगते ििे। उनके अहभकताथओं ंने उन पि तप्त

बालुका–ाहि िाली, उन्हें उत्तप्त ीक्रिो में िखा अौ इसके पित् उबलते हुए पानी में फेंक हदया; हकनु्तु गुरु के मुाँ से उनकी पीाा को अहभव्यक्त किने वाला एक िब्द भी नीं ंहनकला।

गुरु ने किा- "अन्धहवश्वास अनावृत तथा मन ज्योहतमथय िो गया ि। गुरु ने चिणों ंको आबद्ध किने वाले बन्धनों ंको हवस्ट्च्छि कि हदया ि अौ अब बन्दी मुक्त ि। मि दीन्तिण की अवहि समाप्त िो चुकी ि, मि कमाथिय का प्रािण ी चुका ि अौ मैं इससे सवथा मुक्त हाँ। अब मैं हसनु्धु के तट पि आ पहुाँचा हाँ। गुरु ने मुझ पि अनुग्रि हकया ि। सत्य मिा हनवास-स्थान ि, सत्य मी पीहठका ि अौ सत्य िी मिा हवहिष्ट प्राप्तव्य ि। सत्य मी पूाँी ि अौ सत्य िी मि व्यापिा में अहिथत मिा िन ि हिसे नानक ने अपने घि में संहचत कि िखा ि।"

चन्फ्दू ीिा ने किा हक यहद गुरु अपने पुत्र ीिगोहवन्द का हवविा उसकी पुत्री सदा किौ से कि देंगे, तो उनको यन्त्रणा नीं ंदी िायेगी: हकनु्तु उन्होंनें उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकािा कि हदया।

हमयााँ मीि नामक एक प्रहसद्ध सन्त ने चि ीिा को इस हववेकिीन कृत्य के हवरुद्ध चेतावनी दी अौ गुरु से किा हक वि यि सब-कुछ सम्राट् को बतायेंगे अौ उनके उत्पीाक को नष्ट कि देंगे। गुरु ने किा- "सिनिीलता सन्त का कतथव्य ि। हिंसा. हृदयीनता तथा असिान के वाताविण में िी सन्त की आन्तरिकता का अनाविण िोता ि। सवथिस्ट्क्तमान ईश्वि के अहतरिक्त अन्य कोई भी व्यस्ट्क्त कुछ नीं ंकि सकता। सुख-दु:ख ीिी के हलए पूवथ-हनाथरित िोते िैं। अिा इससे पृथक् ि। अयस इसे काट नीं ंसकता, अहग्न इसे िला नीं ंसकती अौ िल इसे हवघहटत नीं ंकि सकता। मिा हसद्धान्त ि : 'ि भगवन्, यहद तुम मुझे सुख दोगे, तो मैं तुम्हािो नाम का िप किता हाँगा अौ यहद तुम मुझे दु:ख दोगे, तो भी मैं तुम्हािा िी आह्वान किता िहाँगा।"

गुरु अजुकन का अन्त

चन्फ्दू ीिा ने उनके सामने एक कच्चा गो-चमथ िखते हुए किा हक कल प्रातःकाल उन्हें इसी गो-चमथ में परिवेहष्टत हकया िायेगा। िब यि गो-चमथ गुरु के समक्ष लाया गया, तब उन्होंनें िावी नदी में स्नान किने की अनुमहत मााँगी। गुरु ने सदा की भााँहत स्नान हकया अौ आत्यस्ट्न्तक श्रद्धा के साथ 'िपुी' का पाठ किते हुए अन्तिाथन िो गये।

गुरु अिुथन ने अपने हनकट बैठे हसक्खों ंसे किा- "ीिगोहवन्द को मिा उत्तिाहिकािी बनाना। उससे किना हक वि कायिों ंकी ीिि हवलाप न कि भगवान का सुतुहत-गान कि। वि गुरु-गद्दी पि पूणथतः सिस्त् िो कि बैठे अौ उसकी सेना अहिकाहिक िस्ट्क्तिाली िो।"

१६०६ ई. में गुरु अिुथन का दीन्त िो गया। उन्होंनें अमृतसि के परिष्किा का समापन, स्वणथ-मस्ट्न्दि का हनमाथण तथा 'ग्रन् साहिब' का संकलन हकया। उन्होंनें अपने हिष्ों ंके समक्ष सेवा. आस्था तथा सिास का अप्रहतम उदिाण प्रसुतुत हकया। वि १५८१ ई. से १६०६ ई. तक अथाथत् चौबीस वषों तक गुरु-गद्दी पि आसीन ीिे।

हसक्ख मत अब भस्ट्क्त की सीमाओं ंका अहतक्रमण कि एक सैन्य संगठन में रूपान्तरित िो गया। गुरु अिुथन की मृतुयु ने हसक्ख-समुदाय को एक नयी हदिा प्रदान की। इसने हसक्खों ंके हृदय में िाहमथक भावािवे की अहग्न प्रज्वहलत कि दी। हनमथम उत्पीाकों ंीिा हकये गये उत्पीान के अनुरूप िी प्रहतीिो के अहभयान का प्राम्भ हकया गया।

गुरु अिुथन को समहपथत एक गुरुििा लािौ के हकले के सुिख अि भी स्ट्स्थत ि।

गुरु ि◌गोहवन्द

गुरु अिुथन के पुत्र गुरु ि◌गोहवन्द का ि◌न्म १५७५ ई. में ि◌नपद अमृतसि-स्ट्स्थत बिाली में हुआ था। ग्यािा वषथ की अल्पायु में ि◌ी उनको गुरु-गद्दी पि पदासीन कि हदया गया। योद्धा तथा सन्त- उनमें इन दोनों ◌ंकी हविेषताएँ हवद्यमान थीं।◌ं वि सेनाध्यक्ष के साथ-साथ आध्यास्ट्कि पथ-प्रदिथक भी ि◌ो गये। वि ऐसे प्रथम गुरु थे हिन्होंनें सैन्य-तन्त्र का संघटन कि अपने अनुयाहययों ◌ंको युद्ध-क्षेत्र में ि◌ौयथ-प्रदिथन के हलए ि◌स्त्-सस्ट्ज्जत हकया। उन्होंनें ि◌ूिवीिों ◌ं की सेवाएँ प्राप्त कि उनको सैन्य-हवज्ञान में प्रहिहक्षत हकया औि उन लोगों ◌ंने अल्प काल में ि◌ी परिपक्व सैहनक ि◌ो कि योद्धाओं ◌ंके एक दल का संघटन कि हलया। गुरु ि◌गोहवन्द उन हिन्फ्दुओं ◌ंकी सुिक्षा के आश्वस्ट्स्त-कें बन गये िो हकसी हवविता से ग्रस्त ि◌ो कि इिाम ि◌मथ को ग्रिण किने की बात सोच ि◌िे थे।

अपनी ि◌ािीरिक तथा मानहसक संिचना के कािण हसक्खों ◌ंके नव-पदासीन आध्यास्ट्कि पथ-प्रदिथक अपने हपता की इच्छा-पूहतथ तथा सैन्य-संचालन, दोनों ◌ंअहभयानों ◌ंके हलए सवथा उपयुक्त थे। वि अपने पूवथवती गुरुओं ◌ंकी भााँहत सुिुि तथा पगिी निीं ◌ंि◌ािण किते थे। इनके स्थान पि वि ि◌स्त् तथा कवच ि◌ािण कि सूयथ की भााँहत तेिोमय प्रतीत ि◌ोते थे। उन्होंनें अपने योद्धाओं ◌ंको अश्व तथा ि◌स्त् प्रदान हकये थे।

के गुरु ने भेंट तथा ि◌मथ-िुल्क संग्रहित किने वाले मसन्दों ◌ं(Masands) को एक हवज्ञस्ट्प्त के माध्यम से यि सुहचत कि हदया हक यहद वे लोग ि◌न के स्थान पि ि◌स्त्ों ◌ंतथा अश्वों ◌ंकी भेंट का संग्रि किेंगे, तो उनको अहिक प्रसिता ि◌ोगी। ि◌मथ-िुल्क-समिाताथओं ◌ंने पूवथ-प्रथानुसाि उनके समक्ष एक मंिी (बिपाई), एक सेली (फकीिों ◌ंि◌ािा ि◌ािण हकया िाने वाला एक ऊनी ि◌ागा), एक टोपी, एक पुस्तक तथा एक माला की भेंट प्रस्तुत की। गुरु ने इस भेंट को अस्वीकाि किते हुए किा- "मैं माला के हसद्धान्त को तलवाि हसद्धान्त में रूपान्तरित किने ि◌ा ि◌ि◌ा हाँ। ईश्विानुमोहदत मत का परििक्षण ि◌ी मेिा लक्ष्य ि◌ै ि◌ो ि◌स्त्ाभाव में असम्भव ि◌ै। मैं फकीि के संकेत-हचह्न सेली तथा टोपी का सवथदा के हलए परित्याग कि अपने दोनों ◌ंि◌ाथों ◌ंमें एक-एक तलवाि ि◌ािण करूाँगा। मेिी एक तलवाि फकीिी की परिचाहयका ि◌ोगी ि◌ो आध्यास्ट्किता का प्रतीक ि◌ै औि दूसिी तलवाि ि◌ाकीय वैभव की परिचाहयका ि◌ोगी ि◌ो क्षहणक प्रभुत्व की प्रतीक ि◌ै।"

चन्फ्दू ि◌ाि अपने घोितम ि◌त्रु के पुत्र की अहिकाहिक बढ़ती हुई ि◌स्ट्क्त को देख कि सतकथ ि◌ो गया। उसने ि◌गोहवन्द से समझौते का अस्ट्न्तम प्रयास किते हुए उन्हें अपनी अभी तक अहववाहित पुत्री से हववाि किने के हलए प्रलोहभत हकया। इसके साथ ि◌ी उसने उन्हें यि ि◌मकी भी दी हक यहद उन्होंनें इस हववाि के प्रहत अपनी सिमहत निीं ◌ंप्रदान की, तो उनके प्रहत भी वि विी व्यविाि किेगा ि◌ो उसने उनके हपता के प्रहत हकया था। ि◌गोहवन्द ने चि ि◌ि◌ा के प्रस्ताव को अस्वीकाि किते हुए उसे पत्र ि◌ािा यि ि◌मकी दी हक उनके हपता को ि◌ो यन्त्रणाएँ दी गयी थीं.◌ं उनके हलए वि उससे भयंकि प्रहतिोि लेंगे। उन्होंनें हलखा- तुम पि हनम्न ि◌ाहत के लोग पदत्राण का प्रिाि कि तुम्हें अपमाहनत किेंगे औि तुम्हें ि◌ूल-िूसरित तथा पददहलत ि◌ो कि ि◌ि◌ी त्याग किना ि◌ोगा।"

ि◌गोहवन्द ने अमृतसि के हसक्ख-मस्ट्न्दि के सिुख अकाल बंगा का हनमाथण हकया। उन्होंनें अपने अनुयाहययों ◌ंसे किा हक ि◌ब वि ि◌ि मस्ट्न्दि में िि◌ें, तब उन्हें सन्त औि ि◌ब अकाल बंगा में िि◌ें, तब ि◌ािा समझना चाहिए। वि बहुमूल्य तथा ि◌ोहचत वस्त् ि◌ािण किते थे। उन्होंनें एक आदेि-पत्र ि◌ािा हसक्खों ◌ंको हनदेि हदया हक उनकी सामान्य तीथथयात्राओं ◌ंके अवसि पि उन्हें ि◌स्त्ास्त् की ि◌ी भेंट अहपथत की ि◌ाये।

ि◌गोहवन्द ने सम्राट् का हवश्वास प्राप्त कि हलया। उनके यिााँ आठ सौ अश्विािोी तथा बहुसंख्यक ि◌स्त्-सस्ट्ज्जत अनुयायी ि◌ि◌ते थे। वि कश्मीि-यात्रा के अवसि पि सम्राट् की ि◌ाकीय सेना का अनुसिण किते थे। सम्राट् ने उन्हें नलगढ़ के ि◌ािा तािाचन्द को पिाहित किने के हलए हनयुक्त हकया ि◌ो अभी तक अपिािेय था। गुरु ने उसे

पिाहित कि सम्राट् के सुिख प्रसुतुत कि हदया हिसके पुिस्कािा-स्वरूप उन्हें नयी-नयी उपाहियों ंसे सिाहनत कि एक सिस्र अश्विािोहियों ंतथा सैहनकों ंका नायक बना हदया गया। उन्हें न्याहयक अहिकाि भी प्रदान हकये गये। एक आध्यास्ट्कि गुरु तथा अस्थायी न्याहयिी के रूप में उनकी ि नहप्रयता के काििण उनकी िस्ट्क्त तथा ख्याहत में अहिकाहिक वृस्ट्द्ध िोती गयी। लोग उन्हें 'सच्चा बाििदा' तथा 'सोढ़ी सुलतान' किने लगे। वि उनके वास्तहवक िािि थे। एक बाि आखेट के समय उन्होंनें सम्राट् की प्राणि–िक्षा की। सम्राट् ने सुना था हक वि मृगया में दक्ष थे; अतः िब वि आखेट पि हनकला, तब उसने उन्हें अपने साथ ले हलया। एक आोत िे ने उस पि आक्रमण कि हदया; हकन्तुतु गुरु ने तलवाि से उस िे को माि िाला।

िगोहवन्द का हृदय उदािता तथा दानिीलता से ओत-प्रोत था। उनके यिााँ एक बृिद् लंगि अथाथत् पाकिाला की व्यवस्था थी हिसमें सिस्रों ंहिन्फ्दू-मुसलमान भोिन हकया किते थे।

िगोहवन्द ने अनेक सावथहनक संस्थाओं ंकी स्थापना तथा उद्यानों ंका हनमाथण हकया। १६७७ ई. में उन्होंनें िगोहवन्दपुि की स्थापना की। उन्होंनें गुरु नानक के हसद्धान्तों ंके प्रचाि के हलए देि-भ्रमण का पयथटन हकया।

हपथीचन्द का पुत्र तथा ििगोहवन्द का चाचा ममिबान गुरु की समृस्ट्द्ध को देख कि उनसे ईर्ष्ाथ किने लगा औि चन्फ्दू िाि से िाथ हमला। उन दोनों ंने सम्राट िााँगीि के यिााँ िा कि गुरु पि अहभयोग लगाया हक उन्होंनें अपने पवथिों ंकी पिम्पिा का परित्याग कि एक हनयहमत सेना का संघटन कि हलया िै औि इसके अहतरिक्त वि मुकदमे भी देखने लगे िैं। चन्फ्दू िाि ने सम्राट् को दो लाख रुपयों ंके अथथ-दण्ड की भी याद हदलायी हिसे गुरु के स्वगीय हपता अिुथन हसंि को हदया गया था। उसने सम्राट् को उस अथथ-दण्ड वसूली का भी पिामिथ हदया। उसने सम्राट् को यि सुझाव हदया हक िब तक उस अथथ-दण्ड की वसूली निीं ंिो िाती, तब तक उन्हें एक िािकीय बन्दी के रूप में ग्वाहलयि के हकले में बन्द कि हदया िाये। सम्राट् ने इस सुझाव के प्रहत अपनी सिमहत प्रकट कि दी औि गुरु िगोहवन्द को कािागाि में िाल हदया गया।

िगोहवन्द को कािागाि में बािि वषथ व्यतीत किने पड़े। विााँ गुरु ने अनेक िभाग्य िािाओं ंतथा सामन्तों ंको दण्ड भोगते देखा। उनका एकमात्र अपिाि यि था हक वे लोग उस िाज्य क्षेत्र के अहिपहत थे हिस पि सम्राट् की लोलुप दृहष्ट पड़ चुकी थी। ििगोहवन्द अपने सिबस्ट्न्दयों ंके हलए अत्यन्त उपयोगी थे। वि उनकी मुस्ट्क्त की योिना पि हवचाि किने लगे।

उिि चन्फ्दू िाि सोच ििा था हक वि कािागाि में ििगोहवन्द की ित्या सिलतापूवथक कि सकता िै। उसने हकले के हकलेदाि ििदास को ििगोहवन्द की ित्या के हलए घूस देने का प्रयत्न हकया। उसने गुरु के िाि किने के हलए उनके पास एक हवषिंहित वस्तु भेिी; हकन्तुतु ििदास गुरु का पिम भक्त था। प्रख्यात फकीि हमयााँ मीि ने चन्फ्दू िाि के सिी दुषृकृत्यों ंसे सम्राट् को अवगत किा कि ििगोहवन्द की मुस्ट्क्त के हलए उनकी आज्ञा प्राप्त कि ली।

गुरु सम्राट को िन्यवाद देने हदल्ली गये। सम्राट ने गुरु के गले में पीन काष्ठ-हनहमथत मनकों ंकी एक सुन्दि माला देखी। उसने उस माला को अपने उपयोग के हलए लेना चािा; हकन्तुतु गुरु ने किा- "मेिे हपता इस माला से भी सुन्दि माला पिना किते थे। उनकी उस माला के मनके मोती के थे: मेिी इच्छा िै हक आप उसी माला को िाि किें। सम्राट ने पूछा- "वि माला किााँ िै?" गुरु ने बताया- "वि माला चन्फ्दू िाि के पास िै। उसने उसे उनके गले से बलपूवथक उताि हलया था।" सम्राट् ने चन्फ्दू िाि को वि माला लाने का आदेि हदया। चन्फ्दू िाि अपने घि गया; हकन्तुतु विााँ से वि खाली िाथ लौटा। उसने बिाना बनाया हक वि माला किीं ंगुम िो गयी िै। गुरु ििगोहवन्द ने चन्फ्दू िाि के िाथों ंअपने हपता को दी गयी यन्त्रणाओं ंसे सम्राट् को अवगत किाया हिसके फल-स्वरूप चन्फ्दू िाि के हवषय में सम्राट् का मत-परिवतथन िो गया। उसके प्रहत उनके मन में कटुता के भाव उत्पि िो गये। िब चन्फ्दू िाि सम्राट् के सुिख हबना माला के पहुाँचा, तब उसने ििगोहवन्द से उसे अपने साथ ले िाने कि उनके हपता के भयावि तथा

दु:खद अन्त के हलए प्रहतीिो लेने को किा। िािगोहवन्द ने इसे अस्वीकाि किते हुए किा - "सच्चा गुरु उदाि तथा संवेदनील िोता िै। उसकी करुणा क्षहणक निीं िोती। वि सवथभूतों के कल्याण की कामना किता िै।"

चन्फ्दू िाि के घि की तलािी लेने पि मोहतयों की वि माला हमल गयी।

गुरु िािगोहवन्द के अनुयायी चन्फ्दू िाि को अमृतसि ले गये। विााँ उन्होंनें गुरु अिुथन के प्रहत हकये गये उसके हनमथम व्यविाि के हलए उसे प्रायहित किने को हववि हकया। उस पि कीचि तथा गन्दी वस्तुएाँ िाली गयीं औि उसे नीचकुलोत्पि व्यस्क्तयों के िािा चप्पलों से हपटवाया गया। उसे प्रहतहदन िाि-िाि हभक्षाटन के हलए हववि हकया गया। एक भििभूि ने अपनी लोिे की कलछी से उसके कपाल पि सांघाहतक प्रिाि हकया औि भंहगयों ने उसके िवि को िावी नदी में फेंक हदया।

हपिथी के पुत्र मििबान तथा चन्फ्दू िाि के पुत्र किमचन्द ने गुरु के हवरुद्ध िािााँगीि के कान भिे, गुरु गुमतला गााँव के हनकट हिकाि खेल ििे थे। उसी समय िािााँगीि भी किला के हनकट हिकाि खेल ििा था। उसका एक श्वेत बाि गुरु के बािों में िा हमला। सम्राट के अनुचिों ने उस बाि को अपना बताया; हकन्तु गुरु ने उसे लौटाना अस्वीकाि कि हदया।

इसके फल-स्वरूप िािााँगीि अत्यन्त रुष्ट िो गया। उसने गुरु को पकिने तथा उनके अनुयाहययों को हतति-हवति किने के हलए सिक्त सेना भेि दी। अमृतसि के हनकट घनघोि युद्ध हुआ हिसमें िािााँगीि की सेना को पिाहित िोना पिा। गुरु ने िािकीय सेना के हवरुद्ध तीन लिाइयााँ िीतीं।

दामोदिी, नानकी तथा मिादेवी गुरु की ये तीन पहत्नयााँ थीं। गुरुहदत्ता दामोदिी के; अनीिाय, तेिबिादुि तथा अटल िाय नानकी के औि सूििमल मिादेवी के पुत्र थे।

गुरु िािगोहवन्द अब पिाहियों के हनकट कितािपुि में ििने लगे ििााँ १६४५ ई. में उनका देिान्त िो गया। इसके पूवथ उन्होंनें अपने पौत्र िि िाय को अपने उत्तिाहिकािी के रूप में नामांहकत कि हदया था। गुरु िािगोहवन्द सैंतीस वषों तक गुरु-गद्दी पि पदासीन ििे। उनका देिान्त अितालीस वषथ की आयु में हुआ।

गुरु िािगोहवन्द एक मिान् पुरुष, एक मिान् िन-नायक तथा एक मिान् पथ-प्रदिथक थे।

हसक्खों के हृदय में गुरु िािगोहवन्द के प्रहत आत्यस्न्तक प्रेम तथा आदि के भाव थे। उनकी मृत्यु को एक िाष्टीय आपदा समझा गया। उनके अनेक अनुयाहययों ने उनकी हचता पि िल कि स्वेच्छापूवथक प्राण त्यागना चािा। उनमें से एक िाट तथा एक िािपूत ने उनके चिणों पि अपने प्राण त्याग हदये।

हिन्फ्दू तथा मुसलमान गुरु िािगोहवन्द का समान भाव से आदि किते थे। उन्होंनें िािगोहवन्दपुि तथा अमृतसि के बीच मुसलमान याहत्रयों के हलए सुहविािनक स्थानों पि मस्स्िदों तथा देििों (Dehras) का हनमाथण हकया था।

उनको विााँ गुरु की औि से भोिन हदया िाता था।

गुरु िि िाय

गुरु िि िाय का िन्म १६३० ई. में िआ। गुरु ििगोहवन्द के पुत्र गुरुहदत्ता उनके हपता थे औि उनकी माता का नाम हनिाल कौि था। वि एक िान्त-सन्तुष्ट व्यस्क्त थे। युद्ध में उनकी रुहच निीं ंथी। वि िास्न्तपूणथ िीवन व्यतीत किना चािते थे।

गुरु ििगोहवन्द के पुत्र गुरुहदत्ता की अकाल मृत्यु हुई थी। मृत्यु के समय उसकी आयु चौबीस वषथ थी। हिकाि खेलते समय उसके एक हसक्ख सिचि ने भ्रमिि समझ कि एक गाय की ित्या कि दी। चिवािों ंने उस ित्यािो को पकि हलया औि किा हक िब तक गुरुहदत्ता इस गाय को िीहवत निीं ंकि देता, तब तक वे उसे निीं ंछोड़ेंगे। गुरुहदत्ता में िीवन-दान की िस्क्त तो थी; हकन्तु वि इसका प्रयोग निीं ंकिना चािता था, क्योंहक उसके हपता ििगोहवन्द चमत्काि-प्रदिथन के हविोधी थे। वस्तुतः वि िमथ-संकट में पड़ गया। हकन्तु अपने सिचि को मुक्त किवाने के हलए अपना िण्डा उस मृत गाय के िीि पि िख कि उसने किा- "उठो औि घास खाओ।" इन िब्दों ंको सुनते िी गाय खड़ी िो कि अपने झुण्ड में हमल गयी। इस चमत्काि की बात सुन कि गुरु ििगोहवन्द बहुत रुष्ट हुए। उन्होंनें किा- "यि बात मेिे हलए िषथविथक निीं ंिै हक तुम स्वयं को ईश्वि के समकक्ष समझ कि मृतकों ंको िीवन-दान देते िो।" उनके ये िब्द गुरुहदत्ता के हलए ममथभेदी हसद्ध हुए। वि अपने हपता से हवनयपूवथक हवदा ले कि बुद्धन िाि की कब्र की औि चल पड़ा। उस कब्र के पास उसने घास-फूस हबछायी, अपना िण्डा िीती पि फेंका औि उस घास-फूस पि लेट कि प्राण त्याग कि हदया। गुरु को उसकी मृत्यु से कोई दुःख निीं ंहुआ।

हसंािसन पि अहिकाि के हलए संघषथ में गुरु िि िाय ने दािाहिकोि की सिायता की।

िािकुमाि औिंगिेब ने अपने अग्रि दािाहिकोि की ित्या के हलए उसके भोिन में िेि की मूाँछ के बाल हमला हदये। इसके फल-स्वरूप दािाहिकोि िोग-ग्रस्त िो गया औि िीिे-िीिे उसकी दिा िोचनीय िोती गयी। उसके िाि के हनदान के पिात् सवथश्रेष्ठ िकीम इस हनष्कषथ पि पहुाँचे के बीस औंसं की ििीतकी तथा एक मािा के लौंगं से िी इस िोग का हनिाकिण सम्भव िै; हकन्तु इतनी भािी ििीतकी तथा लौंगं का हमलना असम्भव था। इस स्स्थहत में िािििााँ को पिामिथ हदया गया हक वि इसके हलए गुरु िि िाय से सिायता की याचना किे। पिले तो इसके हलए िािििााँ तैयाि निीं ंहुआ; हकन्तु बाद में उसने गुरु के पास एक पत्र भेि कि उनसे सिायता की याचना की। गुरु अपने भण्डाि गृि से अपेहक्षत भाि की ििीतकी तथा लौंगं हनकाल कि लाये। उनमें उन्होंनें मुक्ता तथा कुछ औि औषहियााँ हमला कि सम्राट् के दूत िािा हदल्ली हभिवा हदया। इसके सेवन से दािा के पेट से िेि की मूाँछ के बाल बािि हनकल गये औि वि स्वस्थ िो गया।

तत्पिात् औिंगिेब ने उसे हगिफ्ताि कि उसकी ित्या किवा दी।

िि िाय ने औिंगिेब से िास्न्तपूणथ सम्बन्ध स्थाहपत किने के प्रयास हकये। औिंगिेब ने िि िाय को ििािी दिबाि में उपस्स्थत िोने का आदेि हदया; हकन्तु मुगल सम्राट् के हवश्वासघात के भय से उन्होंनें अपने स्थान पि अपने वरिष्ठ पुत्र िाम िाय को हदल्ली भेि हदया। औिंगिेब ने िाम िाय को अपने दिबाि में बहुत हदनों ंतक िखा औि उसके प्रहत सिानुभूहतपूणथ व्यविाि हकया। िाम िाय के हपता ने उसे कठोि आदेि हदया था हक वि अपने मत के प्रहत हनष्ठावान िि औि हकसी भी परिस्स्थहत में उससे हवचहलत न िो।

औिंगिेब हसक्ख-िमथ के हवषय में िाम िाय से पयाथप्त िानकािी प्राप्त हकया किता था। 'पहवत्र ग्रन्' के प्रहत उसके हृदय में आदि की भावना िाग्रत िो उठी थी। उसके हवचािानुसाि हसक्खों ंके हसद्धान्त इस्लाम िमथ के सवथथा अनुरूप थे। उसने एक हदन 'िाग असा' नामक हसक्खों ंकी एक िाहमथक पुस्तक में उस्ल्लस्खत एक हवविण का अथ थ समझना चािा। उस हवविण में मृत्यु के उपिान्त हकसी मुसलमान के दःख भोग का उल्लेख था हिसके अनुसाि मुसलमान को कुम्भकाि के लोष्ठ में िाल हदया िाता िै हिसमे मृत्तका पात्रों ंतथा ईंटों ंके ढााँचों ंका हनमाथण िोता िै औि लोष्ठ में िलते समय वि उच्च स्वि में क्रन्दन किता िै। िाम िाय ने सोचा हक अपनी भीरुता के कािण इसके

यथाथथ वणथन से सम्राट् की भावनाएँ आित िो सकती िैं; अतः उसने उसकी सनुतुहष्ट के हलए 'मुसलमान' िब्द के स्थान पि 'बेईमान' िब्द िख हदया।

यि समाचाि िि िाय के कानों ंतक पहुँचा। उन्होंनें किा हक कोई भी नश्वि व्यस्ट्क्त गुरु नानक की वाहणयों ंमें कोई परिवतथन निीं ंकि सकता औि यहद हकसी ने ऐसा किने का दुस्सािस कि हदया िै, तो वि उसे देखना तक निीं ं चािते। उन्होंनें एक आदेि-पत्र के माध्यम से हसक्खों ंको सूहचत कि हदया हक हकसी भी हसक्ख को िाम िाय तथा उसकी सन्तान से कोई सम्बन्ध निीं ंिखना चाहिए। इसके साथ िी उन्होंनें यि भी कि हदया हक उनके इस आदेि का उल्लंघन किने वाले को बहिष्कृत कि हदया िायेगा।

गुरु ने किा- "गुरुत्व की तुलना ििेनी के दूध से की िा सकती िै हिसे स्वणथ-पात्र में िी भिा िा सकता िै। प्राणोत्सगथ के हलए उद्यत व्यस्ट्क्त िी इसके उपभोग का अहिकािी िै। िाम िाय को मेिे सम्मुख मत आने दो। उसे औिंगिेब के दिबाि में िि कि प्रचुि िनिाहि अहिथत किने दो।"

िाम िाय ने गुरु से क्षमा-याचना की। वि कीितपुि में उनकी प्रतीक्षा किता ििा; हकन्तु उसे क्षमा निीं ंहमल सकी। वि उनसे भेंट किना चािता थी; हकन्तु गुरु ने उसको इसकी अनुमहत भी निीं ंदी। उसे आदेि हदया गया हक वि िीघ्राहतिीघ्र कीितपुि छोड़ दे।

अपना अन्त हनकट िान कि उन्होंनें ििहकिन को अपना उत्तिाहिकािी हनयुक्त किने का अहवलम्ब हनिथय कि हलया। प्रभाविाली व्यस्ट्क्तयों ंकी उपस्ट्स्थहत में िि िाय ने ििहकिन को उसकी बाल्यावस्था में िी गुरु-गद्दी पि पदासीन कि हदया। उन्होंनें उसके समक्ष एक नारियल तथा पााँच पैसे िख कि उसकी चाि बाि परिक्रमा की। इसके पिात् उन्होंनें उसके ललाट पि हतलक हकया। लोगों ंने खड़े िो कि उसके प्रहत अपनी श्रद्धा प्रकट की।

१६६१ ई. में कीितपुि में िि िाय का बत्तीस वषथ की आयु में दिेान्त िो गया। वि गुरु-गद्दी पि सत्रि वषों तक पदासीन ििे।

गुरु ििहकिन

गुरु ििहकिन का िन्म १६५६ ई. में हुआ। गुरु-गद्दी पि पदासीन िोने के समय उनकी आयु मात्र पााँच वषथ थी। १६६१ ई. में उन्होंनें गुरु का पद-भाि ग्रिण हकया था। वि गुरु िि िाय के हितीय पुत्र थे औि उनकी माता का नाम हकिन कौि था। िाम िाय की एक भूल के कािण िी उसके हपता ने उनके अनुि ििहकिन को अपना उत्तिाहिकािी बनाया था; हकन्तु िाम िाय ने स्वयं को िी गुरु घोहषत कि हदया। उसके हिष्यों ंने चािों ंओि घूम-घूम कि प्रचुि मात्रा में िन एकत्र किने के प्रयत्न हकये। हकन्तु उनके इन हिष्यों ंने प्राप्त िनिाहि का अहिकांि स्वयं िख कि िाम िाय को अल्पांि िी हदया।

गुरु ििहकिन की बुस्ट्द्ध कुिाग्र थी औि उन्हें उच्चति हसस्ट्द्धयााँ भी प्राप्त थीं।ं वि हसक्खों ंको समुहचत हिक्षण दे कि उनकी िंकाओं ंका समािान हकया किते थे।

िाम िाय ने अपना पक्ष औिंगिेब के सम्मुख प्रस्तुत हकया। औिंगिेब को उत्तिाहिकाि के हलए भाइयों ंके इस पािस्परिक संघषथ के कुिलतापूवथक उपयोग में हसक्ख-िस्ट्क्त के हवनाि के माध्यम दृहष्टगत हुए। उसने गुरु को हदल्ली बुलाया। ििहकिन ने हदल्ली िा कि अपनी बुस्ट्द्ध तथा अपने ज्ञान से औिंगिेब तथा उसके पािमाथथदाता

अम्बि के िािा िाम हसंकिो पूणथतः सन्तुष्ट कि हदया। औिंगिेब ने ससिान उसका स्वागत सत्किा हकया औि उनके प्रहत अपना आदि व्यक्त किने के हलए अपने पुत्र मुअज्जम को उनके पास भेि हदया।

औिंगिेब ने बालक गुरु की आध्यास्त्मक िस्त्क्त का पिीक्षण किना चािा। उसने उन्हें िाहनयों ंके अन्तःपुि में भेि हदया ििााँ उसकी पटिानी नौकिानी का महलन वस्त्र पिने पीछे बैठी थी; हकन्तु अन्य िाहनयााँ तथा ििाि मिल की महिलाएाँ िािसी वस्त्राभूषण धािण हकये हुए आगे हविामान थी। बालक गुरु ने अपनी तीक्ष्ण दृहष्ट से पटिानी को िीघ्र िी पिचान हलया।

गुरु िििकिन पि पिले ज्वि का प्रकोप हुआ औि इसके पिात् उसके ििीि पि चेचक के दाने हनकल आये। अपना अन्त हनकट िान कि उन्होंनें गुरु ििगोहवन्द के पुत्र तथा अपने मिान् चाचा तेगबिादुि (बाबा बकाला) को अपना उत्तिाहिकािी हनयुक्त कि हदया। उन हदनों ंतेगबिादुि व्यास नदी के तट पि बकाला गााँव में एकान्तवास कि ििे थे।

१६६४ ई. में गुरु िििकिन का देिान्त िो गया। वि गुरु-गद्दी पि तीन वषथ तक िी पदासीन ििे।

गुरु तेगबिादुि

गुरु तेगबिादुि ििगोहवन्द के कहनष्ठतम पुत्र थे। उनका िन्म १६२१ में अमृतसि में हुआ। उनकी माता का नाम नानकी था। उनके हपता ने उनके सम्बन्ध में भहवष्यवाणी किते हुए किा था हक वि एक मिान् िन-नायक िोंगे। उन्होंनें उनका नाम तेगबिादि िखा औि किा हक तेगबिादि का पुन मुगलों ंके अत्याचाि का अन्त कि देगा। ििगोहवन्द किा किते थे हक उनका पुत्र तलवाि के आघात-सिन में समथथ एक िस्त्क्त-सम्पन्न योद्धा िोगा। यिी कािण िै हक उनको तेगबिादि के नाम से अहभहित हकया गया। िब गुरु ििगोहवन्द ने अपने उत्तिाहिकाि के हलए अपने पौत्र िि िाय को नामांहकत हकया, तब उन्होंनें अपनी पत्नी नानकी को इस भहवष्यवाणी से सान्त्वना प्रदान की हक एक हदन उसका पुत्र हनहित रूप से गुरु-गद्दी पि पदासीन िोगा औि इसहलए उन दोनों ंको िैयथ िािण किना चाहिए। उन्होंनें अपने िस्त्रास्त्र अपनी पत्नी को सौंपं कि उनको अनुदेहित हकया हक वि तेगबिादुि के वयस्क तथा हववेकिील िो िाने पि उन्हें उसे दे दें।

गुरु िििकिन ने अपने उत्तिाहिकािी के नाम की घोषणा निीं ंकी थी। िब उनके िीवन के अस्त्न्तम क्षणों ंमें उनके मुाँि से 'बाबा बकाला' िब्द हनकले, तब बकाला के बाईस हसक्खों ंने अनुहचत रूप से अपने को आध्यास्त्मक गुरु-गद्दी का अहिकािी घोहषत कि हदया। प्रत्येक तीथथयात्री या हसक्ख-मत के प्रहत आस्थावान् भक्त को उन सभी बाईस गुरुओं ंको भेंट देनी पड़ती थी। उन बाईस गुरुओं ंके व्यविाि से हवित्त िो कि तेगबिादुि अपने घि में िी ििने लगे। संयोगवि एक घटना से उत्तिाहिकाि के इस हववाद का सवथदा के हलए अन्त िो गया। मक्खन िाि नामक एक व्यस्त्क्त का माल से लदा ििाि समुद्र में िूबने वाला था। उसने किा हक यहद उसे इस मिा हवपहत्त से मुस्त्क्त हमल िायेगी, तो वि गुरु को पााँच सौ स्वणथ-मुििें भेंट किेगा। ििाि िूबने से बच गया। वि गुरु को अपनी भेंट देने आया; हकन्तु उसने देखा हक विााँ एक गुरु के स्थान पि बाईस गुरु हवद्यमान िैं। अतः उसने प्रत्येक गुरु को दो-दो स्वणथ-मुििें देने का हनिय हकया। उसको इस बात का हवश्वास था हक िो वास्तहवक गुरु िोगा, वि सािी स्वणथ-मुििों ंकी मााँग किेगा; हकन्तु उसकी इस कसौटी पि कोई भी खिा निीं ंउतिा। तब उसने लोगों ंसे पूछा हक इन बाईस व्यस्त्क्तयों ंके अहतरिक्त औि कौन िै हिसने गुरु-गद्दी के हलए अपना दावा प्रस्तुत हकया था। उत्ति में लोगों ंने गुरु-परिवाि के अयोग्य सदस्य तेगबिादुि के नाम का उल्लेख कि हदया। मक्खन िाि ने उन्हें अपने घि में एक एकान्तवासी का िीवन व्यतीत किते हुए पाया। उसने उन्हें दो स्वणथ-मुििें भेंट कीं;ं हकन्तु तेगबिादुि ने किा- "क्या तुम इन दो स्वणथ-मुििों ंसे मेिी पिीक्षा लेने आये िो ? अपने वचन का पालन किते हुए तुम मुझे पााँच सौ मुििें दो।

मैं ये ििमीं अपनी समझते हुए भी तुम्हें लौटा दूंगा। मैं अथाथभाव से ग्रस्त निीं ं हाँ।" इसके पित् गुरु ने उसे यि हवस्तािपूवथक बताया हक उस िििा की िक्षा कैसे िो सकी। यि सुन कि मक्खन िािा स्तब्ध िि गया औि उसे सचे्चे गुरु के दिथन भी िो गये। िीघ्र िी उसने यि घोहषत कि हदया हक उसे सचे्चे गुरु हमल गये िैं।

विााँ समिताथ या अन्य लोग तत्काल एकत्र िो गये। गुरु ििहकिन की मृतुयु के पित् भाई गुरुहदत्ता के यिााँ नारियल तथा पााँच पैसे सुिहक्षत रूप से िख हदये गये थे। उन्हें तेगबािदु के समक्ष प्रसुतुत कि १६६४ ई. में उन्हें गुरु-गद्दी पि पदासीन कि हदया गया।

गुरु-गद्दी पि तेगबािदु के आहिपत्य के कािण ढिमल (Dhermal) के हृदय में ईर्ष्ाथहग्न प्रज्वहलत िो उठी। उसने अपने एक अनुयायी को िबिा नौकिों ंके साथ उनकी ित्या किने के हलए भेिा हिन्होंनें गुरु को गोहलयों ंसे आित कि हदया; हकनु्तु चोट सांघाहतक निीं ंथी।

तेगबािदु सन्तोष तथा िास्ट्न्त की प्रहतमूहतथ थे। उन्होंनें कितािपुि में एक दुगथ का हनमाथण हकया ििााँ उन्होंनें एक न्यायालय की भी व्यवस्था की। उन्होंनें प्रयाग, कािी, पटना तथा गया के अहतरिक्त भाित के सभी क्षेत्रों ंमें पयथटन हकया। हसक्खों ंकी हिक्षा के हलए उन्होंनें पटना में एक मिाहवद्यालय की स्थापना की।

िि िाय के असनु्तुष्ट पुत्र िाम िाय ने सम्राट् औिंगिेब को सूहचत हकया हक गुरु की यिेनाएाँ िाज्य के हलए भयावि िैं। उसने उसे सुझाव हदया हक गुरु को हनयस्ट्न्त्रत किने के हलए िीघ्राहतिीघ्र कोई कायथवािी िोनी चाहिए। के यिााँ रुके। िामहसंि ने गुरु का पक्ष-समथथन किते हुए औिंगिेब को तेगबािदि को हदल्ली लाया गया। वि अम्बि के िािपूत सिदाि िािा िाम हसंि आश्वस्त कि हदया हक गुरु एक िास्ट्न्त-हप्रय व्यस्ट्क्त िैं औि उनमें िािनैहतक िस्ट्क्त की प्रास्ट्प्त की आकांक्षा निीं ंिै।

तेगबािदु िािा िाम हसंि के साथ कामरूप तथा असम गये। िािा िाम हसंि ने उनसे कामरूप-हविय के हलए सिायता की याचना की। गुरु ने इस अहभयान में उनको सियोग प्रदान हकया।

बि गुरु पटना में हनवास कि ििे थे, तब उनकी पत्नी गुििी ने एक पुत्र को िन्म हदया िो बाद में गोहवन्द हसंि के नाम से प्रख्यात हुआ। हििु के िन्म के अवसि पि एक फकीि तथा उसके िाहगदों को आकाि में एक ज्योहत का दिथन हुआ। फकीि इस सत्य से परिहचत िो गया हक एक ऐसे व्यस्ट्क्त का िन्म हुआ िै िो सन्त के साथ-साथ योद्धा भी िोगा। तत्पित् उसने उस ज्योहत का अनुगमन हकया िो उसे नवित हििु के पटना-स्ट्स्थत हनवास-स्थान तक ले गयी।

गोहवन्द िाय (गुरु गोहवन्द हसंि) में बाल्यावस्था से िी सामरिक िौयथ के लक्षण परिलहक्षत िोने लगे थे।

पटना के दीघथकालीन प्रवास के पित् तेगबािदु पंिाब लौट आये। विााँ आ कि वि सतलि के तट पि स्ट्स्थत आनन्दपुि में स्थायी रूप से ििने लगे।

सम्राट् औिंगिेब ने कश्मीि के हिन्फ्दुओं ंके िमाथन्तिण का आदेि दे हदया। कश्मीरियों ंने गुरु तेगबािदु के पास अपना एक प्रहतहनहि-मण्डल भेिा। उस प्रहतहनहि-मण्डल िािा व्यक्त कश्मीरियों ंकी व्यथा-कथा से उनको बहुत दु:ख हुआ। वि औिंगिेब के इस कुस्ट्त्सत अहभयान को हवफल किने की युस्ट्क्त पि हवचाि किने लगे। उनके अल्पायु पुत्र गोहवन्द िाय ने उनकी हवषण्णता का कािण पूछा। गुरु ने किा- "संसाि अत्याचाि तथा उत्पीड़न से दु:खी िै। िो प्राणोत्सगथ के हलए उद्यत िै, विी इस िस्ती को अत्याचािों ंतथा उत्पीड़कों के भाि से मुक्त कि सकता िै। बालक ने किा हक एकमात्र उसके हपता िी यि काम कि सकते िैं। गुरु अपने पुत्र के इन िब्दों ंसे अत्यहिक

अनुप्राहणत हुए। उन्होंनें कश्मीरियों ंसे किा हक वे सम्राट् से कि दें हक वे गुरु के िमाथन्तिण के बाद िी इिम िमथ ग्रिण किंगे। सम्राट ने गुरु को हदल्ली आने का आदिे हदया।

तेगबिादिु सम्राट् का आदिे मान कि आगिा पहुँचे ििाँ से कोतवाल उनको हदल्ली ले गया। उन्होंनें इिमि–मथ ग्रिण को दृढ़तापूवथक अस्वीकिा कि हदया। फलतः उन्हें किािागृ में िाल हदया गया। एक बिा वि किािागृ की सबसे ऊपि वाली मंहिल पि चले गये। लोगों ंको ऐसा प्रतीत हुआ हक वि विाँ से िाहनयों ंके व्यस्ट्क्तगत कक्ष की ओि देख ििे िैं। सम्राट् ने यि सुन कि उन पि आपहत्तिनक कृत्य का अहभयोग लगाया। गुरु ने किा हक वि किािागृ के िीषथ भाग पि िा कि हकसी के व्यस्ट्क्तगत कक्ष पि दृहष्टपात निीं ंकि ििे थे। वि तो यूिोप के उन लोगों ं को देख ििे थे िो मुगल साम्राज्य के हवनिा के हलए भाित-भूहम पि चले आ ििे थे।

इस बीच गुरु के साथ किािागृ में लाये गये हसक्खों ंमें से तीन हसक्ख फिाि िो गये। िेलि ने गुरु को लोिे के कठघिे में बन्द कि हदया ििाँ उन्हें हनमथमतापूवथक िािीरिक यन्त्रणा दी गयी। िब गुरु का प्राणान्त िोने को था, तब उन्होंनें अपने पुत्र गोहवन्द िाय को हलखा- "मेिी िस्ट्क्त समाप्त िो चुकी िै। मैं बेहड़यों ंमें आबद्ध हाँ औि मेिे हलए मुस्ट्क्त का कोई मागथ निीं ंिै। नानक ने किा था- 'ईश्वि िी मेिा ििण-स्थल िै'।" गुरु ने अपने पुत्र के पास गुरु-गद्दी पि उसके उत्तिाहिकाि के प्रतीक स्वरूप एक नारियल तथा पााँच पैसे भेिे हदये।

गुरु अपने हनिय पि अहिग थे। कठोितम यन्त्रणा भी उनको हवचहलत निीं ंकि सकी। सम्राट् ने उन्हें िमकी देते हुए किा हक या तो वि इिमि–मथ ग्रिण कि लें या अपनी सिािता की हसस्ट्द्ध के हलए हकसी चमत्काि का प्रदिथन किें। यहद वि ऐसा निीं ंकिेंगे, तो उन्हें मृत्य-दण्ड हदया िायेगा। गुरु ने उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकिा कि हदया। फलतः सम्राट ने उनको मृतुयु दण्ड का आदिे दे हदया औि एक सावथिहनक स्थान पि उनकी ित्या कि दी गयी। उनका ििि उनके एक हनष्ठावान हिर्ष् के अंक में िा हगिा। तभी िूल-भिा झंझावात आया औि अन्धकाि छा गया। उसी अन्धकाि में उनका वि हसक्ख उनके ििि को ले कि तीव्र गहत से आनन्दपुि की औि दौड़ पड़ा ििाँ उनके ििि का दाि-संस्काि हुआ। पााँच हसक्ख उनके मृत ििीि को गाड़ी पि लाद कि अपने घि ले गये औि उसे विीं ंिला हदया गया। उस घि में आग लग गयी औि उन हसक्खों ंका यि काम लोगों ंके हलए अहवहदत िी िि गया। उन्होंनें अस्ट्स्थयों ंको एकत्र कि िाती में गाड़ हदया। तत्पिात् गोहवन्द िाय को हवहिवत् दसवााँ गुरु घोहषत कि हदया। वि अस्ट्न्तम गुरु थे। उन्होंनें अपने हपता की प्रिंसा में हनम्नांहकत पंस्ट्क्तयााँ हलखी :

"डदल्ली के सम्राट् के डिर पर अपना मरडत्तका पात्र िोड कर
उन्होंनें स्वग के डलए प्रस्थान डकया।
िेगबहादुर ने जो डकया
वह सोंसार में जन्म-ग्रहण करने वाले
डकसी भी व्यक्ति के डलए असम्भव रहा।
सारा सोंसार िोकाकुल था उनकी मरतुयु से
डकनुतु स्वगक में आनन्द का महोत्सव मनाया जा रहा था।"

गुरु तेगबिादिु ने मिान् गुरु गोहवन्द हसंि के हलए मागथ प्रिस्त कि हदया था। हसक्खों ंमें वि सच्चे बादिाि के रूप में पूहित हुए। उन्होंनें आिा की आत्यस्ट्न्तक मुस्ट्क्त के हलए उनका पथ-प्रदिथन हकया। तेगबिादिु का हिंसाक अन्त गोहवन्द हसंि के मन पि अहमट प्रभाव अंहकत कि गया। उन्होंनें मुसलमानों ंसे प्रहतिोि लेने तथा अपने हसक्ख-समुदाय को एक िाहमथक तथा सैन्य संघटन में रूपान्तरित किने का दृढ़ हनिय कि हलया औि अपने इसे उद्देश्य की पूहतथ में वि सफल भी िुए।

तेगबिादिु गुरु-गद्दी पि ग्यािि वषों तक पदासीन िुए। उनकी ित्या चौवन वषथ की आयु में की गयी।

गुरु गोहवन्द हसंि

भूडमका

गुरु नानक ने हसक्ख-मत का संस्थापन हकया। गुरु अंगद, गुरु अमिदास, गुरु िामदास, गुरु अिुथन देव, गुरु ििगोहवन्द, गुरु िि िाय, गुरु ििहकिन, गुरु तेगबिादुि तथा गुरु गोहवन्द हसंि उनके उत्तिाहिकािी थे।

गुरु अंगद ने हसक्खों ंको एक पन् या सम्प्रदाय के रूप में संघहटत हकया। उन्होंनें एक बृिद् पैमाने पि एक सावथिहनक भोिनालय या लंगि की व्यवस्था की हिसके िाि सभी मतों ंतथा वगों के हलए उन्मुक्त िोते थे। उन्होंनें यि हनयम बना हदया था हक िो भी उनके दिथन के हलए आयेगा, उसको उनके लंगि में हन:िुल्क भोिन किना अहनवायथ िोगा। उनका यि हनयम िाहत-भेद के प्रहत उनकी अवज्ञा का िी द्योतक था। ब्राह्मण, क्षहत्रय, वैश्य तथा िूद्र ये सभी हबना हकसी भेद-भाव के सािाँ एक पंगत या पंस्ट्क्त में बैठ कि भोिन किते थे।

चौथे गुरु िामदास ने सोचा हक एक ऐसे स्थान का िोना हनतान्त आवश्यक िै ििााँ हसक्ख समय-समय पि एकत्र िो कि हवचाि-हवहनमय कि सकें। उन्होंनें िामदासपुि में एक पुिाने तालाब का िीणोद्धाि कि उसको अमृतसि के नाम से अहभहित कि हदया। अमृतसि का अथथ िोता िै अमृत या अमित्व का कुण्ड। इसके मध्य में उन्होंनें एक भव्य मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया। उन्होंनें िामदासपुि का नाम बदल कि उस तालाब के नाम पि अमृतसि कि हदया औि अब वि स्वणथ-मस्ट्न्दि हसक्खों ंका मुख्यालय िो गया िै। इस प्रकाि हसक्खों ंका एक पृथक् समुदाय संघहटत िो गया।

िामदास के पुत्र पंचम गुरु अिुथन ने हसक्खों ंके पहवत्र ग्रन् 'ग्रन् साहिब' का संकलन हकया औि अमृतसि के स्वणथ-मस्ट्न्दि में आहदपूवथक हिविमान कि हदया। यि ग्रन् हसक्खों ंके हलए 'बाइहबल' तथा 'गीता' िै। हसक्ख-मत के प्रचाि-प्रसाि में उनका योगदान सवाथहिक मित्त्वपूणथ िाि। उन्होंनें हसक्खों ंको एक समुदाय में संघहटत हकया।

कई काििों ंसे गुरु अिुथन तथा ििााँगीि एक-दूसिे के ित्रु िो गये। १६०६ ई. में गुरु अिुथन पि हिद्रोि का अहभयोग लगा कि उनको घोि यन्त्रणा देने के पिात् उनकी ित्या कि दी गयी।

गुरु अिुथन ने अपने पुत्र ििगोहवन्द को गुरु-गद्दी पि पदासीन कि हदया। वि हसक्खों ंके छठे गुरु थे। उन्हें ििााँगीि ने बािि वषों तक कािागृि में िखा। िि िाय सप्तम गुरु थे। अष्टम गुरु ििहकिन का युवावस्था में िी देिान्त िो गया।

गुरु गोडवन्द का जन्म

गुरु िि िाय के पुत्र तेगबिादुि नौवें गुरु थे। उन्होंनें आनन्दपुि नामक एक नया नगि बसाया। गुरु गोहवन्द हसंि उनके एकलौते पुत्र थे। उनका िन्म १६६६ ई. में पटना में हुआ था।

अल्पायु में िी वि समवयस्क बालकों ंका सैन्य दल बना कि उसके सेना-नायक िो िाया किते थे। कृहत्रम िनुष-बाण तथा अन्य िस्त्रास्त्र उनके स्ट्खलौने थे। लड़ाइयों ंका स्वााँग तथा सैहनक व्यायाम उनके हप्रय खेल थे। उन्होंनें बालकों ंके एक हनयहमत सैन्य दल का संघटन कि हलया था। बालकों ंका यि दल उनको अपना नायक मानता था। उन्होंनें इन बालकों ंकी िस्ट्क्त, सहिष्णुता तथा उनके सैन्य कौिल के पिीक्षण के हलए उनकी दो टोहलयों ंका संघटन हकया था िो एक-दूसिे की प्रहतस्पर्द्धी िोती थीं।ं

गुरु गोडवन्द की डविेषिाएँ

गुरु गोहवन्द हसंि एक योद्धा सन्त थे। उनका हृदय ि◌ौयथ तथा ि◌ैयथ से ओत-प्रोत था। उन्होंनें समस्त पंाबि तथा हसक्ख-समुदाय को वीीहचत मनोवेग तथा सैहनक भावना से अनुप्राहणत कि हदया। उनके ि◌ब्दों ◌ंमें तोपों ◌ंकी गिथना तथा लिौ उपकिणों ◌ंकी आपसी टकिाट की गूंि◌ोती थी ि◌ो लोगों ◌ंके हृदय में सामरिक ऊिथ की सृहष्ट कि देती थी। पंाबि के इस मिान ि◌न-नायक की उपस्ट्स्थहत में कायि भी ि◌ुविी बन ि◌ाता था। गुरु गोहवन्द एक चमत्कारिक सन्त सेनानायक थे। उनके ि◌ब्दों ◌ंसे ि◌स्ट्क्त की देवी अथाथत माता ि◌स्ट्क्त की साँसों ◌ंकी सुिहभ हनःसृत िोती थी। उन्होंनें खालसा बनुधुत्व का सुसंति हिलान्यास हकया औि लोगों ◌ंको ि◌न-सेवा के हलए ि◌ोठों ◌ंपि मुस्कान हलये आोत्सगथ की हिक्षा दी।

गुरु गोहवन्द हसंि प्रचण्ड व्यस्ट्क्तत्व के स्वामी थे। वि एक अहतमानव थे। वि भूलुस्ट्ण्ठत को भी ि◌ीषथस्थ कि हदया किते थे। उनकी ओिमयी उपस्ट्स्थहत में दुबथलता भी अप्रतिीय ि◌स्ट्क्त में रूपान्तरित ि◌ो ि◌ाती थी। उनकी दीस्ट्प्तमयी तलवाि अन्यायी-अनाचािी लोगों ◌ंको आतंहकत कि देती थी। मृतुयु के प्रहत उनके मन में प्रगाढ़ प्ेरेम था। वि इस सत्य से परिहचत थे हक आिा अमत्यथ ि◌ै।

गुरु गोहवन्द हसंि के हिर्ष् सन्त थे ि◌ो युद्ध-क्ेषेत्र में भी ईश्वि से हवलग निीं ◌ंि◌ोते थे। उनको ईश्वि के ध्यान के हलए पद्मासन या हसद्धासनि◌ैसे आसनों ◌ंकी आवश्यकता निीं ◌ंि◌ोती थी। ि◌ब वे उत्पीहितों ◌ंतथा असिायों ◌ंके ि◌क्षाथथ युद्धित ि◌ोते थे, तब वे समाहिस्थ ि◌ो कि अथाथत् एकाग्र भाव से ि◌तुरु के हवरुद्ध संघषथ किते थे।

गुरु गोहवन्द हसंि दिे-भक्त मात्र न ि◌ो कि कहव, दािथहनक तथा पैगम्बि भी थे।

बाल्यावस्था में ि◌ी उनमें उदात्त भावों ◌ंतथा मिान् उद्देश्यों ◌ंके हचह्न परिलहक्षत ि◌ोने लगे थे। नौ वषथ की अल्पायु में ि◌ी उन्होंनें अपने हपता के समक्ष सत्य तथा ि◌मथ-हनष्ठा की बहलवेदी पि अपना ि◌ी अहपथत किने का प्रस्ताव प्रसुतुत कि हदया। एक बाि कश्मीि के पस्ट्ण्डत पािमिथ तथा सियोग के हलए तेगबिादुि के पास आये। उन्होंनें उनसे किा हक हकसी भी मूल्य पि उनके ि◌मथ की ि◌क्षा ि◌ोनी चाहिए।

औिंगिेब के प्रहतहनहि ने उन पस्ट्ण्डतों ◌ंसे किा हक उनको इिाम तथा मृतुयु में से हकसी एक को चुनना ि◌ै। तेगबिादुि ने सोचा हक यहद कोई हविुद्ध तथा पहवत्र व्यस्ट्क्त अपने प्राणों ◌ंकी बहल दे दे, तो हिन्फ्दुत्व की ि◌क्षा ि◌ो सकती ि◌ै। इससे ि◌माथन्ध सम्राट् की आँखें भी खुल सकती ि◌ैं। उन्होंनें सोचा हक वाँ उनसे भी पहवत्र लोग ि◌ैं। वि दुःखी औि हचन्ताग्रस्त ि◌ो गये। उनके अल्प-वयस्क पुत्र ने उनके दुःख तथा उनकी हचन्ता के किाण का पता लगा कि उनसे किा- "मेि पूज्य हपता, इस ि◌ीती पि आपसे अहिक मिान् तथा पहवत्र कौन ि◌ै ?" पूत्र के इन ि◌ब्दों ◌ंने हपता की समस्या का समािान प्रसुतुत कि हदया। अपने पुत्र के इस उपािमक तथा हनभाथन्त उत्ति से तेगबिादि के हनिय में औि अहिक दृढ़ता आ गयी।

बि गोहवन्द ि◌ाय को गुरु-गद्दी पि पदासीन हकया गया, तब उनकी आयु केवल नौ वषथ थी। ि◌ब उनके यज्ञोपवीत की बात चली, तब उन्होंनें किा हक उनका लक्ष्य अत्याचारियों ◌ंको दस्ट्ण्डत एवं उनूमूहलत किना ि◌ै औि उनके इस अहभयान में इस पहवत्र सूत्र की भाँहत तलवाि ि◌ी उनको सिायता प्रदान किेगी।

गुरु गोहवन्द हसंि गुरुमुखी, संसूकृत तथा फािसी के मिान् हविान् थे। वि कहवयों ◌ंतथा सुसंसूकृत व्यस्ट्क्तयों ◌ंको संिक्षण प्रदान किते थे। उन्होंनें भगवान् ि◌ाम, भगवान् कृष्ण तथा िुथ्न की प्ेरिणादायी किाहनयों ◌ंको हिन्दी में पद्य-

बद्ध किने के हलए अनेक कहवयों ंको हनयुक्त कि हलया था। उन्होंनें स्वयं भी हिन्दी में कहवताएँ हलखीं ंिो आि भी अप्रहतम समझी िाती िैं।

गुरु गोहवन्द हसंि ने िि से लड़ते हुए अपनी तलवाि से उसे माि िाला था।

गुरु गोडवन्द का डववाह

िीतो, सुन्दिी तथा साहित देवी (Sahit Devi) गुरु की ये तीन पहत्नयााँ थी। उनके चाि पुत्र थे। वरिष्ठतम पुत्र अहित हसंि सुन्दिी का पुत्र था। िीतो ने तीन पुत्रों ंको िन्म हदया हिनके नाम िोिावि हसंि, िुझाि हसंि तथा फतेि हसंि थे। िब साहित देवी ने सन्तान प्राप्त की इच्छा प्रकट की, तब गुरु गोहवन्द हसंि ने किा हक समग्र खालसा िाष्ट्र उसको माता समझेगा। अतः उनको खालसा की माता किा िाने लगा।

गुरु की भेंट्

काबुल के दुनीचन्द नामक एक हसक्ख ने गुरु को भेंट में एक ऐसा हिहवि हदया था। इस हिहवि पि मनोिि दृश्यों ं की सुनिली-रूपिली कढ़ाई की गयी थी। तीथाथटन पि हनकला आसाम का िािा ितन हसंि गुरु के प्रहत सम्मान प्रकट किने के हलए आनन्दपुि आया। उसने गुरु को भेंट स्वरूप पााँच घोड़े, एक पंचकला औि एक हवलक्षण िाथी हदया। पंचकला में गदा, भाला, तलवाि, छुिा तथा हपस्तौल समवेत रूप में समाहवष्ट थे औि िाथी में उसके ललाट से ले कि पूाँछ तक एक श्वेत िेखा थी। वि गुरु के ऊपि पंखा झलता, उनके पद-प्रक्षालन के समय अपनी सूंड से िल-पात्र पकड़े ििता, तौहलये से उनके पैि पोंछता, उनके िूतों ंको ठीक किता तथा उनके धनुष से हनकल चुके बाणों ं को वापस ले आता। िािा िाम िाय ने उन्हें एक बहुमूल्य हसंिासन भी भेंट हकया हिसकी एक कमानी को दबाते िी कठपुतहलयााँ बािि आ कि खेल हदखाने लगती थीं।ं

भीमचन्द से लडाई

गुरु गोहवन्द हसंि ने अपने सैहनकों ंकी संख्या में वृस्द्ध की। उन्होंनें यमुना-तट पि पौंटा नामक एक दुगथ का हनमाथण हकया।

गुरु की महिमा में अहिकाहिक वृस्द्ध िोती गयी। उन्होंनें अपने अनुयाहययों ंको सन्त सैहनक बनाया। उन्होंनें अपनी सेना में सैहनक कवायद की एक नयी हवहि तथा युद्ध के एक नये नगाड़े का प्रवतथन हकया। उनकी सेना में प्रहतहदन नये-नये अभ्यहथथयों ंका नामांकन िोने लगा। भेंट के रूप में गुरु को बहुसंख्यक घोड़े तथा िस्त्रास्त्र प्राप्त हुए। हकसी भी रूप में सम्राट् िािा उत्पीहित वीि तथा सािसी योद्धा गुरु गोहवन्द हसंि के यिााँ एकत्र िोने लगे औि उन्हें सैन्य-हवज्ञान में प्रहिहक्षत तथा अनुिाहसत हकया िाने लगा।

पवथतीय िाज्यों ंके अहिपहत उनकी समृस्द्ध तथा सम्मुहत को सतकथ दृहष्ट से देख ििे थे। हबलासपुि का िािा भीमचन्द, हिसके िाज्य-क्षेत्र के अन्तगथत उस समय गुरु का हनवास था, उनसे ईर्ष्ाथ किने लगा। उसने पिसादी नामक िाथी को पाने के हलए अनेक कुस्त्सत प्रयत्न हकये; हकन्तु उसके सािे प्रयत्न हनष्फल िोते गये।

तत्पिात् िािा ने एक सन्देि के माध्यम से गुरु से किा हक वि उसके पास िाथी भेि दें औि यहद उन्होंनें िाथी निीं ं भेिा, तो उन्हें उसके िाज्य से हनष्काहसत कि हदया िायेगा। िािा ने उनके नगाड़े के स्वि के प्रहत भी अपनी आपहत्त व्यक्त की। उसने इसे अपनी प्रभु-सत्ता के हवरुद्ध एक चुनौती मान हलया। गुरु ने िािा से किा- "एक अनश्वि स्रष्टा के अहतरिक्त मुझे अन्य कोई आदेि निीं ंदे सकता। मैं तुम्हािे िाज्य की सीमा के अन्तगथत निीं ंििता।

मैं उस नगि में िित़ा हाँ हिसे मेि हपता ने स्वणथ दे कि खिीदा था। मैं पिसादी को तुम्हािो िवाले निीं ंकि सकता। मैं तुमसे युद्ध के हलए सवथदा उद्यत हाँ। मुझे तुम्हािी िमहकयों ंका कोई भय निीं ंिै।" उनके इन िब्दों ंसे ििा अत्यन्त कुरुद्ध िो उठा औि १६८२ ई. में उसने उन पि आक्रमण कि हदया। इस लिाई में भीमचन्द पिाहित हुआ औि उसके बहुत से सैहनक मािे गये।

भोंगानी की लडाई

एक अन्य अवसि पि पवथतीय िािाओं ंने गुरु की सेना पि आक्रमण कि हदया। भीमचन्द उनका नेता था। भंगानी में घोि युद्ध हुआ। दोनों ंओि के बहुसंख्यक सैहनक मािे गये। गुरु की सेना को हविय प्राप्त हुई औि हवपहक्षयों ंको पलायन किना पिा।

चाम कौर की लडाई

औिंगिेब ने सिहिन्द के सूबेदाि ववािी खाँ को आनन्दपुि को अपने अहिकाि में लेने तथा गुरु को दिबाि में ले आने का आदेि हदया। इस अवसि पि अनेक हसक्खों ंने गुरु का साथ छोि हदया; हकन्तु गुरु ने अपने िेष हनष्ठावान सैहनकों ंको साथ ले कि ििी सेना के हवरुद्ध युद्ध हकया।

चाम किौ में भीषण युद्ध हुआ। गुरु के दो वरिष्ठतम पुत्र सािब अहित हसंि औि सािब िोिाि हसंि ने वीितापूवथक लिते हुए युद्ध-भूहम में अपने प्राणों ंका हवसिथन कि हदया। उनके कहनष्ठतम दो पुत्र अपनी हपतामिी के साथ बच कि हनकल गये।

सिसा नदी के पास हुई हवनाि-लीला के पिात् गुरु का वृद्ध ब्राह्मण िसोइया गंगािाम उनके दो पुत्रों, ंिुझाि हसंि तथा फति हसंि औि गुरु की माता को ले कि अपने घि चला गया। उस समय िुझाि हसंि तथा फति हसंि की आयु क्रमिः आठ वषथ तथा छि वषथ थी। इन लोगों ंके पास रुपये तथा िेवाित थे हिन्हें अवसि का लाभ उठा कि गंगािाम ने चुिा हलया। गुरु-माता ने उसके इस दुव्यथविाि के हलए उसकी भत्सथना की हिससे कुरुद्ध िो कि उसने उन लोगों ंको अपने घि से हनकाल हदया। उस हवश्वासघाती ने उनकी हगिफ्तािी के हलए उनके आगमन की सूचना पुहलस को पिले िी दे दी थी। उन्हें सिहिन्द के सूबेदाि ववािी खाँ के पास ले िाया गया हिसने उन्हें इस्लाम-मथ ग्रिण किने को किा। गुरु के पुत्रों ंने उसके इस प्रस्ताव को अस्वीकाि कि हदया हिसके परिणाम-स्वरूप उनको िीहवतावस्था में िी सिहिन्द में पत्थि की दीवािों ंके बीच दफना हदया गया।

इस िोक-समाचाि से गुरु हवचहलत निीं ंिो सके। उन्होंनें किा- "हवनाि मेिे पुत्रों ंका निीं, ंसिहिन्द का िोगा।"

मुिसर की लडाई

मुक्तसि में गुरु तथा सम्राट् की सेनाओं ंके बीच घोि युद्ध हुआ। उनका परित्याग कि िो लोग चले गये थे. उनको अपने कुकृत्य पि पिात्ताप हुआ औि वे लोग पुनः उनके साथ िो गये। गुरु हवियी हुए। औिंगिेब ने उन्हें आश्वासन देते हुए उनसे व्यस्ट्क्तगत रूप से हमलने की इच्छा प्रकट की। गुरु ने उसके पास एक िफिनामा अथाथत् पद्य-बद्ध पत्र हलखा हिसमें उन्होंनें उस पि हवश्वासघात तथा दिगी चाल का दोषािोपण किते हुए किा हक उनको उसके उस व्यवसाय पि हवश्वास निीं ंिै हिसे वि िमथ के नाम पि चला ििा िै। यि पत्र सम्राट् के हलए ममथस्पिी हसद्ध हुआ। इसके पिात् १७०७ ई. में िीघ्र िी उसकी मृत्युयु िो गयी।

खालसा का जन्म

गुरु गोहवन्द हसंि ने हसक्खों ंकी एक बैठक में किा- "मैं पााँच हसक्खों ंके ििि चािता हाँ।" इसे सुन कि विााँ एकत्र सभी लोग स्तब्ध िि गये। ििाौ के एक खत्री हसक्ख ने आगे बढ़ कि किा- "िे गुरु, िे सचे्चे बािििा, मैं आपको अपना ििि अहपथत किता हाँ।" गुरु उसे एक ब्रि ििहमयाने के भीति ले गये। ििा बैठे लोगों ंको तलवाि के ििाि का स्वि सुनायी पड़ा। इसके साथ िी उन लोगों ंने ििहमयाने से हनकलती हुई िक्त की ििाि भी देखी। इसके पित गुरु िाथ में िक्त-िंहित तलवाि हलये ििा आये औि अपने स्थान पि बैठ गये। अब उन्होंनें बहल के हलए दूसिे व्यस्ट्क्त की मााँग की। ििा नामक के िाट ने आगे बढ़ कि स्वयं को उनके समक्ष प्रसुतुत कि हदया। गुरु उसे भी ििहमयाने में ले गये ििााँ उसके साथ भी विी व्यििाि हुआ िो दयािाम केसाथ हकया िा चुका था। इसके पित् हिमना (Himnah) ििा, साब ििाम गई तथा मोकम चन्द िििि ने अपने ििि अहपथत हकये।

कुछ क्षणों ंके पित् गुरु उन पााँचों ंव्यस्ट्क्तयों ंके साथ ििा आये। वे पााँचचाथ पूवथवत् स्वस्थ-सकुिल थे। ििहमयाने में पााँच बकरियों ंको माि गया था। गुरु गोहवन्द हसंि ने उन पााँचों ंचयहनत व्यस्ट्क्तयों ंके समक्ष िीवन के यथाथथ हसद्धान्तों ंकी व्याख्या की। उनको कच्छा आहद श्वेत वस्त् पिना कि उनके िाथों ंमें कृपाण दे हदये गये। वे 'विो गुरु' का िप किते हुए गुरु के सामने खड़े िो गये। गुरु ने एक लौि-पात्र में नदी का िुद्ध िल भि कि उसमे कुछ बतािे डाले औि उन्हें दो ििाि वाले कृपाण से हिलाि-ुला कि उस िल में भली-भााँहत हमला हदया। इसके पित् उन्होंनें घोहषत हकया हक उन्होंनें अमृत तैयाि कि हलया िै। उन्होंनें उसे उन पााँचों ंव्यस्ट्क्तयों ंके ऊपि हछिक कि उमे हपला हदया। उन्होंनें उन्हें आदेि हदया हक वे अपने नाम के आगे 'हसंि' िब्द लगाया किें। वे पााँचों ंउनके प्रथम दीहक्षत हिष्य् हुए।

इन चुने गये उतूकृष्ट हिष्यों ंको 'पंच प्यािो' किा गया। खालसा पन् में इनको हवहिष्ट स्थान प्राप्त िै। इन लोगों ंने गुरु के पि-हिष्यों ंके रूप में ििमथ के प्रचाि-प्रसाि में गुरु को मित्त्वपूणथ योगदान हदया।

खालसा का अमरि या उसका दीक्षा-सोंस्कार

कोई व्यस्ट्क्त लम्बे-लम्बे बालों ंसे िी खालसा निीं ंबन िाता। उसे स्वयं में नैहतक तथा आध्यास्ट्कि िस्ट्क्त सुफुरित किने के हलए 'अमृत-पान' कि दीक्षा ग्रिण किनी चाहिए।

नव-दीहक्षत व्यस्ट्क्त अपने िाथ में कृपाण ििाण किता िै। वि पहवत्र ग्रन् के सुिख खड़ा िो कि 'विो गुरु' का हनिन्ति िप किता ििता िै। उसके पास केि, कच्छा, कंघा, कड़ा तथा कृपाण का िोना अत्यावश्यक िै।

नदी से हविुद्ध िल लाया िाता िै। इसके पित् उसे एक स्वच्छ लौि पात्र में डाल कि उसमें बतािे डालते िैं औि बतािों ंको दो ििाि वाले कृपाण से हिलाि-ुला कि पानी में भली हवहि हमला देते िैं। ऐसा किते समय 'विो गुरु' का िप किना चाहिए। इस अवसि पि 'िपुिी' का पाठ भी अहनवायथ िै। 'अमृत' तैयाि किने वालों ंको हनष्ठावान् 'हसंि' तथा हनष्कलुष-चरित्र िोना चाहिए। इन लोगों ंकी संख्या पााँच िोती िै।
अंिलि में उस 'अमृत' को भि कि नव-दीहक्षत व्यस्ट्क्त की आाँखों ंतथा सके मुख-मण्डल पि पााँच बाि हछिका िाता िै। इसके बाद इसका हछ़िकाव पााँच बाि उनके ििि के केिों ंपि भी िोता िै। दीक्षा सिािोि की समास्ट्प्त के पित् उसे इस सत्य से परिहचत किा हदया िाता िै हक उसका पुनिथन्म हुआ िै औि माता हिव कौि तथा गुरु गोहवन्द हसंि िी क्रमिः उनके माता-हपता िैं।

नव-दीहक्षत व्यस्ट्क्त अब एक नये िीवन में प्रवेि किता िै औि उसे कड़ा प्रसाद हदया िाता िै।

गुरु गोडवन्द डसोंह के अक्तन्तम डदन

गुरु गोहवन्द हसंतिलवण्डी सिाब में नौ मिीनों ंतक ििे ओिौ इसे एक हवद्यापीठ का रूप प्रदान कि इसको गुरु-
कािी नाम से अहभहित कि हदया। यिााँ मौस्ट्खक रूप से 'आहद ग्रन् साहिब' की प्रहतहलहप तैयाि की गयी ओिौ
उसमें गुरु तेगबिादुि की कहवताओं ंको समाहवष्ट कि हलया गया।

गुरु गोहवन्द हसंिने दहक्षण की यात्रा की। िैदिाबाद के िाज्य में वि स्थायी रूप से नान्देड़ में ििने लगे। उन्होंनें
नान्देड़ को एक दूसिे आनन्दपुि में रूपान्तरित कि हदया।

नान्देड़ में िब एक हदन वि अपने हिहवि में अकेले सो ििे थे, तब एक पठान ने उन्हें छुिा मिा हदया। गुरु तत्काल
उठ गये ओिौ अपने कृपाण से उन्होंनें उसे माि डाला। कुछ हदनों ंके पश्चात् १७०८ ई. में उनका देिान्त िो गया। उस
समय उनकी आयु बयालीस वषथ थी।

गुरु के अस्ट्न्तम िब्द थे- “मैं अपने खालसा को अनश्वि ईश्वि के िाथों ंमें सौंप ििा िै। पहवत्र 'ग्रन् साहिब' से िी अब
तुम लोगों ंको मागथ-दिथन प्राप्त िोगा। अमत्यथ सत्ता अथाथत पिमात्मा के आदेिानुसाि िी खालसा पन् का प्रािम्भ
हुआ था। मैं सभी हसक्खों ंको 'ग्रन् साहिब' को अपने गुरु के रूप में स्वीकाि तथा सिाहनत किने का आदेि देता
िँ।”

अिाुहनक युग के सन्त
ािघविे स्वामी

भित में बहुसंख्य मिान् ीमिाओं ंका आहवभाथव हुआ िै। अनेक लेखकों ंीिाा इनके िीवन-चरित्र के लेखन तथा पुनलेखन का कायथ प्रायः चलता िी ीिता िै। हकनु्तु इसका उपयोग क्या िै? इन मिापुरुषों ंके िीवन-चरित्र तथा उपदिों ंको समाचाि पत्रों ंके रिक्त स्थानों ंकी पूहतथ का माध्यम मात्र न मान कि िमें इन्हें इनके आदिों को सावथकाहलकता प्रदान किने के हलए ीसोक आग्रि के रूप में िी ग्रिण किना चाहिए। उनके ीिीरिक कष्ट तथा उनकी अद्‌भुत उपलस्ब्धयााँ िमथ-पथ के अनुसिण के हलए मानव-मन को चमत्कारिक रूप से प्रभाहवत किती िैं।

सत्रिवीं ंीिताब्दी में ािघविे तीथथ स्वामी नामक ऐसे िी एक ीमिा थे हिनकी वषी प्रहतवषथ श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की हितीया को मनायी िाती िै।

गुरु की खोज

वेंकट भि, िो बाद में ािघविे तीथथ के नाम से प्रख्यात हुए, दहक्षण भित-स्स्थत भुवनहगरि गााँव के हनवासी हिति भि के कहनष्ठतम पुत्र थे। वि अपने अग्रि की देखिेख में िीिते थे। उनका उपनयन-संस्कािि सात वषथ की आयु में हुआ अिौ तत्पिात् उन्हें संस्कृत की प्रािस्म्भक हिक्षा के हलए मदौ भिे हदया गया। वि अपनी असािािण मेिा के किाण अल्पावहि में िी हकसी हवषय में दक्षता प्राप्त कि लेते थे। कुछ भाषाओं ंपि उनका असािािण अहिकिा था; हकनु्तु अभी तक उनके िीवन में कुछ ऐसा घहटत निीं ंहुआ था हिसे असािािण या उल्लेखनीय किा िा सके।

वेदान्त के उच्चति अध्ययन के हलए वेंकट भि हकसी प्रबुद्ध गुरु की खोि में कुम्भकोणम के प्रख्यात सन्त ीसुिी तीथथ के पास गये। उन हदनों ंअपनी विथमान ख्याहत के किाण वि सभी लोगों ंके आकषथण के कें बने हुए थे। वेंकट भि ने स्वयं को अपने गुरु के चिणों ंपि समहपथत कि हदया अिौ गुरु ने भी उनका सिषथ स्वागत हकया। आदिथ गुरु प्रायः अपने इस हिर्ष् की असािािण हविेषताओं ंतथा क्षमता का ध्यानपूवथक हनीक्षण हकया किते थे। इस बात के हलए वि ईश्वि की सु्तुहत हकया किते थे हक उसने उनके िाथों ंमें एक ऐसे दलथभ हिर्ष् को सौंपने की कृपा की िै िो उनके हवचािानुसाि हकसी हदन एक मिान् आचायथ िोगा।

एक बाि वेंकट भि के कुछ सिपाहठयों ंने अपने गुरु के पास िा कि उनके पि-हिर्ष् पि समय के अपव्यय, अध्ययन के प्रहत अरुहच तथा कुछ अन्य अहनयहमतताओं ंके दोषािोपण हकये। इसके सत्यापन के हनणथय के हलए गुरु ने एक हदन अिथिाहत्र में हवद्याहथथयों ंके ियन कक्ष का हनीक्षण हकया। विााँ उन्होंनें देखा हक उनके हिर्ष् हभि-हभि प्रकाि की ीिासी ियाओं ंपि सुखपूवथक प्रगाढ़ हनिा में हनमग्न िैं। विााँ दीपक, पुस्तक अिौ अध्ययन का ऐसा अन्य कोई उपकिण निीं ंथा हिससे यि समझा िा सके हक वे िात में अध्ययन कि ििे थे। उन्हें यि देख कि अिायथ हुआ हक विााँ वेंकट भि निीं ंथे। वि िीघ्र िी विााँ से उतु्सुकतापूवथक अपने हप्रय हिर्ष् की खोि में हनकल पड़े। उस मिान् वृद्ध स्वामी ने िब देखा हक उनका हिर्ष् एक कोने में सो ििा िै, तब उनका हृदय दयाद्र िो उठा। ीिती माता वेंकट भि की िय्या तथा उनका िाथ तहकया बना हुआ था। तुहिनिीतल वायु से िक्षा के हलए उनके ीिीि पि कोई चादि तक निीं ंथी। उनके हनकट िुष्क पत्रों ंका पंि था हिसे िलािला कि उन्होंनें िात में अध्ययन हकया था। इसके अहतरिक्त विााँ 'न्याय-सुिा' की एक प्रहत तथा कुछ ति़-पत्र भी थे। इन तिा-पत्रों ंको वि अपनी लेखन-सामग्री के रूप में प्रयुक्त हकया किते थे।

'न्याय-सुधा' पर उनका भाष्य

कोमल हृदय गुरु इस हृदय हवदिाक दृश्य को अिौ अहिक सिन र्निीं ंकि सके। अपने मेिावी युवा हिर्ष् के इस हवनम्र दैन्य से वि अत्यहिक हवचहलत िो उठे। िीत का प्रकोप देख कि उन्होंनें सुप्त हवद्याथी के र्िििी पि अपना उत्तिीय िाल हदया। इसके पिात् वि उन ताि-पत्रों ंको ले कि अपने हनवास स्थान की अिौ चल पड़े। वि यि िाननें को उत्सुक थे हक उन ताि-पत्रों ंपि क्या हलखा था। िब उन्होंनें उन्हें देखा तो वि यि देख कि स्तब्ध िि गये हक वि 'न्याय-सुिा' पि एक हवित्तापूणथ भार्ष् था। आनन्द तथा भावावेि के काि्ण उनके नेत्रों ंसे अश्रु-प्रवाि िोने लगा हिसे िोक पाने में वि असमथथ थे।

'न्याय-सुिा' चौदिवीं ंिताब्दी के प्रख्यात सन्त ियतीथथ स्वामी द्वािा िैत वेदान्त पि हलस्ट्खत एक उच्चकोहट की हवित्तापूणथ कृहत िै। प्रचण्ड मेिा के स्वामी कृतहवद्यों ंके हलए भी इसका हनहिताथथ ग्रिण दुष्कि िै। युवा हवद्याथी के हलए तो इसकी कल्पना भी र्निीं ंकी िा सकती। अभी तो वि गुरु की देखिे्ख में उस पुस्तक का अध्ययन कि िि थे। अतः इस कथन में अहतियोस्ट्क्त के दिथन र्निीं ंिोने चाहिए हक िब उन्होंनें 'न्याय-सुिा' पि अपने हिर्ष् का स्वतन्त्र भार्ष् देखा, तब उनके आनन्द की सीमा र्निीं ंििी। उन्होंनें अपने हिर्ष् की मित्ता के प्रहत अपनी स्वीकृहत की अहभव्यस्ट्क्त के हलए एक सभा का आयोिन हकया हिसमें उन्होंनें विााँ एकत्र लोगों ंसे उस युवा भाष्किा का परिचय किाया अिौ उसकी उस अद्भुत कृहत को 'सुिा-परिमल' के नाम से अहभहित हकया।

सोंन्यास का आह्वान

वेंकट भि को उनके गुरु र्सुिी से संन्यास का आह्वान प्राप्त हुआ। पिले तो उन्होंनें इस आह्वान को अस्वीकाि कि हदया; हकन्तु किा िाता िै हक िब सिस्वती ने उनके स्वप्न में प्रकट िो कि उनमें वैिाग्य भाव को स्फुरित कि हदया, तब उन्होंनें गुरु के आह्वान के प्रहत अपनी स्वीकृहत व्यक्त कि दी। उन्होंनें गुरु से दीक्षा ग्रिण की हिन्होंनें उनको िाघवेि तीथथ के नाम से अहभहित हकया। इस प्रकाि १६२३ ई. में वेंकट भि ने तंिािवि में उच्चतम बथथ आश्रम में प्रवेि कि हलया। अपने उद्देश्य के आदिों से पूणथतः परिहचत िोकि उन्होंनें अपना िीवन भगवदभस्ट्क्त तथा मानवता के हित-हचन्तन में व्यतीत हकया। हविुद्ध िस्ट्क्त के मित्त्व से लोगों ंको अपने उपदेिों ंके माध्यम से अवगत किाना उनके िीवन का सवोच्च लक्ष्य था। इस लक्ष्य की पूहतथ के हलए उन्होंनें अपनी दैहिक सुख-सुहविा को भी भुला हदया। उन्होंनें देि का चतुहदथक पयथटन हकया अिौ इस पयथटन की कालावहि में अनेक चमत्काि्ों ंका प्रदिथन भी हकया।

एक अकाल का डनवारण

एक बाि तंिाविू िाज्य में अकाल का संकट उत्पि िो गया अिौ िाज्य का अि-भण्डाि रिक्तप्राय िो गया। िािा ने अपनी प्रिा के उद्धाि के हलए अथक प्रयास हकये; हकन्तु वि इसमें असफल िी ििा। वि िाघवेि की ख्याहत से परिहचत िो चुका था। उन्हें अस्ट्न्तम अवलम्ब समझ कि वि िीघ्राहतिीघ्र उनके पास पहुाँचा अिौ उनके चिणों ंपि हगि पड़ा। उसने उनसे अकाल के हनवािण की प्राथथना की। उसकी प्राथथना पि वि िििािानी चले गये। विााँ उन्होंनें िाज्य के अि भण्डाि की दीवाल पि अपने िाथ से संस्कृत में 'श्री' बीिाक्षि हलख हदया। िाज्य में कुछ हदनों ंतक िि कि वि इसे प्रहतहदन हलखते िि अिौ साथ िी िप भी किते िि। कुछ िी हदनों ंमें विााँ मूसलिािा वषाथ हुई हिससे अकाल के संकट का हनवािण िो गया अिौ अिोत्पादन भी प्रचुि मात्रा में हुआ।

उनकी महान् करडियााँ

सामान्यतः भितीय दिथन तथा हविेषतः िैत वेदान्त के प्रहत िाघवेि का पास्ट्ण्डत्यपूणथ योगदान सावथिनीन अनुमोदन के अहिकािी के रूप में आि भी प्रिंहसत िै। वि हछयाहलस ग्रन्ों ंके प्रणेता थे। भाषा की प्रांलिता के
किाण वे अिसेााण रूप से इतने प्रभावोत्पादक तथा ज्ञानप्रद िै हक उनसे अनेक लोगों ंकी िं काओं ं तथा भ्रास्ट्न्तयों ं
की हनवृहत्त िो िाती िै। उपहनषदों ंपि उन्होंनें सुन्दि खण्डाथों की िचना की िै। हवहभि ग्रन्ों ंपि उनकी हटप्पहणयााँ
भी **अत्यधिक आस्था** समुच्चय िाघवेि के उपदिेों ंका कीेय हवषय था। उनके समकालीन एक मिान् व्यस्ट्क्त ने अपने 'िाघवेि स्तोत्र' में िाघवेि स्वामी का उले्लेख 'सवथ तन्त्र स्वतन्त्र' के रूप में हकया िै।

भगवान् में डवलय

मिाथध्यक्ष के हसंासिन पि सैंताहलस वषों तक पदासीन िििने के पिात् िाघवेि बेल्लारि िनपद में चले गये। उन्होंनें अपने हिष्ों ंको तुंगभिा नदी के तट पि एक वृन्दावन अथाथत् समाहि-गृिा के हनमाथण का आदेि हदया। १६७१ ई. में एक हदन यि मिान् सन्त भगवान् कृष्ण का सुतुहत-गान किते हुए वृन्दावन अथाथत् समाहि-गृिा में ििसी प्रहवष्ट िो गये। यि देख कि विााँ एकत्र स्त्रियों ंनि-नारियों ंके नेत्र अश्ुरु-बोहझल तथा हृदय िोकाकुल िो गये। वृन्दावन
चेिई-मुम्बई िेल-मागथ के िेन तुंगभिा से नौ मील दिू स्ट्स्थत मन्त्रालय में िै। वृन्दावन में प्रवेि के पूवथ उन्होंनें लोगों ं से किा था हक वि वृन्दावन में सात सौ वषों तक िि कि अपने आिीवाथद के इचु्छुक लोगों ंको सुख-िास्ट्न्त प्रदान किते ििेंगे।

अमरत्व का प्रमाण

िाघवेि स्वामी के भक्त आि भी अपने कुल-देवता के रूप में उनकी पूिा किते िैं। हभि-हभि हवचािों ंके लोग पहवत्र मन्त्रालय में प्रहतहदन आ कि स्वामी िी के वृन्दावन को अपने श्रद्धा सुमन अहपथत किते िैं औि तत्पिात् विााँ से िास्ट्न्त तथा आनन्द का प्रसाद ग्रिण कि अपने घि लौट िाते िैं। क्या िि इस तथ् की हसस्ट्द्ध के हलए पयाथप्त निीं

ैं हक िाघवेि स्वामी आि भी िीहवत िैं।
इसके बाद भी यहद कोई आिुहनक आलोचक इस आस्था को व्यंगिाक दृहष्ट से देखता िै, तो उसे चेिई िनपद गैिेटयि (हिल्द १, अध्याय १५, बेल्लारि िनपद, आदोनी तालुक, पृष्ठ २१३, पुनप्रथकाहित १९१६) की एक हवज्ञस्ट्प्त पढ़ लेनी चाहिए। हवज्ञस्ट्प्त में किा गया िै हक िाघवेि ने समाहि-गृिा से हनकल कि एक हवदेिी से बात की थी। वि हवदेिी औि कोई निीं,ं उस क्ेषेत्र का तत्कालीन चीफ कलेक्टि सि थामस मुनिो था। उस समय वि वृन्दावन को हदये िाने वाले िमाथदा के सम्बन्ध में वृन्दावन के हनकटवती इलाके का व्यस्ट्क्तगत रूप से हनीक्षण कि ििा था। उसे विााँ िो अनुभव प्राप्त हुए थे, उनके फल-स्वरूप उसने विााँ के हलए िमाथदा को समाप्त किने के प्रस्ताव को अस्वीकृत कि हदया।

िामहलंग स्वामी

िामहलंग स्वामी का िन्म ५ अकू्तूबि १८२३ ई. को (मीन लग्न, हचत्रा नक्षत्र, तुला िाहि) दहक्षण भाित-स्ट्स्थत हचदम्बिम्
के हनकट मरुदिू में हुआ। वि चौवन वषों तक िीहवत ििे। उनके माता-हपता के नाम क्रमिः हचििैै तथा िामय्य हपलै्लै थे। िामय्य हपलै्लै एक ग्रामीिि-िास्त्र अहिकािी तथा एक हिक्षक थे। वि भगवान् हिव के पिम भक्त, सदाचािी तथा मिथहनष्ठ थे। हचििैै एक पहवत्र-हृदय तथा िमथहनष्ठ महिला थीं।ं

एक हदन हिवयोगी नामक एक मिान् ििमाा ने हर्चिै के िाि पि आ कि किा- "ि देवी, मैं बहुत भूखा िै। मुझे भोिन दो।" हर्चिै ने सोचा हक उसके िाि पि स्वयं भगवान् उस रूप में खड़े िैं। उन्होंनें सन्त को श्रद्धापूवथक भोिन किाया। वि अत्यन्त प्रसि िुए। उन्होंनें किा - "देवी, तुम एक हदव्य पुत्र की माता बनोगी िो मेिे िी समान िोगा।" वि उन्हें कुछ पहवत्र भस्म दे कि चले गये। हर्चिै उस भस्म को श्रद्धापूवथक हनगल गयी हिसके प्रताप से उन्होंनें हदव्य हििु िामहलंगम् को िन्म हदया।

िब िामहलंगम केवल छि मास के थे. तभी िामय्य हपल्लै का देिान्त िो गया। उनका दाि-संस्काि उनके ज्येष्ठ पुत्र सभापहत ने हकया। सभापहत अपने पूवथ-स्थान का परित्याग कि सपरिवाि चेन्नई चले गये। विााँ वि हिक्षक िो गये। उन्हें अपने अनुि िामहलंगम् के हिताहित का बहुत ध्यान ििता था। वि स्वयं िी उनको तहमल पढ़ाया किते थे। िामहलंगम् पााँच वषथ की अल्पायु में िी हबना हकसी प्रहिक्षण के अनेक कहवताओं की आवृहत्त कि हदया किते थे। वि िन्मिात मेधावी थे औि उनकी स्मिण िस्क्त अद्भुत थी। वस्तुतः वि एक चमत्कारिक पुरुष थे। िैव-हसद्धान्तों तथा वेदान्त का उनको गिन ज्ञान था।

िामहलंगम् बहुत दयालु, दानिील, आत्मसंयमी, हवनम्र, सत्यवादी तथा हमत-भाषी थे। उनका स्वभाव भिा तथा हवनयिीलता से ओत-प्रोत था। वि लज्जािील तथा आत्म-संयमी थे। वि हकसी से व्यथथ बात निीं किते थे। उनका हृदय भस्क्त-भाव से पूणथ था औि वि श्रद्धापूवथक भगवान् सुब्रह्मण्यम् की उपासना हकया किते थे। नौ वषथ की आयु में िी उन्होंनें सुब्रह्मण्यम् की स्तुहत में तहमल में कुछ कहवताएाँ हलखी थीं हिनमें से एक हनम्नांहकत िै:

> **"हे दया-डसन्धु,**
> **षि्-डिर भगवान्,**
> **हे भेलधारी महाराज, ज्योडियो की ज्योडि,**
> **और आनन्द के महासागर,**
> **हे अडधपडियो के अडधपडि,**
> **िुमने मुझे डिष्य के रप में स्वीकार कर मेरी रक्षा की।**
> **हे द्वादि-नेत्र-कमल भगवान्,**
> **ज्ञान-डसन्धु,**
> **मेरी जननी,**
> **मेरी नेत्र-ज्योडि,**
> **िुम अपने मयूर पर आरढ़ हो कर**
> **अपने भिो को दिकन दे हो,**
> **िुमने मेरी रक्षा की है।"**

सोलि वषथ की आयु से िी वि चेन्नई के हनकटस्थ हतरुवोहियूि के मस्न्दि भगवान् त्यागिाि की उपासना हकया किते थे। उन्होंनें उनका दिथन भी हकया था। भगवान् त्यागिाि ने उनको आत्मज्ञान के ििस्यों से परिहचत किाया था। एक हदन उन्होंनें क्षुधा-पीहड़त िामहलंगम् को मस्न्दि के पुिािी का व्य-ग्रिण कि स्वयं अपने िाथों से भोिन किाया था। भगवान् के प्रहत उनके हृदय में हपता-पुत्र का भाव था।

िामहलंगम् हववाि किना निीं चािते थे; हकन्तु अपने अग्रि सभापहत िािा हववाि हकये िाने पि उन्हें हववाि किना िी पड़ा। उनके मन में पत्नी के प्रहत आसस्क्त निीं थी। इस प्रकाि वि वास्तहवक वैवाहिक िीवन व्यतीत निीं कि ििे थे। वि सदैव ध्यानस्थ ििते थे।

िामहलंगम् से आध्यास्ट्कि अनुदि की प्रास्ट्प्त के हलए उनके पास अनेक भक्त आया किते थे। वि उन्हें अनुदेहित किते, आध्यास्ट्कि मागथ के अनुसिण के हलए उते्प्रेरित किते औि उनके समक्ष वेदान्त तथा अन्य सद्धान्तों ंका िस्योद्घाटन किते।

एक बाि िामहलंगम को उनके एक समृद्ध हिर्ष् ने अपनी पुत्री के हववािोत्सव में आमस्ट्न्त्रत हकया। िामहलंगम ने उसे यि हवनोदपूणथ उत्ति हदया- "िे मन, न तो तुम्हािे पास िूते िैं न बहुमूल्य कोट, न तो तुम्हािे पास गुप्र वस्त् िैं न नि औि न तुम्हािे पास िसीोक व्यस्ट्क्तत्व िै, न िीिने के हलए ३। तब तुम हकसी समृद्ध व्यस्ट्क्त के घि हववािोत्सव में सस्ट्हिलत िोने कैसे बा िे िो?"

अपनी माता के देिान्त के पिात् िामहलंगम ने िी उनका दाि-संस्काि हकया। अपने भाई िीिपुिम के रुग्ण िोने पि वि उसे भगवान् नटिाि के दिथन के हलए हचदम्बिम् ले गये। इसके पिात् वि सीगाहल, हतरुवारूि, हतरुपुगलूि, हतरिचेंगानगुहि तथा अन्य स्थानों ंकी यात्रा पि चल पिे।

हतरुपापुहलयूि, पास्ट्ण्डचेिी से िीिे मील दूि एक पहवत्र तीथथस्थान िै। विााँ िामहलंगम की भेंट ब्रह्म समाि के एक आचायथ से िो गयी। विााँ उनसे उपासना के हवषय में उनका तीव्र वाद-हववाद हुआ। आचायथ ने किा - "ब्रह्म हनिाकाि िै। उसकी उपासना मानहसक रूप से िी िोनी चाहिए। मूहतथ-पूिा का कोई उपयोग निीं ंिै।" िामहलंगम् ने किा- "िब वेदों ंमें ब्रह्म के हविाट् रूप का वणथन हकया िाता िै, तब वि साकाि िो िाता िै। नव-दीहक्षतों ंके हलए मानहसक उपासना दुष्कि िै। हवग्रि-स्ट्स्थत सगुण ईश्वि की उपासना से ईश्वि-साक्षात्काि सम्भव िो िाता िै। भक्त ईश्वि तथा उसके गुणों ंको हवग्रि में आिोहपत कि देता िै। हवग्रि तो हवग्रि िी िहता िै; हकन्तु उसकी भस्ट्क्त ईश्वि के चिणों ंतक पहुँच िाती िै। सवथव्यापी ब्रह्म हवग्रि में भी हवद्यमान िै। हवग्रि का अहिष्ठान ब्रह्म िी िै। नव दीहक्षत व्यस्ट्क्त हनिाकाि ब्रह्म पि अपना ध्यान केस्ट्न्द्रत निीं ंकि सकता। मन को आश्रय के हलए हकसी आलम्बन की आवश्यकता िोती िै। नव दीहक्षतों ंके मन की एकाग्रता के हलए मूहतथ अत्यावश्यक िै। िो वेद नव-दीहक्षतों ंके हलए मूहतथ-पूिा का समथथन किते िैं, विी अिंग्रि-सिाना अथाथत् अिोपासना या 'तत्त्वमहस' आहद मिावाक्यों ंकी अथथवत्ता के प्रहत भी अपनी सिमहत व्यक्त किते िैं।" िामहलंगम् के इन िब्दों ंसे आचायथ को मौन िो िाना पिा।

इसके पिात् िामहलंगम् हचदम्बिम् िोते हुए मरुदूि के हनकटस्थ अपने िन्म-स्थान करुनकुहल पहुँचे िािाँ उनके रुग्ण भाई का देिान्त िो गया। िामहलंगम् ने उसका दाि-संस्काि हकया। विााँ उन्होंनें पानी से दीप िला कि एक चमत्काि का प्रदिथन हकया।

तत्पिात् िामहलंगम् किलूि तथा मंकुिप्पम् गये औि इसके बाद करुनकुहल में स्थायी रूप से बस गये। अनेक हविान् संन्यासी तथा तहमल पस्ट्ण्डत उनके पास वाद-हववाद तथा अपनी िंकाओं ंके समािान के हलए भाते थे औि सन्तुष्ट िो कि चले िाते थे।

एक हदन िामहलंगम् मेिकुप्पम् में अपनी कुहटया में ध्यानस्थ थे। उन्हें हदव्य ज्योहत के हदव्य दिथन िए। वि अपने इस अन्तःप्रज्ञाक अनुभव का हवविण इन िब्दों ंमें प्रस्तुत किते िैं: "िे ज्योहतयों ंकी ज्योहत, िे स्वयं-प्रकाि, िे अज्ञान-हतहमि के उचे्छदक, मैं अब पूणथतः ज्योहतमथय िैं। मेिी िंकाओं ंतथा भ्रास्ट्न्तयों ंका आत्यस्ट्न्तक उचे्छद िो चुका िै। हदव्य सत्ता से मैंने तादात्म्य स्थापन कि हलया िै। मैं हनिपेक्ष सत्, हनिपेक्ष हचत् तथा हनिपेक्ष आनन्द हाँ। मैं सवोच्च आनन्द का उपभोग कि िािा हाँ। मैं सवथत्र केवल एक सवथव्यापी आिा का िी दिथन कि िािा हाँ। िैत तथा भेद का प्रिाण िो चुका िै। मेिा आनन्द असीम िै। िो इस्ट्न्द्रयों ंतथा बुस्ट्द्ध के हलए अगम्य िै, वि मुझे उपलब्ध िो चुका िै। मैं अि, अमत्यथ, अक्षय तथा अहवकािी हाँ। मैं देि-कालातीत तथा कािण-कायथ-सम्बन्ध के पिे हाँ।"

ामिहलंगम् ने इन ि ब्दों ंमें भगवान् से प्राथथना की- "ि नििटा, तुम मेि माता-हपता तथा आचायथ िो। तुम मेि सवथस्व िो। मैंने तुम्हािो चिण-कमलों ंमें िि ण ग्रिण की िै। मैं तुम्हें स्वयं को सवथतोभावेन समहपथत किता हाँ। मेिी क्षिा किें।
मुझे िन तथा सांसारिक सुखों ंकी आवश्यकता निीं ंिै। मेिी भौहतक इच्छाएाँ नष्ट िो चुकी िैं। मेिी आाँखें केवल तुम्हािी कृपा तथा तुम्हािो दिथन के हलए लालाहयत िैं। तुम्हािो दिथन के हलए मेिा हृदय िवीभूत िो ििा िै। तुमने मुझे आध्यास्ट्कि दीस्ट्प्त के हिखि पि उपस्ट्स्थत कि हदया िै। मुझे तुम अपने-आपमें सवथदा के हलए हनवास किने दो। मैं तुम्हािा पुत्र औि तुम मेिे कृपालु हपता िो। मुझे अंगीकृत कि लो। मुझे अपने आिीवाथद से कृतकृत्य कि दो। अपनी हदव्य क्रीिा में मुझे भी सस्ट्हिलत कि लो। तुम मेिे साथ नृत्य किो। हलया िै। मैंने तुम्हािो चिणों ंको पाि-बद्ध कि मुझसे तुम्हािा परित्याग असम्भव िै। मुझे आिीवाथद दो।" मुझे अमित्व का अमृत-पान किने दो।
ामिहलंगम हदनि–ात िोते ििते, उनके नेत्रों ंसे अहवित िल-प्रवाि िोता ििता औि प्रेमाश्रुओं ंसे उनकी िय्या तक िल-स्नात िो िाया किती।

ामिहलगम ने हदव्य आह्वान को इन िब्दों ंमें व्यक्त हकया- "िब मैं भगवान के दिथन के हलए लालाहयत था, िब मैं हदव्य आनन्द के हिखि पि आरूढ़ था औि िब मेिा हृदय भगवान् के गिन प्रेम में हवगहलत हुआ िा ििा था, तब भगवान् ने मेिे पास आ कि मुझसे किा: 'मेिे पुत्र, तुम मुझे हप्रय िो। मैंने स्वयं को तुम्हािो हृदय में आसीन कि तुम्हें हदव्य दीस्ट्प्त तथा हवहिष्ट हसस्ट्द्धयााँ प्रदान की िैं। तुम प्रेम में हनहित हदव्य सत्य का सवथत्र प्रचाि किते हुए मानवता की सेवा किो, हदव्य िीवन यापन के हलए लोगों ंको अहभप्रेरित किो औि उनको सुख प्रदान किो'।"

ामिहलंगम् ने लोगों ंसे किा- "तुम लोग सत्य-पथ का अनुसिण किते हुए हविुद्ध िीवन व्यतीत किो। संसाि तथा इस्ट्यों ंपि हवश्वास मत किो। हनभीक तथा प्रफुल्ल-हचत्त िो कि अध्याि मागथ पि अपनी यात्रा का प्राम्भकि दो। ाश्वित आनन्द का उपभोग किो। भगवान् नििटा के साथ क्रीिा तथा नृत्य किो, ज्ञान-लीला का िसोपभोग किो तथा अमित्व के प्रदायक हदव्य िीवन को प्राप्त किो।

"घृहणत वैषहयक िीवन का परित्याग किो। वसुतुतः यि िीवन न िो कि मृतुयु िै। िरि-नाम का हवस्मिण कि िो लोग वैषहयक सुखों ंके उपभोग में समय का अपव्यय किते िैं, वे मात्र कृहम-कीट िैं। कुछ लोग ागहतक हवषयों ंकी नश्विता से परिहचत िो कि भी उनके प्रहत आसक्त ििते िैं। ऐसे लोगों ंको मिामूखथ िी समझना चाहिए। हवषयी लोग हववेक-बुस्ट्द्धि–ून्य िो कि हनलथज्जतापूवथक अपकीहतथकि हवषय-भोग की हनिन्ति आवृहत्त हकये िाते िैं। हकतने अिम िोते िैं ये लोग !

"सस्ट्च्चदानन्द के ज्योहतमथय लोक में प्रवेि किो। प्रकाि तुम्हािो अन्तगथत िै। उस भगवान् का ध्यान किो िो प्रकाि, ास्ट्न्त, आनन्द तथा ज्ञान की प्रहतमूहतथ िै। हनष्प्रयोिन वाताथलाप, हपिुनता, पिोक्ष हनन्दा तथा आसामान्य भाि-हनदा में समय का अपव्यय मत किो। िीवन एक उच्चति प्रयोिन की लेहद का माध्यम िै। तुम लोग आगे बढ़ कि अमित्व का विण किो।"

अरुल्पा (Arulpa) एक बृिदाकाि पुस्तक िै हिसमें ामहलंगम् स्वामी के गीत संग्रहित िैं। इसमें वेदों ंतथा उपहनषदों ंके साि-तत्त्व हनहित िैं। यि एक सावथिनीन बाइहबल तथा गीता िै। ये सत्य के ईश्विाहदष्ट उद्घाटन के गीत िैं। गमहलंगम् िब हदव्य आनन्द के हिखि पि अवस्ट्स्थत थे, तब उनके अन्तमथन प्रेियेहनःसृत हुए थे। ये गीत अमृतमय िैं िो आध्यास्ट्कि ज्योहत के िष्टा की अपिोक्षानुभूहत को अहभव्यक्त किते िैं। ामहलंगम् के सभी अपौरुषेय गीत सुपुि, संगीतमय, ममथस्पिी तथा उद्बोिक िैं। इनमें हवचािों ंकी गिनता तथा कूर्ष् की स्पष्टता परिलहक्षत िोती िै। ये श्रोताओं ंतथा पाठकों ंके हृदय में प्रस्ट्क्त-भाव को बद्धमूल कि देते िैं औि मन को सुख तथा आश्वस्ट्स्त प्रदान काते िैं।

ामिहलंगम् ने िीवन के िािीरिक पक्ष की कभी उपेक्षा निीं ंकी। उन्होंनें अपनी एक पुस्तक में स्वास्थ्यि–क्षा तथा दीघाथयु-प्रास्ट्प्त की हवहियों ंका वणथन हकया िै। उसमें िआिा-हनिा तथा कुछ अन्य हवषयों ंपि भी पयाथप्त प्रकाि िाला गया िै। इसके अहतरिक्त इसमें कुछ उपािमक िीि-बूहटयों ंतथा औषहियों ंके भी नाम हदये गये िैं।

ामिहलंगम् स्वामी ने करुनकुहल के हनकटस्थ विलिू में कुछ िचनािक कायथ भी हकये। उन्होंनें आध्यास्ट्कि ज्ञान के प्रचाि-प्रसाि के हलए एक 'समिस वेद सन्मागथ संघ' की स्थापना की। इसके अहतरिक्त उन्होंनें एक 'सत्य मिथािाला' का भी हनमाथण हकया हिसमें हबना हकसी िाहतगत भेद-भाव के हनिथन तथा सािु-सन्त भोिन हकया किते थे। एक बाि वािाँ दि सिस्र व्यस्ट्क्तयों ंको हनिन्ति तीन हदनों ंतक भोिन हमलता ििा। उन्होंनें वािाँ अरुल्पा के अध्ययन-अध्यापन के हलए 'समिस वेद पाठिाला' की भी स्थापना की।

ामिहलंगम ने अपने हिष्यों ंको स्वास्थ्य हवज्ञान का भी प्रहिक्षण हदया। उन्होंनें उनको िािीि को सिक्त, स्वस्थ तथा हनत्य युवा िखने की हवहियों ंसे अवगत किाया। उन्होंनें हसद्धान्त, वेदान्त तथा योगाहद के प्रहिक्षण के हलए 'सत्य ज्ञान सभा' की स्थापना की। एक भव्य मस्ट्न्दि का भी हनमाथण हकया गया हिसके िाि सबके हलए मुक्त थे औि ििाँ कोई भी व्यस्ट्क्त उपासना कि सकता था।

ामिहलंगम् स्वामी ज्ञान सभा के हविाल कक्ष में हनयहमत रूप से प्रवचन तथा भाषणों ंका आयोिन हकया किते थे। वि मानवता के आध्यास्ट्कि उत्थान के हलए हदनिात प्रयत्निील ििा किते थे। मद्यपान तथा मांसािाि के हवरुद्ध उनके उपदेि ओिपूणथ िोते थे। हदव्य ज्योहत के दिथन के हलए उन्होंनें अपने हिष्यों ंको हनभाथन्त आध्यास्ट्कि सािना तथा गिन ध्यान का अनुदेि हदया।

ामिहलंगम् स्वामी अहतमानवीय िस्ट्क्तयों ंके स्वामी थे। उनको अनेक हसस्ट्द्धयाँ प्राप्त थीं।ं उनके िब्द श्रोताओं ंके मन-प्राण में वैद्युहतक स्पुिण की सृहष्ट कि देते थे। उनका व्यस्ट्क्तत्व चुम्बकीय था। लोगों ंको प्रभाहवत किने की उनमें अद्भुत क्षमता थी। उनका अवतिण संसाि को ईश्विीय चेतना के प्रहत िागरूक किने के हलए हुआ था। वि लोगों ंके हलए िास्ट्न्त, प्रेम, िाश्वत िीवन तथा स्वतन्त्रता का सन्देि ले कि आये थे। उन्होंनें अपनी आध्यास्ट्कि स्ट्क्त से सिस्र-सिस्र लोगों ंके हृदय को रूपान्तरित हकया था।

संसाि से अस्ट्न्तम हवदा लेने के समय उन्होंनें अपने प्रिंसकों ंसे किा- "मेिे हप्रय बच्चो, अब मैं तुम लोगों ंसे हवलग िोना चािता हाँ। तुम लोगों ंको मेिा िािीि न दफनाने के हलए हमलेगा, न िलाने के हलए। मैं सदानन्द हनहवथकल्प समाहि में प्रवेि किना चािता हाँ। मेिा िािीि अदृश्य िो िायेगा औि तुम लोग मुझे देखने में स्वयं को असमथथ पाओगे; हकन्तु मैं एक हसद्ध की भाँहत इतस्ततः हवचिण हकया करूँगा। अब तुम लोग दिवािों ंऔि स्ट्खिहकयों ंको बन्द कि दो औि ताला लगा दो। यहद कोई व्यस्ट्क्त इसे खोलेगा भी, तो उसे यिाँ िून्य के िी दिथन िोंगे।"

सभी दिवािों ंपि ताले पड़ गये औि सब लोग हदनिात उसी घि की िखवाली किने लगे। कुछ लोगों ंने हिज्ञासावि दिवािा खोल हदया; हकन्तु उन्हें वहाँ कुछ न हमला। िामहलंग स्वामी िस्यािक हवहि से अदृश्य िो गये थे। योगी या हसद्ध सब-कुछ किने में समथथ िैं।

इस प्रकाि मरुदूि का सन्त, द्रष्टा तथा कहव, विलिू का योगी, हसद्ध तथा मसीिा एवं हचदम्बिम् के भगवान् नटिाि का हप्रय हिहु अन्तिाथन िो गाया। हकन्तु िामहलंग स्वामी अदृश्य िो कि भी आि िमािे हृदय में हविािमान िैं। उनके उपदेि आि भी िमें अहभप्रेरित किते िैं। उनका िीवन िमें मुस्ट्क्त-पथ पि हनदेहित किने के हलए प्रकाि-स्तम्भ का उत्तिदाहयत्व विन किता िै।

ामिहलंगम् के मित्त्वपूणथ उपदेिों ंमें से कुछ उपदेि हनम्नांहकत िैं :

१. क्रूरि दृहष्ट से हकसी को मत देखो। सुस्वादु भोिन की लालसा मत किो। हमतभाषी बनो। हमर्थ्या-भाषण मत किो। लोगों ंको हिंसा से हवित किो। महात्माओं ंका सत्संग किो। हमताहािी बनो। स्वास्थ्य पि ध्यान दो। ब्रह्मचयथ का पालन किो। सवथदा कौपीन िािण किो।

२. ईश्वि पि ध्यान केस्ट्ति किो। हत्रकुटी पि मन को स्ट्स्थि किो। िाग-द्वेष का परित्याग किो। वैषहयक हवचािों ंसे मन को हवलग किो। इस्ट्यि-हनग्रि किो। उनको अनुहचत तथा वहिथत हदिा में गमन की अनुमहत मत दो। अिं-प्रिंसा से दूि ििो। अिं-भाव का प्रिाण किो। अपने हवषय में अहिक मत सोचो। लोगों ंसे आदि तथा सिान की आिा मत किो।

३. सबको समदृहष्ट से देखो। प्रत्येक व्यस्ट्क्त का आदि किो। स्त्री-पुरुष तथा उच्च-नीच िैसे भेद-भाव के हवचािों ंका परित्याग किो। मैत्री-भाव तथा सावथहत्रक बनुधुत्व की भावना को हवकहसत किो।

४. इस बात का सदैव अनुभव किो हक तुम्हािा 'आिा' सवथभूतों ंमें अनुसूयूत िै औि सभी प्राहणयों ंसे तुम्हािा तादात्म्य-सम्बन्ध िै।

५. सावथिनीन प्रेम को हवकहसत किो। ईश्वि में हनवास किो। सबके प्रहत दयालुता का व्यविाि किो। ईश्वि की ििि ग्रिण किो। ध्यान तथा ईश्वि-साक्षात्काि किो। हदव्य ज्योहत को अवतरित िोने दो।

स्वामी दयानन्द सिस्वती

संन्यास-ग्रिण के पूवथ स्वामी दयानन्द का नाम मूलिंकि था। उनका िन्म १८२४ ई. में गुििात के एक छोटे िाज्य की मोिवी िािानी ंमें हुआ। उनके हपता अम्बािंकि गिन िाहमथक प्रवृहत्त के एक समृद्ध ब्राह्मण भूहमपहत तथा बैंकि थे।

पााँच वषथ की आयु में मूलिंकि को देवनागिी हलहप की हिक्षा दी गयी। पहवत्र ग्रन्थों ंके अनेक श्लोकों ंको उन्होंनें कण्ठस्थ कि हलया था। आठ वषथ की आयु में उनका उपनयन संस्काि हुआ। उनके मन में आध्यास्ट्िक िागरूकता का श्रीगणेि हिवािाहत्र की िाहत्र में हुआ था। उस समय उनकी आयु चौदि वषथ थी।

मूलिंकि के चाचा तथा उनकी बहिन की मृत्यु ने उनके हृदय को आलोहड़त कि हदया। इस कारुहणक घटना ने उनके समक्ष िीवन की अल्पकाहलकता एवं मानवीय आकांक्षाओं ंकी अथथहीनता को अनावृत कि हदया। मूलिंकि को इस तर्थ् की स्पष्ट अनुभूहत िो गयी हक िागहतक िीवन एक क्षहणक प्रदिथन मात्र िै।

मूलिंकि वािाणसी िा कि संस्कृत-साहित्य तथा संस्कृत के पहवत्र ग्रन्थों ंका अध्ययन किना चािते थे; हकन्तु उनके हपता ने उनके इस प्रस्ताव को स्पष्ट िब्दों ंमें अस्वीकाि किते िुए उन्हें अध्ययन के हलए हनकटस्थ गााँव की पाठिाला में भेि हदया।
िब मूलिंकि के हपता ने अपने पुत्र के हववाि का आयोिन हकया, तब मूलिंकि अपने घि का परित्याग कि अन्यत्र चले गये। वि हववाि किना निीं ंचािते थे। वि हववाि को एक बन्धन समझते थे।

मूलिंकि सयाला (Sayala) नामक एक गााँव में गये। विााँ हकसी िाहमथक सम्प्रदाय के एक िीषथस्थ ब्रह्मचािी ििते थे। विााँ उन्होंनें उनसे स्वयं को नैहष्ठक ब्रह्मचारियों ंके वगथ में सस्ट्हिलत कि लेने की प्राथथना की। उनकी पाथथना स्वीकृत िई औ उन्हें गैरिक वस्त् प्रदान कि िुद्ध चैतन्य के नाम से अहभहित कि हदया गया।

ग्धहसद्धपुि में प्रतेयेक वषथ एक िाहमथक मेले का आयोिन िोता था। अपने परिभ्रमण-काल में एक बाि मूलिंकि भी उस मेले में िा पहुाँचे। विााँ उनकी भेंट एक वैिागी से िो गयी िो उनके हपता का परिहचत था। उसने उनको एक पत्र हलख कि मूलिंकि का पता बता हदया। अम्बांकि तत्काल हसद्धपुि िा पहुाँचे िााँ एक मस्ट्न्दि में मूलिंकि से उनकी भेंट हुई। पुत्र को गैरिक परििान में देख कि उन्हें अत्यहिक क्रोि हुआ। उन्होंनें उस गैरिक परििान को चीि-फाड़ कि उनके हभक्षा पात्र को तोड़ हदया। इसके पिात् मूलिंकि को नये वस्त् हदये गये औ उनकी ग्धवाली के हलए नौकिों ंको हनयुक्त कि हदया गया। िात में नौकिों ंके प्रगाढ़ हनिा में हनमग्न िो िाने पि मूलिंकि एक पीपल के पेड़ पि चढ़ गये िााँ उन्होंनें िात-भि अपने-आपको हछपाये िखा। दूसिे हदन उनके हपता तथा उनके नौकिों ंने उनकी बहुत खोि की; हकन्तुु मूलिंकि का पता निीं ंचला। उनके हपता नौकिों ंके साथ घि लौट गये।

मूलिंकि ने अिमदाबाद तथा बड़ौदा की यात्रा की। इसके पिात् वि पहवत्र नमथदा-तट पि स्ट्स्थत एक स्थान पि गये। विााँ पिमिंस पिमानन्द नामक एक संन्यासी के मागथदिथन में उन्होंनें वेदान्त के अनेक ग्रन्ों ंका अध्ययन हकया। उनको वैयस्ट्क्तक आत्मा तथा हवश्वात्मा या सवोच्च आत्मा के तादात्म्य के प्रहत दृढ़ आस्था थी।

मूलिंकि को स्वामी पूणाथनन्द सिस्वती ने संन्यास आश्रम में दीहक्षत हकया औ अब उनका नाम दयानन्द सिस्वती िो गया।

स्वामी दयानन्द ने अपने िीवन के आगामी बीस वषथ पयथटन, तीथथ-यात्रा, तप तथा योगाभ्यास में व्यतीत हकये। उन्होंनें उत्ति भाित के समस्त पहवत्र स्थानों ंकी यात्रा की। उनके सतत परिभ्रमण के फल-स्वरूप उनमें हतहतक्षा की स्ट्क्त िाग्रत िो गयी थी। उनको प्रायः हिमााच्छाहदत िोटी कि वन में भूहमि–यन किना पड़ता था।

छत्तीस वषथ की आयु में दयानन्द ने मथुिा के हलए प्रस्थान हकया। विााँ उन्होंनें प्रख्यात संन्यासी तथा संसूकृत के बहुशु्रुत हविान् स्वामी हिििानन्द से भेंट की। स्वामी िी िन्मतः अन्धे थे िो चेचक के प्रकोप से नेत्रिीन िो चुके थे। वि अत्यन्त रूक्ष तथा कठोि स्वभाव के सन्त थे। वि अपने समय का अहिकांि ध्यान में व्यतीत किते थे।

स्वामी दयानन्द तथा स्वामी हिििानन्द के पािस्परिक सम्बन्ध ने दयानन्द के िीवन के हदिा-हनिाथिण में अपूवथ योगदान हदया। स्वामी दयानन्द के मिान् कायथ स्वामी हिििानन्द के प्रेिणाप्रद व्यस्ट्क्तत्व से िी सम्भव िो सके। स्वामी दयानन्द को स्वामी हिििानन्द के दण्ड प्रिाि से कई बाि आित िोना पड़ा था।

स्वामी दयानन्द सिस्वती गुरु-सेवा में अत्यहिक परिश्रम किते थे। वि उनके हलए बहुत दूि से पानी लाते, उनके कमिे में झाड़ू देते औ उनका वस्त्-प्रक्षालन किते। वि अपने गुरु के साहिध्य में ढाई वषों तक ििे।

अन्ततः हवदा का हदन आ िी गया। िाथ में कुछ लौंगं ले कि दयानन्द गुरु के पास पहुाँचे। उन्होंनें उनसे किा- "गुरुदेव, मैं एक हनिथन व्यस्ट्क्त हाँ। मेिे पास आपको देने के हलए इसके अहतरिक्त औ कुछ भी निीं ंिै।" स्वामी हिििानन्द ने किा- "तुम्हािे पास िो कुछ भी िै, उसे तुम स्वयं से हवलग कि लो। मैं इसकी उतुसुकतापूवथक प्रतीक्षा कि ििा िैं।" स्वामी दयानन्द ने किा- पूज्यवि गुरुदेव, िो कुछ भी मेिा िै, वि आपका िी िै। मैंने अपना िीवन आपकी सेवा में समहपथत कि हदया िै।" हिििानन्द ने किा- "िो हिक्षा तुमने प्राप्त की िै, उसका समुहचत उपयोग

किो। सवथत्र अपने ज्ञान का प्रचाि-प्रसाि किो। अन्धकाि का उच्छेदन किो। हिन्द अपने यथाथथ िमथ को हवसूमृत कि चुके िैं. उनको यथाथथ वैहदक िमथ की हिक्षा दो।"

दयानन्द ने अवनत शिि िो कि अपने गुरु को प्रणाम हकया औि वैहदक िमथ के पुनरुत्थान के हलए अपने िीवन को समहपथत कि देने की िपथ ग्रिण की। अपने गुरु से हवदा ले कि वि तत्काल अपने कायथ में संलग्न िो गये।

स्वामी दयानन्द आगिा गये। विााँ उन्होंनें कुछ प्रवचन हदये। इसके पिात् वि ग्वाहलयि औि ियपुि गये। ियपुि के मिािािा ने उनका श्रद्धा तथा उत्सािपूवथक स्वागत हकया।

दयानन्द ने िरिद्वाि, वािाणसी तथा कलकत्ता में प्रवचन हदये। वि देवेन्द्रनाथ टैगोि औि बाबू केिवचन्द सेन से हमले। उन्होंनें संसूकृत तथा हिन्दी में प्रवचन हदये। मूहतथ-पूिा के हविोि में प्रवचन देने के कािण उन्हें रूहढ़वादी हिन्फ्दुओं ंके प्रबल हविोि का सामना किना पड़ा।

स्वामी दयानन्द ने इलािाबाद औि मुम्बई में भी प्रवचन हदये। मुम्बई में उन्होंनें आयथ समाि की स्थापना की। इसके पिात् वि पुणे गये ििााँ हिन्फ्दू क्लब के भवन में उन्होंनें एक प्रवचन-माला का प्राििम्भ हकया। पस्ट्ण्डतों ंने उनकी तथा उनके प्रवचन की कटु हनन्दा की। उन पि आक्रमण भी हकया गया; हकन्तु पुहलस की सामहयक सिायता के कािण उनके िीवन की िक्षा िो गयी।

इसके पिात् वि पंिाब गये। लािौि में उनको मिान् सफलता प्राप्त िुई। उन्होंनें पंिाब के लगभग प्रत्येक मित्त्वपूणथ नगि में आयथ समाि की स्थापना की। तत्पिात् वि उत्ति प्रदेि तथा िािस्थान गये ििााँ उन्होंनें आय थ समाि के हसद्धान्तों ंका प्रचाि-प्रसाि हकया। िोधपुि के मिािािा यिवन्त हसंि इन हदनों ंएक वेश्या के प्रेम-पाि में आबद्ध िो गये थे। स्वामी दयानन्द ने मिािािा से उसके परित्याग का अनुिोि हकया। इसके फल-स्वरूप वि वेश्या उनसे रुष्ट िो गयी औि उसने उनके भोिन में हवष हमला हदया हिसके परिणाम स्वरूप ३० अक्तूबि १८८३ ई. में दीपावली की िाहत्र में अिमेि में स्वामी दयानन्द का देिान्त िो गया।

तकथिास्त् में स्वामी दयानन्द का कोई प्रहतिन्फ्द्वी निीं ंथा औि वाद-हववाद में वि अहितीय थे। उनकी तकथ–स्ट्क्त चमत्कािपूणथ थी औि वि एक मिान् वक्ता थे।

स्वामी दयानन्द का 'सत्याथथ प्रकाि' एक सुप्रहसद्ध पुस्तक िै। इसमें स्वामी दयानन्द के उपदेि संग्रहित िैं।

आयथ समाि ने भाित में िो सामाहिक सेवा की िै, वि मिान् िै। इसके प्रयत्न से कई स्थानों ंपि अनेक हवद्यालयों,ं मिाहवद्यालयों ंतथा अनाथालयों ंकी स्थापना हुई। गुरुकुल कााँगड़ी तथा देििादून का डी. ए. वी. कालेि आहद इस संस्थाएाँ िैं। गुरुकुल कााँगड़ी के हवकास में स्वामी दयानन्द के हिष्य् स्वामी श्रद्धानन्द का मित्त्वपूणथ योगदान ििा िै। उन्होंनें िुस्ट्द्ध-आन्दोलन का सूत्रपात हकया था। इसमें ईसाई तथा इस्लाम िमथ ग्रिण कि चुके हिन्फ्दुओं ंको पुनः हिन्फ्दू-समाि में सस्ट्महलत कि हलया िाता था।

स्वामी श्रद्धानन्द एक स्वतन्त्र हवचाि के पुरुष थे। उनमें अदम्य सािस था। िो कोई भी बात उन्हें असंगत लगती थी, उसका वि स्पष्ट रूप से खण्डन कि देते थे। वि एक ऊर्ध्थहसत व्यस्ट्क्तत्व के स्वामी थे। अपनी आध्यास्ट्त्मक हिज्ञासा तथा सत्य के हलए अपनी आत्यस्ट्न्तक तृष्णा के कािण उन्होंनें सांसारिकता का परित्याग कि स्वयं को वेदाध्ययन एवं हनयहमत नैहतक तथा आध्यास्ट्त्मक अनुिासन के अहभयान में संलग्न कि हलया।

स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋग्वेद पि हविस्तापूणथ भार्ष् हलखा। वि बहुत हदनों ंतक आयथ समिा के नेता िि। उनके सन्त स्वभाव, गत्याक व्यस्ट्क्तत्व, हविाल हृदय, समिा औि िाष्ट्र के प्रहत उत्कट प्रेम तथा उनकी संगठन–स्ट्क्त के किाण आयथ समिा की गहतहवहि के प्रसिा को मिान् योगदान प्राप्त हुआ। श्रद्धानन्द का दिान्त १९२६ ई. में हुआ। उस समय उनकी आयु इकित्ति वषथ थी। उन्होंनें एक ििीद की भाँहत प्राण त्याग हकया।

स्वामी दयानन्द के उपदि

१. सवोच्च या हनिपेक्ष सत्ता िी समस्त यथाथथ ज्ञान का स्रोत िै।

२. ईश्वि पूणथ सत् तथा पूणथ सौन्दयथ िै। वि सवथव्यापी, सवथिस्ट्क्तमान् तथा सवथज्ञ िै। वि हनिाकाि, न्यायी, पिोपकािी, अि, अनन्त, असीम, अहवकािी, अनाहद, सवथभूतों ंका अहिष्ठान, अव्यय, अक्षि, हनभथय, िाश्वत एवं समग्र सृहष्ट का अहभकल्पक तथा हनयन्ता िै। एकमात्र विी उपास्य िै।

३. वेद यथाथथ ज्ञान का ग्रन् िै। इसका अध्ययन, इसका अध्यापन, इसके मन्त्रों ंका श्रवण तथा इसका प्रहिक्षण- ये सभी प्रत्येक आयथ के सवोपरि कतथव्य िैं।

४. सत्य को स्वीकाि तथा हमथ्या का परििाि किो।

५. सत्य-असत्य के सम्यक् अनुसन्धान के पिात् िमाथनुकूल आचिण किो।

६. आयथ समिा का मुख्य उद्देश्य संसाि का हित-हचन्तन तथा प्रत्येक व्यस्ट्क्त के ििीरिक, सामाहिक तथा आध्यास्ट्कि उत्थान को सुहनहित किना िै।

७. संसाि के प्रहत तुम्हािा आचिण प्रेम, िमथहनष्ठा तथा न्याय से हनयस्ट्न्त्रत िोना चाहिए।

८. अज्ञान को नष्ट कि अपने दैहिक तथा आध्यास्ट्कि हवकास की सम्भावनाओं ंको परिपुष्ट किो।

९. सबके हित में अपने हित का दिथन किो।

१०. सबके कल्याण-पथ को प्रिस्त किने वाले सुहवचारित सामाहिक हनयमों ंका पालन किो।

सुिन्दिै स्वामी

मिथ की स्थापना, इसकी िक्षा, भयंकि आपदाओं ंकी हनवृहत्त, संसाि-कहलल से लोगों ंके उत्थापन एवं िरि-नाम, भस्ट्क्त, आिज्ञान तथा योग के हसद्धान्तों ंकी महिमा के प्रचाि-प्रसाि के हलए कुछ लोग समय-समय पि प्रकाि-पुंि के रूप में इस संसाि में अवतरित हुआ किते िैं। ये लोग प्रचण्ड िस्ट्क्त तथा अपौरुषेय मिा के स्वामी िोते िैं। इन लोगों ंको ईश्वि की अव्यवहित हकिणें अथाथत् उसका अंिविाि िी समझना उपयुक्त िै। सुिन्दिै स्वामी की गणना ऐसे िी लोगों ंसे की िाती िै।

सुिन्दिै स्वाहमगल का िन्म अप्पय्य दीहक्षताि के प्रख्यात परिवाि में दहक्षण भाित के हतरुनेलवेली िनपद में स्ट्स्थत गंगैकोन्डान में १८३१ ई. में हुआ था। उनके माता-हपता के नाम क्रमिः कामाक्षी तथा यगेनेश्वि हिवन थे। उन्होंनें पत्तमिै में िास्त्रों,ं षि्दिथनों ंतथा प्रस्थानत्रयी का अध्ययन हकया। बाल्यावस्था में िी उनमें हवलक्षण प्रहतभा के

दिथन िोने लगे थे। वि भगवान् हिव के पिम भक्त थे। कुछ हदनों ंतक वैवाहिक िीवन व्यतीत किने के पित् िब उनमें आत्यस्ट्न्तक वैिाग्य का उदय हुआ, तब उन्होंनें तेईस वषथ की आयु में हवित्-संन्यास ग्रिण कि हलया। हतरुनेलवेली निपद के अैचाहन ग्राम के हवश्वेश्वि स्वामी उनके गुरु थे हिन्होंनें उनको कैवल्य के िस्यों ंसे अवगत किाया। सुिन्दि को ध्यान के कठिो अभ्यास के माध्यम िािा हनहवथकल्प समाहि की सम्प्रास्ट्प्त हुई।

इसके पित् सुिन्दि स्वाहमगल ने मदुिै, िमुबुकेश्विम्, हतरुवैयारु, मयूिम्, सीगाहल, हचदम्बिम्, हवरुदाचलम्, कालिस्ट्स्त, काशी, िामेश्विम् तथा अन्य पहवत्र स्थानों ंकी तीथथ-यात्रा की। इस तीथथ-यात्रा में वि ििााँ-िााँ गये, विााँ-विााँ उन्होंनें आध्यास्ट्कि ज्ञान का प्रचाि-प्रसाि हकया।

सुिन्दि स्वाहमगल ब्रह्मश्रोहत्रय तथा ब्रह्महनष्ठ थे। वि पिमिंस संन्यासी तथा अहतवणाथश्रमी थे। उनका हृदय हविाल था। ब्रह्मज्ञान या कैवल्य के िस्यों ंमें वि िििों ंतथा महिलाओं ंतक को दीहक्षत कि हलया किते थे। वि संस्कृत के प्रकाण्ड हविान् तथा अपिोक्षानुभूहत-प्राप्त सन्त थे। उनको अनेक हसस्ट्द्धयााँ प्राप्त थीं।ं उन्होंनें दूि-दूि तक भस्ट्क्त तथा ज्ञान का प्रचाि-प्रसाि हकया। वि िािााँ भी िाते थे, सूत-संहिता पि प्रवचन का आयोिन किते थे। उन्होंनें बाईस मस्ट्न्दिों ंका कुम्भाहभषेक हकया। उन्होंनें कथा, भाषण तथा आनाकाहक्षयों ंके प्रहिक्षण के माध्यम से संसाि के कल्याण तथा इसकी ससितता के हलए अथक परिश्रम हकया।

सुिन्दि स्वाहमगल में एक हसद्ध सन्त तथा िीवनुमुक्त के सभी गुण हवद्यमान थे। संसाि में ििते हुए भी वि संसाि के निीं ंथे। वि मानहसक सनुतुलन तथा समदहिथता के मूतथ रूप थे। वि आसस्ट्क्त तथा अिं-वृहत्त से असम्पृक्त िो कि हनभीक तथा सोल्लास परिभ्रमण हकया किते थे। कुलीन-अकुलीन, हनन्दा-सुतुहत तथा यि-अपयि में उनको भेद-दिथन निीं ंिोता था। वि उच्चतम ज्ञान, पूणथत्व तथा हनिहतिय आनन्द से कृतकृत्य िो चुके थे।

इन मिान् उपलस्ट्ब्धयों ंको एक चमत्काि िी किा िा सकता िै। यि सब हनहित रूप से उनके पूवथ–िन्म के पुण्य-कमों का सुफल था। उन्होंनें अपने सत्संकल्प िािा अनेक चमत्काि हकये। वि िीती पि देव-स्वरूप थे। हकतने िान्ति, हकनुतु साथ िी हकतने गत्याक थे वि ! िम उनके प्रहत अपने श्रद्धा सुमन अहपथत किते िैं। वि ििााँ भी गये, विााँ के लोग उनसे अत्यहिक प्रभाहवत हुए। वि एक िस्ट्क्तिाली चुम्बक तथा आध्यास्ट्कि िन-नायक थे। मानवों ंमें वि सवथश्रेष्ठ थे। िृंगेिी मठ के िंकिाचायथ भी उनका आदि किते थे। उन्होंनें उनको अपना आसन दे कि उन्हें मिासहिान किा था।

सुिन्दि स्वाहमगल आध्यास्ट्कि ऊिथ के िस्ट्क्त-कें थे। उनकी उपस्ट्स्थहत िोमांचक तथा प्रभावप्रद हसद्ध िोती थी। एक बाि उनके चुम्बकीय स्पिथ से एक मृत बालक पुनिीहवत अैौ एक कन्या समाहिस्थ िो गयी। िब वि गिन झाहियों ंमें हनहवथकल्प समाहि का अभ्यास कि ििे थे, तब भगवान् हिव ने कई बाि स्वयं उनको भोिन हदया था।

सुिन्दि स्वाहमगल ने ब्रह्मज्ञान-प्रास्ट्प्त में असंख्य ज्ञानाकांहक्षयों ंका मागथ-दिथन हकया। उन्होंनें तहमल में वेदान्त पि बहुमूल्य तथा अद्भुत पुस्तकें हलखीं।ं इन पुस्तकों ंमें व्याविारिक आध्यास्ट्कि अनुदिन तथा अनुभूहतयों ंका पयाथप्त उल्लेख िै। 'स्वानुभूहतिथयन', 'अनुभव िस मंििी' तथा 'हनिानन्द हवलास' इनकी सवाथहिक मित्त्वपूणथ पुस्तकें िैं। सुिन्दि स्वाहमगल ने 'ब्रह्म गीता' का तहमल अनुवाद हकया।

सुिन्दि स्वाहमगल १८८१ ई. में पुदुक्कोिै के हनकट अरिमलम् में मिासमाहि में प्रहवष्ट हुए।

यि एक िीवनुमुक्त उदािहचत्त सन्त के िीवन का अोिम्बिून्य िेखांकन िै हिसने हविस्ट्द्ध, यज्ञ, प्रेम तथा सिािुता का िीवन व्यतीत हकया। उन सुिन्दि स्वाहमगल की महिमा में वृस्ट्द्ध िो िो भाित के हलए प्रकाि-स्तम्भ थे ! उनका

आीवाथद िम सबको प्राप्त िोता िि! मिान् सन्त, पिांगत कृतहवद्य तथा दाथहनक, प्रहतभा सम्पि वक्ता तथा हवश्वस्त आध्यास्ट्कि आचायथ सुन्दिै स्वाहमगल अपने िीवन में असंख्य लोगों ंके हलए पे्रिणा-स्रोत िि। आ भी स्वगथ से उनकी आा िम पि प्रकाि, िषथ, आनन्द तथा िास्ट्न्त का वषथण कि िि ि। उनके भव्य तथा आदिथमय िीवन एवं उनके गत्याक व्यस्ट्क्तत्व का स्मिण िमािे हलए हनहित रूप से पे्रिणाप्रद हसद्ध िो। उनके मन-मस्ट्स्तष्क के उतृ्कष्ट गुण तथा बहुमूल्य उपदेि िमािे लक्ष्य की आि िमािी मौन यात्रा में प्रकाि स्तम्भ हसद्ध िों ंआि वि अपने हनिहतिय आनन्द के हनवास स्थान से िम पि अपने अन्तिीन तथा मंगलदायी आीवाथद का वषथण किते िि
!

नािायण गुरु

प्रख्यात सन्त, समाि-सुिािक तथा केिल के आध्यास्ट्कि आचायथ श्री नािायण गुरु का िन्म १८५४ ई. में मलबाि में हुआ। वि ससृ्कत, मलयालम तथा तहमल के प्रकाण्ड हवद्वान थे। िीवन की समस्याओं ंके समािान की आध्यास्ट्कि खोि में उन्होंनें दूिस्थ प्रदेिों ंतक की यात्रा की। उनके प्रािस्ट्म्भक िीवन के हवषय में लोग बहुत कम िानते िैं।

िब दहक्षण टावनकोि के नैयान्कािा ग्राम में तीस वषों के बाद एक पयथटक संन्यासी के वेि में उनका आगमन हुआ, तब उनकी आि लोगों ंका ध्यान आकहषथत िो गया आि ग्रामीण िन श्रद्धा-भस्ट्क्त-पूवथक उनकी सेवा किने लगे।

अपनी बाल्यावस्था में नािायण गुरु देखा किते थे हक हिन्दू-मस्ट्न्दिों ंमें दहलतों ं(हथया) का प्रवेि वहिथत िै। इससे उनके प्रहत उनके मन में गिन सिानुभूहत िाग्रत िो गयी। उन्होंनें दहलतों ंके हलए मस्ट्न्दि के िाि मुक्त कि हदये। यि उनका प्रथम सावथिहनक कायथ था। उन्होंनें अपनी इच्छा–स्ट्क्त तथा अपने ज्ञान से अपने मागथ के सभी अविोिों ंको नष्ट कि हदया। उनके हसद्धान्तों ंको मूतथ रूप प्रदान किने वाली ितिि संस्थाएँ समस्त केिल में स्थाहपत िो गयीं।ं उनके नाम पि हनहमथत हवद्यालय, औषिालय तथा आश्रम आि भी लोगों ंके हलए उपयोगी हसद्ध िो िि िैं। उनमें से प्रते्यक में एकता के सने्दि की गूंि सुनायी पड़ती िै।

श्री नािायण गुरु ने अनुपयोगी प्रथाओं,ं भ्रष्टाचाि के पंक तथा अज्ञान के आविण को हवनष्ट कि स्वतन्त्रता के अमृत-प्रवाि को मुक्त कि हदया।

श्री नािायण गुरु िान्त प्रकृहत के व्यस्ट्क्त थे। उनका स्वभाव दयालुता तथा हवनोदहप्रयता से ओत-प्रोत था। उनकी बुस्ट्द्ध कुिाग्र तथा संकल्प–स्ट्क्त दुदथमनीय थी। वि वेदान्त के साि-तत्त्व के मूतथ रूप थे। उन्होंनें अपने समपथणाि कायों से केिल के अपने सिस्रों ंदहलत-बहिषृ्कत अनुयाहययों ंके हृदय िीत हलये थे।

श्री नािायण गुरु ने हवद्याहथथयों ंतथा मध्यवगीय लोगों ंको संसृ्कत तथा पािात्य हवज्ञान के अध्ययन के हलए प्रोत्साहित हकया। उनका प्रयोिन सै्ववैस्ट्च्छक िन-सेवा िािा एक ऐसे सियोगी बनु्धत्व को हवकहसत किना था िो सवथिन-इस्ट्च्छत एकता को सम्यक् रूप से प्रहतहबस्ट्म्बत किने में समथथ िो।

अपने िीवन के पिवती काल में वि समग्र भाित में प्रख्यात िो गये। अनेक सुप्रहसद्ध लोग उनके केिल-स्ट्स्थत उनकी गहत-हवहियों ंके मुख्य केि को श्रद्धांिहल अहपथत किने आने लगे। श्री िवीन्द्रनाथ टैगोि तथा मिात्मा गान्धी भी उनके आश्रम में गये थे। श्री नािायण गुरु प्रहतवषथ दहक्षण भाित तथा श्रीलंका की यात्रा किते थे।

श्री नािायण गुरु की ियन्ती हसतम्बि के प्रािम्भ में समस्त भाित तथा श्रीलंका में मनायी िाती िै। इस ियन्ती सिमािोि में िुलूसों ंतथा सभाओं ंका भव्य आयोिन हकया िाता िै हिनमें अनेक श्रद्धालु िन सस्ट्हिलत िोते िैं।

श्री नािायण गुरु का िीवन तथा उनके हवचाि सावथिनीन थे। उनका महिमास्ट्ण्डत दृष्टान्त तथा उनके उपदेि समग्र मानव िाहत की थाती िैं।

श्री नािायण गुरु िस्यवादी तथा व्याविारिक योगी थे। उन्होंनें भाित के पहवत्र ग्रन्थ्ों ंका गिन अध्ययन हकया था। यि गत्याकता की प्रहतमूहतथ थे। उन्होंनें यि हसद्ध कि हदया हक वेदान्त के हसद्धान्तों ंको अपने दैहनक िीवन में भी प्रयुक्त हकया िा सकता िै। यि कैसे सम्भव िै, यि उनकी कतृथत्व–स्ट्क्त के सम्यक् अध्ययन से पूणथतः स्पष्ट िो िाता िै।

अिैत के मूतथ रूप श्री नािायण गुरु के प्रहत केिल, भाित तथा समस्त संसाि कृतज्ञता के अपरिहमत ऋण के हलए आभािी िै हिसका भुगतान उनके हसद्धान्तों,ं उपदेिों ंतथा उनके अद्‌भुत दृष्टान्तों ंके अनुसिण से िी सम्भव िै।

स्वामी िामकृष्ण पिमिंस

उत्रीसवीं ंिताब्दी में भाित के समक्ष एक भयावि आपात स्ट्स्थहत उत्पि िो गयी थी। इस देि पि अंग्रेिों ंके आहिपत्य के साथ-साथ इस पि पाश्चात्य सभ्यता का भी आक्रमण िोने लगा था। हविेता िाष्ट की भौहतक िस्ट्क्त से हवस्ट्स्मत भाितीय उस प्रत्येक वस्तु को अहभनन्दनीय मान कि उसका स्वागत किने लगे थे. िो पाश्चात्य थी। ईसाई मिथ भाित पि पूणथ सांस्कृहतक हविय के हलए गुप-चुप रूप से प्रयत्निील था। किना न िोगा, ईसाई–मिथ-प्रचािक लोगों ंके िमाथन्तिण में सवाथहिक सफल िोते िैं।

इन्हीं ंमनोवैज्ञाहनक क्षणों ंमें भाितीय संस्कृहत तथा िमथ की अन्तिात्मा के मूतथ रूप श्री िामकृष्ण का आहवभाथव हुआ। उन्होंनें हिन्दुत्व के सौन्दयथ, वैभव तथा उसकी िस्ट्क्त के प्रहत भाितीयों ंको उस समय िागरूक हकया, िब उसके प्रहत उनकी आस्था हवचहलत िोने लगी थी।

िामकृष्ण का िन्म बंगाल के हुगली िनपद में स्ट्स्थत कामािपुकुि ग्राम के एक िमथहनष्ठ ब्राह्मण-परिवाि में १८ फिविी १८३६ ई. को हुआ था। उनके माता-हपता ने उनका नाम गदािि िखा। अपने िन्म-काल से िी बालक गदािि अपनी गहत-हवहि से न केवल अपने माता-हपता को, अहपतु अपने पड़ोहसयों ंको भी चमत्कृत किने लगा। पााँच वषथ की अल्पायु में िी उनमें असािािण बुस्ट्द्ध तथा तीव्र स्मिण–स्ट्क्त के दिथन िोने लगे। उस अकाल-प्रौढ़ बालक ने अपने पूवथिों ंके नामों,ं हवहभि देवी-देवताओं ंकी स्तुहतयों ंतथा मिान् िाष्टीय मिाकाव्यों ंमें वहणथत कथाओं ंको कण्ठस्थ कि हलया था। उसके हपता ने उसे ग्राम की पाठिाला में भेिा ििााँ उसने सन्तोषिनक प्रगहत की। उसने ििााँ अपना ध्यान आध्यास्ट्त्मक िन-नायकों ंके िीवन तथा उनके चरित्र के अध्ययन पि केस्ट्न्द्रत कि हदया। इन हवषयों ंके अनवित अध्ययन के फल-स्वरूप प्रायः वि इस प्रकाि भावाहवष्ट िो िाया किता था हक संसाि का उसे भान निीं ंिि िाता था औि वि पूणथतः ध्यानस्थ िो िाया किता था। आयु में कुछ औि वृस्ट्द्ध िो िाने पि िब उसमें िाहमथक भाव िाग्रत िोते थे, तब वि समाहिस्थ िो िाता था। कुछ पारिवारिक काािणों ंसे हकिोि िामकृष्ण कलकत्ता चला गया। उस समय ििााँ िानी िासमहण नामक एक समृद्ध िमथ-पिायण महिला ििती थी। उसने दहक्षणेश्वि में एक काली-मस्ट्न्दि का हनमाथण हकया। ििााँ का वाताविण िामकृष्ण के हलए अहिक सुहविािनक था। ििााँ उसे अपने आध्यास्ट्त्मक अभ्यास के हलए अपेहक्षत अवसि प्राप्त हुआ। उसका हववाि िािदा देवी नामक एक कन्या से हुआ हिसे बाद में िामकृष्ण के हिष्य 'पहवत्र माता' किने लगे। बीस वषथ की आयु में िामकृष्ण ने काली मस्ट्न्दि के पुिोहित का कायथ-भाि ग्रिण कि हलया।

ामिकृष्ण के हवचाि प्रािम्भ से िी हवश्विनीन तथा सहिषुणु थे। उन्होंनें ईश्वि के हवहभि रूपों ंमें कभी भेद दिथन निीं ं हकया। एक रूप का साक्षात्काि उन्हें दूसिे रूप के साक्षात्काि के हलए अहभप्रेरित किता था औि वि इसकी सम्प्रास्ट्प्त के हलए दृढ़ संकल्प के साथ तब तक प्रयत्नील ििते थे, िब तक उन्हें इस रूप का भी साक्षात्काि निीं ंिो िाता था। अपने िीवन की इस कालावहि का उल्लेख किते हुए िामकृष्ण बाद में प्रायः किा किते थे- "साक्षात्काि की एक अवस्था के अहतक्रमण के पिात् मैं दूसिी अवस्था की सम्प्रास्ट्प्त के प्रयत्न में संलग्न िो िाता था। इस वातावतथ के पूवथ मेिा यज्ञोपवीत ड़िकि मेिे ििीि से हवलग िो िाता था औि मेिे वस्त् मेिे ििीि पि कहठनाई
से िी हटक पाते थे। िाहत-पााँहत का हवचाि भी मेिे हलए अथथिीन िो िाता था।"

१६ अगस्त १८८६ ई. को िामकृष्ण इस संसाि का परित्याग कि मिासमाहि में प्रहवष्ट िो गये।

श्री रामकरष्ण के कुछ वचनामरि

१. ईश्वि हनिाकाि भी िै औि साकाि भी: हकन्तु वि रूप तथा अरूप-इन दोनों ंका अहतक्रमण भी किता िै। वि क्या िै, इसे केवल विी िानता िै।

२. ईश्वि का परिसीमन एक मूखथतापूणथ प्रयास िै, वि एक िी समय हनमाथण भी िै औि सगुण भी। वि इन दोनों ंके पिे भी िै। तुहिन, िल तथा वाष्प के दृष्टान्त पि ध्यान दो।

३. साकाि ईश्वि का दिथन हकया िा सकता िै। िम उसका स्पिथ भी उसी प्रकाि कि सकते िैं हिस प्रकाि कोई अपने अहभि हमत्र का स्पिथ किता िै।

४. िब तक हकसी घण्े की ध्वहन सुनायी पड़ती िै, तब तक वि साकाि के क्षेत्र में हवद्यमान ििती िै; हकन्तु िब इसका श्रवण निीं ंिो पाता, तब यि हनिाकाि िो िाती िै। इसी प्रकाि ईश्वि हनिाकाि भी िै औि साकाि भी।

५. सूयथ सािी पृथ्वी को प्रकाहित किता िै; हकन्तु एक क्षुद्र घन-खण्ड भी उसे आवृत कि िमािी आाँखों ंसे ओझल कि देता िै। इसी प्रकाि माया का एक नगण्य आविण भी िमें सवथव्यापी तथा सवथ-साक्षी सस्ट्च्चदानन्द के दिथन में अक्षम कि देता िै।

६. मुझे मुस्ट्क्त कब प्राप्त िोगी? इसका एकमात्र यिी उत्ति िै हक 'मैं' के उन्मूलन के पिात् िी मुस्ट्क्त प्राप्त िो सकती िै। 'मैं' तथा 'मेिा'- यि अज्ञान िै; 'तू' तथा 'तेिा' यि ज्ञान िै।

७. िब मन में यि ििाणा बद्धमूल िो िाती िै हक संसाि में िो-कुछ भी िोता िै. ईश्वि की इच्छा से िी िोता िै, तब वि हनहमत्त मात्र िी िि िाता िै औि इस मनःस्ट्स्थहत की प्रास्ट्प्त के पिात् वि इस िीवन में िी मुक्त िो िाता िै।

८. यहद तुम गम्भीितापूवथक हनष्कपट तथा हवशुद्ध िोना चािते िो, तो ईश्वि तुम्हािे पास एक उपयुक्त गुरु भेिे देगा। हनष्कपटता अत्यावश्यक िै।

९. हिस प्रकाि कोई बालक हकसी खम्भे को पकड़ कि इसके चतुहदथक् हनभीकतापूवथक तीव्र गहत से घूमता ििता िै, उसी प्रकाि तुम भी ईश्वि का आश्रय ग्रिण कि अपने सांसारिक कमथ किते ििो। तुम संकट-मुक्त िो िाओगे।

१०. समाि में ििने वाला व्यस्ट्क्त, हविेषतः कोई गृिस्थ, आत्मिक्षा के हलए अिुभ का प्रहतिोि किता िै; हकन्तु अिुभ का प्रहतिोि अिुभ से निीं ंकिना चाहिए।

११. मनुर्ष्-रूप में िन्म-ग्रिण का दुलथभ सौभाग्य प्राप्त किके भी िो इस िीवन में ईश्वि-साक्षात्काि निीं ंकि पाता, उसका िन्म-ग्रिण हनष्प्रयोिन िै।

१२. "दूि में नवनीत िै", तीव्र स्विों ंमें इन िब्दों ंकी आवृहत्त मात्र ने नवनीत निीं ंप्राप्त िो सकता। नवनीत की प्रास्ट्प्त के हलए तुम्हें दूि को दिी बनाना िोगा। इस दिी को भली हवहि मथने के पित् िी तुम्हें नवनीत प्राप्त िो सकेगा। इसी प्रकाि यहद तुम ईश्वि का दिथन किना चािते िो, तो तुम्हें आध्यास्ट्हिक अभ्यास किना िोगा।

१३. हवषयासक्त व्यस्ट्क्त को सांसारिक वसुतुओं ंके प्रहत तीव्र आसस्ट्क्त िोती िै। यहद उसकी आसस्ट्क्त की इस तीव्रता का समाविे ईश्वि के प्रहत तुम्हािे प्रेम में िो िाये, तो ईश्वि का दिथन तुम्हािे हलए सुलभ िो िायेगा।

१४. यहद कमिे में प्रकाि की एक हकिण का भी प्रविे िो िाता िै, तो िताब्स्ट्दयों ंका अन्धकाि दूि िो िाता िै। इसी प्रकाि ईश्वि के मात्र एक कृपालु दृहष्ट-हनक्षेप से असंख्य िन्मों ंसे संहचत अज्ञान तथा दुष्कमों का परिाण िो िाता िै।

१५. उसकी प्राथथना किो। तुम्हें अपेहक्षत वसुतु प्राप्त िोगी। हनिय िी वि तुम्हािी बात सुनेगा। वि एक चींटी का पदाघात भी सुन लेता िै।

श्री अिहवन्द घोष

१५ अगस्त १८७१ ई. को प्रातःकाल लगभग पााँच बिे श्री अिहवन्द ने कलकत्ता में िन्म-ग्रिण हकया। श्रीकृष्णिन उनके हपता तथा स्वणथलता उनकी माता थीं।ं उनका परिवाि कौिगि का प्रहतहष्ठत घोष परिवाि था। श्रीकृष्णिन इंग्लैण्ड गये औि विााँ से ससम्मान एम. िी. की उपाहि ले कि भाित लौटे।

बंगाली भाषा के सवथमान्य साहित्यकाि, 'मिानथ रिवूयू' के हनयहमत लेखक तथा भाितीय िाष्ट्रीयता के पुिोिा िािनािायण बोस श्री अिहवन्द के नाना थे। श्री अिहवन्द केवल अपनी आध्यास्ट्हिक प्रकृहत के हलए िी निीं,ं अहपतु अपनी उच्चति साहिस्ट्त्यक उपलस्ट्ब्धयों ंके हलए भी अपनी मातृपक्षीय वंिावली के प्रहत अपना आभाि प्रकट किते थे।

एक मिान् कृतहवद्य

चाि वषथ की आयु में अिहवन्द को दाहििहलंग के लॉिेटो कोन्वेन्ट सूकूल में भेिा गया। इसके पित् बालक अिहवन्द की प्रािस्ट्म्भक हिक्षा इंग्लैण्ड के एक पस्ट्ब्लक सूकूल मे िुई। उस सूकूल के अवकाि प्राप्त प्रिानाध्यापक की श्री अिहवन्द के हवषय में यि हटप्पणी थी- "हवगत पच्चीस-तीस वषों में मेिे सेवा-काल में हितने भी छात्र उत्तीणथ िुए उन सबमें अिहवन्द सवाथहिक मेिावी था। उसकी बौस्ट्द्धक क्षमता अप्रहतम थी।"

हवद्यालय से अिहवन्द कैस्ट्म्ब्रि के हकंग्स कालेि गये। विााँ उन्होंनें स्वयं को क्लाहसकी में एक हवहिष्ट छात्र हसद्ध हकया। वि इस्ट्ण्डयन हसहवल सहवथस की पिीक्षा में ससम्मान उत्तीणथ हुए; हकन्तु अश्वािोिण की पिीक्षा में अपेहक्षत अंक प्राप्त न किने के काित उन्हें भाित सिकाि की इस सेवा में प्रविे की अनुमहत प्राप्त निीं ंिो सकी। हकन्तु उनके भाित लौटने पि तत्कालीन बड़ौदा-निेि ने उन्हें अपने िािकीय मिाहवद्यालय में उप-प्राचायथ के पद पि हनयुक्त कि हदया। वि उनका अत्यहिक सम्मान किते थे।

अिहवन्द की हवित्ता के किाण िी सबका ध्यान उनकी अौ आकहषथत िो गया। ब्रौदा के हिहक्षत वगथ के वि प्ेरेम-पात्र बन गये। सामान्य लोगों ंमें भी वि अत्यन्त िन-हप्रय थे। उनके हिष्ों ंमें श्री के. एम. मुन्फ्ी भी थे। मुन्फ्ी अिहवन्द को अत्यहिक श्रद्धा की दृहष्ट से देखते थे। युवा पीढ़ी के लोगों ंने उन्हें एक देवता मान हलया अौ वे लोग उन्हें 'अरुदा' अथाथत् 'ब्रे भैया अिहवन्द' किने लगे। अिहवन्द का हववाि मृणाहलनी देवी से हुआ।

अिहवन्द ग्रीक भाषा के प्रकाण्ड पस्ट्ण्डत थे। लैहटन भाषा में उनको हविेष योग्यता प्राप्त थी। फ्रेंच भाषा का भी उनको पयाथप्त ज्ञान था अौ िमथन तथा इतालवी भाषाओं ंका उन्हें इतना ज्ञान तो था िी हक वि गेटे तथा दांते की पुस्तकों ंको उनके मूल रूप में पढ़ सकें। उन्होंनें पुिातन वैहदक ग्रन्ों ंअथाथत् आगमों ंके अध्ययन का भी प्रािम्भ हकया।

श्री अिहवन्द इहतिास तथा काव्य के एक मिावी हविान् तथा अ ँग्रेिी अौ लैहटन के प्रकाण्ड पस्ट्ण्डत थे। वि इंग्लैण्ड में चौदि वषथ तक िि। िब वि केवल सात वषथ के थे, तभी िा. कृष्णिन घोष ने उनको पािात्य हिक्षा की प्रास्ट्प्त के हलए इंग्लैण्ड भेि हदया। इस अल्पायु में उन्हें िान-बूझ कि इसहलए भेिा गया हक उनका ग्रिणिील मन अपने िन्मित संस्काि ंको हवस्मृत कि पािात्य िीहत-रिवािों ंके ग्रिण की हिक्षा प्राप्त कि सके।

भाितीय िाष्टरीयिा के प्रचारक

अिहवन्द १८९३ ई. में भाित लौटे। ब्रौदा की हिक्षा-सेवा में उनका माहसक वेतन सात सौ पचास रुपये था। १८९३ ई. से १९०६ ई. तक उन्होंनें संस्कृत तथा बंगाली साहित्य, दिथन अौ िािनीहत-हवज्ञान का गिन अध्ययन हकया। इसके पिात् वि त्याग-पत्र दे कि िेढ सौ रुपये माहसक वेतन पि बंगाल नेिनल कालेि में चले गये अौ क्रास्ट्न्तकािी आन्दोलन में प्राणपण से संलग्न िो गये। वि तत्कालीन िाष्टरीय आन्दोलन के एक मिान् िन-नायक थे।

अिहवन्द ने एक अ ँग्रेिी दैहनक 'वन्देमातिम्' का सम्पादन हकया। उनके सम्पादकीय हनभीक तथा ममथभेदी िोते थे। आगामी कुछ मिीनों ंमें उन्होंनें 'िमथ' नामक एक अ ँग्रेिी साप्ताहिक पत्र के प्रकािन का भी आिम्भ हकया। िनता के नाम अपने सन्देि को उन्होंनें इन िब्दों ंमें व्यक्त हकया-"िमािे स्विाज्य का तात्पयथ पूणथ स्वायत्तता तथा हवदेिी हनयन्त्रण से सवथा मुक्त पूणथ स्विाज्य िै। उन हदनों ंवि हब्रहटि न्यायालय तथा उस प्रत्येक वस्तु के बहिष्काि के पक्षिि थे िो हब्रहटि थी। वि िनता से सहवनय अवज्ञा आन्दोलन के हलए सवथदा उद्यत ििने का अनुिोि किते थे।

भाितीय िाष्टरीयता के मसीिा अिहवन्द भाित में िाष्टरीय िागिण के पथ-प्रदिथकों ंमें थे। वि क्रास्ट्न्तकािी आन्दोलन के नेता थे। १९०८ ई. के पिात् देि के िाष्टरीय संघषथ में उनका मिान् योगदान ििा। वि बंग-भंग के हवरुद्ध संघषथ के नेताओं ंकी पिली पंस्ट्क्त में िि।

हदव्य अहभयान के प्रहि उनकी जागरकिा

बहुचहचथत अलीपुि बम केस श्री अिहवन्द के िीवन में एक संक्रास्ट्न्त-काल हसद्ध हुआ। वि एक वषथ तक एक हवचािािीन बन्दी के रूप में अलीपुि के केन्द्रीय कािागाि के एक एकान्त कक्ष में िि। अलीपुि कािागाि के इस प्रदूहषत कक्ष में उन्होंनें अपने भावी िीवन अथाथत् उस हदव्य अहभयान का स्वप्न देखा हिसे ईश्वि ने उनके हलए सुहनहित कि हदया था।

अस्वास्थ्यकि भिोन, अपयाथप्त वस्त्, प्रकिा तथा िुद्ध वायु का अभाव, एकान्त–हनत ऊब से िई मानहसक हवक्षुब्ध तथा अन्धकािपूणथ कािाकक्ष का एकान्त-अिहवन्द को कािािा की इन सिी कहठनाइयों ंको सिन किना पिा। अपने बन्दी िीवन में इस अवहि का उपयोग उन्होंनें भगवद्‌गीता के गिन अध्ययन में हकया। उन्होंनें इसके उपदिों ंको अपने आचिण में व्याविारिक रूप भी प्रदान हकया। हचत्तिंनि दास ने उनके मुकदमे की पैिवी की औि वि न्यायालय के एक स्मिणीय पिीक्षण के पिात् मुक्त कि हदये गये।

उनका योगाभ्यास

श्री अिहवन्द ने योगाभ्यास का प्रािम्भ १९०४ ई. में हकया। िब तक ब्रौदा में उनकी भेंट मिािाष्ट्र के योगी लेले से निीं हुई, तब तक वि हबना हकसी गुरु या सिायक के िी योगाभ्यास किते िि। लेले से उनकी भेंट अल्पकाहलक िी थी। उनके साथ वि केवल तीन हदनों ंतक ध्यान का अभ्यास कि पाये। मन की िस्टन्त तथा हवचािों ंके हननिन्त दबाव से मुस्टक्त के हलए उन्होंनें योगी के अनुदिे का पालन हकया।

श्री अिहवन्द ने अपने योगाभ्यास के हवषय में अपने एक पत्र में हलखा- "मैंने १९०४ ई. में हबना हकसी गुरु के िी योगाभ्यास प्रािम्भ कि हदया। १९०८ ई. में मुझे एक मिाठा योगी से इस हदिा में मित्त्वपूणथ मागथ-दिथन प्राप्त हुआ हिसके फल-स्वरूप मुझे अपनी सािना के मूलिािा का ज्ञान प्राप्त हुआ।" गंगामठ के ब्रह्मानन्द के हिष्य् अपने एक हमत्र से योगाभ्यास की कुछ हवहियों ंका ज्ञान प्राप्त कि वि योगाभ्यास में प्रवृत्त िो गये थे। सवथप्रथम वि प्रहत हदन छि-सात घण्टे श्रम-साध्य प्राणायाम का अभ्यास किते िि। उन्होंनें गीता तथा उपहनषदों ंमें वहणथत ध्यान का भी अभ्यास हकया।

पाक्तिचेरी का आश्रम

४ अप्रैल १९१० ई. में श्री अिहवन्द कलकत्ता से चिनगि िोते हुए पास्टण्डचेिी पहुँचे। विााँ वि अपने एक हमत्र के यिााँ रुके। उस समय उनके साथ चाि सिचि भी थे। िीिे–िीिे इनकी संख्या में वृस्टद्ध िोती गयी। इन लोगों ंने एक आश्रम की स्थापना कि ली। आिकल उस आश्रम में स्टस्थत सौ से अहिक घिों ंमें सैकिों ंआश्रमवासी ििते िैं। ये लोग दुग्धिाला, िाक-वाहटका, वस्त्-प्रक्षालन कि तथा पाकिाला आहद आश्रम की अनेक गहत-हवहियों ंमें कायथित ििते थे। अहिकांि युवहतयााँ आश्रम के अपने प्रेस में काम किती िैं। आश्रम-वाहसयों ंके हलए उनके यि सिी कायथ उनकी सािना के िी अंग िैं। उनके हलए यिााँ का िीवन हवहभन्न असंबद्ध घटकों ंमें हवभाहित न िो कि एक अहवभाहित साकल्य िै।

आश्रम का अपना एक हवद्यालय िै। इसमें स्वास्थ्य-संवद्धथन के हलए िािीरिक-हवज्ञान के अध्ययन-अध्यापन पि अहिक बल हदया िाता िै। चौदि वषथ से ले कि अट्ठािि वषथ तक के छात्रों ंको यिााँ व्यावसाहयक हिक्षा प्रदान की िाती िै।

१९२० ई. में पाल रिचिथ की फ्रास्टन्ससी पत्नी मीिा अिहवन्द आश्रम में आयीं।ं आश्रम के आदिों तथा हसद्धान्तों ंके प्रहत वि पूणथतः समहपथत थीं।ं उन्हें आश्रम की अध्यक्ष बना हदया गया औि आश्रम-वासी उन्हें मााँ किने लगे। प्रत्येक हदन प्रातःकाल वि अपने कक्ष से सम्बद्ध छज्जे से इचुछुक भक्तों ंको दिथन हदया किती थीं।ं वि आश्रम के नगण्य प्रतीत िोने वाले कायथ-व्यापाि का भी सूक्ष्म हनिीक्षण किती थीं।ं

अिहवन्द आश्रम में ििने वाले लोग संन्यासी निीं ंिैं। अिहवन्द भी संन्यासी न िो कि ऋहष थे।

यि आश्रम एक सवथदिीय आश्रम िै। यिााँ ईसाई, पािसी, मुसलमान तथा अन्य मतों ंके प्रहत आस्थावान् लोग भी ििते िैं।

अिहवन्द अपने भक्तों ंको प्रहतवषथ चाि बाि दिथन हदया किते थे।

आश्रम के सभी कायथ सािकों ंद्वािा िी सम्पन्न हकये िाते िैं।

आश्रम ने माँ तथा पाल रिचिथ के प्रबन्धन में 'आयथ' नामक एक अंग्रेिी साप्ताहिक के प्रकािन का प्रािम्भ हकया। अिहवन्द की सवाथहिक मित्त्वपूणथ कृहतयाँ इस पत्र में क्रहमक रूप से प्रकाहित िोती ििीं; हकन्तु साढ़े छि वषों के पिात् इसका प्रकािन बन्द िो गया।

श्री ििीन्द्रनाथ टैगोि एक बाि अिहवन्द आश्रम में गये। उन्होंने अिहवन्द से किा- "आपके पास िब्द िैं। आपसे इसकी स्वीकृहत प्राप्त किने के हलए िम प्रतीहक्षत िैं। भाित आपकी वाणी के माध्यम से िी संसाि को अपना सन्देि देगा।"

श्री अरहवन्द का दिथन

एक प्रकाि से श्री अिहवन्द का दिथन व्याविारिक िै। यि तथ्यों, अनुभव, वैयस्क्तक बोि तथा हकसी द्रष्टा या ऋहष की हदव्य दृहष्ट की सम्प्रास्प्त पि आिारित िै। अिहवन्द की आध्यास्त्मकता तथा तकथ में अहवयोज्य सम्बन्ध िै।

श्री अिहवन्द का उद्देश्य हकसी व्यस्क्त हविेष को पाप-बद्ध किने वाली िस्क्तयों से उसकी मुस्क्त मात्र निीं िै। संसाि के आध्यास्त्मक रूपान्तिण तथा मानहसक, प्राहणक औि दैहिक प्रकृहत एवं मानवता के िीवन में हदव्य स्वभाव के अवतिण के हलए वि कमथ के माध्यम से ईश्विीय संकल्प को मूतथ रूप प्रदान किने के पक्षिि थे।

श्री अिहवन्द किते िैं- "अस्स्तत्व के हनम्नति स्ति से उठने वाले सुस्स्थि तथा अहिग आकांक्षा के स्वि तथा इसके प्रत्युत्ति में ऊर्ध्वलोक से अवतरित ईश्विीय अनुग्रि, इन दो िस्क्तयों के संयोग से यि सम्भव िो सकता िै। यहद रूपान्तिण समग्र रूप से िोना िै, तो उसे उन सािी िस्क्तयों को अस्वीकृत किना िोगा िो उसके मागथ में अविोि उपस्स्थत किती िैं।"

श्री अिहवन्द का किना िै- "दैवी आदेि के अनुसाि िमें ईश्वि की प्रहतकृहत में हवकहसत िोना एवं उसमें तथा उसके साहिध्य में ििना ि कि उसके प्रकाि तथा उसकी िस्क्त का माध्यम तथा उसके सहष्ट-व्यापाि का एक उपकिण िोना ि। िो कुछ भी अिुभ िै, उससे हवलग तथा पहवत्र िो कि िमें संसाि में मानव िाहत को िोमांहचत तथा अनुप्राहणत किने वाले एक हवद्युत्-प्रक्षेपण यन्त्र की भाँहत काम किना िै। इसके परिणाम-स्वरूप िम अपने समीपस्थ ित-ति व्यस्क्तयों को ईश्विीय प्रकाि, िस्क्त तथा आनन्द से पूणथ कि उन्हें ईश्विमय बना देंगे। हगिािथघि, िमथिास्त्र तथा दिथन मनुष्य की सुिक्षा में असमथथ हसद्ध हुए िैं; क्योंहक ये बौस्द्धक हसद्धान्तों तथा संस्थाओं को िी मानव-िाहत के त्राण में समथथ मान कि इन्हीं में उलझे ििे िैं। उन्होंने आत्मा की िस्क्त तथा हविुद्धता, िो अत्यावश्यक िैं, को उपेक्षणीय समझ हलया िै।"

अिहवन्द की 'लाइफ हिवाइन' समस्त संसाि के लोगों के हचन्तन को सम्यक् हदिा प्रदान किने वाली एक सिक्त कृहत िै। इसकी औिस्स्वता तथा उपयोहगता सावथकाहलक िै। 'एसेि आन गीता', 'आइहियल एण्ड प्रोग्रेस', 'ईिोपहनषद्', 'द सुपि मैन', 'एवोलुिन', 'िाट्स एण्ड ग्लम्प्सेस', 'द आइहियल आफ कमथयोगी', 'द ब्रेन आफ इस्ण्डया', 'द रिनेसेन्स आफ इस्ण्डया', 'बेसेि आफ योग', 'काहलदास', 'हवक्रमोवथिी' या 'द िीिो एण्ड द हनम्फ', 'पोएम्स' तथा 'द रिहिल आफ हदस वर्ल्थ' आहद उनकी अन्य कृहतयाँ िैं।

सन्त की महासमाडध

पास्ट्ण्डर्चेी में ५ हदसम्बि १९५० को िाहत्र के िेढ़ बिे श्री अिहवन्द का दिेान्त िो गया। उस समय उनकी आयु ७८ वषथ थी। वि पन्द्रि हदनों ंतक गुदे के िोग से पीहित िेि। उनका उपचाि िा. प्रभाकि सेन कि ििे थे।

इस प्रकाि भाित माता की एक अिौ यिस्वी सन्तान अपनी माता के अंक में हचि हनिा में हवलीन िो गयी। हिस प्रकाि कपूथि अहग्न में हवलीन िो िाता िै, उसी प्रकाि समस्त संसाि में अपने हदव्य प्रकाि की हकिणों ंको हवकीणथ किने वाला एक अिौ दीप अपनी िी ज्योहत में समा गया।

श्री अिहवन्द कहव, िािानीहतज्ञ अिौ दािथहनक थे। उनकी दािथहनक तथा काव्याात्मक कृहतयों ंका बाह्य अलंकिण भले िी पाििात्य प्रतीत िो, उनके मूल स्वि भाितीय िैं। वि इस युग के सवथश्रेष्ठ मानवी हचन्तक तथा आस्ट्थाि िीवन को गहत प्रदान किने वाली एक प्रमुख िस्ट्क्त थे। िािानीहत तथा दिथन के प्रहत उनकी सेवाओं ंको भाित कभी हवस्मृत निीं ंकिेगा। दिथन तथा िमथ के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान का स्मिण संसाि कृतज्ञतापूवथक किता ििेगा।

श्री अिहवन्द की गणना संसाि के सवथश्रेष्ठ व्यस्ट्क्तयों ंमें की िाती िै। वि भाितीय िाष्ट्रवाहदयों ंके प्रेिणा-स्रोत थे। िब तक संसाि का अस्ट्स्तत्व िै, तब तक उनकी िमथ-सम्बन्धी कृहतयों ंकी िीवन्तता अक्षुण्ण ििेगी।

श्री अिहवन्द भाितीय नविाागिण के ििीोमहण, सवोत्कृष्ट दिे-भक्त, बुस्ट्द्धवाहदयों ंमें सवाथहिक कुिाग्र बुस्ट्द्ध अिौ द्रष्टाओं ंमें सवाथहिक सूक्ष्मदृष्टा थे। वि संसाि को इस सत्य से परिहचत किाने के अपने उदात्त प्रयोन में सफल ििे हक भाित अपने-आपको अक्षुण्ण िखते हुए समस्त अन्यदेिीय संस्कृहतयों ंको स्वयं में अन्तलीन कि सकता िै। इसके अहतरिक्त उन्होंने यि भी स्पष्ट कि हदया हक िो समुहचत संश्लेषणों ंमें कुिल िै, वि प्राच्य तथा पाििात्य संस्कृहतयों ंके बीच पिस्पि हविोि का दिथन न कि उनमें तादात्म्य-स्थापन कि सकता िै। श्री अिहवन्द का िीवन हदव्य था। उन्होंने संसाि को भी हदव्य िीवन व्यतीत किने का आदिे हदया। उनकी कृहत 'लाइफ हिवाइन' में उस्ट्ल्लस्ट्खत उनके उपदिे मनुष्य िाहत को अनन्त काल तक अनुप्राहणत किते ििेंगे। भावी पीहढ़याँ उन्हें वैहदक द्रष्टाओं ंके एक समुदाय के सदस्य के रूप में उनका सादि स्मिण किती ििेंगी। उनका प्रकाि सावथकाहलक हसद्ध िो!

स्वामी स्वयंप्रकाि ब्रह्मेन्द्र िी

स्वामी स्वयंप्रकाि ब्रह्मेन्द्र िी का पूवथ-नाम कृष्णमूहतथ था। इनका िन्म तहमलनािु के आकाथट िनपद के कलपि ग्राम में २८ नवम्बि १८७१ ई. में हुआ था। इनके माता-हपता के नाम क्रमिः िानकी तथा िामास्वामी िास्ट्स्त्गल थे। िामास्वामी एक िमथहनष्ठ वैहदक हविान थे िो हनिथन िोते हुए भी एक प्रहतहष्ठत ब्राह्मण थे।

स्वामी ब्रह्मेन्द्र िी की हिक्षा-दीक्षा हतरुहविैमरुदि, कुम्भकोणम् तथा हतरुवनन्तपुिम् में िुई। मैहटिक की पिीक्षा में उत्तीणथ िोने के पिात् वि पूणथ मनोयोग से संस्कृत के अध्ययन में संलग्न िो गये। उनकी िािणािस्ट्क्त अद्भुत थी। वि समुहचत सन्दभों तथा समीक्षा के साथ बृिदाकाि लेखांि िके उद्धिण प्रस्तुत कि हदया किते थे।

कृष्णमूहतथ कुछ हदनों ंतक हनकटवती ग्राम के एक हवद्यालय में अध्यापक ििे। इसके पिात् वि पचास रुपये माहसक वेतन पि भूहम-व्यवस्था हवभाग में हलहपक िो गये।

कृष्णमूहतथ के अग्रि ने उनसे अनिुिो हकया हक वि हववाि कि लें; हकनुतु उन्होंनें उनके इस अनिुिो को दृढ़तापूवथक अस्वीकाि कि हदया। वि पद-त्याग कि गुरु की खोि में उत्ति हदिा में चल पड़े। कािी में उनकी भेंट स्वामी दहक्षणामूहतथ से हुई हिनके पास वि उनके हिष्् के रूप में तीन वषथ तक ििे। उनके प्रहिक्षण में उन्होंनें वेदान्त का सांगोपांग अध्ययन हकया। उन्होंनें विााँ छि मिा तक एक मौनी बाबा की भी सेवा की।

इसके पित् कृष्णमूहतथ हतरुनेलवेली िनपद-स्ट्स्थत पापनािम् के हनकटस्थ बाणतीथथ के ऊपि एक गुफा में चले गये। विााँ उन्हें दीस्ट्प्तमान संन्यासी अवधूत ब्रह्ेमि स्वामी के दिथन हुए। सवथसािाण में वि ििि स्वामी के नाम से प्रहसद्ध थे।
कृष्णमूहतथ की पिीक्षा के हलए अवधूत स्वामी उन पि पत्थि फेंकने लगे; हकनुतु कृष्णमूहतथ इसे िैयथपूवथक सिन किते िि इतना िी निीं, वि स्वामी िी तक स्वयं पत्थि पहुाँचाने लगे। अब स्वामी िी को हवश्वास िो गया हक कृष्णमूहतथ दीक्षा ग्रिण के हलए पूणथतः परिपक्व िो चुके िैं।

स्वामी िी के हनदेिानुसाि कृष्णमूहतथ िून १८९१ ई. में पूहणथमा के हदन अपने घि कानापेप्पिाई चले गये। वि विााँ अपनी माता के पास केवल तीन घण्े तक ििे। उनके वस्त् उनके ििीि से अपने-आप हवलग िो गये। उन्होंनें तत्काल अवधूताश्रम ग्रिण कि हलया।

स्वामी स्वयंप्रकाि ब्रह्ेमि सिस्वती इतस्ततः पयथटन किते ििे। लोगों से िो-कुछ हमल िाता, वि उसी से क्षुिा िान्ति कि लेते औि मागथ में ििााँ श्रान्त-क्लान्त िोते, विीं हवश्राम कि लेते। वि हतरुहचापल्ली िनपद-स्ट्स्थत नेरूि गये ििााँ सदाहिवब्रह्म का समाहि स्थल िै। उन्होंनें तंिावूि िनपद के अनेक गााँवों की यात्रा की। वि कुछ मिीनों तक हतरुवामलै की एक गुफा में ििे। उन्होंनें समस्त भाित का परिभ्रमण हकया। वि बद्रीनाथ भी गये।

स्वामी ब्रह्मानन्द नग्नावस्था में ििते थे। अतः एक हदन पुहलस ने उन्हें िवालात में बन्द कि हदया। हकनुतु लब्ध-प्रहतष्ठ वकील कृष्ण स्वामी के प्रयत्न से वि मुक्त िो गये।

स्वामी ब्रह्मानन्द को हवष हदया गया। उनके हिि तथा उनकी दाढ़ी के बाल िला हदये गये। उनको दुष्ट-प्रकृहत लोगों िािा लायी गयी कुख्यात महिलाओं िािा प्रलोहभत हकया गया। उनके वक्षस्थल को पिाबद्ध कि हचलहचलाती िूप में सड़क पि घसीटा गया। अन्ततः वि सलेम िनपद-स्ट्स्थत सेन्दमंगलम् ग्राम में चले गये। ििााँ वि कोल्ली की पिाहड़यों में घूमते ििे। विााँ उन्होंनें एक उपहगरि-पाद पि तप किने के हलए अपना हनवास-स्थान बना हलया। उच्च न्यायालय के अवकाि-प्राप्त न्यायािीि श्री के. सुन्दिम् चेहियाि ने श्रद्धा-भस्ट्क्त-पूवथक उनकी सेवा की।

स्वामी ब्रह्ेमि आध्यास्ट्त्मक उत्कषथ के िीवन्त उदाििण थे। वि अवधूताश्रम के हलए हवहित कठोि संयम का पालन किते थे। उन्होंनें सांसारिक बुस्ट्द्ध-सम्पन्न युवकों के उपिास तथा हतिस्काि को असािािण िैयथ के साथ सिन हकया। अपने िीवन के प्रािस्ट्म्भक काल में िी उन्होंनें सांसारिक सुख-सुहविा का परित्याग कि हदया था। वि मन में आत्म-साक्षात्काि की उत्कट आकांक्षा हलये छुिे की िाि की भााँहत दुस्ति मागथ पि चल पड़े। उनके सद्गुरु की कृपा से उनके मन में असीम ऊिाथ थी िो इस मागथ पि उनके हलए सम्बल हसद्ध िुई। उन्होंनें अपने अनेक हिष्यों का मागथ-दिथन हकया। नि, नािी तथा बालक उनका आिीवाथद सबको हमला किता था।

स्वामी िी के िीवन-काल में िी उनके हनष्ठावान् हिष्् स्वामी हचदानन्द ने गुरु के प्रहत अपनी आत्यस्ट्न्तक श्रद्धा से अहभभूत िो कि दत्तात्ेरेय के हवग्रि तथा स्वामी िी की संगमिमि की एक मूहतथ के प्रहतष्ठापन के हलए आश्रम में एक उपहगरि पि एक मस्ट्न्दि का हनमाथण कि हदया। उनका यि कायथ अत्यहिक श्रम-साध्य था। उस दोमंहिले मस्ट्न्दि में स्वामी िी की संगमिमि की मूहतथ तथा भगवान् दत्तात्ेरेय के हवग्रि के दिथन से मूहतथकाि की चमत्कािपूणथ तक्षण-कला की दक्षता स्पष्टतः परिलहक्षत िो िाती िै। अपने िान्त तथा प्रेिणाप्रद परिवेि में उपहगरि पि हनहमथत यि

आकषथक मस्ट्न्दि अपने अस्ट्स्तत्व तथा वतथमान ििसोक रूप-हविान के हलए स्वामी ि‍िकिानन्द के श्रम-साध्य तथा अथक प्रयास एवं अििसिााण िैयथ तथा कौिल का आभािी ि‍ै।

ब्रह्‍मिैि स्वामी हदसम्बि १९४८ ई. में मिासमाहि में प्रहवष्ट हुए। दत्तात्रेय-मस्ट्न्दि तथा गुिालय- ये दोनों ंसवथ ििसािाण को पूिाि सन्त स्वामी की महिमा तथा मित्ता का स्मिण हदलाते हुए एक स्थायी कीहतथ स्तम्भ के रूप में अपने आध्यास्ट्कि वैभव को उत्तिोत्ति समृद्ध किते ििंगे।

स्वामी िामतीथथ

स्वामी िामतीथथ का सम्बन्ध िामचरितमानस के अमि प्रणेता गोसाई तुलसीदास की वंििािली से था। उनका िन्म पंिाि के ििगुिावाला िनपद के मुिलीवाला ग्राम में १८७३ ई. में हुआ।

वे एक आििसिााण बुस्ट्द्ध-सम्पि छात्र तथा प्रचण्ड मिा के स्वामी थे। उनका स्वभाव मननिील था। गहणत में उनकी हविेष रुहच थी। वे एकान्त-हप्रय थे। बी. ए. की पिीक्षा में उन्होंनें सवोच्च स्थान प्राप्त हकया। एम. ए. में उनका हवषय गहणत था हिसमें उनकी अििसिााण गहत थी।

िामतीथथ दो वषों तक ििािौ फोमैन हक्रहियन कािेि में प्राध्यापक ििे। कुछ हदनों ंतक उन्होंनें ििािौ ओरियन्टल कािेि में भी अध्यापन हकया।

१९०० ई. में वि वन में चले गये औि इसके पिात् वि िीघ्र िी संन्यासी िो गये। अमेरिका तथा िापान िा कि उन्होंनें विााँ के हनवाहसयों ंको अपने प्रेिणादायक तथा ओिोत्थानकािी भाषणों ंसे अहभभूत हकया। हमश्र में उनका िाहदथक स्वागत हकया गया। विााँ उन्होंनें एक मसहिद में फािसी में भाषण हदया। िामतीथथ सवथदा प्रफुस्ट्ल्लत-हचत्त ििते थे औि उनके नेत्र हदव्य ज्योहत तथा आनन्द से दीस्ट्प्तमय ििा किते थे। फािसी, अाँग्रेिी, हिन्दी, उदूथ तथा संसृकृत भाषाओं ंपि उनका पयाथप्त अहिकाि था।

िामतीथथ एक मिान् तपस्वी तथा प्रबुद्ध ििस्यवादी थे। वे िावी-तट पि योगाभ्यास हकया किते थे। इसके पिात् वे गंगा-तट पि स्ट्स्थत ब्रह्मपुिी के वन में ििने लगे। विीं ंउन्हें आि-साक्षात्काि हुआ। यि स्थान ऋहषकेि से पााँच मील दूि िै।

आि िामतीथथ िमािे बीच भौहतक हवद्यमान निीं ंिैं; हकन्तु यथाथथतः वि हचिन्तहवत, िाश्वत तथा अक्षय िैं। वि संसाि के आध्यास्ट्कि गगन के एक ज्योहतमथय नक्षत्र थे। सवथग्रािी तथा हनहहतिय आनन्द के रूप में 'सस्ट्च्चदानन्द' का उनको पूणथ बोि था। प्राचीन ऋहषयों ंतथा आिुहनक सन्तों ंने चिम सत्ता के अहनवथचनीय स्वभाव की हसस्ट्द्ध प्रत्यक्षीकिण तथा बुस्ट्द्ध के युस्ट्क्तयुक्त प्रमाणों ंसेन कि अपिोक्षानुभूहत से की िै िो वाचक िब्दों ंके अभाव में अप्रेषणीय िै।

स्वामी िामतीथथ के हिष्य श्री आि. एस. नािायण स्वामी के हनदेिन में लखनऊ में िामतीथथ पस्ट्ब्लकेिन लीग की स्थापना िुई। स्वामी िामतीथथ के प्रेिणाप्रद अनुदेिो का प्रत्येक प्रेमी तथा प्रिंसक इस बात के हलए नािायण स्वामी तथा लीग का आभािी िै हिन्होंनें अपरिहमत कष्ट उठा कि िामतीथथ की कृहतयों ंको संसाि के हलए सुलभ बनाया।

िामतीथथ की गणना भाितीय मिा के सवाथहिक द्युहतमान ित्नों ंमें की िाती िै। वे इन अपौरुषेय िष्टाओं ंके मसीिाई वगथ के प्रहतहनहि िैं हिन्होंनें भाितीय पुनिाथगिण का पिदा उठा कि एक िचनािक, िैयथपूणथ तथा सवथिेता

आध्यास्ट्किता के युग का श्रीगणेि हकया। अिुहनक काल के लोगों ंके हलए भाितभूहम पि उनके अवतिण में एक मिान् अथथवत्ता हनहित थी।

स्वामी िामतीथथ से उत्तिाहिकाि के रूप में भाित को वेदान्तोक्त हनभीकता तथा आध्यास्ट्कि दिे-भस्ट्क्त - इन दो ित्नों ंकी सम्प्रास्ट्प्त हुई। िाम की आध्यास्ट्कि दिे-भस्ट्क्त भव्य तथा अहितीय िै। भाित माता के प्रत्येक सपूत को इसे आत्मसात् कि लेना चाहिए। स्वामी िाम ने सुस्पष्ट िब्दों ंमें घोहषत हकया हक यहद तुम्हें स्वयं में उत्कट तथा यथाथथ दिे-प्रेम की भावना िाग्रत किनी िै, तो तुम्हें हलए अपनी मातृभूहम में देवत्विोपण किना तथा भाितभूहम को एक िीवन्त देवी के रूप में देखना अत्यावश्यक िै। "यहद तुम ईश्वि तथा स्वयं में एकाकता के बोि के इच्छुक िो, तो तुम्हें हलए समग्र िाष्ट्र से तादात्म्य-स्थापन अहनवायथ िै। भाितभूहम के प्रत्येक प्राणी के प्रहत अपनी इस उत्कट एकत्व-भावना को अपने अंग-प्रत्यंग में स्फुरित िोने दो।" िाम का किना िै "यि देखते हुए हक भाित की समग्रता का समावेि प्रत्येक भाितीय में परिलहक्षत िोता िै, भाितीयों ंको अपनी हनष्ठा इस समग्र के प्रहत अहपथत किनी िोगी। िब हनझथिों,ं पवथतों ंतथा वृक्षों ंतक का मानवीकिण कि हदया गया िै, तब उस मिान् भाित माता में देवत्विोपण क्यों ंन हकया िाये िो तुम्हािा पालन-पोषण किती िै। तुम प्राण-प्रहतष्ठा िािा एक प्रस्ति-प्रहतमा या मृहत्तका-हपण्ड को सप्राण कि देते िो, तब देवी अथाथत भाित माता में अन्तहनथहित वैभव, आथथ तथा प्राण–स्ट्क्त का आिोपण हकतना साथथक िोगा।" इस प्रकाि िाम के हलए मातृभूहम के प्रहत प्रेम का िाष्ट्रीय िमथ हववाट् प्रेम का आध्यास्ट्कि िमथ था। प्रत्येक भाितीय को इस पैतृकता को अपने हृदय में सँिो लेना चाहिए। अपने इस कतथव्य-बोि के माध्यम से तुम्हें इस मिान् िष्टा के प्रहत अपना सम्मान तथा अपनी कृतज्ञता प्रकट किनी चाहिए। इसी स्ट्स्थहत में तुम उनके िीवन तथा उपदेिों ंको महिमास्ट्ित कि सकते िो।

िाम के अनुसाि अपनी मातृभूहम के साथ पूणथ तादात्म्य-स्थापन में िी उत्कट दिे-भस्ट्क्त की अथथवत्ता हनहित िै। उनके इन िब्दों ंपि ध्यान दीहिए- "दिे तथा िनता के साथ तुम्हािी प्रेममयी समस्विता अत्यावश्यक िै।" आध्यास्ट्कि सैहनक बनो। अपने कुहत्सत अिं-प्रत्यय का परित्याग कि अपनी मातृभूहम के हलए अपना िीवन अहपथत कि दो। उसके प्रहत तुम्हािे प्रेम के माध्यम से तुम दोनों ंके बीच भावनात्मक सम्बन्ध स्थाहपत िो िायेगा। अग्रगमन किो। दिे तुम्हािा अनुगमन किेगा। वस्तुतः यिी व्याविारिक वेदान्त िै।

िामतीथथ ने िन-मानस को एक नये उल्लास तथा इस हवश्वास से भि हदया हक इस ितभाग्य ििती पि िमािा िीवन-यापन औि सम्िु में एक दीघथकालीन संघषथ के पिात् एक िलि–ून्य मरु प्रदेि, ििाँ िमािे दुःखों ंकी आवृहत्त िोती िििी, में न पहुँच पाना हनष्प्रयोिन निीं ंिै। उनका िीवन व्याविारिक दिथन का मूतथ रूप था। इसके माध्यम से उन्होंनें संसाि के समक्ष इस तर्थ् को अनावृत कि हदया हक आनन्द की उपलस्ट्ब्ध इस िीवन में भी सम्भव िै औि यहद कोई इसकी सम्प्रास्ट्प्त के हलए हनष्कपट भाव से प्रयत्निील िै. तो यि उसके हलए सवथा सुलभ िै।

वेदान्तोक्त िीवन के क्षेत्र में स्वामी िाम एक अनुकिणीय पुरुष थे। वि एक हनभीक तथा व्याविारिक वेदान्ती थे। वि आनन्दमोहदत गत्याक िीवन व्यतीत किते थे। उनके आदिथ उच्चति, उनका दृहष्टकोण उदात्त तथा उनका प्रेम हनत्य तथा नैसहगथक था।

वि मूहतथमान देवत्व तथा प्रेमावताि थे। वि प्रत्येक सत्यान्वेषी के हृदय में आध्यास्ट्कि दीस्ट्प्त की गंगा बिाते हुए िमािे बीच एक गत्याक िस्ट्क्त के रूप में आि भी हवद्यमान िैं। उनके उपदेि उत्प्रेिक, उत्थापक तथा प्रबोिक िैं। वे अन्तःप्रज्ञाक अनुभूहत के स्रोत िैं।

िामतीथथ के अनुदेि अहिसािाण रूप से अव्यवहित औपूणथ तथा अप्रहतम िैं। उन्होंनें न तो हकसी हवहिष्ट योग या सािना का उपदेि हदया, न िी हकसी अमूतथ दािथहनक हसद्धान्त का प्रहतपादन हकया। उन्होंनें वेदान्त, योग तथा सािना के अनुरूप िीवन-यापन की हिक्षा दी। उनके उपदेिों ंमें उनके वैयस्ट्क्तक दृष्टान्त का पुट ििता था। वि

ज्योहतमथय िीवन के मूतथ रूप थे। उन्होंनें अपने मौन व्यस्ट्क्तत्व से भी श्रोताओं ंको उतना िी प्रभाहवत हकया हितना प्रभाहवत उन्होंनें टोहकयो तथा टोिन्टों ंके बीच अपने प्रवचनों ंतथा भाषणों ंसे अपने असंख्य श्रोताओं ंको हकया था।

स्वामी िाम ने पािात्य दिेों ंमें स्वयं को पूवथ के केवल एक ज्ञानी के रूप मैं न प्रस्तुत कि पूवथ के ज्ञान के मूतथ रूप में प्रस्तुत हकया। वे आध्यास्ट्कि चेतना के िषाथहतिेक में मग्न एक आनन्दमय प्राणी थे औि उनका आनन्द संक्रामक था। उनके दृहष्टपात में हवद्युत्‌-िस्ट्क्त हनहित थी औि उनकी मुस्कान से आिा की ज्योहत की हकिणें हवकीणथ िोती थीं।ं उनकी उत्ेप्रिक वाणी या यों ंसमझ लीहिए हक उनके समग्र िीवन से वेदान्त की गंगा प्रवाहित िोती थी। उनका प्रत्ेयेक कमथ, प्रत्ेयेक संकेत तथा उनकी प्रत्ेयेक गहतहवहि वेदान्त की चेतना के िोमांच से अनुप्राहणत थी।

िामतीथथ ने इस तर्थ् की हसस्ट्द्ध कि दी हक वेदान्त के हसद्धान्तों ंके अनुरूप िीवन-यापन सवथा सम्भव िै। उनका िीवन व्यापक आध्यास्ट्कि दृहष्ट तथा आनन्दमय िीवन-यापन की सवथतोत्ृकष्ट कला की अहभव्यस्ट्क्त था। श्री िामतीथथ के हलए वेदान्त ज्ञान तथा बोि से अहिक वेदान्त के अनुरूप िीवन-यापन िै। उनकी यि एक हवलक्षण हवहिष्टता थी हक वेदान्त की सवोच्चता के प्रहत आस्थावान्‌ िोते हुए भी उन्होंनें इसका प्रहतपादन िीवन-यापन की एक सिि-सिल कला के रूप में हकया। वे सामान्य िन को वेदान्त के हनकट न ले िा कि वेदान्त को िी सामान्य िन के हनकट ले आये। वे वेदान्त को िान्त घिों ंसे ले कि व्यस्त कायाथलयों,ं िन-संकुल स़िकों ंतथा पािात्य िगत्‌ के कोलािलमय िाट-बाट तक ले गये।

प्राच्य तथा पािात्य-दोनों ंने स्वामी िाम के िीवन को एक अनुग्रि तथा विदान के रूप में ग्रिण हकया िै। भाित के हलए उन्होंनें वेदान्त को स्वयं अपने पे्रिणाप्रद िीवन की प्राणद िस्ट्क्त तथा प्रोज्ज्वल दृष्टान्त से ऊर्ध्थहसत हकया। उन्होंनें भाित को भ्रास्ट्न्त तथा अन्धहवश्वास से मुक्त हकया। इसके साथ िी उन्होंनें अमेरिका को आस्ट्कि िीवन की व्याविारिकता के तास्ट्त्त्वक मूल्यों ंके प्रहत िाग्रत हकया। उन्होंनें इस तर्थ् को अनावृत कि हदया हक प्रत्ेयेक उदात्त कमथ का केिीय िि्स्य एकत्व, सामंिस्य तथा आनन्द के हदव्य हविान से समस्विता में अनुस्यूत िै।

अि-प्रत्यय से ऊपि उठ कि हनवैयस्ट्क्तक कमथ किना िी हदव्य िीवन की कुंिी िै। उन्होंनें अपने देिवाहसयों ंका आह्वान किते हुए किा था- "तुम लोगों ंमें िीवन, प्रकाि तथा पे्रम (सत्‌-हचत्‌-आनन्द) के प्रहत एकत्व-बोि िाग्रत िो। इसके फल-स्वरूप तुम्हािे अन्ति से सुखद िौयथपूणथ कमथ एवं ज्ञान तथा सद्‌गुण की ििाएँ प्रवाहित िोने लगेंगी। इसी को किते िैं हदव्य िीवन औि यिी िै तुम्हािा िन्म-हसद्ध अहिकाि।"

िाम ने हविुद्ध नैहतकता तथा आत्यस्ट्न्तक संयम की प्रास्ट्प्त के हलए, अमेरिकनों ंका पथ-प्रदिथन हकया। ििीि िािा सहक्रय संघषथ तथा मन में िास्ट्न्त तथा संयम पापि-न्य दुःख से मुस्ट्क्त के माध्यम िैं। यि मुस्ट्क्त यिीं ंऔि इसी िीवन में प्राप्त िो सकती िै। सबके प्रहत एकत्व-बोि िमें संयम का एक सन्तुहलत िीवन प्रदान किता िै। िािि की भूहम के हलए िाम के सन्ेदि का यिी साि-तत्त्व िै।

संक्ेषेप में स्वामी िाम का िोमांचक िीवन दुलथभ पे्रम तथा हदव्य िीवन की सिलता का ज्वलन्त उदाििण िै। तुमको सवथभूतात्मा, प्रकाि तथा आनन्द के स्रोत के रूप में ज्योहतमथय िोना िै। तुमसे औिाथ तथा कतथत्व-िस्ट्क्त का स्वाभाहवक रूप से हनस्सिण िोने लगेगा। िब फूल स्ट्खलता िै, तब उससे सुगन्ध अपने-आप हनकलने लगती िै। िाग्रत िो िाओ, भाित। िाम के इस आह्वान का उत्ति दो। अपने यथाथथ स्वरूप आनन्द को पिचानो। आत्मा में हनवास किो। िाम को इसी क्षण अपने हृदय में प्रहवष्ट िोने दो औि अपने कमथ को गहतिीलता प्रदान कि अपने िीवन को उद्‌बुद्ध किो। उनकी हदव्यिा भाित को अनुप्राहणत कि उसे उसकी पुिातन महिमा तथा वेदास्ट्न्तक वैभव के हिखि पि आसीन किे ! ॐ में हनवास किो !

श्री ‍िमण मिहषथ

श्री ‍िमण मिहषथ का ‍िन्म एक ‍िमथहनष्ठ मध्यवगीय ब्राह्मण परिवाि में ३० हदसम्बि १८७९ को हुआ। उनका पूवथ-नाम वेंकटिमण था। एक हमिन फूल के छात्र के रूप में उन्होंनें अ‍ाँगि‍ेी का प्रािस्ट्म्भक ज्ञान प्राप्त हकया ‍िो अत्यल्प था।

गरह-त्याग

२९ अगस्त १८९६ ई. को मदै ‍िनपद में स्ट्स्थत अपने गृि का परित्याग श्र वि अपने स्रष्टा भगवान् अरुणाचल की खिो में चल पि़े। वि अपने गन्तव्य पि १ हसतम्बि १८९६ ई. को पहुाँचे। विााँ उनके कण्ठ से भगवान् अरुणाचल की अभ्यथथना में हनम्नांहकत ‍िब्द हनःसृत हुए :

"भगवन्, मैं ‍िुम्ारे आह्वान पर
अपने सवकस्व का पररत्याग कर
ुम्ारी सेवा में उपक्तस्थि हूँ।
मैं डकसी वरदान का अडभलाषी नही ‍ोंहूँ।
अपनी हाडन का भी ‍िोक नही ‍ोंहै मुे।
मुे ‍िुम अपनी ‍िरण में ले कर अपना बना लो।"

उस हदन से अपनी ‍िागहतक यात्रा के अन्त तक अरुणाचल को अपना स्थायी हनवास-स्थान बना कि वि समस्त भूमण्डल में अपनी अिकिा‍ीन्य मनःस्ट्स्थहत की स्वहणथम भाषा मौन के माध्यम से ‍िाश्वत सत्य का सन्‍ेदि समेप्रहषत किते ‍िि‍े।

गृि-त्याग के समय वेंकटिमण अपने अहभिंसक अग्रि के नाम यि पत्र छोि़ गये थे- "मैं अिा अपने स्रष्टा के आदिानुसाि उसकी खिो में यिााँ से प्रस्थान कि ‍िि‍ा हाँ। वसुतुतः मैं एक ‍िाहमथक अहभयान पि हनकल ‍िि‍ा हाँ। अतः इसके हलए न तो हकसी को दुःखी ‍िोना चाहिए, न ‍िी मि‍ी खिो में ‍िन व्यय किना चाहिए।"

महान् अडभबोध

एक हदन ‍िब भक्तों ‍ंने ‍िमण मिहषथ से उनके आन्तरिक रूपान्तिण का किाण पूछा, तब उन्होंनें किा- "१८९६ ई. के मध्य में हिस हदन मैंने मौ का सवथदा के हलए परित्याग हकया, उसके छि सप्ताि पूवथ मिे ‍िीवन में एक मिान् परिवतथन ‍िो गया था। यि परिवतथन आकस्ट्स्मक रूप से हुआ। एक हदन मैं अपने चाचा के घि के पिले तल पि एकाकी बैठा हुआ था। उन हदनों ‍ंमिा स्वास्थ्य सामान्यतः सन्तोषप्रद ‍िी था; हकन्‍ुतु मैं मृतुयु के आकस्ट्स्मक अिौ सुस्पष्ट भय से ग्रस्त ‍िो गया। मैं सोचने लगा हक इस स्ट्स्थहत में मिे हलए क्या किणीय ‍िै। इस हवषय पि मैंने हकसी ‍िाक्टि, अग्रि या हमत्र के पिामिथ को अनावश्यक समझा। मुझे ऐसा प्रतीत ‍िुआ हक मुझे इस समस्या का अहवलम्ब समिाान स्वयं किना ‍िोगा। मृतुयु के भय से मुझे अिा-हवश्‍ेलेषी तथा अन्तमुथखी बना हदया। मैंने अपने-आपसे मन‍ी‍ी-मन किा- 'मृतुयु के इस आगमन का अथथ क्या ‍िै ? ‍िो मृतुयु को प्राप्त ‍िोता ‍िै, वि कौन ‍िै? वसुतुतः इस ‍िि‍ीि की ‍िी मृतुयु ‍िोती ‍िै।' मैंने उस स्ट्स्थहत को तत्काल एक नाटकीय रूप प्रदान किते हुए अपने ‍िि‍ीि को सवाांगतः हवसूतृत कि हदया हिससे वि ‍िीिप्रायः ‍िो कि पूणथतः स्ट्स्थि ‍िो गया। इस प्रकाि उसमें ‍िव की अक़िन आ गयी। मैं अपने अनुसन्धान को अिौ अहिक व्यापक बनाने के हलए स्वयं को ‍िव समझने लगा। मैंने अपना मुाँि बन्द कि ‍िोंठं भींचं हलये हिससे कोई स्वि बाि‍ि न हनकल सके। तब मैंने अपने-आपसे किा- 'यि मृत ‍िि‍ीि ‍िै। अब इसे लोग श्मिान में ले ‍िायेंगे ‍िि‍ााँ ‍िला कि इसे भस्म कि हदया ‍िायेगा। हकन्‍ुतु क्या इस दिेान्त के पिात् मिा भी

अन्त िो ियेगा? क्या मैं यि िीिी हाँ? यि िीिी तो मूक तथा ि़ि ि़ै। हकन्तु मुझे अपने अस्स्तत्व की समस्त ऊिथ
का ज्ञान िै। इसके अहतरिक्त मैं इस िीिी से असमूपृक्त उस नाद से भी परिहचत हाँ िो मेिी यथाथथ आिा का स्वि ै। भौहतक िीिी मिणिमाथ िै; हकन्तु मृतुयु िीिी का अहतक्रमण किने वाली इस आिा का स्पिथ तक निीं ंकि सकती। अतः मैं अमत्यथ आिा हाँ।' यि सब हकसी बौस्द्धक व्यायाम का आवेग निीं ंथा। यि मेिे समक्ष एक िीवन्त तथा हदव्य दीस्प्त के रूप में प्रकट हुआ हिसे मैंने तत्क्षण देख हलया औि हिसकी अस्वीकृहत के हलए मेिे पास कोई युस्क्त निीं ंथी। उस स्स्थहत में मैं िी एकमात्र 'यथाथथ सत्ता' था औि मेिे िीिी से सम्बद्ध सािे चेतन व्यापाि उसी पि केस्ति थे। मेिा यथाथथ आि-तत्त्व अपनी िस्क्त तथा िसीलेकता के काि़ण सबके ध्यान का कें-हबन्फ्दु बना हुआ था। तत्काल िी में मृतुयु के भय से सवथदा के हलए मुक्त िो गया। आिा के अन्तलथयन की वि प्रहक्रया उसी समय से आि तक चली आ ििी िै।"

महडष का िपस्

पटल-हलंग के हनकटस्थ सिस्र स्तम्भ मण्डप, सुब्रह्मण्य-मस्न्दि, आम्टम्र-वाहटका, सद्गुरु स्वामी गुफा तथा किाेि उपहगरि-ये स्थान िमण की तपोभूहम थे। १९०९ ई. से १९१६ ई. तक वि हवरूपाक्षी गुफा में ििे।

मिण के तप की कालावहि में दुष्ट प्रकृहत के बालक उन पि पत्थि तथा खपैल फेंका किते थे; हकन्तु वि अपने ध्यान तथा तप की िस्क्त से सवथदा िान्त-संयत ििते थे।

हतरुविामलै में िमण मिहषथ को लोग ब्रह्म स्वामी किा किते थे। संसूकृत के प्रकाण्ड हविान् काव्य कान्त गणपहत िास्त्री १९०८ ई. में िमण-आश्रम में गये। उन्होंनें 'िमण गीता' हलखी।

मिहषथ का िीवन, ध्यान का सातत्य तथा आनन्दानुभव ये तीनों ंसमानाथथक थे। उनको आन्तरिक िास्न्त उपलब्ध िो चुकी थी। वि अन्तस्थ ईश्वि के प्रकाि में हनवास किते थे औि अन्य लोगों ंको भी ऐसा िी किने के हलए उत्साहित हकया किते थे। उनके हलए समस्त संसाि एक था। मिहषथ बहुत कम बोलते थे। वि उसी समय बोलते थे, िब बोलना अत्यावश्यक िो िाता था।

उनका डदव्य सनेदि

मिण उपहनषदों ंके आदेि उपदेि के िीवन्त उदाििण थे। उनका िीवन उनके उपदेिों ंके दिथन तथा सन्देि का प्रतीक था। उनकी भाषा ममथस्पिी थी।

मिान् मिहषथ ने स्वयं को अपनी अन्तिाि में िी उपलब्ध हकया औि इसके पिात् अपने मिान् िीवन का उदात्त हकन्तु सिल-सिि सनेदि- "अपने को िानो", संसाि को हदया।

"अपने को िानो। िेष सभी कुछ अपने-आपको स्वयं तुम्हािे समक्ष अनावृत कि देगा। आिानाि-हववेक के हलए अमत्यथ, अहवकािी, सवथव्यापी तथा अपरिस्च्छि आिा एव पल-पल परिवतथनील नामरूपाक अहनत्य िगत् तथा िीिी में पाथथक्य-दिथन किो। 'मैं कौन िँ? इसका उत्ति परिप्रश्न से प्राप्त किो। मन को िान्त िखो। आिा को अपने हवचाि का हवषय बना कि अन्य सभी हवचािों ंसे स्वयं को मुक्त कि लो। अपने हृदय-कक्ष की गिनता में प्रहवष्ट िो िाओ। यथाथथ अपरिस्च्छि आिा का दिथन किो औि उसमें सवथदा के हलए िान्त भाव से अवस्स्थत िो कि उच्चतम आिा से तादात्म्य-स्थापन किो।" श्री िमण मिहषथ के दिथन तथा उपदेिों ंका सािांि यिी िै।

श्री िमण किते िैं- "यथाथथ आा के प्रहत अनहभज्ञता िी संसिा के दु:ख का किाण िै। आनन्द मनुर्ष् का यथाथथ तथा अन्तिाथत स्वरूप िै। यि इसके अन्तगथत बद्धमूल िै। सुख की खोि मनुर्ष् की यथाथथ आा की खोि का अचेतन प्रयास िै। यथाथथ आा अक्षि िै। अतः मनुर्ष् िब इसे उपलब्ध कि लेता िै, तब उसे अन्तिीन आनन्द की सम्प्रास्ट्प्त िो िाती िै।"

"मैं, मैं के आ-चेतन हनस्सिण के साथ वि सवोच्च आा हृदय की गिनतम गुफा में अपनी हचि प्रदीस्ट्प्त के साथ अवस्ट्स्थत िै। अन्तविन तथा प्राणायाम के माध्यम से उसके बोि के हलए तुम एकाग्र-हचत्त अपने हृदय-कक्ष में प्रहवष्ट िो कि उस आा की आा अथाथत् यथाथथ आा के साथ स्वयं को एकीकृत कि लो।"

श्री िमण का "मैं कौन हाँ", उपदेि-सिाम् तथा उल्लतु निापतु (Ullathu Narpathu) सूत्रिाक तथा संहक्षप्त रूप में प्रसुतुत अपिोक्ष ज्ञान की मुक्तावहल िैं।

अस्ट्खल भाितीय साईं सहमहत के भूतपूवथ अध्यक्ष बी. वी. निहसंि स्वामी िािा 'आ-साक्षात्काि' नामक एक िोमांचक पुस्तक का प्रकािन हुआ िै, हिसमें िमण मिहषथ के िीवन की घटनाओं ंको हचत्रांहकत हकया गया िै। योगी िुद्धानन्द भािती ने भी तहमल में उनकी िीवनी हलखी िै।

भगवान् िमण मिहषथ ने भौहतकवाहदयों ंके इस अथथिीन कथन को भ्रान्त हसद्ध कि हदया हक आ-साक्षात्काि तथा समाहि सुदूि अतीत की बातें िैं औि वतथमान युग में मनुर्ष् के हलए इनकी हसस्ट्द्ध असम्भव िै। उन्होंनें अपनी आिीवन समाहि से यि हसद्ध कि हदया हक आ-साक्षात्काि तथा ईश्वि का साहिध्य आि भी सम्भव िै।

हप्रय मुमुकुषु, सोत्साि कहटबद्ध िो कि तुम स्वयं को प्राणपण से योग-सािना में प्रवृत्त कि दो। हवदेि कैवल्य प्राप्त कि तुम एक ज्योहतमथय तथा प्रबुद्ध सन्त के रूप में िीघ्र िी सवथदा के हलए प्रख्यात िो िाओगे।

पूवाकपि प्रकाि में अडधक िीघ्रि है

श्री िमण के बायें िाथ की कुिनी के ऊपि सांघाहतक गाँठ पड़ गयी थी।

लेस्ट्फ्टनेन्ट कनथल पी. वी. किमचन्दानी, आई. एम. एस. िी. एम. ओ. ने उनकी परिचयाथ की। मिहषथ का चाि बाि शल्योपचाि हकया गया।

१४ अप्रैल १९५० ई. को िात के आठ बि कि सैंताहलस हमनट पि िब श्री िमण मिहषथ अपनी नश्वि काया का परित्याग कि मिासमाहि में प्रहवष्ट िो गये, तब आकाि से उल्कापात िो गया था।

मिहषथ िमण में अन्तहनथहित प्रकाि की प्रहतकृहत के माध्यम से िो सवथव्यापी प्रकाि अपनी हकिणों ंको संसाि में हवकीणथ कि ििा था, वि एक बाि पुनः अपने आहद स्रोत में हवलीन िो गया। हिन्हें िम मिहषथ िमण किते िैं, वि उपहनषदों ंके िीवन्त प्रमाण थे। वि प्रमाण सवथदा अकुषुण्ण ििे कि चिम सत्ता के प्रहत ििािी हवश्वास को िस्ट्क्त प्रदान किता ििेगा।

आि वे सन्त ििािे समक्ष िािीरिक रूप से हवद्यमान निीं िैं; हकन्तु उनकी आा के प्रकाि का हवलयन प्रत्येक ग्रिणिील व्यस्ट्क्त की आा में िो चुका िै। मिहषथ िमण ििािे हृदय में अवस्ट्स्थत िो चुके िैं। उनके मिाप्रयाण से दु:खी िोने की कोई आवश्यकता निीं िै; क्योंहक उन्हें अपने िीवन का लक्ष्य प्राप्त िो चुका था औि उनके चिम पुरुषाथथ आ-साक्षात्काि की हसस्ट्द्ध िो चुकी थी। अतः इससे द:खी िोना अथथिीन िै। िो लोग अपनी लक्ष्य-हसस्ट्द्ध औि

कतथव्य पालन में असफल हसद्ध िोते िैं, उन्हीं ंलोगों ंकी मृतुयु से दु:खी िोना चाहिए। मिहषथ की आिा का प्रकाि पूवथहपक्षा अहिक प्रोज्ज्वल प्रतीत िो ििा िै।

मिहषथ िमण मागथदिथन, उत्साि तथा प्रेिणा प्रदान किते हुए मानवता के हृदय में सदैव हविामान ििेंगे हिससे उस सत्य का साक्षात्काि लक्ष-लक्ष लोगों ंके हलए सम्भव िो सकेगा हिसका बोि उन्हें िो चुका था।

मिहषथ िमण वेदान्त-दिथन की हवहिवत् व्याख्या पुस्तकीय ज्ञान के माध्यम से न कि व्याविारिक अनुभव से किते थे। सवाथिसात् किने वाले मौन के माध्यम से प्रदत्त उनके अनुदेि में उच्चतम आदिथ तथा हदव्य बोि की उपलस्ब्ध की िािाभूत हवहियााँ सहिहित िैं। मनुष्य के अन्ति के प्रच्छि देवत्व को उद्बुद्ध किना, हनत्य आिा में हनवास के हलए प्रयत्निील ििना तथा िीवन के अहनत्य पक्ष का हनहलथप्त साक्षी बने ििना- यि उनके आह्वान का िंख-नाद था। मतान्धता तथा िाहमथक पूवाथग्रि की उन्हें हचन्ता निीं ंिोती थी; क्योंहंक वि इस प्रकाि के ऐहिक परिसीमन से बहुत ऊपि उठ चुके थे। उनके साथ ब्राह्मण पुिोहित-पुिािी, मुसलमान, ईसाई औि तथाकहथत भाितीय असूपृश्य भी ििते थे। वि इन सबको सम दृहष्ट से देखते थे।

लोकोत्ति सत्य के सवोत्तम हिल्पी िमण मिहषथ ने अपने गूढ़ मौन के माध्यम से अपने लक्ष्य की औि उनुमुख श्रान्त-क्लान्त पहथकों ंका मागथ-दिथन हकया। पिोक्ष रूप से वि आि भी ऐसा कि ििे िैं।

सिु-स्वभाव मिहषथ िमण के प्रहत ििािी उपयुक्त श्रद्धांहिल यिी िोगी हक िम उनकी हिक्षाओं ंका अनुसिण तथा उनके आदिों के अनुरूप स्वयं को संवहिथत किें।

सबको िास्न्त प्राप्त िो !

सन्त गुद्दी बाबा

सन्त गुद्दी बाबा की गणना आिुहनक काल के मिानतम भाितीय हसद्धों ंमें की िाती िै। उन्होंनें अनेक युवकों ंको नास्स्तक िोने से बचाया औि स्वयं अपने िी आियथप्रद चमत्कािों ंसे आध्यास्त्मक महिमा का प्रदिथन हकया। िो लोग िास्त्रों ंकी अवज्ञा किते हुए, इन्हें भाित के प्राचीन लोगों ंद्वािा हलखा हुआ अथथिीन साहित्य समझते िैं, उनके समक्ष उन्होंनें अपनी आध्यास्त्मक िस्क्त द्वािा िास्त्रों ंकी हवश्वसनीयता तथा उनमें अन्तहनथहित सत्य को हसद्ध कि हदया। उन्होंनें अनेक युवकों ंको भौहतकता के पाि से मुक्त हकया। वे एक हसद्ध मिािा थे। सिस्रों ंमील दूि की वसुतुओं ंको भी वे तत्क्षण िस्तगत कि लेते थे। उनको िड़ी-बूहटयों ंतथा औषहियों ंका भी पयाथप्त ज्ञान था। अभी वि कुछ िी हदनों ंपूवथ तक ििािे बीच हवद्यमान थे। उन्होंनें ६ माचथ १९५१ को अपने नश्वि ििीि का परित्याग हकया।

सवथप्रथम वि हपलखुआ में तीस वषथ पूवथ आये। उनके पास मात्र एक गुद्दी थी हिसमें अत्यल्प रूई भिी थी। गुद्दी हवहभि िंगों ंके वस्त्रों ंके आपस में हसले अनेक टुकड़ों ंसे बनायी गयी थी। उनके पास एक पात्र तथा बााँस का एक खोल था। वि उस खोल का उपयोग िल-पान या दुग्ध-पान के हलए हकया किते थे। हदव्य चेतना में अवस्स्थत िो कि भिन गाते समय वि उस वेणु-पात्र का उपयोग वाद्य-यन्त्र के रूप में भी किते थे। उनके पास अन्य कोई पूाँिी निीं ंथी। वि कबीि, नानक, तुलसीदास, दादू औि अन्य सन्तों ंके गीत गाने में हनपुण थे। अपने भिनों ंके मिुि संगीत से वि श्रोताओं ंको आि-हवसूमृत कि देते थे।

उन हदनों ंहपलखुआ आयथसमाहियों ंतथा कााँग्रेहसयों ंका गढ़ था। विााँ प्रहत सप्ताि उनकी बैठकें िोती ििती थीं ंहिनमें मूहतथपूिा तथा सनातन िमथ की हनन्दा की िाती थी। वे लोग श्राद्ध-तपथणाहद तथा ब्राह्मणों ंकी भी हनन्दा हकया

किते थे। उस समय बाबा िी मौन-व्रत का पालन कि िि‍े थे। अतः उनके हलए हकसी से बात किना सम्भव निीं ंथा। हकन्तु कभी-कभी वि िंिओस किने लगते िओ आनन्द-हवह्वल िो कि हकसी गीत की आवृहत्त किने लगते। हकन्तु उनका िेष समय मौन में िी व्यतीत िोता। कभी-कभी वि कृष्ण-भस्ट्क्त तथा केवलीौत पि भी कुछ बोल हदया किते थे। वि प्रायः किा किते थे- "यिाँ कोई अन्य निीं ंिै। यिाँ एकमात्र मैं िी हाँ। कौन हकससे बोले ! ना िम, ना तुम, दिबा गुम।"

एक बि बाबा ने संकेत से कुछ ििापूत बालकों ंको अपने पास बुलाया। उस समय वि एक हिव-मस्ट्न्दि में िठे हुए थे। बालक दिौ-दिौ उनके पास आ गये। बाबा िी ने अपनी गुद्िी से कुछ िागे हनकाले िओ उन्हें एक-एक िगा हदया। इसके पित् उन्होंनें उनसे मुहट्ठयााँ बन्द किने को किा। उन्होंनें अपनी मुहट्ठयााँ बन्द कि लीं।ं इसके बाद उन्होंनें उनसे मुहट्ठयााँ खोलने को किा। बालकों ंने मुहट्ठयााँ खोल कि िओयथचहकत िो कि देखा हक अब उनके िथों ंमें बादाम, हकिहमि िओ हमश्री थी।

उनके नाम, उनकी आयु, उनकी िाहत तथा उनके आश्रम से कोई भी व्यस्ट्क्त परिहचत निीं ंथा। अपने पास सवथदा एक गुद्िी िखने के किाण उनको लोगों ंने गुद्िी बाबा के नाम से अहभहित कि हदया। उनके मुख-मण्डल पि एक चमक थी हिससे वे तीसवषीय युवक प्रतीत िोते थे; हकन्तु िब हपलखुआ में उनका सवथप्रथम आगमन हुआ था, तब भी उनकी दिे-यहष्ट ऐसी िी थी। अनेक लोगों ंने उनमें अनेक बातों ंका िओोपण हकया। कुछ लोग उनकी आयु सौ वषथ बताते थे। उनके सम्बन्ध में इसी प्रकिा के अनुमान हकये िाते थे। वे िब कभी भी िििि में िाते थे, लोग उनके दिथन के हलए उनके चतुहदथक् एकत्र िो िाते थे। कुछ हदनों ंके पित् नास्ट्स्तक लोग भी उनके पास आने लगे। वि स्वयं को िििि‍िा किा किते थे। वि आप्तकाम थे। उनको हकसी बात की हचन्ता निीं ंििती थी। उन्होंनें कभी हकसी से कुछ निीं ंचिाा। वस्त् के नाम पि उनके पास बस एक लाँगोटी तथा लुंगी थी। वि हबना नमक का भोिन किते थे। ईश्वि उनमें तथा वि ईश्वि में हनवास किते थे। ऐसे सन्त के समक्ष इ‍ि भी नगण्य िै।

अपने आध्यास्ट्कि भावों ंसे उत्प्रेरित गुद्िी बाबा प्रायः गाया किते थे- **"नानक दुक्तखया सब सोंसारा, सुखी वही जो नाम अधारा।"** इसका अथथ िै हक संसाि में प्रत्येक व्यस्ट्क्त दुःखी िै; हकन्तु िो ईश्वि के नाम का गुण-गान किता िै, वि सुखी िै। प्रायः वि अपने िाथों ंको ऊपि उठा देते थे हिनमें अंगूि के गुच्छे आ िाते थे हिन्हें वििाँ एकत्र लोगों ं में हवतरित कि हदया िाता था।

कुछ नास्ट्स्तक उनको िादूगि बताते हुए किते थे- "यि एक दुष्ट व्यस्ट्क्त िै िो अपने िादू से भक्तों ंको ठग ििा िै।" एक बि बाबा िी के पास बहुत लोग एकत्र थे। एक भक्त ने उनके वेणु-पात्र को दूि से भि हदया; हकन्तु लोगों ंने िओयथ चहकत िो कि देखा हक उसमें दूि के स्थान पि अंगूि के गुच्छे थे। िो भक्त उनके हलए दूि लाया था, उसको उन्होंनें कुछ अंगूि हदये। इस िओयथप्रद घटना से उनके सभी हिोिी ितप्रभ िो गये।

एक हदन उनके पास एकत्र िन-समूि में कई एक नास्ट्स्तक भी थे। उन्होंनें ईश्वि तथा उससे सम्बद्ध सिी बातों ंको अस्वीकाि कि हदया। बाबा िी ने उनमें से एक से एक हगलास दूि माँगाया हिसे वे अपने वेणु-पात्र में भि कि पी गये। इसके पित् उन्होंनें उसे वि रिक्त हगलास दे कि उसे हिलाने को किा। वि व्यस्ट्क्त नास्ट्स्तक था; हकन्तु उसने उनके आदिे का पालन किते हुए उस हगलास को तीन-चाि बि हिलाया। ऐसा किते समय उसे रुपये की खनक सुनायी पड़ी। बाबा ने उसे पुनः हगलास को हिलाने को किा। हिलाने पि रुपये की खनक पुनः सुनायी पड़ी। हगलास को पााँच बि हिलाया गया िओ उसमें पााँच रुपये िबि आये। बाबा ने वे पााँचों ंरुपये उसे देते हुए किा-"इन रुपयों ं से दूि का मूल्य चुका देना।" इसे देख कि िन-समूि हवस्ट्स्मत िो उठा।

एक बि गुद्िी बाबा िमिा िओााम िी ििमिा की कुहटया में रुके। यि सुन कि वििाँ अपाि िन-समूि उमड़ पड़ा। श्री िोिभिा िी, बी.ए., बी. टी. भी एक अन्य हिक्षक के साथ बाबा के दिथनाथथ आ गये। हिक्षक मिोदय

नास्ट्स्तक थे। उन लोगों ंने बाबा से चमत्किा-प्रदिथन की प्राथथना की। बाबा िी ने उन लोगों ंसे हवनम्र भाव से किा हक
लोग उनके हवषय में िो प्रचािा हकया किते िैं, उसके हवषय में वे कुछ निीं ंिानते। हकन्तु वे लोग अपने िठ पि अड़े
िी हववि िो कि बाबा ने उनसे पूछा हक वे लोग क्या चािते िैं? उन लोगों ंने उनसे किा हक यहद सम्भव िो, तो
वि उनके हलए कन्धािा का अनािा माँगा दें। उस मौसम में अनािा किीं ंनिीं ंहमल सकता था; हकन्तु कुछ िी क्षणों ंमें
बाबा के िाथ में रुमाल में हलपटा एक अनािा आ गया हिसे देख कि सभी लोग हवस्ट्स्मत िो उठे। बाबा िी के उस
प्रसाद को सभी लोगों ंने ग्रहण हकया। कुछ बच्चों ने उनके पास आ कि बादाम की माँग की। बाबा ने तत्क्षण अपने िाथ ऊपि उठा
हदये हिनमें बादाम आ गये। बाबा ने उन्हें उन बच्चों ंमें हवतरित कि हदया। उनमें से एक बचे्चे ने िोते हुए किा- "मुझे बादाम निीं,ं पेड़े चाहिए।" बाबा ने पुनः िाथ उठाये हिनमें पेड़े आ गये।

एक बाि लाला िगिाथ कचििी के काम से गाहियाबाद िा ििे थे। बाबा िी ने उनसे स्नान के हलए तेल-साबुन की माँग की। लाला िी ने किा हक वि एक अत्यावश्यक कायथ के हलए िा ििे िैं औि इस स्ट्स्थहत में उनके हलए विााँ एक क्षण भी रुकना असम्भव था। तब बाबा िी ने एक हनकटस्थ कुएँ में अपना िाथ िाला हिसमें साबुन औि तेल-दोनों ंआ गये। इससे विााँ एकत्र सभी लोगों ंको आियथ चहकत िो िाना पड़ा। उस हदन उन्होंनें हवहिवत् स्नान हकया।

एक बाि बाबा िी खुिाथ गये। विााँ उनसे हकसी का भी परिचय निीं ंथा। वि एक श्मिान में रुक गये। उन्होंनें अपने सािे ििीि को भस्माच्छाहदत कि हलया। कालेि के कुछ हवद्याथी उधि से िी किीं ंिाते हुए हदखायी पड़े। उसी समय उन्होंनें अपने िाथ ऊपि हकये हिनमें अनािा तथा बादाम आहद फल आ गये। उन्होंनें उन फलों ंको हवद्याहथथयों ंमें हवतरित कि हदया। इस चमत्किा से अवगत िो कि कुछ िी क्षणों ंमें िीि के हवहिष्ट िन उनके प्रहत आकहषथत िो गये।

गुदड़ी बाबा को औषहियों ंका पयाथप्त ज्ञान था। वे कई औषहियों ंसे परिहचत थे हिनसे उन्होंनें कई िोहगयों ंको िोग मुक्त हकया। वे गन्धक से तेल हनकाल हलया किते थे। एक बाि कुछ ग्रामीणों ंने भी गन्धक से तेल हनकालना चािा; हकन्तु अपने प्रयत्न में वे हवफल ििे। बाबा िी की सिायता से िी वे गन्धक से तेल हनकाल पाये। पूछने पि उन्होंनें बताया हक मन्त्र, तन्त्र तथा सवोत्तम औषहियों ंके हमश्रण से िी यि िो सकता िै।

बाबा िी ने अत्यन्त कहठन औषहियों ंके हनमाथण में अनेक वैद्यों ंका मागथ-दिथन हकया। वि पािे को घनीभूत किने की हवहि से परिहचत थे। वि उसे आकाि में इतस्ततः गहतिील किने में भी समथथ थे।

एक बाि एक भक्त ने पुत्र प्रास्ट्प्त के हलए उनके आिीवाथद की याचना की। बाबा िी ने उसे स्वणथ-भस्म दी हिसके प्रयोग से उसे पुत्र-ित्न की प्रास्ट्प्त िो गयी। कुछ िोहगयों ंको असाध्य िोगों ंसे मुक्त किने की उनकी क्षमता से िाक्टि भी हवस्ट्स्मत िो िाते थे।

हपलखुआ में अपने तीस वषों के प्रवास में गुदड़ी बाबा ने कभी हकसी भक्त के साथ भोिन निीं ंहकया। उनके व्रत अत्यन्त कठोि िोते थे।

बाबा िी फिविी १९५१ ई. में हपलखुआ आये। उन्होंनें किा- "अब मेिा ििीि वृद्ध िो गया िै औि परिवतथन चािता िै। मैं इस ििीि में वषों तक ििा। अब मैं इसका परित्याग किना चाहूँगा। यि हनश्चि िै। इससे अहिक हदनों ंतक सेवा निीं ंिो सकती।" इसके पिात बाबािी अत्यहिक रुग्ण िो गए । उनकी परिचयाथ के हलए लोग उन्हें मेिठ ले िाने लगे । उन्होंनें सभी लोगों ंसे कि हदया हक वि िीघ्र िी ििीि-त्याग किने वाले िैं । कुछ हनष्ठावान हिष्ों ंको

उन्होंनें अपने ििि-त्याग की हनहित हतहथ तथा समय भी बता हदया िो हनभ्राथन्त हेसद्ध हुआ। िब उनको किा से मिेठ ले िाया िा िा था, तब मागथ में ि उनका दिेान्त िो गया। बाबिी के ििि को मढ़मुक्तेश्वि में गंगा में प्रवाहित कि हदया गया।

बीस मित्त्वपूणथ आध्यास्ट्कि हनयम

परम श्दे्धेय श्ी स्वामी डिवानन्द जी महाराज

१. ब्राह्ममुहतथ–िागिण - हनत्यप्रहत प्रातः चिा बिे उहठए। यि ब्राह्ममुहतथ ईश्वि के ध्यान के हलए बहुत अनुकूल िै।

२. आसन-प्द्मासन, हसद्धासन अथवा सुखासन पि िप तथा ध्यान के हलए आौ घणे् के हलए पूवथ अथवा उत्ति हदिा की आौ मुख किके बैठ िाइए। ध्यान के समय को िनैः िनैः तीन घणे् तक बढ़ाइए। ब्रह्मचयथ तथा स्वास्थ्य के हलए ीषाथसन अथवा सवाांगासन कीहिए। िलके ििीरिक व्यायाम (िैसे टिलना आहद) हनयहमत रूप से कीहिए। बीस बाि प्राणायाम कीहिए।

३. िप-अपनी रुहच या प्रकृहत के अनुसाि हकसी भी मन्त्र (िैसे 'ॐ', 'ॐ नमो नािायणाय', 'ॐ नमः हिवाय', 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय', 'ॐ श्री ििवणभवाय नमः', 'सीतािाम', 'श्री िाम', 'िरि ॐ' या गायत्री) का १०८ से २१,६०० बाि प्रहतहदन िप कीहिए (मालाओं ंकी संख्या १ आौ २०० के बीच)।

४. आिाि-संयमिुद्ध सास्ट्त्त्वक आिाि लीहिए। हमचथ, इमली, लिसुन, प्याि, खिे पदाथथ, तेल, सिसों ंतथा िींग का त्याग कीहिए। हमताििा कीहिए। आवश्यकता से अहिक खा कि पेट पि बोझ न डाहलए। वषथ में एक या दो बाि एक पखवािे के हलए उस वस्तु का परित्याग कीहिए हिसे मन सबसे अहिक पसन्द किता िै। सादा भोिन कीहिए। दूि तथा फल एकाग्रता में सिायक िोते िैं। भोिन को िीवन हनवाथि के हलए औषहि के समान लीहिए। भोग के हलए भोिन किना पाप िै। एक माि के हलए नमक तथा चीनी का परित्याग कीहिए। हबना चटनी तथा अचाि के केवल चावल, िोटी तथा दाल पि िी हनवाथि किने की क्षमता आपमें िोनी चाहिए। दाल के हलए आौ अहिक नमक तथा चाय, काफी आौ दूि के हलए आौ अहिक चीनी न माँहगए।

५. ध्यान कक्ष - ध्यान कक्ष अलग िोना चाहिए। उसे तालेकिी से बन्द िस्ट्खए।

६. दान- प्रहतमाि अथवा प्रहतहदन यथािस्ट्क्त हनयहमत रूप से दान दीहिए अथवा एक रुपये में दस पैसे के हिसाब से दान दीहिए।

७. स्वाध्याय-गीता, िामायण, भागवत, हवष्णुसिस्रनाम, आहदत्यहृदय, उपहनषद, योगवाहसष्ठ, बाइहबल, िेन्दिअवस्ता, कुिान आहद का आिा घणे् तक हनत्य स्वाध्याय कीहिए तथा िुद्ध हवचाि िस्ट्खए।

८. ब्रह्मचयथ बहुत िी साविानीपूवथक वीयथ की िक्षा कीहिए। वीयथ हवभूहत िै। वीयथ िी समूपूणथ िस्ट्क्त िै। वीयथ िी स
ी। वीयथ िीवन, हवचाि तथा बुस्ट्द्ध का साि िै।

९. स्तोत्र-पाठ - प्राथथना के कुछ श्लोकों ंअथवा स्तोत्रों ंको याद कि लीहिए। िप अथवा ध्यान आिम्भ किने से पिले उनका पाठ कीहिए। इससे मन िीघ्र िी समुन्नत िो िायेगा।

१०. सत्संग- हनिन्ति सत्संग कीहिए। कुसंगहत, िूम्रपान, मांस, ििाब आहद का पूणथतः त्याग कीहिए। बुिी आदतों ंमें न फैहसए।

११. व्रत-एकादिी को उपवास कीहिए या केवल दूि तथा फल पि हनवाथि कीहिए।

१२. िप-माला िप-माला को अपने गले में पिहनए अथवा िब में िस्ट्खए। िाहत्र में इसे तहकये के नीचे िस्ट्खए।

१३. मौन-व्रत - हनत्यप्रहत कुछ घण्टों ंके हलए मौन-व्रत कीहिए।

१४. वाणी-संयम-प्रत्येक परिस्ट्स्थहत में सत्य बोहलए। थोिा बोहलए। मिुि बोहलए।

१५. अपरिग्रि- अपनी आवश्यकताओं ंको कम कीहिए। यहद आपके पास चाि कमीिें िैं, तो इनकी संख्या तीन या दो कि दीहिए। सुखी तथा सन्तुष्ट िीवन हबताइए। अनावश्यक हचन्ताएँ त्याहगए। सादा िीवन व्यतीत कीहिए तथा उच्च हवचाि िस्ट्खए।

१६. हिंसा-परििाि कभी भी हकसी को चोट न पहुँचाइए (अहिंसा पिमो िमथः)। क्रोि को प्रेम, क्षमा तथा दया से हनयस्ट्न्त्रत कीहिए।

१७. आत्म हनभथिता सेवकों ंपि हनभथि न िहिए। आत्म हनभथिता सवोत्तम गुण िै।

१८. आध्यास्ट्त्मक िायिी-सोने से पिले हदन भि की अपनी गलहतयों ंपि हवचाि कीहिए। आत्म-हवश्लेषण कीहिए। दैहनक आध्यास्ट्त्मक िायिी तथा आत्म-सुिाि िहिस्टि िस्ट्खए। भूतकाल की गलहतयों ंका हचन्तन न कीहिए।

१९. कतथव्य-पालन- याद िस्ट्खए, मृत्यु िि क्षण आपकी प्रतीक्षा कि ििी िै। अपने कतथव्यों ंका पालन किने में न चूहकए। सदाचािी बहनए।

२०. ईश-हचन्तन-प्रातः उठते िी तथा सोने से पिले ईश्वि का हचन्तन कीहिए। ईश्वि को पूणथ आत्मापथण कीहिए।

ॐ िान्तिः ॐ िान्तिः ॐ िान्तिः !

यह समस्त आध्यात्मिक साधनों ंका सार है। इससे आप मोक्ष प्राप्त करेंगे।
इन डनयमों ंका दृढ़ापूवक पालन करना चाडहए।
अपने मन को ढील न दीडजए।